संजवे छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "इहांनो माहण प्रत्ये, एवो समचय अर्थ कर्यो छे, पण श्रावकनो अर्थ कर्यो नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्री ज्ञगवती सूत्रना पहेला शतकना सातमा उद्देशामां अज्ञयदेवसूरिजीए गर्ज्जना अधिकारमां, समणंवा माहणंवा शब्द आव्यो छे त्यां, समणं नाम तो साधुनो अर्थ कर्यो छे, अने माहण शब्दनो अर्थ श्रावक कर्यो छे; तथा दोलतसागरजी कृत ज्ञगवतीजीना टबामां पण पुर्वोक्त रीते अर्थ कर्यो छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पहेला शतकना सातमा उद्देशामां माहण शब्दनो श्रावक अर्थ कर्यो, त्यारे आठमा शतकमां माहण शब्दनो श्रावक अर्थ केम न कर्यो? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! सूत्रनो टीकानी शैली एवीज छे के, एकजवार शब्दनो अर्थ करे. एज शब्द वारंवार आवे तो बीजीवार टीकामां अर्थ न करे. तेमज बीजा शतकना पांचमा उद्देशामां एज पाठ आव्यो छे, तेमां तथारुप समण माहणनी सेवा कर्याथी 'सवणे नाणे विनाणे' इत्यादिक दस बोलनी प्राप्ती थाय. हवे जुओ ! श्रावकनी संगत अने सेवा कर्याथी दस बोलनी प्राप्ती थाय के नही ? इहां पण माहण शब्दनो अर्थ श्रावक जाणवो. एम सर्वत्र जग्योए ज्ञगवंतीमां "समणंवा माहणंवा" शब्द आव्यो त्यां 'माहण' शब्दनो पहेलीवार टीकामां श्रावक अर्थ कर्यो तेज जाणवो. वली ठाणायांग सूत्रमां पहेलां 'समणं वा माहणंवा' शब्द आव्यो त्यां पण अज्ञयदेवसूरीजीए टीकामां 'माहणं' शब्दनो अर्थ श्रावक कर्यो छे. एम सर्व सूत्रमां 'समणं वा माहणंवा' शब्दनो अर्थ कोइ ठेकाणे तो न्यारो न्यारो कर्यो छे अने कोइ ठेकाणे ओघम कर्यो छे. समणं साधु प्रत्ये, वा अथवा माहणंवा कहेतां श्रावक प्रत्ये, एमज कर्यो छे; पण सर्व जग्याए ज्ञगवतीना पहेला शतकना सातमा उद्देशामां पहेलीवार टीकार्थ कर्यो तेम जाणवो. एज 'समणंवा माहणंवा' पाठ ज्ञगवंतीजीना पांचमा शतकना छठा उद्देशामां कह्यो छे. तथारुप समण साधु प्रत्ये अथवा माहण प्रत्ये हीले, निंदे अने अप्रीयकारी दान आपे तो अशुज्ञ-दीर्घायुष्य बांधे; अने तथारुप समण,

# अर्पण पत्रिका

महत्पदादि अनेक गुणगणालंकृत सुज्ञ मु... श्री

मेहेता पीताम्बरभाइ हाथीभाइ माजी कारभारी साहेब

स्टेट—पालणपुर.

बाल्यावस्थाथी स्वशक्तिबले संसारिक व्यवहारमां तेमज राजकार्यादिमां अभ्युदय प्राप्त थवाथी आपे स्वउपार्जीत द्रव्यनो अन्य अन्य प्रसंगे विद्या केलवणीमां तथा धर्मकार्योमां अंतःकरणना धार्मिक उत्साहथी व्यय करी पोताना आत्माने निर्मल करेलो छे तेनो प्रत्यक्ष दाखलो के शुभ संवत् १९३० मां महामुनी तपस्वीजी श्री त्रीलोकचंद्रजी माहाराज अत्रे चोमासु पधारी ९१ उपवास करेला ते प्रसंगपर गुजरात, मारवाड अने काठीयावाड विगेरे देशोना जैनभाइओ दर्शनार्थे आवेल तेमनी सेवा बरदाश करवामां तत्पर रही अत्यंत नम्रता भाव दर्शावेल तेमज अद्यापि पर्यंत अहर्निश पूर्वोक्त धर्मादि कार्य स्वात्म पवित्रतार्थे करोछो अने तेवी पवित्रता प्राप्त थवाथी वृद्धावस्थामां शान्तरसनो आपना अंतःकरणमां जमाव थयो छे तेनो प्रत्यक्ष अनुभव पालणपुरना जैन समुदायमां प्रसंगे प्रसंगे थता उंचा मनने शान्ती पमाडवामां आपनुं अंतःकरण साधनभूत थाय छे. एवा अनेक कारणोने लीधे तेमज परोपकारार्थे आ महान् ग्रंथ प्रसिद्ध करवामां मने मदद आपी मारा उपर पूर्ण सद्भाव राखोछो तेथी आ भाषान्तररुप ग्रंथ आपनी पवित्र सेवामां सविनय अर्पण करुं छुं ते स्वीकारशोजी.

पालणपुर वीर संवत् २४३४.

विक्रम संवत १९६४.

ली.
आज्ञांकित
भाषान्तर कर्त्ता

श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदा शहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनू
को सप्रेम भेंट –

# प्रस्तावना.

श्लोक.

स्याद्वादो वर्तते यस्मिन्, पक्षपातो न विद्यते;
नास्तन्य पिड्नं किंचि, जैन धर्मस उच्यते ॥ १ ॥

श्री युती सकल श्रमण संघ (साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका सम्यक्द्दष्टि मार्गानुसारी सज्ञान जह्य जनो) ने विदीत करवामां आवे छे केः-वर्तमानमां हुंका अवसर्पणी प्रवर्ते छे, तेना प्रज्ञावथी आश्चर्यज्ञुत (न थवानी) अनेक वातो थइ, थइ रही छे, अने थवानी नवाइ नथी. तेमज अनेक कुपंथ प्रगट थया, थाय छे अने वली पण थवानी नवाइ नथी. आ बाबतमां विशेष लखवानी आवश्यकता नथी; कारण के आ बाबत जैन वर्गना नाना नाना बालक पण प्राय जाणे छे. वास्ते प्रयोजन जूत फक्त लखीए छीए केः—

पूर्वोक्त हुंका अवसर्पणीना प्रज्ञावे अनेक मत मतान्तर प्रगट थइ गयेला छे. तेमां संवत १८१५ नी सालमां एक तेरापंथी नामनो पंथ द्दष्टेष्ट विरुद्ध श्री जिन सासनने धूम्रकेतु शाहश्य प्रगट थयो. हवे ते पंथ शा कारणे अने कया पुरुषना निमीत्तथी प्रगट थयो ते, अने ते पंथस्थ मनुष्योनो शो मन्तव्य छे ते सत्य सनातन धर्माजिलाषी मध्यस्थ जनोने जाणवा सारु अति संक्षिप्त टुंक वृतांत नीचे लखवामां आवे छे.

## अथ श्वेताम्बरी तेरापंथ मतोत्पति.

संवत १८०८ नी सालना अरसामां श्री मरुधर (मारवाड) देशने विषे बात्रीस समुदायस्थ परम पुज्य सुगुण संपन्न कृत पुन्य श्री श्री १००८ श्री श्री रघुनाथजी स्वामी घणा सुशिष्योना परिवार चोख्खे विहारे करी विचरता हता. तेओ साहेबनी समिपे मारवाडमां आवेल अति प्राचीन शेहेर सोजत बगडीने नजदीक गाम कंटालीआना वासी

ज्ञाते ओशवाल भिखुनजी नामे संवत १८०० नी सालमां शिष्य थया. भिखुनजीना संसारथी उदासीन प्रणाम तो खरा, तेम बुधी पण तीक्ष्ण खरी, परंन्तु विचार-शक्ति अवली, तेथी जे सूत्र शास्त्र वांचे ते उलटा प्रणमवा लाग्या. एम करतां एकदा प्रस्तावे पुज्यश्रीए तेमने विचीक्षण जाणी बीजा साधु साथे आपी मेवाड देशमां आवेला राजनगरे चोमासुं करवा मोकल्या. त्यां आगल सागरगछना यति निःसंतान गएल होवाथी तेमना पुस्तक पानां विगेरेना वारस त्यांना श्रावको हता तेथी भिखुनजीने वांचवा वास्ते जोइए तेटली सूत्रनी प्रतो मली. भिखुनजी पण ते प्रतो वांचवा मांड्या, पण स्याद्‌वाद पद लान्छित् अनंत नयात्मक श्री जिन-वचनना साचा रहस्य समुद्र सरखी बुद्धीवाला जीवोने पण गुरुगम्य पूर्वक पामवा योग्य, ते भिखुनजी सरखाने गुरुगम्य वगर साचां रहस्य क्यांथी मले ? हवे पूर्वोक्त श्रावकदत्त सूत्रोनी प्रतो वांचवाथी भिखुनजीना मनमां अनेक कूतर्को उत्पन्न थवा मांड्या. छेवटे अविधिए सूत्र वांचवानी असर भिखुनजीने थइ के श्री नषीत सूत्रना बारमा उद्देशाना पेहेला तथा बीजा सूत्रमां कह्युं छे के, जे कोइ साधु साधवी अनेरा कोइ त्रसजीवने मुंज सुत्रादिकना पासावडे बांधे, बंधावे अने बांधताने भलो जाणे, तेमज पूर्वोक्त पासावडे बांध्या त्रसजीवने छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तो चोमासी प्रायश्चित आवे. आवो साधु संबंधीनो लेख वांचीने एकान्त मतीए एवो निश्चय करी लीधो के, मरता जोवने जो साधु बचाववा सारु खोले तो चोमासी प्रायश्चित पामे, अर्थात चार महिनानुं चारित्र खूए; त्यारे ग्रहस्थी मरता त्रसजीवने छोडावे तेमां तेने धर्म पुन्य क्यांथी थाय ? नज थाय, पाप लागे. एवी रीते श्रीमद् दया भगवती विषे अश्रद्धा उपनी. तेमज श्रीमद् भगवतीजी सूत्रना आठमा शतकना छठा उद्देशामां श्रमणोपासक (श्रावक) तथारुप असंयति अवृतिने सचित अचित, सुझता असुझता अस्नादिक प्रतिलाभे तो तेने एकान्त पाप थाय, पण किंचीत निर्जरा न थाय एम कह्युं

छे. तेनो पण परमार्थ जाण्या वगर एमनो एम एकान्त बुद्धिए एवो निश्चय करी लीधो के, साधु सिवाय कोइ संयति न कहेवाय, असंयतिज छे. माटे साधु सिवाय बीजा कोइने पण आप्यामां निर्जरा के पुन्यरुप नफो नथी. जे आपे छे तेने एकान्त पाप लागे छे. एवी रीते परंपराय परम कल्याणकारक मोक्षना प्रथम द्वाररुप दानने विषे पण अश्रद्धा उपनी. एवी रीते दयादान विषे अहस्थीना निमीत्त पूर्वक अश्रद्धा थवाथी भिखूनजीने अनेक दोहला उत्पन्न थवा मांड्या. ते समिप-वर्ती साधुजनोने किंचीत् प्रगटरुपे केहेवा मांड्या, तेथी ते साधुउनां मन पण शंकाशील थइ गयां. एम करतां कोइक अवसरे पुज्यश्रीने ते बाबत जाणवामां आवतां भिखुनजीने पूर्वोक्त सोजत शेहेरने विषे हितमित मधुर वचने समजाव्या के " हे वत्स ! पूर्वोक्त सूत्रार्थनो तमने यथार्थ अवबोध नथी थइ शक्यो तेथी तमने तेम भाषे छे, पण तेनो एवो अर्थाशय नथी. तमे पोतेज जरा दीर्घदृष्टिथी विचारो के, जो एम होय तो तो दया दान ए धर्मना मूल भूत मुख्य अंग उठी जाय; अने ज्यारे ए उठी जाय त्यारे आर्य (मोक्ष) मार्गनो अभाव थइ जाय. एम क्रम पूर्वक नास्तिक थवा दहाडो आवे. माटे हे आर्य ! तमे जे अनंत अरिहंत सिद्धना अभिप्रायथी विरुद्ध अभिप्राय कल्प्यो तेनो दंड (प्रायश्चित) अंगीकार करो अने हवे पछीथी एवुं स्व-मनिषा जनित अभिप्राय कल्पि अन्य जीवोने शंकाशील नही करवानी प्रतिज्ञा ल्यो. " ए वात भिखुनजीना मनमां तो न रुची, पण अवसरज्ञ एवा भिखुनजीए विचार्युं के, यदि हमणां हुं मारा मानसिक दृढनिश्चय प्रगट करीश तो ए गुरु मने समुदाय बाहार काढी मुंकशे, अने विना मदद हुं एकलो रखडी मरी जइश. मारो जे उद्देश छे ते निष्फल जशे, तेथी हमणां तो गुरुने इच्छानुं लोम (मनने अनुसारे) भाषा बोलवी योग्य छे. एम धारी दंभ-प्रीय भिखूनजी बोल्या के, हे स्वामी ! मारी भुल आपने भाषी तेथी हुं क्षमापात्र छुं. माटे आपने गमशे ते दंड मने आपशो ते लेवा हुं खुसी

दर्शाव्युं छुं. एवी रीते बोलता भिखूनजी प्रत्ये भद्रिक प्रणामी एवा श्री गुरुए यथायोग्य दंड आप्यो. ते द्रव्यथी तो लीधो पण प्रणाम मिथ्यात्व न मट्यो, तेथी वली पूर्वोक्त रीतीथी विशेषतः अनेक हेतु युक्तिथी दया–दान विषे भेदोत्पादक वचन जालमां विशेष करी भोला अल्पज्ञ साधुउने फसाववा शरु कर्या. ते वात वली पण पुज्यश्रीना जाणवामां आव्याथी पूर्वोक्त रीते तेमने समजाव्या, पण सेहेजसाजमां तेउ समज्या नहि. त्यारे तेमने इसत आक्रोश करी केहेवुं पड्युं के, जेम कोइ मगजनुं फाटेल गणीतज्ञ, एकडा बगडाना जाणवामां माल नथी एम कहे, पण ए तेनुं केहेवुं विद्वजन मंडलमां अप्रमाण थाय; कारण के न्यायथी जोतां प्रथम एकडा बगडा शीखवा ते विशेष गणीतज्ञ थवानुं समवाइक मूल कारण छे, तेम तमारे पण समजवुं के, अनुकंपा रुप दया–दान ते उंचली दशा पोंहोंचाडवानां कारण छे. तमे कारणनुं निषेध केम करो छो ? कारण के कारण विना कार्य नथी थतुं. यतः पुर्वांत पुर्वांत कारणं, पश्चात पश्चात कार्यं. इति वचनात. इत्यादि गुरुए कह्युं एटले बीजीवार पण श्री गुरुना केहेवा प्रमाणे दंड लइने गुरुथी जुदा न पडतां सामील रहीने अंदर अंदरखाने भिखूनजी साधुउने खूब बेहेकाववा मांड्या. भावी वसात् साधुउ पण घणा बेहेकी भिखूनजीने सहमत थया अने प्रछन्न विचार करी राख्यो के, ज्यारे पुज्यजी आपणने छेडे त्यारे हवे छचोक थइ प्रथम तो तेमने विनय पूर्वक सत्य श्रद्धा अर्ज निवेदन करवी. तेम करतां तेउ न माने तो तेमने पडता मुकी आपणे आपणो धारेलो सत्य मार्ग प्रचलित करवो, तेवो द्रढ निश्चय कर्यो. पछी ग्राम बगडीने विषे पुज्यश्रीनो भेगारो थयो ते अवसरे पुज्यश्रीए फरमाव्युं के, भिखुनजी तमे हजी सुधी पण कपोल कल्पीत श्रद्धा तेमज तेनी परुपणा छोडी नथी. वास्ते आ छेल्लीवार तमने कहेवामां आवे छे के, कां तो तमे तमारी मिथ्या श्रद्धा परुपणा छोडी सत्य अंतःकरणथी प्रायश्चित ल्यो, नहिं तो हवे तमने समुदायथी बाहार करवामां

आवशे. इत्यादि गुरुनां वचन सांजली बहु जन सम्मत एवा भिखुनजी बोल्या, स्वामी! अमने जे जाण्युं छे ते खरुं जाण्युं छे. अने खरानो दंड होय नही. माटे दंडफंड देवानी वात हवेथी आपने करवी लाजम नथी अने हवे अमे आपना केहेवा प्रमाणे दंड लेवाना पण नथी. अमारुं तो आपने एम केहेवुं छे के, आपने जो आत्मार्थनी इच्छा होय तो एटला दीवस खोटी श्रद्धा परुपणा करी साधु आचार्यना गुण विना मात्र नाम धराव्यां तेनुं प्रायश्चित करी अमारा केहेवा प्रमाणे सत्य श्रद्धाधारी मछपतिपणुं छोडी फरीथी दिक्षा ग्रहण करो, तो तमे अमारा गुरु अने अमे तमारा शिष्य, नहिं तो हवे अमे अमारुं धार्युं काम करवाना छीए. पछी केहेशो के अमने पेहेलुं कह्युं नही तेथी कही दरशावुं छुं. एवी रीते उलटा गुरुने उपदेशवा मांड्या. त्यारे श्री गुरुए जाण्युं के, आ जीवनो होणहार एवोज मालुम पडे छे माटे समजवो मुश्केल छे. तो हवे एने सामील राखवो शा कामनो. एम धारी "भिखुन समुदाय बाहार छे" एवो हुकम प्रगट कीधो. त्यारे भिखुनजी जाणे के "गुरुसें कपट साधसें चोरी, के हुवे नीर्धन के हुवे कोढी" आ वचनने संभारी बोलता होय ने, तेम बोल्या. जो स्वामी! आप मने एकलो जाणी समुदाय बाहार काढता हशो पण तेम नथी. मारे सामील बीजा पण महत्-गुणी साधुजन छे. माटे आपे मने समुदाय बाहार काढवानुं काम वीचार पूर्वक करवानुं छे. आवां भिखुनजीनां वचन शांजली भद्रिक प्रणामी श्रीगुरु तेमने केहेता हवा. हे वत्स! एक हो, गमे तो घणा हो, तेनी अमारे दरकार नथी, तथापी तमे जुदा जुदा नाम द्योने, देखीयें तमारी सामील कोण कोण साधु छे. त्यारे भिखुनजीए नोखा नोखा नाम देइ बताव्या. ते शांजली श्री गुरु प्रशस्त धर्मानुराग रुप सरागवसे चिंता ग्रसीत थया; पण "बीगड्यो पान बीगाडे चोली, बीगड्यो साध बीगाडे टोली" आ वचनना अनुसारे तेमने संवत्सर १८१५ ना चैतर सुद ९ सुक्रवारना दीवसे समुदाय बाहार कर्या. तेउ पण गुरु कुल वास छोडी वीहार करी अन्यत्र जता हता. एवामां माहा

वायुना योगे ते गामना बाहार छत्रीउमां रह्या. ते पुज्यश्रीना जाणवामां आवतां करुणाशील पवीत्र प्रीतीयभाव धारण करता थका तेमने समजाववा खातर सांमे पधार्या. त्यां गुरु चेलाने यथा संभवती चर्चा वार्ता थइ, पण भिखुनजीए विना समजे विहार कर्यो. ते अवसरे भिखुनजीना साथे केटला साधु नीकल्या ए कांइ चोकस नथी, पण सांभल्या प्रमाणे तेर साधु नीकल्या केहेवाय छे. तेमांथी श्रीमान रुपचंदजी स्वामी आदि ठाणां बे कोइ निमित्त कारण जोगे तेमनी असत् श्रद्धा न हृदये न बेसवाथी थोडा वखतमांज, भिखुनजीने छोडी पुज्यश्रीने मली पुन्यक्षेत्र श्री पालणपुर क्षेत्रने पवित्र कर्युं. मुख्य करी वृद्धावस्थादि संयोगे पालणपुर बीराजमान रह्या, अने तेज शेहेरमां शुभ संवत् १८५५ ना आसो वद ७ ना दीवसे अणसण पूर्वक देहोत्सर्ग कर्यो. ए माहात्मा श्री समकितसारना कर्त्ता श्रीमन् प्रवरपंडीत वादलब्धीसंपन्न श्रुतबली श्रीयुती जेष्टमलजी स्वामीना धर्मगुरु हता. तेउ भिखुनजोनी साथे नीकली पाछा आवेल तेथी तेमनो संक्षीप वृतांत प्रसंग पामी अहिं उपयुक्त जाणी लख्युं छे.

हवे ते भिखुनजी शेष साधु रह्या तेउ साथे देश नगर ग्रामादिकने विषे खुल्ली रीते दया दान उथापवा रुप अनेक वचनजालमां अनेक जीवोने फसाववा मांड्या अने पोताना गुरुवादिकने भ्रष्ट भागल, पडवाइ, पाखंडी, इत्यादिक अनेक जातनी गालो चोपडावा मांडया. ते देखी अन्यान्य समुदायस्थ परोपकारी गीतार्थ साधुजनो तेमने समजाववाने निमित्ते तेमनी साथे शास्त्रार्थ चर्चा करी वखतो वखत पराजय ( खष्ट ) करवा लाग्या, पण जेम भुमि ग्रहस्थित मनुष्यने सुर्यनी किरणनो जोइए तेवो प्रकाश न थाय, तेम पूर्वोक्त महामुनीरुप सुर्य, कथनीरुप किर्ण अने अभिनिवेष मिथ्यात्वरुप भुमिग्रह, तेमां भिखुनजी रहेला तेथी भ्रमरुप तीमीर नाश क्यांथी थाय ? भिखुनजी शास्त्रार्थमां हारे तोपण कहे के, मारी बुद्धिनी खामीथी हुं पराजय पामुं छुं, बाकी वात तो हुं कहुं छुं तेज सत्य छे. एवी रीते कही मूल

हठवाद न छोमे. ते देखी बीजा साधुउंए पण एम धार्युं के, आवा हठी डुराग्रहीनी साथे वाद करवो ते शुष्कवाद छे. एम जाणी उपेक्षा करवा लाग्या तेथी ज्ञिखुनजीने फावतुं आव्युं. एटले जाण पुरुष तो उपेक्षा करवा लाग्या, अने अजाण पुरुषोने ज्ञिखुनजीनी अलौकीक अनहद एकान्तीक बुद्धिए मोह पमाकी कबजे करवा मांड्या. इत्यादिक कारणयोगे मतनो प्रसार थवा लाग्यो.

हवे ए मतनो मंतव्य सांजलो! मूल तो दया अने दान बे रकमोनो फेरफार कर्यो. हवे जेम कोइ चोपमामांथी एक बे रकमनो फेरफार करवा चाहे त्यारे तेने बीजी पण घणी रकमोनो फेरफार करवोज पमे. ए स्वाज्ञाविकज छे. तेम ज्ञिखुनजीए पण ज्यारे दया–दानरुप बे रकमोमां फेरफार कर्यो त्यारे तेमने तेने लगती एवी बीजी पण घणी रकमोनो फेरफार करवो पड्यो. ते नीचे प्रमाणेः—

श्री दया ज्ञगवती विषे.

१ श्रमण ज्ञातपुत्र माहावीरदेवे अनुकंपा आणी गोशालाने बचाव्यो तेथी तेमने चुक्या केहेवा पड्या.

२ साधुजीने कोइ दुष्ट फांसी दइ गयो छे. एवामां कोइ दयावंते देखी फांसी खोली साधुने जीवीत दीधुं, तेने एकान्त पाप लाग्युं, तेम केहेवुं पम्युं.

३ कोइ अनुकंपा आणी कोइ जीवना मरणना ज्ञयथी रक्षा करे अर्थात पुन्य जाणी बचावे तो तेने अढार पाप लागे एम केहेवुं पम्युं.

४ गायोथी वामो ज्ञर्यो छे, एवामां अकस्मातथी अथवा कोइ डुष्टे लाहे लगामी तेथी गायो बली जाय, ते देखी कोइ दयावंत वामो खोली गायो बाहार काढी बचावे तेने एकान्त पाप लाग्युं एम केहेवुं पम्युं.

५ अग्यारमी प्रतीमा प्रतीपन्न याने ११ मी पमीमाधारी श्रावकने कोइ बेतालीस डुषण टालीने असनादिक आपे तेने एकान्त पाप लागे तेम केहेवुं पम्युं.

६ श्रावकने पोषध, संवर अथवा सामायक करवाने जग्या आपे तेने एकान्त पाप लागे तेम केहेवुं पम्युं.

७ अनाथ डुर्बल अभ्यागतादिने आपवामां एकान्त पाप लागे तेम केहेवुं पम्युं.

८ साधु सीवाय सर्व असंजति छे एवुं केहेवुं पम्युं.

९ श्री जिन-आज्ञा बाहार एकान्त पाप निपजे छे एम केहेवुं पम्युं.

१० मिथ्यात्वीनी करणी श्री जिनाज्ञामां छे एम केहेवुं पम्युं.

११ श्रावकने जगवंते रत्नना कचोला (वाटका) समान कह्या छे तेने झेरना कचोला सरखा केहेवा पम्या.

१२ स्थिवरकल्पी साधुने कमाम वासवा तथा उघाडवानी आज्ञा नथी एम केहेवुं पम्युं.

१३ तेरापंथी साधुने आहार करवामां धर्म छे एम केहेवुं पम्युं.

विगेरे अनेक रकमो तथा तेना पेटानी घणी रकमो छे ते लखवाथी लंबाण थवाना सबबथी उपर प्रमाणे फक्त जुज रकमो जणावी छे. विशेष ग्रंथ वांचवाथी मालुम पमशे. आवो तेउनो अघटीत उपदेश होवा छतां तेमां केटलाक लोको फसाया ए डुषमकालनुं माहात्म छे.

हवे श्री सिद्धान्तसार ग्रंथनी उत्पत्ति लखीए छीए.

पूर्वोक्त रीते जिखुनजीथी मांमीने आ ग्रंथ उत्पन्न थवाना अरसा पर्यंत तेरापंथीउ जेम जेम पोताना कल्पीत पंथने प्रसारवा सारु कुतर्क प्रगट-

करता गया, तेम तेम बावीस समुदायस्थ गीतार्थ विद्वान महानुभाग्य माहामुनीउ तेरापंथी कृत कुतर्कोनुं समाधान अर्थात श्रीमत सत्य शास्त्रानुसार खंडन करता गया; परंतु ते खंडन मंडन प्रथक प्रथक होवाथी सामान्य प्रकीर्ण लोकोने जोइए तेवो लाभ न मली शके. ते लोको सहेलाइथी लाभ लइ शके ते माटे तथा पूर्वोक्त कुपंथने विषे फसायला लोकोने मुक्त करवा तथा हवे पछी न फसाय एवा हेतुथी श्रीमान कनीरामजी स्वामीए नवकोटीना शेठजी श्री फतेहमलजीनी प्रेरणाथी पोते सिद्धान्त, पद, छेद टीका चुरणी आदि आर्स ग्रंथानुसारे पूर्वोक्त खंड खंड कथनने एकत्रीत करी साडाबार हजार श्लोकना विस्तारवालो ग्रंथ रची शुभ संवत १९०६ नी सालमां पुर्ण कर्यो. तेमां अनेक तरेहनी सरलता बतावी त्रीभंगी चोभंगी विगेरे सेहेली रीते वांचनार समजी शके तेवा टीका सहित द्रष्टान्तोथी भरपूर बनावेल छे. ते अथथी ते इति सुधी वांचवाथी समजाशे.

प्रीयतम! सत्य धर्मने समजवो ए काम बुद्धिमान विवेकी पुरुषोनुं छे, अने दस द्रष्टान्ते दुर्लभ, एवा मनुष्य जन्मनो सार पण मुख्य करीने धर्म पीछाणवो एज छे. वास्ते अमे सर्व सज्जनोने प्रार्थना करीए छीए के, एवो विचार जरापण न करवो जोइए के " अमे अमुक पंथस्थ छीए " ए रीते मतनो आग्रह अणकर्ता निःकेवल स्यादवाद पदलान्छीत निर्ग्रंथ प्रवचननोज आग्रह करवो उचीत छे; कारण के जे माणस मताग्रही, हठी, दुराग्रही या द्रष्टीरागी होय छे तेने श्री निर्ग्रंथ प्रवचननुं यथार्थ बोधरुप फल वंध्या स्त्रीनी माफक प्राप्त नथी थइ शकतुं. एटला माटे सर्व आत्मार्थी भवजीरुउए आ ग्रंथ समदर्शीपणे वांची भेद विज्ञान पुर्वक सत्यनो अंगीकार करी स्वआत्महित साधन करवुं.

वली तेरापंथीउने नम्रता पुर्वक निवेदन करवामां आवे छे के, अमे आ भाषान्तरमां उपयोग सहित असत्य वचन अथवा तीक्ष्ण कटु वचन विशेषतः नथी लख्युं; केमके पूर्वोक्त वचन केहेवा तेमज लखवा ए विवेकी पुरुषोनुं काम नथी. तेमज उस वचन केहेवाथी

तथा लखवाथी विरोध वधे छे, संपतनो अभाव थाय छे अने निःकलंक चंद्र मंडलवत शीतल जिन धर्मनी निंदा थाय छे. वळी श्री जिनमार्गनो ए मुख्य सिद्धांतज छे के, कोइने पण पूर्वोक्त वचन केहेवाथी अथवा लखवाथी माठुं लगाडवुं ते भारे दोष छे. एने लीधे आ लेखमां अमे पूर्वोक्त वचन नथी लख्यां. तथापि यदि कोइ शब्द आपने असह्य लागे अथवा तीक्ष्ण कटुक लागे तो अमे भलामण करीए छीए के, असह्य वचनने तो जेम सम्यक्‌दर्शी पुर्वोपार्जीत कर्मोदय काळमां समभावे सहे तद्‌वत् सेहेवां अने तीक्षण वचनने जेम वीचीक्षण वैद पोताना शास्त्रवडे सरुज (रोगी) ना गुमडांने विदारे. अने ते तीक्ष्ण शस्त्रनी धारनी मार आदर पूर्वक अंगीकार करे तेम करवां. हवे रह्यां कटुक वचन, ते जेम ज्वर ग्रसित कटुकने हित पथ्य जाणीने मधुरवत आचमन करे तेम करवां. यदि आपथी उपर लख्या मुजब न सह्या जाय अथवा न कर्यो जाय तो तेने माटे अमे क्षमा चाहीए छीए.

बीजुं श्री जैन धर्मनो मुख्य उद्देश ए छे के हरेकने तत्वार्थनी श्रद्धानो उपदेश करवो. त्यारे आपतो अमारे परमप्रीय चैतन्य साधर्मताथी अथवा लोकोक्तिना न्यायथी स्वधर्मी अथवा जैनी भाइ छो, माटे श्री परमागमजीनो सत्यार्थ प्रकाश करी बतावचो, ए अमारो फरज जाणी अमे बजावी छे, ते आपलोक पक्षपात छोडी अवश्य ग्रहण करशो.

दुहा.

मुख कर्ता इन ग्रंथका, श्री सर्व ज्ञही जान;<br>
उत्तर कर्ता गणधरु, तासु वचन परमान; १

वर्तमान जे वर्तता, तिन आगम अनुसार;<br>
स्वामी श्री कनीरामजी, रच्यो सिद्धांतज सार; २

पिन बहु विस्तृतना, भया सो वीस्तारन हेत;<br>
गुर्ज्जर भाषांतर कीयो, पूरव कृति संकेत; ३

श्री पालणपुरने विषे, प्राकृत मुख्य प्रधान;
वेद महेता गोत्रमे, श्रावक बसे सुजान. ४
दृढ प्रिय धर्मि वत्सली, अम्मापियु समान;
राजमान राजेश्वरी, पीताम्बर अभिधान. ५
आप आदि श्री शंघके, एसी भइ अभिलाष;
त्यों करनो ज्यों ग्रंथ ए, पामे अधिक प्रकाश. ६
ए इच्छा बहु कालसे, वर्तिथी मनमांय;
पिन अपुर्ण कारणवसे, पूर्ण होयाथी नांय. ७
सो इच्छा इन सालमे, पामी परम संयोग;
परमार थकी बुद्धिए, पूरण भइ मनोग. ८
जग जाहर पंडीत प्रवर, एक सहस्रने आठ;
पूज्यजी श्री रेखराजजी, मिथ्यामत निर्घाट. ९
तसु प्रशिष्य श्रीमन मुनी, रत्न रत्नकी खान;
वर्ते जसु चर्चा विषे, यथायोग्य विज्ञान. १०
श्री संघकी लख प्रेरणा, जानी पर उपकार;
तसु आश्रय तल यह भयो, शुद्ध भाषान्तर त्यार. ११
संवत युगरस अंक भू, सकृ फागभव मास;
शुक्ल त्रयोदशि गुरुदिने, पूरण भया प्रयास. १२
वासि पालणपुरतणे, स्वपरके हित काज;
भाषान्तर निज कर लीख्यो, गंभीरमल हेमराज. १३

आ ग्रंथ मारवाडी भाषामां ग्रंथकर्ताए रचेलो हतो. तेनुं गुजराती भाषान्तर में मारी अल्पमति अनुसार कर्युं छे; माटे आ भाषान्तरमां जे जे स्थले भुलचुक मालम पडे ते सर्व सुज्ञ जनोए सुधारी वांचवा कृपा करवी. एज वीनंती.

ली.
भाषान्तर कर्ता.

## ग्रंथ संबंधी सुचना.

सर्व धर्माभीलाषी सद्‌गृहस्थोने विदित करवामां आवे छे के आ ग्रंथ गया आसो मासथी छपाववो शरु करेलो ते जेठ मास सुधीमां तैयार थयो. तेथी अमे सर्व सद्‌गृहस्थोने अगाउथी ग्राहक थवा बाबतनी खबर आपी शक्या नथी. माटे सर्व धर्माभीलाषी सद्‌गृहस्थो आ पुस्तकनो लाभ लइ शके तेटला कारणथी तेमने हजु इस्वीसन ता. ३१-८-०८ सुधी अगाउथी थनार ग्राहक तरीके गणवामां आवशे.

अमारा अगाउ थनार मानवंता ग्राहकोनां नाम पुस्तक छपाता दरम्यान वखतसर न आवी प्होंचवाथी ते साहेबोनां मुबारक नाम छपावी शकायां नथी. माटे क्षमा चाहुं छुं.

ली.

भाषान्तर कर्ता.

# अनुक्रमणिका.

## प्रश्न पेहेलो—आज्ञा विषे. पानुं १—७४.

---

## प्रश्न बीजो—अनुकंपादान तथा दया विषे. ७५ थी २३३.

## प्रश्न त्रीजो—दान देवा विषे. २३३ थी ३५८.



## प्रश्न चोथो—साधुनो आहार, हालवुं चालवुं इत्यादि विषे.

## कठण शब्दोना अर्थ.

प्रवर्जित=त्यागी.
अनुमति=आज्ञा.
अनुष्ठान=आचरण.
उत्सर्ग=धोरव.
उपशमाववुं=शान्त पाडवुं.
अभिलाषा=इच्छा.
प्रशस्त=भला.
संक्लिष्ट=माठी.
नीवड=चीकणी.
खलाया=भुल्या.
कोलाहल=सोरबकोर.
प्रतिलाभवुं=देवुं.
सर्दहणा=श्रद्धा.
त्रणविकलेंद्रि=बेइंद्रि, तेंइंद्रि अने चउरेंद्रि.
अनागतकाळ=भूतकाळ.
जळचर=पाणीमां रेहेनारां.
थलचर=जमीनपर रेहेनारा.
खेचर=आकाशमां उडनारां.
भजनहार=लइजनार.
भवान्तरे=आखरे.
उपरांठो=विरुद्ध.
असंक्लिष्ट=भली.
प्रतिवर्ज्युं=अंगीकार कर्युं.
कालकुट=हलाहल.
विद्यमान=वर्तमान.
अवग्रह=आज्ञा.
अटवी=जंगल.
निरुत्साहभावे=विना उल्लासे.

श्री वीतरागाय नमः

# सिद्धान्तसार.

## प्रश्न पेहेलो आज्ञा विषे.

अथ तेरापंथीओ साथे जे बोलनो आंतरो छे तेना उत्तर लखीए छीए. त्यां प्रथम तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनी निर्वध्यकरणी श्री जिनाज्ञामांही छे. तेनो उत्तरः—हे आज्ञाना अजाण पुरुषो ! प्रथम तो श्री वीतरागदेवनी आज्ञामांही एकांत धर्म छे, एकांत व्रत छे अने एकांत मुक्तिनो हेतु (कारण) छे; तेमां बीजो पक्ष कांइ नथी. ते आज्ञा केहेने कहीए, श्री वीतरागदेवने ओळखीने वचनरुपी आज्ञा प्रमाण करवी, तेज आज्ञा. तेनी शाख सूत्र आचारांग प्रथम श्रुतस्कंधे पांचमे अध्ययने छठे उद्देशे एहवो पाठ छे के, जिन-आज्ञा मांहेली करणीमां आळस, अने जिनाज्ञा बाहरली करणीमां उद्यम, ए बे बोल हे शिष्य ! तुजने मत होजो, ए तिर्थंकरनो अभिप्राय जाणवो. ते माटे श्री जिनेश्वरनी आज्ञाए प्रवर्तवुं जोइए, ते सूत्र पाठ लखीए छीएः—

अणाणाए एगे सोवठाणे आणाए एगे निरुवठाणे ।<br>
एवंते माहोउ एयं कुसलस्स दंसणं ॥<br>
तद्दिठीए तम्मुतीए तप्पुरक्कारे तस्सन्नी तन्निवेसणा ।<br>
अभिभूए अदक्खू अणभिभूए पभू ॥

अर्थः—हवे छठो उद्देशो प्रारंभीये छीए. पांचमे उद्देशे ड्रह सरीखा

आचार्य कह्याछे, तेमनी सेवाए कूमार्गनो परित्याग अने रागद्वेषनी हानी संजावीए, इहां एवो अधीकार छे. अ० एकेक इंद्रिय-वश डुर्गतीना जानार, पोताना अजिमाने ग्रस्त, एहवा श्री वीतरागनी आज्ञा विना *सोपस्थानीछे अने चारित्र (क्रिया) मार्गे प्रतिपन्न छे. ते मुखे एम कहेः- "अमे प्रवर्जित छीए." परं रुमा पाकुआ धर्मने विषे विशेष विकल छे अने ÷सावद्यानुष्टानने विषे प्रवर्त्तेछे, तथा आ० आज्ञा श्री वीतरागोपदिष्ट मार्गने विषे संशुद्ध छे, परं मोहादिक काठियांने वस प्राये आळसु छे, ते श्री जिन-प्रणित मार्गने विषे नि० सदाचार पालवे विकल छे. हवे श्री गुरु शिष्यने कहे छे, "ए० ए कूमार्गने विषे अनुष्टान अने सन्मार्गने विषे प्रमाद, ए बे बोल, डुर्गतीनां कारण हे शिष्य! तुजने मा० मत होजो." ए० ए पूर्वोक्त अनाज्ञाविषे §§निरुपस्थानपणुं, अने आज्ञा-विषे सोपस्थानपणुं, ए कु० श्री तीर्थंकरदेवनो दं० अजिप्राय जाणवो. वळी तेज कहे छे, ते कूमार्ग छोमीने सदाय आचार्यनी समिपे शिष्ये वसवुं, ते एम, तद्दि० ते आचार्यनी द्रष्टिए (तीर्थंकर प्रणीत आगमरुप द्रष्टीए) वर्ते, तम्मु० ते आचार्यनी मुक्तीए (निर्लोजपणे) प्रवर्त्ते, तप्पु० ते आचार्यने सर्व कार्यने विषे आगळ करी प्रवर्ते, §एतावता आचार्यनी अनुमतीए अनुष्टान करे इत्यर्थ. तस्स० ते आचार्यना ज्ञाने उपयुक्त प्रवर्त्ते, तस्सि ते० आचार्यना स्थाने प्रवर्त्ते, एतावता सदा गुरु कुलवासीपणे रहे, एवा शिष्यने शो गुण उपजे ते कहे छेः--अजि० ते परिसह (उपसर्ग) जीते, अद० घाती कर्म चतुष्टय जीतीने केवली थइ तत्व देखे तथा अण० अनुकुळ प्रतिकुळ उपसर्गे करी अपराजिजूता (निरालंबण) थाय. आ संसारमां जीवने, नर्कादिक पमतां एक जिनवचन टाळी माता पीता पुत्र कलत्रादिक कोइपण आलंबन नथी. ते एवं जूत जावनाने प० समर्थ थाय, इत्यादि. हवे आज्ञा केटला प्रकारनी छे, ते कहेछे. त्रण प्रकारनी आज्ञा आराधना कहीछेः-ज्ञान-आराधना १, दर्शन-आराधना

*उद्यमी ÷पापकारी आचरण §§आळस §एवा प्रकारे

२ अने चारीत्र-आराधना ३. शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमे, उद्देशे दशमे, ते पाठ लखीए छीए:—

कइ विहेणं भंते ! आराहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पन्नत्ता, तंजहाः—णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चारित्ताराहणा. णाणाराहणाणं भंते ! कइ विहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता तंजहा:-उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा. दंसणाराहणाणं भंते ! एवंचेव तिविहा, एवं चारित्ताराहणावि.

अर्थः—क० केटला वि० प्रकारे भं० हे भगवान् ! आ० आराधना प० कही ? इती प्रश्न. उत्तर-गो० हे गौतम ! ति० त्रण प्रकारे आ० आराधना: प० कही तं० ते जेम छे तेम कहे छेः- णा० ज्ञाननी आराधना निरतीचारपणे अनुपालना, ते ज्ञान पांच प्रकारे, अथवा श्रुतनी आराधना, ते कालादिक आठ भेदे तद्यथा. गाथा:-काले १, विणए २, बहूमाणे ३, उवहाणे ४, तह निन्हवणे ५, वंजण ६, अत्थ ७, तदुभय ८, अठविहोणाणमायारो ॥ १ ॥ दं. दर्शन सम्यक्तनी आराधना ( निःशंकितपणा आदि अष्टाचार पाळवा ते ) यतः गाथा:-णिस्संकिय १, णिक्कंखीय २, णिवितिगिछा ३, अमूढदिठीय ४, उववुह ५, थिरीकरणे ६, वछल ७, प्पभावणे ८ अठ. उपर प्रमाणे दर्शनाराधनाना आठ भेद कह्या ते विषे पुनः गाथा:-दंसणं मूलं गुरुणो, सुयंचउभंतु विणयवछलया, जह आदरेण कीरइ, दंसण आराहणा णाम ॥ २ ॥ चा० चारित्र सामायकादिकनी आराधना ( निरतीचारपणे सुमती गुप्ति पाळवी ते. ) ए चारित्राराधनाना आठ आचार विषे गाथा:- पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहिं समइहिं तिहिं गुत्तिहिं, एस चरित्तायारो, अठ विहो होइ णायवो; „समइ गुत्त परिसह, जइ धम्माइ सुय धम्म जोगेसु, विरियस अ-

णिग्गुहो, चारित्ताराहणा होइ. ॥ ३ ॥ हवे णा० ज्ञान-आराधना नं० हे नगवान् ! क० केटले वि० प्रकारे प० कही ? इति प्रश्न. उत्तर-गो० हे गौतम ! ति० त्रण प्रकारे प० कही तं० ते कहे छेः उ० उत्कृष्ट ज्ञान-आराधना ते केवी के जे ज्ञान-कृत अनुष्टानने विषे प्रकृष्ट प्रयत्न गाढो उद्यम तथा उत्कृष्टी ज्ञाननो आराधना (चौद पूर्वनुं जाणवुं ते), म० तेने विषे मध्यम प्रयत्न (गाढो उद्यम नही तेम घणो थोडो पण नही, एकादशांगादि विचित्र सूत्रनुं जाणवुं ते) ज० जघन्य थोडोज प्रयत्न, जे घणोज थोडो उद्यम (पांच सुमति अने त्रण गुप्ति ए मळी आठ प्रवचन मातानुं जाणवुं ते) ॥ १ ॥ दं० दर्शन-आराधना नं० हे न-गवान ! केटले नेदे कही ? इति प्रश्न. उत्तर-हे गौतम ! ए० जेम ज्ञान-आराधना त्रण नेदे कही, तेम दर्शन-आराधना पण ति० त्रण नेदे केहेवी. त्यां उत्कृष्टी दर्शन-आराधना ते क्षायक सम्यत्क, मध्यमआ-राधना ते क्षयोपशमादिक सम्यक्त अने जघन्य-आराधना ते सास्वादन सम्यक्त (कालरना रणकावत्) ॥ २ ॥ ए. एम चा० चारित्र-आराधना पण त्रण नेदे केहेवी, उत्कृष्ट चारीत्र-आराधना ते यथाख्यात चारीत्र मध्यम-आराधना ते परिहार विसुद्धादि, अने जघन्यआराधना ते सा-मायक चारित्र ॥ ३ ॥ वळी बे प्रकारनो धर्म कह्यो छेः-सूत्रधर्म अने चारित्र धर्म २. शाख सूत्र ठाणायांग ठाणे बीजे. ते सूत्रधर्मना बे नेद, ज्ञान अने सम्यत्क तथा सूत्र अने अर्थ २. सूत्रनी सज्झायना पांच नेदः-वायणा, पुछणा, परियट्टणा, अणुपेहा अने धम्मकहा ५. चारित्र धर्मना बे नेदः-मूलगुण-पच्चखाण, अने उत्तरगुण-पच्चखाण. शाख सूत्र नगवती शतक सातमे उद्देशे बीजे ते पाठः—

कइ विहेणं नंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ता ? गोयमा ! डुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ता तंजहाः-मूलगुण-पच्चक्खाणेय उत्तरगुण-पच्चक्खाणेय. मूलगुण-पच्चक्खाणेणं नंते ! कइ विहे पण्णत्ता ? गोयमा ! डुविहे पण्णत्ते तंजहाः-सव-मूलगुण-पच्चक्खाणे

देस-मूलगुण-पच्चक्काणे. सव्वमूलगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहाः-सव्वाउ पाणाइवायाउ विरमणं जाव सव्वाउ परिग्गहाउ विरमणं. देसमूलगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइ-विहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहाः-थूलाउ-पाणाइवायाउ विरमणं जाव थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं. उत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते-तंजहाः-सव्व-उत्तरगुण-पच्चक्काणेय देस-उत्तरगुण-पच्चक्काणेय. सव्व-उत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते तंजहाः-अणागय १, मइक्कंतं २, कोडिसहियं ३, नियंटियंचेव ४, सागार ५, मणागार ६, परिमाणकडं ७, निरवसेसे ८, संकियंचेव ९, अद्धाए १०. पच्चक्काणं भवे दस विहा. देसउत्तरगुण-पच्चक्काणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ता तंजहाः-देसयव्वं १, उवभोग परिभोगपरिमाणं २, अणठदंड विरमणं ३, सामाइयं देसावगासियं ४, पोसहोववासो ५, अतिहिसंविभागो ६, अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झुसणा राहणाया ७.

अर्थः—क० केटले वि० प्रकारे भं० हे भगवान ! प० पचखाण प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० पचखाण प० कह्यां तं० ते कहेछेः-मू० चारित्र कल्पनुं मूळ समणगुण प्राणाति पातादि विमरणरुप जे पचखाण ते मुलगुण पचखाण, उ० मूलगुणनी अपेक्षाये उत्तरगुण पचखाण, जेम वृक्ष अने वृक्षनी शाखा. मू० मूलगुण-पचखाण

भं० हे भगवान ! क० केटला वि० प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० कह्यां तं० ते कहे छे स० सर्वथा मूलगुण-पचखाण सर्ववृत्तीने होय ते, अने दे० देशथी मुलगुण-पचखाण देसवृत्तिने होय ते. स० सर्व-मुलगुण-पचखाण भं० हे भगवान! क० केटले प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! पं० पांच प्रकारे कह्यां तं० ते कहेछेः-स० सर्वथा पा० प्राणीने हणवाथी वि० निवर्तवुं ते जा० यावत स० सर्वथा प्रकारे मृखावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रहथी वि० निवर्तवुं ते ५. दे० देश-मुलगुण-पचखाण भं० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! पं० पांच प्रकारे प० कह्यां तं० ते कहेछेः—थू० त्रसप्राणीने हणवाथी वि० निवर्तवुं ते जा० यावत थुल-मृखावाद, थुल-अदत्तादान, थुल-मैथुन अने थु० थुल प० परिग्रहथी वि० निवर्तवुं ते. उ० उतरगुण-पचखाण भं० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! दु० बे प्रकारे प० कह्यां तं० ते कहेछेः-स० सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाण अने दे० देशथकी उत्तरगुण-पचखाण. स० सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाण भं० हे भगवान ! क० केटले प्रकारे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! द० दस प्रकारे प० कह्युं तं० ते कहेछेः-अ० जे दीन तप करवो जोइए तेथी पहेलां करे ते ( आचार्यदिकनी वैयावचना कारणे) १, म० जे दीन तप करवो जोइए तेथी पछी करे ते ( आचार्यदिकनी वैयावचना कारणे ) २, को० जे तप आरंभतां अने मुकतां एक सरखो करे ते ( चतुर्थादिक करी अनंतरे चतुर्थादिकनुं करवुं ते ) ३, नि० निश्चे करीने नोंहोतर्यो जे माहारे अमुक दिवसे ए तप निश्चे करवो ते नियंत्रीत ( तपना दिनादिकने विषे ग्लानत्वादि अंतराय छतां पण नियमथकी करवो ) ४, सा० आगार सहित तप करवो ते ५, म० आगार रहित तप करवो ते ६, प० दात्यादिकनु प्रमाण करवुं ते ( दात एटले एक समुचय वस्तुनुं परवुं ते अने धार-

खंमीत थाय ने फरीथी ले ते बीजी दात ) ७, नि० सर्व अस्नादिक परिहरे ते ( निर्वशेष संथारो ) ८, सं० अंगुष्टादि मुष्टी गांठ श्रवण नासिका हाथ फर्स नमुक्कार गणवारुप पचखाण करे ते शंकेत तप ए, अ० पोरसी प्रमुख १०. प० पचखाण दस प्रकारे. यतः णमुक्कारसिए १, पोरसीए २, पुरिमड्ढे ३, एकासणेय ४, एकठाणेय ५, आयंबिल ६, अवधठ ७, चरम ८, अभिग्गह ए, णिविगइए १०. ए काळनुं मान करवुं ते. ए सर्व-उत्तरगुण-पचखाण जाणवां १०. दे० देसुत्तरगुण-पचखाण भं० हे भगवान ! क० केटले भेदे प० कह्यां ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! स० सात भेदे प० कह्यां तं० ते कहेछेः-दे० दिशी प्रमाण व्रत ( जोजनादिक क्षेत्रनी मर्यादा करवी ते ) १, उ० उवभोग-परिभोगनी मर्यादा करवी ते, तेनुं लक्षण यतः उवभोगो भवे वस्तु, पुष्प मन्नं घृतादयो; प्रभोगा भूयणं धर्मि, प्रावणं वलभा यथा. २. अ० अनर्थदंम ( अपध्यानादिक:प्रयोजनविना दंम लागे ते ) थी निवर्तवुं ते ३, सा० सामायक करवुं ते. ते सामाइक किं० लक्षणं यतः जस्सा सामाणिउं अप्पा, संजमे णियमे तवे; तस्स सामाइयं होइ, इमं केवली भासियं. दे० दिनप्रत्ये दिशि क्षेत्रनुं प्रमाण करवुं ते ४, पो० पोषध ( अष्टयाम चतुर्विधाहार विवर्जित ते ) ५, अ० साधुथी संविभाग दान करवुं ते ६, अ० छेल्ले मा० मरणने अंते सं० सलेखणा तप विशेषनुं क्षु० सेववुं तथा आ० तेनी आराधना अखंम करवी ते संथारो ७, इत्यर्थ.

जीवाणं भंते ! किं मूलगुण-पच्चक्खाणी उत्तरगुण-पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा मूलगुण-पच्चक्खाणीवि उत्तरगुण-पच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि ॥ नेरइयाणं भंते ! किं ? मूलगुण-पच्चक्खाणी पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया णो मूलगुण-पच्चक्खाणी णो उत्तरगुण-पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया. पंचिंदिया-तिरिक्ख-जोणिया मणु-

साय जहाजीवा. वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया.॥

अर्थः—जी० जीव नं० हे जगवान ! किं० शुं ? मू० मुलगुण पचखाणी छे उ० उत्तरगुण-पचखाणी छे के अ० अपचखाणी छे ? इति प्रश्न. उत्तरः-गो० हे गौतम ! जी० जीव मू० मुलगुण-पचखाणी होय, उ० उत्तरगुण-पचखाणी पण होय अने अ० अपचखाणी पण होय. ने० नारकी नं० हे जगवान ! किं० शुं ? मू० मुलगुण प० पचखाणी छे ? उत्तरगुण-पचखाणी छे ? के अपचखाणी छे ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! ने० नारकी णो० मू० मुलगुण-पचखाणी नथी णो० उ० उत्तरगुण पचखाणी पण नथी, पण अ० पचखाणना अजावथी अपचखाणी छे. ए० एम संजमना अजावथी जा० यावत दस जवनपति, पांच स्थावर अने त्रण विगलेन्द्र सुधी अपचखाणी कहेवा. पं० पंचेंद्र-तिर्यंच-योनिकने अने म० मनुष्यने ज० जेम उंघीक ( समुचय ) जीव कह्या तेम कहेवा; पण एटलुं विशेष के तिर्यंच-योनिक-पंचेंद्रियने सर्ववृत्तिनो अजाव छे तेथी ते देशथकीज मुलगुण-पचखाणी होय. वा० वाणव्यंतर ज्योतिष अने वैमानिकने जेम नारकी कह्या तेम कहेवा. हवे मुलगुण प्रत्याख्यानादिवंतनो अल्पा-बहुत्व चिंतवे छे. ते पाठः—

एसिणं जंते! जीवाणं मूलगुण-पच्चक्खाणीणं उत्तरगुण-पच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा? गो०! सव्वथोवाजीवा मूलगुण पच्चक्खाणी, उत्तर गुण-पच्चक्खाणी असंखेज्ज गुणा, अपच्चक्खाणी अनंतगुणा॥ १॥ एएसिणं जंते! पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गो०! सव्वथोवाजीवा पंचिंदिय तिरिक्खजोणियामुल-गुणपच्चक्खाणी उत्तरगुण-पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा॥२॥एएसिणंजंते!मणुस्साणं मुलगुण-पच्चक्खाणीणं

पूछा? गो०! सबथोवा मूलगुण-पच्चरकाणी, उत्तरगुणपच्चरका-णीसंखेज्ज-गुणा, अपच्चरकाणीअसंखेज्जगुणा ॥३॥ जीवाणं भंते! किं सव-मूलगुण-पच्चरकाणी देस-मूल-गुण-पच्चरकाणी अपच्चरकाणी ? गो० ! जीवा सबमूलगुण-पच्चरकाणीवि, देसमूलगुण-पच्चरकाणीवि, अपच्चरकाणीवि ॥४॥ णेरइयाणं पुछा ? गो० ! नेरइया नो सवमूलगुण-पच्चरकाणी, नो देस मूलगुण-पच्चरकाणी, अपच्चरकाणी, एवं जाव चउरिंदिया ॥५॥ पंचिंदियतिरिक्ख पुछा? गो०! पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया नो-सबमूलगुण-पच्चरकाणी, देसमूलगुण-पच्चरकाणीवि, अपच्च-रकाणीवि. मणूसा जहा जीवा. वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया ॥६॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं सबमूलगुण-पच्च-रकाणीणं देसमूलगुण-पच्चरकाणीणं अपच्चरकाणीणय कय-रे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा? गो०! सबथोवाजीवा सब-मूलगुण-पच्चरकाणी, देसमूलगुण-पच्चरकाणी असंखेज्ज-गुणा, अपच्चरकाणी अणंत-गुणा, एवं अप्पाबहुगा, ति-ण्णिवि जहापढमिल्लएदंमए; णवरं सबथोवा पंचिंदिय-तिरि-क्खजोणिया देस-मूलगुण-पच्चरकाणी, अपच्चरकाणी असंखेज्ज-गुणा ॥७॥ जीवाणं भंते! किं सबउत्तरगुण-पच्चरकाणी, देसुत्तर गुण-पच्चरकाणी, अपच्चरकाणी? गो० ! जीवा सबउत्तरगुण-पच्चरकाणीतिण्णिवि. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया. मणुस्साए चेव. सेसा अपच्चरकाणी जाववेमाणिया ॥८॥ एएसिणं भंते जीवाणं सबउत्तरगुण-पच्चरकाणीणं अप्पाबहुगा तिण्णिवि? जहा पढमे दंमए जाव मणुस्साणं. ॥९॥

अर्थः—ए० ए भं० हे जगवान ! जी० जीवने मू० मूलगुण-पचखाणीने ज० उत्तरगुण-पचखाणीने अ० अपचखाणीने क०.कोण कोणथकी जा० जावत वि० घणा थोमा तुला विशेषाधिक होय? इति प्रश्न. गो० हे गौतम ! स० देशथकी तथा सर्वथकी जे मूलगुण-पचखाणवंत बे ते थोमा बे, कारण के देशथकी तथा सर्वथकी उत्तरगुण-पचखाणवंत असंख्याता बे. इहां सर्ववृत्तिने विषे जे उत्तरगुणवंत होय ते अवश्य मूलगुणवंत होय अने जे मूलगुणवंत होय ते उत्तरगुणवंत होय अथवा उत्तरगुणविना होय तेज इहां मूलगुणवंत ग्रहवा. ते उत्तरगुणथी थोमाज होय, घणा साधुने दसविध पचखाणना युक्तपणाथी. ते पण मूलगुणथी शंख्यातगुणाज होय, कारण के सर्व जति शंख्याताज बे. हवे देशवृत्तिने विषे मूलगुणवंतथी जिन्न पण उत्तरगुणवंत पामीए. ते मधुमांसादि विचीत्र अजिग्रहथी बहुत्तर ( विशेष ) होय. एम देशवृत्ति उत्तरगुणवंत अधिक होय तेथी उत्तरगुणवंतने मूलगुणवंतथी असंख्यातपणुं कह्युं. मनुष्य अने पंचेन्द्रि-तिर्यचनेज पचखाण होय, तेथी वनस्पतिना अनंतपणा माटे अपचखाणी अनंतगुणा कह्या बे. ॥ १ ॥ ए० एहनी जं० हे जगवान ! पं० पंचेंद्रि ति० तिर्यंच जो० योनिकनी पु० पुछा. उत्तर गो० हे गौतम ! स० सर्वथी थो० थोमा जी० जीव पं० पंचेंद्रितिर्यंचयोनिक मू०मूलगुण-पचखाणी, तेथी उ० उत्तरगुण-पचखाणी अ० असंख्यातगुणा अने अ० अपचखाणी असंख्यातगुणा. ॥२॥ ए० ए भं० हे जगवान ! म० मनुष्य मू० मूलगुणपचखाणी? इत्यादिक प्रश्न कीधा. उत्तर गो० हे गौतम! स० सर्वथी थोमा मू० मूलगुणपचखाणी तेथी उ० उत्तरगुण-पचखाणी सं० शंख्यातगुणा तेथी अ०अपचखाणी अ० असंख्यातगुणा; गर्जज मनुष्य शंख्याताज बे ते माटे संमूर्छिम मनुष्यने ग्रहणे करी जाणवा. ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० हे जगवान ! किं शुं ? स० सर्वमूलगुण-पचखाणी बे ? दे० देशमूलगुण-पचखाणी बे? के अ० अपचखाणी बे? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! जी० जीव स० सर्वमूलगुण-पचखाणी पण बे दे० देशमूलगुण-पचखाणी पण बे अने अ० अप-

-चखाणी पण छे. ॥ ४ ॥ णे० नारकीनो पु० प्रश्न पुछयो. उत्तर गो० हे गौतम! ने०नारकी नो०स० सर्वमूलगुण-पचखाणी नथी नो०दे० देशमूल-गुण-पचखाणी पण नथी, माटे अ० अपचखाणीज होय. ए० एम जा० यावत च० चौरेन्द्रि पर्यंत कहेवुं. ॥ ५ ॥ पं० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंचनो पु० प्रश्न पुछयो. उतर गो० हे गौतम! पं० पंचेन्द्रि ति० तिर्यंचयोनिकजीव नो०स० सर्वमूलगुण-पचखाणी नथी दे० देशवृत्ति होय ते माटे देशमू-लगुण-पचखाणी होय अने अ० अपचखाणी पण होय. म० मनुष्यने ज० जेम समुचय जीव कह्या तेम कहेवा. वा० वाणव्यंतर जो०जोतिषि अने वे० वैमानिकने ज० जेम ने० नारकीने कह्या तेम अपचखाणी कहेवा. ॥ ६ ॥ ए० ए भं० हे भगवान! जी० जीवने स० सर्वमूलगुण-पचखा-णीने दे० देशमूलगुण-पचखाणीने अने अ० अपचखाणीने क० कोण कोणथी थोडा जा० यावत वि०विशेषाधिक होय? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम! स० सर्वथी थोडा जीव स० सर्वमूलगुण-पचखाणी, दे० देश-मूलगुण-पचखाणी अ० अशंख्यातगुणा अने अ० अपचखाणी अ० अ-नंतगुणा. ए० एम अ० अल्पाबहुत्व ज० जेम प० पेहेलाज दं० दंडकने विषे कह्या (त्यां पेहेलो जीवनो, तेमज बीजो पंचेन्द्रि-तिर्यंचनो अने त्रीजो मनुष्यनो; ए त्रणे जेम निर्विशेष मूलगुणादि प्रत्येक दंडकने विषे कह्या) तेम इहां पण त्रणेने कहेवा. वळी विशेष कहे छे ण० एटलुं वि-शेष स०सर्वथी थोडा पं०पंचेन्द्रि-तिर्यंचयोनिक दे०देशमूलगुण-पचखाणी छे (सर्वमूलगुण-पचखाणी तिर्यंच न होय ते माटे) तेथी अ० अपचखाणी अ० अशंख्यातगुणा कह्या.॥७॥ जी०जीव भं०हे भगवान! किं शुं? स०सर्व उत्तरगुण-पचखाणी होय दे० देशउत्तरगुण-पचखाणी होय के अ० अप-चखाणी होय? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम! जी० जीव स०सर्वउ-त्तरगुण-पचखाणी पण होय, ति० एम त्रणे होय. पं० पंचेन्द्रि-तिर्यंच अने म० मनुष्यने पण एमज कहेवा. से० शेष नारकी आदिक शघळा अ० अपचखाणी कहेवा. जा० यावत वे० वैमानिक पर्यंत कहेवा. ॥ ८ ॥ ए० एहने भं० हे भगवान! जी० जीवने स० सर्वउत्तरगुण-पचखाणीने

अ० अल्पाबहुत्व ति० त्रणेने एम कहेवा. ? ज० जेम प० पहेला दं० दंडकने विषे कह्या तेम इहां पण जा० यावत म० मनुष्य पर्यंत कहेवा. इत्यादि० ॥ ए ॥

भावार्थः—मूलगुण-पचखाणना बे भेद, सर्वमूलगुण-पचखाण अने देशमूलगुण-पचखाण. सर्वमूलगुणमां पांच माहाव्रत, अने देशमूलगुणमां श्रावकनां पांच अणुव्रत. उत्तरगुणना बे भेद, सर्वउत्तरगुण-पचखाण अने देशउत्तरगुण-पचखाण. सर्वउत्तरगुणमां दश विधि पचखाण, अने देशउत्तरगुणमां श्रावकनां उपरनां सात व्रत. हवे उपरनी सूत्रशाखाथी जाणवुं के सूत्र अने चारित्र, ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलमां श्री वीतरागदेवनी आज्ञा नथी, तेमज ए बे बोल विना बीजा कोइपण बोलने मोक्षनो मार्ग ( धर्म ) श्री वीतरागदेवे कह्यो नथी. त्यारे तेरापंथी कहे छे के, साधुने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी अने निंद्रा लेवानी इत्यादिक बोलनी भगवंते आज्ञा दीधी छे, तमे सूत्र अने चारित्र ए बे बोल शिवाय बीजा कोइपण बोलमां भगवंतनी आज्ञा नथी एम केम कहोछो ? तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय ! साधुजीने आहार करवानी, उपगर्ण राखवानी, निंद्रा लेवानी, इत्यादिक बोलनी अपवाद मार्गमां आज्ञा छे, पण उत्सर्ग ( धोरी ) मार्गमां छोडवानी आज्ञा छे. साधुए छ कारणथी आहार करवो अने छ कारणथी छोडवो कह्युं छे. शाख सूत्र ठाणायांग तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २६ मे गाथा ३२ थी ३५.

तइयाए पोरसिए, भत्त पाणं गवेसए;
छन्ह मणय रागंमि, कारणंमि समुठिए. ॥ ३२ ॥

अर्थः—हवे त्रीजी पोरसिने विषे भात-पाणी गवेषे, तेनी विधि कहेछेः-त० त्रीजी पो० पोरसिने विषे भ० भात पा० पाणी ग० गवेषे (छे) छ० छ कारणमांहे म० अनेरुं कोइक का० कारण स० उपन्याथी. ॥३२॥

वेयण वेयावच्चे. इरियाठाएय संजमठाए;
तहा पाणवत्तियाए, छठं पुण धम्म चिंताए. ॥ ३३ ॥

अर्थः—हवे आहार-पाणी गवेषणानां छ कारण कहेछेः-वे० क्षुधा-तृषाथी उपनी वेदना उपशमाववाने अर्थे १, वे० बाल-ग्लाननी वैयावच करवाने अर्थे २, इ० इरिया सोधवाने अर्थे ३, सं० सत्तर भेदे संजम पाळवाने अर्थे ४, त० तेमज पा० जीवितव्यने निमित्ते (अविधिए आत्माना प्राण मुकावीए तो आत्मघातनो दोष लागे ते माटे ) ५, छ० छठुं पु० वळी ध० धर्मध्याननी चिंतवणाने अर्थे ६, भात-पाणी गवेषे. ॥ ३३ ॥

निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथीवि नकरेज्ज छहिंचेव;
ठाणेहिंतु इमेहिं, अणइक्कमणाय से होइ. ॥ ३४ ॥

अर्थः—हवे छ कारणे साधु तथा साधवी आहार-पाणी न गवेषे ते कहेछेः-नि० साधु धि० धीर्यवंत अने नि० साधवी पण न० भात-पाणीनी गवेषणा छ स्थानके न करे, ठा० ए छ स्थानक इ० आगळ कहेशे तेने अर्थे अ० संजमजोग उलंघे नाहिं से० ते निर्ग्रंथ निर्ग्रंथी संजमवंत होय. ॥ ३४ ॥

आयंके उवसग्गो, तितिक्खया बंभचेर गुत्तीसु;
पाणीदया तवहेऊ, सरीर वोच्छेयणठाए. ॥ ३५ ॥

अर्थः—हवे भात-पाणी अणगवेषणानां ( न लेवानां ) छ स्थानक कहेछेः-आ० असाध्य रोगादि उपन्याथी १, उ० मरणांतिक उपसर्ग उपन्याथी २, ति० तीक्ष्ण बं० ब्रह्मचर्यनी गुप्ती पाळवाने अर्थे ३, पा० कुंथवादिक प्राणीनी द० दयाने अर्थे ४, त० तप करवाने अर्थे ५, अने स० शरीरनी वो० संलेखणा तथा अणसणने अर्थे ६, भात-पाणी गवेषे नही. ॥ ३५ ॥

भावार्थः—ए छ कारणथी आहार करवो ते तो अपवाद मार्गमां छे अने उत्सर्ग मार्गमांतो छोडवो एवी श्री वीतरागदेवनी आज्ञा छे. हवे

वीतरागदेवनी आज्ञामां एकान्त धर्म छे, एकान्त मुक्तिनो हेतु छे, तेमां बीजो पक्ष कांइ नथी, अने आज्ञा बहार मुक्तिनो मार्ग नथी अने आज्ञानी आराधनारुप धर्म नथी, त्यारे मिथ्यात्वीनी करणी श्री जिनाज्ञामां केवीरीते कहेवाय ! अर्थात् नज कहेवाय. हवे प्रभुनी आज्ञा बाहार अशुभ करणीथी तो पाप बंधाय, पण शुभ करणी करे तेथी पुण्य फल उपजे, एवुं सूत्र मध्ये घणे ठामे कह्युं छे. छतां तेरापंथी कहेछे के, आज्ञा बाहार एकान्त पाप छे, ए तेमनुं कहेवुं हस्तिदंतवत् छे कारण के प्रथम तो तेमनाज बनावेला तेर द्वारमां कह्युं छे के, पुन्यपाप अजीव छे, आज्ञा मांहे नथी तेम आज्ञा बाहार पण नथी. एवी तो मनमां सर्दहणा छे, अने लोकोने भरमाववाने कपट-जुठ लगावीने कहेछे के, आज्ञामांहे तो धर्म-पुन्य निपजे छे, पण आज्ञाबाहार एकान्त पाप छे, एवुं कपटथी बोले छे. डाह्या हो ते वीचारी जोजो.

वळी तेरापंथीउ एम कहेछे के, मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामांहेलो मोक्षनो मार्ग छे, अने मिथ्यात्वी करणी करे ते आश्री देशथकी श्री वीतरागनी आज्ञाना आराधक थाय १, एम सूत्र विरुद्ध परुपे छे. वळी एम कहे छे के, पुन्य बंधाय ते आज्ञामांहेली करणीथी बंधाय छे, अने आज्ञाबाहार एकान्त पाप छे २, ए पण सूत्र विरुद्ध कहेछे. ए बंन्ने प्रश्नना भेला उत्तर कहीये छीए.

हवे जुउ ! सूत्रमां मिथ्यात्वीनी (अन्यतिर्थीनी) करणी आज्ञा बाहार कही छे, अने ए आज्ञा बाहारनी करणीथी पुन्य बंधाय छे, ते कहेछेः-गोशालो, जमाली अने अन्यतिर्थी ए त्रण, तथा उववाइ सूत्रमां अनेक भेदना अन्यतिर्थी कह्या छे ते, तथा विनामन-भूख, तृषा, शीत अने तापना खमवावाळा, तथा राजादिक, खूनीने अनेक विधिना-छेदन भेदन, चाखसी तर्जन्यादिक मार दे, ते जीव कष्टथी पुन्य बांधे तेथी देवतामां जाय, अने तेने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या छे तेनी शाख सूत्र उववाइजीमां, ते पाठ लखीए छीए.

जीवाणं ऋंते! असंजए अविरिए अप्पमिहय पच्चक्काय पावकम्मे इत्तोचुए पेच्चा देवेसिया? गोयमा! अत्थेगइया देवेसिया, अत्थेगइया णो देवेसिया. से केण ठेणं ऋंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइया देवेसिया अत्थेगइया णो देवेसिया? गोयमा! सेजेइमे जीवा गामागर णगर णिगम रायहाणि खेम कवम दोणमुह पट्टणासम संवाह सन्निवेसेसु अकाम तण्हाए अकाम छुहाए अकाम बंऋचेर वासेणं अकाम अण्हाणय सीयाय व दंस मसक सेय जल्ल मल्ल पंक परितावेणं अप्पतरोवा ऋूजतरोवा कालं अप्पाण परिकिलेसंति २ त्ता कालंमासे कालं किच्चा अण्यरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवताए उववत्तारो ऋवंति, तहिं तेसिं गइ तहिंतेसिं ठिइ तहिंतेसिं उववाए पण्णत्ते. तेसिणं ऋंते देवाणं केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता? गो०! दस वाससहस्साइं ठिइ पण्णत्ता. अत्थिणं? ऋंते! तेसिं देवाणं इड्डिवा जुइतिवा जसेतिवा बलेतिवा विरिएतिवा पुरुषाकार परक्कमेतिवा? हंता अत्थि. तेणं ऋंते! देवा परलोगस्साराहणा? णो इणठे समठे.

अर्थः—जी० जीव (चेतना लक्षणवंत) ऋं० हे ऋगवान! असं० असंजमवंत अथवा अवि० व्रतरहित अप्प० सम्यक्त प्राप्त करीने नथी हण्या तथा अनागतकाल संबंधी नथी पच्चख्यां जेणे पा० पाप कर्म, एवा जीव इ० इहां (मनुष्य) थकी चवीने पे० परऋवांतरने विषे दे० देवता थाय? इति प्रश्न उत्तर. गो० हे गौतम! अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो० दे० देवता न थाय. से० ते के० शा ठे० कारणे ऋं० हे ऋगवान! ए० एम वु० कह्युं के अ० केटलाएक दे० देवता थाय अ० केटलाएक णो० दे० देवता न थाय? इति प्रश्न, उत्तर गो० हे

गौतम! से० ते जे० जे प्रत्यक्ष (देखीता) जी० जीव (तिर्यंच अने मनुष्यरुप), गा० वाडे वींटयुं ते गाम अ० लवण अथवा सुवर्णादिकना आगर ण० ज्यां गवादिकनो कर नहीं ते नगर णि० ज्यां वाणीयानो वास ते णीगम रा० राजालोकना वास ते राजधानी खे० धुळनो गढ ते खेड क० खडेरनगर मं० ज्यां ढुंकडो सन्नीवेस होय ते दो० ज्यां जलवट अने थलवट ए बे पंथ होय ते बंदर प० पाटण (रत्नभूमि) आ० तापसनो आश्रम सं० पर्वत उपर वास स० भरवाडादि वसे ते, इत्यादिक वासने विषे अ० निर्जरानी अभिलाषा विना त० तृषा तथा अ० निर्जरानी अभिलाषा विना छु० भूख खमे अ० निर्जरानी अभिलाषा विना (विनामन) बं० ब्रह्मचर्य वा० पाळे अ० विनामन स्नान न करे सी० ताढ तथा ताप खमे अने दं० दंसा म० मसादिकनो दुःख सहे से० परशेवो ज० रजमात्र मेल म० कठण मेल अने पं० कादव इत्यादिकना प० परितापे करी अ० थोडो काळ तथा भू० घणो काळ सुधी अ० पोतानी आत्माने प० कलेश दुःख पमाडे, पमाडीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने अ० अनेरी वा० वाणव्यंतरनी जातीना दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे, त० त्यां ते० तेनी ग० गति त० त्यां तेनी ठि० आउखानी स्थिति अने त० त्यां तेनुं उ० उपजवुं प० कह्युं छे. ते० भं० दे० हे भगवान! ते देवतानी के० केटला काळनी ठि० स्थिति प० कही? गो० हे गौतम! द० दस वा० हजार वर्षनी ठि० स्थिति प० कही. अ० छे? भं० हे पुज्य! ते० ते दे० देवताने इ० रुद्धि परिवारनी संपदा जु० शरीरना आभरणनी जोति ज० लोक मध्ये जश कीर्ति ब० शरीरनुं बळ वि० जीवथी उपन्यु जे वीर्य (शक्ति) पु० पुरुष संबंधि अभिमान अने प० पराक्रम फोरववानी शक्ति छे? हं० हा गौतम, ते देवताने एटलां वानां छे. ते० भं० दे० हे पुज्य! ते देवता प० परलोकने विषे मोक्ष पामवारुप पुज्यनी आज्ञाना आराधक होय? णो० नही इ० ए अर्थ स० समर्थ. ते समकितनो आराधक नथी माटे व्यंतर थयो. अनंता भव करे तोपण समकित विना आराधक नही.

सेजेइमे, गामागर, णगर, णिगम, रायहाणी, खेड, कव्वड, मंम्ब, दोणमुह, पट्टणास्सम, संवाह, सन्निवेसेसु, मणुआ ञवन्ति तंजहाः-अनुबंधगा, णियबंधगा, हडिबंधगा, चारकबंधगा, हत्थ छिन्नगा, पायछिन्नगा, कणछिन्नगा, ण-कछिन्नग्गा, उठछिन्नगा, जिब्जछिन्नगा, सीसछिन्नगा, मुखछिणगा, मऊछिन्नगा, वईकछछिन्नगा, हियउप्पाम्डि-यगा, दसणुप्पाम्डियगा, वसणुप्पाम्डियगा, गेवछिन्नगा, तंडुलछिन्नगा कागणिमंसखावियगा, उलंवियया, लंवियया, घसंत्तगा, घोलंतघा, पफोम्डियया, पीलियया, सूलाइयया, सूलञिणगा, खारवत्तिया, वञ्जवत्तिया, सीहपुछितया, दव-ग्गिदवढगा, पंकोसन्नगा, पंकेखुत्तगा, वलयमत्तगा, वसढ-मत्तगा, णिदाणमत्तगा, अंतसल्लमत्तगा, गिरिपम्डियगा, तरु-पम्डियगा, मरुपम्डियगा, गिरिपखंदोलया, तरुपखंदोलया, मरुपखंदोलया, जलपवेसिका, जलणपवेसिका, विसञखि-तगा, सञोवाम्डित्तगा, वेहाणसिया, गिध्दिपिठिगा, कंतारम-त्तगा, ढुञिखमत्तगा, असंकिलिठ परिणामाते कालमासे कालंकिच्चा अणयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारोञवइ. तहिंतोसिंठिई तहिंतोसिंगई तहिंतासिं उव-वाए पणत्ते. तेसिणं ञंते! देवाणं केवइयं कालं ठिइ प०? गो० ! बारसवाससहस्साइंठिई पणत्ता. अञिणं? ञंते! तोसिंदेवाणं इढित्तिवा जुईवा जसेत्तिवा बलेत्तिवा वीरिएत्ति-वा पुरिसक्कार परक्कमेत्तिवा? हंता अञि. तेणं ञंते! देवा परलोगस्साराहगा? णो तिणठे समठे ॥

अर्थः—से० ते जे ए गा० गाम, अगर ण० नगर णि० नीगम रा० राजधानी खे० खेरु क० खंरुरनगर मं० मंरुप दो० बंदर प० पाटण आ० तापसोनां ठाम सं० पर्वतउपर वास अने स० जरवारु प्रमुखना ठामनेविषे म० मनुष्य ज० एवा होय तं० ते कहेछे. कोइएक अन्याय कीधाथी एटलां डुःख पामे ते कहेछेः—अ० काष्टमां हाथ-पग बांध्या णि० लोढानी बेरुीमां घाल्यो ह० हेरु गळामां घाली, चा० केदखानामां घाल्यो ह० हाथ छि० छेद्या पा० पग छेद्या क० कान छेद्या ण० नाक छेद्युं उ० होठ छेद्या जि० जीज छेदी सी० मस्तक छेद्युं हि० हैयुं उपारुी काळजानुं मांस काढयुं द० दांत पाड्या व० वृषण ( अंरुकोष ) उपारुी काढ्या गे० कोट छेदी तं० चोखाना दाणा जेवरुा कटका कर्या का० कोरुी जेवरुा कटका करी तेनुं मंस तेने खवराव्युं, उ० खारुमां उतारे लं० वृक्षनी शाखाए बांधे घ० पाषाण ( पत्थर ) उपर घसे, घो० पेटादिकने घोळे प० कुहारुाथी फारुे पी० शेलरुीनी पेठे पीले सू० शूळीए घाले सू० त्रिशूळादिके जेदे खा० अस्त्राथी छेदी लोही काढे, शरीरे खार छांटे व० आलुं चामरुुं माथे बांधे सी० लींग छेदे तथा शिश्नना पुंछरुे बांधे दा० दावानळनी अग्निथी दझावे पं० कादवमां खोशी घाले, व० जूख मरतां मरे व० इंद्रियो वश पीरुायाथका मरे णि० राजादिकनां नियाणां करी मरे अं० हैयामां कषायादिकथी मिथ्यात्व शल्य राखी मरे गि० पर्वतथी परुीने मरे त० वृक्ष उपरथी परुीने मरे म० धूळना ढगला उपरथी परुीने मरे गि० पर्वतना पत्थरथी चंपाइने मरे त० वृक्षनी रुाळी हींचोळीने लसरतुं मुकीने मरे म० पत्थर हींरुोळी परुीने मरे ज० पाणीमां रुुबीने मरे ज० अग्निमां पेसीने मरे वि० विष खाइने मरे स० शस्त्रथकी मरे वे० गळे फांसी लेइ मरे गि० पक्षी पासे चुंटावी मरे कं० अटवी ( जंगल ) मां जइ मरे डु० डुकाळे जूखे मरे अ० आर्त-रुद्रध्यान प्रणाममां असंकलीष्ट प्रणामथी मरे, तं० ए पूर्वोक्त जीव का० काळने अवसरे का० काळ करीने अ० अनेरी वा० वाणव्यंतर जातीना दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे, त० त्यां तेनी

ठि० स्थिति त० त्यां तेनी ग० गति अने त० त्यां तेनुं उ० उपजवुं प० कह्युं छे. ते० भं० दे० हे भगवान! ते देवतानी के० केटला का० काळनी ठि० स्थिति प० कही? गो० हे गौतम! बा० बार हजार वर्षनी स्थिति प० कही. अ० छे? भं० हे भगवान! ते०ते देवने इ० रिद्धि परिवारनी संपदा जु० शरीराभ्रणनी कान्ती ज० लोकमांहे जश महिमा ब० शरीरनुं बळ वी० वीर्य पु० पुरुषाकार अने प० पराक्रम छे? हं० हा गोमत अ० छे. ते० भं दे० हे पुज्य! ते देवता प० परलोकने विषे आ० आराधक होय? गो० नही ए अर्थ समर्थ (परलोकना आराधक न होय).

भावार्थः—हवे जुओ! ए विनामन भूख-तृषा अने ताढ-ताप खमे, राजादिक अनेक प्रकारनां दुःख दे, ते परवशपणे सहे अने विनामन बाल-मर्ण करे, ते जीव देवतामां जाता कह्या, अने तेमने जीनाज्ञाना परलोकना (मोक्षना) अणआराधक कह्या. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा-बाहार छे अने आज्ञा-बाहार पुन्य निपजेछे. हवे ए बोलोनी, छेदन-भेदनी अने बाल-मर्णनी साधु-मुनीराज आज्ञा पण देता नथी. ए करणी जीनाज्ञामां के केम? त्यारे तेरापंथी कहेछे के, ए कामतो आज्ञामांहेला नथी अने ए कामथी पुन्य बंधातु नथी, पण अंत समये शुभ प्रणाम आवे ते आज्ञामांहेला छे तेथी पुन्य बंधाय छे. एम एकान्त जुठ कहेछे, पण अहियां तो मर्णने अंते आर्तध्यानने वशे काळकरी कष्टथी वाणव्यंतर-देवामां जाय एम कह्युंछे. डाह्या हो ते विचारी जोजो. वळी आ आगला उववाइ-सूत्रना पाठमां कह्युंछे के, मातापीताना वचनना पालणहार सुवनित, पुन्य बंधाय तेथी देवतामां जाय एम कह्युं अने तेमने जीनाज्ञाना अणआराधक कह्या. ते पाठः—

मणुया भवंति तंजहाः-पगइ भद्दका पगइ विणया पगइ उवसंता पगइ उप्पएणु कोह माण माया लोभा मिउ मद्दव संपन्ना अलोणा विणीया अम्मा पिउ सुस्सूसका अम्मा-

पियाणं अणइक्कमणिज्ज वयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिकप्पेमाणा विहरमाणाबहूइंवासायं आउयं पालिंति पालित्ता कालमासे कालंकिच्चा अणयरेसु वाणमंतरेसुदेवलोएसुदेवत्ताए उववत्तारो भवंति. तेहिंतेसिंगइ तेहिंतेसिंठिइ तेहिं तेसिं उववाए पन्नत्ते. तेसिणं भंते देवाणं केवइयं कालं ठिइ पन्नत्ता ? गोयमा ! चउदस्सवास सहस्साइं ॥

अर्थः—पूर्वोक्त पाठमां कह्युं के, गाम जावत सन्निवेसने विषे म० मनुष्य भ० होय ते केवा होय तं० ते कहेछेः- प० स्वभावे भ० भद्रिक, प० प्रकृतिना वि० वनित, प० स्वभावे उ० उपशमाव्या छे तथा प० स्वभावे उ० पातळा पाड्या छे को० क्रोध मा० मान मा० माया अने लो० लोभ, मि० सुकुमालपणुं अने म० निर अहंकारपणुं सं० पाम्या छे अ० अंगोपांग वश राखे छे वि० ते वनित अ० माता पीतानी सु० भली रूसू० शेवा भक्तिना करणहार तथा अ० माता-पीताना अण० वचनने अतिक्रमे नहि एवा वनित छे ते अप्पि० खावा पीवानी थोडी इच्छावंत अप्पा० थोडाज आरंभी अप्प० अल्प परिग्रहवंत अ०आ० जीव घात्यादिरुप थोडाज आरंभेकरी तथा अ०स० जीवने परितापना पमाडवारुप थोडाज समारंभेकरी तथा अ० थोडाज आ० आरंभ-समारंभेकरी वि० आजीविका करताथका वि० विचरताथका ब० घणा वा० वर्षो सुधी आ० आउखुं पा० पाळे पा० पाळीने का० काळने अवशरे का० काळ करीने अ० अनेरा वा० वाणव्यंतर देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे. ते० त्यां तेनी गति ते० त्यां तेनी स्थिति अने ते० त्यां तेनुं उ० उपजवुं प० कह्युं. ते०भं०दे० ते देवतानी, हे भगवान ! के० केटला का० काळनी ठि० स्थिति प० कही?

प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! च० चौद हजार वर्षनी स्थिति कही. पण ए समकितविना श्री जिनआज्ञाना आराधक नही.

हवे विनामन शील पाळे, ते पण जिन-आज्ञा बहार छे, तोपण ते देवतापणे उपजे छे. ते विषे सूत्र उववाइजीनो पाठ लखीए छीए:—

इत्थियाउ भवंति तंजहा:-अंतोअंतेउरीयाउं गयंपतियाउ मयंपतियाउ बालविहवाउं छम्तिलियाउ माइरक्खियाउं पियरक्खियाउं भायरक्खियाउ पतिरक्खियाउ कुलघररक्खियाउ सुसरकुलरक्खियाउ परूढणह मंसकेस करकरोमाउ ववगय पुप्फगंध-मल्लालंकाराउं अण्हाणग सेयजल मल पंक परित्तावियाउ ववगय खिर दहि णवणीय सप्पि तेल गुल लोण महु मद्य मंस परिचतकय हाराउ अपिछाउ अप्पारंभाउ अप्पपरिगाहाउ अप्पेणंआरंभेणं अप्पेणंसमारंभेणं अप्पेणंआरंभसमारंभेणं वित्तिंकप्पेमाणिउ अकामबंभचेर वासेणं तामेव पति सेज्जं णाइक्कमंति, ताउंणं इत्थियाउ एयारुवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं सेसं तंचेव जाव चउसहिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ ८ ॥

अर्थः—पूर्वोक्त ग्रामादि यावत् सनीवेशने विषे इ० स्त्रीउं भ० होय ते केवी होय तं० ते कहेछे:-अं० अंतःपुरने विषे रहेछे ग० जेनो धणी प्रदेश गयो छे म० जेनो धणी मर्ण पाम्यो छे बा० जे बालपणथी वि० रंडापो पामी छे छ० जेने धणीए दुर करीने छोडी दीधी छे मा० जेने मातानो भय छे तथा माताए पांखमां राखी छे पि० पीतानो भय छे तथा पीताए पांखमां राखी छे भा० भाइए पण पांखमां राखी छे प० जेनु भरथार रखवाळुं करे छे कु० बधा पीताना घरवाळा सारी रीते रखवाळुं करे छे सु० सासराना घरवाळां रखवाळुं करे छे तेथी ते

अकार्य करी शकती नथी, प० जेणे हाथपगना नख, दाढीना रोमराय (स्त्रीने न होय पण कोइ स्त्रीने अल्प होय ते माटे) माथाना केश तथा बांहानी रोमराय मोटां वधार्यां छे ( समरावती नथी ), व० जेणे छोड्यां छे पु० सेवंत्री जाइ जुइ मोगरादिक फुल गंध आमादय अने म० फुलनी माळा अलंकार आभरणादि, तेमज अ० जेणे स्नान पण छोड्युं छे तथा स० परसेवो ज० रजमात्र म० काठो मेल पं० ढीलो मेल परसेवाथी भींजाय एवी रीते प० परितापथी जेणे शरीरने क्लेश पमाड्यो छे, तथा व० जेणे छांड्यां छे खि० खीर दुध द० दही ण० माखण स० घृत, तेल, गोळ, खांड, साकरादिक लुंण म०मध म० चंद्रहास्यादिक मद्य, तथा मं० जलचर थलचर अने खेचर संबंधीना मांसनो जेणे प० परिहार कर्यो छे, अ०जेने थोडी इच्छा छे अ० कर्शणादिकनो थोडो आरंभ छे अ० धनादिकनो थोडो परिग्रह छे अ० जीव घात्यादिकनो थोडो आ. रंभ छे अ० जीवने परिताप उपजाववारुप थोडो समारंभ छे तेवा अ० थोडा आरंभ-समारंभे करी वि० वृत्ती आजीविका करतीथकी अ० विनामन ब्रह्मचर्यने विषे वसतीथकी ते जे पतिनी पोढवानी सिज्या छे ते ठाम णा० अतिक्रमती ( उलंघती ) नथी ता० एवी स्त्री जात ए० एवा प्रकारना वि० विहारे करी वि० विचरतीथकी ब० घणा वा० वर्ष सुधी, शेष बोल पूर्वनी पेरे जाणवा; जा० यावत् च० चोसठ हजार वर्ष संवत्सरनी ठि० आउखानी स्थिति प० श्री तीर्थंकरदेवे कही ॥ ८ ॥

वळी अन्यमति, तापस, ग्रहस्थी, विनयवादी अने अक्रियावादी श्री वीतरागदेवनी आज्ञाबाहार चाले छे, तोपण तेओ देवतापणे उपजे छे ते पाठ लखीए छीएः—

सेजेइमे गामागर णगर जाव सण्णिवेसेसु मणुआ भवंति तंजहाः-दगबत्तिया दगतइया दगसत्तमा दगएक्कारसगा गोयमा गोवइया गिहि-धमा धम्म-चिंतका अविरुद्ध वि-रुद्ध वुढ-सावगप्पभितयो तेसिं मणुयाणं णो कप्पंति

इमाउं णवरस विगइउं आहारेत्तए तंजहाः-खीरं दहिं णव-
णियं सप्पिं तेल्लं फाणियं महु मज्जं मंसं, णणत्थ सरिस
विगइए. तेणं मणुआ अपित्ता तंचेव सवं, णवरं चउरा-
सीति वास सहस्साई ठिई पणत्ता ॥ ए ॥

अर्थः—से० ए प्रत्यक्ष देखीता संसारी जीव गा० गाम अ० अगर
ण० नगरादिक जा० यावत् स० उरवाम वसे ते वासने विषे म० मनुष्य
उ० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-द०व० केटलाक धान्यनो द्रव्य
अने बीजुं पाणी, ते शिवाय बीजुं कांइ न ले, द०त० केटलाक बे द्रव्य
अने त्रीजु पाणी ले,द०स०केटलाक छ द्रव्य अने सातमुं पाणी ले,द०ए०
केटलाक दस द्रव्य अने अग्यारमुं पाणी ले, गो० केटलाक गौतममति
पोठीयाने माने गोव० केटलाक गायनी पेठे वृत्ति राखे ( गायनी परे
विश्रामथकी नीकळीने नीकळे, चरतां चरे, पाणीपीतां पीए, सुतां सुए,
इत्यादिक गायनी परे वर्ते ) गि० केटलाक ग्रहस्थपणुं रुडुं करी माने,
ध० धर्मशास्त्रना चिंतवणहार, अ० विनयवादी, वि० अक्रियावादी ( सर्व
दर्शनथकी विरुद्ध ) अने वु० वृद्ध श्रावक आदि पूर्वे कह्या ते० ते म०
मनुष्योने णो० न कल्पे इ० ते आगळ कहेशेः-ण० नव रसरुप विगयनो
( शरिरमां विकृति-विकार करे तेनो ) आ० आहार करवो,तं० ते कहेछे
खी० खीर दुध द० दही ण० माखण स० घृत ते० तेल फा० गोळ म०
मध म० चंद्रहास्यादि दारु अने मं० त्रण प्रकारनुं मांस न कल्पे, ण०
पण एटलुं विशेष स० एक सरसवनी विगय कल्पे. ते० एवा म० मनुष्य
अ० अल्प इछा, तेमज स० सर्व बीजुं जाणवुं, ण० पण एटलुं विशेष च०
तेमनी चोराशी हजार वर्षनी आउखानी स्थिति प० कही; अने पूर्वो-
क्तपरे जिनाज्ञाना ( परलोकना ) अणआराधक कह्या.

वळी श्री वीतरागनी आज्ञाबाहार अन्यमति, तापस, अग्निहोत्री
आदि घणा कष्टना करणहारा देवतापणे उपजता कह्या छे, ए श्री उव-
वाइजीनो पाठ लखीए छीएः—

सेजेइमे गंगाकूलगा वणपत्था तावसा नवंति तंजहाः-हो-त्तिया पोत्तिया कोत्तिया जणइ सढ्ढई घालई हुपइठा दंत्तुक्खलिया उमजाका संमजाका निमजाका संपखाला दक्खिणकूलका उत्तरकूलका संखधमका कूलधमका मिग-लूद्धका हत्थितावसा उदंडका दिसापोखिणो वाकवासिणो अंबुवासिणो बिलवासिणो जलवासिणो वेलवासिणो रुख-मूलया अंबुन्नक्खिणो वाउन्नक्खिणो सेवालन्नक्खिणो मूला-हारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुष्फाहारा फलाहारा बोयाहारा परिसडिय कंदमूल तयपत्त पुप्फफलाहारा जला-भिसेय कढिण गाय नूया आयावणाहि पंचग्गीतावेहिं इंगालसोल्लियं कंदूसोल्लियं कठसोल्लियंपिव अप्पाणंकरे-माणा बहुइं वासाइं परियायं पाउणंत्ति २ त्ता कालमासे कालंकिच्चा उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो नवंति. पलिउवमं वास-सय-सहस्स मझहियं ठिई पण्णत्ता. आराहणा ? णोइणठे समठे ॥

अर्थः—से० ए संसारिक जीव गं० गंगा नदीना कांठे जमणा डाबा पासाने विषे व० वाणप्रस्थ तापस तप अने कष्टना करणहार वनमां ठाम करी रह्या छे, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-हो अग्निहोत्रीना करणहार पो० वस्त्रना धरणहार को० जशना करणहार ज० यज्ञना करणहार स० श्रद्धावंत शास्त्रना शांजळनार, नाजननुं उपगर्ण साथे राखीने प्रवर्ते, एक कमंमल राखे, फळ नक्षे उ० एकवार पाणीमां पेसीने तत्काळ नीसरे स० वारंवार स्नान करे नि० स्नानने अर्थे वारंवार पाणीमां डुबका मारी रहे सं०माटीए घसीघसीने स्नान करे द० गंगानदीने दक्खि-णकांठे वसे उ०गंगानदीना उतरकांठे वसे सं० शंख पुरीने (वगाडीने) जमे

कू० कुळनी रीते भआरही रामनाम जपी भोजन करे मि० हिरणना मांसनुं भोजन करे ह० एक हाथी मारी घणा दीवस सुधी भोजन करे उ० उंचो दांडो करीने हींडे दि० दश दिशामां पाणी छांटी लोक-पाळनी आज्ञा मागीने फुल-फल ले वा० वृक्षनी छालनां वस्त्र पहेरे अं० पाणीमां रहे बि० बीलमां रहे ज० पाणीमां रहे वे० वृक्षना हेठळ रहे रु० रुखना मूळमां रहे अं० पाणी पीने रहे वा० वायु भक्षीने रहे से० नदीनी शेवाळ खाइने रहे मू० मुळनो आहार करे कं० कंदनो आहार करे त० वृक्षनी छालनो आहार करे प० पांदडांनो आहार करे पु० फुलनो आहार करे फ० फळनो आहार करे बी० बीजनो आहार करे प० पड्या-सड्या क० कंदमूळ तथा पु० फुल-फळनो आहार करे ज० पाणीमां स्नान करे, क० कठण गा० गात्र भू० जेणे बांध्युंछे ते आ० उन्हाळे आतापना ले, पं० चारे दिशे अग्नि अने माथे सुर्य तपे, ए० पंचाग्निना तापथी इं० जेणे कोयला सरखुं शरीर कर्युंछे, कं० कष्टथी जेणे शरीर नबलुं कर्युं छे अने क० तपश्चार्थी अधबळया काष्ट समान शरीर कर्युं छे, एवी तपश्चा करीने ब० घणा वा० वर्षलगी प० पर्याय ( तापसीनी दिक्षा ) पा० पाळे, पाळीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा जो० जोतिषि संबंधी दे० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे. तेनी प० एक पल्योपम उपर वा० एक लाख वर्षनी ठि० आउखानी स्थिति प० कही, शेष बीजा बोल पूर्वनी पेरे जाणवा; पण ते परलोकना आराधक न थाय.

सेजेइमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु पवइआ समणा भवंति तंजहाः-कंदप्पिया कुक्कुया मोहरिया गियरइप्पिया नच्चण-सीला तेणं एएणं विहारेणं विहरमाणा बहुइं-वासाइं साम-ण-परिआगं पाउणंति २ त्ता तस्स-ठाणस्स अणालोइय अप्पडिकंता कालंमासे कालंकिच्चा उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे

कंदप्पिएसु देवताए उववत्तारो नवंति. तेहिं तेसिं ठिइ सेसं तंचेव, णवरं पलिउवमं वाससहस्स मब्भहियं ठिई. ॥

अर्थः—से० ए संसारिक जीव गा० गाम नगरादि जा० यावत् स० सन्नीवेसने विषे प० प्रवर्जित स० श्रमण तपना करणहार न० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-कं० कंदर्प-कथाना करणहार, कु० कूचेष्टाना करणहार, मो० मुखारी नाना विधना अपशब्दना बोलणहार, गि० गीत करी रमणनुं करवुं जेने प्रिय छे अने न० जेनो स्वन्नाव नाचवानो छे, ए पूर्वे कह्या ते० तेवा वि० विहारे वि० विचरताथका ब० घणा वर्षलगी सा० सामान्य चारित्रपणुं पा० पाळे, पाळीने त० पूर्वे कह्यां ते स्थानक प्रत्ये अणा० गुरु आगळ आलोव्यां नथी तथा अप्प० पडिकम्यां नथी, एवा साधु का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा आघा जाय तो सो० सौधर्मनामे प्रथम देवलोकने विषे कं० कंदर्प हाश्य कौतकना करणहारा दे० देवताने विषे देवतापणे उ० उत्पात सन्याने विषे उपजे. ते० त्यां तेनी स्थिति से० शेष बोल पूर्वनीपेरे जाणवा, ण० पण एटलुं विशेष प० एक पल्योपम अने वा० एक हजार वर्षना आयुष्यनी ठि० स्थिति कही, पण तेमने आज्ञाना अणआराधक कह्या.

वळी परिव्राजक-तापस वीतरागनी आज्ञाबाहार छे, अने ते करणी करीने देवलोकमां जाय छे, ते पाठ लखीए छीएः—

सेजेइमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु परिवायगा नवंति तंजहाः-संखा जोगी कविला निउच्चा हंसा परमहंसा बहुउदगा कुधिवया कण्हपरिवायगा. तछ खलु इमे अठ माहण परिवायगा नवंति तंजहा:-कन्हेय करकंटय अंबन्नेय परासेर कन्हे दीवायणे चेव देवगुत्तेय णारखे ए. तछ खलु इमेअठ खत्तिय परिवायगा नवंति तंजहाः-सीलई ससिहरे णग्गइ नग्गई तियविदेहे राया रामे वले-

लिय ८. तेणं परिव्वायगा रिउवेय जउवेय सामवेय अथ-
वणवेय इतिहास पंचमाणं णिग्घंट उठाणं संगोवंगाणं
सरहस्साणं चउन्हंवेयाणं सारका पारका धारका वारका
सम्मंगवि सठितंत्त बिसारदा संखाणे सिक्काकप्पे वाकरणे
छंदे णिरुत्ते जोईसामायणे अणेसुय बहुसु बंजणएसु स-
व्वेसु सुपरिणिठियाविहोत्था तेणंते परिव्वायगा दाणधम्मंच
सोयधम्मंच तित्थाभिसेयंच आघवेमाणा पणवेमाणा परू-
वेमाणा विहरंति जेणं अम्मं किंचि असुई भवंति तेणं
उदयणाय मट्टियाएय पक्कालियंसमाणं सुई भवइ एवं
खलु अम्मे चोक्का चोक्कायारा सुइसुई समायाए भवेत्ता
अभिसेय जल पुयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो॥
तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति अगडंवा तलायंवा णइवा
वाविंवा पुक्करणिंवा दीहियंवा गुंजालियंवा सरंवा सागरंवा
उग्गहित्तए,णणउ अद्धाण गमणेणं॥तेसिणं परिव्वायगाणं
णोकप्पइ सगडंवा जाव संदमाणियंवा डुरूहित्ताणं गछि-
त्तए॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति आसंवा हत्थिंवा
उट्टंवा गोणंवा महिसंवा खरंवा डुरूहित्ताणं गमित्तए, णं-
णउ बलाभिउगेणं॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई णं-
डप्पेछाइवा जाव मागहपेछाइवा पेछित्तए॥तेसिणं परिव्वा-
यगाणं णोकप्पंति हरिआणं लेसणतावा घट्टणतावा थंभ-
णतावा लूसणतावा उप्पाडणतावा करित्तए॥ तेसिणं
परिव्वायगाणं णोकप्पई इत्थिकहाइवा भत्तकहाइवा देस-
कहाइवा राइकहाइवा चोरकहाइवा जणवयकहातिवा अ-
णछादंडकरित्तए॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पई अय-

पायाणिवा तउपायाणिवा तंबपायाणिवा जसदपायाणिवा जाव बहुमुल्लाणिवा धारित्तए, णणत्र अलाउपायणिवा दारुपायणिवा मट्टीयपायणिवा ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पति अयबंधाणिवा तउयबंधणाणिवा तंबबंधाणिवा जाव बहुमुल्लाणि धारितए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पइ णाणाविहवणरागरत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णणत्र एक्काए धाउरत्ताए ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति हारंवा अद्धहारंवा एकावलियंवा मुत्तावलियंवा कणगावलियंवा रयणावलिंवा मुरविंवा कंठमुरविंवा पालंवंवा तिसरयंवा कडिसुतं दसमुद्दिआणंतकंवा कडियाणिवा तुडियाणिवा अंगयाणिवा केउराणिवा कुंडलाणिवा मउडंवा चूलमणिवा पिणद्धित्तए, णणत्त एकेणं तंबिएणं पवित्तएणं॥तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पंति गंथिम वेढिम पुरिम संघातिमे चउविहे मल्लेधारिए, णणत्र एक्केणं कणपूरेणं ॥ तेसिणं परिव्वायगाणं णोकप्पइ अगरलूएणवा चंदणेणवा कुंकुमेणवा गायं अणुलिंपित्तए,णणत्र एक्काए गंगामट्टिआए॥तेसिणं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहयपत्थए जलस्स पडिग्गाहित्तए,सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे, सेविय त्थिमिउदिए नोचेवणं कद्दमोदए, सेविय बहूपसन्ने नोचेवणं अबहूपसन्ने, सेविय परिपूए नोचेवणं अपरिपूए, सेविय सावज्जेतिकाउं नोचेवणं अणवज्जोकाउ, सेविय जीवे नोचेवणं अजीवे,सेवियणं दिन्ने नोचेवणं अदिणे, सेविय पिवित्तए नोचेवणं हत्थपाय चरुचमस पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तएवा ॥ तेसिणं परि-

वायगाणं कप्पइ मागदय अद्धाअद्धाए जलस्स पडिगा-हित्तए, सेविय वहमाणे णोचेवणं अवहमाणे जाव नोचे-वणं अदिणे, सेविय हथ्थपाव चरुचमस पक्खालणठा-याए नोचेवणं पिवित्तए सिणाइत्तएवा ॥ तेसिणं परिव्वाय-गाणं कप्पइ मागदए आढए जलस्स पडिगाहित्तए, से-विय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिणे, सेविय सिणाइत्तए नोचेवणं हथपाय चरुचमस पक्खालण ठयाए पिवित्तएवा ॥ तेणं परिव्वायगा एया रुवेणं विहा-रेणं विहरमाणा बहूणं वासाइं परियागं पाउणित्ता काल-मासे कालंकिच्चा उक्कोसेणं बंभलोएकप्पे देवत्ताए उववत्ता-रो भवंति. तेहिंतेसिंगई दस सागरोवमाई ठिई पण्णत्ता सेसं तंचेव ॥

अर्थः—से० ए संसारी जीव गा० गाम, अगर, जा० यावत् स० सन्नीवेषने विषे प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासि भ० होय, ते केवा होय तं० ते कहेछेः-सं० शंखनी माफक नाद करी ध्यान करे ते, जो० अध्यात्म वेदान्त शास्त्रनुं ध्यान करे ते, क० कपिलदेवतने माने ते, भि० भृगुरुषि लोकमांही प्रसिद्ध छे तेना शिष्य वनमां फरता रहे ते, हं० पर्वतादिके वशे ते, प० नदी प्रवाहे वसे, कोपीनादिक सर्व वस्तु छोडीने प्राण तजे, अष्टांग योग साधे, इश्वरने माने अने भिक्षा अर्थेज गाममां आवे ते ब० पाणीनी परे घणा हींडे, गामे एक रात्री अने नगरे पांच रात्री रहे ते, कु० घेर रहीनेज क्रोध लोभने छांडे ते, क० कृष्ण-परिव्राजक जे नारायण परिभक्त तापस विशेष ते. त० त्यां ख० निश्चे इ० ए अ० आठ मा० ब्राह्मणनी जाति संबंधि प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिनी जाति भ० होय छे तं० ते कहेछेः-क० कृष्ण १, क० करकंटक २, अं० अंबड ३, प० पारासर ४, क०कृष्ण ५, दी० द्विपायन ६, चे० निश्चे दे०

देवगुप्त ७ अने णा० नारद ८. हवे त० तेमांही ख० निश्चे इ० ए आठ ख० क्षत्रिनी जाति संबंधि प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासि ज्ञ० होय तं० ते कहेछेः-सी० सीलवइ १, स० ससीहर २, ण० नगाइ ३, ज० जागेव ४, एम वि० विदेह ५, रा० राजा ६, रा० राम ७ अने व० बल ८. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासि रि० रुजुर्नामा-वेद १, ज० युजुर्नामा-वेद २, सा० शामनामा-वेद ३, अ० अथर्वण-वेद ४, इ० इतिहास ( अढार पुराण ) पं० ते पांचमो, णि० निर्घंटनामा छ० छठुं अंग, सं० शिक्षादिक छ अंगनां उपांग सहित स० रहस्य ज्ञावज्ञेदे करी सहित च० वे० रुजुर्वेदादिक चार वेदने सा० विसरता संज्ञारे छे, पा० वेदादिकना पार- गामी छे, धा० हैयाने विषे धारक छे, वा० अशुद्ध ज्ञणतां वारे छे, स० छ अंगना जाण छे, स० सांठितंत्रनामा शास्त्रना वि० जाण ( पंडीत ) छे, सं० शंख्या गणितशास्त्रना जाण छे, सि० शिक्षा अक्षर स्वरुप शास्त्र तथा कल्प आचार शास्त्र वा० व्याकरण शब्द लक्षण शास्त्र छं० छंद पद्य गद्य शास्त्र शब्द नि० निर्युक्ति पद जंजन शास्त्र जो० ज्योतिष शास्त्र, अयन उत्तरायन अने ज्योतिष विशेषना जाण छे, तेमज अ० अनेरा ब० घणा बं० ब्राह्मण संबंधि स० शास्त्रना सु० रुडी रीते जाण होय ते निश्चे करीने, ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासि दा० दान धर्म सो० सोच-पवित्रधर्म अने ति० तिर्थ-धर्म प्रत्ये ( गंगादिकने विषे स्नान करवुं ते ) आ० आख्यात कहेताथका प० परुपताथका प० प्रथ- मना बोल थापताथका वि० विचरे छे, जे० एम करतां जे कांइ अ० अ- मारे कि० थोडुं पण अ० अशुचि पाप ज्ञ० होय ते० ते सर्व उ० पाणीए करी म० माटीए करी प० धोयुंथकुं सु० सुचि पवित्र ज्ञ० थाय ( पाप जाय ). ए एम ख० निश्चे अ० अमे चो० निर्मळ थइ चो० सूपवित्र थइ सु० सम्यक् प्रकारे आचारवंत थइ अ० पवित्र चोख्खो आत्मा करीने स्नान करीने ज० पाणीए करी पु० पवित्र आत्मा करीने अ० विघ्नपणा रहित स० स्वर्गे ग० जइशुं. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसं- न्यासिने णो० न कल्पे अ० कुवामां त० तळावमां ण० नदीमां वा० वा-

वमां, पु० कमळ सहितनी वावमां, दी० लांबी नाळनी वावमां गुं० वांकी नाळनी वावमां, स० सरोवरमां, सा० समुद्रमां ड० पेसवुं; ण० पण एटलुं विशेष अ० अर्धामार्गे ग० गमन करतां पाणी प्रमुख आवे तो कल्पे. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे स० गाडे जा० यावत् सं० पालखी ड० उपर चडीने ग० जावुं. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे आ० घोडा ह० हाथी उ० उंट गो० बळध म० पाडा तथा ख० गधेडां ड० उपर चडीने ग० जावुं; पण ण० एटलुं विशेष ब० कोइ बलात्कारे चढावे तो कल्पे. ते० ते प० परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे ण० नाटक जोवुं जा० यावत् मा० मागध देशनुं तथा मागध वडुवादिकनुं गायन सांभळवुं तथा पे० जोवा जवुं. ते० ते परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे ह० वनस्पति-कायने ले० घसवी घ० संघटो करवो थं० उंची करवी लु० हस्तादिके करी लीलफुल स-मारवी तथा उ० उखेडवी. ते० ते परिव्राजक-दंडधरसंन्यासिने णो० न कल्पे ई० स्त्री जातिना कुळ, रुप, उपधि, शृंगारादिकनी क० कथा करवी, भ० भात, पाणी, घृत साख प्रमुखनी कथा, रा० राज्य संबंधि चतुरंग दळ भंडारीनी कथा, चो० चोर संबंधिनी कथा, ज० जनपद केटलाएक देशनी कथा, पूर्वोक्त कथाए करी अ० अनर्थदंड एटले अर्थविना आत्माने दंडवी ते न कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० लोढानां पात्र (लोटा वाडका), त० तरुवानां पात्र, तं० त्रां-बानां पात्र (भाणुं थाळि आदिक) ज० जसतनां पात्र जा० जावत् ब० घणुं मुल बेसे एवां, थोडुं मुल बेसे एवां धा० राखवां; पण ण० एटलुं विशेष अ० तुंबडानां पात्र दा० नानां मोटां लाकडानां पात्र अने म० घडा आदिक माटीनां पात्र राखवां कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० लोहना बंधने बांधेलां, त० तरुवाना बंधने बांधेलां, तं० त्रांबाना बंधने बांधेलां, जा० यावत् ब० बहु मुल्यनां रुपादिकना बंधने बांधेलां पात्र धा० राखवां. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे णा० घणा प्रकारना वर्ण, रंग, चोल, मजीठ, आल, लाख, पतंग अने कसुंबादिके

रंग्यां रातां व० वस्त्र धा० राखवां; पण ण० एटलुं विशेष ए० एक धा० गेरुए रंग्यां वस्त्र राखवां कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे हा० अढारसेरो हार, अ० अर्ध (नवसेरो) हार, ए० एकसेरो हार, मु० मोतीनो हार, क० सुवर्णनो हार, र० रत्नावली आभरण, मु० कंठने विषे मुरवि आभरण, पा० पालव झुमणो, ति० त्रणसेरो हार, क० केडनो कंदोरो, द० आंगळीनां आभरण (अनंतक आभरण विशेष) क० कटक सोनारुपानां कडां, तु० बेरखा, अं० बांह्यनां आभरण, के० बाजुबंध आभरण कुं० काननां आभरण, म० मुगट आभरण अने चु० चुडामणी आभरण पि० शरीरने विषे पहेरवां; पण ण० एटलुं विशेष ए० एक तं० त्रांबानी बनावेली प० पवित्री ( आंगळीनुं आभरण ) कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे गं० जाइआदिक चार प्रकारे फुलनी गुंथेली माळा तथा छुटां फुल धारण करवां; पण ण० एटलुं विशेष ए० एक क० कर्णफुल ( काननुं आभरण ) कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने णो० न कल्पे अ० अगरबत्तीनो धूप, च० चंदन, कु० कंकु केशर, तथा तेवा सुगंधी पदार्थ गा० शरीरपर अ० विलेपन करवा; पण ण० एटलुं विशेष ए० एक गं० गंगानदीनी माटी गोपीचंदनादिक कल्पे. ते० ते परिव्राजकोने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधि पाथो भरीने ज० पाणी प० लेवुं, से० ते पण व० वेहेतुं, नो० नहीं चे० निश्चे अ० अणवेहेतु; से० ते पण थि० निर्मल, नो० नहीं चे० निश्चे क० कोहोळुं; से० ते पण ब० घणुं प० निर्मल, नो० नही निश्चे अ० अति मेलुं; से० ते पण प० गळ्युं, नो० नहीं निश्चे अ० अणगळ्युं. से० तेने पण सा० पापसहित जाणे, नो० नहीं निश्चे अ० पाप रहित जाणे; से० तेने पण जी० जीव सहित जाणे, नो० नहीं निश्चे अ० अजीव जाणे; से० ते पण दि० दीधेलुं ले, नो० नहीं निश्चे अ० अणदीधुं ले; से० ते पण पि० पीवाने अर्थे ले, पण नो० नहीं निश्चे ह० हाथ, पा० पग च० चरु, थाळी, हांडली, च० चाटुडी, वाडकादिक उपगर्ण, प० धोवा निमीत्ते अने सि० नाहवाने अर्थे न ले. ते० ते परिव्राजकोने

कल्पे मा० मागध देश संबंधि अ० अर्ध अ० आढोमान ज० पाणी प० लेवु, से० ते पण व० नदीआदिकनुं वहेतुं कल्पे, पण नो० नहीं निश्चे अ० अणवहेतुं जा० यावत् नो० नहिं निश्चे अ० अणदीधुं; से० ते पण ह० हाथ, पग, चरु, चमचो, थाळी प्रमुख पं० धोवाने अर्थे कल्पे, पण नो० नहिं निश्चे पी० पीवुं तथा सि० स्नान करवुं. ते० ते परिव्राजकोने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधि आ० एक आढा प्रमाण ज० पाणी लेवुं, से० ते पण व० वहेतुं, नो० नहिं निश्चे अणवहेतुं जा० यावत् नो० नहिं निश्चे अ० अणदीधुं; से० ते पण सि० स्नान करवाने अर्थे कल्पे, नो० नहिं निश्चे ह० हाथ, पा० पग, च० चरु, थाळी, हांमली चाटुमी, उपगर्ण, प० धोवाने तथा अ० पीवाने अर्थे न कल्पे. जे जे कामने वास्ते ले तेते काममांज वापरे, पण अनेरा काममां वापरवुं कल्पे नहिं. ते० ते प० परिव्राजक-दंमधर संन्यासि ए० पूर्वे कह्या तेवा वि० विहारे करी वि० विचरता थका ब० घणा वा० वर्ष सुधी प० प्रवर्ज्या पाळे, पा० पाळीने का० काळने अवसरे का० काळ करीने उ० उत्कृष्टा ब० ब्रह्मनामे पांचमा देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपजे. ते० त्यां तेनी गति द० दस सा० सागरोपमनी ठि० स्थिति प० कही. दस कोमाकोमी पल्योपमनो एक सागरोपम कह्यो. से० शेष बोल पूर्वे कह्या तेमज जाणवा.

भावार्थः—हवे जुर्ज ! माता-पीतानो विनय करवानी, हाथी-तापसने हाथीनुं मांस खावानी, मृग्या-तापसने मृगनुं मांस खावानी, पंचाग्नि तापवानी, जळ स्नान करवानी तथा कंदमूळनो आहार करवानी, साधु आज्ञापण देता नथी; अने श्री वीतरागदेवे पण आ सूत्रमां जिनाज्ञाना मोक्षमार्गना अणआराधक ( आज्ञाबाहार ) कह्या. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य निपजे छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एवा कामनी साधु आज्ञा आपे नही, पण माता-पीताना विनयना करणहार तो प्रक्रतिना भद्रिक छे, अने हाथी

तापसने हाथीना मांस सिवाय तथा मृग्या-तापसने मृगना मांस सि-वाय बीजा द्रव्यनो निषेध थयो, ते करणी जिनाज्ञा मांहेली छे, तेथी पुण्य बंधाय छे. एम कहेछे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्री वीतरागदेवे तो एम नथी कह्युं के, प्रकृतिना भद्रिकपणाथी तथा बीजा द्रव्य टळ्या तेथी देवता थाय. शुं ? तमाराथी श्री वीतरागदेवमां ज्ञान थोडुं हतुं ? के एवां काम विनामतलबे सूत्रमां घाल्यां ? त्यारे तेरापंथी कहेछे के, ए कामतो कारण छे अने द्रव्य टळ्या ते कार्य छे. जेम हाथीना अने मृगना मांसथी बीजा द्रव्य टळ्या तेथी पुण्य बंधाय छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए रीते तो कोइ ग्रहस्थि मूल आपी तैयार वस्तु सु-खडी वीगेरे लइ खाय, ने रसोइनो आरंभ टाळे, अने बीजो कोइ आरंभ करतो होय तेने अचेत वस्तु आपी अनेक प्रकारना आरंभ टळावे, तेमज कोइ आरंभ टाळतो होय तेने भलो जाणे, तेने तमे पाप केम कहोछो ? ए सावद्य ( पापना ) कामथी बीजा द्रव्य टळ्या तेथी पुन्य बंधाय, त्यारे कोइ उत्तम प्राणी अनेराने मदद आपी, अनेक आरंभ छोडावे तेने गुण केम नहीं थाय ? ते डाह्या हो ते विचारी जोजो. एम उववाइसूत्रना आगला पाठमां जमाळीना मतवाळा करणी-ना बळे पुण्य बांधे, तेथी किलविषी देवतामां जाय एम कह्युं छे, अने तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या. तेमज गोशालामति करणीना बळे पुण्य बांधे, तेथी उत्कृष्टा बारमा देवलोक सुधी जाय, तोपण तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या. वळी मिथ्यात्व छुटयाविना सलिंगीप-णामां करणी करीने नव ग्रैवेयक सुधी जाय, तेने पण जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या छे. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी जिनाज्ञा बाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे. ते उपरना द्रष्टांतोथी जाणवुं. वळी उववाइसूत्रमां साधु अने श्रावक, ए बंनेने जिनाज्ञाना आराधक कह्या. जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण गुण आराधे, तेनेज आराधक कहीये. ए त्रण गुण मिथ्यात्वीमां नथी, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां नथी; छतां ते आज्ञा-बाहारनी करणीथी पुण्य बांधी देवतानी

गतिमां जाय छे. ए न्यायथी आज्ञाबाहार पुण्य निपजे छे. वळी सूयगडांग प्रथम श्रुतष्कंधे आठमे अध्ययने, मिथ्यात्वी दान, शील, तपादिकमां पराक्रम फोरवे, तेनुं पराक्रम अशुद्ध कह्युं, अने समकिति दानादिकमां पराक्रम फोरवे तेनुं पराक्रम शुद्ध कह्युं. ते श्री सूयगडांगजीना प्रथम श्रुतष्कंधना आठमा अध्ययननी गाथा २३, २४ अने २५.

जेया बुद्धा महा भागा, विरा असमत्त दंसिणो;
असुद्धं तेसिं परिक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो. ॥ २३ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बुद्धितत्वना जाण, पण जैन मार्गना अजाण छे, ते आ लोकमां पुज्य अने वि० शूरवीर कहेवाय छे, एटले कष्ट सहन करवामां वीर पुरुष छे, पण सम्यक्त दर्शन (देव, गुरु, धर्म ए त्रण तत्वनी सर्दहणा) रहित छे, तेथी तेनां अ० दान, शील, तपादिक उद्यम, पराक्रम तथा अनुष्टान सर्व अशुद्ध अने फोगट छे. स० फक्त सर्व प्रकारे कर्म बंधननुं कारण छे, पण कर्म निर्जरानुं कारण नथी. ॥ २३ ॥ हवे पंडित वीर्य आश्री कहेछे. ते गाथा २४ मीः—

जेया बुद्धा महा भागा, विरा समत्त दंसिणो;
सुद्धं तेसिं परिक्कंतं, अफलं होई सव्वसो. ॥ २४ ॥

अर्थः—जे० जे कोई बु० तिर्थंकरादिक म० माहा भाग्यवान पुज्य, वि० (वीर) घनघातियां कर्म विदारवा समर्थ छे, चार कर्म क्षय कीधां छे अने स० समकित सहित छे, सु० तेमनो उद्यम शुद्ध (हिंशा दोष रहित) छे, अने तेना अ० कर्म बंधनुं कारण (मिथ्यात्व) सर्व प्रकारे अफळ थाय. पण समकितने निर्जरानुं कारण जाणवुं. ॥ २४ ॥

तेसिंपि तवो असुद्धो, निक्खंता जे महाकुला;
जणो वन्ने वियाणंति, नसिलोगं पवेयए ॥ २५ ॥

अर्थः—ते० ते जो त० मासखमणादिक तप करे, तोपण अ० ते

अशुद्ध जाणवो, केमके ते पुजासत्कार सन्मान वांन्छे, ते कारणे तेनो तप पाकुंउं जाणवो. नि० जे वैरागे घर छांमीने म० मोटा कुळना उपन्या तेनो पण तप जो पुजासत्कारने हेते होय तो ते अशुद्ध जाणवो. जं० जेम तप कीधो ते व० अनेरा ग्रहस्थादिक न जाणे तेमने जणाववा निमित्ते न० पोताना गुण पोते न बोले, अर्थात पोतानी श्लाघा पोते न करे. ॥ २५ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! मिथ्यात्वीनी करणी ए आज्ञा मांहेलो धर्म होय तो तेनां पराक्रम अशुद्ध केम कह्यां ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनां पराक्रम अशुद्ध कह्यां छे, ते खोटां कर्तव्यमां पराक्रम फोरवे, ते आश्री अशुद्ध कह्यां छे; पण साधुजीने मिथ्यात्वी दान आपे, शीयळ पाळे, तथा तपश्या करे, ते पराक्रमने अशुद्ध नथी कह्यां. एवी मनथी कुयुक्ति मेळवे छे तेनो उत्तर. अरे भाइओ ! खोटां दान, शीयळ अने कुळाचार प्रमुख खोटां कृत्यमां पराक्रम फोरवे, तेने अशुद्ध कह्यां केहेशो तो, आगली गाथामां समकितिनां पराक्रम शुद्ध कह्यां, ते खोटा कर्तव्यमां (विषय-विकारमां संसारना काममां) पराक्रम फोरवे, ते शुं सुद्ध कह्यां हशे ? पण एम नथी. अहियां तो बंनेनां पराक्रम परलोकने अर्थे क्रिया करे तेनुंज वर्णन छे. आ अध्ययनमां आद अंत सुधी परलोकनी क्रियानोज वर्णव छे. संसारने अर्थे तो खोटां कर्तव्यमां पराक्रम फोरवे, ते तो समकिति तथा मिथ्यात्वी बंनेनां अशुद्ध छे; पण परलोक-अर्थे बंने दानादिक शुद्ध क्रियामां पराक्रम फोरवे, ते मिथ्यात्वीनां अशुद्ध, अने समकितिनां शुद्ध, एम छे. अरे भाइओ ! मान छोमी विचारो. जो खोटा दानादिकमां पराक्रम फोरवे, तेना अशुद्ध कहेशो तो, आगळ आ गाथाना चोथा पदमां टीकाकारे कह्युं छे के, मिथ्यात्वीना दानादिकथी पुन्य-प्रकृति बंधाय, पण निर्जरानां कारण नथी. जो त्रीजा पदमां खोटा दानादिक कहेशो, तो चोथे पदे पुन्य बांधे एम कह्युं छे. ए लेखे तमारी श्रद्धा सर्व उठी जशे; के-

मके जो दानादिकमां पाप कहेशो तो, तथा खोटा अर्थ करशो तो उलटी गळामां पडशे. वळी सुयगडांगजीना प्रथम श्रूतस्कंधना बीजा अध्ययननी गाथा नवमीमां कह्युं छे के, मिथ्यात्वी मास मास खमणे पारणां करे, तोपण अनंतानु बंधो माया छुटी नथी, तेथी अनंता जन्म मरण वधारे. ते गाथा नवमीः—

जेय विय णगणे किसेचरे, जयविय भुंजिये मास मंतसो;
जेइह मायाइ तिमिद्यइ, आगंता गब्भायणं तसो ॥९॥

अर्थः—जे० जो घणी क्रिया करे, ण० नग्न थइने रहे, दुर्बळ शरीरी थइने विचरे, ज० तप घणो करे, आहार निरस करे, अने मास मास खमण करीने पारणुं करे, एवी रीते जीवे त्यां सुधी करे, तोपण जे० जे कोइ माया सहित बीजाने ठगवारुप योगेकरी बगध्यानी थइ प्रवर्ते, ( ते मायानां फळ कहे छे. ) आ० ते आगमिये (भविष्य) काळे ग० गर्भने विषे जन्म मरणनां अनंतां दुःख पामे.

भावार्थः—हवे जुओ ! मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा मांहलो धर्म होय तो, अनंता जन्म मरण वधे, एम केम कह्युं ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. त्यारे तेरापंथी कहेछे के, एतो माया कपटाइनां फळ कह्यांछे. तेनो उत्तर-अरे भाइओ ! मायाकपटाइनां फळ तो खोटां छेज, तेमां शुं कहेवुं. समकिति साधु-श्रावकपण कपटाइ करेतो तेनां तो फळ खोटांज लागशे, पण अहियां तो मायाकपटाइ ए मिथ्यात्वनुं नाम छे, अने मिथ्यात्वीने मायाकपटाइ छुटी नथी, तेथी मासमासखमण तप करे, तोपण अनंता जन्म मरण वधे, एम कह्युंछे. जो एकली कपटाइनांज फळ कह्यांछे, एम कहेशो तो तपस्यानो अधिकार आ गाथामां कहेवानो शुं प्रयोजन ? अने तपस्यानां फळ केम न कह्यां ? अने ते क्यां गयां ते कहो ? अरे भाइओ ! मिथ्यात्वीनी तपश्याथी पुन्य प्रकृति बंधाय, देवतामां जाय अने त्यां सुख भोगवे; पण तेनी समी सर्दहणा विना

जन्म मरण घटे नही. तेमज अन्नवि तथा न्नवि मिथ्यात्वपणामां करणी करीने नवग्रैवेयक सुधी अनंतीवार गया, तोपण तेओनी गरज लगार मात्र सरी नहीं. जो आज्ञा मांहेलो धर्म होय तो गरज केम न सरे ? न्नगवाने तो "करेमाणे कम्मे" कह्युं बे. कर्म तोमवा मांड्यां ते तोड्यांज कहिये, निर्जरवा मांड्यां, ते निर्जर्यांज कहीये; अने मुक्तिनो मार्ग लीधो तेने मुक्ति गयाज कहीये. शास्त्र सूत्र न्नगवती सतक पहेले न्नद्देशे पहेले प्रश्न पहेले. अन्नविनो करणी आज्ञामांहेली होयतो अन्नवि मुक्ति केम न जाय ? ते माह्या हो ते विचारी जोजो. वळी श्री वीतरागदेवे सुयगमांग सूत्रमां कह्युं बे के, मिथ्यात्वीनां पराक्रम अशुद्ध अने जन्म मरण वधारनार बे. तेमज वळी नववाइ सूत्रमां मनवीना ज्ञुख-तृषा खमे, एवा कष्टथी मांमीने अनेक प्रकारनी मिथ्यात्वीनी करणी कही; अने हस्ति-तापस-आदि अनेक प्रकारना कह्या. तेमज जंमाळी, गोशाळा तथा सलिंगो, मिथ्यातपणा सहित करणी करे, तेथी पुण्य बंधाय, अने न्नत्कृष्टा नव ग्रैवेयकमां जाय, तोपण तेमने जिनाज्ञाना अणआराधक कह्या. हवे जुओ ? मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामांहेली होयतो, तेमने परलोकना मोक्षमार्गना अणआराधक केम कह्या ? त्यारे तेरापंथी कहेबे के, करणीनो करणहार तेतो आज्ञा बाहार बे, अने करणी आज्ञा मांहेली बे. तेनो न्नत्तर. अरे देवानुप्रीय ! जरा सीधी दृष्टी करीने जुओ. गुण ने गुणी जुदा नथी, एम श्री अनुयोगद्वार सूत्रमधे कह्युं बे. दंडेन दंमी, बत्तेण बत्ति पमेण पमि, तेम गुण ने गुणी जुदा नथी. तेमज चंद्रमा ने किर्ण; सुर्य ने ताप; दान ने दानी; ज्ञान ने ज्ञानी; सम्यक्त ने समकिति; चारित्र ने चारित्रियो; ध्यान ने ध्यानी; चोर ने चोरी; पाप ने पापी; पुण्य ने पुण्यवंत; तेमज मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी ए जुदां नथी. तमे कर्ता ने कर्मनो न्नेद जुदो गवेष्यो, पण सिद्धान्तना मूळ नयना प्रवाहने विषे समजता नथी. ते अनुयोगद्वारनो पाठः—

छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, पडेणं पडी, कडेणं कडी, नावाए नावीए, सगडेणं सागडीए, रहेणं रहीए, हलेणं हालीए, नाणेणं नाणी, दंसणेणं दंसी, चरित्तेणं चरित्ति ॥

अर्थः—छ० छत्रने संयोगे छ० छत्री राजा, दं० दंडने संयोगे दं० दंडी, अने प० पट वस्त्रे करी प० पट वस्त्री कहीये; तथा क० वांसनो कडो करे तेने क० कडीमान कहीये; तेमज ना० नावा (वाहाण) हंकारनारने ना० नावडीयो, स० गाडुं हांकनारने सा० गाडीत, र० रथ हांकनारने र० रथवान, अने ह० हळ हांकनारने हा० हाळी कहीये; तथा ना० जेने ज्ञान छे तेने ना० ज्ञानी, दं० दर्शने करी दं० दर्शनी, तेमज च० चारित्रे करी च० चारित्रीयो कहीये: अने जेने क्रोध छे तेने क्रोधी कहीये. एवी रीते नाम प्रमाणे गुण छे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ सूत्रना न्याय जोतां जे वस्तु आश्री जे नाम कह्युं, ते नामथी ते पुरुषने जुदो न कहीये. तेम मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी जुदी नथी. तमे अविवेकपणे शामाटे जुदा गवेषो छो ? वळी भगवतीजी सूत्र सतक पहेले उद्देशे दसमें, जीव ने जीवनी करणी जुदी नथी, पण एकज कही छे. ते पाठ लखीए छीए:—

तेणं कालेणं २ पासावच्चिज्जा कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरेभगवं एवं वयासि थेरा सामाइयं नजाणइ, थेरा सामाइयस्स अठं नयाणइ, थेरा पच्चक्काणं नयाणइ, थेरा पच्चक्काणस्स अठं नयाणइ, थेरा संजमं नयाणइ, थेरा संजमस्स अठं नजाणइ, थेरा संवरं नजाणइ, थेरा संवरस्स अठं नजाणइ, थेरा विवेगं नजाणइ, थेरा विवगस्स अठं नजाणइ, थेरा विउसग्गं नजाणइ, थेरा विउसग्गस्स अठं

नजाणइ. तएणंते थेराभगवंतो कालासवेसियपुत्तं अण-
गारे एवं वयासि जाणामोणं अज्जो सामाइयं, जाणामोणं
अज्जो सामाइयस्स अठं जाव जाणामोणं अज्जो विउस-
गस्स अठं. तएणं कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरेभ-
गवंते एवं वयासि. जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं,
जाणह सामाइयस्स अठं जाव जाणह विउसगस्स अठं,के
भे अज्जो सामाइए,केभे अज्जो सामाइयस्स अठे,के भे जाव
विउसगस्स अठे? तएणंते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं
अणगारं एवं वयासि आयाणे अज्जो सामाइए आयाणे अ-
ज्जो सामाइयस्स अठे जाव विउसगस्स अठे.तएणं से का-
लासवेसिय पुत्ते अणगारे ते थेरे भगवं एवं वयासि जइणं
भंते अज्जो आया सामाइए आया सामाइयस्स अठे जाव
आया विउसगस्सअठे अवहट्टु कोह माण माया लोभे
किमठं अज्जो गरह कालास० संजमठाए से भंते किं गर-
हा संजमे अगरहा संजमे? कालास० गरहा संजमे नोअ-
गरहा संजमे. गरहा वियणं सब्वं दोसं पविणेति सव्वं बा-
लियं परिणाए एवं खु णे आया संजमे उवहिए भवइ, एवं
खु णे आया संजमे उवचिए भवइ, एवं खु आया संजमे
उवठिए भवइ. एत्थणं कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुधे
थेरेभगवंते वंदइ णमंसइ वंदिता णमंसित्ता एवं वयासि.
एएसिणं भंते पयाणं पुव्विंअणाणयाए असवणयाए अ-
सणिआए अबोहियाए अणभिगमेणं अदिठाणं अस्सू-
याणं असुयाणं अविणायाणं अवोगडाणं अवोछिणाणं
अणिकढाणं अणुवधारियाणं एयमठेणोसदहिए,णोपत्तिए,

णोरोइए. इच्छामिणं जंते एतेसिं पयाणं जाणयाय सवणयाए बोहियाए अनिगमेणं दिठाणं सुयाणं मूयाणं विणायाणं वोगडाणं वोच्छिणाणं णिज्जुढाणं उवधारियाणं. एयं मठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि. एवमेयं सेजहेयं तुब्नेवयह ॥

अर्थः—ते० ते कालने विषे ते समयने विषे पा० श्री पार्श्वनाथजीना (अपत्य) शिष्य का० कालासवेसितपुत्र नामे अ० अणगार साधु जें० ज्यां थे० श्री माहावीरजगवंतना शिष्य श्रूतवृद्ध (घणा विद्वान स्थिवर) जगवंत छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने थे० स्थिवरजगवंत प्रत्ये ए० एम व० कहे. थे० हे स्थिवर! तमे सा० समता जावरुप सामायक न० न जाणो, तथा तेनो अर्थ प्रयोजन कर्म अनुपादानरुप ते पण न जाणो, थे० स्थिवर! प० पोरसि आदि नियम तमे न जाणो, थे० स्थिवर! प० पचखाणनो अर्थ (आश्रवद्वार निरोध) न जाणो, थे० स्थिवर! सं० पृथ्वि आदि रक्षा लक्षणरुप संजम ते न जाणो, थे० स्थिवर! सं० संजमनो अर्थ (अनाश्रवपणुं ते) न जाणो, थे० स्थिवर! सं० सर्व इंद्रि अने नोइंद्रिनो निग्रहरुप संवर ते न जाणो, थे० स्थिवर! सं० संवरनो अर्थ (अनाश्रवपणुं ते) न जाणो, थे० स्थिवर! वि० विवेक (विशिष्ट बोध ते) न जाणो, थे० स्थिवर! वि० विवेकनो अर्थ (त्याग अत्यागादि ते) न जाणो, थे० स्थिवर! वि० काउसग्ग (कायाना त्यागरुप ते) न जाणो, तेमज थे० हे स्थिवर! वि० काउसग्गनो अर्थ वांछा रहित ते पण तमे न जाणो. त तेवारे थे० स्थिवरजगवंत, का० ते कालासवेसितपुत्र-अणगार प्रत्ये ए० एम कहेता हवा. जा० जाणीये छोए हे आर्य! सा० समता प्रणामरुप सामायक, हे आर्य! सा० सामायकनो अर्थ (कर्म अनुपादान निर्जरारुप), जा० यावत् जा० जाणीए छीए हे आर्य! वि० काउसग्गनो (काया त्यागरुप तेनो) अर्थ कर्म निर्जरारुप, इत्यर्थ. त० तेवारे का० कालाशवेशितपुत्र नामे अ० साधु ते० ते थे० स्थिवरजगवंत प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. ज० जो अ० हे आर्यो! तु० तमे

जा० जाणो छो सा० सामायक, जा० वली जाणो छो सा० सामायकनो अर्थ, जा० यावत् जा० जाणोछो वि० काउसग्गनो अर्थ, तो के० शुं? तमारे सामायक, के० शुं? तमारे सामायकनो अर्थ, के० शुं? तमारे काउसग्गनो अर्थ? इति प्रश्न. त० तेवारे थे० स्थिवरभगवंत का० कालाशवेशितपुत्र-अणगार प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. आ० आत्मा णे० अमारे मते आत्मा सामायक (जीव गुणप्रतिपन्न होय त्यारे सामायकज कहीये). आ० आत्माज अमारे सामायकनो अर्थ. सामायक एटले सामायकतो जीवज पडिवजे, तेटला माटे जीवनेज सामायक कहीये. सा० सामायकनो अर्थ नवां कर्म न बांधे अने पूर्वनां कर्म खपावे. ए गुणतो जीवकने छेज, पर जीवथी गुण जुदो नथी. ते माटे आत्माज सामायकनो अर्थ जाणवो. एमज सर्व जाणवुं. जा० यावत् आत्माज अमारे वि० काउसग्गनो अर्थ. त० तेवारे ते का० कालाशवेशितपुत्र नामे अ० अणगार ते० ते स्थिवरभगवंत प्रत्ये ए० एम कहेः-ज० जो तमारे अ० हे आर्यो! आ० आत्मा सामायक, वली आ० आत्माज सामायकनो अर्थ, जा० यावत् आत्माज वि० काउसग्गनो अर्थ निरंजन रुप छे, तो अ० तजीने को० क्रोध मान माया लोभ कि० शा अर्थे? हे आर्यो! गरहो छो. निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि इत्यादि निंदा दोष विषे-संभवे. जे जीवने सावद्य लागे ते गरहियें? गुरु समीपे आलोइए? इति प्रश्न. उत्तर—का० हे कालाशवेशितपुत्र! सं० संजमने अर्थे सावद्य (पाप) गर्हां संजम थाय. से० ते भं० हे भगवान! शुं? ग० गर्हा संजम छे के, अगर्हा संजम छे? का० हे कालाशवेशितपुत्र! ग० गर्हा संजम छे, पण नो० अगर्हा संजम नथी. ग० गर्हा तेज रागादिक सर्व दोषने अथवा पूर्वकृत पापने अथवा द्वेषने प० छांडे. स० ज्ञान प्रज्ञाए जाणीने, प्रत्याख्यान प्रज्ञाए पचखीने ए० एम खु० निश्चे णे० अमारे मते आ० आत्मा सं० संजमने विषे उ० अत्यंत पुष्ट थाय. आत्मारुप संजम उपचित थाय. ए० एम खु० निश्चे आ० अमारे आत्मा सं० संजमने विषे अत्यंत स्थिर थाय. ए० इहां ते का० कालाशवेशितपुत्र-अणगार पार्श्व-

नाथजीना ( अपत्य ) शिष्य सं० नलीपेरे बोध पाम्या. थे० स्थिवरनग-वंत प्रत्ये वं० वांदे, ण० नमस्कार करे, वं० वांदीने ण० नमस्कार करीने ए० एम व० केहेता हवा. ए० ए नं० हे नगवान ! प० पदोना पूर्वे (आ पदोने विषे) अणा० जाणपणुं नहोतुं, असु० स्वरुपे नलख्या नहोता, अस० पूर्वे सांनल्या नहोता, अबो० जिनधर्मनी (माहावीरना धर्मने विषे) प्राप्ती नहोती, अण० विस्तार बोध रहित इत्यादि हेतुए करी अदि० पूर्वे शाक्षात अर्थथी लह्या नहोता, अस्सू० कोइनी समीपे सांनल्या नहोता, असु० दर्शन आकर्णनना अनावे करी. एटलामाटेज अवि० विशिष्ट बोध रहितने अवो० विशेषथी गुरुए कह्या नहोता, अवो० विपक्षादि शंदेह छेद्या नहोता, अणि० मोटा ग्रंथथी सुखावबोध नणी गुरुए कह्या नहोता, अणु० एटला माटेज अमे पूर्वे ए अर्थ अवधार्या नहोता, ए० ए प्रकारे ए अर्थ सरदह्यो नहोतो, णो० प्रतित कीधी नहोती, णोरो० रुच्या नहोता. ते इ० हवे नं० हे नगवान ! ए० ए पदना अर्थ जा० ज्ञानेकरी जाण्या, स० श्रवणेकरी शांनल्या, बो० सम्यक्तपणे बोध पाम्या, अ० विस्तारबोधी थया, दि० अर्थथी लह्या, सु० अर्थ शांनल्या, मू० दर्शन आकर्ण थया, वि० अर्थ विशेषे जाण्या, वो० विशेषथी गुरुए कह्या, वो० विपक्षादि शंदेह छेद्या, णि० मोटा ग्रंथथी सुखावबोध थया, उ० ए अर्थ अवधार्या, ए० ए अर्थ स० सरदहुं छुं, प० प्रतितुं छुं, रो० रोचवुं छुं. ए० अथ जेम ए वात तमे कहोछो ते सर्वे तेमज छे. इति नाव इत्याकिक. ए न्यायथी मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी एक छे.

वली तेरापंथीना बनावेला तेरद्वारमां पण एम कहे छे के, आश्रव ने जीव एक. संवर ने जीव एक, निर्जरा ने जीव एक, अने मोक्ष ने जीव एक. माटे ए न्यायथी पण मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्वीनी करणी एक छे. वली तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वी आज्ञा बाहार छे, अने मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा मांही छे. एम कपटथी एकान्त जुठ बोले छे. डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली मिथ्यात्वीनी करणी वखाणे, तेने समकितमां अतिचार लागे. शास्त्र सूत्र आवश्यक श्रावकना अतिचारमां, तथा

उपाशकदशामां ते पाठ लखीए छीएः—

समणे ज्ञगवं महावीरे आणंदं समणोवासगं एवं वयासि एवं खलु आणंदा समणोवासएणं! अज्ञिगय जीवाजीवे जाव अणतिक्कमई णिजेणं, सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेआला जाणियवा न समायरिवा तंजहाः-संका कंखा वितिगिछा परपासंडप्पसंसा परपासंम संथ्थवोवा ॥ १ ॥

अर्थः—हवे ज्ञगवंत, आणंदने एम कहे छे. स० श्रमण ज्ञगवंत श्री माहावीर आ० आणंद नामे स० श्रमणोपासकने ए० एम व० कहेता हवा. ए० एम ख० निश्चे आ० हे आणंद श्रमणोपासक! अ० जेणे जाण्या छे जी० जीव अजीवना ज्ञेद, तेने कोइ देवता के मानव धर्मथी चुकावी न शके, ते माटे स० श्रावकने सम्यक्तना पं० पांच अ० अतिचार पे० मिथ्यात्वपणे (न० स०) समाचरवा नही. तं० ते कहे छेः— सं० शंका एटले जीनधर्म साचो के जुठो, कं० परमतनी अज्ञिलाषा तथा धर्म करणीना फलनी अज्ञिलाषा, वि० धर्म संबंधि फलनो संदेह तथा साधुसाधवीना मलमलीन गात्र वस्त्र देखी डुगंछा करे ते, प० परदर्शनीनी प्रशंशा करे, तथा प० मिथ्यात्वीनो सं० संस्तव, परिचय करे तेने अतिचार लाग्या कहीयें.

ज्ञावार्थः—हवे जुओ! मिथ्यात्वीनी करणी वखाणवी नही एम कह्युं, त्यारे ते आज्ञामां क्यांथी? विवेकी हो ते विचारी जो जो. वली तेरापंथी प्रत्ये एम केहवुं के, जो एहनी करणी आज्ञा मांहेलो अंश मानो छो तो, एनुं ज्ञान, चार वेद अने अढार पुराण छे, तेमां केटलीक निर्वधवाणी छे, तेने पण ज्ञानना अंश गणवा जोइए; अने केटलीक लोकीक पक्षनी वातो, रात, दीवस, स्त्रि, पुरुष, कपडुं, इत्यादि अनेक वातो, जेम समकिति माने, तेमज मिथ्यात्वी माने छे; तेने पण समदृष्टिनो अंश गणवो जोइए. वली वेहेवारमां पाप त्याग करे ते, तथा

तामलीतापस आदिए पादपोपगमन संथारो कर्यो, ते पण चारित्रनो अंश गणवो जोइए. ए लेखे तो मिथ्यातमार्ग पण देशथकी मुक्ति पहोंचवानो मार्ग गणवो जोइए. अहो ड्ढ कदाग्रहिउं! ए वात केम मले? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां न होय तो मिथ्यात्वीना समकिति केम थाय? तेनो उत्तर.

अरे जाइओ! मिथ्यातपणामां करणी करे तेथी अशुज कर्म निर्जरे, तथा मोहनी कर्म पातलां पडे, तेथी कोइ जीवने जवथिति पाकी होय तो समकित आवे; अने समकित आव्या पछी ते जिनाज्ञानो आधारक कहेवाय. ते केवा दृष्टांते, ते कहे छेः—

"जेम कोइ गरीब वाणीओ बवे रुपीया जेला करीने लखपती थयो, पण ज्यारे पोताना हाथनी हुंडीओ पटे, त्यारे तेने कोठीवाल (साहुकार) कहीये. तेम मिथ्यातपणामां करणी करतां कर्म तुटे, तेथी समकित आवे, त्यारे तेने जिन-आज्ञानो आराधक कहीये; पण मिथ्यातपणामां करणी करतां अशुज कर्म तुटे अने पुन्य बंधाय, तेथी ते जिनआज्ञानो आराधक कहेवाय नही. ते अनंती वेला नवग्रैवेयक सुधि गयो, पण अनंतां जन्म मरण कर्यां. जेम सिवराजरुषि, तामलीतापस अने पूरणतापसे मिथ्यातपणामां करणी करतां अशुज कर्म तोडी पुन्य बांध्यां, तेथी तामलीतापस तथा पूरणतापस इंद्र थया, पण ज्यारे समकित पाम्या, त्यारे करणी लेखामां गणाणी. जेम रुपीआ जेला थया, हुंडी हाथनी पटेथी कोठीवाल कहेवाणा, पण हाथनी हुंडी पटया विना जे धन मल्युं ते विलाइ जाय (नाश थाय) तो ते कोठीवाल न कहेवाय. तेमज समकित आव्या पहेलां आराधिक न कहेवाय; पण ज्यारे समकित आवे त्यारेज तेने आराधिक कहीए". तेवारे तेरापंथी कहे छे के, मिथ्यातपणामां जे करणी करी ते करणीज समकित आववानुं कारण छे, अने ते आज्ञा माहेली छे. एम कहे छे तेनो उत्तर.

अरे जाइउं! सिवराज, तामली अने पूरणना सरखी करणी अ-

नंता जीवे अनंती वार करी, नव ग्रैवेयक सुधी गया, पण समकित केम न आव्युं ? ए तो ज्ञव-स्थिति पाकी, अने समकित आव्युं, तेथी ते लेखामां गणाणी; पण समकित आव्या विना मिथ्यात्वीनी करणी (आज्ञामां) लेखामां नही. जो मिथ्यात्वमां करणी करतां कर्म तुटे, ने समकित आवे, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां कहो तो, ए लेखे समकितपणामां अने यथाख्यात-चारित्रमां आज्ञा-बाहारनां कामो करे, तेथो पाछा पमे अने मिथ्यात्वमां आवे. शुं ? तमारे लेखे यथाख्यात चारित्रमां पण आज्ञा-बाहारनां कामोने मिथ्यात्वपणुं केहेवुं जोइए– ए वात केम मले ? तेवारे तेरापंथी एम कहे छे के, जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां नथी तो मिथ्यात्वीने दान देवानो, सीयल पालवानी अने लीलोत्री छोमवानो आज्ञा केम आपो छो ? एम कहे छे तेनो उत्तर.

जेम गुरुजी, मिथ्यात्वीने तथा अज्ञवि शिष्यने सूत्र ज्ञणावे तथा ज्ञान आपे, पण तेने समकितरुपी ज्ञाजन नथी, तेथी तेने अज्ञान कहीये. तेम साधुजी तो आज्ञा मांहेलां कामोनीज आज्ञा आपे, अने ते आज्ञा मांहेलुं काम करे, तोपण तेने अनाज्ञा कहीये. वली ज्ञावे साधुजीने ज्ञला जाणे, तथा ज्ञावे समकित होय तो तेने आज्ञा आराधकपणानो पण लाज्ञ थाय, तेथो साधुजी मिथ्यात्वीने दानादिक ( साधुजीने ) देवानो आज्ञा आपे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, समकिततो जीव अजीवनुं जथातथ्य जाणपणुं आवे, तथा दस बोलने समा जाणीने सरदहे, त्यारे आवे. तेनो उत्तर. अहो मतवादीउ! एतो वेहवार समकितने उलखवानां लक्षण कह्यां छे, पण निश्चे समकित तो अनंतानुबंधी चोकमीनो क्षयोपशम थयो तेने कहोये. तेनी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी छे. समकिति अंतर मुहूर्तमां जथातथ्य जीव-अजीवनुं जाणपणुं शी रीते करे ? ते कहो. वली अवध-ज्ञाननी थिति जघन्य एक समयनी कही छे. शाख सूत्र पन्नवणा पद अढारमें. एक समयमां ए अवधज्ञाने करी शुं जाणी शके ? पण केवलज्ञानीए कर्मना आवरण एक समये आघां थयां दीठां, तथा बीजे समये आवपरने वली आव्यां दीठां.

ए न्याये जीवने दर्शनावरणी कर्मनो क्षयोपशम थयो होय तो ज्ञाने समकित कहीये. वली दस प्रकारे समकितनी रुची कही छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन अठावीसमें. तेमां देव, गुरु, धर्म, श्री वीतरागना वचन तथा साधुजीने संक्षेप थकी ज्ञला जाणे तेने संक्षेप-रुची-सम्यक्त कहीये. ए न्याये साधुजीने ज्ञला जाणे तो ज्ञावे समकित कहीये; तो आज्ञानो पण लाज्ञ थाय, तेथी साधुजी आज्ञा आपे. डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली तेरापंथीने पुछीए के, मिथ्यात्वी आज्ञा मांहेली करणी करे तेथी तेनी गरज सरे के नही ? तेवारे तेरापंथी कहे छे केः—

"तामली तथा पूरण-तापस, सीवराज-रुषी, असोचा-केवली, विजय-गाथापती, सुमुख-गाथापती तथा पूर्व ज्ञवे मेघकुमार, आदि अनेक जीव मिथ्यातपणामां करणी करी एका अवतारी तथा मोक्ष गामी थया, अने मिथ्यातपणामां करणी करी तेथी तेमनी गरज सरी." एवुं कपटथी बोले छे, अने बीजा साध-श्रावकोनी करणी उठाववाने वास्ते एवी ढाळो जोडी छे. ते गाथा लखीए छीएः—

सुध समगत विण पाळीयां, अज्ञानपणे आचार ज्ञवियण
नवग्रिवेग ऊंचो गयो पण, न सरी गरज लगार ज्ञवियण
कीजो जीन धर्मनी पारखा.

एवी तो जोडो करी छे, अने वली मोढे थी एम कहे छे के "मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां छे तेथी संसार परित थाय (गरज सरे), अने साध श्रावक निर्वध करणी करी देवलोकमां तथा नवग्रैवेयकमां जाय, तो पण शुद्ध समकित विना गरज सरे नही." एम कपटथी कोइ ठेकाणे कांइ ने कोइ ठेकाणे कांइ एम जाणी जाणीने जुठुं बोले, तेनी प्रतीत केम आवे ? ते डाह्या हो ते विचारी जो जो. वली ज्ञगवती आदि घणा सूत्रमां मिथ्यात्वीने "एगंत बाले, एगंत अपंडिए, अपडिहय पावकंमे." कह्या. ते केम ? जो ते आज्ञा मांहेलुं काम होय तो एकान्त अपंडित न कहे, केमके चोथे गुणठाणे जघन्य थकी ज्ञान दर्शनना गुण प्रगट्या तेथी तेने श्री वीत-

रागदेवे आज्ञाना आराधक कह्या. ते माटे मिथ्यात गुणठाणानी करणी मूलथीज आज्ञामां नथी.

हवे मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां स्थापवा माटे तेरापंथी दृष्टान्त कहेछे केः-" जेम तलावनुं पाणी वाणीआ ब्राह्मणादिकना घेरे आव्युं ते तो शुद्ध, अने अंतज्यादि ( चंडाल ) अधम लोक लइ जाय ते अशुद्ध छे, पण जुओने ! हींण जातनुं पाणी ते उत्तमना पाणी मांहेलुं छे. ते पाणी पीधाथी तृषा जाय के नही ? " एवा दृष्टांत आपे छे, पण अविवेकीओ एम नथी जाणता के, अहियां तो त्रण ठाम बताव्यां छेः- तलाव १, उत्तम २ अने अधम ३. तेम लोकोत्तर पक्षे श्री वीतरागदेव तो तलाव अने श्रुत चारित्र रुप धर्म कह्युं ते पाणी १, जिन मार्गी चोथा गुणठाणाथी प्रारंभी चौदमा गुणठाणा सुधी जे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने उत्तरगुण चारित्ररुप तप क्रियाना करणहार ते सर्व उत्तम प्राणीनां घर २, अने ३६३ पाखंडी ते अधम लोकोनां घर ३ जाणवां. हवे जिनमत रुप तलाव मांहेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण आराधना रुप पाणी मांहेलुं, मिथ्यात्वी कयुं पाणी लइ जाय ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे के, तप, शुभ जोग, अने निर्जरारुप धर्म आज्ञा मांहेलो छे, ते रुप पाणी लइ जाय छे. एम कहे छे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! मूलगुण उत्तरगुण चारित्रविना तपने, निर्जराने अने शुभजोगने, धर्म तथा आज्ञानी आराधना कोइ ठेकाणे कही नथी. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा बाहार छे, अने आज्ञा बाहार पुन्य बंधाय छे. डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली तेरापंथीओ एम कहे छे के, संसार परित करवानी भगवाननी आज्ञा छे, अने मेघकुमारे आगला भवमां तथा सुमुखगाथापती अने विजयगाथापती आदि अनेक जीवोए मिथ्यातपणामां संसार परित कीधो छे, तेथी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां कहीये छीए. तेनो उत्तर. अरे भाइओ ! सूत्र पाठमां तो तेओने मिथ्यात्वी कह्या नथी. ते ज्ञाता सूत्रना अध्ययन पेहेलानो पाठ लखीए छीएः—

तएणं तुमं मेहा पाएणं गतं कंडुइस्सामि तिकट्टु पाए उखित्ते. तेसिंचणं अंतरंसि अणेहिय बलवंतोहिय सतेहिय पलाइजमाणे २ ससए अणुंपविठे. तएणं तुमं मेहा गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायंपडि निक्कमिस्सामि तिकट्टु तंससयं अणुपविठं पासेइ २ त्ता पाणाणुकंपयाउ भुयाणुकंपयाउ जीवाणुकंपयाउ सत्ताणुकंपयाउ अंतराचेव संधारिय नो चेवणं नखित्ते. तएणं तुमं मेहाताए पाणाणुंकंपयाए जाव सत्ताणुंकंपयाए संसार परित्तिकए मणुसाउ निबंधे. तएणंसे वणदवे अड्ढाइवाइंराइं तं वणं ज्ञामिति निठिए उवरए उवसंते निव्वाए याविहोत्था. एगंवाससय परमाउ पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे रायगिहेनयरे सेणियस्सरणो धारिणिएदेविए कुछिंसि कुमारताए पच्चाया. तएणं तुमंमेहा अणुपुव्वेणं गब्भावासाउ निक्कंतेसमाणे, उमुक्क बालभावे जोवणग मणुपत्ते. ममंअंतिए मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए. तंजइताव तुमेमेहा तिरिक्खजोणियभव मुवागएणं अपडिलद्ध सम्मत्तरयण लभेणं. सेमाए पाणाणंकंपयाए जाव अंतराचेव संधारिए नोचेवणं निक्खिति. किमंग पुण तुमंमेहा इयाणं विउल कुल समुब्भवेणं ॥ ४ ॥

अर्थः—त० तेवारे तु० तमे मे० हे मेघकुमार ! पा० पगे करीने ग० शरीर प्रत्ये कं० खंजोलसुं, ति० एवा हेतुथी पा०पग उ० उंचो उपाड्यो. ते० ते पगनी भूमिनी अं० वीचाले अ० अनेरा घणा ब० बलवंत स० शत्व जीवोए, मांरुभुं भराणुं तेथी ठेलाठेलो करतां पगने

स्थानके खाली भूमिकाने विषे स० ससलो अ० पेठो. त० त्यार पछी तु० तुमे हे मेघकुमार ! गा० शरीर प्रत्ये कं० खाजखणी, खणीने पु० वली भूमि प्रत्ये पा० हेठो पग मुंकु, एम विचार करीने,नीचे पग मुंकवा लाग्या, ति० एम करीने तं०ते ससलाने अ० पगना स्थानके पेठो देख्यो, देखीने पा० बेइन्द्रियादिक प्राणीजीवनी अनुकंपा दयार्थी, भु० भुत वनस्पति मात्रनी दयाथी, जी० पंचेन्द्रिजीव मात्रनी दयाथी, अं० वचे निराधार उंचो पग राख्यो; पण नो० निश्चे धरतीए पग मुक्यो नही. त०त्यार पछी तु० तमे मे० हे मेघकुमार ! पा० प्राणीनी अनुकंपा-दयाथी जा० यावत् स० शत्व पृथ्व्यादिकनी दया, तेमज ससलानी दयाएकरी सं० संसार परित कीधो; तथा वली म० मनुष्यनुं नि० आउखुं बांध्युं. त० त्यार पछी व० वननो दव अ० अढी रात्रदिवस सुधी बल्यो, अने व० वन पोताना क्षेत्रथी उल्लाणो एटले दव बंध पड्यो, उ० उपशान्त थयो अने ससलो बच्यो. ते समययी हे मेघ ! ए० एक सो वर्षनुं प० परम उतकृष्टुं आउखुं पा० पालीने, तमे इ० आज जं० जंबुद्वीपनामा द्वीपने विषे, भा० भरतक्षेत्रने विषे, रा० राजग्रही नगरीने विषे से० श्रेणिकराजानी पटराणी धा० धारणिदेवनी कु० कुखने विषे कु० कुमारपणे प० उपन्या. त० त्यार पछी तु० तमे हे मेघकुमार ! अ० अनुक्रमे ग० गर्भवासथकी नि० निसरी जन्म पाम्या. उ बालभावपणुं मुक्युं अने जो० जोबन वय प्राप्त थइ. त्यार पछी म० माहारी समीपे मुं० मुंड भ० थइने आ० अहस्थवास छांडीने अ० अणगारपणुं लीधुं. तं० ते कारणथीज प्रथम तु० तमे हे मेघकुमार ! ति० तिर्यंच-योनिना भव प्रत्ये उ० पाम्या अ० अणपाम्युं समकितरुप रत्न. अर्थात समकित पाम्या न हता ते पाम्या. से० ते हवे पग मुकवानी खाली जग्याने विषे पा० प्राणी ससलो राख्यो, तेनी दया करी ते जा० यावत् अं० विचाले सं० उंचो पग राख्यो, पण नो० निश्चे हे मेघ ! नि० तमे धरतीए हेठो पग मुक्यो नही. किं० किं इति कोमलामंत्रणे पु० वली तु० हे मेघ ! इ० हमणा वि० आ विस्तीर्ण कुलने विषे तमे उपन्या छो. एम श्री माहा-

वीर मेघकुमार प्रत्ये केहेता हवा. ए ज्ञातासूत्रना प्रथमाध्ययननो सूत्रार्थ.

हवे सुखविपाकसूत्रना बीजा अध्ययननो पाठ लखीए छीएः—

तेणंकालेणं तेणंसमयेणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे हत्थिणाउरे णामं नयरे होत्था. तत्थणं हत्थिणाउरेणयरे सुमुहेणामं गाहावइ परिवसइ अड्ढे. तेणंकालेणं तेणंसमयेणं धम्मघोसेणामंथेरा जाइसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं डुइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरेनगरे जेणेव सहस्संव वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अहापडिरुवं उग्गहं उगिन्हित्ताणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणस्स. तेणंकालेणं तेणंसमयेणं धम्मघोसेणं थेराणं अंतेवासी सुदत्तेणामं अणगारे उराले जाव तेउलेसेणं मासेणं विहरइ. तंसे सुदत्तेअणगारे मासखमण पारणगंसि पढमाए पोरसिए सझायंकरेइ जहा गोयम तहेव धम्मघोस थेरा आपुछंति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गेहं अणुपविठे. तत्तेणंसे सुमुहे गाहावइ सुदत्तं अणगारं एजमाणं पासइ २ त्ता हठतुठे आसणाउ अब्भुठेइ पायपिढाउ पच्चोरुहेत्ति एगसाडियं उत्तरासंगंकरेइ सुदत्तंअणगारं सत्तठ पयाइं अणुगछंति २ त्ता आयाहिणं पयाहिणं करेति २ त्ता वंदइ नमंसइ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ सयहछेणं विउलेणं असणं ४ पडिलाभेसमाणे तुठे. तत्तेणं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स दव्वसुधेणं दायगसुधेणं तिविहेणं तिकरणसुधेणं सुदत्तेअणगारे प-

भिक्खाभिसमाणे संसार परितकए. मणुसाउए निबंधे. इमा-
हिं पंच दव्वाइं पाउब्भुआइं वसुद्दारा वुठि दसद्धवणे कु-
सुमे निवात्तिते, चेलाखेलवं करेंति, आकासाउ देवडुंडही
अणंतरं वियणं आसासति अहोदाण महोदान घुठेय ॥

अर्थः—हवे सुख–विपाकसूत्रना पाठनो अर्थ कहे छे. ते० ते कालने विषे ते० ते समयने विषे इ० आ जं० जंबुद्वीपनामे द्वीपने विषे, भ० भरतक्षेत्र मांहे, ह० हस्तिनापुरनामे न० नगर हो० हतुं. त० त्यां ह० हस्तिनापुर ण० नगरने विषे सु० सुमुखनामे गा० गाथापती प० रेहेतो हतो. अ० ते रुद्धिवंत हतो. ते० ते कालने विषे ते० ते समयने विषे ध० धर्मघोषनामे थे० स्थिवर जा० जाति कुल सर्व गुण सहित जा० यावत् पं० पांचसो स० श्रमण साधुनी सि० साथे सं० प्रवर्त्तताथका पु० पूवानुपूर्वे च० विचरता, गा० ग्रामानुग्रामे डु० अनुक्रमे उलंघता, जे० ज्यां ह० हस्तिनापुर नगर छे, जे० ज्यां स० सहस्त्रावनामे व० वन उ० उद्यान छे, ते० त्यां उ० आव्या, आवीने अ० यथायोग्य उ० स्थानक बागमां उतरवानी आज्ञा मागीने सं० सत्तरभेदे संजम अने त० बार-भेदे तपे करी अ० पोतानी आत्माने भा० भावता विचरे छे. ते० ते कालने विषे ते० ते समयने विषे ध० धर्मघोषनामे थे० स्थिवरना अं० शिष्य सु० सुदत्तनामे अ० अणगार उ० जेनो भलो आचार छे, जा० यावत् जेणे ते० तेजुलेश्या गोपवी राखी छे, ते मा० मासमास खमण करता वि० विचरे छे. तं० ते सु० सुदत्तनामे अणगार मा० मास खम-णने पा० पारणे प० पेहेली पो० पोरसिए स० सजाय करीने ज० जेम गो० गौतमस्वामी श्री माहावीरदेवने पुछीने गौचरीए जता त० ते-मज ध० धर्मघोष थे० स्थिवरने आ० पुछीने जा० यावत् अ० फरता थका सु० सुमुखनामे गा० गाथापतीना गे० घरने विषे अ० आव्या. त० तेवारे से० ते सु० सुमुख गा० गाथापती सु० सुदत्त अ० अणगारने ए० आवता पा० देखे, देखीने ह० हर्ष संतोष पाम्या, पामीने आ०

आसनथकी अ० उठे, उठीने पा० पादपीठ थकी प० हेठा उतरीने ए० एक पटने डुपटे उ० उत्तरासन करीने सु० सुदत्त-अणगारने स० सात आठ प० पग अ० सामो जाय, जइने त्रण प्रदक्षिणा करी आ० आवर्तन प० परावर्तन क० करे, करीने वं० वांदे, न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने जे० ज्यां न० रसोडुं छे, ते० त्यां उ० आवे, आवीने स० पोताने हाथे वि० घणा अ० असनादिक ४ प० पडिलाभतो शंतोष पाम्यो. त० तेवारे ते सु० सुमुख गा० गाथापती ते द० द्रव्य शुद्ध, दा० दातारनुं चित्त शुद्ध, तथा ति० त्रिविध एटले शुद्ध मन, वचन, काया अने ति० त्रण करण शुद्धेकरी सु० सुदत्त-अणगारने प० प्रतिलाभ्येथके ते सुमुखनामा गाथापतीए सं० संसार प० परित कीधो. म० मनुष्यनुं वि० आउखुं बांध्युं. वली तेना घरने विषे इ० ए पं० पांच द० द्रव्य पा० प्रगट थया. व० धरतीने विषे वु० पंचवर्णां फुल अने कु० फुलनी मालानी नि० वृष्टी थइ. चे० देवदुष्य—वस्त्रनी वृष्टी थइ. आ० आकाशमां दे० देवदुंदुभी वाजी. अ० आंतरारहित आकाशने विषे अ० अहोदान म० मोटुं दान दीधुं, एम निर्घोष शब्द घु० थता हवा.

भावार्थः—हवे जुओ ! मेघकुमारे हाथीना भवमां प्राणी, भुत अने जीवनी अनुकंपा कीधी, तेथी संसार परित कर्यो कह्युं. ए अनुकंपाने समकितनुं लक्षण श्री वीतरागदेवे कह्युं छे. ए न्यायथी ते वखतमां समकित भाषे छे; कारणके लक्षण होय त्यां लक्ष अवश्य होवुं जोइए. वली सुमुख-गाथापती साधुजीने देखीने हर्ष शंतोष पाम्या, मुखे जयणा कीधी, सातआठ पग सामा गया, अने त्रण करण त्रण जोग शुद्ध राखी, घणा उलट भावे दान दीधुं, तेथी संसार परित कर्यो. ए लक्षणतो समकितीना दीसे छे, अने मिथ्यात्वी तो शुद्ध देव-गुरु-धर्मने खोटा जाणे तेने कहीये. तमे सुमुख-गाथापतीने मिथ्यात्वी कया ज्ञानेकरी जाण्या ? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, समकितीने तो एक

वैमानीक-देवतानुं आउखुं बंधाय; अने एमने:तो मनुष्यनुं आउखुं बंधायुं. तेथी मिथ्यात्वी जाण्या. एम कहे छे. तेनो उत्तरः—

अरे जाइउं ! श्री कृष्णमाहाराज तथा श्रेणीकमाहाराज, ए समकिती हता. तेमनुं नर्कनुं आउखुं केम बंधायुं ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पेहेला नर्कनुं आउखुं मिथ्यातपणामां बंधायुं, अने पछी समकित आव्युं. एम एकान्त जुठ कहे छे. हे देवानुप्रीय ! केटलाक जीवोने तो वर्तमान जवनुं आउखुं छ महिना बाकी रहे, त्यारे परजवनुं आउखुं बंधाय छे, अने केटलाक जीवोने आउखानो त्रीजो जाग रह्या पछी परजवनुं आउखुं बंधाय छे; पण बे जागमां तो कोइ जीवने परजवनुं आउखुं बंधाय नही. तेनी शाख सूत्र पन्नवणा पद २३ में.

हवे जुउं ! श्री कृष्णमाहाराजनुं हजार वर्षनुं आउखुं हतुं, तेमांथी ६६६ वर्ष झाझेरां गयां, त्यां सुधी तो परजवनुं आउखुं बंधायुं नहीं, अने समकित तो श्री नेमनाथ जगवंतने केवलज्ञान उपज्युं, त्यारथीज शेवाजक्ति करी दीशे छे. वली कृष्णमाहाराज आसरे त्रणसो वरसना हता, त्यारे राजेमतिने आवीने कह्युं के, "हे कन्या ! नेमनाथ जगवान तो संसारसमुद्र तर्या, ने तुंपण संसारसमुद्र तर." एवां वचन कह्यां छे. इहां सम्यक्त दीसे छे, अने पछी आउखुं बंधावाना समये सम्यक्त गयुं, तेथी नर्कनुं आउखुं बंधायुं दीशे छे, अने पछी वली सम्यक्त आव्युं दीसे छे. वली कृष्णमाहाराजने क्षायक-सम्यक्ति परिपाटीमां (परंपरामां) कहे छे. ते क्षायक-सम्यक्त आउखुं बांध्या पछी आव्युं होय तो अटकाव नही, पण सूत्रपाठमां तो क्षायक-सम्यक्त कह्युं नथी. क्षयोपशम-सम्यक्त दीसे छे. तेनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्तनी अने उत्कृष्टी ६६ सागरनी कही छे. सास्वादन-सम्यक्तनी जघन्य तथा उत्कृष्टी छ आवलकानी, उपशम-सम्यक्तनी एक समयनी अने उत्कृष्टी अंतर मुहूर्तनी, वेदक-सम्यक्तनी जघन्य उत्कृष्टी एक समयनी छे, अने क्षायक-सम्यक्तनी आद छे पण अंत नथी, एटले ते आव्युं पाछुं जाय नही. शाख

सूत्र पन्नवणा पद १८ मे. वली एक जीवने एक भवमां अशंख्याती वेला सम्यक्त आवे अने जाय, एम कह्युं छे. वली समकितिनी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही छे. ते अंतर मुहूर्तना अशंख्याता भेद छे. जघन्य बे समयने अंतर मुहूर्त कहीये; केमके वेदनी कर्मनी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ में तथा भगवतीजीमां तथा पन्नवणा पद २३ में. वेदनी कर्मना बे भेदः— शाता अने अशाता. शाता वेदनीना बे भेदः-संप्राय अने इरियावही. इरियावहीनी स्थिति बे समयनी कही छे. शाख सूत्र पन्नवणा पद २३ में तथा भगवतीजीमां. ए न्याये जघन्य बे समयने अंतर मुहूर्त कहीये, अने उत्कृष्टा बे समयथी मांडीने एक अंतर मुहूर्तमां एक समय उणो होय तेने अंतरमुहूर्त कहीये. एम असंख्याता भेद छे.

ए न्याये आउखाना बंध समये सम्यक्त गयु दीसे छे. जेम मेघ-कुमारने हाथीना भवमां, तथा सुमुख तथा विज्य-गाथापतीने सम्यक्त फर्शवाथी संसार परित थयो छे, तथा सम्यक्तथी सनमुख थया छे, अने मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं तेवेला सम्यक्त गयुं दीसे छे. पछी तो श्री केवलीमाहाराज स्वीकारे ते सत्य छे. वली ज्यारे मेघकुमार संजमथी डगीने प्रभुपासे आव्या, त्यारे श्री वीरप्रभुए कह्युं के, "हे मेघ! तें हाथीना भवमां दया पाली, तेथी तिर्यंचना भवमां सम्यक्त लाध्युं." एम कह्युं. ते श्री ज्ञाताजीना अध्ययन पेहेलानो पाठ लखीए छीएः—

तंजइत्ताव तुमे मेहा तिरिक्ख-जोणिय भवमुवागएणं अ-प्पडिलध्द सम्मतरयण लभेणं सेमाए पाणाणुकंपयाए जाव अंतराचेव संधारिए णो चेवणं णिक्खित्ते किमंगपु-ण तुमे मेहा इयाणिं विउल कुल समुब्भवेणं ॥

अर्थः—पुर्ववत्. जुओ प्रश्न पहेलो. पाछलपांने ४९ में.

भावार्थः—अहीयां कह्युं छे के, कोइ दीवस नही मलेलुं एवुं

समकितरत्न मळ्युं. मूलपाठना अक्षरनो तो एवो अर्थ थाय छे, अने केटलाक टबामां मुलगो अर्थ करीने पछी कह्युं छे के, "एतावता सम्यक्त्त अणपाम्यो." पण जुओ ! ए अर्थ कया पाठना अक्षर छे? पाठविना अर्थ प्रमाण थाय नही. माटे मुलगा अर्थमां समकित-रत्न पाम्या कह्युं, तेज प्रमाण छे. वली सनत्कुमार-इन्द्रनी, सुर्याभदेवनी अने बीजा इन्द्रोनी बार बोलनी पुछा चाली; तेमां श्री वीतरागदेवे "सम्यक्त" पेहेलुं कह्युं छे, अने परित संसार पछी कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र श्री भगवतीजी शतक त्रीजे उद्देशे पेहेले ते पाठ लखीए छीए:—

सणंकुमारेणं भंते! देविंदेदेवराया किं? भवसिद्धिए अभव सिद्धिए सम्मदिट्ठिए मिच्छादिट्ठिए परितसंसारिए अणंतसंसारिए सुलभबोहिए दुलभबोहिए आराहए विराहए चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारे देविंदेदेवराया भवसिद्धिए नो-अभवसिद्धिए. एवं सम्मदिट्ठि परित्तसंसारि सुलभबोहिए आराहए चरिमे. पसथंनेयव्वं. सेकेणट्ठेणं भंते ! गोयमा ! सणंकुमारे देविंदेदेवराया बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पथ्थकामए आणुकंपिय निस्सयसिय हियसुह निस्सेसकामए. सेतेणट्ठेणं गोयमा! सणंकुमारे देविंदे भवसिद्धिए जाव नोअचरिमे ॥

अर्थः—श्री माहावीर स्वामी प्रत्ये गौतम स्वामी पुछता हवा. स० सनत्कुमार. भं० हे भगवान ! दे० देवेंद्र देवराजा किं० शुं भ० भव सिद्धिक भव्य छे, के अ० अभव्य छे ? स० सम्यक्दृष्टि छे के मि० मिथ्यादृष्टि छे ? प० अल्पसंसारी छे के अ० अनंतसंसारी छे ? सु० सुलभ बोधी छे के दु० दुर्लभबोधी छे ? आ० ज्ञानादिकनो आराधक छे के वि० विराधक छे ? च० चरम छे के अ० अचरम छे ? इति प्रश्न. उत्तर

गो० हे गौतम ! स० सनत्कुमार दे० देवेंद्र देवराजा भ० भव्य छे नो० अभव्य नथी, ए० तेमज स० सम्यक दृष्टि छे, प० अल्प संसारी छे, अनंत संसारी नथी, सु० सुलभबोधी छे दुर्लभबोधी नथी, आ० आराधक छे विराधक नथी, च० चरम छे, ए रीते प० प्रशस्त (भला) केहेवा अने अप्रशस्त छोरुवा. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान! एम कह्युं? इति प्रश्न. उत्तर. गो०हे गौतम ! स०सनत्कुमार दे०देवेंद्र देवराजा ब०घणा स० श्रमण साधुने, ब०घणी स० श्रमणी साधवीने, ब०घणा सा०श्रावकने, ब०घणी सा० श्रावीकाने, हि० हित सुख निबंधन वस्तुना वान्छक१, सु० सुखना वान्छक २, प०दुःख त्राणना कामी एटले भुख्याने सुखकारी आहार आपे ३, अ०कृपाएकरी सहित ४, नि०मोक्षना इच्छक छे५. हि०हितसुख अने अदुःखानुबंध नि० निशेष समस्तने वान्छे. एम जाणे के समस्त दुःखरहित थाउं ने मोक्ष जाउं. एवा हितना कारणथी साध-साधवी तथा श्रावक श्रावीका आदिनुं सुख वान्छे छे. से० ते अर्थे गो० हे गौतम ! स० सनत्कुमार दे० देवेंद्रदेवराजा भ० भव्य छे जा० यावत् नो० अचरम नथी.

भावार्थः—हवे जुउं ! ए बार बोलमां संसार एकथी एक बोलमां हलवो कह्यो. ए अभवि नथी पण भवि छे. भविना बे भेदः—समकिति अने मिथ्यात्वी. ए कोण छे? ए समकिति छे. समकितिना बे भेदः- अनंत-संसारी अने परित-संसारी. ए कोण छे ? ए परित-संसारी छे. परित-संसारीना बे भेदः- सुर्लभबोधी अने दुलभबोधी. ए कोण छे? ए सुलभबोधी छे. सुलभबोधीना बे भेदः- आराधक अने विराधक. ए कोण छे? ए आराधक छे. आराधकना बे भेदः- अचरम अने चरम. ए कोण छे? ए चरमशरीरो छे. ए जुउं ! समकित पेहेलुं कह्युं, अने संसार परित पछी कह्युं. ए न्याये मिथ्यातमां संसार परित थाय नहीं. वली परित-संसारीनी स्थिति उत्कृष्टी अर्धपुद्गल देश उणी कही; अने समकित आव्या पछी पण संसार उत्कृष्टो अर्धपुद्गल देश उणो बाकी रह्यो कह्यो; अने समकितिनी अने परित-संसारीनी जघन्य

स्थिति अंतर मुहूर्तनी कही. ते संसार परित्त कीधा पछी अंतरमुहूर्तमां मुक्ति जाय. शाख सूत्र पन्नवणा पद १८ में. ए न्याये समकित आव्या पछीज संसार परित्त थाय, पण मिथ्यातमां संसार परित्त थाय नहीं. पछीतो श्री केवली माहाराज जाणे. वली जेने जीव-अजीव अने त्रस-थावरनुं जाणपणुं नथी, तेनां पच्चखाणने दुपच्चखाण कह्यां. तेनी शाख सूत्र भगवतीजी शतक सातमे, उद्देसे बीजे. ते पाठ लखीए छीए:—

सेणुणं भंते! सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्ते-हिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ दुपच्च-क्खायं भवइ? गो०! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ॥ सेकेणठेणं भंते! एवं वुच्चइ? सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ. गो०! जस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय-मिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमणागयं भवइ इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा त-स्सणं सव्वपाणेहिं सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नोसुपच्चक्खायं भवइ दुपच्चक्खायं भवइ एवं खलुसे दुपच्चक्खाइ॥ सव्वपाणे जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चंभासं भासइ मोसंभासं भासइ एवं खलुसे मुसावाइ॥ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिवि-हं तिविहेणं असंजय अवरिय अप्पडिहय पच्चक्खाय पाव-कम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबालेयाविभविस्सइ जस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमितिवदमा-णस्स एवं अभिसमणागयं भवइ इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं

पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ नोदुपच्चक्खायं एवं खलुसे सुपच्चक्खाइ ॥ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्चंभासं भासइ नोमुसंभासं भासइ एवं खलुसे सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंत पंडियावि भवइ ॥ सेतेणट्ठेणं गो० ! एवंवुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खाय भवइ. ॥

अर्थः—श्री माहावीर भगवंत प्रत्ये गौतमस्वामी पुछता हवा. से० ते निश्चे भं हे भगवान ! स० सर्व प्राणेकरी, स० भु० सर्व भुतेकरी, स० जी० सर्व जीवेकरी, स० स० सर्व सत्वेकरी, ( यतः ॥ प्राणा द्वित्री चतुः प्रोक्ता, भूतास्तु तर्व स्मृता, जीवा पंचेंद्रिया ज्ञेया, शेषा सत्वा प्रकीर्तीता ॥ १ ॥) प० सर्व चेतनने हणवानुं पचखाण में कर्युं, एवुं कहे तेने सु० भलुं पचखाण भ० थाय के दु० माठुं पचखाण भ० थाय ? इति प्रश्नः उत्तर गो० हे गौतम ! स० पा० सर्व प्राणेकरी, सर्व भुतेकरी, सर्व जीवेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी जा० पचखाण सुपचखाण पण थाय अने दुपचखाण पण थाय. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? उभय वस्तु थायः इति प्रश्नः उत्तर गो० हे गौतम ! ज० जे स० सर्व प्राण भुत जीवनो जा० यावत् स० सर्व सत्वनो प० नियम में कीधो, में हणवाना पचखाण कर्या, एम कहे तेने, णो० नही ए० एम अ० वक्कमाण प्रकारे एटले आगल कहीये छीये तेम तेने ज्ञानेकरी जाणपणुं न होय. इ० ए जीव छे, इ० अ० ए अजीव छे, इ०त० ए त्रस जीव बेइंद्रियादिक छे, इ०था० ए स्थावर वृक्षादिक छे, त० ते स० सर्व प्राणनुं यावत् स०स० सर्व सत्वनुं प० पचखाण कर्युं छे एम कहे छे, पण जीव अजीव त्रस स्थावरनुं स्वरुप ज्ञानेकरी जाण्युं नहोय तेने, नो० सुपचखाण न थायः (ज्ञानना अभावे

करी जेम छे तेम पाले नही, ते माटे सुपचखाणपणानो अजाव छे). यतः जो जीवेवि नयाणइ अजीवेवि नयाणइ, जीवाजीवे अयाणंतो, कहसो नाहि संजमं ॥ गाथार्थः—जे जीवअजीना जेद जाणे छे, तेने सुपचखाणी संजमी कहेवो; पण जे जीवअजीवना जेद जाणतो नथी, ते सुपचखाणी संजमी कहेवाय नही, (एटले ते सुपचखाणना अजावे करीने असंजमी छे इत्यादि ) पण ङु० ङुपचखाण थाय एटले तेनां माठां पचखाण कहीए. ए० एम ख० निश्चे ङु० ङुपचखाणी कहीये. स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् सर्व सत्वेकरी प० में पचखाण कर्युं एम कहे ते, नो० साची जाषा बोलतो नथी, एटले मो० कुमी जाषा बोले छे. ए० एम निश्चे मु० ते जुठ बोलणहार छे. स० सर्व प्राणीने विषे जा० यावत् सर्व सत्वने विषे ति० त्रिविध (करनार, करावनार अने अनुमोदनार ए त्रण जिन्न जेद योग आश्रइने ति० मन-वचन-कायाए करी अ० असंजति प्राणवधादि प्रहारने विषे अयत्नवंत अ० वृतरहित, अ० नथी हण्या पचखाणे करी पा० पापकर्म जेणे, स० कायिक्यादि क्रिया सहित अ० नथी संवर्यो आश्रवद्वार जेणे, ते ए० सर्वथा प्रकारे स्वपरप्रत्ये दंमे, तथा ए० सर्वथा प्रकारे अज्ञानी होय. वली ज० जे स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् सर्व सत्वेकरी प० पचखाण में कर्युं, एवुं कहे तेने, ए० एम वक्तमाण प्रकारे अ० जाएयुं होय इ० ए जीव छे, इ० ए अजीव छे, इ०त० ए त्रसजीव छे, इ० ए स्थावर वृक्षादिक छे, त० तेने स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी प० पचखाण में कर्युं, एवुं केहेतां ते सु० सुपचखाणी थाय, पण नो० ङुपचखाणी न थाय. ए० एम निश्चे से० ते सु० सुपचखाणी थाय. वली स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् स० सर्व सत्वेकरी, त्रिविधे त्रिविधे करी प० में पचखाण कर्युं, एम व० कहे ते स० सत्य वाणी बोलनार केहेवाय, पण नो०मु० निश्चे ते जुठनो बोलणहार न केहेवाय. ए० एम निश्चे ते स० सर्व प्राणेकरी जा० यावत् सर्व सत्वेकरी ति०ति० त्रिविधे त्रिविधे करी सं० संजति वि० विरति प० प्रतिहत प० पचखाणे करी पा० पापकर्म-

जेणे, अ० कायिक्यादि क्रिया रहित सं० संवर्या छे आश्रवद्वार जेणे, ते ए० एकान्त पं० पंमित सर्वथा-ज्ञानी थाय. से० ते तेणे अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम वु० कह्युं जा० यावत् सि० कोइ सुपचखाणी थाय अने दु० कोइ दुपचखाणी पण थाय.

जावार्थः—हवे जुन ! मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां होय तो श्री वीतरागदेवे तेनां पचखाण माठां केम कह्यां ? माह्या हो ते वीचारी जो जो. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा बाहार कहीये; अने आज्ञा बाहार पुण्य बंधाय छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पुण्य बंधाय ते आज्ञा मांहेली करणी छे, अने आज्ञा बाहारनी करणीमां एकान्त पाप बंधाय छे. तेमने पुछवुं के, उववाइआदि घणा सूत्रमां मिथ्यात्वीने जिनाज्ञाना (परलोकना) अणआराधक तो कह्या छे, पण मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां क्यां कही छे? अने मिथ्यात्वीने जिनाज्ञाना (मोक्षना) आराधक क्या सूत्रमां कह्या छे ? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जगवती सूत्र शतक आठमे उद्देशे दसमे चोजंगी कही छे, तेना पेहेला जांगामां मिथ्यात्वीने देश आराधक कह्या छे. एवी एकान्त जुठी शाख बतावे छे, पण त्यां तो एम कह्युं छे के, केटलाक मिथ्यात्वी ज्ञानने श्रेष्ट कहे छे, केटलाक शीलाचारने श्रेष्ट कहे छे अने केटलाक शीलाचार तथा ज्ञान, ए बंन्नेने श्रेष्ट कहे छे. एम एकान्त त्रण प्रकारे मिथ्यात्वी श्रेष्ट कहे छे, तेने जगवंते जुठा बोला कह्या छे. ते पाठः—

रायगिहे जाव एवं वयासि अणउत्थियाणं जंते ! एव माइ क्खइ जाव एवं परुवेइ एवं खलु सीलं सेयं सुयंसेयं सीलं सुयंसेयं. सेकहमेयं जंते ! एवं गो० ! जणंते अणउत्थिया एवमाइक्खइ जाव जेतेएवमाहंसु मिछंते एव माहंसु. अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परुवेमि एवं खलु मए चत्तारि पुरुषजाया पं० तं० सीलसंपन्नेणामएगे णोसुयसं-

पन्ने, सुयसंपन्नेणामएगे णो सील संपन्ने, एगे सीलसंपन्नेवि सुयसंपन्नेवि, एगे णोसीलसंपन्ने णोसुयसंपन्ने. तत्थणं जेसे पढमे पुरिसजाए सेणंपुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविणायधम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे देसाराहे पणत्ते. तत्थणं जेसे दोच्चे पुरिसजाय असीलवंसुयवं अणुविरए विणायधम्मे एसणं गो०! मए पुरिसे देसेविराहए पं०. तत्थणं जेसे तच्चे पुरिस जाए सेणं पुरिसे सीलवं सुयवं उवरय विणायधम्मे एसणं गो०! मए पुरिसे सवाराहए पं०. तत्थणं जेसे चउथे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलवं असुयवं अणुविरए अविणायधम्मे एसणं गो०! मएपुरिसे सव्वविराहए पं० ॥

अर्थः—रा० राजग्रही नगरीने विषे जा० यावत् ए० एम व० कहे. अ० अन्यतिर्थी, भं० हे भगवान! ए० एम कहे छे, जा यावत् ए० एम प० परुपे छेः-एवं खलु सीलंसेयं सुयंसेयं सीलंसुयं सेयमिति० एम लोक प्रसिद्ध न्याये करी निश्चे अहिंयां केटलाक अन्यतिर्थी क्रिया मात्रथीज वांछितार्थनी सिद्धि वांछे छे, एटले क्रियाथीज मोक्ष माने छे. ते कहे छे के, ज्ञानथी कांइ प्रयोजन नथी; कारण के घटादिक कार्यनी प्रवृत्तिने विषे आकाशादि पदार्थवत् निचेष्टित छे. यतः

जहा खरो चंदन भारवाहि, भारसभागि नहु चंदणस्स;
एवंखु नाणि चरणेण हिणो, णाणस्सभागि नहू सग्गइउ॥

जेम रासभ चंदननो भारो वेहेनार, भारनो भजनहार होय, पण चंदननो गुण जाणनार न होय; तेम निश्चे जे ज्ञानी चारित्रे करी हीण होय ते, ज्ञाननो भजनहार होय, पण ते सुगतिनो (मुक्तिनो) भजनहार न होय. एटला माटे सीलनो नेश्रायवंत एम परुपे छे के, प्राणातिपात

विरमण ध्यान अध्ययनादिरुप क्रिया तेज अतिशये करी श्रेय (प्रशंश-नय) छे, कारण के पुरुषार्थ साधकपणाथी ते क्रियानेज वान्छे, तथा केटलाक सुण ज्ञानथीज वान्छितार्थनी सिद्धि वान्छे छे, पण क्रियाथी नथी वान्छता; कारण के ज्ञानने क्रिया विना पण फल सिद्धिरुप कह्युं छे.

आहच्चः-पढमं णाणं तउ दया एवं चिठइ सबसंजए;
अणाणि किंकाही किंवा नाहि सेय पावगं ॥१॥

एटला माटे श्रुतनो नेश्रायवंत एम परुपे छे के, श्रुतज्ञान तेज पुरुषार्थ सिद्धिपणा माटे अतिशये करी श्रेय आश्रय करवा योग्य छे, पण सील क्रियानुं प्रयोजन नथी; अने केटलाक ज्ञान, क्रिया बंन्नेने अन्यो अन्य निर्पेक्ष वांछे छे. ज्ञान, क्रिया विनाज उपसर्जनी भुत फल आपे, अने क्रिया पण ज्ञान विना उपसर्जनी भुत फल आपे, इति भाव. एटला माटे ते कहे छे के, श्रुत श्रेय; तथा सील श्रेय. ए बंने प्रत्येके पुरुषने पवित्रताना निबंधनपणाथी श्रेय छे. बीजा केटलाक एम कहे छे के, शील श्रेय; ते मुख्य वृत्तिए तथा गौण वृत्तिए करी एकेकने उपकारपणाथी इत्यर्थ. ए अर्थ अहिंयां सूत्रने विषे काकु पाठथी लाभीए छीए. ए पुर्वोक्त त्रणे पक्षने विषे अनंगपणाथी फल सिद्धि न थाय. समुदाय पक्षनेज फलसिद्धि थाय.

आहच्चः-णाणं पयासय सोहउ, तवो संजमोय गुत्तिकरो,
तिण्हंपि समाउग्गो, मोखो जिण सासणे भणिउं॥२॥

तप संजम ए बन्ने सीलज छे. तथा

संजोग सिध्धिए फलवयंति, नहु एक चक्केण रहो पायइं;
अंधोय पंगु वणे समिच्चा, तेसंप्पउत्ता नगरे प्पविठइ॥३॥

बीजा व्याख्यान पक्षे पण मिथ्यात्वी संजोगथकी फल सिद्धिना देवाथी; अकेक प्रधान गौण विवक्षाए करी असंगतपणाथी सिद्धि छे; एम विसंवादरुप परुपे छे.

पाठार्थः--से० ते केम भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! ज० यदि ते अ० अन्यतिर्थी ए० एम मा० कहे छे, जा० यावत् जे० पुर्वे कह्युं तेम कहे, तो मि० जुठुं छे ए० एमनुं केहेवुं. अ० हुं पु० वली गो० हे गौतम ! ए० एम मा० कहुं छुं जा० यावत् प० परुपुं छुंः-श्रुतयुक्त शील श्रेय, एटले ज्ञान सहित क्रिया वान्छितार्थ फलदायक थाय. यतः हतं ज्ञानं क्रिया हीनं, इत्यादिक. तथा अंधपंगुने द्रष्टान्ते करी ज्ञानयुक्ते करी श्रेय एवुं वाक्य शेष देखवुं. ए० एम ख० निश्चे मं० में च० चार पुरुषनां प्रमाण प० कह्यां, तं० ते कहे छेः—सी० त्यां एक पुरुष शील एटले क्रियासहित छे, पण णो० सु० ज्ञाने करी सहित नथी, एटले ज्ञानरहित छे १, एक पुरुष सु० श्रुत एटले ज्ञाने करी संपन्न छे, पण णो०सी० क्रिया संपन्न नथी, एटले ज्ञानयुक्त क्रियारहित छे २, ए० एक पुरुष सी० क्रियाए करी पण सहित छे अने सु० ज्ञाने करी पण सहित छे, एटले ज्ञान अने क्रिया बन्ने युक्त छे ३, अने ए० एक पुरुष णो०सी० क्रियाए करी सहित नथी, अने णो०सु० ज्ञाने करी सहित नथी, एटले ते पुरुष ज्ञान अने क्रिया बंन्नेथी (विकल) भ्रष्ट छे. ४ त० त्यां जे० जे प० प्रथम पुरुष जात, से० ते पुरुष से० सी० क्रियावंत छे, पण अ० ज्ञानवंत नथी. उ० ते पोतानी बुद्धीए पापथी निवर्त्यो छे, पण अ० ध० श्रुत ज्ञानना अभावथी धर्म जाण्यो नथी, अने पोते गुरु धार्या विना पोतानी मेळेज जोग लइ बालवयथी तपस्या करे छे, तेने अगीतार्थ कहेवो. ए० एने गो० हे गौतम ! म० में दे० देशथकी थोडे अंशे आराधक कह्यो. ते भला बोध एटले ज्ञानरहित छे, पण क्रिया एटले द्रव्य चारित्रमां तत्पर छे तेथी. हवे एनां लक्षणनी गाथा कहे छः- शिलवय पालंतो, परमथं णेव जाणए तस्स, असद्दो आगार विलो, देशेण राहगो मणुउं. ॥ त० त्यां जे० जे दो० बीजो पु० पुरुष अ० शीलवंत नथी पण श्रुतवंत छे. अ० ते पापथी निवर्त्यो नथी, पण वि० धर्म जाण्यो छे एटले अवृति सम्यक्द्दष्टि छे इत्यर्थ. ए एने गो० हे गौतम ! म० में दे० थोडा अंशे ज्ञानादि त्रयरुप मोक्षमार्गना त्रीजा भाग रुप चारित्र विराधे

छे (पाम्यो छे पण पालतो नथी अथवा अप्राप्ती छे). तेथी देश-विराधक कह्यो. हवे एना लक्षणनी गाथाः- जाणंतो तिरंतो, निव्वाघाए नकुणइ, जोधम्मं साया सुह पकिवद्धो, देसेण विराहगो भणुउं. ॥ १ ॥ त० त्यां जे त० त्रीजो पु० पुरुष जात, से० ते पुरुष सी० क्रियावंत पण छे, अने सु० ज्ञानवंत पण छे. उ० ते पापथी निवर्त्यो छे अने वि० सम्यक्त श्रुत धर्म जाण्यो छे. ए० एहने गो० हे गौतम ! म० में स० सर्व ( त्रणे प्रकारना मोक्षमार्गनो ) आराधक कह्यो. हवे इहां श्रुत शब्दे करी ज्ञान दर्शन, अने शील शब्दे करी चारित्र तप संग्रहवाथी आराधना होय, एटले समुदित शील तथा श्रुतने विषे श्रेयपणुं कह्युं. ते विषे गाथाः- धम्मे उवठियाणं, जंकरणि जंसुए निद्दिठं, विरियस्स अनिग्गुहो, तत्थय आराहणा भणिया ॥१॥ एवा पुरुषने हुं सर्व-आराधक कहुंछुं. त० त्यां णं०इति वाक्यालंकारे जे० ते च० चोथा पुरुषनी जात, से० ते पु० पुरुष असी० क्रियावंत पण नथी अने असु० ज्ञानवंत पण नथी. अ० ते पापकर्मथी निवर्त्यो पण नथी अने अ० धर्म पण जाण्यो नथी. ए० एहने गो० हे गौतम ! म० में स० सर्व-विराधक एटले ज्ञान दर्शन अने चारित्र, ए त्रणेनो विराधक मिथ्यादृष्टि कह्यो. तथा अणपाम्या आश्री सर्व-विराधक कह्यो. हवे आराधकनेज वली विशेष भेद करीने कहे छे. ते पाठ लखीए छीएः-

कइ विहेणं भंते ! आराहणा पं० गो० ! तिविहा आराहणा पं० तं० णाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा. णाणाराहणाणं भंते ! कइविहे पं० ? गो० ! तिविहा पं० उक्कोसिया मज्झिमा जहण्णा. दंसणाराहणाणं भंते ! एवंचेव तिविहावि एवं चरित्ताराहणावि॥ (अर्थः-पुर्ववत् पाने त्रीजे.)

हवे उपर कहेली आराधनाना भेदनोज मांहोमांहे उपनिबंधन करतो कहे छे. ते पाठ लखीए छीएः—

९

जस्सणं भंते! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसावा अजहन्नुकोसावा. जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स णाणाराहणा उक्कोसावा जहणावा अजहन्नमणुक्कोसावा. जस्सणं भंते! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा? गो०! जहा उक्कोसिया णाणाराहणा दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया णाणाराहणा चरित्ताराहणाय भाणियव्वा. जस्सणं भंते उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ? गो० ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसावा जहणावा अजहणमणुक्कोसावा. जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा णियमा उक्कोसा. उक्कोसियाणं भंते! णाणाराहणा आराहित्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ? गो० अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेई अत्थेगईए कप्पोवएसुवा कप्पातिएसुवा उववजइ. उक्कोसियाणं भंते! दंसणाराहणा आराहित्ता कइहिं भवग्गहणेहिं ? एवंचेव. उक्कोसियाणं भंते! चरित्ताराहणा आराहेत्ता ? एवंचेव णवरं अत्थेगइए कप्पातिएसु उववज्जइ. मज्झिमएणं भंते! णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्ग-

हणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ? गो०! अत्थेगइए दोच्चे-
भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ तच्चंपुणभवगाहणं
नाइक्कम्मइ. मज्झिमएणं भंते! दंसणाराहणा आराहेत्ता?
एवंचेव एवंमज्झिमियं चरित्ताराहणंपि. जहण्णियणं भंते!
णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव
अंतंकरेइ? गो०! अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ
जाव अंतंकरेइ. सत्तठ भवग्गहणाहिं पुणनाइक्कमइ. एवं
दंसणंवि एवं चरित्ताराहणंपि ॥

अर्थः—ज० जेने भं० हे भगवान! उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय त० तेने उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय? तथा ज० जेने उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय त० तेने उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ज० जेने जघन्य तथा उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय त० तेने दं० दर्शनआराधना उ० उत्कृष्टी होय, अने जघन्य ने उत्कृष्ट ए बन्नेथी वितिरक्त ते मध्यम आराधना होय. उत्कृष्टा ज्ञानआराधनावंतने निश्चे पेहेली बे दर्शनाराधना होय, पण त्रीजी जघन्य-दर्शनआराधना न होय, तेना तथा विध स्वभावपणाना लीधे. ज० जेने वली उ० उत्कृष्ट दं० दर्शनआराधना होय त० तेने णा० ज्ञानआराधना उ० उत्कृष्ट होय, अथवा ज० जघन्य होय, अथवा म० मध्यम पण होय. उत्कृष्ट दर्शनआराधनावंतने ज्ञान आराधना आश्री त्रणे प्रकारना प्रयत्ननो संभव छे. ज० जेहने भं० हे भगवान! उ० उत्कृष्ट णा० ज्ञानआराधना होय त० तेहने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय? तथा ज० जेहने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय त० तेहने उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय? इतिप्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम! ज० जेहने उ० उत्कृष्टी णा० ज्ञानआराधना होय, तेने उत्कृष्टी अथवा मध्यम चारित्रआराधना होय, पण उत्कृ-

ष्टी ज्ञानआराधनावंतने चारित्र प्रत्ये अल्प प्राप्तपणुं न होय; एटले तेना तथाविध स्वभावपणाना लीधे जघन्य उद्यम न होय; तथा उत्कृष्ट चारित्रआराधनावंतने ज्ञानप्रत्ये प्रयत्न त्रणे (जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट), भजनाए होय इत्यर्थ. ज० जेने भं० हे भगवान ! उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय, त० तेने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय? तथा ज० जेने उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय, त० तेने उ० उत्कृष्टी दं० दर्शनआराधना होय ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ज० जेने उ० उत्कृष्टी दर्शनआराधना होय, त० तेने च० चारित्रआराधना त्रणे प्रकारे भजनाए होय. उ० उत्कृष्ट अथवा ज० जघन्य अथवा मध्यम होय. मध्यम दर्शनआराधनावंतने चारित्र प्रत्ये त्रिविध प्रयत्ननुं पण अविरुद्धपणुं छे ते माटे. ज० जेने वली उ० उत्कृष्टी च० चारित्रआराधना होय, त० तेने दं० दर्शनआराधना नि० नियमथकी उ० उत्कृष्टीज होय, पण जघन्य मध्यम न होय. प्रकृष्ट चारित्र अने प्रकृष्ट दर्शनना अनुगतपणाथी.

हवे आराधनाना भेदनुं फल प्रदर्शनने अर्थे सोल भांगा कहे छेः- उ० उत्कृष्ट भं० हे भगवान ! णा० ज्ञानआराधना प्रत्ये आराधीने क० केटला भ० भव ग्रहणे करी सि० सीझे जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न. उत्तम गो० हे गौतम ! अ० केटलाएक ते० तेज भ० भव ग्रहणेकरी सि० सीझे जा० यावत् सर्व दुःखनो अंत करे. उत्कृष्ट चारित्र आराधनाने सद्भावे तेज भवे सीझे. अ० केटलाएक क० सौधर्मादिक देवलोकने विषे उपजे, ज्ञानआराधना उत्कृष्ट पण चारित्रआराधना मध्यमने सद्भावे. अथवा क० कल्पातित ग्रैवेयकादि देवनेविषे उपजे, मध्यमोत्कृष्ट चारित्रआराधनाने सद्भावे. उ० उत्कृष्ट भं० हे भगवान ! दं० दर्शनआराधना प्रत्ये आ० आराधीने केटला भवे सीझे ? इति प्रश्न. उत्तर ए० एमज, जेम ज्ञानआराधना कही तेम केहेवुं. उ० उत्कृष्ट भं० हे भगवान ! च० चारित्रआराधना प्रत्ये आ०

आराधीने केटला ज्ञवे सीके ? इति प्रश्न. उत्तर ए० एमज एटले तेज ज्ञवे इत्यादिक केहेवुं; ण० पण एटलुं विशेष अ० केटलाएक क० कल्पातित-स्वर्गने विषे उ० उपजे. "अत्थेगइए कप्पोवयसुवा" एवुं कह्युं ते इहां न केहेवुं, कारण के उत्कृष्ट चारित्रआराधनावंतने सौधर्मादि कल्पने विषे जावुं न होय. इहां सिद्ध गमन अज्ञावे तेने अनुत्तर सूरविषे गमन छे माटे. म० मध्यम ज्ञं० हे ज्ञगवान ! णा० ज्ञानआराधना प्रत्ये आ० आराधीने क० केटला ज्ञव ग्रहणकरी सीके ? जा० अं० यावत् सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! अ० केटलाएक दो० बे भव ग्रहणे करी सीके, जा० यावत् सर्व दुःखनो अं० अंत करे. कारण के मध्यम ज्ञान-आराधनाएकरी वर्तमान ज्ञवने विषे निर्वाणनो अज्ञाव छे. वली उत्कृष्टपणुं अवश्य थाशे, एवुं जाणवुं. निर्वाणनी उत्कृष्टपणाविना उत्पत्ति न थाय. त० वर्तमान मनुष्यज्ञव ग्रहण अपेक्षाए त्रतिय मनुष्यज्ञव उलंघे नही, एटले त्रीजे ज्ञवे मोक्ष जाय इत्यर्थ. म० मध्यम ज्ञं० हे ज्ञगवान ! दं० दर्शनाराधना आ० आराधीने केटले ज्ञवे सीके ? इति प्रश्न. उत्तर ए० जेम मध्यम-ज्ञान आराधनानुं फल कह्युं, तेम इहां पण केहेवुं. ए० एमज म० मध्यम चारित्रआराधनानुं फल पण केहेवुं. ज० जघन्य ज्ञं० हे ज्ञगवान ! णा० ज्ञानआराधना आ० आराधीने क० केटला ज्ञव ग्रहणे करी सीके ? जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे ? इति प्रश्न. उत्तर गो० हे गौतम ! अ० केटलाक त० त्रीजा ज्ञवने ग्रहणेकरी सीके जा० यावत् अं० सर्व दुःखनो अंत करे. वर्तमान मनुष्य ज्ञवनी अपेक्षाए त्रीजो ज्ञव जाणवो. स० सात अथवा आठ ज्ञ० ज्ञव ग्रहण प्रत्ये अतिक्रमे नही. मनुष्यने, ए ज्ञानआराधना अने चारित्रआराधनाने बलेकरीः ए फल कह्युं, पण श्रुत सम्यक्त देशवृत्तिने ज्ञव अशंख्याता कह्या छे. तेथी चारित्रआराधना रहित ज्ञान-दर्शन-आराधनावंतने अशंख्याता ज्ञव थाय. एज विषे अनुयोगद्वार वृत्तिमां, आवश्यक निर्युक्ति टीका चुर्णीमां अने पीठिकावृत्तिमां कह्युं छे ते गाथाः—

समत्त दंसण विरिया, पलियस्स असंख नाग मेताउं;
अठ नवाउं चरित्ते, अनंत कालं सुय समयस्स ॥ १ ॥

ते माटे ए चारित्रआराधना सहित ज्ञान-दर्शनआराधना जाणवी. ए० जेम दं० जघन्य दर्शनआराधनानुं फल कह्युं छे ए० तेम च० चारित्रआराधनानुं पण फल केहेवुं.

नावार्थः—हवे जुउ! जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा मांहेली होय तो, ते करणीने श्रेष्ठ कहे तेने नगवंते जुठा बोला केम रह्या? मिथ्यात्वी पण पोते करे ते क्रियाने, तथा पोते नणे ते ज्ञानने श्रेष्ठ कहे छे, पण मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञामां नथी. तेथी नगवाने पोते तेमनी करणी वखाणी नथी, पण जे वखाणे तेने पण जुठा बोला कह्या छे.

हवे नगवाने पोते चार प्रकारना पुरुष कह्या, ते कहे छेः—पेहेला नांगामां नवदिक्षित साधु तथा अल्पबुद्धिनो धणी, जे केवली तथा गुरुदेवनां वचन तहत करी माने छे, अने जेने श्रद्धारुप ज्ञान तो छे, पण वेहेवारीक जाणपणुं नथी तेने जाणवो; केमके ज्ञान तो फक्त आठ प्रवचन मातानुं अने चारित्र यथाख्यात कह्युं छे. शाख सूत्र नगवतीजी शतक २५ में, उद्देशे छठे तथा सातमे. ए न्याये ज्ञान तुछमात्र, ते गण्युं नही; तेथी तेने ज्ञान रहित कह्यो; अने चारित्र उत्कृष्टा आश्री देशआराधक कह्यो. तथा जघन्य ज्ञान अने जघन्य सम्यक्त देशआराधकपणामां आवी गयुं. हवे सर्व-आराधक तो जेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, त्रणे बोल उत्कृष्टा होय तेने कहीए. ते चार नांगानी आराधना विषे गौतम स्वामीए श्री महावीर नगवंत प्रत्ये पुछा करी के, हे नगवान! चार नांगामां आराधक विराधक कह्या ते शुं? अने ते शुं आराधे? के तेने आराधक केहेवा. तेवारे श्री महावीर नगवंते, ज्ञान-आराधना, दर्शन आराधना अने चारित्र-आराधना, ए त्रण आराधना कही. तेमां पेहेला नांगावालो चारित्रनो आराधक छे. १ बीजा नांगामां ज्ञान दर्शन ए बे उत्कृष्टा छे, पण चारित्रमां दोष लगावे छे, माटे

तेने त्रीजा भागरुप चारित्रनो देश-विराधक कह्यो; ते विराधक छठा गुणठाणानो धणी साधु जाणवो. २ त्रीजे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रणे बोल आराधे ते सर्व-आराधक साधु जाणवा; ते छठा गुणठाणाथी लइने चौदमा गुणठाणा सुधी, साधु जे जे गुणठाणे उत्कृष्टो गुण होय ते आराधे ते सर्व-आराधक. ३ तथा चोथे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रणे लइने सर्वथा रीते जेणे विराध्या ते विराधक साधु जाणवा. ४ ए चार भांगा श्रावक उपर पण साधुजीनी पेरे जाणवा. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पेहेला भांगाना अर्थमां तथा टीकामां बाल-तपस्वी कह्यो छे, ते माटे मिथ्यात्वी अन्य मतनो तापस जाणवो. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! अर्थमांतो बालतपस्वी कह्यो, पण पाठमां नथी कह्यो. तेमाटे पाठविना अर्थ प्रमाण न थाय; केमके बापविना बेटो केहेनो केहेवाय, ते विचारो. वली अर्थमां बालतपस्वी कह्यो, तेथी अन्यमतनोज तापस कह्यो, तो ते अन्यमतना तापसमां चारित्र होय के नहि ? ते कहो. तेवारे तेरापंथी केहे छे के, चारित्रतो न होय. त्यारे हे देवानुप्रीय ! अर्थमां जेम बालतपस्वी कह्यो छे, तेम आगल पण गीतार्थनी नेश्राय-विना तपश्चर्ण निरतिचारपणे पाले, पण अगीतार्थ कह्यो, एवाने ग्रहवा; पण अन्यमतना तापसने न ग्रहवा. ए अर्थने न्याये जिनमतना साधु जाणवा. बाल एटले अजाण, अने तपस्वी एटले तप-चारित्र पाले ते, तेथी बाल-तपस्वी कह्यो. वली अर्थमां बालतपस्वी कह्यो, तेथी मिथ्यात्वीने पेहेले भांगे देश-आराधक कह्यो छे, एम केहेसो तो, अर्थमांतो अनेक वातो कही छे, तेपण प्रमाण करवी पडशे. वली ठाणायांगने नवमे ठाणे अर्थमां कोइक ठेकाणे कह्युं छे के, साधुजीने दान देवाथी तीर्थंकरादि गोत्र बंधाय, अने अनेराने दीधाथी अनेरी पुन्य-प्रकृति बंधाय, ते पण प्रमाण करवुं पडशे. वली निषितना बारमा उद्देशाना द्विति-यापद-अर्थमां कह्युं छे के, अनुकंपा निमित्ते साधु, त्रस-जीवने छोडे तो दोष नही; तेपण प्रमाण करो. तेमज निषितसूत्र मध्ये घणा बोलनां प्रा-

यश्चित कह्यां छे, अने द्वितियापद-अर्थमां करवां कह्यां छे; तेपण प्रमाण करवां पमशे. इत्यादिक घणा बोल टीकामां तथा अर्थमां पाठथी अ-णमलता कह्या छे, तेपण प्रमाण करवा पमशे. तेवारे तेरापंथी पण एम कहे छे के, जे मूलपाठथी मले ते अर्थ प्रमाण छे. तो हे देवानुप्रीय! "बालतपस्वी" ए कया पाठनो अर्थ छे? पाठमां तो "नवरए" एटले पापथी निवर्त्यो छे एम कह्युं छे, अने मिथ्यात्वी पापथी निवर्त्यो नथी. मिथ्यात्वीने सूत्रमां ठामठाम "एकान्त बाल, एकान्त अपंमित अने एकान्त अपचखाणी" कह्या छे. ए न्याये पेहेला जांगामां अन्यमती तापस मिथ्यात्वीने न जाणवा, पण जिनमतना अगीतार्थ साधु जाणवा.

वली तेरापंथी, मिथ्यात्वीने पेहेला जांगामां देशथकी आराधक कहे छे, तेने पुछीए छीए के, अहींयांतो ज्ञान ने शील, बे बोलथी चो-जंगी थइ छे. ते ज्ञान कयुं तत्व छे? अने शील कयुं तत्व छे? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ज्ञानतो संवर तत्व छे, अने शील ते निर्जरानी क-रणी छे. एम कहे छे. ते मिथ्यात्वीने पेहेला जांगामां स्थापवासारु कहे छे. तेहने फरी पुछीए छीए के, ज्यारे पेहेला जांगामां मिथ्यात्वी, त्यारे बीजा जांगामां कोण? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, चोथा गुणठाणावा-ला अवृत्ति-सम्यकुद्रष्टी छे. एम कहे छे, तेमने कहेवुं के हे देवानुप्रीय! पेहेले जांगे मिथ्यात्वीने शील नाम निर्जराथी आराधक कहेशो, तो बीजे जांगे अशीलवंत कह्यो छे. ए लेखे समदृष्टिने निर्जरानी नास्ति थइ. वली श्री कृष्णमाहाराज, श्रेणिकमाहाराज तथा इंद्रादिक समदृष्टि देवताउ श्री तीर्थंकरादिकने वंदणा करे, शुज जोग वरतावे, तेने नर्जरा केम नहीं थाय? वली श्री कृष्ण माहाराजे तथा श्रेणिक महाराजे धर्म दलाली करी, साधुने जग्यादिक दीधी, तथा दिक्षानी आज्ञा दीधी, तेथी तीर्थंकर-गोत्र बांध्युं. ए अशुज कर्मनी निर्जरा थया विना पुन्य केम बंधायुं? ते कहो. निर्जरा विना तो चोरासी लाख जीवाजोनमां कोइ जीव एहवो नथी, के जेने निर्जरा न थाय. तमे एवा जुठा अर्थ केम

करो छो ? वली त्रीजे भांगे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण सहित साधुने सर्व-आराधक केहेशो तो, शील नाम निर्जरानुं कहो छो; चारित्र क्यांथी आव्युं ? केमके चारित्रनी करणीथी तो निर्जरा थाय, पण निर्जरानी करणीने तो चारित्र न केहेवाय. हे देवानुप्रीय ! अहियां तो शील नाम चारित्रनुं छे, अने आराधनामां पण चारित्र आराधना कही छे. पेहेला भांगावालो चारित्रनो आराधक छे, बीजा भांगावालो ज्ञान दर्शननो आराधक छे, त्रीजा भांगावालो ज्ञान, दर्शन ने चारित्र, ए त्रणे बोलनो आराधक छे अने चोथा भांगावालो त्रणे बोलनो विराधक द्रव्यलींगी जाणवो. हवे जे पेहेला भांगामां निर्जरानी करणी करे, तेवा मिथ्यात्वी तापसने कहे, बीजा भांगामां अव्रति-समद्रष्टिने कहे, त्रीजा भांगामां साधुने कहे, अने चोथा भांगामां बाकीना मिथ्यात्वीने कहे, तेने पुछवुं के, बीजा भांगावालाए अने चोथा भांगावालाए विराध्युं शुं ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, पापना त्याग नथी, अने पापनां काम करे, तेथी विराधक कहीये छीए, तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! श्रावक पण पापनां (आज्ञाबाहारनां) घणां काम करे छे. ए पण तमारे लेखे देश-विराधक बीजे भांगे ठेर्या, पण श्री वीतरागदेवेतो श्रावकने त्रीजे भांगे सर्व-आराधक कह्या छे. शास्त्र सूत्र उववाइ, उपाशकदशा, सुयगडांगजी, आदि घणा सूत्रमां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, लीधां व्रत चोख्खां पाले, तेथी आराधक कह्या छे; पण जे लइने भांगे तेहने विराधक कहीये. एम सीधा बोले. त्यारे हे देवानुप्रीय ! बीजे भांगे सम्यकद्रष्टी अने चोथे भांगे मिथ्यात्वी कहो छो, तेणे शुं वृत लइने भांग्युं ते कहो ? अहो देवानुप्रीय ! इहांतो चारे भांगामां आराधक विराधक साधुनेज कह्या दीशेछे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पेहेला भांगामां साधु होयतो, तेने ज्ञानरहित केम कह्या ? कारणके ज्ञानरहित तो मिथ्यात्वीज होय. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! पेहेला भांगावाला साधुने यथा क्षयोपशमभावे संक्षेप सम्यकथी सर-

दहणारुप ज्ञान तो छे, पण विशेष जाणपणारुप ज्ञान नथी. तेथी ज्ञानी गौणता राखी, तुछ मात्र सरदहणारुप ज्ञान तेने गण्युं नही; अने चारित्र उत्कृष्टुं पाले, तेथी तेनी मुख्यता लीधी. एवा गौणता मुख्यताना शब्दो सूत्रमां घणे ठेकाणे छे. तेमां प्रथम तो उववाइ-सूत्रमां कोणिकनी राजनितिना गुण वखाण्या. त्यां कह्युं के, "मातापीतानी सेवानो करणहार, मातापीतानां वचन उलंघे नही, मातापीतानुं दीधुं राज्य करे छे," ए मुख्यताना गुण कह्या; अने श्रेणिकराजा तेनो पीता छे तेने काष्टपिंजरे नाखीने राज्य लीधुं, ते अवगुण न गण्यो ए गौणता. वली अनुत्तर विमानना देवताने उपशान्त-मोहना धणी कह्या. शाख सूत्र भगवतीजीमां. हवे उपशान्त-मोह सर्वथातो अग्यारमें गुणठाणे छे, अने अनुत्तर-विमानना देवतामां तो चोथुं गुणठाणुं छे, पण बीजा देवता करतां मोहकर्मनी विटंबणा थोडी छे. घणो मोहकर्म उपशम्यो छे, अने थोडो उदयमां छे. ते थोडो उदयमां छे ते गौणतामां राखीने, घणो उपशमाव्यो ते गुण मुख्यतामां लइने, उपशान्तमोहा कह्या. ए गौणता मुख्यता कही.

वली भगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे, तुंगीयानगरीने आलावे श्री पार्श्वनाथजीना संतानीयाना गुण कह्या, ते कहेछेः-जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोहा, जियइंदिया, जियनिंदा जाव जीवियास मरणभय विप्पमुक्का. जि० जीत्या छे क्रोधने, जि० जीत्या छे मोहने, जि० जीतीछे मायाने, जि० जीत्याछे लोभने, जि० जीतीछे इंद्रियोने, जि० जीतीछे निंद्राने, एम जा० यावत् जी० जन्म तथा म० मरणना भयथी मुक्त थया छे. इत्यादिक गुण कह्या, पण संजलनी चोकडीना क्रोधादिकतो बाकी छे, ते गौणतामां राखीने गण्या नही; अने घणा क्रोधादिक जीत्या छे, ते गुण मुख्यतामां लइने, क्रोधादिक जीत्या छे एम कह्युं. ए गौणता मुख्यता. इत्यादिक अनेक सूत्रमां साधुजीनी स्तुति वर्णवी, त्यां मुख्यताना गुण वर्णव्या, पण उदयभाव संबंधी तुछ अवगुणने गौणतामां राख्या; पण गण्या नही. ए गौणता मुख्यता. वली

जयणाथी चाले, उठे, बेसे, सुवे, आहार करे अने नाषा षोले, तेहने पापकर्म बंधाय नही. शास्त्र सूत्र दसवैकालिक अध्ययन चोथे. ए पण मुख्यतानुं वचन छे. तेज समये सात कर्म बंधाय छे, ते गौणतामां राख्यां पण गण्यां नहीं. ए गौणता मुख्यता इत्यादिक, सूत्रमां अनेक वचनो गौणता मुख्यतानां कह्यां छे. तेमज पेहेला नांगामां ज्ञानरहित कह्या, ते श्री वीतरागनां वचन तहत करी साचां माने, पण पोताने पुरुं जाणपणुं नही, तेथी तुछ मात्र सरदहणारुप ज्ञान गौणतामां राख्युं, पण गण्युं नही. ते माटे "असुयवं" सूत्रज्ञान रहित कह्या, अने चारित्र चोख्खुं (उत्कृष्टुं) पाले, ते मुख्यतामां लइने त्रीजा-नागरुप देश-आराधक कह्या. वली आराधक केहने कहीये ? आउखाना बंधकाल समये ज्ञाननां आवरण अलगां थाय, तेने ज्ञाननो आराधक कहीये; समकितनां आवरण अलगां थाय, तेने समकितनो आराधक कहीये; अने चारित्रनां आवरण अलगां थाय, तेने चारित्रनो आराधक कहीये. एवुं दोलतसागरकृत टबामां नगवतीमां कह्युं छे. पेहेला नांगामां आउखाना बंधकाले चारित्रनो आराधक छे.एम चारे नांगा आउखाना बंधकाले जाणवा. वली आउखाना बंधकाल विना जो आराधक कहीये, तो छठा गुणठाणाथी लइने अग्यारमा गुणठाणा सुधी चोख्खुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्र पाले छे,एवा चार ज्ञानना धणी पण कोइक पडे,अने उत्कृष्टो अर्ध-पुद्गल संसार नमे, एम कह्युं छे. शास्त्र सूत्र नगवती शतक २५ में.

वली चोनंगी पेहेलां आराधना कही, तेमां कह्युं छे के, जघन्य ज्ञाननो आराधक, जघन्य सम्यक्तनो आराधक अने जघन्य चारित्रनो आराधक, जो नव करे तो जघन्य त्रण, अने उत्कृष्टा करे तो पंदर नव उलंघे नही. ए न्याये आउखाना बंधकाले जेने आराधक कहीये, ते विराधक थाय नही. नियमा ते पंदर नवमां मुक्ति जाय; अने चोखा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो पालणहार कर्मने वशे विराधक थाय तो उत्कृष्टा अनंता नव करे. ए न्याये चोखां ज्ञान, दर्शन ने चारित्र पाले, ते वेला अविराधक संजमी कहीये, पण आराधक तो आउखाना बंध-

कालेज कहीये; केमके तेतो न्नव पंदरमां नियमा मुक्ति जाय. हवे जो पेहेला न्नांगामां मिथ्यात्वी देशथकी आज्ञानो आराधक होय तो, करणीना करवावाला सर्व जीव पंदरमे न्नवे मुक्ति गयाज जोइए, पण ए न मले. ए न्याये पेहेले न्नांगे नवदिक्षित् तथा अगीतार्थ साधुने श्री वीतरागदेवनी आज्ञानो आराधक जाणवो. ए चार न्नांगा द्रव्य-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आश्री अन्नव्यमां तथा द्रव्य लींगीमां पण होय छे; पण अहीयां तो श्रीवीतरागदेवे द्रव्य अने न्नाव ए बंन्ने बोलो आश्री चार न्नांगा कह्या दीशे छे. माटे जिनाज्ञानो आराधक साधु, ते पेहेले न्नांगे जाणवो.

हवे तेरापंथी, पेहेले न्नांगे मिथ्यात्वीने देशथकी आज्ञाना आराधक ए वास्ते कहेछे के, आज्ञामांहेलो धर्म आराधे तेनेज पुन्य बंधाय, आज्ञाबाहार पुन्यनो बंध मानता नथी. तेथी मिथ्यात्वीने पेहेले न्नांगे कहेछे. हवे जुर्ज ! पेहेले न्नांगे मिथ्यात्वीने आज्ञानो आराधक कहे, तेनी श्रद्धा चोथा न्नांगामां जडमूलथी जुठी देखाय छे. तेनो न्याय कहेछेः-हे देवानुप्रीय ! सर्व चोरासी लाख जीवाजोनने निर्जरा होय छे, ने समे समे पुन्य बंधाय छे, पण एवो कोइ जीव नथी के जेने निर्जरा न थाय, के पुन्य न बंधाय. ए लेखेतो निगोदादिकमां सर्व जीवने निर्जरा थाय छे, पुन्य बंधाय छे, ते पेहेला न्नांगामां आव्या. बीजा न्नांगामां अवृति समदृष्टिने कहोछो, अने त्रीजे न्नांगे साधुजीने कहोछो, तेमज श्रावकने पण केहेता हशो. ए सर्व संसारस्था जीव तमारे लेखेतो त्रण न्नांगामां आवी गया. हवे चोथा न्नागामां कया जीव रह्या ? ते बतावो. त्यारे जवाबदेवा असमर्थ. वली चोथा न्नांगावाला जीवने न्नगवंते सर्व विराधक (आज्ञाबाहार) कह्या छे, तेने तमारे लेखेतो निर्जरा थाय नही, तेम पुन्य पण बंधाय नही. हवे संसारमां एवा तो कोइ जीव नथी के जेने पुन्य न बंधाय. ए न्याये चोथा न्नांगावाला जीव आज्ञाबाहार छे अने आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय छे. हवे जे आज्ञाबाहार पुन्य बंधावुं नथी मानता, तेमने सूत्रबल पुरुं देखातुं नथी. वली जेम गहुं साथे पराल (खाखलो) थाय, तेम आज्ञामांहेला धर्मनी साथे पुन्य बंधावुं माने, ते लेखेतो कोइ

जीव त्रण कालमां मोक्ष जाय नही; कारणके जेम गहुंनी साथे निश्चे पराल निपजे, तेम धर्मनी साथे निश्चे पुन्य बंधाय. ते पुन्य भोगवतां राग-द्वेषथी पाप बंधाय, ते पाप तोडवाने माटे करणी करे, तेथी वली पुन्य बंधाय. ए न्याये जीव उंचे गुणठाणे चढे नही, ने त्रण कालमां मोक्ष पण जाय नही.

हे देवानुप्रीय ! ए वात केम मले ? कारण के धर्मतो आवता कर्मने रोके, ने आगला कर्मने तोडे तेने कहीए; अने पुन्य-पाप तो आश्रव-भावमां बंधाय छे. ए आश्रव-भावने तेरापंथीना बनावेला तेरद्वारमां छांडवा जोग कह्यो छे. अहो ! केवुं कपट वचन. कोइ ठेकाणे आश्रव-भावने आज्ञामां कहे, कोइ ठकाणे आज्ञामांहेलो धर्म कहे, अने कोइ ठेकाणे तेने छांडवा जोग पण कहे. डाह्या हो ते वीचारी जोजो. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी मोक्षनो मार्ग (धर्म) नथी, तेम जिन अज्ञाना आराधकपणामां पण नथी. शास्त्र सूत्र उतराध्ययन अ० ए मे. गाथा ४२मी.

घोरा समं च इत्ताणं, अन्नं पछेसि यासमं;
इहेव पोस हरउ, भयाहि मणुया हिवा. ॥ ४२ ॥

गाथार्थः—घो० छोडतां अत्यंत दोहीलो एवो ग्रहवास छोडीने तेथकी अ० अनेरुं आश्रम ( दिक्षारुपी चारित्र ) लेवातुं वान्छे छे, पण ए तुजने जुक्त नथी. इ० ए ग्रहस्थाश्रममां रह्यांथकां आठम चौदसादिक पर्वने विषे पोसा करवाने हे मनुष्याधिपति ! तुं तत्पर था.

एय मठं निशामित्ता, हेउ कारण चोइउं;
तउ नमीराय रिसी, देविंदं इण मब्बवी. ॥ ४३ ॥

गाथार्थः—ए० पुर्वोक्त अर्थ (इंद्रनुं वचन) नि० शांभलीने हे० ग्रहस्थाश्रममां जे जे धर्म आचारतां दोहीलो ते धर्म, जे धर्मना अर्थी होय, तेणे आचारवुं. इत्यादिक हे० हेतु कारणे चो० प्रेर्यो थको. त० त्यार पछी न० नमिराज ऋषि दे० देवेंद्र सक्रेन्द्र प्रत्ये एम बोलता हवा.

मासे मासे उजोवालो, कुसग्गेणं तु भुंजए;
नसो सुय खाय धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसं ॥ ४४ ॥

गाथार्थः—मा० मासमास खमणने पारणे जे कोइ अविवेकी ग्रहस्थ कु० डाभनी अणी उपर जेटलुं अनाज आवे तेटलुं पारणे ज- मे, तोपण न० ते सूत्रमां कह्युं ते सम्यक्त तथा चारित्र धर्मनी सोलमी कलाए आवे नही, तथा सोमे भागे पण आवे नही.

भावार्थः—हवे जुउ ! मिथ्यात्वी बाल अज्ञानी मासमास खम- णनां पारणां करे, अने पारणे डाभनी अणीमाथे आवे एटलो आहार भोगवे, तोपण श्री केवलीए धर्म कह्युं तेनी सोलमी कलाने अथभागे पण आवे नही, एम कह्युं. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञारुप धर्ममां नथी, अने मासमास खमण तपथी पुन्य बंधाय छे. ए न्याये आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय छे. वली मिथ्यात्वीनी करणी ए न्याये आज्ञामां नथी. शाख सूत्र आचारांग श्रुतष्कंध १ ले अ० चोथे उद्देशे चोथे. ते पाठ.

आयाण सोय गढिए बाले अवोछिन्न बंधणे अणभिक्कंतं संजोए तमसि अविजाणउं अणाएलंभोणत्थि त्तिबेमि जस्स नत्थि पुरापछा मझे तस्स कउसिया ॥

अर्थः—जे कर्म आ० आववानां सो० मिथ्यातादिक श्रोत्रने विषे गृद्ध छे, ते बा० बाल अज्ञानी. ते वली केवो छे ? अ० अष्ट प्रकारे कर्म जेणे छेद्यां नथी तेथी सेंकडा गमे जन्में करी संसार परिभ्रमण करे. वली ते केवो छे ? अ० जेणे छोड्या नथी सं० धन धान्य, द्विपद चतुः- पदादि संजोग तथा त० मोहरुपी अंधकारने विषे अ० जाण्यो नथी आत्महित जेणे, तेने अ० मोक्षना उपायरुप तीर्थंकरनी आज्ञानो किं- चितमात्र लाभ नथी. त्ति० श्री सुधर्मास्वामी कहे छे एम हुं कहुं छुं. वर्तमानकाले तेने आज्ञानो लाभ नथी, एम कह्युं. हवे आगमे काले पण तेने आज्ञानो लाभ न थाय, एवुं कहे छे. ज० जेने पुर्व जन्मे बोधनो लाभ नथी, तेने आगम्ये काले पण न थाय, तो वचले काले क्यांथी थाय.

हवे जुर्ज! जे कर्म आववानां मिथ्यातादिक श्रोत्रने विषे गृद्ध छे, तथा जेणे अष्ट कर्मनो बंध छेद्यो नथी, धनधान्य द्विपद चतुःपदादि संजोग छोड्यो नथी तथा मोहरुपी अंधकारने विषे (आत्महित) मोक्षनो उपाय जाण्यो नथी, तेने श्री जिनाज्ञानो लाभ नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय! एकेंद्रियादिक मिथ्यात्वी जीव, जे ज्ञान दर्शन चारित्ररुप मोक्ष मार्गने न जाणे, तेने आज्ञानो लाभ क्यांथी थाय? ए न्याये मिथ्यात्वीनो करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञा बाहार पुन्य बंधाय छे. वली भगवतीजी सूत्र श०१७मे उ०बीजे मिथ्यात्वी जीवने एकान्त अधर्मी कह्या. ते पाठः—

जीवाणं भंते! । किं धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया? गो०! जीवा धम्मेठियावि अधम्मेठियावि धम्माधम्मेठियावि॥ नेरइयाणं पुछा गो०! नेरइया णोधम्मेठिया, अधम्मेठिया, नोधम्माधम्मेठिया एवं जाव चउरिंदियाणं॥ पंचदियतिरिक्खजोणियाणं पुछा॥ गो०! पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया नोधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया॥ मणुस्सा जहाजीवा वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय जहानेरइया॥अणउत्थियाणं भंते! एव माइक्खइ जाव परूवेति एवंखलु समणापंडिया समणोवासया बालपंडिया जस्सणं एग पाणावि दंडेअनिखिते सेणं एगंत बालेत्ति वत्तवंसिया॥सेकहमेयं भंते! एवं? गो०! जेणंते अणउत्थिया एवं आइक्खंति जाव वत्तवंसिया जेते एवमाहंसु मिछंते एवमाहंसु अहं पुण गोयमा! एवमाइखामि जाव परूवेमि एवंखलु समणापंडिया समणोवासया बालपंडिया जस्सणं एग पाणाएवि दंडेनिखत्ते सेणं नो एगंतबालेति वत्तवंसिया॥ जिवाणं भंते! किंबालापंडिया बालपंडिया? गो०! जिवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि॥ नेरइयाणं

पुच्छा गो० ! नेरइया बाला नोपंडिया नोबालपंडिया एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचंदियतिरिक्ख पुच्छा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया बाला नोपंडिया बालपंडियावि ॥ मणुस्सा जहाजीवा ! वाणमंतरा जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया॥

अर्थः—पाठ सुगम छे माटे शब्दार्थ लख्या नथी.

भावार्थः—हवे जुओ ! बावीस दंडकना जीवने एकान्त अधर्मी कह्या, तिर्यंचने अधर्मी ने धर्माधर्मी कह्या अने मनुष्यने धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी कह्या. हवे जो मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञा-मांहेलो धर्म होय तो धर्मना करणहारने श्री वीतरागदेव अधर्मी केम कहे ? पण धर्म तो संवरनेज कहेवो. ते संवर मिथ्यात्वीने नथी, ते माटे तेने अधर्मी कह्या छे. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य नीपजे छे. वली एकेंद्रिनो बेइंद्रि अनंता पुन्य वध्याथी थाय छे, एमज जाव पंचेंद्रिपणुं पण अनंता पुन्य वध्याथी पामे. ए न्याये आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय छे. वली अनुयोगद्वार सूत्र मध्ये त्रण वक्तव्यता कही छे. त्यां परसमय वक्तव्यतामां सात अवगुण कह्या छे. ते पाठः—

सेकिंतं वत्तवया ? तिविहा पं०तं० ससमय-वत्तवया परसमय-वत्तवया ससमय-परसमय-वत्तवया. सेकिंतं ससमय-वत्तवया ? जन्नणं ससमए आघविजइ पणविजइ परुविजइ दंसिजइ निदंसिजइ उवदंसिजइ सेतं ससमय-वत्तवया. सेकिंतं परसमय-वत्तवया ? जन्नणं परसमय आघविजइ जाव उवदंसिजइ सेतं परसमय-वत्तवया. सेकिंतं ससमय-परसमय-वत्तवया ? जन्नणं ससमय-परसमय आघविजइ जाव उवदंसिजइ सेतं ससमय-परसमय-वत्तवया. इयाणि कोनउ कोवत्तवयं इच्छइ तत्थ नेगम सं·

गइ ववहारो तिविहं वत्तवयं इवइ तं ससमय-वत्तवयं परसमय-वत्तवयं ससमय-परसमय-वत्तवयं. उज्जुसुउं दु-विहं वत्तवयं इवई तं० ससमय-वत्तवयंच परसमय-वत्तव-यंच, तत्थणं जासा ससमय-वत्तवया सासमयं पविठा जासा परसमय-वत्तवयासा परसमयपविठा तम्मा दुविहा वत्तवया नत्थि तिविहा वत्तवया. तिण्हि सद्दनया एगं ससमयं वत्तं इवंति. नत्थि परसमय-वत्तवया नत्थि सस-मय-परसमय-वत्तवया, कम्मा जम्मा परसमए अणठे अ-हेउ असब्भावे असंकिरिए उमग्गो अणुवएसे मिछामि दंसणंमि तिकट्टु तम्मा सव्वा ससमय-वत्तवया नत्थि पर-समय-वत्तवया नत्थि उभयसमय-वत्तवया. सेतं वत्तवया॥

अर्थः—से० केवी ते व० वक्तव्यता? प्रश्नोत्तर. त्यां अध्ययनादिकने विषे प्रति अवयव यदा संभव प्रति नियम एकार्थनुंज वखाणवुं, तेने वक्तव्यता कहीए. ते वक्तव्यता ति० त्रण प्रकारे पं० परुपी तं० ते कहेछे:- स० स्वसमय वक्तव्यता, प० परसमय वक्तव्यता अने स० प० स्वसमय परसमय वक्तव्यता. से० केवी ते स० स्वसमय वक्तव्यता? प्रश्नोत्तर. ज० ज्यां जेने विषे स० पोतानो सिद्धान्त आ० वखाणे, यथा पंचास्तिकाय, धर्मास्तिकाय इत्यादिक. तथा प० प्रज्ञापीये ( जणावीए ) यथा ते लक्षण धर्मास्तिकाय इत्यादिक, तथा प० परुपे ते धर्मास्तिकाय अ. शंख्यात प्रदेशरुप इत्यादिक. तथा दं० सामान्य स्वरुपथकी देखाडे ते धर्मास्तिकाय वर्णादिक रहित इत्यादिक तथा नि० दृष्टान्तद्वारेकरी देखाडीये. जेम माछलांनी गतिनो उपष्टंभक (आधार) जलादिक इत्यर्थः उ० उपनयद्वारेकरी देखाडीयें. यथा जेम जीव पुद्‌गलने धर्मास्तिकाय गतिनो उपष्टंभन छे, इत्यादिक निरदेश मात्राने देखाडवे करी एम वखाणवुं. से० ए स्वसमय वक्तव्यता कही. से० केवी ते प० परसमय-व-

क्तव्यता ? प्रश्नोत्तर. ज० ज्यां तेने विषे प० परायो सिद्धान्त आ० वखाणे जा० यावत् देखाडे. जेम पांच भूत आत्मा इत्यादिक.

संति पंच महा भुया, इहमेगेसिं आहिया;
पुढवि आउ तेउय, वायु आगास पंचमा ॥ १ ॥

अर्थः—सं० छे पं० पांच म० मोटा भु० भुत इ० आ देहिने विषे. पु० पृथ्वि आ० पाणी ते० अग्नि वा० वायु अने आ० आकाश, पं० ए पांच भूत.

एवं पंच महा भूया, तत्तोए गुत्तिए आहिया;
अहतेसिं विणासेणं, विणासो होइ देहिणं ॥ १ ॥

अर्थः—ए० ए पं० पांच म० मोटा भू० भुत आ० कह्या. अ० अथ ते० तेना वि० विनाशे करी वि० जीवनो विनाश थाय.

एम अहीयां लोकायत मत वखाण्यो, तेथी से० ए. प० परसमय वक्तव्यता कहीये. अथ से० केवी ते स०प० उभयसमय-वक्तव्यता ? प्रश्नोत्तर. ज० ज्यां स० प० स्वसमय परसमय एकठा वखाणीये ते उभय समय-वक्तव्यता कहीये. ते विषे गाथाः—

आगारसमा वसतावि, अरनावावि पव्वया,
इम दरसिण मावन्ना, सव्व दुःक्खवि मुच्चइ ॥

व्याख्याः—आ० घरमां वसताथका गृहस्थ अथवा अ० अरण्य-मां वसता तापसादिक अथवा प० प्रव्रजित शाक्यादिक, ए अमारो मत आ० अंगीकार कर्याथी स० सर्व दु. दुःखथी मुंकाय. एम जीवनी शांख्या-दिक परुपे, त्यारे तेने परसमय-वक्तव्यता कहीये; अने ज्यारे एम न वखाणे त्यारे तेने स्वसमय-वक्तव्यता कहीये. तेटला माटे तेने स्वस-मय-परसमय-वक्तव्यता कहीये. इ० ए वक्तव्यताने फरी वीचार छे. इ०

हवे कोण केवी वक्तव्यताने वान्छे ते कहे छेः-त० त्यां ने० नैगम, सं० संग्रह अने व० व्यवहार ए त्रणे नय, ति० त्रण वक्तव्यताने इ० वान्छे. तं० ते कहे छेः-स० स्वसमय-वक्तव्यताने प० परसमय-वक्तव्यताने अने स० प० उन्नयसमय-वक्तव्यताने वान्छे, कारण के नैगम-नयना अनेक गमा छे, अने व्यवहार-नयवालो लोक व्यवहार माने. ते लोकने विषे सर्व प्रकारनी रुढी छे, अने संग्रहनय उपरनी बन्ने नयथी मलतीज छे. उ० रुजुसूत्रनय प्रथमनी त्रण नय करतां अति विशुद्ध छे. तेटला माटे ते दु० बे नेदनी व० वक्तव्यताने माने, तं० ते कहे छेः-स० स्वसमय-वक्तव्यता अने प० परसमय-वक्तव्यताने माने, परं त्रीजी उन्नयसमय-वक्तव्यताने मुलथी न माने. ते न मानवानी जुक्ति कहे छे. त० त्यां त्रण वक्तव्यताना नेदने विषे जे स० स्वसमय-वक्तव्यता कही ते सा० स्वसमय-वक्तव्यतामां प० पेठी, अने जे प० परसमय-वक्तव्यता ते प० परसमय-वक्तव्यतामां पेठी. तेन्नणी उन्नयरुप वक्तव्यता. ते ए नयना मतने विषे आस्ता छे. त० ते कारणे छु० द्विविध वक्तव्यता छे, पण न० त्रिविध वक्तव्यता सर्वथा नथी. त्यां पण संग्रहनय सामान्यवाद नैगम मध्ये अन्योक्तिन्नणी ए विविक्षा छे, अथवा सूत्रनी विचित्रगत छे, तेथी जुदी न कही. हवे ति० त्रणे नय शब्द १, समन्निरुढ २, अने एवंन्नुत ३, ते रजुसूत्रथी पण अति विशुद्ध छे, ते न्नणी एक स्वसमय-वक्तव्यतानेज माने छे, पण परसमय-वक्तव्यता तथा स्वसमय-परसमय, ए बे वक्तव्यता नथी, एम कहे छे. क० ते शा माटे के परसमयमां अवगुण मोटो छे, माटे ते समदृष्टिए न मानवी. तेमज परसमयमां अ० अनर्थ छे, अ० अहेत छे, तथा अ० असतन्नाव छे, अ० अक्रिया छे, पण दान, शील, तप अने न्नावरुप सक्रिया नथी, आज्ञाबाहार छे, उ० उन्मार्ग छे, पण श्री वीतरागनो मार्ग नथी, अ० अणउपशमपणुं छे. पण उपशमपणुं नथी. मि० परसमयनी वक्तव्यतामां मिथ्यात दर्शन छे, ते समदृष्टिने प्रसंसवा योग्य नथी. ति० एम करीने त० ते माटे जे नय स० साची छे, ते स० स्वसमय-वक्तव्यताने माने, पण न० नथी मानता प० अन्न

तिर्थिना दान शील तपना शास्त्रनी वक्तव्यताने, तेमज उभयसमय-वक्तव्यताने. भावनयवाला ते बंनेने मानता नथी, पण एकान्त नथी. से० ते व० वक्तव्यता संपूर्ण.

भावार्थः—हवे जुओ ! परसमय-वक्तव्यतामां सात अवगुण कह्या. ए न्याये मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य निपजे छे. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहारज छे, अने आज्ञाबाहार पुन्य बंधाय छे.

॥ इति आज्ञानो प्रश्नोत्तर संपूर्ण ॥

## प्रश्न बीजो.

### अनुकंपा दान तथा दया विषे.

हवे जुओ ! जेम मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबहार छे, अने आज्ञा-बाहार पुन्य निपजे छे, तेम कोइ अनुकंपा लावी गरीब-रांकने दान दे, तथा मरता जीवने जबराइथी, मुलाएजाथी (शरमावीने) अथवा पैसा आपी छोडावे, ते करतव्य आज्ञाबाहार छे; पण जेम मिथ्यात्वीनी करणी आज्ञाबाहार छे, अने शुभजोगथी तथा कायाकष्टथी पुन्य बंधाय छे, तेम आज्ञाबाहारना दानमां, जीव छोडाववामां, तथा अनुकंपा शुभजोगथी पुन्य बंधावानो नाकारो नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "तरसे मरता जीवने अनुकंपा लावी काचुं पाणी पाय, काचुं अनाज खवरावे, रसोइ करीने जमाडे, पेटीउं आपे, कबुतरने दाणा खवरावे, पाणीनी परब बंधावे, दानशाला बंधावे तथा मारकुट करी नासी दोडी वायुकायने हणी जीव छोडावे, इत्या-दिक अनेक प्रकारना जीवनी घात सहितना प्रश्न, दान-दया उठाव-वाने वास्ते पुछे छे, अने एम कहेछे के, घणा एकेंद्रि जीवने हणी एक पंचिंद्रि-जीवने शाता उपजाववामां पुन्य नथी, एकान्त पाप छे; कारणके ज्यां जीवनी घात होय त्यां शुभजोग नथी, धर्म नथी, आज्ञा नथी अने पुन्यनो लेश मात्र नथी. साधुभगवंततो छकाय-जीवना पीहर छे, छकायना जीवने सरखा जाणे छे. ते पांच स्थावर एकेंद्रिनी घात करी एक पंचिंद्रि जीवने शाता उपजावीने पुन्य मानवुं, शुभजोग मानवो, ए श्री वीतरागनी वाणी नथी." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! छकाय जीवनी हिंसानु पाप सांभली, कोइ क्षत्री रजपुत प्रमुख तमारी पासे आवीने कहे के, कांदा मुळाना गोढ प्रमु-

खमां एकिंद्रि अनंता जीव छे, तेमां जो घणुं पाप होयतो ते छोडावो, अने जो शीकार (पंचिंद्रि जीवनी हिंसा)मां घणुं पाप होयतो ते छोडावो, ए बेमांथी एक छोडशु. आपनी मरजी होय ते छोडावो. त्यारे तमे शेना पचखाण करावशो ? ते कहो. कारणके प्रभुए पण श्रावकने पेहेला व्रतमां त्रसजीव मारवाना त्याग कराव्याछे, पण घणा अशंख्याता अने अनंता जीव जाणीने पेहेला एकिंद्रिजीव मारवाना त्याग केम न कराव्या ? पण त्रसजीवनी पुन्याइ एकिंद्रिथी अनंतगणी वधारे छे. तेने हणतां द्वेषना दुष्ट रुद्र प्रणाम घणा प्रवर्ते, तेथी तेने हणतां घणुं पाप लागे, ते टालवा माटे त्रसजीव न हणवानुं पेहेला व्रतमां कह्युं. वली पंचिंद्रिजीवनी घात करे तो नर्कनुं आउखुं बांधे एम कह्युं छे, (शास्त्र सूत्र ठाणायांग ठाणे चोथे तथा भगवती शतक आठमानेउदेशे नवमें.) पण एम नथी कह्युं के, एकिंद्रि घणा जीवनी घात करेतो नर्कनुं आउखुं बांधे. हे देवानुप्रीय ! जो पंचिंद्रिने मार्यानुं पाप घणुं हशे, तो तेने बचाववानो लाभ पण घणो हशेज. तमे बंनेने सरखुं पाप केम कहो छो ?

वली तेरापंथी एम पुछेछे के, छकायना जीव खाधामां शुं ? खवराव्यामां शुं ? अने खाताने भलो जाण्यामां शुं ? तेमज हण्यामां शुं ? हणाव्यामां शुं ? अने हणताने भलो जाण्यामां शुं ? तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! छकायना जीवतो अरुपी अशंख्यात प्रदेशी छे. तेतो मार्या मरे नही, अने पुन्यपापनी पक्रतीरुप शरीरादिक प्राणने तमे जीव मानता नथी. ए लेखे तो छकायना जीव खाधा खवाय नही, हण्या हणाय नही, अने हण्याविना पाप लागे नही. ए लेखे तो तमारो नास्तिक मत ठरशे, केमके तमे जीवने एकान्त नये अरुपी मानो छो. तेथी तेने पुन्य पाप लागे नही; अने अमेतो श्री वीतरागदेवे व्यवहारनयमां कायाने जीव कह्योछे, सचित कही छे तथा आत्मा कहीछे, ते प्रमाणे मानीये छीए. माटे पूर्वोक्त दोष अमारे न आवे. हवे कायाने जीव,

सचित अने आत्मा कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक तेरमे उद्देशे सातमे. ते पाठः—

आया भंते!काय अन्नेकाय?गो०!आयाविकाय अन्नेविकाय. रुवि भंते!काय अरुविकाय?गो०!रुविविकाय अरुविविकाय. एवं एकेक पुछा ? गो० ! सचित्तेविकाय अचित्तेविकाय जीवेविकाय अजीवेविकाय जीवाणविकाय अजीवाणवि-काए. पुविं भंते ! काय पुछा ? गो०! पुविंपिकाए काइज्ज-माणेविकाए कायसमय विइक्कंतेविकाए पुविंविकाएभिज्जइ काइज्जमाणेविकायभिज्जइ काय समय वीइक्कंते विकाए भि-ज्जइ. कइ विहेणं भंते? काए पं०गो०! सत्तविहेकाए पं०तं० उरालिय उरालियमिसिए वेउव्विय वेउव्वियमिसिए आहा-रए आहारमिसए कम्मए. ॥

अर्थः—अनंतरे मननुं निरूपण कर्युं, ते मन काया थकीज होय. एटलामाटे कायनुं निरुपण करेछे. आ० आत्मा भं० हे भगवान ! का० काया छे ? के अ० अनेरी ते काया छे ? कायाए कर्युं ते काया भोगवे? के अनेरे कर्युं ते काया भोगवे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! आ० आत्माने पण कथंचित प्रकारे काया कहीये, कारणके ते खीरनीरनी परे, अग्नि-लोह पींडनी परे, अथवा कंचन-उपल ( पथ्थर ) नी परे देहथी भिन्न नथी. एटलामाटेज काया स्पर्श थयाथी आत्माने संवेदन थाय. एटलावास्तेज कायाए कीधुं भवान्तरने विषे आत्माए वेदीअें. तथा अन्न० ए जीवथी अनेरी पण काया होय. अत्यंत अभेद होयतो शरी-रना अंश छेदन कर्याथी, जीवना अंशनो छेद प्रसंग थाय. ते॰ थयाथी वेदना संपुर्ण थाय. तथा शरीरना दाहे आत्माना दाहनो पण प्रशंग थाय. तेवारे परलोकना अभावनो प्रसंग थाय. एटला माटे कथंचित् प्रकारे आत्माथी अनेरी पण काय छे. इहां कोइएक एम व्याख्यान करे

छे के, कार्मण काय आश्रीने आत्मा काय छे. ( ते कार्मण कायने अने संसारी जीवने मांहोमांही अव्यभिचारपणेकरी स्वरुप छे तेथी ); एकं तथा अन्ने उदारीकादि कायनी अपेक्षाए, जीवथी अनेरी पण काय छे, तेने मुकवाथी तेनो भेद थाय. रु० रुपी भं० हे भगवान ! का० काय छे ? के अरु० अरुपी कायछे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! रु० स्थुल शरीरनी अपेक्षाए रुपी पण काय छे, अरु० कार्मण शरीर शुक्ष्म पुद्गल ( चक्षु अग्राह्य ) नजरे आवे नही, तेनी अपेक्षाए अरुपी पण काय छे. एवं० एम पूर्वोक्त प्रकारे ए० एकेक सूत्रने विषे पु० पुछा करवी ते एम. सचित्त हे भगवान ! काय छे ? के अचित्त काय छे ?. इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स० जीवीत अवस्थाने विषे, चैतन्यपणाथी सचित्त पण काय छे; अने अ० मृत्यु अवस्थाने विषे चैतन्यना अभाव थकी अचित्तपण काय छे. जीव, हे भगवान ! काय होय अथवा अजीव, काय होय ? ए प्रश्न. उत्तर. हे गौतम ! जी० जीव विवक्षीत उत्स्वासादि प्राणसहितने जीवकाय कहीये. तथा अजी० उदारीक शरीर प्रत्ये अपेक्षीने अजीवकाय पण कहीये. अथवा कार्मणशरीर प्रत्ये अपेक्षीने उत्स्वासादि रहित पण काय कहीये. जी० जीवने हे भगवान ! काय होय ? अथवा अजीवने काय होय ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! जी० जीवने संबंधी काय शरीर होय. अ० अजीवने पण स्थापनादिकने काय शरीर होय. शरीरा कार इत्यर्थः पु० पुर्वे भं० हे भगवान ! का० काय होय ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पु० पूर्वे (जीव संबंध कालथकी पहेलां ) पण काय होय. ( यथा भविष्यात जीव संबंध मृत्य दर्दुर शरीरनी पेरे, जीवथी पेहेली काया होय, तेमां जीव आवणहार छे तेम.) का० जीव गर्भावस्थाए जे काया चणे ते पण काय. काय० काय समयने विषे कायता करण लक्षण प्रत्ये जीव व्यतिक्रान्त थयो तेने पण मृत्य कलेवरनी पेरे काय कहीये. पूर्वे हे भगवान ! काय भेदाय ? ए प्रश्न. उत्तर. हे गौतम पुविं० जीव कायपणे ग्रहण समयथी पहेलां पण, मधु घृतादि न्याये करी द्रव्य कायने भेद प्रतिक्षण पुदगल चय, अपचय भावथी

काय जेदाय. काइज्ज० जीवे क्रियमाण काय पण जेदाय. पुद्गलने अ-नुक्रमे परिशाटन जावथी शेकाता कण समुद्र मुष्ठी ग्रहणनी पेरे जेदाय. का० कायसमय व्यतिक्रांतने कायपणुं जूतजावपणे घृत कुंजादिक न्याये करी जेदे. ( ते पुद्गलने तेवे स्वजावपणे करी ). वली चूर्णीकारे काय सूत्रने विषे, काय शब्दने केवल शरीरार्थ त्यागे करी चयमात्र वाचक अंगिकार करी वखाएया. यदाह ( काय शब्द, जाव सामान्य शरीर वाची ) एनो अर्थ काय शब्द सघला जावोनुं चयमात्र जे सामान्य श-रीर ते वाचक इत्यर्थः एमज आत्मा पण काय ( प्रदेश संचय इत्यर्थ ) तेथी अनेरो पण अर्थ, ते काय प्रदेश संचयरुपपणाथकी. वली रुपी काय ते, पुद्गल संबंधनी अपेक्षाए, अने अरुपी काय ते, जीव तथा धर्मा-स्ति कायादिकनी अपेक्षाए. सचित्त काय ते, जीव शरीरनी अपेक्षाए. अचित काय ते अचैतन्य संचया पेक्षया. अजीव काय ते, उत्श्वासादि युक्त अवयव संचयरुप अजीवरुप. तेथी विपरीत ते जीवनी काय. हवे जीवराशी ते जीवनी काय, अने प्रमाणुं आदि राशी ते अजीवनी काय. एम शेष पण कहेवा. हवे कायानोज जेद कहे छेः-क० केटले जेदे जं० हे जगवान ! का० काया पं० कही ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स० सात जेदे काया पं० कही तं० ते कहे छेः-उ०उदारिक (इत्यादिक साते. प-हेलां विस्तारे वखाएया छे, ते माटे इहां लेश मात्र वखाणीए छीए. ) शरीरज पुद्गल स्कंधपणे उपचय मानपणाथी काय ते उदारीक काय, ते पर्याप्ताने होय. उ०मि० उदारीक-मिश्र, ते कार्मण संघाते, ए अपर्या-प्ताने होय. वे० वैक्रिय काय, ते पर्याप्त देवादिकने होय. वे०मि० वैक्रिय-मिश्र, ए अतिपूर्ण वैक्रिय शरीर देवादीकने अपर्याप्तावस्थाए होय. आ० आहारिक निव्रतने विषे आ०मि० आहारीक-मिश्र आहारीक परित्यागे करी उदारीक ग्रहण उद्यतने उदारीक संघाते मिश्र होय ते. क० का-र्मण-काय,ते विग्रह गतिने विषे होय अथवा केवल समुद्घातने विषेजहोय.

जावार्थः—ए जीव सहित कायाने जीव कह्यो. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे व्यवहार-नयमां कायाने जीव कहीये. ए न्याये अमेतो,

ठकायना जीव खातां, खवरावतां अने खातो होय तेने नलो जाण्यामां, तथा हणतां, हणावतां अने हणताने नलो जाण्यामां पाप कहीये ठीए. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, अनुकंपा आणीने ठकायना जीवने खाय, खवरावे अने खाताने नलो जाणे तेमां शुं ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ठकायना जीव हणाय, तेनुंतो व्यवहारमां अवश्य पाप कहीये, पण अनुकंपा शुनजोग तो एकान्त पुन्य प्रकृति बंधावानुं कारण ठे. तेवारे तेरापंथी कहे ठे के, ज्यां हिंसा होय त्यां शुनजोग नथी, पुन्य धर्म पण नथी. एम कहे ठे तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! साधुने, कोइ उघाडे मोंढे बोलतां दान दे, उघाडे मोंढे बोलीने मार्ग बतावे, तथा चित्तप्रधाने कपट करी घोडा अनेक जोजन दोडावी, प्रदेशीराजाने केशीश्रमणपासे बोलावी समजाव्यो. तथा उववाइसूत्रमां पंचाग्नि-तापस हाथी-तापस तथा कंदमूल प्रमुखनो आहार करवावाला तापस अने जलस्नानना करणहारा इत्यादिक अनेक जीवहिंसा सहित कष्टना करणहारा, देवतामां जाता कह्या ठे. एटला काम हिंसा सहित ठे. तेमां एकान्त पाप ठे के एकान्त धर्म पुन्य ठे ? ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेठे के, आटलां काममां हिंसा ठे तेनुं पाप ठे, पण थोडुं ठे; अने दानदेवाना प्रणाम, मार्ग बतावी साधुजीने शाता उपजाववाना प्रणाम, चित्त अने सुबुद्धिप्रधानना राजाने समजाववाना प्रणाम, तथा तापसोनुं कष्ट, ए सर्वना शुनजोगना प्रणाम, ते आज्ञामांहेलो धर्म ठे. एम कहे ठे तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! ए हिंसा सहित कर्तव्यमां शुनजोगने आज्ञामांहेलो धर्म कहो ठो, तेम दानमां तथा जीव बचाववामां जेटली हिंसा ते तो पाप ठेज, पण अनुकंपा शुनजोगमां पुन्य नथी, ने गुण पण नथी, एम केम कहो ठो ? कारणके गरीबने दान देवावालाना तथा जीव बचाववावालाना, एकिंद्रि-जीवने मारुं, एवा द्वेष प्रणाम नथी, पण

सुखशाता उपजाववाना अने अनुकंपाथी जीवने बचाववाना दयाना प्रणाम छे, तेथी तेने गुण केम नही निपजे ? नकाचित पापनो बंधतो रागद्वेषना प्रणामथी थाय. जो रागद्वेष विना जीव हणाय तेनुं पाप लागतुं होयतो, केवलीना शरीरथी पण हालतां चालतां जीव हणाय छे, तथा जलमां सिद्धा कह्या छे, तेमने पण पाप लाग्युं जोइए. वली जयणाथी साधु हाले, चाले, बेसे, सुवे, तेथी पापकर्म बंधाय नही, एम दशवैकालिकसूत्रमां कह्युं छे. जो एम पाप लागतुं होयतो, जयणाथी हालतां चालतां जीव हणाय, तेनुं पण पाप साधुजीने लाग्युं जोइए. पण हे देवानुप्रीय ! श्री वीतरागदेवेतो, एटले ठेकाणे रागद्वेषना प्रणाम नथी तेथी, पाप बंधाय एवुं कह्युं नथी. रागद्वेष एज कर्मबंधनुं कारण छे. तेमां द्वेष तो एकान्त पापबंधनुं कारण छे. हवे रागना बे भेदः— अप्रशस्त-राग अने प्रशस्तराग. तेमां अप्रसस्तराग तो पाप बंधावानुंज कारण छे, अने प्रशस्तराग पुन्य बंधावानुं कारण छे. वली रागद्वेष विना पुन्य पाप बंधाय नहि. ते कारणथी दान देवावालाना तथा जीव बचाववावालाना, एकिंद्रिने हणवाना द्वेषभाव नथी, पण जीवने शाता उपजाववानो प्रशस्तीराग छे; अने अनुकंपा शुभजोग दयाना प्रणाम छे, ते पुन्य-प्रकृतिनुं कारण छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "रागद्वेष तो अढार पापमां छे. दया पालवी, जबराइथी जीव छोडाववो, अने दान देवुं. एक माथे राग अने एकमाथे द्वेष, ए रागद्वेषना चालातो एकान्त पाप बंधावानुं कारणछे. अने पुन्य तो एकान्त शुभ जोगथीज बंधाय." एम कहेछे तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! शुभाशुभ जोग तो पुन्यपापना पुद्गल भेला करे छे, अने बंध तो रागद्वेषनो चोकडीथीज पडेछे. क्रोध, मान, राग अने द्वेषथीज पापनी स्थिति बंधाय; अने माया, लोभ तथा प्रशस्तीरागथी पुन्यनी स्थिति बंधाय. जो शुभजोगथीज पुन्य बंधावुं मानो तो ११ में, १२ में अने १३ में गुणठाणे उत्कृष्टो शुभजोग छे, त्यां शाता-वे-

दनीनोज बंध छे. ते शाता-वेदनीना बे भेदः-संप्राय अने इरियावही. शास्त्रसूत्र पन्नवणा पद २३ में, तथा भगवती शतक त्रीजे उद्देशे त्रीजे. तेमां इरियावही-शातावेदनी पुन्यप्रकृति बे समयनी स्थितिनी बंधाय, अने संप्राय-शातावेदनी कषायसहित पलसागरनी स्थीतिनी बेतालीस पुन्यप्रकृति मांहेली ११में, १२में अने १३ में गुणठाणे एके बंधाय नही. जो शुभजोगथी पुन्य बंधाय तो वीतराग-संजमीने (राग द्वेष रहितने) त्रण समयथी अधिकी इरियावही टलोने, बेतालीस पुन्यप्रकृति मांहेली एके केम न बंधाय ? ते कहो. हे देवानुप्रीय ! रागविना एकला शुभजोगथी पुन्य बंधाय नही. शुभजोग तो शुभ पुद्गलने भेला करे, अने प्रशस्त-रागथी चणे ( स्थिति ) बांधे. शास्त्र कर्मग्रंथ तथा भगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे, तुंगीयानगरीना श्रावकोना अधिकारे श्री पार्श्वनाथ भगवानना पांचसें संतान्या तुंगीयानगरीए पधार्या, तेमने तुंगीयानगरीना श्रावके, संजम अने तपनां फल शुं छे, ते विषे प्रश्न पुछया. ते पाठः—

तएणंते समणोवासया थेराणंभगवंतो अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म्य हठतुठा जाव हियया तिखुत्तो आयाहिणं पया-हिणं करेइ २त्ता एवं वयसी संजमेणं भंते ! किं? फले तवेणं भंते! किंफले? ततेणं थेराभगवंतो ते समणोवासए एवं वयासी संजमेणं अन्हो अणाण्हयफले तवे वोदाणफले. तएणंते समणोवासया थेरेभगवंते एवंवयासी जइणं भंते! संजमेणं अणाण्हयफले तवे वोदाणफले किं पतिएणं भंते ! देवा देवलोएसु उववज्जइ. तत्थणं कालियपुत्ते-णामं अणगारे तेसमणोवासए एवं वयासी पुव तवेणं अन्हो देवादेव लोएसु उववज्जइ. तत्थणं मेहलेणामं थेरे तेसमणोवासए एवं वयासी पूव संजमेणं अन्हो देवादेवलोएसु उववज्जइ. तत्थणं

आणंदरक्खिए णामं थेरे तेसमणोवासए एवं वयासी कम्मि याए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जइ. तज्झणं कासवेनामं-थेरे ते-समणोवासए एवं वयासी संगियाए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जइ पुव्व तवेणं पुव्व संजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो देवादेवलोएसु उववज्जई. सच्चेणं एसअठे नोचेवणं आयज्जाव वत्तवयाए ॥

अर्थः—त० तेवारे ते स० श्रमणोपासक श्रावक थे० स्थिवरज्ञगवंत ज्ञानवंतनी अं० समिपे ध० द्विविध धर्म सो० सांज्ञल्याथी नि० अतिशय सम्यक्प्रकारे ह० हर्ष पाम्या, (वचनने विषे विश्वास छे जेने तथा अत्यंत शांज्ञलतां आदर छे जेने ते) जा० यावत् हि० हृदयने विषे साधु उपदेश देवाथी पोतानो धन्यवाद पामताथका ति० त्रणवार आं० जमणा पासाथी मांमी प० प्रदक्षणा क० करे, करीने ए० एम व० केहेता हवा. सं० संजमनुं ज्ञं० हे ज्ञगवान ! किं० शुं फल होय ? अने त० तपनुं ज्ञं० हे ज्ञगवान ! किं० शुं फल होय? इतिप्रश्न. त० तेवारे ते थे० स्थिवरज्ञगवंत, ते स० श्रावकोप्रत्ये ए० एम केहेता हवा. सं० संजमनुं अ० अहो आर्यो ! अण० अनाश्रव फल एतावता नवां कर्मने आवतां वारे. त० तपनुं फल वो० पूर्वकृत कर्मनुं छेदवुं एतावता जुनां कर्म मुकावां छेदे. त० तेवारे ते स० श्रमणोपासक, प्रश्नना उत्तर शांज्ञलीने थे० स्थिवरज्ञगवंत प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. ज० जो ज्ञं० हे ज्ञगवान ! सं० संजमनुं अ० अनाश्रव फल जे आवतां कर्मने वारे ते फल कह्युं छे, अने त० तपनुं वो० पूर्व संचित कर्मनुं निर्जवारुप फल कह्युं छे, तो किं० शा कारणे ज्ञं० हे ज्ञगवान ! दे० देवता देवलोकने विषे उ० उपजे? तप संजमने युक्तरीते तेना अकार्यथी. इति अज्ञिप्राय. त० त्यां ते साधुउना समुदायमां का० वमा कालीकपुत्र नामे अ० अणगार ते० ते श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवा. पु० पूर्व तपेकरी अ० अहो आर्यो ! दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे. पूर्व शब्दे वीतराग

अवस्थानी अपेक्षाए सरागपणुं ( सरागभावे तप करे ) ते पेहेलुं. त० ते साधुना समुदायमां मे० मेहेलनामे थि० स्थिवर श्रुतवृद्ध ते० ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम कहे. पु० पूर्व संजमेकरी अ० अहो आर्यो! दे० देवलोकने विषे देवपणे ऊ० ऊपजे. एटले सराग संजमे तथा तपेकरी देवपणुं पामे. ( रागना अंशथी तथा कर्मबंधना हेतुथी जथाख्यात नथी ने सामायकादिक यथाख्यात-चारित्रथी पूर्वे छे तेथी). त० त्यां ते साधुओना समुदायमां आ० आणंदरखीत नामे थे० स्थिवर साधु ते० ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवाः-क० कर्मपणे कर्मने विकारे अ० अहो आर्यो! दे० देवलोकने विषे देवतापणे ऊ० ऊपजे. (एटले समस्त कर्म जेणे क्षय कर्यां नथी, पण शेष कर्म बाकी रह्यां छे तेथी). त० त्यां (ते साधुना समुदायमां) का०काश्यपनामे साधु श्रुतवृद्ध ते०ते स० श्रमणोपासको प्रत्ये ए० एम केहेता हवाः-सं० संगेकरी अ० अहो आर्यो! साधु दे० देवलोकने विषे देवतापणे ऊ० ऊपजे. मनुष्यादिकना संगे वर्ततोथको सरागपणा भणी, द्रव्यादिकने विषे संग करतोथको संजमादियुक्त छतुं कर्म बांधे, तेथी ते देवलोकमां जाय. ए चार. पु० एम सराग तपेकरी तथा पु०सं० सरागसंजमे तथा चारित्रेकरी तथा क० शेष कर्मेकरी तथा स० मनुष्य द्रव्यादि संगेकरी अ० अहो आर्यो! दे० देवता देवलोकने विषे ऊ० ऊपजे. स० साचो ए० ए अर्थ. वली ए अर्थ यथार्थ कह्या छे, पण नो० नहीं चे० निश्चे आ० आत्मभावनी व० वक्तव्यताएकरी कह्या. एटले पोतानी बुद्धि कल्पनाएकरी नथी कह्या.

भावार्थः—हवे जुओ! संजमथी कर्म रोकवां कह्यां, तपथी आगलां कर्मने बोदां पाडवां कह्यां, खपाववां कह्यां, अने सरागपणाथी पुन्य-प्रकृतिरुप देवतानुं आउखुं बंधावुं कह्युं. ए न्याये प्रशस्तरागथी पुन्य बंधाय. ते पेहेला गुणठाणाथी मांडीने दसमा गुणठाणा सुधी राग द्वेष छे, तेथी जबरी स्थितिना पुन्य पाप बंधाय; अने दसमा गुणठाणा सुधी शुभजोग राग सहित छे, तेथी पुन्यप्रकृति त्रण समयथी अधिकी स्थि-

तिनी बंधाय. आगले गुणठाणे राग नथी, तेथी बे समयनी स्थितिनी इरियावही-क्रिया बंधाय. वली क्रोध, मान, माया अने लोभथी पुन्य पाप बंधाय. तेनी शाख, सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे पेहेले. ते पाठः—

अणगारस्सणं भंते! अणागउमाणस्सवा चिठमाणस्सवा, णिसीयमाणस्सवा तुयट्टमाणस्सवा अणाउत्तं वथं पडि-ग्गहं कंबलं पायपुछणं गिन्हमाणस्सवा निखिवमाणस्सवा तसणं भंते! किं इरियावहीया-किरियाकज्जइ संपराइया-किरियाकज्जइ? गो०! नो इरियावहीया-किरियाकज्जइ संपराइया-किरिया कज्जइ. से केणठेणं भंते! गो०! जस्सणं कोह माण माया लोभ वोछिन्नाभवइ तस्सणं इरियाव-हीया-किरियाकज्जइ. जस्सणं कोह माण माया लोभा अवोछिन्नाभवइ तस्सणं संपराइया-किरियाकज्जइ अहा-सुत्तंरीयमाणस्स इरियावहीया-किरियाकज्जइ उसुत्तंरीयमा-णस्स संपराइया-किरियाकज्जइ सेणं उसुत्तमेवरीयंति सेतेणठेणं ॥

अर्थः—अ० अणगारने भं० हे भगवान! कर्मबंध चिंतासहित अणगारनुं सूत्र तथा वली अणगाराधिकारथी तेनां खानपान भोजननां सूत्र कहे छेः-अ० उपयोग रहित चालता थकाने, चि० उभा रेहेता थकाने, णि०. बेसताथकाने, तु० सुताथकाने, अ० उपयोग रहित व० वस्त्र प० पडिघा पात्रां कं० कांबला पा० रजोहरणा, पुंजणी तथा बीछा-वनानां वस्त्र गि० लेताथकाने, नि० मुंकताथकाने, (त० तेने) भं०हे भग-वान! कि० शुं इ० इरियावही-क्रिया लागे? के सं० संप्रायनी क्रिया लागे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! तेने नो० इ० इरियावही-क्रिया न लागे. ते इरियावही-क्रिया उपशान्त तथा क्षायक वीतरागीनेज होय तेथी. सं० संप्रायनी क्रिया लागे. से० ते शा अर्थे? भं० हे भगवान!

एम कह्युं ? गो० हे गौतम ! ज० जेने को० क्रोध, मा० मान, मा० माया अने लो० लोभ, वो० ए कषाय विछेद (उपशान्त तथा क्षय) थया होय त० तेने इ० इरियावही-क्रिया लागे. ज० जेने को० क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए कषाय अ० विछेद गया न होय त० तेने सं० संप्रायनी क्रिया लागे. अ० जथा जेम सूत्रमां कह्युं तेम चालताने, इ० इरियावही-क्रिया लागे, अने उ० विपरीत चालताने सं० संप्रायनी क्रिया लागे. से० ते उ० उत्सूत्रथी उपरांठो चाले छे, से० ते अर्थे एम कह्युं.

भावार्थः—हवे जुओ ! जेना क्रोधादिक चार विछेद गया, तेने इरियावहि-क्रिया कही,अने क्रोध, मान, माया ने लोभ सहित छे, तेने संप्रायनी २४ क्रिया कही. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, इहांतो क्रोधादिकथी संप्रायनी क्रिया कही छे, पण पुण्य बंधावुं कह्युं नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! समवायांगसूत्रमां आश्रवना पांच भेद कह्या छे. तेमां मिथ्यात, अव्रत, प्रमाद अने कषाय तो अशुभ कर्मनां बारणां छे; अने जोग आश्रवना पंदर भेद ने पचीस क्रिया छे. तेमां वीतराग-संजमीने रागरहितने तो शुभजोगथी शातावेदनी इरियावही-क्रिया कही; अने शेष चोवीसने संप्राया-क्रिया कही. तेथी पुन्य न बंधाय, तो शुभाशुभ कर्मना ग्रहवावाला आश्रवना तो पांचज भेद कह्या छेः-मिथ्यात, अव्रत, प्रमाद, कषाय अने जोग, ते पचीस क्रिया. तेमां पुन्य न बंधाय, तो पुन्य कइ क्रिया अने कया आश्रवमां बंधाय ? ते कहो. हे देवानुप्रीय! चोवीस संप्रायने कषायनी क्रिया कही. तेमां प्रशस्त-रागनी क्रिया अने शुभजोगथीज पुन्य बंधाय, अने अशुभजोगनी क्रिया द्वेष अने अप्रशस्तरागथी पाप बंधाय. ए न्याये प्रशस्त-रागसहित शुभजोग, तेज पून्य बंधावानुं कारण जाणवुं; पण संवर-भावमां देवतादिकनुं आउखुं तथा पुन्यप्रकृति बंधाय नही.शास्त्र सूत्र भगवती शतक पेहले उद्देशेएमे.ते पाठ.

असंवुडेणं भंते ! अणगारे सिझइ बुझइ मुच्चइ परिणिवाइ सव्वदुक्खाण मंतंकरेइ ? गो०! णोइणठेसमठे. सेकेणठेणं

जाव अंतं न-करेति? गो०! असंवुडे अणगारे आउयव-
ज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ सिढिल बंधणबंधाउ, धणियबंधण
बंधाउ पकरेंति रहस्सकाल ठिआउ दिहकाल ठिइयाउ
पकरेंति मंदाणुभावाउ तिव्वाणुभावाउ पकरेंति अप्पपए-
सगाउ बहुप्पएसगाउ पकरेंति आउयंचणं कम्मं सियबंधइ
सियनोबंधइ असायावेयणिज्जंचणं कम्मं भुज्जो २ उव-
चिणेइ अणाइयंचणं अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरंत संसा-
रकंतारं अणुपरियट्टइ. सेतेणठेणं गो० ! असंवुडे अण-
गारे णोसिज्झइ. संवुडेणं भंते ! अणगारे सिज्झइ ? हंता
सिज्झइ जाव अंतंकरेइ. सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ
संवुडे अणगारे सिज्झइ ? गो० ! संवुडे अणगारे आउयव-
ज्जाओ सत्तकम्मपगडिउ घणियबंधणबंधाउ सिढिल-
बंधणबंधाउ पकरेंति दिहकालठिइआउ रहसकालठि-
इयाउ पकरेइ तिव्वाणुभावाउ मंदाणुभावाउ पकरेंति
बहुप्पएसगाउ अप्पपएसगाउ पकरेइ आउयंचणंकम्मं
न बंधइ असायावेयणिज्जंचणं नोभुज्जो २ उवचिणाइ
अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं
वीइवयई. सेतेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ संवुडे अणगारे
सिज्झइ जाव अंतं करेंति. ॥

अर्थः—अ० असंवृत ( जेणे आश्रवद्वार रुंध्या नथी एवा ) अ०
साधु भं० हे भगवान ! सि० सिद्धिगमन योग्य होय ? केवल-ज्ञानेकरी
जीवादिक पदार्थने जाणे ? मु० नवा कर्मेकरी छुटे ? अने प० कर्म
पुद्गल क्षय करी स० आउखाने छेडे शेष कर्मनो अंत करे ? इतिप्रश्न.
उत्तर. गो० हे गौतम ! णो० ए अर्थ समर्थ नही. से० ते शा कारणे हे

जगवान ! जा० यावत् अं० अंत न करे ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० असंवृत ( जेणे आश्रवद्धार रुंध्या नथी एवा ) अ० साधु आ० आउखा-कर्म टालीने ( एक जवनेविषे एकवार अंतरमूहुर्त मात्र कालने विषेज आउखानो बंध छे तेमाटे आउखुं वर्ज्युं ) स० सात कर्मनी प्रकृति सि० सिथील बंधने बांधी होय तेनां ध० गाढां अथवा निकाचित बंधन करे, र० थोडा कालनी स्थिति होय तेनी दि० दीर्घ कालनी स्थिति करे, एतावता घणी स्थितिने वधारे. मं० कर्मनो जे मंद अनुजाग (मंदरस) होय, तेने ति० तीव्र अनुजाग (तीव्ररस) करे. अ० थोडो प्रदेश जाग कर्म दलीक होय ते ब० बहु प्रदेश जाग करे, कर्मनां दलीयां वधारे इत्यर्थः आ० वली आउखा-कर्म सि० कोइक वखत बांधे, सि० कोइक वखत नो० न बांधे. अ० असाता-वेदनी कर्मने जु० वार वार उ० पुष्ट करे. अणा० जे संसारनी आदि नथी, अण० तेमज अंत पण नथी, दी० दीघ मध्य छे जेनी, एवा चा० चार गतिरुपी संसार कंतार ( जवरुप अरण्य उजाड ) ने विषे अणु० परिभ्रमण करे. से० ते कारणे गो० हे गौतम ! अ० जेणे आश्रवद्धार रुंध्या नथी तेवा अ० अणगार णो० सीझे नही; इत्यादिक पूर्ववत् केहेवुं. वली गौतम प्रश्न करे छे. सं० जेणे आश्रवद्धार रुंध्या छे एवा अ० साधु सीझे? इत्यादिक सर्व केहेवुं. हं० हा गौतम ! संवृत अणगार सि० सीझे जा० यावत् अं० अंत करे. एम सर्व केहेवुं. से० ते शामाटे जं० हे जगवान ! ए० एम वु० कह्युं ? के सं० सवृत अणगार सि० सीझे, जाव सर्व दुःखनो अंत करे. गो० हे गौतम ! सं० जेणे आश्रवद्धार रुंध्या छे एवा अ० अणगार आ० आठ कर्म मांहेलुं पांचमुं आयु-कर्म टाली स० सात कर्मनी प्रकृति ध० नीबड चीकणी बांधी होय, तेनां सि० सिथिल (ढीलां) बंधन प० करे. दी० दीर्घकाले वेदवा जोग स्थिति होय, ते र० थोडा काले वेदवा जोग स्थिति करे. ति० तीव्र रस प्रत्ये मं० मंद रस प० करे. ब० घणा प० प्रदेश होय ते अप्प० अल्प प्रदेश करे; पण आउ० आउखा-कर्मने न० न बांधे. अ० अशाता-वेदनी न बांधे, जु० वारवार

भ० चीथे नही. अ० आदि अंत रहित अण० चार गतिरुप संसार-कंतारमां फरे नही. से० ते ए अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं. सं० जे एवा संवृती अणगार छे ते सि० सीझे, जा० यावत् अं० सर्व कर्मनो अंत करी मोक्ष जाय.

भावार्थः—हवे जुओ ! आश्रवभावमां सर्वार्थ-सिद्ध आदि चार-गतिनुं आउखुं बंधाय एम कह्युं, अने संवरभावमां आउखुं न बंधाय एम कह्युं. ए न्याये चोवीस संप्रायनी क्रियाने आश्रव भावमां कहीये; अने आश्रवभावमां देवतादिकनुं आउखुं बंधाय. ए न्याये क्रोधादिक सहितने संप्राया-क्रिया लागे, अने तेमां प्रशस्त-रागथी पुन्य बंधाय. ए न्याये दानमां तथा जीव बचाववामां अनुकंपा, शुभजोग अने प्रशस्त-राग; ए पुन्यनुं कारण जाणवुं.वली छकायना जीव खाय, खवरावे, अने खाताने भलो जाणे, तेमां शुं ? एम पुछे, तेने पाछा नीचे लखेला प्रश्न पुछवाः—

(१) छकायना जीव राख्यामां तथा बचाव्यामां शुं ? रखाव्यामां शुं ? अने राखताने भलो जाण्यामां शुं ? (२) कोइ अलुणुं खावा अस-मर्थ छे, तेणे काचु सचित लुंण लेतां केवलीनां वचन संभार्यां, अने असंख्याता जीव जाणीने सचित लुंण छोड्युं, अचित लुंण खाधुं. ए पृथ्विकायना जीवनी रक्षा करी, तेनुं पाप पोताने लागतुं हतुं ते टाळ्युं तेमां शुं ? (३) कोइ सचित लुंण खातो होय, तेने अचित लुंण आपी पृथ्विकायना जीवोनी रक्षा करावी अनेरानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (४) ए रीते कोइ पृथ्विकायना (लुंणना) जीवोनी रक्षा करताने तथा पाप टालताने भलो जाणे तेमां शुं? (५) कोइने जग्यानी अडचण पडे तेथी हवेली प्रमुख जग्या कराववाना तेना प्रणाम थया. एवामां केव-लीनां वचन संभार्यां. अने छकायना आरंभनुं मोटुं पाप जाणी छोड्युं. सीधी जग्या भाडे लइने रह्यो. ए छकायना जीवनी रक्षा कीधी अने पोतानुं पाप टाळ्युं तेमां शुं ? (६) कोइ जग्या करा-

वतो होय तेने पोतानी जग्या रेहेवा आपी, छकायना जीवनी रक्षा करवी आगलानुं मोटुं पाप टलावे तेमां शुं ? (७) वली कोइ जग्यानुं पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (८) कोइए केवलीनां वचन संभारी उनुं पाणी पीने, असंख्याता अपकायना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (९) कोइए तिविहार अपवास कर्यो. तेने तृषा लागी, ते तृषा सहेवाने असमर्थ, अने उंना पाणीनो जोग नथी, तेथी ते काचुं पाणी पीवा चाल्यो. तेवारे कोइ श्रावकना घेरे उनुं पाणी ठारेलुं पड्युं छे, ते पाइ अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (१०) ए रीते उंनुं पाणी पीने काचा पाणीनुं पाप टाले, तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (११) कोइने स्नान करवानी मरजी थइ. तेणे केवलीनां वचन संभारी काचा पाणीमां असंख्याता अपकायना जीव जाणी, उंनुं पाणी जाचीने लावी स्नान कर्युं. ए उंना पाणीनी साजे अपकायनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (१२) एज रीते कोइ स्नान करताने उनुं पाणी दइ, अपकायना जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (१३) वली कोइ उना पाणीथी स्नान करी काचा पाणीना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाले तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (१४) कोइ भुख सेहेवाने असमर्थ छे, तेणे केवलीना वचनथी तेउकायमां असंख्याता जीव जाणी, तैयार सुखडी लइ खाइ तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (१५) एज रीते कोइने रसोइनो आरंभ करतो जाणी तैयार सुखडी प्रमुख खवरावीने तेउकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (१६) तेमज कोइ तैयार अचित वस्तु खाइ, तेउकायना जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टालतो होय, तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (१७) कोइ शीत सेहेवा असमर्थ छे. तेने सगडी करी तापवानी मरजी थइ, पण तेणे केवलीनां वचन संभारी वस्त्र ओढीने असंख्याता तेउ-कायना जीवोनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? ( १८ ) कोइ तापतो होय तेने वस्त्रादिक आपी, अग्निहेतो

बेसाडी माला फेरवावे. ए तेउ-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (१९) एज रीते कोइ वस्त्र उंढी तेउ-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (२०) तेमज कोइ, अनार्यना उपदेशथी गाम बाल्याथी, दव दीधाथी, उपद्रव टलतो जाणी, गाम बालवा तथा दव देवा चाल्यो; पण साधु तथा श्रावकना उपदेशथी तेमां मोटुं पाप जाणी, अचित वस्तु दानादिकनुं उपक्रम करे, अने गाम बालवामां तथा दवमां जीव मरता तेनो रक्षा करी पोतानुं पाप टाल्युं तेमां शुं ? (२१) तेमज कोइ गाम बालतो होय, दव देतो होय तेने सुखडी प्रमुख अचित वस्तु खवरावी दान दइ, ते जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२२) एज रीते कोइ पाप टाली जीवनी रक्षा करे, तेने भलो जाणे तेमां शुं ? ( २३ ) कोइ उघाडे मोढे बोलतां केवलीनां वचन संभारी वस्त्र प्रमुखथी जयणा करी, वायु-कायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? ( २४ ) तेमज कोइ उघाडे मोढे बोलतो होय तेने मुहपत्ति, अंगुछो प्रमुख वस्त्र दइ वायु-कायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? ( २५ ) एज रीते कोइ वस्त्र प्रमुखथी जयणा करी वायुकायना जीवनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने जलो जाणे तेमां शुं ? (२६) कोइ वनस्पतीनो आरंभ करतां केवलीनां वचन संभारी अचित वस्तुना संजोगथी, वनस्पती लीलोत्री तथा अजमो जीरुं इत्यादिक जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? (२७) एज रीते अनेरो कोइ माणस तथा तिर्यंच, लीलोत्री खातो होय तेने सुखडी, सेक्या चणा तथा सुकुं घास प्रमुख दइ वनस्पतीकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (२८) एज रीते कोइ अचित वस्तु खाइने वनस्पतीना जीवोनी रक्षा करी, पोतानुं पाप टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (२९) कोइ मांसनो रथी मांस खावाने अर्थे, तथा वेमारने अर्थे त्रस-जीवनो सीकार करतां, साधु श्रावक, तथा दयावंतनो उपदेश सांभली सुखडी प्रमुख

खाइ, अचित वस्तुनो वेपार करी आजीविका करे. ए अचित वस्तुना जोगथी सीकार छोडी, त्रस-जीवनी रक्षा करी पोतानुं पाप टाले तेमां शुं ? (३०) कोइ अनेरो त्रस-जीवनो सीकार करतो होय, तथा छोकरो कीडीयोने कचरतो होय, इत्यादिक अनेक त्रसकाय-जीवनी हींसा करतां सुखडी तथा अचित द्रव्य प्रमुख पूद्गल दइ त्रसकाय-जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (३१) तेमज कोइ अचित सुखडी प्रमुख खाइ तथा अचित पुद्गलना व्यापारे आजीविका करी त्रसजीवनी हींसानुं मोटुं पाप छोडी त्रसजीवनी रक्षा करतो होय पाप, टालतो होय तेने भलो जाणे तेमां शुं ? (३२) कोइ श्रावकना पोषा करवाना प्रणाम थया, पण जग्यानो जोग नथी. त्यारे कोइ श्रावके पोतानी जग्या दइ पोषा कराव्या. ए पांच आश्रव सेववा छोडाव्या तथा छकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (३३) कोइ श्रावकना सामायक तथा पोषा करवाना भाव थया, पण जग्या, पुंजणी तथा मुहपतिनो जोग नथी. त्यारे कोइ श्रावके जग्या, पुंजणी, अंगुछो अने मुहपति दइ सामायक पोषा करावीने पांच आश्रव छोडाव्या. ए छकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (३४) कोइ टाबर (छोकरो) कीडीयोने कचरतो होय, तेने कोइ वरजी राखी कीडीयोनी रक्षा करावी तेनुं पाप टलावे तेमां शुं ? (३५) कोइ मीठाइनी चीज उपर कीडीउं आवी, तेने कुतरो खावा लाग्यो. ते देखी कोइए हलवेथी झाटकी कीडीयोने आघो करी. ए कीडीयोनी रक्षा करी खावावालानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (३६) कोइ गायोथी वाडो भर्यो छे. तेमां लाहे लागी जाणी, कोइ दयावंते वाडो खोलीने बलती गायोनी रक्षा करी लाहे लगाववावालानुं द्रव्य पाप टाल्युं तेमां शुं ? (३७) तेमज कोइ गाम बालतो होय तथा लाहे लगाडतो होय, तेने वरजी राखी छकायना जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? (३८) साधुने कोइ दुष्ट फांसी देतो होय तेने कोइ दयावंत वरजी राखे. ए साधुनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? केमके एक साधुनी रक्षा करी तेणे अनंता जीवनी

रक्षा करी एम जाणवुं. तेमज जे एक साधुनी घात करे, तेने अ-नंता जीवोनुं वेर लागे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक नवमे, उद्देशे चोत्री-समें. ते पाठ लखीए छीए:—

पुरिसेणं भंते ! इसि हणमाणा किं ? इसि वेरेणं पुठे नो इसिवेरेणं पुठे ? गो० ! नियमं ताव इसि वेरेणं पुठे अदवा इसि वेरेय णो इसिं वेरेणय पुठे ॥

अर्थः—पु० पुरुष भं० हे भगवान ! इ० रुषिने ह० हणतांथकां किं० शुं ? इ० रुषिने वे० वेरे करी पु० फरश्यो ? के नो० अनेरा जीव संघाते वेरे फरश्यो ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! नि० नियमा इ० रुषिने वेरे करी फरश्यो, अ० अथवा इ० रुषि वेरे करीने णो० अनेरा जीव संघाते वेरे फरश्यो. एटले अनंता जीव संगाते वेरे फरश्यो.

भावार्थः—हवे जुओ ! एक साधुने हणे तेने अनंता जीवोनुं वेर लागे कह्युं. (३९) ए न्याये साधुने मारतां राखे तेणे, अनंता जीवनी रक्षा करावी कहीए. अनंता जीवोनुं मारवावालाने पाप लागतुं, ते टलाव्युं तेनां शुं ? (४०) कोइ कीडीओ उपर पग देता होय तेने, आडो हाथ दइ कीडीयोनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं तेमां शुं ? (४१) तेमज कोइ लीलोत्री या पृथ्विकाय (मरोडमाटी) उपर पग दइ चालतो होय तेने वरजी राखी, पृथ्विकायना जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ? इत्यादिक अनेक प्रकारे जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलावे तेमां शुं ?

हे देवानुप्रीय ! घणुं पाप लागतुं जाणीने टाल्युं अने थोडुं पाप लगाव्युं, तेने श्री वीतरागदेवे धर्म-पुन्य कह्युं छे. ते जीवने भलो कह्यो छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३४ में. कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण अधर्म–लेश्या कही; अने तेजु, पद्म अने शुकल, ए त्रण धर्म–लेश्या कही. वली पन्नवणाना लेश्या–पदमां त्रण अशुद्ध अने

संक्लिष्ट ( माठी ) लेश्या कही; अने त्रण शुद्ध अने असंक्लिष्ट (जली) लेश्या कही. वली ठाणायांगने त्रीजे ठाणे, त्रण लेश्या दुर्गति-गामिनी कही, अने त्रण सद्गति-गामिनी कही. हवे श्री वीतरागदेवे ठ लेश्या उपर आंबानुं दृष्टान्त दीधुं ते कहेठेः-ठ जणा केरी खावाने अर्थे वनमां आव्या. तेमां कृष्ण-लेश्यानो धणी वोल्यो के, मुलथी आंबो कापो. १ नील-लेश्यानो धणी बोल्यो के, मालां कापो. २ कापोत-लेश्यानो धणी बोल्यो के, मालीज कापो. ३ तेजु-लेश्यानो धणी वोल्यो के, काची पाकी केरीज तोमो. ४ पद्म-लेश्यानो धणी वोल्यो के, पाकी पाकी केरीउं तोमो; ५ अने शुक्ल-लेश्यानो धणी बोल्यो के, वेसो ! पुर्व पश्चिमना पवन लागवाथी पाकेली केरी पमशे ते खाइशुं. ६.

हवे जुउ ! काची पाकी केरीउं ले, पाकी केरीउं ले, अने पमी होय ते लइने खाय, तेमां पण पापतो ठे, पण पेहेली कृष्णादिक त्रण लेश्याना प्रणाममां तथा करतव्यमां पाप घणुं ठे, ते माटे अधर्म-लेश्या कही; अने कृष्णादिक त्रण लेश्यामां घणुं पाप लागतुं ते टाल्युं अने थोरुं पाप लगाव्युं, ते घणुं पाप टाल्युं तेनी अपेक्षाए धर्म-लेश्या कही. वली ठ लेश्या उपर वधकनो दृष्टान्त श्री वीतरागदेवे कह्यो ठे. ते कहे ठेः-कृष्ण लेशी वधुं गाम मारे. १ नीललेशी माणसनेज मारे. २ कपोत लेशी पुरुषनेज मारे. ३ तेजुलेशी आयुद्ध सहितनेज मारे. ४ पद्मलेशी सामो लमवा आवे तेनेज मारे. ५ अने शुक्कलेशी अपराधीनेज मारे ६.

हवे जुउ ! तेजु, पद्म अने शुक्क-लेश्याना करतव्यमां पण पाप तो ठे, पण श्री वीतरागदेवे, कृष्णादिक त्रण लेश्यामां घणुं पाप लागे ते माटे अधर्म तथा माठी लेश्या कही; अने उपरनी त्रण लेश्याना धणीने, कृष्णादिक त्रण लेश्यामां घणुं पाप लागतुं ते टाली थोरुं पाप लगाव्युं, ते आश्री त्रण धर्म-लेश्या कही. ए न्याये ४१ प्रश्नोमां थोमा पाप साटे घणुं पाप टाल्युं, ते माटे त्रण धर्म-लेश्यानी पेरे धर्म-पुन्य कहीये. जे थोरुं पाप लगामी घणुं पाप टाले, ते जीवने श्री वीतरागदेवे जलो कह्यो. शाख सूत्र जगवती शतक बारमे उदेशे बीजे. ते पाठः—

सुतत्तं भंते! साहू जागरियंतं साहू? जयंति! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुतत्तं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियंतं साहू. सेकेणठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगतियाणं जाव साहू? जयंति! जेइमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिठा अहम्मखाइ अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं वित्तिंकप्पेमाणा विहरइ एएसिणं सुतत्तं साहू. एएणंजीवाणं सुत्तासमाणा नो बहूणं पाण भूय जीव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणियाए वट्टंति. एएणं जीवा सुत्तासमाणा अत्ताणं परंवा तदुभयंवा नोबहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं सुत्ततं साहू. जयंति! जेइमे जीवा धम्मत्थिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिंकप्पेमाणा विहरइ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू. एएणं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति. तेणं जीवा जागरासमाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयंवा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति. एएणं जीवा जागरासमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं जागरियंतं साहू. सेतेणठेणं जयंति! एवं वुच्चइ अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्ततं साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियंतं साहू.

अर्थः—सु० सुता निंद्राने वश पड्या भं० हे भगवान! सा० भला? के जा० जागता सा० भला? ए प्रश्न उत्तर. ज० हे जयंति! अ० केटलाएक जी० जीवने सु० निंद्रावश पणुं सा० भलुं, एटले सुता

जला. अने अ० केटलाएक जी० जीवने जा० निंद्राने अन्नावे जागवुं सा० न्नलुं, एटले जागता न्नला. से० ते शा अर्थें नं० हे नगवान ! ए० एम वु० कह्युं ? के अं० केटलाएक जीवने सुवुं न्नलुं, अने केटलाएक जीवने जागवुं नलुं ? प्रश्न. उत्तर. ज० हे जयंति ! जे० एवा जीवने (श्रुत चारित्ररुप धर्मथी रहितने) अ० अधर्मी कह्या. वली एज कहेछे. अहम्मा० अधर्मानुग श्रुत चारित्ररुप धर्मथी विरुद्ध अधर्म मार्गें चाले ते, अहम्मि० अधर्मज जेनो इष्ट छे ते, अणम्मखा० अधर्म प्रत्ये कहे एवो जेनो आचार छे ते, अहम्मप० अधर्मप्रलापी अधर्मज उपादेयपणे-करी देखे ते, अहम्मपल० अधर्म प्ररंजन अधर्मने विषे रहे ते, अहम्म-स० अधर्मसमुदायाचार जेनो अधर्म समुदायनोज आचार छे ते, अह-म्म० अधर्में करीज आजीविका करताथका वि० विचरे छे, ए० एवा जीवोने सु० सुता सा० न्नला कह्या. ए० ए जीव सु० सुताथका नो० नही ब० घणा प्राणीने नू० नूतने, जीवने स० सत्वने दु० दुःखना उपजावणहार सो० शोकना उपजावणहार जा० यावत् प० परितापना उपजावणहार थाय. ए० ए जीव सु० सुताथका अ० पोतानी आत्माने तथा प० परआत्माने त० बंनेने नो० नही ब० घणा अ० अधर्मना कारणोने विषे सं० संजोगेकरीने सं० संजोगपणे थाय. ए० ए जीव सुता न्नला. ज० हे जयंति ! जे० जे आगल कहेवाशे ते जीव ध० धर्मने विषे रह्याथका ध० धर्मानुग जा० यावत् ध० धर्मनीज चे० निश्चे करीने वि वृत्तिकल्प करता थका विचरे. ए० ए जीव जा० जागता न्नला. ए० ए जीव जा० जागताथका ब० घणा प्राणी जा० यावत् स० सत्व पृथ्व्या-दिकने अ० दुःख न उपजावे, जा० यावत् अ० परितापना नही उपजा-वताथका व० वर्त्ते. ते० ते जी० जीव जा० जागताथका अ० पोताने प० परने अथवा त० पोताने अने परने बेहुने ब० घणी ध० धार्मिकना सं० संजोगने विषे सं० जोमणहार न्न० थाय. ए० एवा जी० जीव जा० जागताथका ध० धर्मजाग्रिका करीने अ० आत्माने जगाडणहार थाय ए० एवा जीवनुं जागवुं सा० न्नलुं कह्युं. से० तेणे अर्थे ज० हे जयंति !

ए० एम वु० कह्युं के अ० केटलाएक जी० जीव सु० सुताज भला; अने अ० केटलाएक जी० जीव जा० जागता सा० भला. ए सुता जागतानो अधिकार कह्यो.

बलियत्तं भंते ! साहू दुब्बलियत्तं साहू ? जयंति ! अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहु. से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जाव साहू. जयंति ! जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरइ एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू. एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुबलिय वत्तवया भाणियवा. बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियवं जाव संजोएत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं बलियत्तं साहू सेतेणठेणं जयंति ! एवंवुच्चइ तंचेव जावसाहू. दखत्तं भंते ! साहू आलसियत्तं साहू ? जयंति ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दखत्तं-साहू अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंति ! जेइमे अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू. एएणं जीवा आलसासमाणा नो बहूणं जहा-सुत्ता तहा-आलसा भाणियवा जहा-जागरा तहा-दखा भाणियवा जाव संजो एत्तारो भवंति. एएणं जीवा दखासमाणा बहूहिं आयरिय-वेयावच्चेहिं उवझाय-वेयावच्चेहिं थेवर-वेयावच्चेहिं तवस्सी-वेयावच्चेहिं गिलाण-वेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुल-वेयावच्चेहिं गण-वेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहमी-वेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति. एएसिणं जीवाणं दखतं साहू सेतेणठेणं तंचेव साहू. सोइंदिय-वसठेणं भंते!

जीवे किं बंधइ ? एवं जहा कोह वसट्टे तहेव जाव अणु-परियट्टइ एवं चक्खिंदियवसट्टेवि जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ. ढउमत्थेणं भंते ! निद्दाएज्जवा पयला-यज्जवा ? हंता निद्दाएज्जवा पयलायज्जवा जहा हसेज्जा तहा.

अर्थः—हवे डुर्बलादिकने तेमज कहे छेः—ब० अनंतरे बलवंत-पणुं भं० हे भगवान ! सा० भलु ? के डु० डुर्बलपणुं सा० भलुं ? इति प्रश्न. उत्तर. ज० हे जयंति ! अ० केटलाएक जीवने ब० सबलपणुं सा० भलुं, अने अ० केटलाएक जीवने डु० डुर्बलपणुं सा० भलुं. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम वु० कह्युं ? के जा० केटलाएक सबला भला, अने केटलाएक निर्बल भला. इति प्रश्न. उत्तर. ज० हे जयंति ! जे० जे जीव अ० अधार्मिक इत्यादिक पुर्वोक्त सर्वे बोल केहेवा जा० जावत् वि० विचरे. ए० ए जीवने डु० डुर्बलपणुं भलुं. ए० ए जीव इत्यादिक ए०ज० जेम सु० सुतानी वक्तव्यता कही, त० तेम डु० डुर्बलनी केहेवी. एटले सुता सरीखो डुर्बल पक्ष जाणवो. ब० बलवंतनी वक्तव्यता ज० जेम जा० जागतानी वक्तव्यता कही तेम केहेवी. जा० यावत् सं० संजोग जोडणहार थाय. ए० ए जीवने ब० बलवंतपणुं सा० भलुं. से० तेणे अर्थे ज० हे जयंति ! ए० एम कह्युं. तेमज जा० यावत् भलो. वली जयंति पुछे छे के, हे भगवान ! द० डाह्यापणुं (उद्यमपणुं) भलुं ? के आ० आलसपणुं सा० भलुं ? ए प्रश्न. उत्तर. ज० हे जयंति ! अ० केटलाएक जी० जीवने द० दक्षपणुं एटले उद्यमवंतपणुं भलुं, अने अ० केटलाएक जी० जीवने आ० आल-सपणुं भलुं. से० ते शा अर्थे ? भं० हे भगवान ! ए०वु० एम कह्युं, तं० तेमज जा० यावत् सा० भला एटलासुधी केहेवुं ? ज० हे जयंति ! जे० जे जीव अ० अधर्मिक अधर्मानुगत इत्यादिक जा० यावत् करताथका वि० विचरे, ए० जी० ए जीवने आ० आलसपणुं सा० भलुं. ए० ए जीव आ० आलसु थयाथका नो० नही ब० घणा प्राणीने ज०सु० जेम

सुतानी वक्तव्यता कही त० आ० तेम आलसुनी पण वक्तव्यता केहेवी. ज० जा० जेम जागतानी वक्तव्यता कही त० द० तेम डाह्यानी वक्तव्यता केहेवी. जा० यावत् सं० संजोडणहार थाय, एटला सुधी केहेवुं. ए० ए जीव द० डाह्या थयाथका ब० घणा आ० आचारजनी वे० वैयावृत्तने विषे, उ० उपाध्यायनी वैयावृत्तने विषे, थे० स्थिवरनी श्रुतवृद्धनी वैयावृत्तने विषे, त० तपश्वीनी वैयावृत्तने विषे, गि० गीलाणनी वैयावृत्तने विषे, से० शिष्यनी वैयावृत्तने विषे, कु० कुलनी वैयावृत्तने विषे, ग० गणनी वैयावृत्तने विषे, सं० संधनी वैयावृत्तने विषे अने सा० सार्धर्मिनी वैयावृत्तने विषे, अ० आत्माने सं० संजोडणहार थाय. ए० एवा जीवने द० दक्षपणुं ज्ञलुं. से० तेणे अर्थे ज० हे जयंति ! इत्यादिक. तं० तेमज केटलाएकने आलसपणुं अने केटलाएकने दक्षपणुं सा० ज्ञलुं होय. वली जयंति पुछे छे के, सो० श्रोतिंद्रिने व० वशेकरी ज्नं० हे ज्ञगवान ! जी० जीव किं० शुं कर्म बांधे ? ए प्रश्न. ए० एमज ज० जेम को० क्रोधने व० वश कह्यो तेम केहेवुं. एटले सात कर्मनी प्रकृति बांधे इत्यादि. त० तेमज जा० यावत् अ० परिज्ञ्रमण करे. ए० एम च० चक्षु-इंद्रिने वशे पण केहेवुं. जा० यावत् फा० स्पर्श-इंद्रिने वशे पण तेमज केहेवुं. जा० यावत् संसार परिभ्रमण करे. ठ० ठद्मस्थ ज्नं० हे ज्ञगवान ! मनुष्य नि० सुखे जागे? निंद्रा करे ? प० उज्नो रही निंद्रा करे ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा जयंति ! नि० निंद्रायमान थाय, तथा प० प्रचलायमान थाय. ज० जेम ह० हसवाने विषे कह्युं, त० तेम निंद्राने विषे पण केहेवुं.

ज्ञावार्थः—हवे जुउ ! अधर्मी जीव तो सर्वथा ज्रुंडा छे, पण जागता पांच आश्रव सेवे, हिंसा कुड कपट करे, अने सुता निंद्रामां एटलुं पाप न करीशके. घणुं पाप टल्युं, तेमाटे सुता ज्ञला कह्या. हवे जुउ ! निंद्रामां सुता शुं ज्ञलुं काम करे छे ? निंद्रालेतां पण सातआठ कर्म बंधाय कह्युं छे. शाख सूत्र ज्ञगवती शतक पांचमे उद्देशे चोथे. ते पाठः-

जीवेणं भंते! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कइ कम्मपगडीओ बंधइ? गो०! सत्तविह बंधएवा अठविह बंध एवा एवं जाव वेमाणिए पोहत्तिएसु जीवेगिंदिय वज्जो तिय भंगो॥

अर्थः—जी० जीव भं० हे भगवान ! निंद्रा करतो थको प० प्रचलायमान (विशेष निंद्रा) करतो थको क० केटला कर्मनी प्रकृति बं० बांधे ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स० आउखुं न बांधे त्यारे सात कर्मनी प्रकृति बं० बांधे, अने आउखुं बांधे त्यारे अ० आठ कर्मनी प्रकृति बं० बांधे. ए० जा० एम यावत् वे० वैमानिक सुधी केहेवुं. पो० बहुवचनने विषे पुंठली परे जी० जीवपदने तथा एकेंद्रियना पांच पदने विषे एक भांगो. शेष १९ दंडके ति० त्रण भं० भांगा.

भावार्थः—हवे जुओ ! निंद्राथी सातआठ कर्म बंधाय, त्यारे पापी जीवने सुता भला केम कह्या ? पण अहियांतो अपेक्षाय वचन छे. ते जागतानी अपेक्षाये निंद्रामां सुताने थोडुं पाप लागे, अने घणुं पाप टल्युं ते माटे सुताने भला कह्या. एमज पापी जीवने दुर्बल आलसु भला कह्या. ए न्याये कोइने तृषा लागी तेथी काचुं पाणी पीवा मांड्या, पण अरिहंतना वचनथी तेमां असंख्याता जीव जाणीने पीवुं छोड्युं, पण तृषा न खमाय तेथी उंनुं पाणी पीधुं. हवे उंनुं तथा काचुं पाणी ए बे टाली न शकाय, तेथी उंना पाणीनी साटे काचा पाणीनुं पाप टाल्युं, ते गुण नीपन्यो. कारणके निमित्त कारण विना दया न पलाय. हवे जेम पोते थोडा पाप साटे घणुं पाप टाल्युं ते गुण थयो, तेमअनेराने घणुं पाप लागतुं जाणी, थोडा पाप साटे घणुं पाप टलावे तेमां गुण केम नहि थाय ? पोतानुं पाप टाल्यामां गुण हशे तो अनेरानुं पाप टलाव्यामां पण गुण हशेज; अने टालताने भलो जाण्यामां पण गुण हशेज. एम ४१ प्रश्नमां पण जाणवुं. ते उपर द्रष्टान्त कहीये छीयेः-जेम कोइने राजाए सो रुपीया दंड कर्या. तेथी घरनो धणी जाणे के माहारा सो रुपीया गया. तेवामां कोइ प्रधान प्रमुख वच्चे पडी, पचास रुपीया

छोडावी पचासज रुपीया देवराव्या. तेथी ते पुरुष तेने शुं जाणे ? ए पापीए माहारा पचास रुपीया खोवराव्या, एम जाणे? के एम जाणे? जे शाबाश जाइ, तमे माहारा पचास रुपीयामां बुटको कराव्यो, तमे मने घणो गुण कर्यो एम कहे ? ए रीते गुण छे के अवगुण छे ? ते विचारो. एम ४१ प्रश्नमां अनेरानुं पाप टलाव्युं ते पण भवभवमां गुणज छे.

वली तेरापंथी कहेछे के, "बीलाडी प्रमुख हिंसक जीव उंदर प्रमुख गरीब जीवने मारे, तेने छोडावे तो, छोडावे तेना उपरतो राग आव्यो, ने बीलाडी प्रमुख उपर द्वेष आव्यो. ए रागद्वेषनां फलतो कडवां छे. वली जेम भाणुं पीरश्युं ने जमनारना मोंढा आगलथी खोशी ले, ते दृष्टान्ते छोडावनारने भोगांतराय लागे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! भोजनवाला तो कमाइ करी पीशी रांधीने जमे, अने तेनुं जमवुं भोजनथकीज थाय. ते भोगांतराय खोश्या आश्री लागे, पण बीलाडीना उंदरमां केटला टका भल्या हता ? ते कहो. केमके तेतो द्वेष-भावथी दुष्ट प्रणामथी मारे छे. ए छोडावनारना अंतराय देवाना द्वेष प्रणाम नथी, पण तेनुं घणुं पाप टलाववाना प्रणाम छे. वली तमे पूर्वे कह्युं के, छोडावनारनो बीलाडी उपर द्वेष-भाव आव्यो. ए तमारुं केहेवुं अयथार्थ छे. कारणके एज वेलाए बीलाडीने कुतरो मारे, तेने पण दया आणी छोडावे. ए द्वेषनो राग केम थयो ? हे देवानुप्रीय ! छोडाववावालानातो दयानाज प्रणाम छे, अने बीलाडीनुं पाप टलाववानाज प्रणाम छे. जेम बालकने ताव आवतो होय, ते बालक दहीनो वाटको पीवा लागे. ते तेनी माता खोशी ले, तेथी ते पोताना अज्ञानपणे दुःख पामे, पण माताने दुखनी देणहारी न कहीए. हितसुखनी वान्छनहारीज कहीये. वली कडु करीयातुं वाटीने पाय तेथी बालक दुःख पामे, पण माताने तो ताव गमाववावाली अने सुख देवावालीज कहीये. तेम बीलाडी पोताने अज्ञानपणे दुःख पामे, पण जीव छोडाववावालो तो बीलाडीनुं पाप टलाववावालो तथा हितनो वंछनहारोज कहीए.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, " एम जबराइथी जीव बचाव्यां तथा आगलानुं पाप टलाव्यां धर्म थायतो, पहेला देवलोकनो धणी इंद्र सीमंधरस्वामी पासे जाय छे. हवे सीमंधरस्वामी जो जबराइथी जीव बचाव्यामां धर्म मानता होयतो, इंद्रने उपदेश दइ असंख्याता द्विपसमुद्रमां माछलां प्रमुख हिंसा करे छे, तेने वर्जी राखे, असंख्याता जीवोनी रक्षा करावे अने घणा जीवोनुं पाप टलावे; पण श्रीवीतरागदेवनी जबराइथी जीव छोडाववानी श्रद्धा नथी. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! तमारा केहेवा प्रमाणे जबराइथी जीव बचावथायो तो पाप थाय, तेथी ए काम इंद्र करे नहीं. पण अमे तमने पुछीए छीए के, इंद्र कोइने उपदेश दइ मिथ्यात्व छोडावे, तेमां शुं थाय ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, धर्म थाय. तो हे देवानुप्रीय ! भरतक्षेत्रमां घणा कुमतिउए अवली अवली परुपणा करी चालणी चालणी धर्म करो नांख्यो छे. हवे जो अहीयां इंद्र आवीने उपदेश दे, अने कहेके सीमंधरस्वामीए कह्युं छे के, फलाणो धर्म साचो छे एम कहे. तथा घणा जीवोने तीर्थंकर केवलीना दर्शननी चाहना होय तेमने दर्शन करावी लावे तो घणा जीवोनुं मिथ्यात्व छुटे, अने समकित पामे. ए तो धर्मनुं कार्य छे. ए समजाववामां तो तमे पण धर्म कहोछो. ए धर्मनुं काम इंद्र केम न करे ? ते कहो. पण हे देवानुप्रीय ! कोइना केहेवाथी काम करे तेने अनुकंपा न कहीये. प्रत्यक्ष जीव मरतो देखी कोमल करुणा भाव आणी कार्य करे, ते प्रणामनेज अनुकंपा कहीए. ते अनुकंपा जीवने क्षयोपशम भावथी आवे.

वली तेरापंथी कहेछे के, " ४१ प्रश्नमां पैसा आपी अचित्त वस्तु खवरावी जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं, तेमां त्रण कन्यानो दृष्टान्ते धर्म पुन्य नथी. जेम त्रण कन्याउमां, एकतो श्रावकनी बेटी, एक वेश्यानी बेटी, अने एक ब्राह्मणनी बेटी. ३ ए त्रण जणीए त्रण कसाइने बकरां मारवा लइ जता देखी, जे श्रावकनी बेटी हती तेणे कसाइने उपदेश दइ बकराने छोडाव्यां, १ वेश्यानी बेटीए कुशील सेवीने छोडाव्यां, २ अने ब्राह्मणनी बेटीए घरेणुं, धन परिग्रह

दइ छोडाव्यां. ३ हवे ए त्रण जणांमां उपदेश दइ छोडाव्यां तेमां तो धर्म छे, पण कुशील सेवीने छोडाव्यां तेमां, अने दाम घरेणुं दइ छोडाव्यां तेमां धर्म नथी. जो घरेणुं परिग्रह दइने छोडाव्यां तेमां धर्म हशे तो कुशील सेवीने छोडाव्यां तेमां पण धर्म हशे." एवी कुयुक्ति मेलवे छे. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! तमारा पुज्यजीने घणा वर्षे आव्या सांभलीने तमारा श्रावक श्रावीका सामा आव्या, अने वंदणा करी रसोइउ तैयार करावी बारमुं वृत निपजाव्युं. तेमां बे तमारा पुज्यनी पक्की रागीणी बाइउ मोडी आवी. तेमने तमारा पुज्यजीए पुछयुं के, हे बाइउ ! तमे मोडी केम आवी ? त्यारे तेमणे कह्युं के, चोर अमने मारगमां मल्या. तेमां एक जणी तो कहेके में कुशील सेवी केड मुंकावी ( छुटी ), अने एक कहे के में तो घरेणुं आपीने केडे मुंकावी. हवे तमारी केहेणीने लेखे एके चोथो आश्रव सेवराव्यो, अने एके पांचमो आश्रव सेवराव्यो. हवे तमारा पुज्यजी प्रायश्चित केने देशे ते कहो. त्यारे तेरापंथीए कहेवुंज पडे के, कुशील सेव्युं तेने प्रायश्चित दे. तो हे देवानुप्रीय ! कुशील सेवी तथा परिग्रहो दइ जीव छोडावे ते बंन्नेने सरखां केम गणोछो ? कारण के जेणे कुशील सेवराव्युं, तेणे तो पोतानां अने आगलानां बंनेनां मोह कर्म पोख्यां. असंख्याता पंचेंद्रिजीवनी हींसा बंनेने लागी, अने एक पंचेंद्रि जीवनी रक्षा कीधी. हवे आगलानुं एक पंचेंद्रि जीवनुं पाप टलाव्युं, ते तो चोखुंज कामछे, पण असंख्याता पंचेंद्रि जीवनी घात कुशील सेवतां बंनेने लागे, तेमां नफो थोडो, अने तोटो घणो, तेथी ए काम अकरवा जोग्य छे; पण घरेणुं दइ बकरां छोडाव्यां, तेने कया जीवनी हींसा लागी ? ते कहो. ए कुहेतु केम मले ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कुशील सेव्यां सेवराव्यामां तो चोथुं पाप छे, अने परिग्रहो सेव्यां सेवराव्यामां पांचमुं पाप छे. गृहस्थिनुं खावुं पीवुं अने घरेणुं, ए परिग्रहामां छे." एम कहे छे; तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! खावुं पीवुं घरेणां ने कपडां, ए तो आठ फरसी पुद्गल छे, रुपी छे, अने नजरे आवे छे; अने अढार पापने तो भगवाने रुपी चोफरसी कह्यां छे, ते नजरे आवे नही. शाखसूत्र भगवती शतक बारमें उद्देशे पांचमें. ते पांचमुं पाप मुर्छा, तृष्णा, ममता, चोफरसी छे तेने कहीये; पण खावा, पीवा, अने घरेणाने परिग्रहो न कहीए. ए न्याये घरेणां देइ बकरां छोडाव्यां तेणे पोताना तृष्णा-ममतारुप परिग्रहो घटाड्यो, जीवनी रक्षा करावी, अने आगलानुं पाप टलाव्युं. ए प्रत्यक्ष गुणनुं कार्य छे. ते विवेक विना दीसतुं नथी. वली खावुं, पीवुं, घरेणुं ने कपडांने परिग्रहो कहे, तेने पुछीएके, पांचमा पाप परिग्रहा छतां जीवने केवल-ज्ञान उपजे के नहि ? तेवारे कहेछेके, परिग्रहाथकां केवल न उपजे. तेवारे पाछुं कहेवुं के, मरुदेवी माता हाथीनी अस्वारीए लाखो करोडोनां घरेणां पेहेरेल थकांने केवलज्ञान केम उपज्युं ? ते कहो. तेवारे कहेछे के, "तृष्णा-ममताने परिग्रहो कहीए, ते मटी गइ तेथी केवल उपन्युं; पण खावा पीवा कपडां घरेणां अने हाथीनी अस्वारीने परिग्रहो न कहीए. ए उपर ममता होय, ते ममताने परिग्रहो कहीए." तो जुओ ! हे देवानुप्रीय ! एकतालीस प्रश्नमां देवावालानी अने लेवावालानी ममता-तृष्णा परिग्रहो छे, ते रुपी-चोफरसी पुदगल छे, ते दीधां लीधां जाय नही. बंनेनां पोतपोतानी पासेज रहे, अने अहीयां देवावाले तो उलटो पोतानी ममता तृष्णा-रुप परिग्रहो घटाड्यो छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक पांचमे ते पाठः—

गाहावइस्सणं भंते ! भंडा विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा भंडेयसे अणुवणिएसिया गाहावइस्सणं भंते ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरियाकज्जइ जाव मिछादंसण किरिया-कज्जइ कइयस्सवाताओ भंडाओ किं आरंभिया किरियाकज्जइ जाव मिछादंसण किरियाकज्जइ ? गो०! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरियाकज्जइ जाव

अपच्चरकाणी मिच्छादंसणवत्तिया सियकज्जइ सियनोकज्जइ कइयस्सणं ताउ सवाउ पयणु ज्जवइ. गाहावइस्सणं ज्जंते! ज्जंमेविक्किणमाणस्स जाव ज्जंमेसेउवणीएसिया कत्तियेस्सणं ज्जंते! ताउ ज्जंमाउ किं आरंज्जिया किरियाकज्जइ जाव मिच्छादंसणकज्जइ? गो०! कत्तियस्स ताउं ज्जंमाउ हेठि-ल्लाउ चत्तारि किरिया कज्जइ मिछादंसण किरियाए ज्जय-णाए गाहावइस्सणं ताउं सवाउ पयणुइ ज्जवइ. गाहाव-इस्सणं ज्जंते! ज्जंमे जाव धणेयसे अणुवणिएसियाए ए-यंपि जहा ज्जंमे उवणीए तहा णेयवं चउत्थो आलावगो धणेयसे उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो ज्जंमेयसे अणुवणिएसिया तहा णेयवो पढमं चउत्थाणं एको गमो॥

अर्थः—गा० गाथापतीने ज्जं० हे ज्जगवान! ज्जंमा० क्रियाणां वेच-ताथकाने क० क्रइक (क्रियाणाना ग्राहक) ज्जं० ते ज्जांम प्रत्ये सा० संचकार अंगीकार करे, ज्जं० ते क्रियाणुं अ० जेणे संचकार्युं तेने आप्युं नथी. तेवारे गा० गाथापतीने ज्जं० हे ज्जगवान! ता० ते ज्जं० क्रियाणा-थकी किं० शुं? आ० आरंज्जनी कि० क्रिया लागे? के परिग्रहनी, माया-प्रत्ययनी, अपचखाणीनी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी कि० क्रिया लागे? अने क० क्रइकने ज्जं० ते क्रियाणाथकी किं० शुं आ० आरंज्जनी कि० क्रिया लागे? जा० यावत् मि० मिथ्यदर्शन-प्रत्ययनी कि० क्रिया लागे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! गा० गाथा-पतीने ता० ते ज्जं० क्रियाणाथकी आ० आरंज्जनी, परिग्रहनी अने मायाप्रत्ययनी जा० यावत् अ० अपचखाणनी क्रिया नियमथकी लागे, अने मि० मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी क्रिया सि० मिथ्यादृष्टि होय तेने लागे, अने सम्यक्दृष्टि होय तेने न लागे. क० ते क्रइकने संचकारना देण-हारने स० हजी तेणे क्रियाणुं लीधुं नथी ते माटे सघली क्रिया हस्व

लागे, अने गृहस्थीने ते क्रियाणुं हजी तेनुं छे ते माटे मोटी लागे. गा० गाथापतीने भं० हे भगवान! भं० क्रियाणुं वेचतायकाने जा० यावत् भं० ते क्रियाणुं जेणे संचकार्युं तेने आप्युं होय तो क० ते क्रियाणाना ग्राहकने भं० हे भगवान! भं० ते क्रियाणाथकी किं० शुं? आ० आरंभनी क्रिया लागे? तेमज जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी क्रिया लागे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! क० ग्राहकने ते भं० क्रयाणाथकी क्रियाणुं लीधुं माटे च० पेहेली आरंभनी आदि चार क्रिया मोहोटी लागे, अने मि० मिथ्यात्विने मिथ्यादर्शन-प्रत्ययनी क्रिया लागे, पण सम्यक्‌दृष्टिने न लागे. ते माटे भ० भजना कही. गा० गाथापतीने (क्रियाणुं दीधुं छे ते माटे) ता० ते सर्व प० पातली लागे. गा० गाथापतीने भं० हे भगवान! भं० भंड जा० यावत् इत्यादि त्रीजा आलावानो पाठ पाछला बीजा सरखो केहेवो. धन दीधुं नथी त्यां सुधी केहेवो; अने कइकने हेठली चार क्रिया लागे, अने मिथ्यादर्शननी क्रिया कोइ वखते लागे अने कोइ वखते न लागे, अने गाथापतीने ते धननी क्रिया धन अणलीधा माटे पातली लागे. ए त्रीजुं सूत्र बीजा सूत्र सरखुं केहेवुं. तेम बीजे सूत्रे "भंडेउवणिए" ए सूत्रने विषे कइकने पांच क्रिया मोटी लागे अने गाथापतीने पातली लागे. तेम ए बीजा सूत्रने विषे केहेवी. एनो पाठ वली ज० जेम पेहेला आलावाने विषे " भंडे अणुवणेसिया गाहावइस्सणं ताउ आरंभिया किरियाकचइ मिथादंसण किरिया सियकचइ सियनोकचइ कइयस्सणं ताव सव्वाउ पयणुइ भवइ" एम पाठ छे. तेम ए पाठ च० चोथे आलावे केहेवो. कारणके गाथापतीए धन लीधुं छे तेथी तेने धननी मोटी [ ]या लागे; अने कइकने धन दीधुं छे माटे तेने पातली लागे. एम पाठने अनुसारे पेहेला आलावानो अने चोथा आलावानो एक सरखो पाठ जाणवो.

भावार्थः—हवे जुउ! क्रियाणुं अने धन दीधुं तेने चार पांच क्रिया पातली कही, अने राखवावालाने जबरी कही. ए न्याये ४१ प्रश्नमां घरनुं द्रव्य दीधुं, तेने परिग्रहादिकनी क्रियापातली पडी. त्यारे

दाम दइ अचित रुपी-आठ-फरसी पुद्गल खवरावी घणा जीवनी रक्षा करावी, आगलानुं हिंसानुं पाप टलाव्युं तेमां गुण केम नथी ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जीव जीव्या तेतो दया नथी, अने जीव मरे ते हिंसा नथी; पण जीव मारे तेने हिंसा लागे, अने जीव न मारे तेने दया नीपजे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जीव मुउं अने जीव जीवतो रह्यो ते तो कारण छे, अने हिंसा लागी अने पाप टाल्युं टलाव्युं ते कार्य छे. ए कारणनो नाश केम करो छो ? केमके कारण विना तो कार्य नीपजे नही. जेम कोइए कंदोइना हाटनी सुखडी पोते खावी छोडी अनेराने छोडावी, लीलोत्री पोते खावी छोडी अनेराने छोडावी, चोरी करवी पोते छोडी अनेराने छोडावी. हवे कंदोइना हाटनी सुखडी रही; लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या, अने धणीने घेर माल रह्यो, ते तो कारण छे; अने पोतानुं अने बीजानुं पाप टलाव्युं ते कार्य छे. हवे कंदोइनी सुखडी रही, लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या, अने शेठना घरमां माल रह्यो, त्यारेज पाप टल्युं; तेम जीव जीवता रह्या तोज दया नीपजी. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " कोइने साधुजीए कुशीलना त्याग कराव्या, तथा दिक्षा दीधी, तेथी तेनी स्त्री कुवामां जइ पडी. तेनुं पाप साधुजीने लागवुं जोइए. ए पण कारण अने कार्य छे." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! एमां शुं भुल छे ? जेम सुखडीना त्याग कराव्याथी सुखडी पडी रही जाणे, लीलोत्रीना जीव जीवता रह्या जाणे, अने शेठना घेरे माल रह्यो जाणे, तेम कुशीलना त्याग कराव्याथी तथा दीक्षा दीधाथी तेनी स्त्री कुवे पडशे एम जाणीने त्याग करावशे तो तेने पाप लागशेज; पण स्त्रीने मरती जाणे तो साधु मुनीराज त्याग करावेज नही. ए कारण अने कार्य साचुं छे, पण ते सुखडी अने लीलोत्री, बीजो कोइ खाशे अने चोरीने धन लेशे, तेने पाप लागशेज; पण त्याग करावनावालाने तो ए वस्तु रही. हवे जेना जोगथी ए वस्तु रही, तेनेज गुण नीपज्यो अने पाप टल्युं. एम ४१ प्रश्नमां दाम दीधा, वस्तु

खवरावी अने जवराइ कीधी ते तो कारण छे; अने जीवनी रक्षा करी आगलानुं पाप टलाव्युं ते कार्य छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "उपदेश दइ जीव छोडावे तेमां तो धर्म छे, पण पैसा दइ, वस्तु खवरावी, जवराइ करी जीव बचावे, तेमां धर्म नथी." तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय! उपदेश दीधो, पैसा दीधा, वस्तु खवरावी, तथा जवराइ कीधी, ए तो चार कारण छे; अने ए कारणथी जीवनी रक्षा थइ, आगलानुं पाप टल्युं, ते कार्य छे. हवे उपदेश दइ जीव छोडाव्यो, ते तो कार्य तथा कारण बंने शुद्ध छे, अने पैसा दइ, वस्तु खवरावी, के जवराइ करी जीव छोडाव्या, ए कारण तो त्रणे अशुद्ध छे, पण जीवनी रक्षा थइ, पाप टल्युं, ए कार्य शुद्ध छे. हवे तमे ए कारण अशुद्ध देखाडीने कार्यमां पाप केम कहो छो? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जेनुं कारण अशुद्ध छे तेनुं कार्य शुद्ध नथी." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! रायप्रशेणी सूत्रमां चित्त प्रधाने कपटाइ करी घोडा रथ दोडावी, अनेक जीवनी घात करी, प्रदेशी राजाने समजाव्यो. ए कारण अशुद्ध? के कार्य अशुद्ध? ए कारण अशुद्ध छे तेमां तो पाप छे, पण प्रदेशीने समजाव्यो ते कार्य शुद्ध छे, तेमां पाप नथी. तेने श्री वीतरागदेवे धर्म दलाली कही छे; पण कारण अशुद्धनो पक्ष लइने पाप दलाली कही नथी. एमज ज्ञाता—सूत्रमां सुबुद्धि प्रधाने काचा पाणीनी हिंसा करी जीतशत्रु राजाने समजाव्यो. ए कारण अशुद्ध? के कार्य अशुद्ध? ते कहो. तेमज कोइ साधुने वंदणा करवाने, वाणी सांभलवाने, तथा सामायक करवाने, रथ पालखी प्रमुखनी अस्वारी करी, मेह वरसतां, रातना उपयोग विना अनेक प्रकारनो आरंभ तथा अजयणा करतो आव्यो. ए कारण अशुद्ध? के, साधुने वंदणा करी, वाणी शांभली प्रतिबोध पाम्यो, ए कार्य अशुद्ध? ते कहो. तेमज नदीमां असंख्याता जीवनी घात करतां साधु नदी उतरे, ए कारण अशुद्ध? के ज्ञान, दर्शन अने चारित्र निर्मलां राखवाने,

श्रीवीतरागदेवनी आज्ञा आराधी, ए कार्य अशुद्ध ? ते कहो. तेमज वहेती नदीमांथी आरजाने अनंता जीवनी रक्षपाल जाणीने, साधु काढे, ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध? ते कहो. तेमज उघाडे मोंढे बोलतां साधुने दान दीधुं, तथा उघाडे मोंढे बोलतां देव-गुरु-धर्मने घनकारो दीधो, ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? वली पंचाग्नि प्रमुख अनेक हिंसा सहित तपश्या तथा कष्ट करे, तेथी पुन्य बंधाय, ने देवतामां जाय. (शास्त्रसूत्र उववाइजी) ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध ? ते कहो. इत्यादि अनेक कारण अशुद्ध, तेनां कार्य शुद्ध जाणवां. ए न्याये उपदेश दइ जीवने बचाव्यो, तेनुं कारण अने कार्य बंने शुद्ध छे, अने दाम दइ, वस्तु खवरावी, जबराइ करी, जीव छोडाव्यो, तेनुं कारण तो अशुद्ध छे; पण कार्य शुद्ध छे ते करवा योग्य छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "अशुद्ध कारणे करीने शुद्ध कार्य करवुं नहीं." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! शुद्ध कारणथी कार्य सिद्धि थाय तो अशुद्ध कारण न करवुं, पण शुद्ध कारणथी कार्य सिद्धि न थाय तो, अशुद्ध कारणने तो खोटुंज जाणे, पण कार्यमा गुण घणो जाणे तो, अशुद्ध कारणथी शुद्ध कार्य करे. ते उपर द्रष्टान्त कहेछे:-" जेम कोइ वेपारी देशदेशावरमां माल मोकले, ने हुंडी भाडुं वोलाइ खरच लाग्याविना माल ठेकाणे पोहोंची जाय, सवाया दोढा दाम थाय, तेवारे तो ए कारणथी कार्य करवुं श्रेष्ट जाणे; पण हुंडी, भाडुं, ने वोलाइ खरच लाग्यां पण सवाया दोढा दाम थाय तो, वीस रुपीया खरच पडे तेने तो खोटा जाणे, पण आगल लाभ घणो जाणे तो ए वेपार करे के नही ? अर्थात करेज." तेम दान दयामां पण अशुद्ध कारणने तो खोटुंज जाणे;पण आगल कार्यमां लाभ घणो जाणे तो ते करवा योग्य छे. वली कोइना दिक्षा लेवाना भाव छे, पण साधुनां उपगर्ण जोइए तेनो जोग नथी. तेवारे कोइक श्रावके ओघो, मुहपति, वस्त्र, पात्रां अने सूत्र देइ दिक्षा देवरावी. ए कारण अशुद्ध ? के कार्य अशुद्ध? ते कहो. जेम ए उपगर्ण देइ दिक्षा देवराववी, ए कार्य करवा योग्य छे. तेम उपगर्ण देइ सामायक

पोसो करावे, तथा ४१ प्रश्नोमां द्रव्यवस्तु देइ, जीवनी रक्षा करावी आगलानुं पाप टलाव्युं, ते शुद्ध कार्य करवा योग्य छे. वली श्री कृष्ण माहाराजे पाछला परिवारनी खावा पीवानी सारसंभाल करी, घणा जीवोने धर्म दलाली करी दीक्षा देवरावी. ए कारणे तीर्थंकर गोत्र बांध्युं. ए न्याये अशुद्ध कारणथी पण शुद्ध कार्य करवा योग्य छे. हे देवानुप्रीय! उपदेश दइने जीव छोडाव्यो, तेमां गुण थसे तो, बाकीनां त्रण कारणथी पण गुण थशेज; पण उपदेश दइनेज जीव छोडाव्यामां धर्म छे एम तमे कपटाइथी मत कहो; कारणके तमारे लेखे असंजतीना जीववामां धर्म नथी. ए मिथ्या जुठ केम भाखो छो? तमारी सरधाने लेखे तो उपदेश दीधामांज धर्म कहेवुं जोइए; पण उपदेश दइ असंजतीने हणवाना त्याग कराववामां तथा छोडाववामां धर्म कहेवुं न जोइए.

वली अनुकंपा दान दयाना उत्थापक कहेछे के, "जीवने न हणवा तथा जीवनुं पाप टलावीने तरवुं वंछवुं, ते तो सूत्रमां ठाम ठाम कह्युं छे, पण असंजती जीवने बचाववो क्यां कह्युं छे?" तेनो उत्तर. हे देवाणुप्रीय! जीवने उगारवानुं सूत्रमां ठामठाम श्री वीतरागदेवे कह्युं छे, पण तमारा सरखा जीव-दया-अनुकंपा रहितने सुझतुं नथी. ते सूत्रनी शाख कहे छे. प्रथम तो साधु त्रण करण अने त्रण जोगे करीने, छकायना जीवने मन, वचन अने कायाथी हणे नही, हणावे नही अने हणताने भलो जाणे नही. २ ए न हणवुं तो त्रण करण नव जोगे करीने करी चुक्या. हवे उपदेश दइ छकायना जीव बचावे, तथा छकायनी हिंसाने त्याग करावे, ए न हण्यामां के उगार्यामां? वली छकायना जीवनी रक्षावास्ते तथा उगारवाने अर्थे श्रीवीतरागदेव उपदेश देवे कह्युं छे. शास्त्रसूत्र प्रश्नव्याकरण प्रथम संवर द्वारमां. ते पाठ.

इमंच सव्वजग जीव रक्खण दयठ्याए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चा भवियं आगमेसि भद्द सुध नेयाउयं. ॥

अर्थः—इ० ए प्रत्यक्ष स० सर्व जगतना जीव ( चोरासी लाख जीवाजोन ) ने र० राखवाने विषे कारणरुप द० दयाने अर्थे पा० प्रवचन (श्री सिद्धान्त दयानो परमार्थ) ज्ञ० जगवंत श्री महावीरदेवे सु० ज्ञलो कह्यो. ए सिद्धान्तविना कांइ दयानो परमार्थ जाणे नही, ते माटे प्रवचन कह्युं. ते प्रवचन आ० आत्मा (जीव)ना हीतज्ञणी पे० जन्मान्तरे ज्ञ० शुद्ध फलपणे प्रणमे, जीव उगारवो ते प्रवचन इत्यर्थ आ० आगमे काले ज्ञ० कल्याणनुं कारण सु० निर्दोष न्याय मार्गे वर्तवानु कारण.

ज्ञावार्थः—हवे जुउ ! प्रवचन सिद्धांन्त रुपणी वाणी श्री जगवंते ज्ञली कही. ते शा अर्थे ? सर्व जगतना एटले ठ कायना जीवोनी रक्षा तथा दयाने अर्थे कही. ए न हणयामां के उगार्यामां ? सर्व गणधर साधु प्रमुख, त्रिविधे त्रिविधे न हणवुं, ते तो करी चुक्या. हवे उपदेश शा अर्थे देवे ? ठ कायना जीवोनी रक्षा, दया, अने उगारवाने अर्थेज उपदेश दे ठे. तेवारे तेरापंथी कहे ठे के "उपदेश तो जीवनुं तरवुं वान्ठवाने अर्थे तथा आगलानुं पाप टलाववाने अर्थे दे ठे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा कर्याथी तथा दया पाल्याथी पाप टलशे, तरवुं थशे, एमां शुं ज्ञुल ठे ? श्री वीतरागदेवने तो तमथकी अनंतु ज्ञान हतुं, पण तमारी पेठे केम न कह्युं? के जीवने तरवाने अर्थे वाणी प्रकाश करी ठे. हवे जो तरवाने अर्थेज वाणी प्रकाश करी कहो ठो, तो पांच स्थावर, त्रण विगलेन्द्रि, अने असन्नी ( मनरहित) जीवने, श्री ज्ञगवंतनी वाणी कइ रीते तारे ? ते कहो. अहीं तो "सव्वजग जीव रक्कणठयाए" एवो पाठ ठे. वासते ठकायना जीवनी रक्षा तथा दयाने अर्थे उपदेश दे, वाणी प्रकाशे, एम कह्युं ठे. ए न हण्यामां के उगार्यामां ? ए कूमति ठगावीने अनंता तीर्थंकर तथा केवलीमाथे आल दइ वचन उत्थापी अनंतो संसार केम वधारो ठो ? वली चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनीराजने कह्युं के, प्रदेशीराजाने

धर्म संजलावशो तो घणा जीवोनी दया पलशे, रक्षा थशे. ते रायप्रशेणी सूत्रनो पाठः—

एवं खलु भंते ! अम्मं पएसीराया अहम्मिए जाव सयस्सवि जणवयस्स नो स्समं करभरं पवतेइ तं-जत्तिणं देवाणुप्पिया पयस्सिसरन्नो धम्ममाइक्केज्जा बहु गुणत्तरं खलु होज्जा तेसिणं बहुणाय दुप्पय चउप्पय मिग पसु पंखि सिरिसवाणं तं-जइणं देवाणुप्पिया पएसिस्सरस्रो धम्म माइक्केज्जा बहु गुणातरं फलं होज्जा तेसिणं बहुणं समण माहण भिक्खूयाणं तं-जइणं देवाणुप्पिया पएसिस्स बहुणं गुणत्तरं होज्जा जणवयस्स.

अर्थः—ए० एम ख० निश्चे भं० हे भगवान ! अ० अमारो प० प्रदेशीराजा अ० अधर्मी छे. जा० जावत् स० पोताना ज० देशने नो० नथी स० सम्यक क० करभार प० प्रवर्तावतो. तं० ते माटे ज० जो दे० हे देवानुप्रीय ! प० प्रदेशीराजाने घ० धर्म मा० कहेशो तो ब० घणो गु० गुण ख० निश्चे हो० थशे. ते० ते ब० घणा दु० दुपद च० चतुष्पद मि० मृग प० पशु प० पक्षी सि० उंदर स० नोलियादिने, ते० ते माटे ज० जो दे० हे देवाणुप्रीय ! प० प्रदेशीराजाने ध० धर्म मा० कहेशो तो ब० घणो गुण फल हो० थशे. ते० ते ब० घणा स० समण शाक्यादिकने, मा० ब्राह्मणादिकने अने भि० भिक्षाचरने. तं० ते माटे ज० जो तमे दे० हे देवानुप्रीय! प० प्रदेशीने ब० घणो गु० गुण हो० थाशे. ज० पोताना देशने विषे पण गुण थासे ॥ १ ॥

भावार्थ—हवे जुओ इहां चीत्त-प्रधाने कह्युं के, हे माहाराज ! प्रदेशी राजाने धर्म संभलावशो तो ते घणा दुपद, चौपद, पशु, पक्षी मृग, उंदर, नोलीया, सिंह, प्रमुख जीवने मारतो रहेशे, देश प्रदेशमां सुख थाशे, दंड करभार थोको लेशे, रैयत घणी सुखशाता पामशे, अने

समण-माहणने भिक्षा सुखे मलशे. पछी केशीश्रमणे धर्म पामवाना अने न पामवाना चारचार ठाम कह्या. ए वचन नहीं हणवामां के उगा-र्यामां ? इहां चित्तप्रधाने एमकेम न जाण्युं, के "असंजतीनुं जीववुं वांछवुं नही. असंजती जीव जीवता रहेशे तो वली जीवनी हिंसा करशे, ने मने अनुमोदना लागसे; अने राजा एना कर्मे करी डुबशे तेमां मने शुं." एम तो नथी जाण्युं. पण एम जाणजो के, एवी दुष्ट सरदहणा चीत्तसार्थीनी नोहोती. तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के, "एतो परना उपगार माटे, रक्षा माटे, अने गुण माटे नथी कह्युं, पण प्रदेशीराजाना तरवासारु, पाप टालवा सारु, अने पाप टलाववा सारु गुणने माटे कह्युं छे." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! जो प्रदेशी-राजाना गुणनी खातर कह्युं होय तो, एम कहेवुं जोइए के "हे स्वामी ! ए अधर्मी अधर्म करेछे, अढार पाप सेवे छे, तेने तेमे समजावो, के ते अढार पाप न सेवे, अने एना आत्मानुं साधन थाय, एवुं करो". पण इहांतो त्रण पाठ कह्या, ते पर-जीवने उगारवाना एटले परने उपगार करवाना कह्या छे. ते परजीवने उगार्याथीज पोतानुं तरवुं अने आत्मानुं साधन थाशे, एमां शी भूल छे. परजीवने उगारवानुंज चित्तप्रधाने कह्युं ते कारण छे, अने परदे-शीनुं तरवुं तथा आत्मानुं साधन थाय ते कार्य छे. पहेलुं कारण अने पछी कार्य थाय. ते माटे साधुजी परजीव उगेर तेवो उपदेश दे. तेज रीते श्री केशीकुमारे उपदेश दीधो अने चीत्तसार्थीए धर्म दलाली कीधी. ए न हणवुं ठर्युं के परजीवने उगारवुं ठर्युं ? काह्या हो ते वीचारी जोजो. वली छ कारणे मुनीने आहार छोडवो कह्यो छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २६ मानी गाथा ३५ मी ते. पाठ लखीए छीए.

आयंके उवसग्गे, तितिरक्खुया बंभचेर गुत्तीसु;
पाणीदया तवहेऊ, सरीर वोछेयण छाए. ॥३५॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुउ प्रश्न १ लो पाछल पांने १३ में.

ज्ञावार्थः—हवे जुउ ! ए छ कारणमां चोथा कारणमां कह्युं के, प्राणी जीवनी दया तथा रक्षाने अर्थे साधु आहार छोमे, पण एम न कह्युं के, पोताने तरवा अर्थे, अथवा पाप टालवा अर्थे आहार छोमे; कारण के प्राणी जीवनी दया पाली, तथा रक्षा कीधी, ए कारणथी तरवुं थशेज. एमां शुंजुल छे. ए कार्य छे, पण कारणथी कार्य सिद्ध थाय ते माटे इहां कारण कह्युं छे. ए न्याये असंजती जीवनुं जीववुं वान्छवुं, ज्ञगारवो, दया पालवी, ने रक्षा करवी. वली ज्ञगवती शतक पेहेले उद्देशे नवमे, असंजती जीवनुं जीववुं वंछवुं तथा रक्षा करवी कही छे. ते पाठः—

अहा कम्मेणं ज्ञंते ! ज्ञुंजमाणे समणेनिगंथ किंबंधइ, किंपकरेइ किंचिणेइ जाव किंउवचिणाइ ४ ? गो० ! आहाकम्मेणं ज्ञुंजमाणे आउय वज्जाउ सत्त कम्म पगमीउ सिढिल बंधण बंधाउ धणिय बंधण बंधाउ पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ. से केणठेणं जाव अहाकम्मेणं ज्ञुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ ? गो० ! अहाकम्मेणं ज्ञुंजमाणे आयाए धम्मं अवक्कमइ आयाए धम्मं अवक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ जाव तसकायं णावकंखइ जेसिंपियणं जीवाणं सरीराइं आहार माहरेइ तेविजीवे णावकंखइ से तेणठेणं गो०! एवं वुच्चइ अहाकम्मेणं ज्ञुंजमाणे आउयवज्जाउ जाव सत्तकम्म पगमिउ जाव अणुपरियट्टइ. फासु एसणिज्जेणं ज्ञंते ! ज्ञुंजमाणे किंबंधइ ४ जाव किं उवचिणाइ ? गो० ! फासु एसणिज्जेणं ज्ञुंजमाणे आउयवज्जाउ सत्तकम्म पगमिउ धणियबंधणबंधाउ सिढिलबंधणबंधाउ पकरेइ दीहकालठिइयाओ रहस्सकालठिइयाओ पकरेइ

तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसगाओ पकरेइ आउयंचणंकम्मं सियबंधइ सिय-नोबंइ असाया वेयणिज्जचणं कम्मं नोभुजो २ उवचि-चिणइं अणादियं अणवदग्गं दीहमर्ध्दं चाउरंत संसार कंत्तार वीईवयइ. से केणठेणं भंते! जाव वीईवयइ? गो० ! फासु एसणिजेणं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ आणाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं अवकंखइ जाव तसकायं अवकंखइ जेसिंपियणं जीवाणं सरीरायं आहारइ माहारेइ तेविजीवे अवकंखइ ॥

अर्थः—अ० आधाकर्मी (ते साधुने अर्थे सचित्तनुं अचित्त करीने आपे ते) भुं० भोगवतोथको स० साधु किं० शुं बांधे, किंप० शुं पकरे, किंचि० शुं चणे जा० यावत् किंउ० शुं उचपणे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! आ० आधाकर्मी आहार भोगवतोथको आ० आउखुं व० वर्जीने स० सात कर्मनी प० प्रकृति सि० सिथिल बंधने बांधी होय ते ध० द्रढ बंधने बांधे. हलवा कर्मने सुधा ताणी बांधे. जेम रेशमनी गांठ बांधीने मधुसिष्ट घुंटीथकी जेम गाढी नीवडे थाय तेम बंधन करे. जा० यावत् रहस्सकाल ठिइयाउं दीहकालठिइयाउं पकेरइ मंदा-णुभाउं तिव्वाणुभावाओ पकरेइ अप्पपएसगाओ बहुप्पएसगाओ पकरेइ आउयचणं कम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ असायावेयणिज्जस्सणं कम्मं भुयो २ उवचिणइ अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारे अनंतीवार परिभ्रमण करे. हवे गौतम पुछे छे. से० ते शा अर्थे? हे भगवान! एम कह्युं. जा० यावत् अहा० आधाकर्मी आहार भुं० जमतो-थको साधु जा० यावत् अ० चतुर्गति संसारने विषे अनंतिवार भमे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! अ० आधाकर्मी आहार भुं० जमतोथको साधु आ० आत्माए करी ध० चारित्र धर्म अ० अतिक्रमे

एतावता धर्मथी पडे. आ० आत्माए करी ध० धर्म अ० अतिक्रमतोथको उलंघतोथको पु० पृथ्विकायना जीवनी णा० अनुकंपा न आवे, दयापणा रहित थाय. जा० यावत् अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय बे इंद्रियादिकने णा० विणाशे तेने दया न आवे. ज० जे जीवना स० शरीरनो आ० आहार करे ते० ते जीवनी पण णा० अनु-कंपा न आवे. से० तेणे अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं, के आ० आधाकर्मी भुं० भोगवतोथको साधु आ० आउखुं वर्जीने जा० यावत् स० सात कर्मनी प्रकृति बांधे जा० यावत् चतुर्गतिरुप संसारने विषे अ० परिभ्रमण करे. फा० प्रासुक अचित्त ए० एषणिक (४२ दोष रहित) आहार, भं० हे भगवान ! भुं० भोगवतोथको साधु किं० शुं कर्म बांधे जा० यावत् किंउ० शुं प्रदेश बंधन वधारे ? इति प्रश्न. गो० हे गौतम ! फा० निर्दोष भुं० भोगवतो थको साधु आ० आउखुं वर्जी स० सात कर्मनी प्रकृति ध० गाढे बंधने बांधी होय ते सि० सिथिल बंधणे करे, ते कर्म प्रकृति निर्जरीने सिथिल करे. दी० दीर्घकालनी स्थितिनी होय तेने र० थोडा कालनी स्थितिनी करे, ति० तीव्रअनुभाग रसरुप होय तेने मं० मंद अनुभाग रसरुप करे, व० घणा प्रदेशनी होय तेने अ० अल्प प्रदेशनी करे, आ० आउखा कर्म सि० केटलाक बांधे अने सि० केटलाक न बांधे. अ० अशाता-वेदनी कर्म नो० वारंवार उपचणे नही. अ० आदि अंत रहित दी० दीर्घ मध्य भाग छे जेनो, एवी चा० चार गतिरुप संसार कं० अटवीनो वी० पार पामे. से० ते शा अर्थे ? भं० हे भगवान ! जा० यावत् वी० व्यतिक्रमे, संसार तरे. इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! फा० प्रासुक ए० एखणिक भुं० जमतो थको स० साधु तपस्वी नि० निर्ग्रंथ० आ० आत्माए करी ध० श्रुतचारित्ररुप धर्म प्रत्ये ना० उलंघे नहिं. वली आ० आज्ञाए करी ध० श्रुतचारित्ररुप धर्म प्रत्ये अण० अणउलंघतो थको साधु पु० पृथ्विकायना जीवनी अव० दया वान्छे,जा०यावत् त० त्रसकाय बेइंद्रियादिक जीवनी अ० रक्षा करे,जे० जे जी०जीवना स०शरीरनो आ० आहार करे ते जीवनी पण रक्षा करे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आधाकर्मी आहार भोगवे तेने सात कर्म ढीलानां गाढां बंधाय, यावत् चतुरगति संसारमां दीर्घकाल सुधी परिभ्रमण करे. ते शा अर्थे हे भगवान ! एम कह्युं ? उत्तर. हे गौतम ! आत्मानो धर्म ( ज्ञान दर्शन चारित्र ) उलंघे, पृथ्वीकायनी अनुकंपा न करे, दया न पाले, रक्षा न करे, आउखुं ( जीववुं ) न वान्छे, एम छकायनी अनुकंपा दया न आवे, आउखुं जीववुं न वान्छे, तेथी जीव रुले. ए न्याये असंजतीनुं आउखुं ( जीवीतव्य ) वंछे ते संसारमां न रुले. वली जे प्रासुक निर्दोष भोगवे ते सात कर्म गाढानां ढीलां करे, यावत् चारगतीरुप संसारने उलंघे, पार पामे. ते शा अर्थे हे भगवान ! एम कह्युं ? हे गौतम ! आत्मानो धर्म (ज्ञान दर्शन ने चारित्र) उलंघे नही, छ कायना जीवनुं जीवीतव्य (दया) वान्छे, जे जीवोना शरीरनो आहार करे, ते जीवोनुं पण जीवीतव्य (दया) वान्छे, तेथी संसार समुद्र तरे. ए छ कायनुं जीवीतव्य वंछयुं, दयापाली, तथा रक्षा करी, तेथी तरवुं कह्युं; पण एम न कह्युं के " निर्दोष भोगवे तेणे पोतानुं पाप टाल्युं, तेथी संसार तरे." ए छ कायनुं जीवीतव्य वान्छयुं तथा दया पाली ते तो कारण छे, अने पाप टल्युं अने तरवुं थयुं ते कार्य छे. ते कारणथी कार्य सिद्ध थाय. ते माटे इहां श्री वीतरागदेवे कारण कह्युं छे. ए न हणयामां के उगार्यामां ? ए न्याये छ कायना जीव असंजतीनुं जीववुं उगारवुं सिद्ध थाय छे. वली साधु परजीवनुं उगारवुं अने जीववुं वान्छे. शाख सूत्र दशाश्रुतखंध अध्ययन सातमें. ते पाठः—

मासियणं भिक्खू केवइ उवसयं अगणिकाएणं वामेवा णोसेकप्पइ तंपडुच्च निक्कमित्तएवा पविसित्तएवा तछणं केइ बांहाएगाहाय आगसेवा णो से कप्पइ तं अवलंबित्तएवा पवलंबित्तएवा कप्पइ से आहारियंरित्तए ॥१४॥

अर्थः—मा० मासिक पडिमाधारी भिखुने के० कोइ अनार्येउ० उपाश्रयने विषे अ० अग्नि-कायेकरी घा० बाले, एटले कोइ अनार्य आग

लगाके, त्यारे णो० ते पडिमाधारीने न कल्पे तं० ते लाहे लाग्याथी ते नि० स्थानकथी बाहार नीकलवुं, अथवा प० बाहारथी मांही पेसवुं. तं० त्यां के० कोइ आर्य समदृष्टि तथा श्रावक ते बलतामांहीथी बां० बांह्य ग्रहीने आ० ताणे तो णो० न कल्पे से० ते पडिमाधारीने तं० ते ताणवावालाने अ० बांहेकरीने ग्रही राखवो प० वारंवार झाली राखवो. क० कल्पे से० ते पडिमाधारीने अ० यथा इर्या सुमति चाली नीकलवुं कल्पे अने ते साधुने ते उपाश्रय अग्निथी बल्यानी बीके नीकलवुं न कल्पे; पण कोइक काढे तो ते बलीजाशे तेनी दयाने अर्थे नीकलवुं कल्पे.

भावार्थः—हवे जुओ ! जिनकल्पी तथा अभिग्रहधारी साधु लाहे लागवाथी पोताना जीवीतव्यनी आशाए सुखने अर्थे नीकले नही, पण अनेरो कोइ दयावंत, साधुने बलता देखीने काढवा आवे तो विलंबरहित नीकले, जरापण ढील करे नही. ए न हण्यामां के उगार्यामां ? केमके साधुना नव जोगमां तो हिंसानुं पाप लागतुं नथी. ए न्याये जीवनुं जीववुं वान्छवुं, उगारवुं अने रक्षा करवी ते स्पष्ट रीते सिद्ध छे. वली साधवी नदीमां वेहेती होय तेने साधु काढे तो आज्ञा उलंघे नही. शास्त्र सूत्र ठाणायंग ठाणे नवमे. ए न हण्यामां के उगार्यामां ? तथा सुयगडांग श्रुतस्कंधे पहेले अध्ययन अग्यारमें. ते पाठ.

हणंतं णाणुजाणेज्जा आयगुत्ते जिइंदिए ठाणाइ संति सड्ढिणं गामेसु नगरेसुवा ॥१॥ तहागिरं समारंभ अत्थि पुन्नं-ति णोवए अहवा णत्थि पुणंति एवमेयं महब्भयं ॥२॥ दाणठ्याय जेपाणा हम्मंति तसथावरा तेसिं सारक्खणठ्ठाए तम्मा अत्थिति णोवए ॥३॥ जेसितं उवकप्पंति अन्नं-पाणं तहाविहं तेसिं लाभंतरायंति तम्मा णत्थि-ति णोवए ॥४॥ जेय दाणं पसंसंति वह मिछंति पाणिणं जेयणं पडिसेहंति वितिछेय करंतिते ॥५॥ दुहउ-वित्ते णभासंति

अत्थि वा नत्थिवा पुणो आयं रहस्स हेच्चाणं निव्वाणं पाउणंतिते ॥ ६ ॥

अर्थः—ह० जीवने हणतां णा० अनुमोदे नही. आ० जेनी आत्मा गुप्त छे अने जेणे इंद्रिओ जीती छे एवा साधुनो ठा० समीपे सं० छे स० श्रद्धावंत (धर्म करवानी इच्छावाला) बौध्यादिक गा० गाम अने न० नगरने विषे वसनारा छे, ते त० आरंभ सहित गि० वाणीए करीने पुछे छे के, हे महामुनी ! अमे सदाव्रत, पाणीनी परब आदिक धर्म अर्थे करावीए ? तेमां अमने शुं थाय ? एवुं तेमनुं पुछवुं सांभलीने साधु, अ० छे पु० तमने पुन्य, णो० एम न कहे. अ० अथवा ण० नथी पुन्य, एम कहेवामां पण म० महा भय छे. दा० दानने अर्थे जे० जे प्राणी (बेइंद्रियादिक) ह० हणाय त० त्रस अने था० स्थावर (पृथ्व्यादिक), ते० तेनी सा० सम्यक् प्रकारे रक्षाने अर्थे (त० ते माटे), अ० छे तमने पुन्य, एम णो० न कहे. अने जे० जेने पुर्वोक्त सदाव्रत परबादिकनुं अन्न पाणी लेवुं कल्पे एटले जेने तथाप्रकारना अन्न पाणी लेवानी आशा छे, ते० ते जीवोने ला० लाभान्तराय थाय. त० ते कारणे पूर्वोक्त अनुष्टानमां तमने पुन्य नथी णो० एम पण न कहे. जे० जे साधु दा० दानने प० प्रसंशे ते व० वध हिंसा इच्छे पा० प्राणोनी. (जे सावध दानने अनुमोदे ते हिंसाने अनुमोदे छे); अने जे० जे सावध दाननो प० निषेध करे छे ते पूर्वोक्त दानार्थि जीवोनी वि० वृत्ति आजीविकानो छे० छेद करे छे. ते माटे दु० ए बे भाषा आगला पुछनारने ण० न कहे. अ० छे अथवा न० नथी तमने पु० पुन्य. आ० आत्म र० रहस्यनो हे० हेतु (पाप कर्मनो त्याग जाणीने) पूर्वोक्त वाणी बोलवी मुके. एवी भाषा न बोले ते यति नि० मोक्ष पा० पामे. एवी रीते मौन राखवी पण एवुं मीश्र वचन खुलासे नहीज कहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ ! दानने अर्थे जे प्राणी (त्रस स्थावर) हणाय ते जीवनी रक्षाने अर्थे "तमने पुण्य छे" एम न कहे; अने जेने अन्न-

पाणी तथा प्रकारना कल्पे, तेने लाजनी अंतराय पके, ते अर्थे " तमने पुन्य नथी " एम पण न कहे. कारणके जे दाननी प्रसंशा करे तेने छ कायना वधनो वंछणहार कहीए, अने जे दानने निषेधे तेने वृत्तिनो छेदणहार तथा अंतरायनो देणहार कहीए. एम जाणीने साधु मौन राखे. ए जुओ ! त्रस स्थावर जीवनी रक्षाने अर्थे "पुण्य छे" एम न कहे कह्युं. पण एम न कह्युं के, पोतानुं पाप टालवाने अर्थे पुण्य छे एम न कहे. ए न हणयामां के उगार्यामां ? वली कोइ उघाके मोंढे बोले तेने कहे के, " उघाके मोंढे न बोलो. " ए वचन न हणयामां के उगर्यामां ? वली छकायना जीव हणताने कहे के, " मां हणो, मां हणो, " ए वचन न हण्यामां के उगार्यामां ? ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " छकायने न हणो " एम कहे ते तो आगलानुं पाप टालवाने तथा तरवाने अर्थे उपदेश दे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा थइ ते तो कारण छे, अने पाप टल्युं, तरवु थयुं, ते कार्य छे. कारणविना कार्य थाय नही. श्रीवीतरागदेवे तो ठाम ठाम जीवनी रक्षानां वचन कह्यां छे, पण तमारी पेरे एम तो कोइ सूत्रमां कह्युं नथी के, आगलानुं पाप टालवाने उपदेश देवे. हे देवानुप्रीय! जीवनी रक्षा करी, अने उगार्यो, ए तो कारण छे. ए कारणथी पाप टल्युं तेथी कार्य थशेज. वली श्री वीतरागदेवे तो ठाम ठाम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, जीवनी जयणा, पांच सुमति, त्रण गुप्ति, संवर अने जीवनी रक्षा इत्यादिक कारण कह्यां छे, अने फलने अधिकारे फल कह्यां छे. तमे कारणनो नाश केम करोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अन्नयदाननो लाजतो सूत्रमां ठाम ठाम कह्यो छे, पण अनुकंपानो तथा जीव उगार्यानो लाज कह्यो नथी. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कह्युं तो छे पण तेम सरखाने सुऊतुं नथी. जुओ सूत्र ठाणायांग ठाणे त्रीजे, तथा जगवती शतक पांचमाने उद्देशे छठे. स्पष्ट रीते जीव उगारवानुं फरमान सिद्ध थाय छे. ते पाठ लखीए छीए:—

कहणं नंते! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं प्पकरेइ ? गो० ! पाणेअइवइत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा अफासुएणे अणेसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलानेत्ता एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं नंते! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! नो पाणेअइवइत्ता नो मुसंवइत्ता तहारुवं समणंवा माहणंवा फासु एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलानेत्ता एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं नंते! जीवा असुह दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! पाणे अइवइत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलित्ता निंदित्ता खिंसिता गरहित्ता अवमन्निता अणयरेणं अमणुणेणं अप्पियकारएणं असणं पाणं खाइमं साईमं पडिलानेत्ता एवं खलु जीवा असुह दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ. कहणं नंते! जीवा सुहदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेइ ? गो० ! नो पाणेअइवइत्ता नो मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता अणयरेणं मणुणेणं पीयकारणेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलानेत्ता एवं खलु जाव पकरेइ. ॥

अर्थः—क० केवे प्रकारे नं० हे नगवान! जी० जीव अ० अल्प आयुष्यरुप क० कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! पा० प्राणातिपात करवाथी, मु० मृखावाद बोलवाथी, तेमज त० तथारुप शास्त्रोक्त स० साधु मा० ब्राह्मणने अ० सचित अ० सदोष एवा अ० असंन पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम प० प्रतिलानवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे करी जी० जीव अ० अल्प आयुष्य बांधे. हवे क० कये प्रकारे

भं० हे पुज्य ! जी० जीव दी० दीर्घ आयुष्यरुप कर्म प० बांधे ! इति प्रश्न. गो० हे गौतम ! णो० प्राणातिपात न करवाथी, णो० मु० जुठ न बोलवाथी, तेमज त० तथारुप सं० श्रमण मा० ब्राह्मणने प्रा० अचित ए० निर्दोष अ० असन, पाणी, खादीम, स्वादीम प० प्रतीलाभवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे जी० जीव दी० दीर्घायुष्य बांधे. क० कये प्रकारे भं० हे पुज्य ! जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पा० प्राणातिपात करवाथी, मु० जुठ बोलवाथी, तेमज त० तथारुप स० श्रमण मा० ब्राह्मणने ही० हेलो निं० निंदि खिं० खंष्ट करी ग० गर्ही अने अ० अपमानोने अ० अनेरो कोइक अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीतीकारक अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम, प्रतीलाभवाथी ए० ए प्रकारे ख० निश्चे जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य प० कर्म बांधे. क० कये प्रकारे भं० हे पुज्य ! जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घायुष्यरुप कर्म प० बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! नो० प्राणातिपात न करवाथी, नो० जुठ न बोलवाथी, तेमज त० तथारुप स० श्रमण मा० ब्राह्मणने वं० स्तुति करीने जा० यावत् प० सेवा करीने अ० अनेरो कोइएक म० मनोज्ञ पी० प्रीतीकारक अ० असण, पाणी, खादीम, स्वादीम, प० प्रतीलाभवाथी ए० ए. प्रकारे ख० निश्चे जा० यावत् जीव शुभ दीर्घ आयुष्य प० बांधे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां जीव हिंसा करे तो, जुठुं बोले तो, तथा असुझतो आहार आपे तो; अल्प आयुष्य बांधे; अने जीवने न हणे तो, जुठुं न बोले तो; तथा सुझतो आहार पाणी आपे तो दीर्घ आयुष्य बांधे, एम कह्युं. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ए ठामे जीव हणे तो अल्प आउखुं बांधतो कह्यो, अने न हणे तो दीर्घ आउखुं बांधतो कह्यो. हवे अनुकंपाथी तथा जीव बचायाथी शुं फल पामे ? एनुं फल देखाडो". तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बचाववुं ए न हणवामांज आव्युं. जेणे जीव बचायों तेणे मरणना भयथी मुंकाव्यो के सामो अभया

नांख्यो ? ते कहो. हे देवानुप्रीय ! जीवने उगारवुं ते शुं न हणवाथी जुदुं छे ? एम जाणता हो तो एक पापी, जीवने मारे तो ते हणतो कहेवाय अने न हणे ते न हणतो कहेवाय. हवे जुदुंनी ! जीव उगारवावालो शेमां नख्यो ? ते तमे वीचारी जुओ. हवे जीवने हणतो अल्प आयुष्य बांधे अने न हणतो दीर्घ आयुष्य बांधे, पण तमे उगारवुं जुदुं मानो छो ते तमारुं मानवुं भ्रमथी छे. तेनुं नीराकरण नीचे मुजबः—

हवे जे जुठुं बोले ते अल्प आयुष्य बांधे, अने जुठुं न बोले ते दीर्घ आयुष्य बांधे. हवे जुठुं बोले तेनां अने जुठुं न बोले तेना तो फल कह्यां; पण निर्वध साचुं बोले तेनां शुं फल ? ए बे बोलमां तो साच न पेठुं. हवे निर्वध साचुं बोले ते शेमां पेठो ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे के " निर्वध साचुं बोले ते जुठुं न बोले तेमां पेठो. " तेम एक, जीव हणे, एक न हणे, अने एक उगारे. ए त्रण त्रण बोलना ठाम जुदा कहोछो, तेम एना पण त्रण बोले छे. जुठुं बोले, जुठुं न बोले, अने साचुं बोले. हवे जेम साचुं बोले ते जुठुं न बोले तेमां पेठो, तेम उगारे तेपण न हणवामां पेठो. (१) वली कोइ असुझतुं आपे, कोइ असुझतुं न आपे अने कोइ सुझतुं आपे. ए पण त्रण बोल छे. हवे जे सुझतुं आपे ते, असुझतुं न आपे तेमां पेठो. जे असुझतुं न दे तेनां जेवां फल, तेवांज सुझतुं दीधानां फल. तेम उगारवुं ते न हणवामां पेठुं, तेनां पण तेवांज फल. (२) कोइ चोरी करे, कोइ चोरी न करे, अने एक दीधेलुं ले. हवे दीधुं ले ते चोरी न करे तेमां पेठो, तेम उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेठो. (३) एक, स्त्रीथी वात करे. एक, स्त्रीथी वात न करे, अने एक, धर्मोपदेशनी वात करे. हवे धर्मोपदेशनी वात करे, ते धर्म आश्री पापनी वात न करे तेमां पेठो, तेम जीव उगारवावालो, जीव न हणे तेमां पेठो. (४) एक, उपगर्ण राखे. एक, उपगर्ण न राखे अने एक, धर्म उपगर्ण राखे. ए पण त्रण बोल छे. हवे धर्म उपगर्ण राखे ते धर्मी, पापना उपगर्ण न राखे तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो

जीव न हणे तेमां पेसे. (५) एक, पापनी वात (रागरंग) सांजले. एक, न सांजले अने एक, धर्म उपदेश सांजले. ए पण त्रण बोल छे. हवे जे धर्म उपदेश सांजले ते पापनी वात (रागरंग) न सांजले तेमां पेसे. तेम जीव उगारे ते, जीव न हणे तेमां पेसे. (६) एक, स्त्री आदिकनां रुप देखे. एक, न देखे. अने एक, साधुनां दर्शन करे. ए पण त्रण बोल छे, हवे जे वीतराग साधुनां दर्शन करे ते, स्त्री आदिकनुं रुप न देखे तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो, जीव न हणे तेमां पेसे. (७) एक, सुगंधवासना ले. एक, न ले अने एक, वासना आवे तेमां राग द्वेष न आणे ( राग द्वेषने जीते). ए पण त्रण बोल छे. हवे राग द्वेष जीते ते, वासनाना त्याग करे तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेसे. (८) हवे एक, पापकारी सावध वचन बोले, एक, सावध वचन न बोले, अने एक, निर्वध वचन बोले (सझाय करे). ए पण त्रण बोल छे. हवे निर्वध वचन बोलवावालो सावध वचन न बोले तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेसे. (९) हवे एक, सर्वथा बोल बोल करे. एक, मौन राखे, अने एक, निर्वध बोले. ए पण त्रण बोल छे. जेम निर्वध वचन बोलवावालो मौनवालानी पांतीमां पेसे, तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेनी पांतीमां पेसे. (१०) एक फर्सथकी सुख दुःख माने. एक, फर्सथको सुंहालादिकना त्याग करे, अने एक, शीत-तापनी आतापना ले. ए पण त्रण बोल छे. हवे आतापना लेवावालो, स्पर्श इंद्रिनो विषय जीते, तेमां पेसे. तेम जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेसे. (११) एक, मननो जोग माठो प्रवर्तावे. एक, माठो न प्रवर्तावे अने एक, जलो प्रवर्तावे. ए पण त्रण बोल छे. हवे जलुं मन प्रवर्तावे ते, माठुं मन न प्रवर्तावे तेमां पेसे. तेमज जीव उगारवावालो जीव न हणे तेमां पेसे. (१२) एम वचन जोगना त्रण बोल जाणवा. (१३) एम काय जोगना पण त्रण बोल जाणवा. (१४) ए चौद बोलना बबे बोलतो सुयगडांग श्रुतस्कंध बीजे अध्ययन बीजामां छे, अने अकेक बोलना त्रीजा बोल मांना केटलाएक बोल सुयगडांग सूत्रमां छे, अने केटलाएक जगवती

प्रमुख अनेरा सूत्रमां छे. त्रीजा बोलनां फल थोडा घणा धर्म आश्री श्रीवीतरागदेवे बीजा बोल सरखां कह्यां छे. तेम जीव उगारे तेनां फल, जीवने न हणे तेनी परे भला जाणवां. एम अमारे मते न हण्यामां अने उगार्यामां कांइ फेर नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "एक, जीवने मारेछे, एक वर्जे छे (टंटा झघडामां पडेछे) अने एक, मौन राखे छे. हवे मौन राखवावालाने तो, जीव मारे तेनुं पाप नथी लागतुं; कारणके जगतमां अनेक जीव मरे छे. केने केने उगारशे. केनुं केनुं पाप टालशे. पोतपोताने कर्मे करी पचे छे. मुनीराज तथा श्रावकजी केना केना ऊगडामां पडे. मुनीराजने तो अनेक जगतमां जीव मरे तेनुं पाप नथी लागतुं, त्यारे असंजती जीवने बचाववाना ऊगडामां शा वास्ते पडे. सामु पाप लागे. कारणके कोइ राजी थाय, कोइ कराजी थाय." तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय ! परोपकारनो बुद्धीवाला, परजीवने उपकार कर्यामां गुण जाणे ते वास्ते उपकार करेज. जो तमारा कहेवा प्रमाणे परउपकार करवो ते पराया ऊगडामां पडवुं एम होयतो श्री तीर्थंकरदेवने तथा केवलीने केवलज्ञान उपन्युं ते पाछुं न जाय. त्यारे उपदेश शा वास्ते दे. संसारी जीवे करेलुं पाप तीर्थंकर तथा केवलीने तो नथी लागतुं. उलटुं उपदेश सांभलीने कोइ राजी थाय, अने कोइ कराजी थाय. ए परना ऊघडामां केम पडे ? ए तीर्थंकर केवली उपदेश दे ते न हण्यामां के परजीवना उपकार वास्ते ? वली वितिभयपुर—पाटणना धणी उदाइ—राजाए पाछली रातनी चिंतवणा करी के "भगवंत श्री माहावीरजी पधारे तो छकायने अभयदान दउं, दिक्षा लउं." पछी महावीरदेव घणा साधुना परिवारे पधार्या, अने उदाइ—राजाने दिक्षा दीधी. शाख सूत्र भगवती शतक तेरमे.

हवे जुओ ! उदाइ—राजानुं करेलुं पाप भगवंतने तो नोहोतुं लागतुं, पण सातसो कोशथी चालीने आव्या, रस्तामां अनेक नदीउं उलंघी हशे, साधुउंना पगथी विहारमां असंख्याता जीवोनी घात थइ हशे,

अने उदाइ राजाने दिक्षा दिधाथी अनेक जीव दुःख पाम्या हशे. ए भगवंत तमारो कहेणीने लेखे उदाइ-राजाना ऊघडामां नाहकना केम पड्या ? सातसो कोशथी गया. ए न हणयामां के परजीवना उपकार वास्ते ? (२) वली चक्रवर्ति प्रमुख अनेक जीवोने केवली अने साधु उपदेश दइ दीक्षा दे, तेथी श्रीदेवी प्रमुख अनेक जीव दुःख पामे. हवे केवली तथा साधु भगवंतने तो चक्रवर्ति आदिकनुं कोधेलुं पाप नथी लागतु, पण घणा जीवने दुःख उपजावीने पारका ऊगडामां केम पडे ? ए न हणयामां के परजीवना उपगार वास्ते ? (३) एम अनेक जीवोने दीक्षा दे तथा श्रावको प्रमुखने कुशील प्रमुखना सोगन करावे, तेथी स्त्रीआदिक अनेक जीव दुःख पामे. ए साधु, भगवंत तथा केवलीने तो पाप नथी लागतुं. ए घणा जीवने दुःख उपजे; एवा ऊघडामां केम पडे ? ए न हणयामां के परजीवना उपकार वास्ते ? (४) वली माहा शतक श्रावकने दोष लाग्यो त्यारे गौतमने मुकीने पायश्चित देवराव्युं. ए दोष भगवंतने तो नहोतो लागतो. ए न हणयामां के परजीवना उपकार वास्ते ? (५) वली मांहोमांहो कलेश होय ते उपशमावे तो मोक्षनो प्राप्ती थाय. शाख सूत्र ठाणायंग ठाणे आठमे. ते पाठः—

अठहिं ठाणेहिं सम्मं घफितवं जइतवं परकमियवं आसिंसचणं-अठे णोपमाएयवं भवइ असुयाणं-धम्माणं सम्मं सुणणयाए अब्भुठेयवं भवइ. १ सुयाणं धम्माणं उगेन्हणयाते अवधारणयाए अब्भुठेतवं भवइ. २ णवाणं-कम्माणं संजमेणं मकरणताते अब्भुठेयवं भवइ. ३ पोराणाणं-कम्माणं तवसावि-गिंचणताते विसोहणताते अब्भुठेयवं भवइ. ४ असंगिहित परितणस्स संगेन्हणताते अब्भुठेयवं भवइ. ५ सेहं आयार गोयरं ग्गहणताते अब्भुठेयवं भवइ. ६ गिलाणस्स अगिलाणताते वेयावच्चं

करणताए अब्नुठेयव्वं नवइ. ७ साधंमित्ताण मधिकरणंसि उप्पन्नंसि तब्ब अनिस्सितो वस्सिते अपक्क-गाही मझब्ब नावन्नूते कहणु साहंमित्ता अप्पसदा अप्पजंझा अप्पतुमतुमा उवसामणताते अब्नुठेयव्वं नवइ. ८ ॥

अर्थः—अ० आठ ठा० स्थानके स० सम्यक् प्रकारे घ० अणपाम्याने विषे उद्यम करवो. ज० पाम्याने विषे यत्न करवो. प० शक्ति न होय तोपण पराक्रम करवुं. अ० एवा अर्थने विषे णो० प्रमाद न करवो. हवे ते स्थानक कहे ठेः-अ० अणसांनल्यो श्रुतधर्म सांनलवाने विषे अ० उद्यम करवो. १ सु० सांनल्या श्रुतधर्मने न० ग्रहण करवाने, अविसारवाने अर्थे, अ० अवधारवाने अर्थे अ० नुद्यम करवो.२ ण० नवा कर्म सं० संजमे करी अ० अणकरवाने विषे अ० उद्यम करवो. ३ पो० पुर्वलां कर्म त० तपे करी वि० निर्जरवाने अर्थे वि० आत्मा विशुद्धवाने अर्थे अ० उद्यम करवो. ४ अ० निराधार शिष्य वर्गने सं० आधार देवाने विषे अ० उद्यम करवो. ५ से० नवदिक्षीत शिष्यने आ० ज्ञानादिक पांच आचार गो० गोचर निक्षाचार ग० ग्राहावाने विषे अ० उद्यम करवो.६ गि० रोगीनी अ० खेदरहित वैयावच करवाने विषे अ० उद्यम करवो.७ सा० साधर्मीकने विषे अ० अधिकरण विरोध उ० मांहोमांही नपन्याथी त० त्यां अ० राग रहित, आहारादिकनी इच्छा रहित, द्वेष रहित अ० अपक्षपातपणे म० मध्यस्थ ना० नावे क० शुं शुं करे, ते कहे ठेः—सा० साधर्मी अ० राम्नना मोटा शब्द रहित तथा अ० विखर्या वचन रहित अ० क्रोधकृत विकार रहित थाशे. एम विचारीने न० विरोध नपशमाववाने विषे अ० उद्यम करवो. ८

नावार्थः—हवे जुर्ज ! ए कलह कदाग्रहनां कर्म बीजाने तो नथी लागतां, पण ऊगमो मुंकाव्यो तेने लान्न कह्यो. ए ऊगमो मुंकाव्यो ते न हणयामां के परजीवना नपगार वास्ते ? (६) वली मार्गमां कीमी, मकोमी, हरीकाय (लीलोत्री) प्रमुख पमी होय ते पोते टालीने नीक-

ह्यो. तेवारे मा हणो मा हणो थइ चुक्युं. पछी बीजाने कहे के, हे न्नाइ! तमे पण त्रस प्रमुख जीव उपर पग न देशो. ए उपदेश न हएयामां के परजीवना उपगार वास्ते? (७) वली केशीगुरुने तथा चित्तसारथिने प्रदेशीनुं कर्युं पाप नहोतुं लागतुं, पण कपटाइ करी घोमा रथ दोमावी हिंसा करीने चित्तप्रधान प्रदेशीराजाने लाव्यो. धर्मदलाली करी. पछी केशीश्रमणे अनेक दृष्टांत दइ प्रदेशीने समजाव्यो. ए जगमामां पमया. ए न हएयामां के परजीवना उपगार वास्ते? (७) वली दसाश्रुतखंधमां साधुनी पमिमाने अधिकारे कह्युं छे के, साधु अग्निमां बलतो होय त्यारे तेने कोइ दयावंत काढवा आवे ते काढनारनी अनुकंपा अर्थे नीकले ते पाठ

मासियणं न्निख्खू केइ उवस्सगं अगणिकाएणं आमेवा णो से कप्पइ तं पमुच्च निखित्तएवा पविसित्तएवा. तत्थणं केइ बाहाए गाहाय आगसेवा णो से कप्पइ तं अवलंबित्तएवा पवलंबित्तएवा कप्पइ से आहारियंरित्तए.

अर्थः—पूर्ववत्. प्रश्न बीजे, पाछल पांने १२७ में.

न्नावार्थः—हवे जुर्ज! बलता साधुने कोइ अग्निमांथी काढे तो ते काढनारनी अनुकंपाने अर्थे नीकले, पण एम न जाणे के "ए प्राणी नीकलीने शुं धर्म करशे. जो हुं नहीं नीकलुं तो ए न्नलो बलशे. तेमां मारा नव जोगमां तो हिंसा लागती नथी." पण तेना उपकार अर्थे सुखे नीकले. ए न हएयामां के परजीवना उपकार वास्ते? (ए) वली नदीमां आरजा डुबे तेनुं पाप साधुने तो नथी लागतुं, पण तेने अनंत जीवनी रक्षपाल जाणीने काढे. ए न हएयामां के उगार्यामां? इत्यादिक अनेक प्रश्न उपकार उपर जाणवा. जेम आ प्रश्नोमां आगलानुं करेलुं पाप पोताने नथी लागतुं, पण उपकार अर्थे उपदेश दे तथा आटलां कार्य करे; तेम उपकार वास्ते अने आगलानुं पाप टलाववाने वास्ते जीवने बचाववो जोइए. जेना घटमां परोपकारनी बुद्धि नथी, अनुकंपा

समकितनुं लक्षण नथी अने दया नथी, तेनुं अन्नयदान पण अन्नविनी परे निरर्थक जाणवुं. वली जीवने बचाव्यामां पाप कहे तेने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय ! जीवनी रक्षा करवी तथा उपकार करवो ते तो सूत्रमां ठामठाम बताव्युं छे, पण अमे तेमने पुछीए छीए के " कया सूत्रमां कह्युं छे के, पोताना वृतनी (कल्पनी) मर्यादा राखीने जीवने न बचाववो. " वली जीवने बचाव्याथी पाप लागे, अने असंजति जीवनुं जीववुं न वान्छवुं, एवुं ३२ सूत्रमां, ४५ तथा ८४ आगममां अथवा टीका चूर्णि भाष्य के प्रकरणमां क्यांय कह्युं होय तो बतावो. तेवारे डुबतो माणस बाचका भरे तेनी माफक सुयगडांग सूत्रनी जुठी शाख बतावे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहां तो एम कह्युं छे के, हे साधु तुं संजम भांगीने असंजम करी जीववुं वान्छीश नही. संजम धारीने संजम छोडीने पोतानुं असंजम जीवीतव्य वान्छवुं नहिं, एम कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के, साधु तथा श्रावके छकायना जीव असंजतिनुं कोइए जीववुं वान्छवुं नहिं. वली तेरापंथी, असंजति जीवनुं जीववुं नही वान्छवुं ते विषे, आवश्यक सूत्रनी तथा उपाशकसूत्र प्रमुखनी जुठी शाख बतावे छे. ते पाठः—

तयाणंतरंचणं अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणा समणोवासगस्सणं पंच अइयारा जाणियव्वा णसमायरियव्वा तं० इहलोगा-संसप्पउग्गे १ परलोगा-संसप्पउग्गे२ जीविया-संसप्पउग्गे३ मरणा-संसप्पउग्गे ४ कामभोगा-संसप्पउग्गे ५

अर्थः—त० तेवार पछी अ० छेल्लो मा० मरणने अंते सं० संलेषणा झु० तप अग्निने विषे आ० आराधनाना स० श्रमणोपासकने (श्रावकने) पं० पांच अ० अतिचार जा० जाणवा ण० पण समाचरवा नही. तं० ते जेम छे तेम आलोउंतुं. इ० आलोक मनुष्यादिकनां सुख चक्रवृत, बलदेव, अथवा वासुदेवनी रिद्धिने पामुं एवी इछा न करे. प०

देवतादिकना सुखनी, इंद्रादिकना पदनी इछा ज करे. जी० पोतानो महीमाओछव देखीने घणा दीन जीवुं तो ठीक एम न चिंतवे. म० अपुज्यपणुं देखीने तथा क्षुधादेवनी सहन न थाय तेथी झट मरी जाउं तो सारुं, एम न चिंतवे. का० शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्श, एवा कामजोगनी इछा न करे. " परलोके आ तपना प्रज्ञावे ए मने अधिक प्राप्त थाजो, एम न चिंतवे. "

ज्ञावार्थः—हवे जुओ! इहांतो एम कह्युं के, संलेषणामां (संथारामां) पांच बोलनी वान्छा करवी नही. करे तो संथारामां अतिचार लागे. हे देवानुप्रीय! इहांतो एम कह्युं छे के, संथारामां घणादीन जीवुं तो सारुं अथवा मरण वेहेलुं आवे तो सारुं. एतो पोताना जीव आश्री कह्युं छे के, संथारामां पोताने जीववुं मरवुं वान्छवुं नही; पण एम नथी कह्युं के, कोइ जीवनुं जीववुं मरवुं वान्छवुं नही. ए दया उगववाने वास्ते मतना लीधे मृखाबोली संसार केम वधारो छो? तेवारे तेरापंथी कहे छे के " ज्यारे संथारामां जीववुं मरवुं वान्छयामां दोष छे त्यारे विनासंथारे पण जीववुं मरवुं वान्छे तेपण आर्तध्यान छे, अने आज्ञा बाहार छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! धर्मध्यान शुक्लध्यान तो संवरनिर्जरा सम्यक्त सहित होय तेने कहीये. ते संवरथी तो पुन्यपापरुपी कर्म आवतां रोकाय, निर्जराथी आगलां कर्म तुटे (शाख सूत्र जगवती सतक बीजे उद्देशे पांचमे) अने रुद्रध्यानथी पाप बंधाय. हवे कहो! पुन्य कया ध्यानथी बंधाय अने देवतानुं आउखुं कया ध्यानथी बंधाय ते सूत्र शाख बतावो.

हे देवानुप्रीय! पुन्यनो अने देवताना आउखानो बंध आर्तध्यान (आश्रवज्ञाव)मांज छे. संवरज्ञावमां आउखुं बंधाय नही. शाख सूत्र जगवती शतक पहेले. हवे अप्रशस्त-आर्तध्यानथी (आश्रवज्ञावरागथी) पाप बंधाय, अने प्रशस्त-आर्तध्यानथी (आश्रवज्ञाव सरागथी) पुन्य अने देवतानुं आउखुं बंधाय. शाख सूत्र जगवती शतक बीजे उद्देशे

पांचमे. सराग प्रशस्त संजम तथा तप उपर पण आर्तध्यान छे. ए न्याये प्रशस्त कार्यथी तथा प्रशस्त राग ज्ञावथी जीववुं मरवुं वान्छे, ते पुन्य प्रकृतिनुं कारण छे. वली तेरापंथी, “ जीववुं मरवुं वान्छयामां धर्म पुन्य सरधे तेने मिथ्यात पाप लागे ” एवी परुपणा जोला जीवोने ज्ञरमाववा वास्ते करे छे, पण पोतानुं जीववुं वान्छे छे. वचन बोलीमां बंध नथी. तेमने एवा प्रश्न पुछीए केः—( १ ) तमारे जीववानी वांछा नथी त्यारे साप आव्याथी आघा केम जाउंछो ? ( २ ) सांढ लढता आवता देखीने आघा केम खसोछो ? ( ३ ) सींह आवता देखीने आघा केम जाउंछो? ( ४ ) हम्कायुं कुतरुं देखीने आघा केम खसोछो? ( ५ ) टाढ लाग्याथी कपमां केम उंढोछो? ( ६ ) तापमांथी ( तुमांथी ) छांये केम आवोछो? ( ७ ) पेटमां जुख लाग्याथी गाम गाम घर घर जटकी आहार लावीने केम खाउंछो? ( ८ ) वायु दाघज्वर वीगेरे शरीरमां रोग उपन्याथी औषधनो उद्यम करी जीवीतव्य केम वंछोछो? ( ९ ) छात पत्थर पमतो देखी आघा केम खसोछो? इत्यादिक उपसर्ग उपज्यां सांमा जाउतो मरण वांछ्युं कहेवाय अने आघा जाउं तो जीवीतव्य वान्छ्युं कहेवाय. तमारी श्रद्धाने लेखे तो जे जग्योए बेठा तेज जग्योए बेठा रहेवुं जोइए. ए उपसर्ग उपन्याथी आघा केम जाउंछो, जुख लाग्याथी आहार केम करोछो अने रोग उपन्ये औषध केम करो छो; कारण के जीववुं वंछयां आर्तध्यान पाप लागे, तो दुःख गमाववानी वांछा, तेपण आर्तध्यानज छे. मनगमतो संजोग मल्यो तेनो विजोग न पमे तो सारुं, अने अणगमतो संजोग मल्यो ते वहेलो मटे तो सारुं, एवी चिंतवणा करे ते पण आर्तध्यान छे. शाख सूत्र उववाइ, चार ध्यानना अधिकारमां.

हवे जुउं ! हे देवानुप्रीय ! जो जीववुं वान्छवुं नही तो दुःख गमाववुं पण वान्छवुं नही. तमे सर्पादिकना उपसर्ग उपन्याथी आघा केम जाउंछो? जुख गमाववाने आहार केम करोछो ? तथा रोग गमाववानी वान्छा केम करोछो ? तमे कहेता हता के जीववुं न वान्छवुं. त्यारे ए

उपाय करी जीववुं केम वान्छयुं ? ए बोलीने केम बदलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " घणा दीन संजम पाल्याथी लाभ घणो छे. ते घणा दीन संजम पालवानी वान्छा वास्ते एटला उपाय करीए छीए. अमारे जीववानी वान्छा नथी. " तेनो उत्तरः-हे देवानुप्रीय ! गजसुकमाल मुनीराजतो माताने हाथे भोजन करी, संजम लेइ तेज दीवसे उपसर्ग सही मोक्ष गया. ते शुं लाभ थोडो थयो ? वली दिक्षा लइ उपसर्ग उपन्याथी समे प्रणामे सामा मंडे तथा समे प्रणामे संथारो करे, तेमां लाभ घणो के माल खाइ घणा दीन संजम पाले तेमां लाभ घणो ? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, उपसर्ग आव्याथी सामा मंडे तथा संथारो करे तेने धन्य छे. तो हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो जीववानी वान्छा करवी नही. तमारे तो संथारोज करवो श्रेष्ट छे. पण भगवंते तो दुःख गमाववाने अर्थे तथा जीवीतव्यने अर्थे आहार करवो कह्युं छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन छवीसमें, गाथा तेत्रीसमी. ते पाठः—

वेयण वेयावच्चे इरियठाए य संजमठाए य,
तह पाणवत्तियाए छठं पुण धम्म चिंताए ॥ ३३ ॥

अर्थः—पुर्ववत्. जुओ प्रश्न १ लो पाने १०मे.

भावार्थः—हवे जुओ ! अर्हंतो छ कारणे आहार करवो कह्युं छे; अने तमे कहोछो के, एक संजम पालवाने अर्थे एटला उपाय करीए छीए, औषध लावीए छीए, अने आहार करीए छीए. ए मृषावाद केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " असंजम जीवीतव्य न वान्छवुं, पण संजम जीवीतव्य वान्छयामां धर्म छे, ते मांटे एटला उपाय करी संजम जीवीतव्य वान्छीए छीए. " एम कहेछे, पण आगल ए वचन पण पलटी जशे, कारणके जुठा-बोल्याना वचनमां बंध नथी. ते वास्ते तेरापंथीने पुछवुं के " तमारा साधुने कोइ अनार्य फांसी दइ गयो. ते देखी कोइ दयावंत, ए साधु संजम घणा दीवस पालशे एवा मोटा मुनीराज छे, एम जाणी अनुकंपा आणीने शुद्ध प्रणामथी खोले तथा कर्जे

ए संजम जीवीतव्य खोलनारे वान्छयुं, तेमां पाप केम कहोछो? तेमज कुतरो करके तेने हकाले, परूताने बचावी ले, इत्यादिक सर्पादिकना अनेक उपसर्ग उपजता देखी, घणा दीन संजम पालशे एम जाणीने टाले. ए संजम जीवीत्व उपसर्ग टालनारे वान्छयुं एमां पाप केम कहोछो?" तेवारें तेरापंथी कहेछे के, "गृहस्थीनी साहाज साधुए वान्छवी नही, तेथी पाप कहीए छीए. जेम संथारामां खावाना त्याग छे तेने अनुकंपा आणीने खवरावे तथा संथारो जंगावे तेने पाप थाय; तेनी पेरे अनुकंपा आणीने धर्मार्थे साधुनी फांसी खोले तेने पाप कहीए छीए." एवा कुहेत मेलवी बोधां लोकोने बेहेकावे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुतो गृहस्थीने धर्म थाय तेवां पण घणांक कार्य न वान्छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३५ मैं, गाथा १८ मी. ते पाठः—

अचणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा;
इड्डि सक्कार सम्माणं, मणसावि न पछए ॥ १८ ॥

अर्थः—अ० चंदनादिके करी अर्चवुं, र० रत्न मंकनतुं रचवुं, चे० निश्चे वं० वांदवुं (गुणनुं करवुं,) पु० पुजवुं, तेमज इ० लब्धिनी रिद्धि अन्नादिक देवे करी स० सत्कार स० सन्मान, एटलां वानां म० मने करीने पण न० न प० वान्छे. ॥ १८ ॥

भावार्थः—हवे जुओ! इहां कह्युं के, साधुए गृहस्थीनी वंदणा के सत्कार सन्मानादिक वान्छवो नही, पण गृहस्थी साधुने वंदणा करे तथा आदर सन्मान दे तेने धर्म थाय के नही? तेम साधु तो गृहस्थीनी साहाज न वान्छे, पण कोइ दयावंत फांसी खोले, उपसर्ग टाले, तेने पाप कया न्यायथी कहो छो. वली गृहस्थीने घेर सुखडी प्रमुख देखी साधु मनमां एम न वान्छे के, मने वोहोरावे तो ठीक; पण वोहोरावे तेने धर्म छे. तेम साधुनो उपसर्ग टाले तेने धर्म छे. वली तमे संथारो जंगाववानो कुहेतु मेलव्यो, पण संथारामां तो खावापीवाना त्याग छे. ते त्याग कोइ दुष्टबुद्धि, मिथ्यादृष्टि के धर्मनो

द्वेषी होय ते जंगावे तेने तो पाप लागे, पण तेना जंगाव्या त्याग साधु जांगे नही. वली जेम संथारामां खावापीवाना त्याग छे तेम फांसीथी खुल्ला थवाना तथा कुत्ता प्रमुखना उपसर्गथी वचवाना साधुने त्याग नथी. कोइ दयावंत खोले तो सुखे खुले, पण साधुए गृहस्थीने खोलवानुं केहेवुं नही. ए साधुनो कल्प छे. तेमज साधु गृहस्थीने विनय करवानुं, सामा आववानुं, उन्ना रहेवानुं अने उपसमीपे आववानुं, कल्प नथी तेथी कहे नहीं; पण गृहस्थी साधुनो विनयादिक करे तेने तो गुणज छे. तेम फांसी खोले तथा उपसर्ग टाले तेने पण गुण जाणवो. पण सूत्रसेलीना अजाण त्यागने अने कल्पने उलख्याविना मोहमदमां छक्या बोले के, संथारो जंगावे तेनां फल अने फांसी खोले तेनां फल एक सरखां छे. एम कहे तेने समकिति केम कहीये. वली तेरापंथीने केहेवुं के, साधूनुं साधू संजम जीवीतव्य वान्छे तेमांतो तमे पण धर्म कहोछो, अने जगवंते पण सूत्र ठाणायांगमां कह्युं छे के, साधवी नदीमां रुवती होय तेने दयाना जावेकरी साधू काढेतो आज्ञा उलंघे नही. संजम जीवीतव्य वान्छयुं कहीये. ए लेखेतो जगवंत श्री माहावीरदेवे गोशालाने अनुकंपारस आणीने वचाव्यो. ते पण जगवंते संजम जीवीतव्य वान्छयुं कहीये. तेमां तमे जगवंतने पाप लाग्युं कहोछो अने जगवंतने चुक्या कहोछो. ते कया न्याये ? जेम साधवी संजमधारी छे, तेम गोशालाने पण जगवंते पोतानो शिष्य कह्यो छे. शाख सूत्र जगवती शतक पंदरमे. ते पाठ लखीए छीए:—

ततेणं समणेजगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवंवयासि जेति ताव गोसाला तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा तंचेवजाव पज्जुवासंति किमंगपुण गोसाला तुम्मं मए चेव पव्वावित्ते जाव मए चेव बहूसुतीकए ममं चेवमिह्नं विप्पफिवणे.

अर्थः—त० तेवारे स० श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामी गो० गोशाला मं० मंखलीपुत्रने ए० एम केहेता हवा. जे० जे ता० ते गो०

हे गोशाला! त० तथारुप स० श्रमण तपस्वी मा० ब्राह्मण तं० तेमज जा० यावत् शब्दे समीपे एक पण वचन आर्यनलुं धर्मसंबंधी सुवचन शांनले ते पण ते प्रत्ये वांदे, नमस्कार करे, यावत् कल्याणकारी, मंगलकारी, देवसमान, चैत्यसमान जा० यावत् शब्दे प० शेवा करे. तो कि० घणुं शुं कहीये, तुजोने पु० वली गो० हे गोशाला! तु० तुजप्रत्ये म० मेंज च० निश्चे प० प्रवर्ज्या (दिक्षा) दीधी इत्यादि जा० यावत् म० मुजथकी चे० निश्चे ब० बहु श्रुत थयो. तेजुलेश्या पामीने समर्थ थयो ते म० मुजथीज चे० निश्चे मि० तें अनार्यपणु वि० प्रतिवर्ज्युं.

नावार्थः—हवे जुओ! गोशालो प्रनुनी साथे ७ वर्ष सुधी रह्यो, लान अलान सुख दुःख नेलां नोगव्यां, मांहोमांही सुख चिंतवता रह्या, अने पछी मिथ्यात्व प्रवर्ज्यो. समोसरणमां आव्यो त्यां नगवंते एम कह्युं के, हे गोशाला! में तने मुंड्यो, प्रवर्ज्या (दिक्षा) दीधी, नणाव्यो अने बहुश्रुत कर्यो. ए श्रीमुखथी वीतरागदेवे कह्युं. ए नगवंतनो शिष्य गोशालो, तेने नगवंते संजम धारीने बचाव्यो, तेमां नगवंतने पाप कर्म लाग्यां तथा चुक्या कहो तो, पाणीमां डुबती साधवीने काढयाथी धर्म कया न्याये थशे. जो साधवीने नदीमांथी काढयामां (बचाव्याथी) धर्म हशे तो, नगवंते पोताना शिष्य गोशालाने बचाव्यो तेमां पण धर्म हशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "नगवंत ज्यारे छद्मस्थपणे हता त्यारे ७ लेश्या अने आठ कर्म हतां. गोशाला उपर राग आव्यो ते कृष्णादिक माठी लेश्याना प्रणाम छे. ते रागना प्रणामे करी गोशालाने बचाव्यो तेथी प्रनुने चुक्या कहीये छीए." एवां जुठां आल प्रनुने देछे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! छद्मस्थ तीर्थंकरमां दिक्षा लीधा पछी ७ लेश्या कया सूत्रमां कही छे? ते बतावो. तेवारे तेरापंथी केहे छे के "सामायक-चारित्रमां, छेदोपस्थापनी-चारित्रमां, कषायकुशील—नियंठामां अने मनपर्यव-ज्ञानमां इत्यादिकमां ७ लेश्या कही छे, अने सामायक--चारित्र, कषायकुशील-नियंठो अने मनपर्यव-

ज्ञान छद्मस्थ तीर्थंकरमां होय छे. ए न्याये भगवंतमां छ लेश्या कहीये छीए. " तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! ए बोलोना धणी तो घणा साधु छे. सामायक-चारित्रना अने कषायकुशील-नियंठाना धणी जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक हजार क्रोड कह्या छे. ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टा चारित्रना धणी छे, अनंतगुणा हाणी अधिक छे, छठाण वडियां छे. ते कर्मने वशे पाछा पडे तो निगोदमां पडे, अने उत्कृष्टो अनंतो काल अर्ध-पुद्गल सुधी भमे. ए कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना प्रणाम आवे त्यारे संजमनो विणाश थाय. वली सामायक, छेदोस्थापनी-चारित्र अने कषायकुशील नियंठो एक भवमां जघन्य एक वार आवे अने उत्कृष्टो प्रत्येक सोवार आवे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में, उद्देशे ६ ठे तथा ७ में. त्यां छ नियंठा अने पांच संजया चारित्रना अनेक प्रकार कह्या छे. ते पहेला कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना प्रणाम आवे तेने पाछा वाली ले, मिच्छामि डुक्कडं इत्यादिक प्रायश्चित ले; अने कर्मने वशे पाछा न वले तथा प्रायश्चित न ले तो संजम जाय. हवे चार ज्ञानथी पडे त्यारे पहेलां तो किंचितमात्र लेश्या वर्ते, पछी मनपर्यव-ज्ञान अने चारित्र नियंठो जाय, ते आश्री छ लेश्या कही दीसे छे. ए न्याय देखाडीने भगवंतमां पण सामायक-चारित्र, कषायकुशील-नियंठो अने मनपर्यव-ज्ञान होय, तेथी समचय छ लेश्या कही, तेम भगवंतने पण छ लेश्या होय एम कहे छे तेने पुछीए के, सामायक-चारित्र तथा कषायकुशील-नियंठावालामां तो संजम जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो पण होय अने अनंतगुण हीण अधिक पण होय. हवे भगवंतमां कयो संजम होय ते कहो.

हे देवानुप्रीय ! भगवंतमांतो उत्कृष्टो निर्मलो संजम छद्मस्थप-णामां पण कह्यो छे. शास्त्र सूत्र आचारागमां. वली सामायकचारित्र अने कषायकुशील-नियंठामा छ लेश्या कही, तेथी भगवंतमां छलेश्या कहे, तेना केहे ..ने लेखे तो कोई तीर्थंकरे पंदर भव पण कर्या जोइए,

अने कोइ तीर्थंकर कर्मने वशे भ्रष्ट थइने चार गतिमां अनंतो काल अर्धपुद्‌गल सुधी रुल्या (भम्या) पण जोइए, अने एक भवमां नवसोवार संजम जाय आवे एम पण थवुं जोइए. वली सामायक-चारित्र अने कषायकुशील-नियंठामां छत्रीस बोल कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक पचीसमें, उद्देशे छठे तथा सातमें. ते प्रमाणे छद्मस्थ तीर्थंकरमां सर्व होवा जोइए. हे देवानुप्रीय ! सामायक-चारित्रादिकनी शाख देखाडी भगवंतमां छ लेश्या कहो तो, सर्व बोल सामायक-चारित्रादिकमां कह्या ते छद्मस्थ तीर्थंकरमां केम नथी केहेता ? वली सामायक-चारित्र अने कषायकुशील-नियंठामां तो कल्प पांच कह्या छेः—ठीय-कल्पी ( कल्प प्रमाणे रेहेवुं ) १, अठीय-कल्पी ( कल्प रहित ) २, जिन-कल्पी ( अभिग्रहधारी ) ३, स्थिवर-कल्पी ( हमणा साधु आरजा विचरे छे ते) ४, अने कल्पातित (वीतराग) ५. तेमां छद्मस्थ तीर्थंकरमां दिक्षा लीधा पछी कल्प एक कल्पातितज होय एम कह्युं छे. शतक २५ में. हवे सामायक-चारित्र कल्पातितमां अने कषायकुशील-नियंठा कल्पातितमां छ लेश्या कोइ सूत्रमां तथा टीका प्रकरणमां क्याय पण कही नथी. तमे एवा मतना लीधा भगवंत उपर कुडा आल केम चोडो. वली सामायक-चारित्रादिक सर्व बोलमां छ लेश्या कही छे, ते द्रव्य लेश्या जाणीए छीए. लेश्या द्रव्य अने भाव, बे प्रकारे कही छे. तेमां द्रव्य लेश्याने रुपी आठ फर्सी कही छे. जेमां पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध अने आठ फर्स होय ते शरीरादिकना वर्णादिकने कहीये; अने भाव लेश्याने अरुपी कही छे, तेमां वर्ण, रस, गंध अने फर्स नथी. शाख सूत्र भगवती शतक १२ में, उद्देशे ५ में. ए न्याये ज्ञानमां, समकितमां, चारित्रमां, नियंठामां अने चोवीस दंडकमां, सर्वमां भाव-लेश्या केहेशोतो द्रव्य-लेश्या शेमां होय ते कहो. साधुजीमां द्रव्य-लेश्या होय के नहि ते कहो; कारणके साधुजीमां द्रव्य-लेश्या भाव-लेश्या न्यारी-न्यारी तो कोइ ठेकाणे कही नथी.

वली नारकीमां पेहेली त्रण मात्री लेश्या कही छे, पण ते द्रव्य

लेश्या जाणीये छीए; कारण के भावे तो क्षायकादिक समकितना प्रणाम तथा उदासीभाव पाछला भवनां कीधेलां पापने निंदे, पोतानी आत्माने धिक्कार देवे, ते प्रणाममां भावे भली लेश्या होय तो नाकारो नहि. वली भवनपति अने वाणव्यंतरमां लेश्या चार कही छे. त्यां पण पद्म शुक्ल भावे होयतो नाकारो नहिं. वली समकितिमां अनंतानुबंधी चोकडीना क्रोधादिक उपशम्या तथा खप्या, ते कइ लेश्यानुं लक्षण कहीये ? ते उत्तराध्ययनना ३४ मा अध्ययनथी वीचारीने कहो. वली ज्योतिष अने पहेला बीजा देवलोके लेश्या एक तेजु कहीछे. त्रीजे चोथे अने पांचमे देवलोके लेश्या एक पद्म कहीछे. आगल छठा देवलोकथी मांडीने पांच अनुत्तर विमान सुधी लेश्या एक शुक्ल कहीछे, ते पण द्रव्य लेश्या कही दीसे छे. भावे कृष्ण, नील, अने कापोत माठी लेश्या होय तो नाकारो नही; कारणके छकायनुं अव्रत सेवे, रागद्वेष, परजीव उपर द्रोह भाव करे, देवांगनाथी भोग भोगवे अने अनेक प्रकारना जुद्ध करे, ते प्रणामोने भावे केवी लेश्या कहीये ते कहो. उत्तराध्ययन सूत्रना ३४ मा अध्ययनमां तो ए लक्षणने भावे कृष्णादिक माठी लेश्यानां कह्यां छे, ते वीचारी जोजो. वली सूत्रमां तो नारकी तथा देवतामां लेश्या समचय कही छे पण द्रव्ये जाणीए छीए, अने भावे तो छए दीसेछे. उत्तराध्ययन सूत्रना ३४ मा अध्ययनमां छ लेश्यानां लक्षण कह्यां छे, ते वीचारी जोजो. तेम सामायक-चारित्रमां, छेदोस्थापनी-चारित्रमां, कषायकुशील-नियंठामां अने मनपर्यव-ज्ञानमां समचे छ लेश्या कही, ते द्रव्ये जाणीए छीए. जो भावे होयतो पुलाक, बकुस अने पडिसेवणा, ए त्रणे नियंठावाला मूलगुण अने उत्तरगुणमां दोष लगावे, तेमां पण त्रण लेश्या कहीछे; अने कषाय-कुशील तो अपडिसेवी छे, एटले मूलगुण, उत्तरगुणमां दोष लगाडे नही, त्यारे तेमां भावे छ लेश्या केम संभवे ? कारण के भावे तो साधुभगवंतमां लेश्या त्रण भलीज होय. वली साधुभगवंतमां भावे छ लेश्या कहे, तेने पुछीए के, आरंभ लागे ते कइ लेश्याथी लागे ? द्रव्य छ लेश्या अजीव

कहो छो तेथी लागे? के, भाव लेश्या जीवना प्रणाम, तेथी लागे? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, द्रव्य लेश्या अजीव छे, तेथीतो आरंभ पाप लागे नही, पण भाव लेश्याथी ( जीवना प्रणामथी ) आरंभ पाप लागे छे. त्यारे जुओ! आरंभ लागे ते आश्री लेश्याना प्रश्न कर्या, त्यां साधुजीमां त्रण भली लेश्या कही. शास्त्रसूत्र भगवती शतक १ले उद्देशे १ले ते पाठ.

जीवाणं भंते ! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ? गो०! अछेगइया जीवा आयारंभावि परारंभावि तदुभयारंभावि णोअणारंभा. अछेगतिया जीवा णो आयारंभा णोपरारंभा णोतदुभयारंभा अणारंभा. सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अछेगइया आयारंभावि एवं पडिउच्चरियव्वं गो०! जीवा दुविहा पं०तं० संसार-समावणगाय असंसार-समावणगाय. तछणं जेते असंसार-समावणगा तेणंसिद्धासिद्धाणं णोआयारंभा जाव अणारंभा. तछणं जेते संसार-समावणगा ते दुविहा पं०तं० संजयाय असंजयाय. तछणं जेते संजया ते दुविहा पं०तं० पमत्त-संजयाय अप्पमत्त-संजयाय. तछणं जेते अप्पमत्त-संजया तेणं णोआयारंभा णोपरारंभा जाव अणारंभा. तछणं जेते प्पमत्त-संजया ते सुहजोगंपडुच्च णोआयारंभा णोपरारंभा जाव अणारंभा असुहजोगंपडुच्च आयारंभावि जाव णोअणारंभावि. तछणंजेते असंजया ते अविरयपडुच्च आयारंभावि जाव णोआयारंभा. सेतेणठेणं गो०! एवंवुच्चइ अछेगतिया जीवा जाव अणारंभा. णेरइयाणं भंते ! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ? गो०! नेरइया आयारंभावि जाव णोअणारंभा. सेकेणठेणं भंते !

एवंवुच्चइ णेरइया जाव णोअणारंभा ? गो० ! अविरइ-पडुच्च सेतेणठेणं जाव णोअणारंभा. एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया. मणुस्सा जहा जीवा णवरं सिद्धविरहिया भाणियव्वा. वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहा णेरइया. सलेस्सा जहा उहिया. किण्हलेसस्स नीललेसस्स काउलेसस्स जहा उहिया जीवा णवरं प्पमत्त अप्पमत्ता भाणियवा. तेउलेसस्स पम्मलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा उहिया जीवा णवरं सिद्धा णभाणियव्वा.

अर्थः—जी० जीव भं० हे भगवान ! किं० शुं आ० आत्मारंभी (पोतज जीवनी घात करे ते) छे ? प० परारंभी (अनेरा पासे जीवघात करावे ते) छे ? त० तदुभयारंभी (पोते पण जीवघात करे अने अनेरा पासे पण जीवघात करावे ते) छे ? के अ० अणारंभी (जीवनी घात न करे, न करावे न अनुमोदे ते) छे ? गो० हे गौतम ! अ० केटलाक जी० जीव आ० आत्मारंभी छे, प० परारंभी छे अने त० तदुभयारंभी छे, पण णो० अणारंभी नथी. अ० केटलाक जीव णोआ० आत्मारंभी नथी, णोप० परारंभी नथी अने णोत० तदुभयारंभी पण नथी एटले अ० अणारंभी छे. गौतम पुछेछे. से० ते शा कारणे भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? अ० केटलाएक जीव आ० आत्मारंभी छे. ए० एम प० सर्व पूर्वे कह्युं तेम पाछुं केहेवुं. एम प्रश्न आगल पण सर्वत्रापि केहेवो. गो० हे गौतम! जी० जीव दु० बे प्रकारना पं० कह्या. (में अथवा अन्य केवलीए एटले समस्त तीर्थंकरना मतने विषे भेद नथी एम कह्या.) तं० ते कहेछेः—सं० एक जीव (देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकीरुप चार गतिने विषे संसरण करे ते) संसार-समापन्न छे. अ० बीजा जीव (चारगतिथी वेगला छे एटले मुक्तिगया ते) असंसार-समापन्न छे. त० त्यां जे० जे जीव अ० चार गतिरुप संसारमां अनंतीवार भमी भमी समस्त कर्म क्षयरुप स्थानक पाम्या, ते पंदरे

भेदे सिद्ध थया. ते० ते सि० सिद्ध णो० आत्मारंभी नथी जा० यावत् अ० अणारंभो छे. सिद्ध सर्वथा आरंभ रहित छे. त० त्यां अनंतरे बे पक्ष कह्या तेमां जे सं० चतुर गति लक्षणरुप संसारने विषे रह्या जीव ते० ते दु० बे प्रकारे कह्या. तं० ते कहे छेः--सं० एक जीव संयति अ० बीजा चारित्र रहित असंयति ( पेहेला गुणठाणाथी चोथा गुणठाणा सुधी वर्ते ते ). त० त्यां संजति असंजति ए बे पक्षमां जे० जे संजति चारित्रवंत, ते दु० बे प्रकारे प० कह्या. तं० ते कहे छेः-- प० प्रमत्तसंयत (प्रमादी साधु छठे गुणठाणे वर्ते ते,) अ० अप्रमत्तसंयत (अप्रमादी साधु सातमा गुणठाणा आदिने विषे वर्ते ते.)त० त्यां प्रमत्त अप्रमत्त ए बे पक्षमां जे अ० अप्रमत्त संयति छे ते० ते णोआ० आत्मारंभी नथी, अने णोप० परारंभी पण नथी जा० यावत् तदुभयारंभी पण नथी, एतावता अ० अनारंभी छे. त० ते बे पक्षमां जे० जे प० प्रमत्त संजति छे ते शुभ अशुभ योग होय त्यां सु० शुभ जोग पडि- लेहण आदि सावधानपणे करे ते आश्री णोआ० आत्मारंभी नथी, णोप० परारंभी नथी, तदुभयारंभी नथी जा० यावत् अ० अनारंभी ( सर्व आरंभ रहित ) छे अने अ० पडिलेहणादि उपयोग रहित अ- सावधानपणे करे, ते आश्री आत्मारंभी परारंभी अने तदुभयारंभी छे; पण अणारंभी नथी. यथा पुढवी आउकाए, तेउवाउ वणस्सइ; तस्सणं पडिलेहणा पमत्तो छण्हपि विराहणा होइ. तथा सवो पमत्तो जोगे सम- णस्सउ आरंभि. ए न्याये अशुभ योग तेज आरंभनां कारण जाणवां. त० त्यां जे बे पक्षमां अ० असंजति छे ते अ० अवृत आश्री आ०आत्मा- रंभी छे जा० यावत् णो० अणारंभी नथी. से० ते कारणे गो० हे गौतम! ए० एम कह्युं. अ० केटलाएक जीव आरंभ आदि जा० यावत् अणा० अणारंभी छे, एटला सुधी केहेवा.

हवे आत्मारंभादिकपणुं तेज नरकादि चोवीस दंडके कहेछे. णे० नारकी भं० हे भगवान! किं० शुं आ० आत्मारंभी छे? प० परारंभी छे? त० तदुभयारंभी छे? के अ० अणारंभी छे? इतिप्रश्न. उत्तर. गो०

हे गौतम ! ण० नारकी आ० आत्मारंभी छे, परारंभी छे जा० यावत् तदुभयारंभी छे, पण णो० अणारंभी नथी. से० ते शा अर्थे जं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? णे० नारकी जा० यावत् णो० अणारंभी नथी? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० जेने वृत नथी तेने अवृति कहीये. ते आश्री आत्मारंभी आदि त्रणे छे पण अणारंभी नथी. से० ते कारणे जा० यावत् जे वृतवंत होय ते अणारंभी होय, अने जे अवृतवंत होय ते णो० अनारंभी न होय. इत्यर्थः ए० एम जा० यावत् असुरकुमार आदि पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक सुधी जाणवा. अवृतीपणाथी आरंभी आत्मारंभी, परारंभी अने तदुभयारंभी होय पण अनारंभी न होय एम केहेवुं. म० मनुष्यने विषे संजत, असंजत, प्रमत्त, अप्रमत्त ए चार भेद, पूर्वे सघला जीव आश्री कह्या तेम जाणवा. ण० पण एटलुं विशेष सि० सिद्ध चारे भागे रहित छे ते माटे सिद्ध विना केहेवा. वा० वाणव्यंतर आदि जा० यावत् वे० वैमानिक सुधी ज० जेम णे० नारकी कह्या तेमज जाणवा. एम सर्व अविरतीपणे साधर्मी छे. ते माटे आत्मारंभादि करे. हवे ते जीव स-लेशी अलेशी होय तेमाटे सलेशीनी पुछा करे छे. स० लेश्या सहित ज० जेम भ०ओधीक कह्या तेम जाणवुं. क० कृष्ण-लेशीने नी० नील-लेशीने अने का० कापोत-लेशीने ज० जेम भ० समचे जीव कह्या तेम जाणवा. ण० पण एटलुं विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त वर्जीने केहेवा. कृष्णादि त्रण अप्रशस्त भाव लेश्यामां संजतपणुं नथी, अने जे कह्युं ते अनेरी रीते द्रव्यलेश्या आश्री जाणवुं. ते० तेजु-लेशीने प० पद्म-लेशीने सु० शुकल-लेशीने जेम ओघीक सामान्यसूत्रे जीव कह्या तेम कहेवा. ण० पण एटलुं विशेष सि० सिद्ध नही. ( सिद्ध लेश्यारहित छे ते माटे ).

भावार्थः—हवे जुओ ! अहीयां कह्युं के, कृष्ण, नील अने कापोत लेशीमां छठुं सातमुं प्रमत्त अप्रमत्त गुणठाणुं नथी. संजमनो अभाव (नाकारो) कह्यो. वली कृष्णादिक त्रण माठी लेश्यामां, सूत्रनी टीकामां अने दोभलसागरकृत टबामां कह्युं छे के, कषायकुशील-नियंठादिकमां छ लेश्या कही छे ते द्रव्ये जाणवी. ए न्याये साधुजीमां द्रव्ये छ लेश्या

अने भावे त्रण भली लेश्या जाणवी. वली साधुभगवंतमां भावे छ लेश्या कहे तेने पुछीए छीए के, क्रीया अने कर्म द्रव्य-लेश्याथी लागे के भाव-लेश्याथी लागे? ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, क्रिया अने कर्म द्रव्यलेश्याथी न लागे पण भाव लेश्याथी लागे. वली क्रिया आश्री भाव लेश्याना प्रश्न कर्या त्यां पण साधुजीमां त्रण भली लेश्या कही छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक १ ले उद्देशे बीजे. ते पाठः—

मणुस्साणं भंते! सव्वे समकिरिया? गो०! णोइणट्ठे समट्ठे. सेकेणट्ठेण भंते? गो०! मणुस्सा तिविहा पं० तं० सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी समामिच्छादिट्ठी. तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पं०तं० संजयाय असंजयाय संजयासंजयाय. तत्थणं जेते संजया तेदुविहा पं०तं० सरागसंजयाय वीयरागसंजयाय. तत्थणं जेते वीयरागसंजया तेणं अकिरिया. तत्थणं जेते सरागसंजया ते दुविहा पं०तं० पमत्तसंजयाय अप्पमत्तसंजयाय. तत्थणं जेते अप्पमत्तसंजया तेसिणं एगा मायवत्तिया-किरियाकज्जइ. तत्थणं जेते पमत्तसंजया तेसिणं दोकिरियाओ कज्जंति तं० आरंभियाय मायावत्तियाय. तत्थणं जेते संजयासंजयाय तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति आरंभिया परिग० मायावत्तिया. असंजयाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति. मिच्छादिट्ठीणं पंच समामिच्छदिट्ठीणं पंच. वाणमंतरा जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा णवरं वेयणाए णाणत्तं माई-मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणत्तरा अमाइ-स्सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणत्तरा भाणियव्वा. जोतिस वेमाणियाय. सलेसाणं भंते! णेरइया सव्वे समहारगा? उहियाणं सलेसाणं सुक्कले-

स्साणं एतेसिणं तिएहं इक्कोगमो कन्हलेसं नीललेसाणंपि एक्कोगमो णवरं वेयणाए माइ-मिच्छदिठी उववणगाय अ-माइ सम्मदिठी उववणगाय ण जाणियव्वा मणुस्सा किरि-यासु सराग वीयरागं अप्पमत्ता प्पमत्ताण जाणियव्वा का-उलेसाणवि एमेवगमो णवरं णेरइए जहा उहिए दंमए तहा जाणियव्वा तेउलेस्सा पम्मलेस्सा जस्स अत्थि जहा उहित्त दंमउ तहा जाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीय-रागा ण जाणियव्वा.

अर्थः—म० मनुष्य नं० हे नगवान ! स० सघला सम० सरखा क्रियावंत छे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गोतम ! णो० ए अर्थ स-मर्थ नथी. युक्त नथी. से० ते शामाटे नं० हे नगवान ! एम कह्युं ? गो० हे गौतम ! म० मनुष्यना ति० त्रण नेद पं० कह्या, तं ते कहेछेः-स० सम्यक्दृष्टि, मि० मिथ्यादृष्टि अने स० समामिथ्यादृष्टि. त० त्यां पूर्वोक्त त्रण पक्षमां जे स० समकिति छे ते० तेना ति० त्रण नेद पं० कह्या, तं० ते कहेछेः-सं० संयति सर्वविरती प्रमत्त आदि अयोगी गुण-ठाणे वर्ते ते. अ० असंयति केवल सम्यक्दृष्टि जे चतुर्थ गुणठाणे वर्ते ते. सं० संयतासंयति श्रावक देसविरती पांचमे गुणठाणे वर्ते ते. त० त्यां पूर्वोक्त त्रण पक्षमां जे सं० संजति, तेना दु० बे नेद प० कह्या, तं० ते कहेछेः-स० जेना कषाय क्षय थया नथी अथवा उपशम्या नथी तेने सरागसंयति कहीये. वी० जेणे कषाय उपशमाव्या अथवा खपाव्या होय तेने वीतरागसंयति कहीये. त० त्यां पूर्वोक्त बे पक्षमां ज० जे वी० वीत-रागसंयमी ते० तेमने वीतरागपणे करी आरंन्नादिकनो अन्नाव छे ते माटे अ० अक्रिय छे. त० ते पूर्वोक्त बेमां स० जे. सरागसंयमी, तेना दु० बे नेद पं० कह्या तं० ते कहेछेः-प्प० प्रमत्त-संयति छठ्ठ गुणठाणे वर्ते ते. अप्प० अप्रमत्तसंयति सातमा गुणठाणाथी दसमें गुणठाणे वर्ते ते. त० त्यां बे पक्षमां अप्प० अप्रमत्तसंयति सातमे गुणठाणे वर्ते ते० ते कदा-

चित उत्साह राखवा निमित्ते प्रवर्ते तो तेने ए० एक मा० मायावतिया क्रिया लागे ( कषाय क्षीण थया नथी ते माटे. ) त० त्यां पूर्वोक्त बे पक्षमां जे प० प्रमत-संयति छे ते० तेने दो० बे क्रिया लागे, तं० ते कहेछेः-आ० सर्व प्रमत्तयोग आरंभरुप छे ते माटे आरंभनी क्रिया लागे. मा० अक्षीण कषायपणाथी मायाप्रत्ययी क्रिया लागे. त० त्यां पेहेला सूत्रने अंतरे कह्युं के त्रण पक्षमां देसविरतीना धणी पांचमे गुणठाणे वर्ते ते० तेने आ० पेहेली त्रण आरंभनी, परिग्रहनी अने मायाप्रत्ययनी क्रिया लागे. अ० असंयति केवल सम्यक्दृष्टि चोथे गुणठाणे होय तेने मिथ्यादर्शनप्रत्ययनी टाली च० चार क्रिया लागे. मि० मिथ्यादृष्टिने आरंभनी आदि पं० पांच क्रिया लागे. स० सम्यक्मिथ्यादृष्टि जे त्रीजे गुणठाणे छे तेने पण पांच क्रिया लागे. वा० वाणव्यंतर, ज्योतिष; अने वैमानिक ज० जेम अ० असुरकुमार कह्या तेम जाणवा. त्यां शरीरनुं अल्पपणुं तथा बहुत्वपणुं पोतपोतानी अवगाहनाने अनुसारे जाणवुं. ण० पण एटलुं विशेष वे० ज्योतिष वैमानिकने विषे ए केहेवुं. वे० वेदना आश्री मा० माया-मिथ्यादृष्टिपणे उ० उपन्या तेने अ० अल्प वेदना शातावेदनी आश्री जाणवी. अ० अमाइ-सम्यक्दृष्टिपणे उपजे तेने म० शातावेदनी अधिकतर होय(उत्कृष्ट सम्यक्ज्ञान माटे).जो० ज्योतिष, अने वे० वैमानिकने विषे असुरकुमारथी विशेष जाणवुं.

स० लेश्या सहित जे नारकी प्रमुख. जीव ते भं० हे भगवान ! णे० नारकी स० सघलानो सम० एक सरखो आहार छे ? उं० समचय जीवनो पुछवो. स० लेश्या सहितने सु० शुक्ल-लेशीने ए० एनो एक सरखो गमो (पाठ) जाणवो. क० कृष्ण-लेशी नी० नील-लेशी ए बेहुनो पण एक सरखो पाठ जाणवो. ण० एटलुं विशेष वे० वेदनाने विषे मा० मायामिथ्यादृष्टिपणे उपन्या तेने माहावेदना होय, उत्कृष्ट स्थिति प्रत्ये पामे, त्यां मोटी वेदना संभवे; अने अमाइसम्यक्दृष्टिपणे उपन्या तेने अल्प वेदना होय इत्यादिक केहेवुं. म० मनुष्य पदे कि० क्रिया सूत्रने विषे अधिक दंडके सराग, वितराग, प्रमत्त, अप्रमत्त कह्या छे तेम केहेवा.

कृष्ण अने नीले-लेश्याने उदये संयमना अन्नावथी कोपात-लेश्यानो दंरूक पण नील-लेश्याना दंरूकनी परे केहेवो. ण० एटलुं विशेष णे० नारकीने ज० जेम ठं० उंघीक दंरूक कह्यो तेम केहेवा. जेम नेरइयाणं डुविहा पं० तं० सन्नीन्नूयाय असन्नीन्नूयाय. तिर्यंचजीव पेहेली पृथ्विए उपजवेकरी कापोत-लेश्यानो शंन्नव छे. ते० तेजु-लेश्या प० पद्म-लेश्या ज० जे जीवने होय ते आश्रीने ज० जेम उं० उंघीक दं० दंरूक कह्यो तेम ते बेउनो केहेवो. ते लेश्या जेमछे तेम कहे छेः– नारकी, विगलेंडि, तेउ अने वाउने पेहेली त्रण लेश्या होय; अने न्नवनपति, पृथ्वि, अप, वनस्पति अने व्यंतरने पेहेली चार लेश्या होय. पंचेंडितिर्यंचने छ लेश्या होय. ज्योतिषने एक तेजु-लेश्याज होय. वैमानिकने छेली प्रशस्त लेश्या होय. ण० पण एटलुं विशेष म० केवल उंघोक दंरूकने विषे मनुष्य स० सरागी वीतरागी विशेषपणे कह्या ते इहां न केहेवा. कारणके तेजु पद्म-लेश्याने विषे वीतरागपणानो अन्नाव छे. फक्त शुक्ल-लेश्याने विषेज वीतरागपणानो संन्नव छे तेथी. ॥ १ए ॥

न्नावार्थः—हवे जुउ ! इहां एम कह्युं के, कृष्ण, नील अने कापोत-लेशीमां छठुं प्रमत्त तथा सातमुं अप्रमत्त गुणठाणुं, सरागी-संजम तथा वीतरागीसंजम, ए चार प्रकारनो संजम नथी. संजमनो अन्नाव (नाकारो) कह्यो. एन्याये साधुजीमां न्नावे त्रण लेश्या न्नलीज होय. वली विन्नगवती शतक ए में उद्देशे ३१ में असोचाकेवलीना अधिकारमां, विन्नंग-अज्ञान प्रत्ये छोमीने अवधज्ञान चारित्र पमिवर्जे, तेमां त्रण न्नली लेश्या कही; तथा शतक ३० में उद्देशे ५ में पण लेश्या त्रण न्नलीज कही; तथा ठाणायांग ठाणे त्रीजे उद्देशे बीजे पण लेश्या त्रण कही. इत्यादिक अनेक सूत्रमां साधुजीमां लेश्या त्रण कही छे. छतां तेरापंथी, साधुमां छ लेश्या कहे छे, तेमने पुछीए के, साधुजी धर्मी के अधर्मी ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, साधुजीतो धर्मी छे अधर्मी नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय ! तमे साधुजीमां न्नावे छ लेश्या केम कहोछो ? कारणके कृष्णादिक त्रण लेश्याने तो अधर्म-लेश्या कही छे; अने तेजु, पद्म ने

शुक्ल ए त्रणने धर्म-लेश्या कही छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अ०३४में ते पाठः-

कन्हा नीला काओ तिण्णिवि एयाओ अहम्म लेसाओ एयाहिं तिण्हिवि जीवा दुग्गइ ओववज्जइ ॥ ५६ ॥ तेउ पम्हा सुक्का तिण्णिवि एयाओ धम्म लेसाओ एयाहिं तिण्हिवि जीवा सुग्गइं उववज्जइ ॥ ५७ ॥

अर्थः—क० कृष्ण नी० नील, अने का० कापोत, ए ति० त्रण अ० अधर्म ले० लेश्या छे. ए० ए ति० त्रणे जी० जीवने दु० दुर्गति उ० उपजावे. ते० तेजु प० पद्म, अने सु० शुक्ल ति० ए त्रण ध० धर्म ले० लेश्या छे. ए० ए ति० त्रणे जी० जीवने सु०शुद्ध गति उ० उपजावे.

भावार्थः—हवे जुओ! ए त्रण अधर्म-लेश्या कही. ए अधर्म-लेश्याथी दुर्गतिमां उपजवुं कह्युं छे, अने साधुजीनेतो एकान्त-धर्मी कह्या छे. ते अधर्म पामे नहिं अने दुर्गतिमां पण जाय नहिं. तेथी साधुजीमां भावे त्रण भली लेश्या होय. हवे तमे कहोछो के, साधुजीमां त्रण अधर्म-लेश्या होय. ए तमारे लेखेतो साधुजीने धर्माधर्मी केहेवा जोइए. ज्ञान, दर्शन ने चारित्र आश्रीतो धर्मी, अने कृष्णादिक अधर्म-लेश्या आश्री अधर्मी, एम धर्माधर्मी साधुजी थया. पण वीतरागदेवेतो साधुजीने एकात-धर्मी कह्या छे. शाख सूत्र भगवती, उववाइ, सुयगडांग आदि अनेक सूत्रमां तथा कर्मग्रंथमां पण साधुजीमां लेश्या त्रण कही छेः. तेजु, पद्म अने शुक्ल. तमे आटला सूत्रनी वीतरागदेवनी वाणी उत्थापीने साधुभगवंतमां भावे छ लेश्या केम कहोछो ? वली भगवंतमां तो द्रव्ये पण त्रण भली लेश्याज होय, कारण के भगवंतना सर्व पुद्गल शुभ होय छे. शाख सूत्र उववाइजी. हवे जुओ ! भगवानना शरीरना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श सर्व शुभ होय अने कृष्णादिक त्रण माठी लेश्याना वर्णादिकतो माठा अशुभ कह्या छे अने भली त्रण लेश्याना शुभ कह्या छे. वली त्रण माठी भाव लेश्यानां लक्षण खोटां कह्यां छे अने

अथ छली लेश्यानां लक्षण चोखां कह्यां छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ३४. में ते पाठ.

कन्हा नीला काउ तेउ पम्मा तहेवय सुक्कालेसाय छठाओ नामाइंतु जहक्कम्मं. ३ जीमूत णिद्ध संकासा गवलरिठ्ठग संणिभा खंजंजण नयणनिभा कन्ह लेस्साओ वण्णओ ४ नीलासोग संकासा चासं पिच्छ समप्पभा वेरुलिय निद्ध संकासा निललेसाओ वण्णओ. ५ अयसी पुप्फ संकासा कोइल छद संनिभा पारेवयग्गिवनिभा काउ लेसाओ वण्णओ. ६ हिंगुलय धाव संकासा तरुणाइच्च संनिभा सुयतुंड पइव निभा तेउलेसाओ वण्णओ. ७ हरियाल भेद संकासा हलिद्दाभेय समप्पभा सणासण कुसुमनिभा पम्मलेसाओ वण्णओ. ८ संख कुंद संकासा खीर पुर समप्पभा रयतहार संकासा सुक्कलेसाओ वण्णओ. ९ जह कडुग तुंबग्गरसो निंबरसो कडुग्ग रोहिणी रसोवा एत्तोवि अणंतगुणो रसो कन्हाय नायव्वो. १० जह तिकडुग सरसो तिक्खो जह हत्थि-पिप्पलीएवा एतोवि अणंतगुणो रसोउ निलाए नायव्वो. ११ जह तरुण अंबग रसो तुंब कविठ्ठस्सवावि जारिसाओ एत्तोविअणंतगुणो रसोऊ काऊ नायव्वो. १२ जहपरिणयं ब्वगरसो पक्क कविठस्सवावि जारिसओ एतोवि अणंतगुणो रसोवि तेउ नायव्वो. १३ वरवारु-णियव रसो विविहाणव आसवाणं जारिसओ महुमेरगस्सव रसो एत्तो पम्माए परिएणं. १४ खजूर मुद्दिय रसो खीररसो खंडसक्कर रसोवा एत्तोवि अणंतगुणो रसोउ सुक्काए नायव्वो. १५ जहा गो मडस्स गंधो सुणग्ग

मक्खस्सव जहा अहि मक्खस्स एत्तोवि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसन्नाणं. १६ जहा सुरहि कुसुमगंधो गंधवासाण पिस्समाणाणं यत्तोवि अणंतगुणो लेस्साण पसन्न तिन्हंपि. १७ जह करगयस्स फासो गोजिन्नाएव सागपत्ताणं एत्तोवि अणंतगुणो लेस्साणं अप्पसन्नाणं. १८ जह बुरस्सव फासो णवणीयस्सव सिरीस कुसुमाणं एत्तोवि अणंतगुणो पसन्न लेसाण तिन्हंपि. १९ तिविहो नवविहोवा सत्तावीसइ विहे कासिउवा दुसहोतेयालोवा लेसाण होइ परिणामो. २० पंचासव प्पवत्तो तिहं अगुत्तोछसु अविरहोय तिव्वारंन्नो परिणत खुद्दो साहस्सिओनरो. २१ निद्धंधस परिणामो निस्संसो अजिइंदिओ एयजोग समाउत्तो कन्हलेसंतु परिणामो. २२ ईसा अमरिस अत्तवो अविज्जमया अहीरियया य गिद्धि पउसेय सढे पमत्ते रस लोलुए. २३ सायं गवेसएय आरंभि खुद्दो साहस्सिओनरो एयजोग समाउत्तो नीललेसंतु परिणमे. २४ वंकेवंक समायारे नियडिल्ले अणज्जुए पलिउंच गउहिए मिछदिठि अणारिए. २५ उप्फालग्ग दुक्कवाइय तेणायाविय मछरि एयजोग समाउत्तो काउलेसंतु परिणमे. २६ नीयावत्ति अचवले अमाई अकुतुहले विणीय विणए दंते जोगवं उवहाणवं. २७ प्रियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरु हिएसए एयजोग समाउत्तो तेउलेसंतु परिणमे. २८ पयणु कोह माणेय माया लोभेय पयणुए पसंत्तचित्त दंतप्पा जोगवं उवहाणवं २९ तहा पयणुवाइय उवसंते जिइंदिए एयजोग समाउत्तो पम्हलेसंतु परिणामे. ३० अदरुद्दाणि वज्जिता धम्म सुक्काइं

खायइ पसंत्त चित्तदंतप्पा समिए गुत्तेय गुत्तीसु ३१ सरागे वियरागेवा उवसंते जिइंदिए एयजोग समाउत्तो सुक्कले-संतु परिणमे. ३२ असंखेचा णोसप्पिणीणं उसप्पिणीणं जेसमया संखाइया लोगा लेसाणं हवइठाणाइं ३३ ॥

अर्थः—क० कृष्ण, नी० नील का० कापोत, ते० तेजु, प० पद्म अने सु० शुक्र-लेश्या छ० छठी, ना० लेश्यानां ए नाम ज० जेम छे तेम अनुक्रमे जाणवां. हवे लेश्याना वर्ण कहे छे. जी० मेघ (पाणी) सहित वादलां होय नि० चोपरूयां दीसे ते सं० सरीखी ग० पाडाना शींग सरीखी अ० आरीठा सं० सरीखी खं० गाडाना पइडाना ( उंगणना ) मेल सरखी अने न० आंखनी कीकी सरीखो क० कृष्ण-लेश्या वर्णथी काली जाणवी. (१) नी० नीलुं जेवुं अशोक वृक्ष होय ते सरीखी चा० नील (चास) पंखीनी पि० पीठी स० सरीखी प्रज्ञा कांती छे जेनी वे० वेरुर्य रत्न जेवुं नि० चोपरूयुं दीसे ते सं० सरीखो नी० नील-लेश्या वर्णथी नीली जाणवी. (२) अ० अलसीना पु० फुल सं० सरीखी को० कोयलनी छं० पांख सं० सरीखो पा० पारेवानी गो० कोट ( ग्रिवा ) नि० सरीखी का० कापोत-लेश्या व० वर्णथी कांइक राती जाणवी.(३) हिं० हिंगलो धा० कांइक धातु विशेष त० उगता आ० सुर्य सं० सरीखी सु० सुडानी तुं० चांच सरीखो अने प० दीवा नि० सरीखो ते० तेजु लेश्या व० वर्णथी राती जाणवी. (४) ह० हरतालना ज्ञे० कटका सं० सरीखो हा० हलदरना ज्ञ० कटका स० सरीखो स० सणनामे वनस्पतिना कु० फुल सरीखी प० पद्म-लेश्या व० वर्णथी पीली जाणवी. (५) सं० संख अं० अंकनामे रत्न अने कु० मचकंदनामा वनस्पतिनां फुल सरखो खी० दुधनी पू० धारा सरखी रु० रुआना पत्र हा०हार सं० सरीखी सु० शुक्ल-लेश्या व० वर्णथी उजली जाणवी. (६) हवे लेश्याना रसना स्वाद कहेछे. ज० जेवो क० करुवा तुं० तुंबडाना र० रसनो स्वाद निं० लींबडाना रसनो स्वाद क० करुवो रो० रोहणीनामा वनस्पतिना र०

कमवा रसनो स्वाद ए० एथी पण अ० अनंतगुणो र० रसनो स्वाद कि० कृष्ण-लेश्यानो अती कमवो ना० जाणवो.(१)ज० जेवो ति० त्रिकटु (सुंठ, मरिच,न पीपर)ना र०रसना स्वाद ति० तिखो ज० जेवो ह० हस्ति-पिपरी एटले गजपींपरनो स्वाद होय ए० एथी पण अ० अनंतगुणो र० अतीतीखो स्वाद नी० नील-लेश्यानो ना० जाणवो. (२) ज० जेवो काचा आंबाना र० रसनो स्वाद तु० तुंबरनामा वनस्पतिनुं काचुं फल जेवुं कसायलुं होय तेवो स्वाद क० काचा कोठना फलनो जा० जेवो स्वाद होय ए० एथी पण अनंतगुणो र० अती कषायलो स्वाद का० कापोत-लेश्यानो ना० जाणवो. (३) ज० जेवो प० पाका आंबाना र० रसनो स्वाद प० पाका क० कोठनो पण जा० जेवो स्वाद होय ए० एथी अनंत गुणो र० स्वाद कांइक खाटो कांइक मीठो ते० तेजु लेश्यानो जाणवो. (४) व० प्रधान वा० मद्यनो जेवो र० स्वाद होय वि० घणा प्रकारना आ० आसव ( घणा फुल प्रमुख सुगंध द्रव्यनो रस या सत्व ) म० माखीए नीपजाव्युं ते मध तथा महुडानो मद्य मे० तारूवृक्षनो निपन्यो मद्य ए० ए मद्यनो जेवो स्वाद होय ए०एथी प०अनंतगुणो रुडो स्वाद पद्मलेश्या-नो जाणवो. (५) ख० खजुरनो मु० द्राखनो खी० दुधनो खं० खांडनो अने स० साकरनो जेवो स्वाद होय अ० एथी अनंतगुणो मीठो स्वाद सु० शुक्ल-लेश्यानो ना० जाणवो. (६) हवे लेश्याना गंध कहे छेः—ज० जेवो गो० गायना मडानो गंध सु० कुतराना मडानो गंध अने ज० जेवो अ० सर्पना मडानो गंध पाकुंड होय ए० एथी अनंतगुणो भुंडो गंध ले० कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण अ० अप्रशस्त लेश्यानो जाणवो. ज० जेवी सु० सुगंध कु० केवडादिक फुलनी गंध ग० सुगंध-वासी पि० पीसतां वाटता होय त्यारे जेवी सुगंध होय ए० एथी अ० अनंतगुणी सुगंध तेजु, पद्म अने शुक्ल ए त्रण ले० प्रशस्त ( भली ) लेश्यानी होय. हवे लेश्याना फर्श कहे छेः—ज० जेवो क० करवतनो फा० फर्श असुंहालो होय गो० गाय बळधनी जि० जीभनो जेवो क-ठीन फर्श होय सा० सागरवृक्षना प० पांदडानो जेवो फर्श होय ए०

एथी पण अ० अनंतगुणो कठण फर्स ले० अ० ए त्रण अप्रशस्त-लेश्यानो (कृष्ण, नील अने कापोत-लेश्यानो) जाणवो. ज० जेम बुर-नामा वनस्पतिना फुलनो अति सुंहालो फा० फर्स न० माखणनो फर्स अने सि० सीरीषनामा फु० फुलनो जेवो फर्स होय ए० एथी, अनंत-गुणो सुंहालो फर्स प० प्रशस्त (भली) ले० लेश्या ति० त्रणेनो जाणवो. हवे लेश्याना प्रणाम कहे छेः—ति० त्रण प्रकारे ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो. न० जघन्यना त्रण प्रकारः-जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्टो, एम अकेक वर्गना त्रण त्रण भेद करतां नव थाय. स० एम सत्तावीस भेद पण थाय. इका० एकासी भेद पण थाय. दु० बसेने तेतालीस भेद पण लेश्या छना प्रणामना थाय. प० एटला प्रणाम देरेकना त्रण त्रण गुणा करतां थाय. हवे प्रथम लेश्यानां लक्षण कहे छेः—पं० पांच आश्रवनो प० सेवणहार ति० त्रण मन वचन कायाएकरी अ० अगुप्तो (मोकलो) छ० छकायने विषे अवृति (घातनो करणहार) ति० तीव्रपणे आरंभने प० प्रणामेकरी सहित खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० जीवघात क-रवाने विषे साहसीक नि० आ लोक परलोकना दुःखनी शंकार हित, जीव हणतां सुगर हित अ० अजीतेंद्रिय ए० ए पूर्वे कह्या ते जो० (मन, वचन, कायाना) जोगना पाप व्यापारेकरी स० सहित क०कृष्ण लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (१) हवे नीललेश्यानां लक्षण कहे छेः-इ० इर्षा (पर जीवना गुणनुं असहेवुं) अ० घणो कदाग्रही अ० तपरहित अ० भली विद्या रहित अ० अणाचारोने वर्ततां निर्लजपणुं गि० विषयनो लंपट प० द्वेषभाव सहित स० धूर्त प०आठ मदनो कर-णहार र० स्वादनो लो० लंपट सा० सातानो ग० गवेषणहार आ० आरंभनो करणहार खु० सर्व जीवने अहितकारी सा० अणविमास्या कार्यनो करणहार न० मनुष्य ए० एवा व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव नी० नील-लेश्याने प० प्रणामेकरी परीणमे. (२) हवे कापोत-लेश्यानां लक्षण कहे छेः-वं० वांको बोले, वांका कार्यनो करणहार. नि० निवड माया सहित उ० सरळपणा रहित प० पोतानो दोष ढांके उ०

कपटेकरी सहित मि० मिथ्यादृष्टि अ० अनार्थ उ० जे वचनथी पर-जीव ऊंचो ऊछले, माथे चाटको ऊठे तेवा वचननो बोलणहार डु० दुष्ट वचननो बोलणहार ते० ते चोरीनो करणहार म० अनेरानीसंपदा सही न शके ए० एवा जो० व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव का० कापोत-लेश्याने प्रणामेकरी परीणमे. (३) हवे तेजु-लेश्यानां लक्षण कहे छेः--नी० मन वचन कायाएकरी नीची वृत्ति ( मान रहित ) अ० चपलपणा रहित अ० माया रहित अ० कु० कुतुहल रहित वि० वनित होय वि० विनय करवाने विषे दं० इंद्रिनो दमणहार जो० स्वाध्यायादिकने व्यापारेकरी सहित होय, सिद्धान्त जाणतां पि० धर्म जेने वल्लभ छे द० धर्मने विषे निश्चल होय व० पापथी भी० बीहे हि० मोक्षनो वंछणहार ए० एवा धर्मना व्यापारेकरी सहित होय ते जीव ते० तेजु-लेश्याने प्रणामेकरी परिणमे. (४) हवे पद्म-लेश्यानां लक्षण कहे छेः--प० पातला ( थोडा ) छे जेने को० क्रोध, मान, माया अने लोभ, प० रागद्वेषथी उपशम्युं छे चि० चित्त जेनुं, द० दम्यो छे आत्मा जणे; जो० मन वचन कायाना जोग वसछे जेना, उ० सिद्धान्त जाणतां जे तप करवो जोइए ते तपवंत होय त० तेम प० थोडा वचननो बा० बोलणहार उ० उपशान्त थयो ( विशम्यो ) होय जि० जितेंद्रि ए० एवा जो० धर्मना व्यारेकरी स० सहित होय ते जीव प० पद्म-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (५) हवे शुक्ल-लेश्याना लक्षण कहे छेः--अ० आर्तध्यान अने रु० रुद्रध्यान व० वर्जे, ध० धर्मध्यान अने शुक्लध्यान झा० ध्यावे, प० रागद्वेषेकरी उपशम्युं छे चित्त जेनुं, दं० दम्यो छे आत्मा जेणे, स० पांच सुमतिवंत गु० त्रण गुप्तिने विषे गुप्तिवंत स० राग सहित, अथवा वी० वीतराग होय उ० रागद्वेष उपशमाव्या छे जेणे, जो० जीतेंद्रिय ए० एवा जो० गुणना व्यापारेकरी स० सहित होय ते जीव सु० शुक्ल-लेश्याने प० प्रणामेकरी परिणमे. (६) हवे लेश्यानां स्थानक कहे छेः-- अ० असंख्याती उ० उत्सर्पिणीना जेटला समय चडता उतरता आवे थाय तेना अने अ० असंख्याती अवसर्पिणीना जेटला

समय पडता चडता भावे थाय तेना जे० जेटला स० समय थाय तेट-
ला अथवा सं० संख्याता लोकना जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला
ले० तेटला लेश्याना ठा० स्थानक चढता पडता शुभ अशुभ ह० थाय.

भावार्थः—हवे जुओ ! त्रण लेश्यानो वर्ण अशुभ कह्यो, गंध माठ़ा
दुर्गंध कही, रस माठा कडवो कह्यो अने फर्स माठा खरखरो (कठोर)
कह्यो. एवा अशुभ वर्णादिक भगवंतमां तो होयज नही. माटे भगवं-
तमां द्रव्ये पण त्रण भलीज लेश्या होय. वली भावे त्रण लेश्यानां
लक्षण खोटां कह्यां, ते लक्षण साधुभगवंतमां होय नहि. जेथी भावे
त्रण भलीज लेश्या होय. निश्चेकरी भगवंतमां तो द्रव्ये अने भावे त्रण
भलीज लेश्या होय. शास्त्र सूत्र आचारांग श्रुतस्कंध बीजे. वास्ते भग-
वंतमां छ लेश्या कहे तेने एकान्त मिथ्यादृष्टि जाणवा. जो तमे भगवं-
तमां छ लेश्या कहो तो, प्रभुए छमासी तप कर्यां तथा अनार्य देसमां
विहार कर्यो त्यारे छ लेश्या अने आठ कर्म हतां के नहिं ? हे देवानु-
प्रीय ! अहियां लेश्या अने कर्मनुं शुं कारण छे. जे करणी कीधी तेनो
पक्ष लेवो. संजम-जीवीतव्य वंछ्यामां तमे पण धर्म कहोछो, अने प्रभुए संज-
मधारी (गोशालो साथे रेहेतो हतो तेने) पोताना शिष्यने अनुकंपा आणीने
बचाव्यो. ते संजम-जीवीतव्य वान्छयुं तेमां प्रभुने चुक्या केम कहोछो?
तेवारे तेरापंथी कहेछे के "साधुए लब्धि फोरववी नही, एवुं सूत्र भग-
वती शतक त्रीजे कह्युं छे, अने भगवंते लब्धि फोरवीने गोशालाने ब-
चाव्यो. ए अकरवायोग्य काम कर्युं, तेथी चुक्या कहीए छीए." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! त्यां तो मायाकपटाइ करी विक्रय-लब्धि फोरवी
अनेक रूप बनावे, ते आलोवे तथा प्रायछित ले तो आराधक थाय, अने
न आलोवे तथा प्रायछित न ले तो आराधक न थाय. ए विक्रय-लब्धि
फोरवे तेनुं प्रायछित कह्युं छे, पण भगवंते तो विक्रय-लब्धि फोरवी नथी.
शीतल-लेश्या फोरवीने गोशालाने बचाव्यो छे. ए जाणतां छतां मतना
कीधे मायाकपटाइ करी विक्रयनुं नाम छुपावी "भगवंते लब्धि फोरवी

तेथी चुक्का" एम जुठुं बोली बोधांने केम भरमावो छो? कारण के शी-
तल-लेश्या जीवदया निमित्ते फोरवे तेनुं प्रायछित कोइ अंगउपांगा दि
सूत्रमां कह्युं नथी. कह्युं होय तो बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एक लब्धिनुं प्रायछित कह्युं तेम सर्वे लब्धिनुं जाणवुं. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! लब्धितो अठावीस प्रकारनी कही छे. तेमां विक्रय-लब्धि फोरवे तेनुंतो प्रायछित कह्युं छे. अने तेजु-लेश्या करी अनेक जीवने क्रोधेकरी बाले ए पण प्रत्यक्ष प्रायछितनुं ठाम दीसे छे अने शास्त्रमां पण कह्युं छे; पण २८ लब्धिमां केवलज्ञाननी लब्धि, तीर्थंकर-पदवीनी लब्धि, गणधर-पदवीनी लब्धि, पुलाक-चारित्रनी लब्धि, अवध मनपर्यव केवलज्ञाननी लब्धि, चौदपूर्वनी लब्धि इत्यादिक लब्धिनुं प्रायछित होय तो, शीतल-लेश्या जीवदया माटे फोरवी तेनुं प्रायछित होय पण जेम एटली लब्धिनुं प्रायछित नथी तेम शीतल-लेश्यानुं पण प्रायछित नथी. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "शीतल-लेश्या अने तेजु-लेश्या ए बन्ने भेली थइ तेवारे उनुं थंडुं पाणी भेलुं कर्याथी जीवनी हिंसा थाय, तेम बन्ने लेश्या भेली थइ तेथी जीवनी हिंसा थइ. वली जेम अग्निना भर्या चुलामां काचुं पाणी ढोले तेथी तेउकाय ने अपकाय ए बन्ने कायनी हिंसा थाय तेम तेजु-लेश्या तो अग्नि समान अने शीतल-लेश्या पाणी समान, ए बेउ लेश्या भेली थइ तेथी बन्नेना जीव मुआ. ए हिंसानुं पाप प्रभुने लाग्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! ए कुमत तमे क्यांथी काढ्या? सूत्रमां तो लेश्यांना अचित्त पुद्गल कह्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे दसमे. ते पाठः—

अचित्तावि पोग्गलाउ भासेइ उद्योवेइ तवेइ पभासेइ? हंता अत्थि. कयरे भंते! अचित्तावि पोग्गलाउ भासेइ जाव पभासेइ? कालोदाइ! कुधस्स अणगारस्स तेयलेस्सा निसद्धा समाणी दुरंगत्ता दुरं निपतइ देसंगत्ता देसं निपतइ जेहिं २ चणं सानिपत्तइ तहिं २ चणंते अचित्ता

पोग्गलाउ नासइ जाव पन्नासइ एएणं कालोदाइ ते अ-
चित्तावि पोग्गलाउ नासेइ ॥

अर्थः—अ० अचित पण पो० पुद्गल जा० प्रकाश करे ? वस्तु प्रत्ये उ० उद्योत करे ? त० तपे ? आताप करे ? प० प्रकाश करे, ? वस्तुने उजवाले ? इतिप्रश्न. हं० हा वच्छ अ० उद्योत करे छे. क० कया जं० हे जगवान ! अ० अचित्त पण पो० पुद्गल जा० प्रकाश करे जा० यावत् प० उजवाले ? का० हे कालोदाइ ! कु० कोप्यो अ० जे अणगार, ते संबंधि ते० तेजुलेश्या नि० नीकलीथकी (तपस्वी अणगारना शरीरथी नीकलीथकी ) तेजुलेश्या जवालारुप ङु० दुरगामनी छती दु० वेगली नि० पके, जइने बोले, दारु पुंजवत् दे० देशने विषे जाय दे० देशमां जइने पके जे० जे जे स्थानकने विषे, दुर देशने विषे निकट प्रदेशमां पके त० त्यां त्यां अ० अचित्त पो० पुद्गल जा० प्रकाश करे जा० यावत् प० उजवालो करे. ए० ए का० हे कालोदाइ ! ते० ते अ० अचित्त पो० पुद्गल पण जा० प्रकाश करे.

जावार्थः—हे देवानुप्रीय ! इहांतो लेश्या शब्दे श्री वीतरागदेवे अचित्त पुद्गल कह्या छे. ए तमे सूत्र वांचीने जाणतां छतां जुठ बोलीने, मतना लीधे लोकोने बेहेकावीने अनंत संसार केम वधारो छो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " लेश्याना अचित्त पुद्गल छे, पण जेम कपकुं, कांटो प्रमुख अचित्त पुद्गल फेंकवाथी वायुकायनी हिंसा थाय, तेम जगवंते शीतललेश्या फेंकी तेथी वायुकायनी हिंसा थयानुं पाप लाग्युं. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! शीतललेश्याना पुद्गलतो शुक्ष्म छे तेथी वायुकायनी हिंसा थाय नहि. जो सूत्रमां कह्युं होय तो काढी बतावो. वली शीतललेश्याना पुद्गलथी हिंसा थइ मानो तो मनवचनना जोग, स्वासोस्वास, ए पण पुद्गल छे. साधुजीने मनना पुद्गल घणी दुर जाय अने वचनजोग ( जाषा ) ना पुद्गल घणी दुर जाय, बीजाना कानोमां जाय, ए तमारे लेखेतो कोइ पण साधुमां साधपणुं नथी. ए लेखे तो

साधपणुं लेती वेला सावज्जजोगना त्याग पण ऊतावला न करवा, कारण के जाषाना पुद्गल बाहार नीकली जाय अने वाउकायनी हिंसा थाय. माटे साधपणुं लइने स्वासोस्वास पण लेवो नहि, मन-जोग पण स्थीर राखवो. वचन पण लवलेश मात्र न बोलवुं, मौन राखवुं अने पादोगमन संथारो करीने हाथ पग पण हलाववा नहीं त्यारे साधपणुं कहीये. ए केम मले ? तमे शीतल-लेश्याना शुक्ष्म पुद्गलथी जगवंतने वायरानी हिंसा लागी कहोछो, पण शीतल-लेश्याथी वायुकायनी हिंसा थाय अने शीतल-लेश्यानी लब्धि फोरव्यां प्रायछित आवे, एवुं सूत्रमां कोइ ठेकाणे कह्युं नथी. एकान्त जुठुं आल जगवंत उपर शामाटे द्योछो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, जो ऊगार्यामां लाज होय तो केवलज्ञान ऊपन्या पछी समोसरणमां बलता बे साधुने केम न ऊगार्या ? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! ते साधु उपर प्रजुनी अनंती जाव दया हती, पण तेमना आउखानुं निमित्त कारण आवी मल्युं, तेथी प्रजु शुं करे? तमे, लेश्या-लब्धि फोरव्याथी दोष लागे ते माटे न ऊगार्या एम कहोछो, ए तमारुं केहेवुं छल पूर्वक छे; कारण के जो एमनुं आउखुं होततो, जगवंततो केवलज्ञाने करी अनंत कालनी वात जाणता हता, त्यारे विहार केम न कराव्यो. विहार करावतां तो दोष नहोतो लागतो ? पण एमनुं आउखुं आवी रह्युं, जवितव्यता बलीष्ट, तेथी जगवंत शुं करे. क्रोड़ तीर्थंकर जेला थाय तोपण कोइ जीवनुं आउखुं वधारवा समर्थ नथी. छद्मस्थ तो व्यवहार साचवे अने केवलज्ञानी तो निरर्थक ऊद्यम न करे. तोपण जगवंते तो बचाववानो व्यवहार राखवाजणी आगलथी वर्ज्या हता, पण इहां आउखुं पुरुं थवानो समय हतो ते कोण टाली शके ? हे देवानुप्रीय ! बचाव्यामां पाप छे तेथी न बचाव्या एम कहो-छो, पण पोते चोत्रीस अतिशय पांत्रीस वाणीकरी सहित छे, पचीस जोजन प्रमाण सात इत थाय नाहिं, मृगीमारी रोग थाय नाहिं अने वेरजाव व्यापे नाहिं, ते अतिशय क्यां गया ? गोशालाने वेरजाव केम व्यापो ? बे साधुनी घात समोसरणमां केम कीधी ते कहो. तेवारे तेरा

पंथी कहेछेके, "होणहार पदार्थ अछेरानुत वात छे ते केम टले"? त्यारे एम कहोछो के जीव उगार्यां पाप लागे ते माटे न उगार्या. एतो अतिशयथकां समोसरणमां बे साधुनो [illegible]
[illegible]
छद्मस्थ अवस्थामां तो प्रभुजीने शीतल लेश्या कर्तव्यरुप हती अने केवली थया बाद सत्तारुपे तो खरी पण करतव्यरुप न होय. तेथी बे साधुओने बचाववारुप कार्य केम बने ? इहां कोइ एम आशंका करे के, शीतल-लेश्या सत्तापणे छतां कर्तव्यरुप कार्ये केम न प्रवर्त्ते, तेनुं समाधानः-जेम सूत्रजीश्री भगवतीजीने विषे पांच देवना अधिकारे कह्युं छे के, देवाधिदेवने अनंत रुप वैक्रय करवानी शक्ति छे, परंतु करे नहिं ने करशे पण नहिं. तद्वत् शीतल-लेश्या पण शक्तिरुपे संभवे, परं व्यक्तिरुपे थइ कार्य साधे नहिं एवो नियम छे. जो तेरापंथीओने एकान्त एवोज हठवाद होय के केवली जे कार्य करे तेमांतो धर्म, अने जे कार्य न करे तेमां पाप, त्यारे तो देवगुरुने वंदणा नमस्कार करवामां पण पाप मानवुं पडशे; कारणके केवली भगवंत परस्पर वंदणा नमस्कार पण करता नथी वास्ते ए सर्व कूतर्क छे. वास्ते भवभीरुताए हरेक कार्य परत्वे अधिकारीने ओलखवो जोइए. कदापी तेरापंथी एवी तर्क करशे के, ए तो तमे श्री वीतरागभगवान बाबतनुं समाधान लख्युं, पण समोवसरणमां तो श्री गौतमादि लब्धि–संपन्न सरागी साधु घणाए हता तेमणे बे साधुओने केम न बचाव्या ? तेनो उत्तरः-हे देवानुप्रीय ! श्री गौतमादि गणधर वा सामान्य साधुओने शीतल-लेश्या हती एवुं कया सूत्रना मूळ पाठना आधारथी कहोछो ते बतावचो पडशे.

वली तेरापंथी कहेछेके "भगवंते गोशालाने तलनो छोड बताव्यो. एक सींगलीमां सात तल बताव्या. पछी गोशाले तलनो छोड उखेड्यो, एक सींगलीमांथी सात तल काढ्या. ए भगवंतना वचनथी हिंसा थइ. ए पश्चात कर्म दोष भगवंतने लाग्यो." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एम भगवंतने दोष लाग्यो कहोछो, ए लेखेतो तमे नित्य आहारादिक ग्रहस्थी कनेथी मागो छो तथा मार्ग पुछोछो, त्यारे ग्रहस्थी बतावे

मोंढे बोले तेथी असंख्याता वायुकायना जीव हणाय. ए तमारे कारणे नित्य अनेक उघाडे मोंढे बोले, तथा तमे गाममां जाओ त्यारे कुतरां उघाडे मोंढे जसे, ए हिंसानो दोष तमने लागशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अमेतो आहार लेवाना अने मार्ग पुछवाना कामी छीए. उघाडे मोंढे बोलाववाना कामी नथी. तेने भलो जाणता नथी. तेथी अमने पाप न लागे. " त्यारे हे देवानुप्रीय! भगवंते पण ज्ञानमां देख्या तेम भाख्या. तीलनो छोड उखेडाववाना तथा तील कढाववाना कामी नहोता. तेथी भगवंतने दोष लगार मात्र लाग्यो नथी. तमे प्रभुने एम पाप लाग्युं जाणो तो, तमे अनेक ग्रहस्थीने बोलावो छो. नित्य उघाडे मोंढे बोले छे. ए संजम केवी रीते रहे ते कहो. ए भगवंत उपर अछतां आल केम द्यो छो? तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के " एटलां काम सूत्रमां साधुने करवां वर्ज्यां छे. करेतो प्रायछित आवे, ते काम प्रभुए छद्मस्थपणामां कीधां छे. साधुए निमित्त भाखवुं नहि, अने भगवंते भाख्युं छे. गोशालाने तलनो छोड बताव्यो. एक तलनी सींगलीमां सात तल बताव्या. कुपात्रने विद्या देवी नहिं, अने भगवंते दीधी. गोशालाने शीखव्यो, प्रवर्ज्यां दीधी, बहु श्रुत कर्यो एवो पाठ छे. तेजु-लेश्या उपजवानी गोशालाने विधि बतावी. शीतल-लेश्यानी लब्धि फोरवी गोशालाने बचाव्यो. अनार्य देशमां विहार कीधो. ७ ए सात काम साधुने करवां सूत्रमां वर्ज्यां छे. ते भगवंते कर्यां ते माटे भगवंतने पाप लाग्युं अने चुक्या, एम कहीए छीए. " तेनो उत्तरः-हे देवानुप्रीय! ए सात बोल सामान्य साधुने (छद्मस्थ सूत्रव्यवहारना धणीने) वर्ज्यां छे, अने भगवंत तो आगमव्यवहारना धणी छे. व्यवहार पांच प्रकारना कह्या छे. शाख सूत्र व्यवहार तथा भगवती शतक ८ मे, उद्देशे ८ मे. ते पाठः—

कइ विहेणं भंते! विवहारे पन्नत्ता? गोयमा! पंच विहे विवहारे पन्नत्ता तंजहाः-आगमे १ सुए २ आणा ३ धारणा४ जिए ५. जहासे तत्थ आगमेसिया आगमेणं ववहारं पठ-

वेद्या. णोयसे तऋ आगमेसिया जहा से तऋ सुएसिया सु-
एणं विवहारेणं पठवेद्या. णोयसे तऋ सुएसिया जहा से तऋ
आणासिया आणाए ववहारं पठवेद्या. णोयसे तऋ आणा-
सिया जहासे तऋ धारणासिया धारणाए ववहारं पठ-
वेद्या. णोयसे तऋ धारणासिया जहा से तऋ जिएसिया
जिएणं ववहारं पठवेद्या. इच्चे एयाहिं पंचहिं ववहारं पठ-
वेद्या तं आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं
जहाजहासे आगमे सुए आणाए धारणा जीय तहातहा
ववहारं पठवेद्या. से किं माहु नंते! आगमवलिया समणा
निगंथा इच्चेइया पंचविह ववहारं जया २ जहिं २ तया २
तहिं अणिस्सि उवसियं सम्मं ववहारमाणे समणे
निग्गंथे आणाए आराहए नवइ ? हंता नवइ.

अर्थः—क० केटले वि० नेदे नं० हे नगवान ! वि० व्यवहार पं० कह्यो ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पं० पांच प्रकारे वि० व्यवहार पं० कह्यो तं० ते कहे छेः-त्यां व्यवहरीए जीवादिके करीने ते व्यवहार. साधुने प्रवृति निवृत्तिरुप ते व्यवहार. तेनां कारणपणे जे ज्ञान विशेष ते पण व्यवहार कहीए. त्यां पेहेलो आ० आगमव्यवहार ते आगम ज्ञानथी जाणीए. जेणेकरी पदार्थने जाणीये ते आगम. सु० सांन्नलीए ते श्रुत. २ आ० आदेश करी दीजे ते आज्ञा. ३ धा० धारीए ते धारणा. ४ अने जि० जीत ५ ( आचार ). त्यां पेहेलो जे आगमव्यवहार ते केवलज्ञानी १, मनपर्यवज्ञानी २, अवधज्ञानी ३, चौद पूर्वधर ४, दस पूर्वधर ५, अने नव पूर्वधर ६. एनो व्यवहार ठ प्रकारनो छे. त्यां पहेलो केवलीना ग्रहणथकी प्रथम आलोवणा केवली पासे लेवी. तेना अन्नावे मनपर्यवज्ञानी पासे लेवी. एम आगलाना अन्नावे पाठला पाठलाकने आलोवणा लेवी. त्यां केवली प्रमुख आगम-

व्यवहारी समस्त अतिचार पोतेज जाणे. ते पासे गयाथी आगमव्यवहारी आलोवणहारने कहे " सघलो अतिचार कहो. " तेवारे ते जाणतोथको पोतानो दोष मायाएकरी गोपवे तो तेने प्रायश्चित न आपे, अने एवुं कहे के, अनेरे ठामे जइने शोध करो; अने जेने दोष याद न आवे तथा जे मायाथकी न गोपवे तेने केवलज्ञानना धरणहार दुषण विचारीने प्रायश्चित दे. पण कपटीने, फोकट जासे एम जाणीने प्रायश्चित न दे. इहां चौद पूर्वधर यद्यपि परोक्षज्ञानी छे तोपण उपयोग दीधे छते केवली कहे तेटलुं कही शके. हवे इहां कोइ कहेशे के " आगमव्यवहारी जाणे तो तेने कहीये के, मुजने आलोवणा द्यो. तेवारे अतिचार पोते कहीने पोते आलोचना आपे तेमां शी हरकत छे ? के आलोवणहारना मोंढाथकी केहेवरावे. " एम कहे तेनो उत्तर. ए आलोवणामां घणा गुण छे. सम्यक् आराधना थाय अने आलोवणहारने उत्साह वधे, मान छोडी पोतानी आत्माना हित तणी रहस्य प्रगट करे छे. ए वात माहा दोहीली छे. इत्यादिक कारणे गुरु आलोवणहारनाज मोंढाथी आलोवणा करावे अने ते समस्त प्रकारे निःशल्य थइ गुरु जे प्रायश्चित दे, ते हर्षीत थको अंगीकार करे. एम करतोथको निर्वाणपद पामे. १

सु० हवे श्रुतव्यवहार कहेछेः–आचार, कल्प, निषिथ आदि जेने अगीयार अंग तथा नव पूर्व सुधी जाणपणुं होय तेने सुत्रव्यवहारी कहीये. ते सुत्रव्यवहारी आलोवणा लेणहारना अभिप्राय जाणवा माटे त्रण वार दुषण केहेवरावे. एक वारने कह्ये श्रुतव्यवहारी कदाच एम जाणी न शके के, ए कुंभे मने आलोवणा आलोवे छे के साचे मने. त्रणे वार एक सरखुं कहे तेने तो आलोवणा दे, पण कपटथी फेरफार कहे तेने पेहेलां तो जे फेरफार कह्यो होय तेनुं प्रायश्चित दे, पछी पूर्व पापनी आलोवणा दे. २ आ० आज्ञाव्यवहार ते जे बेहु आचार्य सूत्रार्थना जाणवाथी माहा गीतार्थ छे, पण जंघाबल क्षीणपणाथी विहार करी न शके. अलग देशान्तरे रह्या छे. मांहोमांही मली न शके अने तेमांथी कोइकने प्रायश्चित लेवुं होय, तेवारे ते आचार्य गीतार्थ शिष्यना अज्ञा-

वथी, धारणा कुशल अगीतार्थ साधु वा शिष्यने सिद्धान्तनी जाषाए गुढार्थ अतिचार आसेवना कही बीजा आचार्य कने मुंके. हवे ते आचार्य तेनो अपराध सांजली द्रव्यादि चार सहनन धृति बलादिक विचारी पोते त्यां जाय अथवा पूर्वनी विधिए गीतार्थ शिष्यने मुंके, अने तेने अजावे जे आव्यो छे तेनेज अतिचारनी आलोवणा कही मुंके, ए आणा व्यवहार. ३ धा० हवे धारणा व्यवहार कहे छेः—कोइक गीतार्थ संवेगी आचार्यें कोइक शिष्यादिकने कोइक अपराधने विषे द्रव्यादिक चार (द्रव्य-क्षेत्र-काल-जाव) जोइ,जे विशुद्धि दीधी होय ते शिष्य गुरुनी दीधेली विशुद्धि मनमांहे धरीने कोइकने तेवे अपराधे तेवीज विशुद्धि दे तो, एम देताने उधृतपद धरणरुप धारणाव्यवहार कहीये; अथवा धारणा ते एमः-कोइएक वैयावचनो करणहार शिष्य छे, पण ते समस्त छेद श्रुत देवाने योग्य नथी.तेवारे तेने आचार्य कृपाकरीने केटलांएक प्रायश्चितनां पद आगमथी उद्धरीने तेने कहे ने ते धरीने राखे, अने तेज पद मांहेथी आलोवणा आपे तेने पण धारणाव्यवहार कहीये. ४ जि० हवे जीतव्यवहार कहेछेः- जेम कोइक अपराधे पूर्वे साधु घणा तपेकरी शुद्धि करता, तेवोज अपराध उपन्ये छते वर्तमानकाले द्रव्यादि चार चिंतवी संघयण धृतिबलनी हानी जाणीने जे योग्य तपनो प्रकार (प्रायश्चित) दइए ते समयजाषाए जीतगीतार्थ कहीये, अथवा प्रायश्चित जे आचार्यना गच्छमां अधिको उठो सूत्र प्रवर्त्यो, अने घणे अनेरे गीतार्थे मान्यो होय ते रुढजीत कहीये. ५ ए पांच व्यवहारमां गमे ते व्यवहार सहित गीतार्थ होय तेनी पासेथी प्रायश्चित लइए; परंतु अगीतार्थकने लेतां दोष उपजे.

हवे आगमादिक-व्यवहारने विषे प्रवर्त्तवा माटे उत्सर्ग अपवाद कहेछेः-ज० जथा प्रकारे केवली आदिक अन्यत से० ते व्यवहार अथवा त० ते पांच व्यवहारमां त० ते प्रायश्चित दानादिक व्यवहार काल विषे आ० आगम केवली प्रमुख होयतो तेवेज आगमव्यवहार प्रायश्चित दानादिक प्रत्ये प० प्रवर्ते, पण शेषे करी न प्रवर्ते. आगम पण छ प्रकारे छे. तेमां केवलज्ञानमां अवबोधपणाथी विना कह्यां जाणे, ते माटे तेनुं

कहेलुं प्रायश्चित लेवुं; अने तेने अन्नावे मनपर्यवज्ञानी पासेथी लेवुं. एम पूर्ववत् आगला आगलाने अन्नावे पाछला पाछलाकने लेवुं. णो० नहिं से० ते त० तीहां आ० आगमव्यवहार होय तो ज० जथाप्रकारे से० ते त० तीहां श्रुत होय तेवे श्रुतेकरी व्यवहार प० प्रवर्ते. णो० नहिं से० ते त० तीहां ( ते अवसरे ) श्रुतव्यवहारी तो ज० जेम से० ते त० तीहां आ० आज्ञाव्यवहारेकरी प० प्रवर्त्ते. णो० नहि से० ते त० तीहां आ० आज्ञाव्यवहारी, तो ज० जेम से० ते त० तीहां धा० गीतार्थे कोइने द्रव्यनो अपराध क्षेत्र, काल, न्नाव जाणीने प्रायश्चित दीधुं ते धारणाए करी प० प्रवर्ते. णो० नहिं से० ते त० तीहां धा० धारणाव्यवहारी, तो ज० ज्यां पुरुष धीर्यादिक विचारी प्रायश्चित दे ते जीतव्यहारेकरी प० प्रवर्ते. इ० इत्यादिक ए० ए पं० पांच प्रकारे करी व्यवहार प्रत्ये पं० प्रवर्तावे. तं० ते कहेछेः-आ० आगमेकरी १, सु० श्रुतेकरी २, आ० आज्ञाए करी ३, धा० धारणाए करी ४ अने जि० जीते करी ५. ज० जेम जेम से० ते आ० आगम सु० श्रुत आ० आज्ञा धा० धारणा अने जि० जीत ५, ए पांच होय त० तेम तेम व० व्यवहार प० प्रवतावें. ए व्यवहारवंत पुरुषने फल प्रसन्नद्वार कहेछे. से० हवे शुं न्नदंत (न्नट्टारक) आ० कहो कोण आगमबलिउं न्नक्त ज्ञान विशेष सु० श्रमण निर्ग्रंथ केवली प्रमुख इ० ए वक्षमाण अथवा ए न्नक्त स्वरुप प्रत्ये पं० पंचविध व्यवहार प्रायश्चित दानादिरुप सम्मं० ए पद संघाते संबंध कीजे व्यवहार तो प्रवर्ते. इत्यर्थः हवे संबंध रुडी रीते, ते केम ते कहे छेः-ज० जेजे अवसरने विषे अथवा जेजे प्रयोजनने विषे अथवा जेजे क्षेत्रने विषे जेजे उचित्त ते ते प्रत्ये इति शेष तदातदा काले ते ते प्रयोजनादिकने विषे केहेवुं, ते कहेछेः— अ० सर्व वान्छा रहित उ० तेणे अंगीकार कीधुं ते अनिश्रितोपाश्रित ते प्रत्ये अथवा निश्रित राग उपाश्रित द्वेष नहिं, रागद्वेष ते अनिश्रितोपाश्रित सर्वथी पक्षपात रहितपणे यथावत् इत्यर्थः एतावता पं० पंच वि० विध व्यवहार प्रत्ये ज० ज्यारे ज्यारे ज० जेजे प्रयोजनने विषे योग्य त० तेते प्रत्ये विचारे त० तेते प्रयोजनने विषे सर्वथा पक्षपात

रहित स० सम्यक् व० प्रवर्ततो थको स० साधु नि० निर्ग्रंथ आ० आज्ञानो आ० आराधक न० थाय ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा थाय.

भावार्थः—हवे जुओ ! आगम-व्यवहारना पांच प्रकार कह्या. केवलज्ञानीने १, मनपर्यवज्ञानीने २, अवधज्ञानीने ३, चौदपूर्वधारीने ४, जाव दसपूर्वधारीने ५, आगमव्यवहारी कहीये. ए पांच प्रकारना आगमव्यवहारी कह्या. आत्मज्ञानथी गुण जाणे ते कार्य करे. ए प्रथम व्यवहार. ए प्रथमव्यवहारनो धणी बीजो सूत्रव्यवहार माने नहिं, एटले सूत्रमां कह्युं तेम सर्व कार्य करवानो तेमने नियम नहिं. आत्मज्ञानथी अवगुण जाणे ते कार्य न करे, अने गुण उपजतो जाणे ते कार्य करे. हवे आगमव्यवहारीना वचनथी वा उपदेशथी ग्रंथ जोड्यो तेनेज सूत्र कहीये. ते आगमव्यवहारीनुं कह्युं करवुं, पण आगमव्यवहारी थकां सूत्रमां कह्युं तेम न करवुं. वली सूत्रमां कह्युं छे के, नवमा पूर्वनी त्रीजो आयारवथु ( त्रीजुं अध्ययन ) जाण्याविना साधुनी पडिमा वहेवी नहिं, अने खंधकजी अगीयार अंगनुंज ज्ञान जाण्या छतां भिखुनी बारमी पडिमा वह्या, ते आगमव्यवहारीना वचनथी. वली गजसुकुमालजी विना सूत्र जाण्यां दिक्षा लइ तेज दीने बारमी पडिमा वह्या, ते पण आगमव्यवहारीना वचनथी. ए न्याये आगमव्यवहारी थकां सूत्रव्यवहार मानवानो जरुर नथी १; अने आगमव्यवहारीना अभावे बीजो सूत्रव्यवहार मानवो, एटले सूत्रमां कह्युं तेम करवुं २; अने जो सूत्रमां कोइ वस्तुनो निर्णय न होयतो त्रीजो आज्ञाव्यवहार मानवो, एटले आचार्य गुरुदेव कहे ते वचन प्रमाण करवुं ३; अने ए त्रण व्यवहार न होय तो चोथो धारणाव्यवहार मानवो, एटले गुरुदेव आचार्ये कोइ बोल धराव्या होय तथा कोइने केहेतां सांभल्या होय ते प्रमाणे कार्य करवुं ४; अने ए चार व्यवहार न होय त्यारे पांचमो जितव्यवहार मानवो, एटले गीतार्थ वगेरा जेम करता आव्या तेम करवुं. ५. ए रीते पांच व्यवहार मानतां थकां आज्ञाना आराधक थाय.

हे देवानुप्रीय ! भगवंत तो आगमव्यवहारी छे. ते सूत्रव्यवहार

आवे नहिं. ए तमे जाणतां छतां मतना लीधे सूत्रनुं नाम लइ बोधां लोकोने बेहेकावी आगमव्यवहारी उपर आल दइ अनंत संसार केम वधारो छो? जो आगमव्यवहारीने सूत्रमां वर्ज्यां ते कार्य कीधाथी दोष लाग्यो मानो तो; भगवंते केवलज्ञान उपन्या पछी कालीकुमार प्रमुख दस भाइनां मरण बताव्यां १. वली नेमनाथस्वामीए द्वारकानो दाह बारे वर्षे बताव्यो २. तेमज गोशालाने सात दीवसने आंतरे मरण बताव्युं; पण माहाशतके रेवतीने मरण बताव्युं, तेवारे गौतमस्वामीने मुंकीने प्रायछित देवराव्युं, अने पोते सुखे बताव्युं. ३ वली गोशालाथी धर्म चोयणा करवानी साधुउने आज्ञा दीधी. ४ वली चौदपूर्वधारी धर्मघोष आचार्ये नागश्री ब्राह्मणीने चोरासी चौटामां हीलवा-निंदवानी आज्ञा कीधी. ५ ए पांच बोल सूत्रमां साधुने करवा वर्ज्यां छे, अने केवलज्ञानी आगमव्यवहारीए कीधा छे. हे देवानुप्रीय! तमारे लेखे तो केवलज्ञानीने ए दोष लाग्यो तेथी चुक्या. पण ए वात केम मले? आगमव्यवहारीपणुं तो कषायकुशील अने सनातक ए बे नियंठामां होय तेने अपडिसेवी कह्या छे. मूलगुण ते पांच माहाव्रतमां अने उत्तरगुण ते दसविध पचखाणमां दोष लगाडे नहिं. शाख सूत्र भगवती शतक २५ मे उद्देशे ६ ठे. हवे जुउ भगवंत तो छद्मस्थपणे पण अवध मनपर्यव-ज्ञान आश्री आगमव्यवहारी छे, अने केवलज्ञानमां पण आगमव्यवहारी छे, तथा कषायकुशील-नियंठाना धणी छे. ते भगवंतने चुक्या कहोछो पण सूत्रमां तो मूलगुण उत्तरगुणना अपडिसेवी कह्या छे. हवे जो चुक्या कहोछो, तो कहो कया व्रतमां मूलगुण उत्तरगुणमां दोष लाग्यो? अने ते वेला नियंठो कषायकुशीलज हतो के बीजो आव्यो ते पण कहो. हे देवानुप्रीय! भगवंतनो तो अपडवाइ संजम छे. नियंठो फरे नहिं तेथी ते पुरुषोने दोष लागे नहिं. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जेम गौतमस्वामी चारज्ञान चौदपूर्वना धणी आगमव्यवहारी अने कषायकुशील-नियंठाना धणी आणंद श्रावकने घेरे भाषामां चुक्या तेम भगवंत पण चुक्या. एम कहे छे तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! गौतमस्वामी आणंदजी श्रावकने घेर न्नाषामां चुक्या ते समये तेमने चार ज्ञान, कषायकुशील-नियंठो अने आगम व्यवहारीपणुं हतुं, एम कया सूत्रमां कह्युं छे ते कहो. वली गौतमस्वामीनुं अने न्नगवंतनुं ज्ञान अने नियंठो सरखां नथी. अनंतगुण हानी वृद्धिपणुं छे. न्नगवंतनो तो संजम नियंठो अपकवाइ छे. दिक्षा लीधी तेज वखते मनपर्यव-ज्ञान उपन्युं अने षकायकुशील-नियंठो आव्यो. ते एकज वार आवे अने ते पाछो जाय नहिं. वली कषायकुशील-नियंठानो संजम एक जीवने एक न्नवमां जघन्य एक वार आवे अने उत्कृष्टा नवसो वार जाय अने नवसो वार पाछो आवे. वली कषायकुशील-नियंठानी अने मनपर्यवज्ञाननी स्थिति जघन्य एक समयनी कही. ते एक समय रहे अने बीजे समये वीलाइ जाय. कोइक जीवने वली पाछो एक समयथी तथा अंतरमुहूर्त तथा घणा कालथी पाछो आवे, अने कोइ जीवने ते न्नवमां पाछो आवेज नहिं, अने कोइ जीवने एकन्नवमां घणीवार जाय अने घणीवार आवे. तेनी उत्कृष्टी स्थिति देशेउणी क्रोड पूर्वनी कही. ते एक वारज आवे पण पाछो जाय नहिं. दोषनो अपडिसेवीज रहे. वली चार ज्ञानवाला, कषायकुशील-नियंठावाला अने आगमव्यवहारना धणी कर्मने वशे न्रष्ट थइ जाय तो अर्धपुद्गल अनंतकाल संसारमां निगोदादिकमां न्नमे. शाख सूत्र न्नगवती शतक २५ में उद्देशे छठे, तथा पन्नवणामां ए सर्व अधिकार छे. ए कषायकुशील-नियंठो एक न्नवमां नवसोवार उत्कृष्टो आवे कह्युं. तेनी स्थिति जघन्य एक समयनी कही, अने न्रष्ट थइ जाय तो उत्कृष्टो अर्धपुद्गल रुले कह्युं; पण न्नगवंतने तो मनपर्यवज्ञान अने कषायकुशील-नियंठो एकवार आव्या पछी पाछो जाय नहिं, एक समयनी स्थिति पण होय नहिं अने अर्धपुद्गल सुधी न्नमे पण नहिं. ते माटे सर्व कषायकुशील-नियंठाना धणीनो, गौतमस्वामीनो अने न्नगवंतनो छद्मस्थपणानो पण संजम सरखो नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय ! गौतम स्वामीनो अने न्नगवंतनो कषायकुशील-नियंठो सरखो केम? वली गौतमस्वामी न्नाषामां

चुक्या, तेम भगवंत पण चुक्या, एम केम कहोछो? वली गौतम स्वामी सरखा द्वादशांगी ज्ञानना धणी पण भाषामां खलाइ जाय कह्युं छे. शाख सूत्र दसवैकालिक अध्ययन आठमे, गाथा ५० मीः—

आयार पणत्तिधरं, दिठिवाय मद्दिचगं;
वयंवि खलियं णच्चा, णतं उवहसे मुणी. ॥ ५० ॥

अर्थः—आ० आचारांग अने प० भगवती सूत्रना धरणहार तथा दि० दृष्टिवादना (बारमा अंगना) म० भणनारने व० बोलतां वचने करी ख० खलाया ण० जाणीने ण० नहिं तं० तेमने उ०हसे मु० जति. ॥५०॥

भावार्थः—हवे जुओ! आचारांग, विवाहपन्नति अने दृष्टिवाद (बारमा अंग) ना भणनार वचनमां चुकी जाय, तेनो उपहास न करवो. ए आगमव्यवहारना धणी वचनमां चुकी (खलाइ) जाय कह्युं, अने मूल-उत्तरगुण दोषना अपडिसेवी कह्या, पण एमने अने भगवंतने सरखा न कह्या. वली गौतम प्रत्ये भगवंते पण कह्युं के, तमे वचनमां भुल्या छो, आणंद साचो छे माटे जइने खमावो. ए वचनने भुल्या कह्युं तेम भगवंत पोते चुक्या हत तो केम न कह्युं. हवे वीरप्रभुने चुक्या तमे कया ज्ञानथी जाण्या? तेवारे तेरापंथी कहे छे के " केवल ज्ञान उपन्या पछी ए काम न कर्युं. बे साधुने न बचाव्या ते वीतराग भावथी, अने छद्मस्थपणे गोशालाने बचाव्यो ते सराग भावथी, एम टीकामां कह्युं छे. ते रागनां कर्म लाग्यां. सरागपणाथी काम कर्यां. गोशालाने बचाव्यो. ए न्याये चुक्या कहीये छीये. " तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय! सूत्र पाठमां तो एम नथी कह्युं के, गोशालाने बचाव्यो ते रागभावथी, अने बे साधु न बचाव्या ते वीतरागभावथी. अरे! तमारी श्रद्धानी पुष्टीने माटे टीकाना मलता वचननुं सरणुं ल्यो छो ते मिथ्या छे, केमके अमारे तो सिद्धान्तनी पंचांगी प्रमाण छे. ते पंचांगीमां अनेक गुरु लघु छे. तेमां केटलांक वचन उत्सर्ग-मार्गनां छे अने केटलांक अपवाद-मार्गनां छे. ते मतलब जाण्या विना अने टीका तमे नथी

मानता, छतां टीकानी शाक्षी शाने माटे आपो छो? जो टीकामां कह्युं तेमज प्रमाण करता हो तो टीकामां पाछल कहेला बोल मेलवी आपो. टीकामां तो आधाकर्मी आहार करवो कह्यो छे, फलफुलनो आहार करवो कह्यो छे तथा साधुने चक्रव्रतनां कटक चुरवां कह्यां छे. इत्यादिक अनेक विरुद्ध वातो कही छे ते पण प्रमाण करवी पडशे, अने जो ए प्रमाण न करो तो ए टीकानुं वचन प्रमाण केम करो छो ते कहो.

हे देवानुप्रीय! भगवंतनी करणी छद्मस्थपणे अने केवलपणे एक सरखी अतुल करणी छे. छद्मस्थपणे पण आगमव्यवहारी अने केवलमां पण आगमव्यवहारी छे. सूत्रमां साधुने वर्ज्यां तेवां काम छद्मस्थपणे पण आगमव्यवहारपणाथी कीधां अने केवलज्ञान उपन्या पछी आगमव्यवहारपणाथी कीधां. तेमणे छद्मस्थ अने केवलीपणे एक सरखां काम कर्यां छे. हे देवानुप्रीय! जे कार्य सूत्रमां सामान्य साधुने वर्ज्यां छे ते कार्य केवलीपणामां पोते कर्यां छे. मुवानी खबर दीधी, मरण बताव्युं अने निमित्त भाख्युं. ए केवलमां तो तमे चुक्या नथी केहेता. तेनुं शुं कारण? वली नेमनाथजीए बारे वर्षे द्वारीकानो दाह बताव्यो; तेमने तो चुक्या नथी केहेता, पण भगवंत माहावीरस्वामीथी अने जीवदयाथी द्वेष दीसे छे तेथी प्रभुने चुक्या कहोछो. वली सरागपणाथी गोशालाने बचाव्यो तेथी जो पाप लाग्युं कहो तो, दसमा गुणठाणा सुधी संजम, तप, विनय, वैयावच इत्यादिक सर्व काम सरागपणाथी करे छे. ते सर्व काममां पाप लागसे, केमके वीतरागभाव तो अग्यारमा गुणठाणा उपर छे. तेमने तो एक इरियावही क्रियाज लागे. ते इरियावहीक्रिया पण सातावेदनी बे समयनी स्थितिनी बंधाय, अने दीर्घ स्थितिना पुन्यपाप तो दसमा गुणठाणा सुधी रागद्वेषथीज बंधाय. द्वेषथी अने अप्रशस्त-रागथी तो पाप बंधाय अने प्रशस्त-रागथी पुन्य बंधाय. वली सराग-संजम अने सराग-तपथी देवतानुं आउखुं पुन्यप्रकृति बंधाय एम कह्युं छे. शाख सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पांचमे, तुंगिया नगरीना श्रावकोने अधिकारे. हे देवानुप्रीय! सरागथी गोशालो बचाव्यो

तेथी पाप लाग्युं एम कहोछो; परंतु इहांतो टीकामां एम कह्युं छे के, सरागसंजम छद्मस्थथकां जीव जीवे तो अने न जीवे तोपण बचाववानो उद्यम करवो. ते माटे बचाववानो उद्यम कीधो अने बे साधुने न बचाव्या ते वीतरागभावथी. वीतरागे केवलज्ञानथी आउखानो समय आव्यो जाणी लीधो. होणहार टलतुं न जाणयुं तेथी उद्यम न कर्यो, कारणके केवलज्ञानी निरथर्क उद्यम न करे ए भावार्थ. आगमव्यवहारी अकरवाजोग काम करे नहिं. गुण जाणे तेवुं काम करे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "भगवंते गोशालाने बचाव्यो तीहां जोगनो व्यापार थयो. ए जोगनुं पाप लाग्युं."तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय! जोगविना तो संजम, तप, विनय, वैयावच, चर्चा वार्ता, सझाय, ध्यान, आहार, पाणी, व्यवहार, कांइ पण थाय नहिं. सजोगीने ए जोगना व्यापारथी पाप लाग्युं जाणो तो तमारे लेखे तो कोइ तरवानो मार्ग दीसतो नथी. हे देवानुप्रीय! ए शुभजोग छे के अशुभजोग ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "गोशालाने बचाव्यामां प्रभु धर्म जाणे तो केवलज्ञान उपन्या पछी ए काम केम न कर्युं? बीजा कोइ साधुने ए रीते जीव उगारवानो उपदेश केम न दीधो"? तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय! प्रभुए पोते छद्मस्थपणे अनार्यदेशमां विहार कर्यो, अने केवली थया पछी अनार्यदेशमां विहार न कर्यो, अने बीजा कोइ साधुने जवानो उपदेश पण न दीधो. ते माटे शुं पूर्वे छद्मस्थपणे अनार्यदेशमां विहार कर्यो ते खोटो कहेवाय? हे देवानुप्रीय! आगम व्यवहारीनुं काम अने सूत्रव्यवहारीनुं काम सरखुं नथी. आगमव्यवहारी अकरवायोग्य काम करे नहि, गुण जाणे तो करे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "गोशालाने उगार्याथी केवो गुण उपन्यो? बे साधुने मार्या. भगवंत उपर तजुलेश्या मुंकी लोहीठाणवालो कर्यो अने घणुं मिथ्यात्व वधार्युं. शो गुण थयो?" तेनो उत्तरः—हे देवानुप्रीय! ए वातनो प्रभुने शानो दोष. जेम अभवि जीव हतो ते साधपणुं लइ उदाइराजाने पोषामां मारी गयो. तेनो पापदोष कांइ महापुरुष आचारजने तो लाग्यो

नथी. तेमज कोइ अनार्य ठग बुद्धिए साधपणुं लइ कोइने ठगी जाय तो तेनो पाप दोष बीजाने नथी लागतो. तेम महावीरस्वामीए गोशालाने दिक्षा दीधी, जीवतो बचाव्यो तेथी मिथ्यात वधार्युं तेनुं पाप प्रभुने नथी लाग्युं. जो प्रभुने पाप लाग्युं जाणोतो ए लेखेतो ऋषभदेव स्वामीने घणुंज पाप थयुं हशे; केमके तेमणे चार हजार माणस साथे दिक्षा लीधी. पछी सघला भाग्या. ३६३ पाखंड मत चाल्या. घणुं मिथ्यात वधार्युं. पण ऋषभदेवस्वामीने तो पाप लाग्युं नथी. तेम वीरप्रभुने पण जाणवुं. वली गोशालाने तो छद्मस्थपणे दिक्षा दीधी अने बचाव्यो, पण केवलज्ञान उपन्या पछी जमालीने दिक्षा केम दीधी? तथा नंदण मणीहारने श्रावकनां व्रत केम दीधां? पार्श्वनाथस्वामीए सोमील ब्राह्मणने व्रत केम दीधां? सुखमालीकाने साधपणुं केम दीधुं? अने बसें छ साधवीने दिक्षा केम दीधी. एम तो घणा अटकाशे. केवलीना दिक्षा दीधेला घणा जणें भ्रष्ट थइने अकार्य कीधां छे तथा मिथ्यात वधार्युं छे. ते पाप पण तमारे लखे केवलज्ञानीने लाग्युं जोइए. पण ए वात केम मले. वली भगवंते लब्धि फोरवी गोशालाने बचाव्यो, तेथी भगवंतने पाप लाग्युं अने चुक्या कहे, तेने पुछीए के, छद्मस्थपणे पाप कर्युं तेनुं पायश्चित तो कोइ सूत्रमां चाल्युं नथी. त्यारे पायश्चित लीधा विना आराधक केम थया ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, "जेम रहेनेमीए राजमतीने भोगनी आमंत्रणा कीधी, तेनुं प्रायश्चित चाल्युं नथी तेम आ पण चाल्युं नथी; पण प्रायश्चितनुं ठेकाणुं छे तेथी लीधुंज हशे." तेनो उत्तरः--अरे मुग्ध प्राणी! एतो एकान्त असंजमनुं ठाम प्रत्यक्ष दिसेछे, अने प्रायश्चित पण दस भेदे आवे. ते गाथाः—

आदच्च दप्प पमादणा भोगे, आउरे आवति सुय;
संकित्ते सहसाकारे, भयं पतो साय वीमंसा ॥ १ ॥

अर्थः—विषयनो पीड्यो १, प्रमादने लीधे २, अजाणपणे ३, आतुर रोग क्षुधा तृषाए ४, आपदा पड्याथी ५, शंकाने लीधे ६, सहसातकारे ७

भयने लीधे ८, रागद्वेषने लीधे ९ अने शिष्य शिष्यणीनी परिक्षा निमित्ते १०. ए दस भेद छे. तेमां उत्तराध्ययन ३३ में अध्ययने ४६ मी गाथामां दसविध प्रायश्चित मांहेलुं प्रायश्चित कह्युं छे. राजेमतीनां वचन रहेनेमीए सांभलीने प्रणाम पाछा वाल्या. ते पाठः—

इंदियाणि वसे काऊ अप्पाणं उव संहरे. इत्यादि ॥

अर्थः—इं० पांच इंद्रिने व० वश का० करी अ० पोतानी आत्माने उ० फेरवी सं० ठेकाणे लाव्या.

भावार्थः—हवे जुओ ! रहेनेमीनी अती दुष्टपणे भोगनी वंछा नहोती. फक्त दिक्षाथी प्रणाम फर्या हता. पछी राजेमतीना वचनथी पाछा ठाम आव्या त्यारे पश्चाताप कर्यो; पण प्रभुए पश्चाताप कर्यो, एवुं कोइ सूत्रमां चाल्युं नथी. वली गोशालानो जीव दृढपइनो थशे अने केवल पामशे तेवारे सर्व साधुने कहेशे के, भाइ! हुं गयाकालमां श्रमण घाती हतो. बे साधुने में मार्या तथा प्रभुनो अविनय कीधो तेम तमे मत करजो. एम गोशालाना जीवे दृढपइनाना भवमां पोताना पाछला भवनुं पाप निंद्युं, निषेध्युं तेम भगवंते केवल उपन्या पछी ए कार्य निंद्युं निषेध्युं नथी. वली निषिथ प्रमुख घणा सूत्रमां अनेक जातनां प्रायश्चित कह्यां छे, पण भगवंते शीतल-लेश्याथी गोशालाने बचाव्यो, तेनुं प्रायश्चित कोइ पण सूत्रमां कह्युं नथी; पण उलटुं आचारांगसूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा अध्ययनना चोथा उद्देशामां कह्युं छे के, भगवंत श्री माहावीरदेवे छद्मस्थपणे दिक्षा लीधा पछी पाप कर्युं नथी. ते पाठः—

णच्चाणं से महावीरे, णोविय पावगं सयमकासी;
अणंहवा णकारित्था, करंतंपि णाणु जाणित्ता. ॥

अर्थः—ण० तत्वना जाण से० ते माहावीरदेव णो० नहिं पा० पाप स० पोते करता, अ० बीजा पासे ण० न करावता, अने क० करनारने पण रुडो णा० न जा० जाणता.

भावार्थः—हवे जुन्न ! आचारांग प्रथम श्रुतस्कंधे नवमें अध्ययने चारे उद्देशामां, भगवंतना गुण कह्या अने निरतीचार संजम कह्यो; अने चोथा उद्देशानी, आठमी गाथामां कह्युं के, नच्चा. हे उपादेय स्वरुप जाणीने पोते पाप कर्युं नथी, अनेरा पासे कराव्युं नथी अने करताने भलो पण जाण्यो नथी. हवे छद्मस्थपणे अनेक कार्य कर्यां तेमां पाप लाग्युं एवी शंका उपजे, पण छद्मस्थनो शंका केवलीना वचनथी भागे. जेम भगवंते छद्मस्थपणे, सूत्रमां वर्ज्यां तेवां काम आगमव्यवहारथी कीधां, पण केवल उपन्या पछी सूत्रनी वाणी प्रकाशी तेमां कह्युं के, में छद्मस्थपणे त्रण करणथी पाप कर्युं नथी. हवे तमारी केहेणीने लेखे छद्मस्थपणे पाप लाग्युं, अने केवलमां कपटाइ करी जुठ बोल्या ते जुठ लाग्युं.(कर्यां पापने छुपाव्युं ते.) ए जुठा बोलानां परुप्यां सूत्र पण जुठां. हवे तमे प्रतीत केनी राखशो ? तमारे लेखे ए सिद्धान्त उठीगया. तेवारे दीवसना भुल्या कहे छे के "ए तो गणधरनां वचन छे. तेमणे वीतरागना गुण वर्णव्या छे. तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! सर्व सूत्र गणधरेज गुंथ्यां छे. एक वचन जुठुं तो सघलांए जुठां. जेम खतमां एक शाख जुठी तो आखुं खत जुठुं, तेम ए पण जाणवुं. तेवारे तेरापंथी वली कहे छे के "अहिंयां तो एम कह्युं छे के, भगवंते जाणीने पाप कर्युं नथी. अजाण्ये मोहनी-कर्मने वशे पाप लाग्युं. तेथी चुक्या कहीये छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! त्यां तो पंदरमें शतके प्रभुए गोशालाने कह्युं छे के, हे गोशाला ! में तारी अनुकंपा वास्ते शीतल-लेश्या मेली. एम जाणीने लेश्या मेली कही छे, पण एम नथी कह्युं के, मारे अजाण्ये लेश्या नीकली. तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के "लेश्या तो जाणीने मेली, पण एम न जाण्युं के, ए काम करवुं के न करवुं. एम अजाण्ये पाप कीधुं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ज्ञान विना तो समकित पण नथी. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २८ में. गाथा ३० मीः—

नादंसणस्स नाणं, नाणेण विणा णहोइ चरण गुणा;
अगुणिस नत्थि मोक्खं, नत्थि अमोखस्स णिवाणं ॥३०॥

अर्थः—ना० दर्शन रहितने ना० सम्यक् ज्ञान न होय, अने नाणे० सम्यक्ज्ञान विना ण० न होय, न उपजे च० चारित्र (पांच महाव्रतादि) गु० गुण ( चरण सित्तरी पिंड विशुद्धादि करण सित्तरी ). अ० अगुणीने चरणसितरी रहितने न० सकल कर्म क्षय लक्षण रुप मोक्ष नथी. न० नथी अ० कर्मे अणमुंक्याने नि० निर्वाण (मुक्ति) पदनी प्राप्ती ॥ ३० ॥

भावार्थः--हवे जुओ ! भगवंतने ए काम करवुं के न करवुं, ए ज्ञान नहिं त्यारे तो ज्ञानविना समकित पण नहिं, अने समकित नहिं त्यारे चारित्र (कर्मथी मुंकावानो मोक्षनो मार्ग) पण नहिं. कारणके पेहेलुं ज्ञान अने पछी चारित्र कह्युं छे. शास्त्र सूत्र दसवैकालीक अध्ययन चोथे गाथा दसमी. हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो भगवंतमां छद्मस्थपणामां समकित अने साधपणुं पण नहोतुं. एम केम कहोछो के भगवंतने करवा अकरवा जोग कामनी खबर नहोती. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, भगवानने जाण-पणुंतो हतुं पण ज्ञानथी जोयुं नहिं. हे देवानुप्रीय ! ज्ञान दीधा-विना तलनो छोड शीरीते बताव्यो ? एक फलीमां सात तल शीरीते बताव्या ते कहो. ए प्रत्यक्ष जाणीने काम कर्यां तेने अजाण्ये कर्यां कहोछो ए आश्चर्यनी वात छे. जो अजाण्ये पाप लाग्युं कहो तो चुक्या केम कहोछो. अजाण्ये पाप लाग्याने जो चुक्या केहेशो तो, अनंता तीर्थंकर थया अने अनंता थशे ते सघलाने चुक्या केहेवा पडशे. वली छद्मस्थ साधुभगवं-तने समेसमे सात कर्म बंधाय कह्युं छे, पण तेमने पापदोष (मूल उत्तर-गुण) ना अपडिसेवी कह्या छे, (शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे ६–७ में) पण चुक्या न कह्या. हवे तमे तो अजाणे पाप लाग्याथी चुक्यां कहेछो, त्यारे छद्मस्थ तीर्थंकरदेव तथा साधु विहार करे अने आहा-रादिक वोहोरवाने जाय त्यां अजाणपणे जीवनी घातादिकनुं पाप समे समे लागे अने सात कर्म अजाणपणे बंधाय. ए लेखे तो सर्व छद्मस्थ

साधु तथा भगवंत समेसमे चुके, ते कये समे प्रायश्चित ले? अने तेम-नामां कये समे साधपणुं कहीये ते कहो. एम तमारे लेखे तो कोइ छद्मस्थ साधु तथा भगवंतमां साधपणुंज न रहेशे.

हे देवानुप्रीय ! एम केम कहो छो के, अजाणये पाप लाग्युं तेथी चूक्या. अजाणये पाप तो सर्व छद्मस्थ साधु तथा भगवंतने लागे छे. ते अजाण पापथी चूक्या कहेवाय नहिं. वली भगवंते केवलज्ञान उप-न्या पछी कह्युं छे के, में त्रण करण ने त्रण जोगे करी छद्मस्थपणे पाप कर्युं नथी. हवे तमे मतना लोधे भगवंत उपर अछतां आल दइने अनंत संसार केम वधारो छो. वली पाप तो प्रमादथी थाय एम कह्युं छे. ज्यारे प्रमादनो उपचय थाय अने जोगनुं निमित्त कारण थाय त्यारे साधुने क्रिया लागे,(शास्त्र सूत्र भगवती शतक त्रीजे) पण भगवंते तो छद्मस्थपणे मूलथीज किंचितमात्र पण प्रमाद नथी सेव्यो. शास्त्र सूत्र आचारांग प्रथम श्रुतस्कंधे नवमे अध्ययने उद्देशे चोथे. ते गाथाः—

अक्कसाइ विगय गेहीय सद्दरुवेसु अमुच्छिए छावी.
छउमछेववि प्परिक्कममाणो नोए पमायं सइंपि कुविछा ॥१५॥

अर्थः—अ० कषाय रहित (तीजकी चीजकी चरूाववादि क्रोधनुं कारण कोइ वखते न आवे ते) वि० शब्दादि विषे गृद्धपणा रहित स० शब्द रुपादिकने विषे अमु० मुर्छा रहित, एवा थकां छा० ध्यान ध्यावे श्री माहावीर छ० छद्मस्थ छतां पण विविध प्रकारे संयमानुष्ठानने विषे प्परि० पराक्रम करता थका. नो० एक वार पण प्रमाद (कषाया-दिक) पोते नहिं करता हवा एवी. रीते स्वामी प्रवर्त्या.

भावार्थः—हवे इहां कह्युं के, भगवंते छद्मस्थथकां संजमानु-ष्ठानने विषे उद्यम करतां पोते प्रमाद कर्यो नहिं. जुओ हे देवानुप्रीय ! प्रमाद कर्याविना पाप शी रीते थाय. तमे एटलां सूत्रनां केवलीनां वचन उत्थापीने प्रभुने चुक्या कहीने अनंत संसार केम वधारो छो. हवे एटला सूत्रनी शाखे भगवंते गोशालाने बचाव्यो तेमां पाप लाग्युं

नथी. तेम बीजा पण केइक जीवने बचावे, आगलानुं पाप टलावे तेमां पाप नथी. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "मुसादिक (उंदर)ने बीलाडी पासेथी बचावी ल्यो तथा पंखीने मालामां मेलो द्यो. जो एवी रीते जीव बचाव्यां धर्म होय तो, लब्धिधारी मुनीराज हाथ फेरवे तो सर्व श्रावकनुं पेट दुखतुं रही जाय तथा जीव जीवतो रही जाय, पण हाथ फेरवे नहिं. तेम जीव बचाव्यां धर्म होय तो उंदरादिक असंजति जीव करतां तो श्रावकनां पुन्य अधिकां छे. ते धर्मध्यान पण करशे, पण जीव बचाव्यामां धर्म नथी, तेथीज ते श्रावकोना पेट उपर हाथ फेरवे नहिं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! उंदरनी परे श्रावकने पण अमारा कहेवाथी बचे तो बचावी लइए. वली तेरापंथी कहेछे के " जेम साधु, श्रावकना पेट उपर हाथ फेरवे नहिं,तेम उंदरने पण पेट दुखे तो हाथ फेरवे नहिं." एवा कुहेतु लगावीने बोघा लोकोनां हृदय दया रहित करे छे, अने पोताने तो अंधारुं छे, केमके कोइ काम धर्मनां करे छे अने कोइ काम धर्मनां नथी करता. हे देवानुप्रीय ! तमे कहोछो के असंजति जीवनुं जीवीतव्य न वांछवुं. त्यारे जुओ ! असंजति छे तेने तमे केम पोषो छो? जो अंगथी उपनी जाणीने पोषो तो, अंगथी बालकादि उपजे छे तेने केम नथी पोषता ? वली शीतकालमां पाणीमां माखी छरे तेने मुहपत्तिमां घालीने साजी केम करोछो ? बाहार केम काढोछो? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अमारा पाणीथी माखी मरे तेनुं पाप अमने लागे. ते टालवा माटे साजी करीए छीए. अमारुं पाप टालवुं तेमां धर्म छे, पण माखीनुं असंजम जीवीतव्य नथी वंछता.". एम कपटथी जुठ बोले छे. तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! तमारा पाणीथी माखी मरे तेनुं पाप तमने लागे, ते पाप टालवामां धर्म कहोछो, त्यारे अंधारी रातमां आंधलो श्रावक साधुना बाजोठ या कपडाथी अथडाइने मुर्छाइ पगथीयांनी नालमां पड्यो, तेथी तेनी कोट भागे छे. ए वेला बीजो ग्रहस्थी तेनी पासे नथी; त्यारे तमे साजो करो के नहिं ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अमे तो

साजो न करीए." एज वेला बीजो ग्रहस्थी आवीने पुछे के, ए शाथी पड्यो ? त्यारे कहेके, मारा उपगर्णथी पड्यो. तेवारे श्रावक तमने कहे के, माखीने तमारा पाणीमांथी काढीने तमारुं पाप टालो त्यारे तमारा कपडा तथा बाजोठथी श्रावक पड्यो, ए श्रावक पंचिंद्रिनी हत्यानुं पाप तमने लागे छे, ए केम न टालो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, अमारे ग्रहस्थीथी शुं प्रयोजन छे ? हे देवानुप्रीय ! माखी चौरेंद्रि, असंजति, अव्रति छे, अने श्रावक तो व्रति छे, धर्मनो करणहारो छे. तेनां पुन्य शुं माखीथी पण हलवां छे? जो माखी तमारा पाणीथी मरे तेनुं पाप तमने लागे ते टालवा साजी करो तो, तमारा उपगर्णथी श्रावक पड्यो तेनी हत्या तमारा केहेवा प्रमाणे तमने लागे छे; त्यारे ए श्रावकने साजो केम न करो? ए पुरुं अंधारुं केम छे? एक माखीनुं पाप टाली धर्म करो, अने श्रावकनुं पाप टाली धर्म न करो. ए अज्ञानी प्रतीत केम आवे ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, अमारो कल्प नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय! उंदरादिक गरीब जीवने बचाव्यां दयानुं कार्य छे. आगल पण राग-द्वेष वधे नहिं, तेथी बचाववानो कल्प छे; अने श्रावकनुं पेट साजुं करेतो एवा ताप, स्वास, कोढ प्रमुख वाला घणाए रोगी होय. तेनुं दुःख जो साधु मटाडे तो प्रमाद वेदगी वधे, अने तप, संजम, स्वाध्याय, ध्यान घटे. वली कोइना त्यां सझाय, ध्यान के पडिकमणानी वेला बोलाव्याथी साधु न जाय तो द्वेष पामे. तेथी मुनीराज श्रावकनुं पेट साजुं न करे. ए कल्प नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " साधु तो छकायना पिहर छे. जो बचाव्यामां धर्म होय तो बधाने बचावे. हवे तमे उंदरा, पंखी, गरीब जीवने दयाने अर्थे बचावी मारवावालानुं पाप टलावो छो, त्यारे सव्युं धान्य बकरुं खाय तेने केम नथी बचावता ? ए बकरानुं पाप केम नथी टलावता? वली मुला अनंता जीवना पिंडनुं गाडुं भर्युं छे. ते मुला सांढ खावा लाग्यो. ए मुलाना अनंता एकेंद्रि जीवने केम नथी बचावता ? सांढनुं पाप केम नथी टलावता. २ वली तलावमां माछलां घणां, तेमां

गायो जेसो पाणी पीवा जाय. ३ लीलोत्री तिर्यंच खाय. ४ मार्गमां कीमीउं, गींमोला पग नीचे मरे. ५ उकरमा उपर लटो कागमा चुगे. ६ इत्यादिक गरीब जीवने केम नथी बचावता ? ए मारवावालानुं पाप केम नथी टलावता? " एवा कुहेतु लगामीने भोला जीवनां हृदय दया रहित करे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए जीवने पण कोइ दया आणी बीजी वस्तुनो जोग मेलवी बचावे, मारवावालानुं पाप टलावे, तेमां अमे पाप नथी केहेता. ए कुहेतु तो क्यारे मले के, जो अमे उंदराने बचाव्यामां धर्म केहेता होइए अने ए जीवने बचाव्यामां पाप केहेता होइए त्यारे मले; पण ए जीवने बचाव्याथी लोकमां अशुद्ध व्यवहार लागे. धणीनी खुसामतो वास्ते रखवाली करे छे, तिर्यंचने खावापीवा देता नथी, अने उकरमाना कीमा विष्टामांथी वीणे छे. एम जिनमार्गनी लघुता थाय तेथी वर्जे नाहिं. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, धर्म करतां लोकनो अशुद्ध व्यवहार गणवो नाहिं. तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! तमारी जग्यामां मुवेल चकली या उंदर प्रमुखनुं कलेवर पम्युं होय, तेने सूत्रनी सभाय करवा अने असझाय टालवा वास्ते बाहार परठो तेमां धर्म छे के पाप छे ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " धर्म छे, पण जो पाप जाणे तो साधु कलेवरने बाहार परठे नाहिं. " त्यारे तेने केहेवुं के, तमारी जग्यामां कुतरो बीलामी प्रमुख मुवां पड्यां छे. तेना कलेवरना पगे दोरमी वांधी सूत्रनी सभाय करवा वास्ते बाहार परठीने धर्म करो के नाहिं ? तेवारे कहेछे के "लोकीकमां अशुद्ध वहेवार लागे. लोकोमां जिनधर्मनी लघुता लागे. लोक कहे के, साधु थइने मेहेतरनुं काम करे छे. कुतरानां कलेवर खेंचे छे. ए वास्ते न परठीए. " तेवारे तेमने केहेवुं के, " तमे केहेता हता के धर्म करतां लोकीकनो अशुद्ध व्यवहार गणवो नाहिं. त्यारे चकलो, उंदर पण पंचेंद्रिनां कलेवर छे अने कुतरो बीलामी पण पंचेंद्रिनां कलेवर छे. बंने सरखां छे. जो चकलो परठो धर्म करोछो तो कुतरो परठी धर्म केम नथी करता ? ते अशुद्ध व्यवहार केम गणोछो ? " तेवारे जवाब दइ शके नाहिं. शुद्ध

अशुद्धव्यवहार उलखे नहिं. साधुना कल्पमां अने आज्ञा अनाज्ञामां समझे नहिं, अने दयानो जड कापवाने वास्ते एवां कुहेतु मेलवे छे.

वली तेरापंथी कहेछे के "मरता जीवने जबराइथी छोडावे तो अंतराय लागे, तेमां धर्म सरदहे तो समकित जाय, पण उपदेश दइ समजावे तेमां धर्म छे." एम कहेछे, पण उपदेशनी विधि जाणता नथी. तेने विधि उलखाववाने पुछवुं के, तमारा आहार उपर ताकोने कुतरो आवे तेने हचकारो करो उंघो हाथमां लइ केम डरावो छो ? ए धर्म जाणी जबराइ करी समकित केम गुमावो छो? जो जबराइमां पाप जाणो तो ए काम केम करो छो? तमारी केहेणीने लेखेतो ए कुतराने मनुष्यनी परे वचनथी समजाववो जोइए के "अरे कुतरा ! साधुजीनो आहार खावो नहिं. जाइ तने पाप लागसे" एम उपदेश देवो, पण जबराइ करवी ए न्याय केम मले ? हे देवानुप्रीय ! तिर्यंच विवेकविकलने एज उपदेश छे. जेम असंजति खुल्ला ग्रहस्थने साधु आववा जवानुं कहे नहिं, कहे तो प्रायश्चित आवे; पण सांढ कुतरा प्रमुख आवे तेने हचकारो करे, धुरकारो दे अने उंघो हाथमां लइने डरावे. एनो एज उपदेश छे. तेम जबराइ करी जीवने बचावे ते कायानो उपदेश जाणवो. त्रण करण ने त्रण जोगथी उपदेश देवो. तेमज त्रण करण ने त्रण जोगथी दया पालवी. जीवने बचावे ते कायानो उपदेश जाणवो. जीवने मरतां बचावे तेने कायाथी दया पाली कहीये. ते दयानां साठ नाम कह्यां छे. शास्त्र सूत्र प्रश्नव्याकरण प्रथम संवर-द्वारमां. ते पाठः—

तत्थ पढमं अहिंसाजासा सदेव मणुआ सुरस्स लोगस्स भवइ दीवोत्ताणं सरणागइपइठाः- निव्वाणं १ निवुई २ समाही ३ संत्ति ४ कित्ति ५ कंती ६ रइय ७ विरइय ८ सुयंग ९ तित्ति १० दया ११ विमुत्ति १२ खंत्ति १३ समत्ताराहणा १४ महंति १५ बोही १६ बुध्दि १७ धिती १८ समिद्धि १९ रिद्धि २० विद्धि २१ ठित्ति २२

पुठी २३ नंदी २४ नद्दा २५ विसुद्धि २६ लद्धि २७ वि-
सठ २८ दिठी २९ कल्लाणं ३० मंगलं ३१ पमोठ ३२
विनूति ३३ रखा ३४ सिद्धावासो ३५ अणासवो ३६ के-
वलीणठाणं ३७ सिव ३८ समिइ ३९ सील ४० संजमोत्ति
४१ सीलघरो ४२ संवरोय ४३ गुत्ती ४४ ववसाठ ४५
ठसत्तोय ४६ जणो ४७ आयत्तणं ४८ जयण ४९ मप्प-
माठ ५० आसासो ५१ विसासो ५२ अनठ ५३ सव-
स्सवि अमाघाठ ५४ चोरका ५५ पवित्ता ५६ सुत्ती ५७
पूया ५८ विमलपनासा ५९ निम्मलतरत्ति ६० एवमा-
दीणि नियगुण निम्मियाइं पज्जवनामाणि होई अहिंसाए
नगवईए एसा नगवई अहिंसा ॥

अर्थः—त० तीहां पांच संवरद्वारमां प० पेहेली अ० जीवदया स० देव म० मनुष्य अने अ० असुर सहित लो० लोकने विषे सर्व जीवने ते अहिंसा न० केवी होय छे ते कहेछेः-दी० दीवासमान आधारनूत तथा द्वीपसमान आपदा निवारणहार स०संपदानो देणहार,आदरवायोग्य सर्व गुणनो आधार.ते श्री जीवदयानां गुणनिष्पन्न नाम कहे छे.नि०मोक्षनुं कारण नि०निवृत्तिनी करणहार स०समाधीनुं कारण सं० सान्तीनी दायक कि०कीर्तिनुं कारण कं०कान्तिनुं कारण र०रतिनी नपजावणहार वि०पाप-थी निवर्तावे सु०सिद्धान्तनुं अंग ति०तृप्तिनी करणहार द०अनयनुं देवुं ते वि० सर्व बंधनथी मुंकावे ते खं० क्षमानी करणहारी स० समकितनी आराधनानुं कारण म० सर्वथी मोटी बो० धर्मनी बुजावणहारी बु० बुद्धिनी देणहारी द्धि० धीरजनी करणहारी स० समृद्धिनी देणहारी रि० रिद्धिनी देणहारी वि० सुखनी वृद्धिनी देणहारी ठि० अचलनी देणहारी पु० सुखनी पुष्टीनी करणहारी नं० आनंदनी देणहारी न० कल्याणनी करणहारी वि० विशेष निर्मलताकारक ल० लब्धिनी नपजावणहारी

वि० विशेष प्रधान दि० समकितरुप दृष्टि क० कल्याणनो हेतु मं० मंगलीकनो हेतु प० हर्ष पामवानो हेतु वि० मोटाइ पामवानो हेतु र० रक्षानी करणहारी सि० सिद्धने रेहेवानुं मंदीर अ० आश्रव नथी जेमां के० केवलनी राज्यधानी सि० उपद्रव रहित स० रुडी रीतनी प्रवर्तावक सी० सुद्धाचारनो हेतु सं० संजमनो हेतु सी० सीलनुं घर सं० पापथी आत्माने संवरवुं ते गु० अशुभ जोगनुं गोपववुं ते व० निश्चे लाजनो व्यापार उ० उंचो पदार्थ ज० भाव यग्य आ० सर्व गुणनो आश्रय ज० यतना म० प्रमादनुं निराकरण आ० आस्वासनुं स्थान वि० विश्वासनुं स्थान अ० पोतानी आत्माथी कोइने भय न उपजाववो ते स० सर्व जीवने अ-मारी चो० मूलथीज चोख्खी, प० सदाय पवित्र, सु० मलनी टालणहारी पू० तीर्थंकरादिकनी पुजा वि०मल रहित प्रभा छे जेनी नि० अतिशय निर्मल छे इति. ए नाम. ए० ए आदि अनेक नि० पोताने गुणे नि० निपजाव्यां प० गुण निष्पन्न नाम हो० होय. अ० अहिंसा भ० भगवतीना ए० ए भ० भगवती अ० जीवदया जाणवी.

भावार्थः—हवे जुओ ? दयानां साठ नाम कह्यां, ते गुणनिष्पन्न अकेकुं नाम कह्युं छे. हवे त्रण करण त्रण जोगथी जीवने हणे नहिं तेतो अहिंसा दयानुं नाम पेहेलुं निपनुं. हवे ५९ नामना न्यारा न्यारा अर्थ कह्यो. दया, अनुकंपा, करुणा, वीसासो आसासो अमोघाए अने खंती केने कहीये ते कहो. हे देवानुप्रीय ! दया तो त्रण करण अने त्रण जोगथी प्राणीने बचावे तेने कहीयें. साधुजीए त्रिविधे २ हिंसाना त्याग कर्या तेने अहिंसा कहीयें. पांच सुमति अने त्रण गुप्तिनो खप करता विचरे तेने संजम जतना कहीये. कारणके चारित्र, संजम, संवर अने यत्न न्यारां न्यारां कह्यां छे; अने ए चारनां आवरण पण न्यारां न्यारां कह्यां छे. शाख सूत्र भगवती शतक ए में उद्देशे ३१ में, असोचाकेवलीना अधिकारमां. ए न्याये जीव हणवाना त्याग तेतो चारित्र, तेने अहिंसा कहीयें. बचावे तेने दया जतना कहीयें. पांच सुमति ने त्रण गुप्तिमां प्रवर्तवुं तेने संजम कहीयें. जीवना जीवीतव्यनी आशा

कोइना जोगथी बंधाय तेने आसासो कहीयें. वचनथी मरताने जीवी- तव्यनो विश्वास उपजावे तेने विसासो कहीये, अने जीवने कोइ मारी शके नहिं, एवो पडो फेरावे तेने आमोघाए कहीयें. शास्त्र सूत्र उपाशक अध्ययन ८ में. श्रेणिकराजाए अमार-पडो फेरवाव्यो त्यां "अमोघाए घुटेया विहोव्वा" एवो पाठ छे. इत्यादिक ६० प्रकारनी दया कही छे. तमें जीवने न हणे ते एकनेज दया केम कहो छो? ५९ प्रकारनी दया मतना लीधे केम छुपावो छो? वली साठ प्रकारनी दया केटला करण अने केटला जोगथी पालवी ते कहो; अने हिंसानुं पाप केटला करण अने केटला जोगथी टालवुं तेपण कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के; त्रण करण अने त्रण जोगथी दया पालवी. वली एम न कहे तो एम कहे के, त्रण करण अने नव जोगथी हिंसानुं पाप टालवुं. हवे जुओ! देवानु- प्रीय! त्रण करण नें त्रण जोगथी जीव मरे कह्युं, अने त्रण करण नें त्रण जोगथी प्रथम संवर राखवो एटले जीवनी रक्षा करवी; दया पालवी, एम प्रश्नव्याकरणमां तथा आवश्यक सूत्रमां कह्युं छे. वली अढारे पापमां प्राणातिपात (जीवहिंसा) त्रण करण ने नव जोगथी लागे कह्युं. हवे मनथी हिंसा शी रीते थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, मनेकरी जीवनुं माठुं चिंतववुं ते मार्युं कहीये. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! मनेकरी जीवनुं मरण चिंतववुं तेतो रुद्रध्यान कहीयें. ते अशुभजोगथी कर्म बंधाय, पण जीव मरतो नथी. मन वचनथी जीवने शीरीते मारे तथा अनेराकने शीरीते मरावे ते कहो. पोताना मननी अनेराने शीरीते खबर पडे ते कहो. हे देवानुप्रीय! मनथी मंत्रादिक गणे अने माठुं ध्यान धरे, तेथी आगलो मरी जाय ते मनथी मार्यो कहीयें. वचनथी मंत्रादिक पढे तथा श्राप दे,तेथी मरी जाय ते वचनथी मार्यो कहीयें,अने कायाथी मारवो तो प्रत्यक्ष देखाय छे. एमज अनेरा पासे त्रण जोगथी मरावे. मनेकरीने मंत्रादिकनुं माठुं ध्यान करावे, तेथी अनेरो अनेरा जीवने मारवा लागी जाय, ते मनथी मरा- व्यो कहीयें. एम वचनथी जीवने मारवानो उपदेश दे, अने कायाथी

हाथपग आदिकनी इसारत जणावीने जीवने मरावे ते कायाथी मराव्यो कहीयें. एमज मारे तेने मन, वचन अने कायाथी ज्लो जाणे. एम बे करण ने छ जोगथी तो जीव मरे, अने एक करण ने त्रण जोगथी ज्लो जाणे तेनुं पाप लागे. तेमज त्रण करण ने नव जोगथी छकायना जीवनी रक्षा करवी, दया पालवी पलाववी, अने पोतानुं पाप टालवुं, अनेरानुं टलाववुं अने टाले तेने ज्लो जाणवो. ए नव जोगथी दया पालवो ने पाप टालवुं कह्युं. हवे वचनथी उपदेश दइ जीवने छोडावे तेतो एक वचनजोगनो उपदेश छे. तेने वचनजोगथी रक्षा करावो दया पाली आगलानुं पाप टलाव्युं, तरवुं वंछ्युं कहीये; पण आठ जोगथी रक्षा शीरीते करावे, दया पाले पलावे, पाप टाले टलावे, तरवुं वंछे वंछावे ते कहो. अहो देवानुप्रीय! कोइ, जीवने मारतो होय तेने कायाना जोगथी उद्यम करी छोडावे, तथा कोइ कीडो प्रमुख जीव उपर विना उपयोगे पग देतो होय तेने आडो हाथ दइ बचावे, तेने कायानाजोगथी उपदेश दीधो, दया पलावी, रक्षा करावो आगलानुं पाप टलाव्युं अने तरवुं वंछ्युं कहीये. ए कायाथी दया पलावी, तेमां जबराइ करो पाप लाग्युं केम कहोछो?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " निषिथसूत्रना बारमा उद्देशाना पेहेला सूत्रमां कह्युं छे के, जे कोइ साधु अनुकंपा निमित्ते त्रसजीवने बांधे, बंधावे अने बांधताने ज्लो जाणे तेने चोमासी प्रायश्चित आवे, अने बांध्याने छोडे, छोडावे अने छोडताने अनुमोदे तोपण चोमासी प्रायश्चित आवे. जो छोडतां लाभ होय तो प्रायश्चिय केम कह्युं ? " तेनो उत्तर. अरे देवानुप्रीय! बांधवामां तो 'कोलुणपडिया' एवो पाठ छे. तेनो अर्थ करवावाले कर्यो छे के " साधु अनुकंपा निमित्ते त्रस जीवने बांधे, बंधावे अने बांधताने ज्लो जाणे तो प्रायश्चित आवे; " पण ए अर्थ पाठथी मलतो नथी. जो अर्थ लख्यो प्रमाण करो तो, एज पाठमां द्वितिया पदनो अर्थ छे. तेपण प्रमाण करो. वली निषिथना सत्तरमा उद्देशाना अर्थमां कह्युं छे के ' फांसो खाइ मरतो होय तथा लाहे लागी होय इत्यादिक कारणे छोडे ' ते अर्थ पण प्रमाण करवो पडसे. हे

देवानुप्रीय! साधु तो सर्वथा प्रकारे संसारना कामथी निवर्त्या छे, तेथी ए काम साधुनुं नथी. तेमाटे ए ना कही छे, अने तमे कहोछो के, अनुकंपा निमित्ते छोडे तेने प्रायश्चित आवे. त्यारे साधु तो बीजां घणांए धर्मनां काम करता नथी. जेम श्री पार्श्वनाथजीना साधु केशीश्रमण प्रमुख विचरता हता ते वेला माहावीरजीना श्रावक तेमने आहारपाणी प्रमुख चौदे प्रकारनुं दान देता, वंदणा नमस्कार करता, तेमां एकान्त धर्म छे, अने माहावीरजीना साधु पण ए काममां श्रावकने धर्म परुपता, पण पोतानो कल्प नहिं तेथी माहावीरजीना साधु पार्श्वनाथजीना साधुने आहारपाणी आपता नहिं, द्रव्ये वंदणा पण करता नाहिं. वली साधवीने श्रावक श्रावीका वंदणा करे तेमां धर्म छे, अने साधु पण श्रावक आर्याने वंदणा करे तेमां धर्म परुपे, पण पोतानो कल्प नथी तेथी साधवीने साधु द्रव्ये वंदणा करे नाहिं. वली गुरु चेलाने द्रव्ये वंदणा करे नहिं, अने ग्रहस्थीने धर्म परुपे. ए प्रकारे अनेक कार्य धर्मनां छे, पण पोतानो कल्प नथी तेथी पोते करे नाहिं. तेम ए पण त्रसजीवने बांधवा छोडवानो कल्प नथी, तेथी बांधे छोडे नहिं; पण अनेरो ग्रहस्थी अनुकंपा वास्ते त्रसजीवने बांधे छोडे तेने तमे पाप कया न्याये कहोछो?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "साधुनो कल्प नथी तेथी छोडे छोडावे नहिं ते तो ठीक, पण छोडताने भलो जाणे तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे, कारणके पापनुं काम भलुं जाणे तो प्रायश्चित आवेज, पण धर्मपुन्यनुं काम भलुं जाणे तेनुं प्रायश्चित न आवे. ए न्याये ग्रहस्थी अनुकंपा करीने जीवने छोडे तेमां पाप जाणवुं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! इहांतो त्रण करण कह्या ते साधु आश्री जाणवा. ए काम साधु करेतो, बीजा साधु पासे कहीने करावेतो, अने बीजो साधु ए काम करतो होय तेने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे. ए साधुनां त्रण करण छे. जेम पार्श्वनाथजीना साधुने पंचवर्णा कपडां तथा चार माहाव्रतथकां माहावीरजीना साधु पोते आहारपाणी आपे नाहिं, बीजा साधु पासे अपावे नहिं, अने माहावीरजीना साधु आपता होय तेने भला पण जाणे नहिं.

एमज साधवीने साधु द्रव्ये वंदणा करे नहिं, बीजा साधु पासे करावे नहिं, अने बीजा साधू करता होय तेने भला पण जाणे नहिं. ए साधुना त्रण करण कह्या, पण श्रावक पार्श्वनाथजीना साधुने आहार आपे, अने साधवीने द्रव्ये वंदणा करे तेने साधु भला जाणे छे. तेम साधुनो कल्प नथी तेथी, पोते त्रसजीवने छोडे नहिं, बीजा साधुकने छोडावे नहिं, अने बीजा साधु छोडता होय तेने भला पण जाणे नहिं. पण ग्रहस्थी अनुकंपा आणी जीवने छोडावे तेमां गुण केम नथी ? साधु भलुं केम न जाणे ? ग्रहस्थी अनुकंपा आणीने जीवने छोडावे तेने पाप लागे, एवुं कोइ सूत्रमां कह्युं नथी. वली अनुकंपा निमित्ते साधु त्रसजीवने छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तेने प्रायश्चित नथी कह्युं. शाख सूत्र निषिथ उद्देशे १२ में. ते पाठः—

जे भिक्खू कोलूणपडियाए अणयरं तसपाणजायं तणपासएणवा मुंजपासएणवा कठपासएणवा चम्मपासएणवा वेत्तपासएणवा रजुपासएणवा सुत्तपासणवा बंधइ बंधंतंवा साइज्जइ जे भिक्खू बंधेलयंवा मुयइ मुयंतंवा साइज्जई ॥

अर्थः—जे० जे कोइ भि० साध साधवी को० दीन वृत्ति आजीविका निमित्ते अ० अनेरा कोइ त० त्रसप्राणीनी जाती ( गौ महिषी आदिक )ने त० त्रणाना पासे मुं० मुंजना पासे क० काष्टना पासे च० चर्मना पासे वे० नेतरना पासे र० दोरडीना पासे अने सु० सुतरना पासे करी बं० बांधे बं० बंधावे अने सा० बांधताने भलो जाणे. तेमज जे० जे साध साधवी पूर्वोक्त पासे करी बं० बांधेला त्रसजीवने मु० छोडे मु० छोडावे अने सा० छोडनारने भलो जाणे. इति.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहांतो 'कोलुणपडियाए अणयरं तसपाणजायं' एवो पाठ छे. साधु छोडावेतो प्रायश्चित नथी. ए पण अर्थ प्रमाण करे. इत्यादि घणे ठेकाणे पाठथी अणमलता अर्थ छे, ते पण प्रमाण

करो. तेवारे तेरापंथी कहेछेके " पाठथी मले ते अर्थ प्रमाण छे. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! इहां पण पूर्वोक्त अर्थ प्रमाण नथी. कारणके पाठमां 'कोलूणपडियां' एवो पाठ छे. तेनो अर्थ करुणा शब्देकरीने पोतानुं दुःख मटाडवाने अर्थें ए काम करेतो प्रायश्चित आवे, ए अक्षरार्थ. पण छोडे छोडावे तेमांतो 'कोलूणपडियाए' एवुं पण पाठमांतो नथी. तमे अनुकंपा निमित्ते छोडे, छोडावे, छोडताने भलो जाणे तेमां प्रायश्चित आवे, एवुं मतने लीधे जुठ केम लगावोछो ? इहांतो समचय कह्युं छे के, बांध्या जीवने छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे. एतो संसारीना जीव बांध्या छे तेने छोडवा आश्री छे. जो अनुकंपा निमित्ते बांधे, बंधावे, बांधताने भलो जाणे तेनुं प्रायश्चित होय तो 'अनुकंपण-ठयाए' एवो पाठ जोइए, पण एवो पाठ नथी. वली इहांतो एम कह्युं छे के, त्रणांना, मुंजना, काष्टना, चामडाना, बेतनी छालना अने सुतरना एटली जातना बंधणेकरी बांधे, बंधावे अने बांधताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे, एवुं कह्युं छे. हवे जुठे ! मुंजाद्रिकनां बंधण साधु राखे नहिं. साधुने राखवां कोइ सूत्रमां कह्यां होयतो बतावो. हवे ज्यारे ए बंधणो राखे नहिं त्यारे बांधे क्यांथी ? वली साधुने ठेकाणे कोण बांधी जाय, के तेने छोडे; कारणके पशु प्रमुख जीव रहेतो होय त्यां साधुने तो रहेवुं नहिं, एम कह्युं छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १६ में.तेथी ए पाठ साधुना ठेकाणानो तो भासतो नथी. ए पाठतो साधुजी ग्रह-स्थीना घेर आहारपाणीना अर्थें गोचरीए जाय, त्यां ग्रहस्थी त्रसजीव (गाय, भेंस, बलध, वाछडां प्रमुख ) ने बांधतो होय तथा छोडतो होय तेने कहेके. ए तारुं काम हुं करीश, तुं मने अन्नपाणी आप. एवी रीते आहारने अर्थें बांधे छोडे तो चोमासी प्रायश्चित कह्युं, एम भासे छे; पण अनुकंपानो तो पाठज नथी. 'कोलूणपडिया' एवो पाठ छे. करुणा शब्द करीने कहे के, हुं भुखे मरुंछुं तेनुं नाम कोलूणपडिया छे. शास्त्र सूत्र विपाकमां. मृगयालोढीयाना अध्ययनमां गौतमस्वामीए आंधला पुरुषने करुणा शब्दे करी आजीविका करतो दीठो. ते ठेकाणांनो अने

आ पाठ एक सरखो छे. एम आजीविका अर्थे बांधे छोडे तो प्रायश्चित आवे दीसे छे. वली संसारना सर्व कामथी साधु निवर्त्या छे तेथी प्रायश्चित कह्युं छे, पण बीजो कोइ पुरुष पोतानो मेले अनुकंपा करी छोडे, छोडावे अने छोडताने भलो जाणे तेने गुण थाय के नहि ? वली गृहस्थी अनुकंपा करी जीवने छोडे छोडावे तेने पाप लागे, एवुं कोइ सूत्र, टीका, प्रकरण या प्राचीन ग्रंथमां, क्यांय कह्युं होयतो बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, उपाशकदशामां चूलणिप्पिया पोसह पडिमामां माताने बचाववा उठया त्यारे माताए कह्युं के, हे पुत्र ! तमे प्रायश्चित ल्यो. जो उगार्यां लाभ होय तो प्रायश्चित केम कह्युं ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहां तो एम कह्युं छे के, देवता चलाववा आव्यो अने चली गया. ते अरधी रातनो समय छे अने कोलाहल शब्द करी अजयणाथी उठया छे. ए प्रत्यक्ष विरुद्ध छे, कारण के पोसामां प्रहर रात गया पछी उतावला शब्दे कोलाहल करवो न जोइए, अने कर्यो. उतावला अजयणाथी रातना हलफलता उठवुं न जोइए अने उठया. थंभो पकड्यो अने मूलथी छोड्या संजोगने आदर्यो. ते माटे माताए 'भगपोसए भगनीयमे भगवए' कह्युं, पण एम नथी कह्युं के, पोसामां जीव बचाववो नहिं अने माताने बचाववा उठया ते माटे व्रत भाग्यां. वली पोसानी करणी मूलव्रत, संवर, निर्जरा ने एकान्त धर्म मोक्ष मार्गनी छे, अने अनुकंपानी करणी शुभ जोगनी पुन्यप्रकृतिनी छे. ते व्रतमां कसर लगाडीने काम करवुं न जोइए. अभिग्रह खंडीने साधुनी वैयावच पण न करवी, ते दृष्टांते. जेम बे साधु छे, तेमां एके काउसग्ग कर्योछे, एवामां गुरु पधार्या. हवे गुरुनी सेवा कर्यामां अकान्त लाभ छे, पण काउसग्गवालो तो पोते अधिक गुण आदर्या छे ते माटे सेवा न करे; पण बीजो साधु सेवा करे तेने लाभ जाणे के खोट जाणे ते कहो. तेम पोसावालो अनुकंपानी करणी कल्पे तेवी करे. पण पोताना त्यागने कसर लगाडीने अनुकंपा न करे, पण बीजो कोइ पुरुष अनुकंपा करे तेने लाभ केम न जाणे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "अरणिकश्रावकने

देवता डगाववा आव्यो त्यारे देवताए कह्युं के, हे अरणीक! तारो धर्म मुंक, नहिं तो तारुं वाहाण समुद्रमां डुबावी नांखीश. ए जुओ! जो जीव बचाव्यां लाभ होय तो एटलां माणस उगारवा माटे तेणे धर्म केम न मुक्यो?" तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय! अनुकंपाथकी पोतानो धर्म जे उत्कृष्टो पदार्थ छे ते केम मुंके? जेम कोइ सो पुरुष साधुने आवीने कहे तथा तमनेज कहे के, तमारा माथापर एकवार पाघडी बांधी ल्यो, तथा एकवार साधुपणुं मुंकी द्यो तो अमे सोए जण दीक्षा लइशुं. तेवारे तमे पाघडी बांधो के नहिं तथा साधपणानो स्वांग छोडो के नहिं? केमके सो जणाने दिक्षा दीधाथी तो धर्म छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "दिक्षा देवराव्यां तो धर्म छे, पण पोतानो धर्म छोडी साधपणुं केम मुंकोए? पोतानुं साधपणुं राखीने धर्म करीए." त्यारे हे देवानुप्रीय! अरणीक श्रावक जीव बचाव्यामां धर्म जाणे छे, पण पोतानो धर्म छोडीने ए अनुकंपा केम करे? वली कोइ स्त्री साधुने कहे के, तुं मुजने भोगव, नहि तो हुं मरीश. ते माटे शुं कोइ पोतानो धर्म मुंकशे? वली कोइ कुलवंत पुरुषने कहे के, तुं गायनुं मांस खाय तो राज्य आपुं; पण ते उत्तम पुरुष पोतानो धर्म कुल संबंधी नथी मुंकतो अने लोक विरुद्ध कार्य नथी करतो. त्यारे अरणीक श्रावक पोतानो धर्म केम मुंकशे? अहिंयां अनुकंपाने हिंणी नथी जाणता, पण धर्म मुंकवो पडे ते माटे जीवने उगारवा वास्ते धर्म केम मुंके? वली देवताए पण एम नथी कह्युं के, तने जीव छोडाववो कल्पे नहिं. पण मारा केहेवाथी तुं कही दे के, जीवने मत मारो तथा झाझने मत डुबावो एम देवताए केहेवराव्युं होत अने अरणीक श्रावके न कह्युं होत तो तमारुं केहेवुं मलत; पण देवताए एम नथी केहेवराव्युं. देवताए तो धर्म छोडवानुं कह्युं छे. हवे जीवने छोडाव्यां धर्म थाय, ते धर्म तो देवता पेहेलांज छोडावे छे. ते धर्म छोड्याथी बाकी शुं रहे? ते डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली श्रेणीकराजाए अमारपडहो वज-

कह्यो तथा जीवनी हिंसा टलावी कही छे. शास्त्र सूत्र उपाशक अध्ययन आठमें, माहाशतकजीना अधिकारमां. ते पाठः—

ततेणं सा रेवइ गाहावइणी मंसलोलुया मंसएहिं मुछिया जाव अझोववणा बहू विहेहिं मंसेहिय सोल्लेहिय तलिएहिय भज्जिएहि. सुरंच महूंच मेरंगच मज्जंच सिंधुंच पसणांच आसाएमाणि २ विहरइ. तएणं रायगिहे नयरे अणयाकयाइं अमायाए घुठेयावि होज्जा. तएणं सा रेवइ मंसलोलुया मंसमुछिया कोलघरिए पुरिसे सद्दावेई २ एवंव. तुझे देवा० ! मम कोलघरिए हिंतो वयहिंतो कल्ला कल्लिं डुवे २ गोणपोयए उद्दवेह २ ममं उवणेह. तएणंते कोलघरिया पुरिसा रेवइ गाहावइणीए तहत्ति एयमठं विणएणं पडिसुणंति २ रेवइए गाहावयणिए कोलघरिए हिंतो कल्लाकल्लिं दुवे २ गोणपोयए वहेइ २ रेवइए गाहावइणीए उवणेइ. तएणं सा रेवइ तेहिं गोमंसेहिं सोल्लेहिय ४ सुरंच ४ असाएमाणी २ विहरइ ॥

अर्थः—त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गा० गाथापत्नि निर्दयथकी सोंको मार्या पछी मं० मंसनी लोलपी मं० मु० मांसनी मुर्छित जा० यावत् अ० अत्यंत गृद्धपणाथी ते ब० घणा वि० प्रकारना मं० मांसना भेदेकरी सो० सुलादिक प्रमुख त० तलीने भ० भुंजीने खाय. सु० सुरा म० मदिरा पान ते मे० गोल धावडीनो नीपन्यो, म० माखीनुं मध विशेष सिं० सिंधु ताडि प्रमुख खजुरनो रस विशेष अने प० चंद्रहास्यादि मदिराने आ० आस्वादे, स्वाद लेती वि० विचरे. त० तेवार पछी रा० राजगृह न० नगरे अ० एकदा प्रस्तावे अ० अमारी (कोइ जीवने मारसो नही एवी) घोषणा राजाए प्रवर्तावी. त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गाथापत्नि मंसलो०

मांसनी लोलपी मंसमु० मांसनी मुर्छित थइथकी को० पिहरना घरना प्रतीतकार्यां पु० पुरुषने स० तेडावे, तेडावीने ए० एम कहेः—तु० तमे दे० हे देवानुप्रीय ! ए प्रकारे म०को० मारा पिहरना घरथी व० गोकलव्रजथी क० दीन दीन प्रत्ये दु० बबे गो० गायना पो० वाछडा उ० मारी मारीने म० मुजने उ० प्रछन्नपणे आणी द्यो. त० तेवारे ते को०पु० पिहरना मनुष्य रे० रेवती गा० गाथापत्निना वचन त० तहत करी ए० ए वचन साचां करीने वि० विनय करीने पडि० सांजले, सांजलीने रे०गा० रेवती गाथापत्निना को० पिहरना घरथी प्रजात वेलाए दु० बबे गो० गायना वाछडानो व० वध करे, करीने रे०गा० रेवती गाथापत्निने उ० आणीने आपे. त० तेवारे सा० ते रे० रेवती गाथापत्नि ते० तेगो० मांसनी लोलपी सुलादिकनी गृद्धि सु० सुरा मदीरा पाननो अ० स्वाद लेती थकी वि० विचरे छे.

जावार्थः—हवे जुउ ! श्रेणीकराजाए अमारपडो वजडाव्यो ते गुण खाते के अवगुण खाते ? ए करणी शुज के अशुज ? ए शावास्ते अमारपडो वजडाव्यो ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, एतो राजनीति छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जो राजनीति होय तो राजनीतिना पालणहार जेटला राजा छे ते सर्वने राजनीति एवीज जोइए. राजनीति तो सुयगडांगसूत्रना १७ मा अध्ययने अधर्म-पक्षमां वखाणी छे. वली उववाइसूत्रमां कोणीकनी राजनीति वखाणी. वली जंबुद्वीपपन्नतिमां जर्तेश्वरनी राजनीति वखाणी, त्यां घणो विस्तार छे; पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. हवे ए कया शास्त्रमां राजनीति कही छे ते कहो. कारण के राजनीति तो राज्य जमावे, वेरीने मारे, अने संग्रामे जय पामे तेने कहीयें. वली ठाणायांग ठाणे त्रीजे 'सामे दंडे जेदे तिविहा अथ्थ जोणि पं. तं.' वली रायप्रशेणीमां चित्तसार्थीना गुण वखाण्या, त्यां पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. तेमज ज्ञातामां अजयकुमारना गुण वखाण्या, त्यां पण अमारपडो वजडाव्यो कह्युं नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय ! ए राजनीति कया सूत्रमां कही छे ते कहो. ते

वारे तेरापंथी कहे छे के, जिनमार्गमां अमारपडो वजडाववानो अने जीव उगारवानो आचार होय तो, बीजा कोइ राजाए ए काम केम न कर्युं ? तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! दसासुतखंधमां दसमे अध्ययने नव नियाणना भाव कह्या, त्यां श्रेणीकराजाए गाम नगरमां स्थानक आश्री ढंढेरो फेरव्यो छे के, घर, हाट, वखार, पर्वस्थान धातुनां गाम, सोनानी खाण इत्यादिक सूत्रमां स्थानकनां घणां नाम कह्यां छे; ते स्थानकनी आज्ञा देवरावी के, हे भाइ ! जेने जग्या होय ते वीरप्रभुना साधुने रेहेवा आपजो. हवे जुओ ! श्रेणीकराजाए स्थानक आश्री ढंढेरो फेरव्यो, तेम बीजा कोइ पण राजाए ए काम नथी कर्युं. ए काम जिनमार्गी साधुना रागीनुं छे के साधुना द्वेषी मिथ्यात्वीनुं छे ते कहो. वली अंबडश्रावक आधाकर्मी प्रमुख दोष टालतो हतो, अने बीजो कोइ श्रावक पडिमा विना आधाकर्मी दोष टालतो कह्यो नथी. हवे कहो ! अंबडश्रावके ए काम रुडुं कर्युं के भुंडुं कर्युं ? वली दिक्षानी दलाली श्री कृष्णमाहाराजे करी अने बीजा कोइए नथी करी. ते रुडी करी के भुंडी करी ते कहो. हे देवानुप्रीय ! एम केम कहोछो के, जीव बचाव्यां तथा अमारपडो वजडाव्यां धर्म होयतो बीजा राजाए केम न फेरव्यो ? जेणे फेरव्यो तेनो पडल्यो. तेने केवां फल लाग्यां ते कहो. ढंढेरो फेरव्यो अने साधुने स्थानकनी आज्ञा देवरावी, तेनां फल भलां के भुंडां ? ए करणी शुभ के अशुभ ? हे देवानुप्रीय ! आगलतो श्रेणीकराजाए आहेडो खेलतां गर्भवंती हरणी विंधी तेथी नर्कनुं आउखुं बंधायुं, एवुं टीका तथा प्रकरणमां कह्युं छे; अने पछी अनाथी–मुनीराजकने समकित पाम्या. ते उत्तराध्ययनना २० मा अध्ययनमां अधीकार छे. पछी राजगृही नगरीमां तेमणे अमारपडो वजडाव्यो के 'कोइ, जीव मारवा पामे नहिं.' एवो सातमा अंगमां अधीकार छे. ए काम समकित पामीने शा माटे कर्युं ते कहो. हवे पूर्वोक्त धर्मीराजाने जगत धन धन

कहे, पण त्रण पक्षवाला मुंझे जाणे. तेमां एक तो मांसनो गृद्धि, बीजो कसाइ, अने त्रीजो जेनी श्रद्धा जीव बचाववामां पाप मानवानी होय ते निन्हव. ए त्रण निर्दय, धर्मीने मुंझो जाणे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "सूत्रमां ढंढेरो फेरव्यो कह्युं छे, पण श्रेणीकने धर्म थयुं एम नथी कह्युं. जे धर्म कहे तेने जुठ लागे छे." तेनो उत्तर

हे देवानुप्रीय! सूत्रमां ढंढेरो फेरव्यो कह्युं छे, पण पाप लाग्युं तो कोइ सूत्रमां कह्युं नथी. तमे श्रेणीक राजाने पाप लाग्युं कहीने जुठ केम बोलो छो? श्रेणीक राजाने जेवां फल लाग्यां छे तेवांज फल बीजो कोइ दयावंत, जीवने बचावशे तेने पण लागशे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, एम जबराइथी जीव बचाव्यां धर्म थाय तो, इंद्र माहाराज चौद राजलोकमां अमारपडो वजडावीने जीवदया पलावे अने माछलांनां मोंढां बंध करी दे, पण धर्म नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! आ अवसरमां जैन धर्म चालणी चालणी थइ रह्यो छे. सीमंधरस्वामीने इंद्र पुछीने कहे तो घणा जीवने मिथ्यात्व मटे, संदेह टले. एमां तो तमे पण धर्म कहो छो. ए तो इंद्रकने केहेवराववुं जोइए? एमां तो पाप नथी? पण ते केम नथी केहेता? तमे एवा कुहेत केम मेलवो छो? वली तेरापंथी कहे छे के "मार्गमां बेंइंद्रियादिक त्रसजीव पड्या छे, ते देखीने तडकेथी लइने छांयडे मुंके अने तेनी अनुकंपा करे तो दस प्रकारनो असंजम लागे. एम ठाणायांगमां कह्युं छे." एवुं सूत्रनुं नाम जुठुं ले छे. ते पाठ.

पंचिंदियाणं जीवाणं असमारंभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जइ तं० सोयमयाउं सोखाउं अववरोवेत्ता भवइ सोयमएणं दुखेणं असंजोगेत्ता भवई एवं जाव फासामयेणं दुखेणं असंजोएत्ता भवइ एवं असंजमोवि भाणियव्वो.

अर्थः—हवे पंचेंद्रि आश्री संजम असंजम कहे छेः—पं० पंचेंद्रि जीवने अ० असमारंभ करतां थकां द० दस प्रकारे सं० संजम क० लागे तं० ते कहे छेः—सो० कानना सुखथी अ० अलगो न करे, सो० श्रोतें-

ड्रिना दुःखने विषे अ० जोडे नहिं. ए० एमज जा० यावत् फा० स्पर्शना दुःखने विषे अ० जोडे नहिं ए० एम अ० असंजम पण न्ना० कहेवो.

न्नावार्थः—हवे जुउ ! अहिंयां तो एम कह्युं छे के, पांच इंद्रिना सुखथी विछोडे अने पांच इंद्रिना दुःखमां जोडे. ते पण समारंन्न करतो थको होय तेने असंजम लागे. हवे समारंन्न नाम तो मार्यानुं छे. शाख सूत्र दस वैकालिक अध्ययन छठे. ते पाठ लखीये छीए:—

पुढविकायंवि हिंसंतो हिंसइन्न तयस्सिए तसेय विविहे पाणे चक्खूसेय अचक्खूसे २७ तम्हाएयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइ वढ्ढणं पुढ्ढविकायं समारंन्नं जाव जीवाए वज्जाए २ए ॥

अर्थः—पु० पृथ्वीकायनी हिं० हिंसा करतो थको हिं० हिंसा करे त० तेनी नेश्राए जे जीव त० त्रस वि० विविध प्रकारना पा० प्राणी प्रत्ये च० चक्षु गोचर ( बादर ) अ० शुक्ष्म त० ते न्नणी ए० एवुं वि० जाणीने दो० ए दोश दु० दुर्गतीनो व० वधारणहार पु० पृथ्वीकायनो सं० समारंन्न ( हणवुं ) जा० जाव जीव सुधी व० छोडे. ॥

न्नावार्थः—ए जुउ ! सूत्रमां शाक्षात हणयानुं नाम तथा दुःख दीधानुं नाम समारंन्न कह्युं छे, पण सुख निमित्ते अनुकंपाने हेते अलगा मुंके, तेने समारंन्न लागे एवुं कया सूत्रमां कह्युं छे ते बतावो. वली पडि-लेहणा करतां तथा उपाश्रय पुंजतां घणा जीव देखी वेगला परठे, कचरो काढी वेगलो परठे तेने समारंन्न केम लागशे ? जो समारंन्न लागे तो तमे ए काम केम करोछो ? वली साधु सुखे बेठा छे तेने कोइ श्रावक आवीने कहे के, हे स्वामी ! तमने फलाणा गामे तमारा गुरुए तेडाव्या छे, तेने समारंन्न केम लागशे ? वली साधुना शरीरे दुःख जाणी श्रावक औषध आपे, तेथी साधुने अतिसारादिक घणुं दुःख उपजे पण रोग जाय. हवे ए दातारने औषधनी अशाता दीधां माटे अशाता थाय के शाता-वेदनी थाय ते कहो. हे देवानुप्रीय ! अनुकंपाकरी दुःखना छेकाणेथी

लेइ सुखना ठेकाणे मुंके तेने समारंभ केम लागे ? एवुं मतना लीधे जुठ केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के " इरियावहि पडिक्कमे छे तेवारे गणाउगणा संकामियानो बोल आलोवीए छीए, तेमां जीवनी अनुकंपा करतां गणाउगणा करे ते पण भेलो आव्यो. एमां लाभ क्यांथी ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एतो अभिहया वत्तिया लेसियाथी मांडी जाव जीवीयाउं ववरोविया सुधी हिंसाना बोल छे. चढती चढती हिंसा छे. पंथे प्रमादने वशे कोइ जीव विराध्यो होय ते आलोउवुं. 'जेमे जीवा विराहिया' एवो पाठ छे, पण 'जेमे जीवा उगारीया' एवो पाठ नथी. हे बालमीत्रो ! ए दस बोलतो हिंसामां छे, अने प्राणीनी अनुकंपा तो प्रत्यक्ष दयामां छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " अभयदाननो लाभ घणो छे. ते तो साधु त्रण करण ने नव जोगेकरी माहाणो माहाणो शब्द करी चुक्या, अने अनुकंपानो लाभ थोडो छे ते शा वास्ते करे" ? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! सझायथकी ध्यानमां लाभ घणो छे ते माटे शुं ? ध्यान करीने सझाय मुंकी देशे? थोडा घणा लाभनुं शुं कारण छे. लाभ तो पोताना प्रणाम उपर छे, पण अहो अनुकंपा-रहित ! जेने जेवो कल्प छे तेवी करणी न करे तो तेनुं अभयदान पण कर्म फल देछे, संसारमां रुलवानो हेतु छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " जीव उगार्ये लाभ जाणोछो, त्यारे तमे ठामठामना जीवडा केम नथी पुंजता ? धर्मपुन्य तो तमारे पण करवुं छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अमारे धर्म करवो ते तो खरो, पण कल्प प्रमाणे थाय. वली धर्म-उपदेश देवामांतो तमे पण लाभ जाणोछो. त्यारे तमे मेला उत्सवमां जइने, वेश्याना पाडामां जइने अने घेर घेर जइने उपदेश केम नथी करता ? एमां तो एकांत धर्म तमे पण जाणो छो. तो ते प्रमाणे केम नथी करता. तेवारे तेरापंथी कहे छे के " उपदेश देवामां तथा सझाय करवामां एकांत धर्म छे, पण कल्प प्रमाणे थाय. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेम ए कल्प प्रमाणे थाय तेम जीव उगारवो पण कल्प प्रमाणे थाय. जेम राजानो मेहेतो मुसदी तथा कोठीवाल पुन्यवंतजीव मजुरी न करे, पण निर्धन मजुरी करी बे टका

लावे तेने लाभ जाणे के नहिं. तेम साधु तथा सामायक पोसामां बेठेलो श्रावक कल्पे तेवी अनुकंपा करे. सझाय ध्यानरुप घणो लाभ छोडीने अकल्पनीक काम जाणे तो, थोडा लाभनुं अनुकंपानुं काम न करे, पण कोइ संवर सामायक विना नवरो बेठो होय ते, जीवनी अनुकंपारुप थोडो लाभ कमायतो तेने लाभ केम नहिं थशे? वली जेम सामायक पोसामां बेठां तो साधुने पण दान देवुं कोइ सूत्रमां चाल्युं नथी. पण खुल्लो दान दे तेने भलो जाणे के नहिं? तेम पूर्वोक्त साधु श्रावक कल्पे तेवी अनुकंपा करे, पण खुल्लो अनुकंपा करे तेने भलो जाणेज.

वली तेरापंथी कहे छे के "जीवने छगार्यें रक्षा कर्यें लाभ थाय तो, गजसुकमाल पडिमा साधवा गया, ते भगवंत जाणे छे के, एने सोमील ब्राह्मण परिसह देसे. त्यारे एनी अनुकंपा माटे बे साधु रक्षा करवा केम न मोकल्या?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! प्रभुनी तो गजसुकमाल उपर अनंत भावदया हती, पण एम रक्षा कर्याथी बारमी पडिमा सधाय नहिं अने मुक्तिए जवाय पण नहिं. वली प्रभुए तो गजसुकमालने अनंत सुखरुप मुक्ति आपी छे. बे साधु साने काजे मुंके. वगर साधु मुक्यां पण अनंती दया रक्षा करी कहीयें. जेम मावीत्र पोताना पुत्रने बलात्कारे कडवुं औषध खवरावे, तेथी ते मोंढेथी घणा शब्द करे. ए औषध खवरावतां थकां देखावमा तो माता पीता अशाता दे छे, एम देखीए छीए; पण परमार्थें मावीत्र पुत्रना हितकारी छे के अहितकारी छे? जेवी मावीत्रनी द्रष्टि पुत्र उपर, तेवी नेमीनाथ भगवंतनी द्रष्टि गजसुकमाल उपर हितनी हती. वली तेरापंथी कहे छे के "चोर, सिंह अने परदारा लंपटने मारता देखीने, एने मारो अगर मत मारो एम न कहे. त्यारे जुओने! मत मारो पण साधु न कहे, त्यारे छगारवो क्यां रह्युं?" तेना उत्तरमां सुयगडांग श्रुतस्कंध बीजे अध्ययन ५ में. ते गाथा ३१ मी लखीए छीए:—

असंसे अरकुयंवावि, सव्व दुक्खे त्तिवापुणो;
वज्जपाणा अवझंति, इति वायं णणांसरे. ॥ ३१ ॥

अर्थः—हवे अनेरा वचन आश्री संजम कहे छे. अ० जगमां समस्त वस्तु घट पटादिक अक्कु० संख्याने अभिप्राये ( नित्य ) सास्वती छे, एवुं वचन न बोले. वि० अनित्यपणुं पण न बोले. स० सघलो जगत दुःखी छे एम पण न बोले; कारण के चारित्रादिक प्रणमवाथी सुख पण दीसे छे. यदुक्तं. 'तण संथार णिवणोवि मुणिवरोवि भट्टराग मयमोहो जंपावइ मुत्तिसुहं कतोतं चक्कवट्टीवि.' व० विणासवा योग्य चोर परदारागामि आदिक छे अथवा अ० अवध्य अविणासवा योग्य छे एवुं पण न कहे. जो कहे तो तेना कर्मनी अनुमोदना लागे. एणी परे सिंघ, व्याघ्र, मंजारादिक हिंसक जीव अनेरा जीवनी घात करवा उद्यमवंत देखी साधु मध्यस्थपणुं अवलंबी इ० ए बे भाषा ( अनेराने अप्रतीत कारणी छे माटे ) न बोले.

भावार्थः—हवे जुओ! इहां तो एकान्त पक्षनी ना कही छे. लोकने एकान्त सास्वतो पण न कहेवो, तेम अशास्वतो पण न कहेवो. आ लोक एकान्त सुखी छे एम पण न केहेवुं, तेम दुःखी छे एम पण न केहेवुं. आ चोर तथा परदारागामिक मारवा योग्य छे अथवा नथी मारवा योग्य, एवुं एकान्त वचन न बोलवुं. जो 'ए मारवा योग्य छे, माहा दुष्ट छे' एम कहे तो तेना प्राण जाय, अने 'तेने मत मारो, ए मारवा योग्य नथी, भलो आदमी छे' एम कहे तो ए लोक विरुद्ध छे; कारण के ए चोर मुक्यो थको वली चोरी प्रमुख अकार्य करे. तेथी लोक कहे के, ए साधुनो उपगार छे. एम चोर जारना पक्षी ठरावे. ते माटे साधुए 'मारो, मत मारो' कांइ पण न कहेवुं. ए रीते सुयगडांगना २१ मा अध्ययनमां सर्व बोल एकान्त पक्षे बोलवा आश्री ना कही छे. 'आधाकर्मी आहारादिक भोगवे तेने कर्म लागे' एवुं वचन एकान्त न बोलवुं; 'तेम कर्म न लागे' एवुं पण वचन एकान्त न बोलवुं. इत्यादिक वचन एकान्त पक्षे बोलवा आश्री ना कही छे. तेम ए पण वचन एकान्तपक्ष आश्री ना कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के "जीव बचाव्याथी पाप लागे ते माटे 'मारो, मत मारो' न केहेवुं." ए तो छद्मस्थने निश्चेकारी भाषा

एकान्त पक्षे न बोलवी, ते माटे ना कह्युं छे. सहेज स्वभावे कोइ आवीने पुछे के, हे स्वामी ! चोरने मार्यानुं शुं फल छे ? तेवारे साधु हिंसानां फल कही देखाडे, अने चोरने छोडाववा उगारवानां फल पुछे त्यारे भलां फल कही देखाडे. वली तमारा मतमां तो, चोरने मारे अने चोरने उगारे ए बेहुनां फल सरखां छे. त्यारे कोइ साधुने आवीने कहे के, हे स्वामी! मुजने चोर मारवाना पचखाण करावो, तेवारे साधु पचखाण सुखे करावे; पण कोइ कहे के, मुजने चोर उगारवाना पचखाण करावो,त्यारे साधु न करावे. हवे जो बेउ वातोमां सरखा गुण अवगुण होय तो उगारवाना पचखाण केम न करावे ? एम हैयाथी विचारी जुउ, तेवारे तेरापंथी कहे छे के "अनुकंपा कर्याथी लाभ होय तो नमीराज रुषीश्वरने इंद्रे कह्युं के, मीथीला नगरी बले छे, तमारी आंखमां अमृत वसे छे, तमे सामुं जुउ तो बलती रही जाय. तेवारे अनुकंपा कीधां लाभ जाणे तो नमीराजे सामुं केम न जोयुं ?" एवुं एकान्त जुठ बोले छे, कारणके उत्तराध्ययनजीमां तो नीचे मुजब कह्युं छे. ते अध्ययन ए मानो गाथा १२, १३, १४, १५, १६:—

एस अग्गीय वाऊय, एयं डझइ मंदिरं;
भयवं अंतेउरं तेणं, कीसणं नाव पिस्कहं. ॥ १२ ॥
एयमठं निसामित्ता, हेउ कारण चोइउं;
तउ नमिराय रिषि, देविंदं इण मबवी. ॥ १३ ॥
सुहं वसामो जीवामो, जेसिंमो नत्थि किंचणं;
मिहिलाए डझमाणीए, नमे डझइ किंचणं. ॥ १४ ॥
चत्त पुत्ते कलत्तस्स, निवा वारस्स भिक्खुणो;
पियं नविज्जए किंच, अप्पियं पि न विज्जए. ॥ १५ ॥
बहु खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो;
सबउ विप्प मुक्कस्स, एगंत मणु पस्सउ. ॥ १६ ॥

अर्थः—ए० ए प्रत्यक्ष अं० अग्नि वा० वायराथी ए० ए रु० बळे छे तमारां मं० घर ज० हे जगवान ! अ० अंतःपुर तमारां, छतां की० शा माटे ना० सामुं जोता नथी ? ॥१२॥ ए० ए पूर्वोक्तार्थ नि० सांजळीने जे पोताना आत्मानुं होय ते रुडी परे राखवुं. घरथी तारुं निकळवुं ते परजीवने डुःखनो हेतु अने डुःखनुं कारण थयुं एवा हे० हेतुना कारणे चो० प्रेर्योथको त० त्यार पछी न० नमीराजऋषि दे० देवेंद्र सक्रेंद्र प्रत्ये इ० म० एम बोल्या. ॥१३॥ सु० जेम सुख थाय तेम व० हुं वसुंछुं, जी० जीवुंछुं, जे० जे माहारी न० नथी किं० कांइ अल्प मात्र वस्तु. मि० मिथीला नगरी रु० बळतांथकां न० नथी माहारुं रु० बळतुं किं० अल्प मात्र पण.॥१४॥ च० छांड्या पु० पुत्र क० स्त्री जे यतिए, तेने नि० सर्व व्यापार रहित जि० एवा साधुने पि० प्रीयकारी वल्लज न० नथी किं० कांइ थोडुं पण, अ० अप्रीयकारी पण नथी कांइ. ॥१५॥ ब० घणुं खु० निश्चे मु० साधुने ज० श्रेय सुख छे. अ० घर रहित अणगार जि० साधु स० सर्व (बाह्य धनादि, अज्यंतर कषायादिक) परिग्रहथी वि० विशेष मु० मुकाणा छे, अने ए० हुं एकलो छुं, एवुं एकत्वपणुं म० देखतो थको विचरे ते साधुने सुख छे. ॥१६॥

जावार्थः—हवे जुओ ! इहांतो एम नथी कह्युं के, तमारी आंखोमां अमृत वर्से छे, तेथी सामुं जुओ तो बळती रही जाय. इहांतो इंद्रे परिक्षा करी छे के, मोहनी-कर्म जीत्यां के नथी जीत्यां ? इहां अनुकंपानुं नाम पण क्यां छे ? हे स्वामी ! तमारुं अंतःपुर बळेछे माटे तमे सामुं केम नथी जोता ? इहां मोहनी उपजावी छे. त्यारे स्वामी बोल्या के, मेंतो मुक्यां छे, हुं तो सुखे वसुछुं, मारे बळवानुं कांइ नथी; पण इंद्र एम नथी कह्युं के, जुओ तो नगरी बळती रहे. जो इंद्र एम कह्युं होय तो नमीराजाए एम केहेवुं जोइए के, हे जाइ ! एवी अनुकंपा मुजने करवी कल्पे नहिं. एम कह्युं होततो अनुकंपानो प्रश्न थात, पण इंद्र एम नथी कह्युं. इंद्रेतो मोहनीनी परिक्षा निमित्ते पुछ्युं छे. वळी आगळ मेहेल, कोट तथा दरवाजा कराववाना अने धन जंडार जराववाना प्रश्न

इत्यादिक प्रश्न पुछया छे. एमां कयो अनुकंपानो प्रश्न छे ? ए तो सर्व परिक्षाना प्रश्न छे. नमीराज रुषिश्वरने समकित-मोहनी, चारित्र-मोहनी तथा विषय कषायादिक उपशम्या के नथी उपशम्या ? इत्यादिक प्रश्न सर्व परिक्षाना छे. वली नगरीनुं बलवुं तथा उगारवुं ए नमीरायना हाथमां नथी. वास्ते ए प्रश्न अनुकंपानो नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " माहावीरस्वामीए दिक्षा लीधी ते दीवसथीज शरीर वोसराव्युं छे. ते दीवसे भगवंतनी अनुकंपा वास्ते इंद्रे आवीने कह्युं के, हे स्वामी ! हुं तमारी सेवा करुं, परिसह टालुं अने साथे रहुं; पण भगवंते वान्छी नहिं. एवुं परंपरामां कहेवाय छे. जो अनुकंपा कीधां लाभ होय तो इंद्रनी कीधी अनुकंपा भगवंते केम न वांछी ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एवो कोण छे जे भगवंतनी अनुकंपा करे. कारण के प्रभु तो शूरवीर सीरमुगट छे. एतो मूलथीज कोइनी साज वांछता नथी. सेवकनी साज तो असमर्थज वांछे. वली अनेरानी साजे कर्म खपतां दीठां नहिं तेथी साज वांछी नहिं. वली केवलज्ञान उपन्या पछी इंद्रे आवीने कह्युं के, हे भगवंत ! साधुने आज्ञा केटला प्रकारनी जोइए ? त्यारे भगवंते कह्युं, के पांच जणानी आज्ञा जोइए. त्यारे इंद्रे कह्युं के, हे स्वामी ! जो पांचनी आज्ञामां इंद्रनी आज्ञा जोइए तो स्वामी सुखे लेजो, मारी आज्ञा छे. शाख सूत्र भगवती शतक १६ में उ. २ जे. तथा ठाणायांग ठाणे ५ में. हवे जुओ ! भगवंते पोतानां साध साधवो वास्ते इंद्रनी आज्ञा लीधी छे. ते माटे ए अनुकंपानो प्रश्न नथी. अनुकंपानो प्रश्न तो क्यारे थाय के जो भगवंते इंद्रनी साज तथा सरणुं वंछ्युं होत, अने इंद्रे दोष लागतो जाणीने अनुकंपा न कीधी होत तो अनुकंपानो प्रश्न थात; पण इंद्रे तो भगवंतनुं कष्ट निवारवामां भक्ति लाभ जाण्यो, ते माटे अरज कीधी, पण भगवंते पोतानां कर्म खपाववा माटे इंद्रनी साज न वंछी. जेम साधूजीने दान देवामां श्रावक बारमुं व्रत निपजतुं जाणी आहारपाणी आमंत्रे, पण साधूजो कर्म खपाववा तपश्या करे, तेमाटे

ग्रहस्थीनां आहारपाणी न ले तथा साज न वंछे; पण ग्रहस्थीने दान देवामां पाप केम जाणयुं जाय. हे देवानुप्रीय ! एम केम कहोछो के, भगवंतनी अनुकंपा कीधां तथा भगवंतने साज दीधां इंद्रने पाप लागे तेथी भगवंते इंद्रनी साज न वांछी. एवुं मतना लीधे जुठ केम बोलोछो?

वली तेरापंथी कहेछे के, जो जीवनी अनुकंपा कीधां तथा जीवने उगार्यां लाभ होय तो, चेडा कोणीकनी लडाइ थइ तेमां अनेक मनुष्य मुआं. ते चेडा कोणीकने भगवंते केम न वर्ज्यां ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! उपदेश दइ छोडाव्यामां तो तमे पण धर्म कहोछो. त्यारे चेडा कोणीकने भगवंते जइने उपदेश केम न दीधो ? उपदेश देवामां तो पाप नहोतुं लागतुं ? पण हे देवानुप्रीय ! एतो निमित्त कारण एज रीते छे. ते टाल्युं टले नहिं. भावी पदार्थने टालवा कोइ बलीष्ट नथी. वली तमने अनुकंपा ए लेखे करवी न भाषी, त्यारे श्री भगवतीमां नवमे शतके, जमालीने अधिकारे, जमालीए आवीने कह्युं के, हुं केवली थइने आव्यो छुं. त्यां भगवंते जमालीने खष्ट केम न कर्यो ? अने गोशालो आव्यो त्यारे भला भला प्रश्नोत्तर करी तेने खष्ट कर्यो, त्यारे शुं जमालीने खष्ट करवामां लाभ नहोतो ? वली दसासुतखंधमां श्री वर्धमानस्वामीए, पोताना साधु साधवीए नियाणां कर्यां तेने प्रायश्चित दइ शुद्ध कर्यां; माहाशतक श्रावकने गौतमस्वामीने मोकली प्रायश्चित देवराव्युं; अने श्री नेमनाथ भगवंते अयमत्ता अणगार निमित्त परुपता हता तेने शुद्ध केम न कर्या? वली सुखमालका साधवी, सोमील ब्राह्मण, इत्यादिक घणा जीव सल्य सहित देखी ते समयना केवली भगवंत प्रायश्चित देवा केम न गया ? तथा कुंडरिक प्रमुखने शुद्ध केम न कर्या ? भला एमां तो कोइनुं असंजम जीवीतव्य नहोतुं वधतुं ? कोइने अवगुणतो नहोतो थतो ? सामो गुण थात, आराधिक थात. ए काम केम न कर्युं ? पण तेरापंथी एम न विचारे के, भावि पदार्थने कोण मटाडी शके. ज्यांत्यांथी हैयामांथी अनुकंपा कापवानुंज सुझे छे.

वली दान देवामां तथा जीव छोडाववामां वचमां जीवनी हिंसा

तो थाय, पण जीवहिंसानी ( प्राणातिपातनी ) क्रिया विना प्रणामे न लागे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक ५ मे उद्देशे छठे, कह्युं छे के, जे कोइ वधक ( हिंसक पुरुष ) पंखीने हणवा माटे बाण नांखे छे, ते पंखी बाणथी मुउं, त्यारे बाणना जीवने, धनुष्यना जीवने अने नाखणहारने, ए त्रणेने पांच पांच क्रिया लागे कही; अने तेज बाण पोताना भारथी हेठुं पडे तेवारे वचाले पडतां अनेरा जीव हणाय ते आश्री, बाणना जीवने अने धनुष्यना जीवने पांच पांच क्रिया लागे कही; अने बाणना नाखणहारने चार क्रिया कही; पण प्राणातिपातनी क्रिया न लागे एम कह्युं. हवे जुउ ! जीवने मारवाना प्रणाम हता तेवारे पांच क्रिया लागती कही; अने पोतानो हणवानो जोग नथी तेवारे तेने चार क्रिया कही. हवे जीव उगारे तेने केटली क्रिया लागे ते कहो. उगारवावालानुं चार ध्यान मांहेलुं ध्यान कयुं ? छ लेश्या मांहेनी लेश्या कइ ? जोग कयो? अने ते शुभ के अशुभ ? ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जीव हणे तेने प्राणातिपातनुं पाप लागे, अने जीवने बचावे तेने अढार पाप लागे; कारण के असंजति जीव जीवतो रह्यो, ते अढार पाप सेवे तेनुं पाप बचाववावालाने लागे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए कुमति तमे क्यांथी लाव्या ? त्रस जीवने मारवाना त्याग कीधां हिंसानुं एक पाप देसथकी टले, अने जीवने उगारवानो त्याग करे तेने अढार पाप टले. ए तमारे लेखे तो जीव बचाववाना त्याग पेहेलां कराव्या जोइए, पण कोइ साधु भगवंते ए त्याग कराव्या नथी; कराव्या होय तो बतावो. ए जीव बचाववाना त्याग करे तेने कयुं व्रत निपजे ते कहो. ए कूमति तमे कया सूत्र प्रकरणथी काढी ते कहो. जीवने मारवाना त्याग करावावानुं तो ठाम ठाम सूत्रमां चाल्युं छे, पण जीवने बचाववाना त्याग करवानुं तो कोइ सुत्रमां चाल्युं नथी. वली जेना जेवा प्रणाम होय तेने तेवां फल लागे. दान दयामां जीव हिंसाना तथा जुठुं बोलवाना जेना प्रणाम नथी, तेने हिंसानां तथा जुठनां फल लागे नहिं. शास्त्र सूत्र भगवती शतक ५ में, उद्देशे

छ ठे, एम कह्युं छे के, जेवुं जुठुं आलदे तेनां आवता जवान्तरे तेवांज फल पामे; पण एटलुं विशेष के, कोइ मृगप्रश्नने समये मृग-रक्षाने कारणे जुठुं बोले ते दयाना प्रणामनुं जुठ टालीने बीजा जुठनां माठां फल कह्यां, एटले दयाना प्रणामथी जुठ बोले तेनां माठां फल कह्यां नथी. ए पुरुषना जुठ बोलवाना प्रणाम नथी, पण मृग्यादिकने राखवाना प्रणाम छे, ते माटे दयानां फल लागे, पण जुठनां फल न लागे. एम दान दयामां पण जेवा जेना प्रणाम होय तेवां तेनां फल लागे. जेम साधु मुनीराजने कोइ दातारे पात्र जरीने घृतदान दीधुं, त्यारे कोइए कह्युं के, हे जाइ ! हुं तो अपुन्यो छुं, मारे लगार मात्र दान देवानो जोग नथी. हवे ए दातारने दान दीधानां शुज फल लागे के जुठ बोल्या माटे जुठनां फल लागे ? तेम जीव दयामां पण जाणवुं. वली साधुना शरीरमां रोगादिक कारण जाणीने श्रावके वमन विरेचनादिक करूवां औषध दीधां, तेथी साधुने अशाता उपजे. हवे श्रावकने अशातानां पारूवां फल लागे? के साधुना शरीरमां शाता थइ तेनां फल लागे ? ए करतव्य प्रमाणे फल लागे? के मन-प्रणाम जेवा होय तेवां फल लागे ते कहो. जो साधुने कल्पतुं दान दीधां शाता-वेदनी बंधाय, तो मरता जीवने उगारतां एकांत पाप केम निपजे ? ते विवेकनां तालां खोलीने जुओ. वली जीवनी अनुकंपा कीधाथी शाता-वेदनी बंधाय. तेनी शाख सूत्र जगवती. ते पाठः—

अत्थिणं जंते ! जीवाणं कक्कस वेदणिज्जा कम्मा कज्जइ ? हंता अत्थि. कहणं जंते! जीवाणं कक्कस्स-वेयणिज्जा कम्मा कज्जइ ? गो० ! पाणाइवाएणं जाव मिज्ञादंसण-सल्लेणं एवं खलु गो० ! जीवाणं कक्कस्स वेयणिज्जा कम्मा कज्जइ. अत्थिणं जंते! नेरइयाणं कक्कस्स वेयणिज्जा कम्माकज्जइ? गो०! एवं चेव जाव वेमाणियाणं. अत्थिणं जंते! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्माकज्जइ ? हंता अत्थि. कहणं

भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्माकज्जइ ? गो० ! पाणाइवाय वेरमणेणं जाव परिग्गह वेरमणेणं कोह विवेगेणं जाव मिच्छादंसण-सल्ल विवेगेणं एवं खलु गो०! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्माकज्जइ. अत्थिणं भंते! नेरइयाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्माकज्जइ ? गो० ! णो इणट्ठे समट्ठे. एवं जाव वेमाणियाणं णवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं. अत्थिणं भंते ! जीवा सायावेयणिज्जा कम्माकज्जइ ? हंता अत्थि. कहणं भंते ! जीवा सायावेय-णिज्जा कम्मा कज्जइ? गो० ! पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अप्पिट्टणयाए अप्परियावणियाए एवंखलु गो० ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्माकज्जइ. एवं नेरइयाणंवि एवं जाव वेमाणिया. अत्थिणं भंते! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा-कज्जइ? हंता अत्थि.कहणं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्माकज्जइ? गो०! परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरण-याए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियाव-णयाए एवं खलु गो० ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा-कज्जइ. एवं नेरइयाणंवि एवं जाव वेमाणियाणं. ॥

अर्थः—अ० छे भं० हे भगवान ! जी० जीव क० करकस रौद्र दुःखथी वे० वेदीए एवां क० कर्म क० करे ? उपार्जे ? हं० हा गौतम छे. क० केवे प्रकारे भं० हे भगवान ! जी० जीव क० करकस कठोर रौद्र दुःखरुप कम्मा० कर्म बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पा०

प्राणातिपात जा० यावत् मि० मिथ्या-दर्सन-सल्य, अढारे पापे करी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम! जी० जीव क० कर्कस-वेदनी रौद्र कर्म क० बांधे. अ० छे भं० हे भगवान! ने० नारकी क० कर्कशरौद्र वेदनी कर्म बांधे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ए० एमज पुर्वलीपरें नारकी बांधे, जा० यावत् वे० वैमानिक सुधि कहेवुं. अ० छे भं० हे भगवान! जी० जीव अक० अकर्कश वेदनी ( कठोर नही, सुखें वेदवा योग्य) क० कर्म करे? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम! अ० करे छे. क० कये प्रकारे भं० हे भगवान! जी० जीव अक० अकर्कश अकठोर क० कर्म करे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! पा० प्राणीने हणवाथी वे० निवर्तवे करी जा० यावत् प० परिग्रहथी निवर्तवे करी को० क्रोधनें वि० तजवे करी जा० यावत् मि० मिथ्या दर्सन शल्य छांडवे करी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम! जी० जीव अक० अकर्कश क० कर्म करे. अ० छे भं० हे भगवान! ने० नारकी अक० अकठोर क० कर्म करे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही. ए० एम जा० यावत् वे० वैमानिक लगे जाणवुं; पण ण० एटलुं विशेष म० मनुष्यने ज० जेम जी० जीवने कह्युं तेम कहेवुं. अ० छे भं० हे भगवान! जी० जीव सा० साता-वेदनी क० कर्म करे? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम अ० छे. क० केम भं० हे भगवान! जी० जीव सा० सातावेदनी क० कर्म क० बांधे? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! पा० प्राणीनी अनुकंपा दयाथी भु० भूतनी दयाथी जी० जीवनी दयाथी स० सत्वनी दयाथी ४ ब० घणा पा० प्राणीजने जा० यावत् स० सत्वने अ० दुःख न देवाथी, असो० शरीरनो क्षय करतां शोक उपजे ते न उपजाववाथी, अजू० न झुराववाथी, अति० आंसु लालादि खरवाना कारण सोग न कराववाथी, अपि० मुखादि ताडन प्रहार न करवाथी, अप० शरीरने ताप न उपजाववाथी, ए एम ख० निश्चे गो० हे गौतम! जी० जीव साता-वेदनी क० कर्म बांधे. यतः गुरु भत्ति खंति करुणा वय जोग कसाय विजयदाण जुओ दढ धम्माइ अजइ साय मसायं विवजओ. ॥१॥ इति

वचनात्. ए० एम ने० नारकिने पण जा० यावत् वे० वेमानिक लगी सातावेदनी बांधवानो उपाय कह्यो. अ० छे नं० हे भगवान! जी० जीव अ० असाता वेदनी क० कर्म करे ? बांधे ? हं० हा गौतम छे. क० केम नं० हे भगवान ! जी० जीव असा० असातावेदनीय क० कर्म करे ? बांधे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! परदु० परने दुःख देवाथी परसो० परने शोक उपजाववाथी परजू० परने दीनपणु उपजाववाथी परति० परने आंसु लालादिक खरावबाना कारणथी परपि० परने लाकडीए ताडवाथी परप० परने परितापवाथी ब० घणा पा० प्राणीउने जा० यावत् स० घणा सत्वने डु० डुख करवाथी सो० दीन करवाथी जा० यावत् प० परितापना उपजाववाथी ए० एम ख० निश्चे गो० हे गौतम ! जी० जीव अ० असातावेदनिय क० कर्म उपार्जे बांधे. ए० एम ने० नारकीने पण कहेवुं. ए० एम जा० यावत् वे० वैमानिक लगी कहेवुं.

भावार्थः—हवे जुउ ! प्राणीजीवनी अनुकंपा कीधाथी सातावेदनी बंधाय कह्युं. ए न्याये जीवनी अनुकंपा करे, डुःखी देखीने डुःख शोक मटाडे तथा बचावे तेने शातावेदनी बंधाय. ते शातावेदनी पुन्यनी प्रकती छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के “ जीवने मारवाना त्याग करे तथा जीवने न हणे तेने अनुकंपा कहीये, तेथी शातावेदनी बंधाय. ” तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहांतो चार प्रकारनां कर्म कह्यां छे. ते जीवहिंसादि अढार पाप सेवे, सेवरावे अने सेवताने भलो जाणे, तेने कर्कसवेदनी (अशातावेदनी) कर्म बंधाय, एटले डुःखे डुःखे भोगवे. ए कर्कसवेदनी कर्म चोवीस दंडकना जीवने बंधाय, अने जीवहिंसादि अढार पापथी निवर्ते तेने अकर्कस वेदनी कर्म बंधाय. ते सुखे सुखे भोगवे, मुक्ति जाय अने भरतमहाराजनी परे कर्कसपणुं वचमां न आवे. ए कर्कसवेदनी शातावेदनी कर्म एक माणसनाज दंडकमां बंधाय. वली त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवने दुःख देइ झुरावे, तेने अशातावेदनी कर्म बंधाय. ए अशातावेदनी चोवीस दंडकमां बंधाय. तेमज त्रण करण त्रण जोगेकरी प्राणीजीवनी अनुकंपा करे, तेने शातावेदनी कर्म बंधाय.

ए शातावेदनी पण चोवीस दंडकना जीवोने बंधाय. हवे तमे कहो! कर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने अशातावेदनी-कर्म केने कहीये? अकर्कसवेदनी-कर्म केने कहीये अने शातावेदनी-कर्म केने कहीये ते कहो. हे देवानुप्रीय! जीवने न हणे तेने तो अकर्कसवेदनी बंधाय, अने अनुकंपा करे तेने शातावेदनी बंधाय. ए जुन्ह! जीवने न हणे तेनां फल न्यारां कह्यां, अने अनुकंपानां फल न्यारां कह्यां. अनुकंपातो आगलानुं दुःख मेटे, मटाडे अने मटाडताने जलो जाणे तेने कहीए. तेनी शाख सूत्रअंतगडमां, सुलसा आविकाए पुत्रनी तृष्णा वास्ते हर्णगमेषी देवताने आराध्यो. त्यां दुःख मटाडवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. वली कृष्णमाहाराजने डोसानां ईंटो नाखवानां दुःख मटाडवाना प्रणाम आव्या तेने अनुकंपा कही छे. वली ज्ञातासूत्रमां धारणी राणीनो डोलो पुरवाने अन्नयकुमारे देवताने आराध्यो, त्यां दुःख मटाडवाना प्रणामने अनुकंपा कही छे. तमे मतना लीधे "जीवने न हणे तेनेज अनुकंपा कहीये." एम केम कहोछो?

वली तेरापंथी अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कहेछे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अनुकंपा सावध निर्वध बे प्रकारनी कोइ सूत्रमां कही नथी. तमे मतना लीधे जुठुं केम बोलोछो? कारणके अनुकंपाने तो समकितनुं लक्षण कह्युं छे. ते दुःख मटाडवाना प्रणामने अनुकंपा कहीये. तेने सावध शीरीते कहीये? पण दुःख मटाडवा सारु कर्तव्य करे ते कर्तव्य सावध निर्वध होय. ते कर्तव्यनो पक्ष लइने अनुकंपाने सावध केम कहोछो? छकायनो आरंन्न करे तेने तो कर्तव्य कहीये, अने हिंसाने निंदे, ने छकायनी उपर करुणा आवे तेने अनुकंपा कहीये. एम अनेक कार्यमां शुन्न प्रणामथी निर्जरा थाय, अने सावध कर्तव्यथी कर्म बंधाय. एम कर्तव्य न्यारुं अने अनुकंपा न्यारी. हवे जो अनुकंपाने सावध कहेशो तो समवायांगमां तथा उत्तराध्ययन अध्ययन २ए मामां, सम, समवेग, निर्वेद, अनुकंपा अने आस्ता, ए पांच समकितनां लक्षण कह्यां छे, ते पण सावध निर्वध बे प्रकारनां केहेवां पडशे; अने जो

समकितनां लक्षणने सावद्य केहेशो तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र (मोक्षनो मार्ग) सर्वने सावध निर्वध बे प्रकारनां केहेवां पडशे. ए न्याय केम मले? ए अनुकंपा समकितना लक्षणने मतने लीधे सावद्य केम कहोछो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " जिनरीखे रयणादेवीनी अनुकंपा करी ते पण निर्वध हशे. ते पण जिनरीखने धर्म थयो हशे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जो अनुकंपा करी होत तो धर्मज थात, पण ' कोलुणवक्रियाए ' पाठ छे. कोलुणवक्रिया नाम मोहरसनुं छे तथा दीन वचन बोले तेनुं छे. शाख सूत्र सुयगडांगना नरयविभत्ति अध्ययनमां कह्युं छे के, नेरइया कलुणवक्रिया शब्द करे छे. वली विपाकसूत्रमां मृगालोढीयाना अध्ययनमां आंधलाने भिक्षाने अर्थे ' कलुणवक्रिया ' दीनदयामणा शब्द बोलता कह्यो छे. तेमज अनुयोगद्धार, ठाणायांग इत्यादि अनेक सूत्रमां ' कोलुणवक्रिया ' नाम मोहरसनुं कह्युं छे. रयणादेवी उपर जिनरीखने मोहकर्म आव्यो, पण ' अनुकंपणठयाए ' एवो पाठ नथी. तमे मतना लीधे अनुकंपा केम कहोछो ? वली तेरापंथी, मतना लीधे एम कहेछे के, " कोइ जीवने शाता दीधाथी शातावेदनी पुन्य प्रकृति बंधाय, एम कहे तेने छ बोल भगवंते माठा कह्या. " एम कहीने सुयगडांगसूत्रना त्रीजा अध्ययनना चोथा उद्देशानी ५ मी अने ६ ठी गाथानी जूठी शाख प्रथमनी चार गाथा छुपावीने बतावे छे. ते पाठः—

आहंसु महा पुरिसा, पुव्विं तत्त तवो धणा;
उदएण सिद्धि मापन्ना, तत्थ मंदेवि सीयइ. ॥ १ ॥
अभुंजिया नमि विदेही, रामगुत्तेण भुंजिया;
बाहूए उदगं भुच्चा, तहा तारागणा रिसि. ॥ २ ॥
आसले देवले चेव, दीवायण महा रिसि;
पारासरे दगं भोच्चा, बीयाणि हरियाणिय. ॥ ३ ॥
एते पुव्व महा पुरिसा, आहित्ता इह संमत्ता;

ओच्चा बी उदगं सिच्चा, इति मेय मणुस्सुयं. ॥ ४ ॥
तत्र मंदावि सीयंति, वाह छिन्नाव गद्दभा;
पिठउ परि सप्पंति, पिठ सप्पो व संभ्रमे. ॥ ५ ॥
इह मेगेउ भासंति, सातं साते णविज्जइ;
जे तत्थ परियंमगा, परमं च समाहिए. ॥ ६ ॥
मा एयं अवम्मन्नंता, अप्पेणे लुपइ बहू;
एत्तस्स अमोक्खाए, आयहारिव्व जूरहे. ॥ ७ ॥
पाणाइवाय वट्टंता, मुसावाएय संजए;
अदिन्नादाणाय वट्टंता, मेहूणाय परिग्गहे. ॥ ८ ॥
एव मेगेउ पासत्था, पन्नवंति अणारिया;
इत्थी वसंगया बाला, जिण सासण परमुहा. ॥ ९ ॥
जहा गंफं पिलागंवा, परि पीलिज्ज मुहुत्तगं;
एवं विन्नवणाइत्थिसु, दोसो तत्थ कउसिया. ॥ १० ॥
जहा मंधोदए नामं, थमित्तं भुंजती दगं;
एवं विन्नवण इत्थीसु, दोसो तत्थ कउसिया. ॥ ११ ॥
जहा विहंग मापिंगा, थिमितं भुंजती दगं;
एवं विनवण इत्थीसु, दोसो तत्थ कउ सिया. ॥ १२ ॥
एव मेगेउ पासत्था, मिच्छादिठि अणारिया;
अझोववन्ना कामेहिं, पूयणाइव तरुणए. ॥ १३ ॥
अणागयम पासंतो, पच्चुप्पन्न गवेसगा;
तेपच्छा परितप्पंति, खीणा आउंमि जुव्वणे. ॥ १४ ॥
जेहिं काले परिक्कंतं, नपच्छा परितप्पई;
ते धीरा बंधणुं मुक्का, नाव कंखंति जीवियं. ॥ १५ ॥

अर्थः—आ० कहे छे म० मोटा पु० पुरुष पू० पूर्वे त० तीहां तवो० तपरुपी ध० धनेकरो सहित उ० शीतल पाणीएकरी सि० मोक्ष मा० प्राप्त थया कहे छे. त० तीहां मं० मूर्ख स० सिदाय (पस्ताय) ॥१॥ अ० वीना जोगव्यां. न० नमिराजा वि० विदेह देशना उपन्या तथा रा० रामगुप्त राजर्षि भु० जोगवताथका मुक्ति पोंहच्या. बा० बाहुकरुषी उ० शीतल पाणी भु० जोगवता मुक्ती गया. त० तेमज ता० तारागण-रुषी शीतल पाणीथी सिध्या ॥२॥ आ० आसल रुषी दे० देवल रुषी चे० निश्चे द्वी० द्वीपायण नामा म० मोटा रुषी अने पा० पारासरजी द० काचुं पाणी जो० जोगवीने बी० बीज आदिक ह० लीलोत्री प्रमुख जोगवीने मुक्ती पोंहोच्या. ॥३॥ ए० ए पु० पुर्वे म० मोटा पुर्ष आ० केहेवा. इ० आ लोकमां सं० प्रसिद्ध जो० जोगवीने बि० बीज उ० सचित पाणी सि० सिद्ध थया इ० एम कुतीर्थी कहे. मे० अमे माहाभारतादि विषे सांजल्युं. एवी रीते अमे पण मुक्ती जाशुं. ॥ ४ ॥ त० तिहां कु-शास्त्र सांजल्याथी. मं० मुर्ख सि० चारित्रथी सिदाय. जेम जारना वि० गर्दभ थाक्याथका जार नाखी नासी जाय, तेम अज्ञानी संजमनो जार नाखीने शिथल विहारी थाय. वली द्रष्टांन्त कहे छेः-पि० अग्नि प्रमुखना जयथी बीजा लोकने नासता देखी थोकी समर्थाइवंत पुरुष पुठे जाय, पण आगल न चाले. जेम कायर बीहता आगल न चाले, तेम शिथिल विहारी मोक्षना अग्रगामी न थाय, अनंतो काल संसार जमे. ॥५॥ इ० इहां मे० अकेक अन्यतिर्थी स्वतिर्थी पासत्था जा० कहे सा०शाताथी सा०शाता थाय,ण०दुःखथी सुख केम थाय ? एटले लोचा-दिक दुःखथी मोक्ष केम थाय ? सालथी साल अने कोद्रवथी कोद्रव निपजे. जे० जे कोइ त० त्यां आ० श्री जिनेंद्र मार्ग प० उत्कृष्टो स० ज्ञान दर्शनादि समाधि सहित. ॥६॥ मा० रखे ए० ए अ० जिनमार्गने हिलताथका ते अ० अल्प सुखने काजे मोक्षनां घणां सुखने गुमावे छे. ए० एवा जीवने अ० मोक्ष नथी. आ० जेम लोहनो व्यापारी जु० झुर्यो तेम ते पण झुरशे. ए सविस्तार द्रष्टान्त राज्यप्रश्नीथी ज्ञेयः ॥७॥

पा० जीवहिंसामां व० वर्तताथका मु० मृषावाद सं० असंजत थतां अ० अदत्तादाने व० वर्तताथका अने मे० मैथुन प० परिग्रहे वर्तता थता थोडा सुखने काजे घणा सुखने विणाशो छो. ॥८॥ ए० एम मे० अकेक पा० स्वतिर्थी परतिर्थी प० परुपे, तेने अ० अनार्य इ० स्त्रीने व० वशे पड्याथका बा० अज्ञानी जि० जिनमार्गथी प० उभ्रांठा जाणवा. ॥९॥ वली तेउ कहे छे के, ज० जेम गं० गुंमडुं पि० पाक्युं प० तेनी पीडा तेमांथी पी० लोही काढयाथी टले, मुहूर्त मात्र सुख थाय, ए० तेम वि० भोगवीयकी इ० न्युतन स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी होय? ॥१०॥ ज० जेम मं० मंदोधक नामा मींढो थ० थीर थइने भु० जमे द० पाणी पीए, ए० एम वि० भोगवी थकी ई० स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी सि० होय? ॥११॥ ज० जेम वि० कपिंजल नामा पंखी थि० अडोल उडतोथको भुं० पीए द० पाणी, ए० एम वि० भोगवीथकी थि० स्त्रीने दो० दोष त० त्यां क० क्यांथी होय. ॥१२॥ ए० एम मे० अकेक पा० पासत्थादिक (ढीला) मि० मिथ्याद्रष्टी अ० अनार्य पुरुष आ० कामभोगमां आशक्त पू० जेवां गाडर (भेड) त० पोतानां बच्चांने विषे गृद्ध (लुब्ध) होय छे तेवा पुर्वोक्त पासत्थादि मिथ्यात्वीने जाणवा. ॥१३॥ अ० ते आगम्य काले नर्कादिक दुःख अपा० अणदेखता प०, वर्तमान सुखना ग० गवेषणहार ते० ते अज्ञानी पछी परि० पश्चाताप करे, खी० क्षीण थये आ० आउखुं अने जु० जोवन वय, के हवे हुं शुं करुं. जे० जेणे धर्मने विषे पराक्रम करवाने का० काले प० पराक्रम कर्युं ते, पछी वृद्धावस्थामां पस्ताय नहिं. ते० ते धी० धीर पुरुष बं० बंधनथी मु० मुकाणा न० न कं० वान्छे जी० असंजम जीवीतव्य. ॥ १५ ॥

भावार्थः—हवे जुउ ! इहांतो पाछला त्रण उद्देशामां अनुकुल प्रतिकुल परिसहा देखाड्या छे के "हे साधु तुं अणगमता परिसाथी अने इंद्रीउने गमता परिसाथी चलजे मत. तेमज आ चोथा उद्देशामां अन्यमतीनां वचन शांभलीने समकितथी चलजे मत" एम कह्युं. पहेली चार गाथामां अन्यमती एम कहे छे के "काचुं पाणी पीतां अने

बीज फल फुलनो भोग करतां अनेक रुषीश्वर सद्‌गतीमां गया छे. माटे जे आ देहीने दुःख देशे ते भव भवमां दुःशी थासे; अने आ नरनारायणनी देहने शाता दीधाथी शाता पामशे." एवुं वेदनुं नाम लइने परुपणा करे छे. एवी वातो शांभलीने साधु चारित्रथी परीसह उपन्यां भगे, ते वास्ते पांचमी छठी गाथामां कह्युं के "देहीने शाता दीधाथी शातावेदनी बंधाय," एम परुपे तेने आर्य मार्गथी वेगलो कहीए. १ समाधी मार्गथी न्यारो. २ जिन मार्गनी हीलणानो करणहार. ३ थोडा सुखने कारणे घणा सुखनो गमाववालो. ४ अमोक्षनुं कारण. ५ अने लोहवाणीयानी परे झुरशे. ६ ए छ बोल भगवंते माठा कह्या. वली अन्यमति विषय-विकारने गुंमडानो दृष्टान्त देछे के, गुमडानी रसी काढ्यां शाता थाय, तेम विषय सेव्यां मन संतोष पामे. एवां ए अध्ययनमां अन्यमतीए दृष्टान्त दीधां छे. ते सारु साधुने संजममां दृढ करवा माटे भगवंते छ बोल माठा कह्या. ए जुओ ! पोताना देहीने संयम भांगीने शाता दीधां शाता कहे तेने छ बोल माठा कह्या छे. तमे जाणता थका मतने लीधे एम केम कहोछो के "कोइ जीवने शाता दीधां शाता बंधाय, एम कहे तेने छ बोल माठा कह्या छे." वली तेरापंथी, साधुनी फांसी खोली शाता उपजाववामां पण एकान्त पाप माने छे. पण साधु-मुनीराजने धर्मनी बुद्धिए शाता उपजावे, हरस छेदे, तेने शुभ क्रिया तथा शुभ फल कह्यां छे. शाख सूत्र भगवती शतक १६ में उद्देशे त्रीजे. श्री गौतमस्वामीए उत्तर सहित प्रश्न पुछयो छे. ते पाठः—

भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसइ२त्ता एवं वयासीः-अणगारस्सणं भंते ! भाविअप्पणो छठं छठेणं अणिखित्तेणं तवो जाव आयावेमाणस्स तस्सणं पुरत्थिमेणं अवढं दिवसं नोकप्पंति हत्थंवा पायंवा जाव उरुंवा आउट्टावेत्तएवा पसारेत्तएवा. पच्चत्थिमेणंसे अवढं दिवसं कप्पंति हत्थंवा पायंवा जाव उरुंवा आउट्टावेत्तएवा

पसारेत्तएवा. तस्सय असियाओ लवइ तंचेव विज्जेअदक्खू इसिं पाडेइ २ त्ता असियाउ छिंदेज्जा. सेणुणं भंते ! जे छिंदइ तस्स किरिया कज्जइ ? जस्स छिंदइ नो तस्स किरिया कज्जइ. णणत्थ एगेणं धम्मंतराइणं. हंता गो०. जे छिंदइ जाव धम्मत्तराएणं ॥

अर्थः—भं० एवे आमंत्रणे भ० भगवंत श्री गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवंत श्री म० माहावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहेः—अ० अणगारने भं० हे भगवान! भा० भावितात्माने छ० वेले वेले अ० आंतरारहित त० तप करो जा० यावत् आ० आतापना ले त० तेने पु० पुर्व भागे पुर्वान्ह दीवस भागे एटले अ० अर्धा दि० दीवस सुधी नो० न कल्पे ह० हाथ पा० पग जा० यावत् ऊ० ऊरु आ० संकोचवा प० प्रसारवा; काउसग्ग रह्यो ते माटे. प० पश्चिम भाग एटले अ० अपरान्हने विषे क० कल्पे ह० हाथ पा० पग जा० यावत् ऊ० ऊरु आ० संकोचवा प० पसारवा. (काउसग्गना अभावथी). त० तेने अ० भणफोमा हरस ल० लटके छे नाकमां तं० ते प्रत्ये चे० निश्चे वि० वैद अ० देखीने इ० रुषीने पा० भुमिकाए पाडे, (भोंयपर पाड्या विना हरस छेदाय नही ते भणी) पाडीने अ० हरस छिं० छेदे. से० ते निश्चे भं० हे भगवान ! जे० जे हरसने छिं० छेदे त० तेने कि० क्रिया क० लागे ? वैदने क्रिया व्यापार रुप छे ? ते धर्मनी बुद्धे छेदताने शुभ क्रिया थाय, अने लोभादिके छेदताने अशुभ क्रिया थाय. ज० जे, साधुना हरस छिं० छेदे नो० ते साधुने क्रिया न लागे (निर्व्यापारपणाथी). शुं साधुने सर्वथा क्रियानो अभाव छे ? अने वैदने करे ते क्रिया छे ? परंन्तु पचीस मांहेलो नथी; अथवा एम नथी ते कहे छेः- ण० ए निषेध ते ए० एक ध० धर्मांतरायरुप क्रिया शुभ ध्यान विछेदथी लागे अथवा हरस छेदे ते अनुमोदनथी अनेरी क्रिया लागे ? ए प्रश्न. हं० हा गो० गौतम, जे० जे हरस छिं० छेदे तेने यावत् पूर्वे कह्युं तेम धर्मान्तरायनी क्रिया लागे. इ०

ज्ञावार्थः—हवे जुर्ज ! ए सूत्र-पाठमां तो साधुना हरस ( मसा ) छेदे ते वैदने समचय क्रिया कही, अने साधुने निर्व्यापारपणाथी क्रिया नो नाकारो कह्यो; अने जो साधु अनुमोदे तो तेने धर्मान्तराय लागे, (ध्याननी अंतराय पडे)-वली ए पाठनी टीकामां कह्युं छे के, वैदने क्रियातो लागे, "ते करे इति क्रिया" पण वैद लोजनी बुद्धीए छेदे तो अशुज्ञक्रिया ने अशुज्ञ फल लागे; अने धर्मनी बुद्धीए छेदे तो शुज्ञ फल क्रिया लागे. अनेशुज्ञ हवे जुर्ज ! आ सूत्रने न्याये साधुने कोइ अनार्य फांसी दइ जाय, ते कोइ उत्तम दयावंत प्राणी धर्मनी बुद्धे खोले, तथा कुतरो करमतां धर्मनी बुद्धे हाकोटे, तथा एवा अनेक प्रकारना साधुना उपसर्ग धर्मनी बुद्धिए टाले, तेने एकान्त शुज्ञ फल लागे. तमे " साधुनी फांसी खोले तेने तथा साधुना अनेक प्रकारना उपसर्ग धर्मनी बुद्धे टाले तेने पाप लागे," एवुं कहीने ए सूत्रनां केवलीनां वचन मतना लोधे केम उथापोछो. ?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, साधुनां कर्म तुटतां राखे तेने ध्यानादिकनी धर्मनी अंतरायनो देणहार कहीये. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए लेखे तो साधुने अहार देवावाला श्रावके पण तपस्यानो अंतराय दीधी, केमके जुखे मरतां कर्म कपातां ते राख्यां. जग्या देवावाले पण कर्म कपातां राख्यां. अनेक प्रकारनी शाता दीधी तेणे कर्म कपातां राख्यां. ए तमारे लेखेतो साधुजीने चौद प्रकारनुं दान पण देवुं न जोइए, कारणके धर्मनी अंतराय लागे, अने कर्म कपातां रही जाय. ए तमारे लेखेतो साधुने दुःख दइ कर्म तोडावे तेने धर्म थाय. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "आहारादिकतो साधु लेवो वान्छे छे, तेथी देवावालाने धर्म थाय; पण फांसी प्रमुख उपसर्ग ग्रहस्थीने टालवानुं कहे नहि, तेथी पाप लागे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सुखडी प्रमुख सरस अहार देखी साधुए मनेकरीने पण वान्छवुं नही, तेम तेने अर्थे ग्रहस्थोने घेर जावुं पण नही, ए आचारांग तथा निशिथमां कह्युं छे; पण दातार पोताना ज्ञावथी आपे, तेने धर्म थाय के नही ते कहो. वली जबराइथी साधुनो

उपसर्ग टाळ्यो, तेने साधुनी वैयावचनो करणहारो कह्यो छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन बारमें. ते पाठः—

जखो तहिं तिंदुय रुक्ख वासी अणुकंपउ तस्स महामुणिस्स पछायइत्ता नियगं सरीरं इमाई वयणाइं मुदाहरित्था ८ समणो अहं संजउ बंभयारी विरओ धणपयण परिग्गहाओ परप्पवितस्सउ भिक्ख काले अन्नस्सअठा इह मागओसी ९ एयाइं तीसे वयणाइं सुच्चा पत्तिए भद्दाइं सुभासियाइं इसिस्स वेयावडियं ठयाए जक्खा कुमारेवि णिवारयंति पुव्विं च इन्हंच अणागयंच मणप्पओसो नमे अत्थि कोइ जक्खाहु वेयावडियं करेंत्ति तम्हाहु एए निहया कुमारा.

अर्थः—ज० यक्ष त० ते अवसरे ति० तिंदुक रु० वृक्षनो वा० वसणहार अ० शातानो करणहार, भक्तिवंत त० ते हरिकेशी म० महामुनीना (साधुना) शरीर उपर प० आछादिने नि० देवता पोते स० साधुना शरीरमां आवे, प्रवेश करीने ते इ० एवां व० वचन कहेवा लाग्यो के, स० साधु हुं अ० हुं, सं० संजति ब० ब्रह्मचारी हुं, वि० निवर्त्यो हुं ध० सुवर्णादिक धनथी, ए द्रव्यादिक प० परिग्रहथी, पर० गृहस्थने अर्थे निपन्यो छे अहार भि० भिक्षाना का० कालने विषे अ० अहारने अर्थे इ० इहां मा० आव्यो हुं. ए० ए पूर्वोक्त ती० ते कुंवरीनां व० वचन सु० सांभलीने प० शामदेव प्रोहीतनी भार्या भ० भद्राना सु० भला भाख्या वचन, इ० रुषीना वे० वैयावच, ते पक्षपातने अर्थे ज० जक्षे कु० कुमार प्रमुखन वि० विशेषे हण्या. णि० तेवार पछी यक्ष अलगो थयो. हवे यती बोल्या, पु० पूर्वे इ० हमणा अने अ० अनागत काले म० मने करी पण प्प० नथी मारे को० कांइ अल्प मात्र पण द्वेष, ज० यक्ष हु० निश्चे जे भणी वे० वेयावच पक्षपात करे छे, ते माटे ए निश्चे प्रत्यक्ष नि० निरंतर हण्या कु० कुमार.

भावार्थः—हवे जुओ ! जक्ष देवताए मुनीराजने मारवा लग्या ते कुंवरोने लोही वमता हेठा नाख्या. तेने हरिकेसी मुनीराजे कह्युं के, जक्षदेवता मारी वैयावच करेछे, तेणे हे ब्राह्मणो ! तमारा कुंवरोने नाख्या छे. ए जबराइ करी साधुनो उपसर्ग टाल्यो तेने सूत्रमां वैयावच कही. साधुनो पोतानो कल्प नथी तेथी ते एवां कामनी, आववा जवानी अने साधुने वास्ते जग्या जाचवानी आज्ञा दे नहीं; पण तेने सूत्रमां वैयावच कही छे. हवे साधुनी वैयावचनां फल शुभ के अशुभ ते कहो. वली बृहत्कल्पमां कह्युं छे के, साधु एटलां काममां जबराइ करे तो आज्ञा उलंघे नही. ते पाठः—

निग्गंथस्सय अहे पायंसि खाणुवा कंटएवा हीरएवा सक्केवा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथे नोसंचायइ नीहरीत्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथी नीहरमाणिवा विसोहेमाणीवा णाइक्कमइ. निग्गंथस्स अछिंसि पाणेवा बीएवा रएवा परियावज्जेज्जा तंच निग्गंथे नोसंचाइए निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तं निग्गंथी नीहरमाणीवा विसोहीमाणीवा णाइक्कमइ. निग्गंथीए अहेपायंसि खाणुंवा कंटएवा हिरएवा सकरेवा परियावज्जेज्जा तंच निग्गंथी नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंचे निग्गंथे निहरमाणेवा विसोहीमाणेवा णाइक्कमइ. निग्गंथीए अत्थिंसि पाणेवा बीएवा रएवा परियावज्जेज्जा तंच निग्गंथी नोसंचाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथे निहरमाणेवा विसोहिएवा णाइक्कमइ. निग्गंथे निग्गंथी दुग्गंसिवा विसमंसिवा पव्वयंसिवा पक्खलमाणंवा पवम्माणंवा गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. निग्गंथे निग्गंथी सेयंसिया पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उकसमाणंवा उवुब्भमाणेवा

गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. निग्गंथे निग्गंथी नावं आरोहमाणंवा उरोहमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. खित्तचित्तं निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. दित्त चित्तं निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ. जखाइठि निग्गंथीनिग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमई. उमायपत्त निग्गंथी. उवसगंपत्ति निग्गंथी. साहिगरण निग्गंथी. स पायच्छित्तं निग्गंथी. ज्ञत्तपाणपडियाए खियं निग्गंथी. अठजाय निग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमई ॥ १७ ॥

अर्थः—नि० साधुने चालतां अ० हेठे पा० पगना तलाने विषे खा० खीलो कं० कांटो ही० फांस अने स० कांकरा प्रमुख प० ज्ञांग्यो, प्रवेश कीधो, तं० ते च० वली नि० साधु नो० समर्थ नथी नी० काढवा वि० विशेष शुद्ध करवा; तं० ते नि० साधवी नी० काढतीथकी वि० विशुद्ध करतीथकी बाप बेटीनी बुद्धे करे तो णा० तीर्थंकरनी आज्ञा अतिक्रमे नही. एवां चौद सूत्रने उपदेशी कह्यां छे. वली ठाणायांग व्यवहार मध्ये कह्युं छे के, जो धीर्यवंत खरा अडोल चित्तनो धणी एटलां वात्तां करेतो आज्ञा अतिक्रमे नही, अने न करे तोपण आज्ञानो ज्ञंग नही. नि० साधुनी अ० आंखने विषे पा० प्राणी बी० बीज र० रज प० आवीने पडे, तं० ते नि० साधु नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, ते नि० साधवी नी० काढतीथकी वि० विशुद्ध करतीथकी णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. नि०साधवीने अ० पगना हेठला तलाने विषे खा० खीलो कं० कांटो हि० फांस अने स० कांकरा प्रमुख प० शरीरने विषे खुचे प्रवेश करे तं० ते नि० साधवी नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, तं० ते नि० साधु नी० मा बेटीनी बुद्धे काढतोथको वि०

विशुद्ध करतोथको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. नि० साधवीने अ० आंखने विषे पा० प्राणी बी० बीज अने र० रज प्रमुख प० शरीरने विषे खुचे, आवीने पडे, तं० तेने नि० साधवी नो० समर्थ नथी नि० काढवा वि० विशुद्ध करवा, तं० तेने नि० साधु नि० काढतोथको वि० विशुद्ध करतोथको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. हवे साध साधवी साथे चेलो विहार करे नही; पण वाटे साथे सामा मले, ए प्रयोग कदाचित उपजे तो ते वखतनुं ए सूत्र जाणवुं. वली कुवा वीगेरेमां पडतीने अढे तो-पण आज्ञानो भंग थाय नही. पोते संयमने विषे समर्थ द्रढ रहे तो, ए ठामे आज्ञा अतिक्रमे नही.कारण उपने छते.नि०साधु नि०साधवीने दु० व्याघ्रादिक भयाकुल मार्गे वि० वांको चुंकी धरती अने पव० पर्वतने विषे पख० पीसली ( लपसती ) थकीने पव० धरतीए पडती थकीने गि० हस्तादिके ग्रहतोथको अ० सर्वांगे आधार देतो थको, ( अडोल मन तेथी ) संयमने विषे धीर्य राखे तो णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. नि० साधु नि० साधवीने से० जल सहित कादव पं० जल रहित कादव अने प०निपट ढीला कादवने विषे उ०नदी प्रमुखना पाणीने विषे उक० खुती थकीने उवु० डुवती थकीने गि० ग्रहतां थकां अ० आधार देतां थकां णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. नि० साधु नि० साधवीने ना० वाहणे आ० चढती उ० उतरती अने पडती थकीने गि० ग्रहतो थको अ० अवलं-बतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. खि०सुन्यकार चि०चित्त अथवा विषरोगादिकेकरी वीव्हलचीत्त थयुंछे एवी नि०साधवीने कुप द्रहादिकने विषे पडती, नासती अने जोती होय तेने नि० साधु तदरोग जय पा-मेली साधवी गि० ग्रहतो थको अ० अवलंबतो थको णा० आज्ञा अति-क्रमे नही. एम दि० दीत चित्त जेनुं (दर्पवंत चित्त) थयुं छे एवी नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतो थको अ० अवलंबतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. ज० यक्षे प्रवेश कीधो होय वा यक्ष अधि-ष्टीत होय एवी नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतोथको अ० अवलं-बतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नही. उ० वायुना जोरे उन्माद करती

होय तेवी नि० साधवीने साधु ग्रहतो थको अवलंबतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. उ० व्याघ्र सिंहादिकना उपन्या उपसर्गे पडती होय तेवी नि० साधवीने साधु ग्रहतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. सा० शंक्लेशादिकथी कुपादिके पडे नि० ते साधवीने अधिकरणे करीने ग्रहतोथको आज्ञा अतिक्रमे नही. स० घणुं प्रायश्चित आववाथी जयभ्रांत छे चित्त जेनुं तेवी नि० साधवीने ग्रहतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. भ० अणसण कीधे पोते भ्रमकरी अरही परही जातीने ग्रहतो थको आधार देतो थको अतिक्रमे नही. अ० लोभ प्राप्तने लक्ष्मी पडी देखी मननी चपलताए करी, चित्त विभ्रमे करी लवरी करतो नि० साधवीने नि० साधु गि० ग्रहतो थको अ० आधार देतो थको णा० आज्ञा अतिक्रमे नहिं. ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां कह्युं के, कोइ साधु एटलां कामोथी संयम भांगतो होय तेने साधु जबराइथी पकडीने राखतो आज्ञा उलंघे नही. हवे ए जबराइ करवानी भगवंते साधुने धर्म जाणीने आज्ञा दीधी छे. ए न्याये धर्मने अर्थे कल्पती जबराइ करे तेमां पाप नथी. तेमज जीवनी अनुकंपा आणी यथायोग्य जबराइ करी छगारे तेमां पण पाप नथी. वली श्री नेमनाथस्वामीए पण जीवोनी अनुकंपा करी छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २२ मं. ते पाठः—

अहसो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए;
वाडेहिं पिंजरेहिंच, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
जीवियं तंतु संपत्ते, मंसठा भक्खियव्वए;
पासित्ता से महापण्णे, सारहिं इण मब्बवी ॥ १५ ॥
कस्स अठा इमे पाणा, एए सवे सुहेसिणो;
वाडेहिं पिंजरेहिं च, संनिरुद्धाय अत्थहिं ॥ १६ ॥

अह सारहि तवो जणइ, एए भद्दाओ पाणिणो;
तुज्झं विवाह कज्जंमि, भोयावेउं बहुजणं ॥ १७ ॥
सोऊण तस्स सोवयणं, बहु पाणी विणासणं;
चिंतेइ से महापन्ने, साणुकोसे जिए हिओ ॥ १८ ॥
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सु बहु जिया;
न मेय एयंतु निसेस्सं परलोगे भविस्सइ ॥ १९ ॥
सो कुंडलाण जुयलं, सुतगं च महायसो;
आभरणाणिय सव्वाणि सारहिस्स पणामइ ॥ २० ॥

अर्थः—अ० अथ हवे त० तेवार पछी नि० श्री नेमीनाथ त्यां जातां थकां दि० देखीने पा० मृगादिक प्राणीने भ० भयभ्रांत वा० वाडामां तथा पिं० पींजरामां राखीने सं० अतिशय रुंध्या छे ते सु० अतिघणा दुःखी जीवने देखीने ॥१४॥ जी० जीवीतव्यनो अंत सं० पाम्या छे, एवा जीवने मं० मांसने अर्थे भ० मांस खावाने अर्थे पा० देखीने से० ते श्री नेमीनाथ म० माहा प्रज्ञावंत सा० सारथी प्रत्ये इ० एम म० कहेता हवा ॥१५॥ क० शा अ० अर्थे इ० ए प्रत्यक्ष पा० जीव ए० ए स० सर्व जीव सु० सुखना वांछक वा० वाडामां पींजरामां रुंध्या छे ? अ० हवे सा० सारथी, ते श्री नेमीनाथे पुछ्युं त० तेवार पछी भ० कहेछे, ए० ए भ० सो-भनीक मृगादिक पा० जीव छे ते तु० तमारा वि० विवाहना क० कार्यने विषे भो० घणा लोकने जमाडवाने अर्थे रुंध्या छे. ॥१७॥ सो० सांभलीने त० ते सारथिनुं वचन सो० ते श्री नेमीनाथे, ब० घणा पा० प्राणीजी-वनां वि० विनाशकारी वचन शांभलीने चिं० चिंतवे छे. से० ते श्री नेम-नाथ म० महा प्रज्ञावंत सा० दया सहित जि० जीवने विषे हि० हित छे जेनुं ॥१८॥ ज० जो म० मारे का० काजे ए० ए ह० हणाशे सु० अति ब० घणा जि० जीव, तो न० नही मे० मुजने ए० ए जीवघात नि० कल्याकारी प० परलोकने विषे भ० थाय. ॥१९॥ सो० ते श्री नेमीनाथे कुं० कुंडलनुं जु०

जोरुं सु० कणदोरा प्रमुख म० महा यशवंत आ० आजर्ण स०सर्व मुकुट वर्जिने सा० सारथिने प० दीधां. ॥ २० ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! जीवनी अनुकंपा तथा जीवीतव्यने हेते श्री नेमनाथ भगवंत तोरणथी पाछा फर्या. हे देवानुप्रीय ! असंजति जीवने बचाव्यामां पाप कये न्याये कहोछो ? ए असंजति जीवोनुं जीवीतव्यश्री नेमीनाथ भगवंते केम वान्छयुं ? ते कहो. वली चीत्तमुनीराजे ब्रह्मदत्त चक्रवृतने कह्युं के, तुं सर्व प्राणीनी तथा सर्व प्रजानी अनुकंपा कर. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १३ में. गाथा ३२ मीः—

जइ तेसिं भोगे चइउ असंतो अज्जाइ कम्माइं करेहिं रायं
धम्मेठिउ सव पयाणुकंपी तो, होहिसि देव इउ विउवी. ३२

अर्थः—ज० जो ते० ते भो० भोग च० छांडवा अ० (अशक्त) असमर्थ छे तो ए अ० आर्य क० काम करे० कर. रा० हे राजा ! ध० ग्रहस्थना धर्मने विषे ठि० रेहेतां थकां स० सर्व पया० जीवनी अनुकंपा करवी, करावची, ए आर्य कर्म कर. ग्रहस्थनो धर्म पालीश तो० तोपण हो० थइश दे० देवता इ० ए मनुष्य भवथी वि० विक्रय शरीरवंत ॥ ३२ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! चित्तमुनीए ब्रह्मदत्तने कह्युं के "जो तमारी भोग त्यागवानी बुद्धि नथी, तो तमे हे राजेंद्र ! आर्य कर्म तो करो." हवे नियाणा-कृतने त्याग तथा साधु श्रावकनां व्रत तो आवे नहि, त्यारे आर्य कर्म शुं करवुं कह्युं ते कहो. ए आर्य कर्म कहेतां जीवनी दया पलाय, धर्म तथा समकितने विषे स्थिर रहे अने सर्व प्राणीनी तथा प्रजानी अनुकंपा करे, तोपण तमारे पुन्य बंधासे; तेथी विक्रय रिद्धिनो धणी देवता थइश, एम कह्युं. अहो देवानुप्रीय ! तमे प्राणी जीवनी अनुकंपा कीधामां तथा जीवदया पलाव्यामां पाप कये न्याये कहोछो ? वली उत्तराध्ययन अध्ययन २१ मानी गाथा १३ मीमां कह्युं छे के,

साधु अनेरा जीवनुं दुःख अनुकंपे, ते परजीवना जीवीतव्यनो तथा हीतनो वंछणहार थाय. ते गाथाः—

सव्वेहिं भूएहिं दया णुकंपी, खंती खमे संजय बंभचारी;
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहि इंदिए.॥ १३॥

अर्थः—स० सर्व भू० जीवने विषे द० दयाएकरी अ० परजीवनुं दुःख देखीने कंपे, परजीवने हितनो करणहार, खं० क्षमाए करी खं० दुर्वचन खमे, सं० संयति बं० ब्रह्मचारी सा० पापनो जो० व्यापार प० सर्वथा प्रकारे वर्जतोथको च० विचरे भि० साधु सुस० भली समाधिए करी सहित इं० इंद्रिउ छे जेनी एवो. ॥ १३ ॥

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां कह्युं के, साधु सर्व जीवनी अनुकंपा करे तथा हीत वान्छे. त्यारे हे देवानुप्रीय ! तमे संजतिनी तथा सर्व जीवनी अनुकंपा कर्यामां तथा दया पाल्यामां पाप केम कहोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "दुःखी जीवने देखीने चिंतववुं के "अहो ! ए जीव कर्मने वशे दुःखी छे, एनां कर्म तुटेतो ठीक" एवी चिंतवणा करे तेने अनुकंपा कहीये, पण आहार वस्त्रादिक देइ शाता उपजाववी क्यां कही छे ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! दुःखीनुं दुःख देखी अनुकंपा लावी दुःख मटाडे, तेनेज अनुकंपा कहीये. ठामठाम ज्यां अनुकंपा आवी त्यां त्यां दुःख मटाडवानुंज कह्युं छे, पण "ए जीव कर्मने वशे दुःखी छे, तेथी एनां कर्म तुटेतो ठीक" एवी चींतवणाज करवी तेने अनुकंपा कहीये, एम तो क्यांय कह्युं नथी. तमे मतने लीधे एवा जुठा अर्थ केम करोछो ? वली उत्तराध्ययन सूत्रनी १५ मा अध्ययननी गाथा १२ मीमां कह्युं छे के, जे साधु असनादिक चार अहार लावीने, रोगी (गीलाण) साधुनी अनुकंपा करीने दे तेनेज साधु कहीए. ते पाठः—

जंकिंचि आहार पाणजाइ विविहं खाइमं साइमं परेसिं लध्धुं; जो तं तिविहेण नाणुकंपे मण वय काय, सुसंवुडेस भिक्खू. ॥ १२ ॥

अर्थः—जं० जे कोइ आ० असनादिक आहार पा० पाणीनी जाती वि० अनेक प्रकारे खा० द्राक्ष खजुरादिक सा० लविंगादिक मुखवास प० ग्रहस्थ कनेथी ल० पामीने, लावीने जो० जे तं० ते आहारादिक ति० त्रीविधे त्रिविधे मन, वचन, कायाए करी ना० जे बाल गिलाणादिकने संविभाग करी दे, म० मन व० वचन का० कायाए करी सु० भलीपरे सं० जेणे आश्रव कषाय संवर्या छे एवो होय तेज भि० साधु. ॥ १२ ॥

भावार्थः—ए जुओ! इहां कह्युं के, साधु आहारादिक पोते लावीने रोगी (गीलाण) साधुने अनुकंपा आणीने आपे, तेनेज भिखु (साधु) कहीए, एम कह्युं; पण एम न कह्युं के, रोगी गीलाण साधुने देखी "अहो! ए कर्मने वशे रोगी दुःखी छे. एनां कर्म तुटे तो ठीक. जो एने आहारादिक, औषधादिक देशुं तो एनां कर्म तुटतां रहो जाशे." एवुं चिंतववुं तेने अनुकंपा कहीये, एम तो नथी कह्युं. तमे मतने लीधे एवी कुयुक्ति लगावीने अनंत संसार केम वधारो छो?—
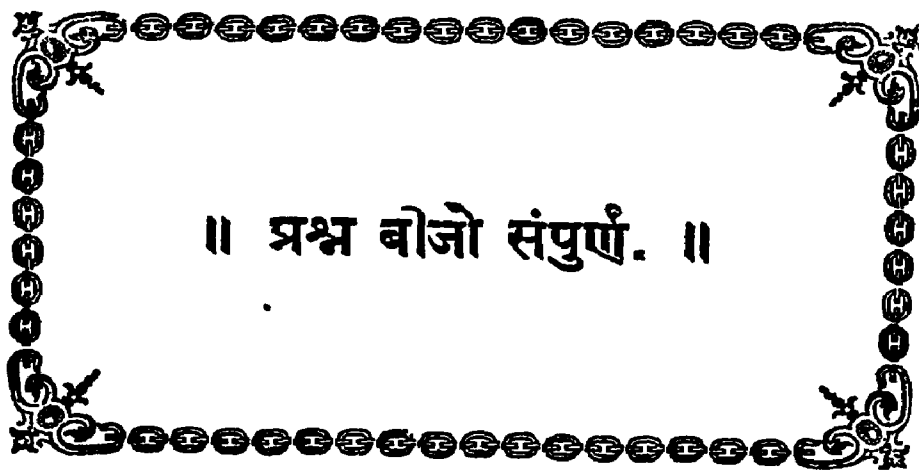
॥ प्रश्न बीजो संपुर्ण. ॥

# प्र श्न त्री जो.

## दान देवा विषे.

वली तेरापंथी कहे छे के 'साधु विना अगोआरमी पडिमाधारी श्रावकथी मांडीने सर्वने दान दीधाथी एकान्त पाप निपजे छे.' तेउ दानमां कांइ पण पुन्य के लाभ न जाणतां एकान्त पाप परुपे छे. एवी खोटी श्रद्धा राखनारने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय! साधु विना श्रावकने तथा गरीब रांक भीखारीने दुर्बल दुःखी देखीने, अनुकंपा आणीने शुभजोगथी कोमल भाव लावीने आपे, तथा श्रावकने धर्मध्यान करवाने साज आपे, तेने पाप कया सूत्रमां कह्युं छे ते पाठ बतावो. तेवारे तेरापंथी भगवतीसूत्र शतक ८ मे, उद्देशा छठानी जुठी शाख देखाडे छे. ते त्रीजा पाठमां असंजतिने श्रावक दान दे तेमां एकान्त पाप कह्युं छे, एम कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! त्यां तो त्रणे पाठमां श्रावक मोक्षने अर्थे दान देतो प्रतिलाभतो थको शुं फल पामे? एवी पुछा छे. ते पाठः-

समणोवासगस्सणं भंते! तहारुवाणं समणंवा माहाणंवा फासु एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किंकज्जइ? गोयमा! एगंत सोसे निज्जरा कज्जइ नत्थियसे पावकम्मे कज्जइ. समणोवासगस्सणं भंते! तहारुवं समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं जाव पडिलाभेमाणस्स किंकज्जइ? गो० ! बहुत्तराएसे णिज्जरा कज्जइ, अप्पत्तराएसे पावकम्मे कज्जइ. समणोवासगस्णं भंते! तहारुवं असंजय अविरय अपडिहय अपच्चक्काय पावकम्मे फासुएणवा अफासुएणंवा एसणिजे-

णवा अणेसणिजेणवा असणं ४ जाव किंकज्जइ ? गोयमा! एगंतसोसे पावकम्मे कज्जइ, नत्थिसेकावि णिज्जरा कज्जइ.॥

अर्थः—स० श्रमणोपासक श्रावकने भं० हे भगवंत! त० तथारुप तपयोग उपशमे करी सहित स० श्रमण प्रत्ये अथवा मा० माहण प्रत्ये फा० प्रासुक (निर्जीव) ए० एषणिक (४२ दुषण रहित) एवा अ० अन्नादिक पा० पाणी द्राक्षादिकनुं खा० मेवा सुखडी प्रमुख सा० सादिम (लविंगादिक प्रमुख), ए चार आहार प० प्रतिलाभता थकाने किं० शुं फल थाय ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ए० ते श्रमणोपासकने एकान्त नि० निर्जरा क० कर्मनो क्षय हेतु फल थाय; न० नथी से० तेने पा० पाप कर्म. एटले साधुने प्रासुक दान दे तेने कर्मनी निर्जरा थाय, ने पापकर्म न थाय. अथ अप्रासुक दान विषे बीजुं सूत्र कहेछे:— स० श्रमणोपासक भं० हे भगवान ! त० तथारुप स० श्रमण प्रत्ये मा० माहण प्रत्ये अ०अप्रासूक (सजीव) अणे० अनेषणिय (दुषण सहित), एवा अ० असन पा० पान, खादिम, सादिम जा० यावत् प० प्रतिलाभताथकाने किं० शुं फल थाय ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ब० पापकर्मनी अपेक्षाये घणी णि० निर्जरा थाय, ने अप्प० निर्जरानी अपेक्षाये अल्पतर पा० पापकर्म थाय. इहां ए भावना गुणवंत पात्रने काजे अप्रासुक दान दीधाथी चारित्र कायनो उपष्टंभ थाय अने जीवघात पण थाय. ते व्यवहारथी चारित्र बाधा थाय. त्यार पछी चारित्र कायोपष्टंभथी निर्जरा थाय अने जीवघातादिकथी पापकर्म थाय. त्यां स्वहेतु सामर्थ्यथी पापनी अपेक्षाये बहुत्तर निर्जरा थाय, अने निर्जरानो अपेक्षाये अल्पतर पाप थाय. साधुने अप्रासुक दाने अल्प पाप, ने निर्जरा घणी, एम सूत्रे कह्युं. इहा केटलाक एम कहे छे के, असंथरणादि कारणेज अप्रासुक दाने घणी निर्जरा थाय, परंतु कारण विना नहिं. यतः उक्तं. "संथरणंमि असुद्धं दोण्हवि गण्हंत दित्तयाणहियं आउर दिठं तेणं तंचेव हियं असंथरणे." वली केइक एम कहेछे के, अकारणे पण

गुणवंत पात्रदान काजे अप्रासुक दीधाथी प्रणाम वसथी घणी निर्जरा थाय. अति थोडुं पापकर्म निर्विशेषपणाथी थाय, ते प्रणामना प्रधानपणाथी. आहच्चः—परम रहस्स मिसिणं समत गणिपिडग करीया साराणं परिणामियं पमाणं निछय मवलंबमाणाणं ॥ १ ॥ जे संथरणंमि असुद्धं इत्यादिक कह्युं, ते अशुद्ध देणहारना अहितने काजे थाय. ते ग्राहकने व्यवहार संजम विराधनाथी अने दायकने लुब्धक दृष्टान्त भावितपणे-करी; अथवा अच्युतपन्नपणे करी देतां शुभ अल्प आउखाना निमित्त-पणाथी, ते शुभ आयु बाधे पण अल्प ते अहित जाणवुं. ते शुभ आउखाना निमित्तपणेकरी अप्रासुक दानने अल्प आउखा फल प्रतिपादक सूत्रने विषे पेहेलां चर्च्युं छे. वली इहां तत्व केवलीगम्य छे. हवे त्रीजुं सूत्र कहेछे. स० श्रमणोपासकने भं० हे भगवान ! त० तथारुप चारित्र गुणे करी रहित सामी शाक्यादिक अ० असंजति अ० अव्रति (पाप-कर्म पचख्यां नथी) अप० पचखाणेकरी पापकर्मने जेणे हण्यां नथी, इत्यादिक गुण रहित पात्रनुं विशेण कह्युं, ते प्रत्ये फा० प्रासुक (अचित) अथवा अफा० अप्रासुक (सचित—सजीव) ए० एषणिय ( दुषण रहित) अथवा अणे० अनेषणिय (दुषण सहित) एवा अ० असनादि चार आहार जा० यावत् प० प्रतिलाभताथकाने किं० शुं फल थाय ? गो० हे गौतम ! ए० तेने एकान्त पाप कर्म थाय, पण न० न तेने कांइ पण णि० निर्जरा थाय. वली ए पाठना अर्थमां तथा वृत्तिमां नीचे मुजब गाथा कही छेः—

मोक्खत्थं च जेदाणं, एसविियस्स मुक्खातं;
अणुकंपा दाणं पुणः जिणेहिं कयाइ न पडिसिद्धं ॥ १ ॥

एनो भावार्थ मोक्षने अर्थे गुरुनी बुद्धिए प्रतिलाभे तो तेने एकान्त पाप ( मिथ्यात्व ) लागे; पण अनुकंपा दान पुन्य कोइ तीर्थंकरे निषेध्युं नथी.

भावार्थः—हे देवानुप्रीय ! आ त्रीजा पाठमां तो एम नथी कह्युं

के, रांक, भिखारी, दुर्बलने मरता देखीने अनुकंपा आणीने दान दे तेने एकान्त पाप लागे. ए त्रीजा पाठमां तो तथारुप असंजति अव्रतिने, प्रासुक अप्रासुक एषणिक अणेषणिक प्रतिलाभे तो एकान्त पाप लागे, पण निर्जरा नथी एम कह्युं छे. ए तमे जाणताथका मतना लीधे तथारुप शब्द छुपावीने, बोघां लोकोने भ्हेकाववाने काजे 'असंजति, अव्रति, मागता भीखारी अने दुर्बलने अनुकंपा लावीने दान दे तेने एकान्त पाप लागे' एम केम कहो छो ? इहां तो तथारुप असंजतिने प्रतिलाभे तो एकान्त पाप कह्युं छे. हवे तथारुप केने कहीये ? जेनो असंजति अन्यतीर्थीनो वेष छे तथा असंजति अव्रतिपणानां लक्षण छे, जे मिथ्यात्वनो मालीक छे, मिथ्यात्व परुपे छे, तेने अन्यमति धर्म जाणीने तथा गुरु जाणीने रसोइ आपे छे, तेनी परे श्रावक गुरुनी बुद्धिए करी आपे तो मिथ्यात्वनुं पाप लागे. ए असंजतिनो वेष, असंजतिपणाना अवगुण तथा अव्रति, अपचखाणी, ते आश्री प्रश्न छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "असंजतपणुं, अव्रतपणुं, अपचखाणपणुं अने मिथ्यात्वपणुं जेनामां होय तेनेज तथारुप कहीये. अन्यमतिना वेसनुं कांइ कारण नथी. मागता भीखारी असंजति, अव्रति, अपचखाणी छे तेने तथारुपज कहीये. तेने दोघानुं पाप कह्युं छे. वेशनुं कांइ कारण नथी." तेनो उत्तरः—

हे देवानुप्रीय ! पेहेला पाठमां तो तथारुप समण माहणने प्रासुक एषणिक प्रतिलाभे तो एकान्त निर्जरा कही, तेने पाप कर्म न लागे कह्युं. हवे जुओ ! ए तथारुप समण माहण, उंघो मुहपति आदि सलिंगीपणानो वेश राखे, अने असंजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण सहित होय, तेने प्रतिलाभ्यानो निर्जरारुप लाभ कह्यो ? के सलिंगीना वेश विना संजति व्रति पचख्खाणीपणाना गुण होय, तेने प्रतिलाभ्यामां निर्जरारुप लाभ कह्यो ते कहो. जो सलिंगी साधुपणाना वेश विना संजति साधुपणाना गुण होय, तेने प्रतिलाभ्यामां निर्जरा (मोक्ष) नुं फल केहेशो तो, असंजति अन्यलिंगीना वेशमां भावे साधपणुं आवे, अने केवल-

ज्ञान् पण उपजतुं कह्युं छे. शाख सूत्र भगवती शतक ए में, असोचा केवलीना अधिकारमां. पण त्यां एम कह्युं छे के, दिक्षानो उपदेशतो दे, पण पोते चेलो करे नहिं. हवे जुओ! तथारुप वेशनुं कारण न होय तो चेलो केम न करे? माह्या हो ते विचारी जो जो. तेमज चौद भेदे पंदर प्रकारे सिद्ध सिध्या कह्या छे. शाख सूत्र पन्नवणा तथा नंदीमां. ते पाठः-

से किंतं सिध्द केवलनाणं २ दुविहा पन्नत्ता तंजहाः-अणंतरंसिद्ध-केवलनाणं परंपरसिध्द-केवलनाणं. से किंतं अणंतरंसिद्ध-केवलनाणं २ पनरस विहा पंन्नता तंजहाः-तिथसिध्दा १ अतिथसिध्दा २ तिथंगरसिध्दा ३ अतिथंगरसिध्दा ४ सयंबुध्दसिध्दा ५ पत्तेयबुध्धसिध्धा ६ बुध्धबोहियसिध्धा ७ इथिलिंगसिध्धा ८ पुरिसलिंगसिध्धा ए नपुसकलिंगसिध्धा १० सलिंगसिध्धा ११ अन्नलिंगसिध्धा १२ गिहलिंगसिध्धा १३ एगसिध्धा १४ अणेगसिध्धा. १५.

अर्थः—से० ते किं० कयुं सि० सकल कर्मना दहणहार ( सिद्ध ) नुं केवलज्ञान? ते केवलज्ञानना दु० बे भेद प० परुप्या तं० ते जेम छे तेम कहे छेः-अ० आंतरा सहित एटले अहिंथी देही छोडी एक समय सिद्धगतिमां पोंहोंच्याने थयो ते अनंतरसिद्ध-केवलज्ञान. १ प० सिद्धगतिमां पोंहोंच्याने अंतर मुहूर्त आदि संख्यातो, असंख्यातो अने अनंतो काल ओलंघ्यो ते परंपरसिद्ध-केवलज्ञान. २ से० ते कि० कयुं अ० अनंतरसिद्ध-केवलज्ञान? ते अनंतरसिद्ध-केवलज्ञानना प० पंदर भेद प० परुप्या तं० ते जेम छे तेम कहे छेः-ति० जेथी तरीए तेने तीर्थ कहीये. तेना बे भेद, द्रव्य ने भाव. इहां नदी आदिके नाहावुं अथवा यात्रा करवानां तीर्थ, ते सर्व द्रव्य तीर्थ, एथी संसार न तराय; अने आदिनाथजीनुं सासन ते सर्व भाव तीर्थ, एथी संसार तराय. एने विषे आदिनाथना प्रथम गणधर रुषभसेन, तथा वर्धमान स्वामीना प्रथम

गणधर गौतमस्वामी प्रमुख सिध्या तेनी परे सिध्या ते तीर्थसिद्धा. १ अ० तीर्थना आंतरे तीर्थना विरहने विषे जातिस्मरणादिके करी सिध्या ते, तथा तीर्थ प्रवर्त्ताव्या विना सिध्या ते अतीर्थसिद्धा, मरुदेवी वत्. २ ति० पूर्वोक्त तीर्थना जे स्थापनहार ते तीर्थंकर सिद्धा. ते श्री ऋषभदेववत् सर्व जाणवा. ३ अति० जे सामानिक केवली छतां गौतमादिकनी परे सिध्या ते अतीर्थंकरसिद्धा. ४ स्व० स्वयमेव पोतेज जातिस्मरणादिक ज्ञाने करीने तत्वना जाण थया ते स्वयंबुद्धसिद्धा. ५ प० प्रत्येकबुद्ध जे कांइ एक वृषभादिक वस्तु देखीने अनित्य भावनादिकनुं कारण, तेनी प्रतीते बुझया ते प्रत्येक बुद्धसिद्धा. ६ हवे स्वयंबुद्ध अने प्रत्येकबुद्धमां शुं विशेष होय ते कहे छे:-बोध १, उपधि २, श्रुत ३, अने लिंग. ४ ए चार प्रकारे फेर होय. हवे बाह्य प्रत्यय विना (कोइ कारण विना दीठे) स्हेजेज जातिस्मरणादिके बुझे तेने स्वयंबुद्ध कहीये. ते बे भेदे होय. तीर्थंकर-स्वयंबुद्ध अने अतीर्थंकर-स्वयंबुद्ध. अने बाह्य कारण देखीने प्रतिबोध पामे तेने प्रत्येकबुद्ध कहीये, करकंडु प्रमुख. ते निश्चे एकाकीज विचरे, पण गच्छवासी न होय, इति बोधी विशेष.

वली स्वयंबुद्धने सात पात्रनां उपगर्ण, त्रण पछेडी, रजोहरणो अने मुखवस्त्रीका, ए बार उपगर्ण होय. (गाथा-पत्तं १ पत्ताबंधो २ पायठवणंच ३ पायकेसरिया ४ पडिलायं ५ रयत्ताणं ६ गोछउं ७ पायनिज्जोगो ८ तिणेवए ९ पछागा १० रयहरणं ११ चेव होइ मुहुपत्ति १२.) अने प्रत्येकबुद्धने तो जघन्य रजोहरण ने मुखवस्त्रिका ए बेज उपगर्ण होय; अने उत्कृष्टा सात उपगर्ण पात्रांना तथा रजोहरण अने मुहपत्ति ए नव उपगर्ण होय. ए उपध्य विशेष. २ वली स्वयंबुद्धने पुर्व भवाधित श्रुत पण होय अने न पण होय, पण जेने पुर्व भवाधित श्रुत होय तेने लिंग देवता आपे, अथवा पोते गुरु पासे जइने ले. जो एकाकी विचरवा समर्थ होय तथा पोतानी इच्छा होय तो एकाकी विचरे, नहिंतो गुरु पासे गछमां रहे; अने जेने पुर्वाधित श्रुत न होय तेतो निश्चय गुरु पासे जइनेज लिंग आदरे, अवश्य गछमांज रहे. अने प्रत्येकबुद्धने

तो पुर्वाधित श्रुत निश्चे होयज, जघन्य अगीयार अंग अने उत्कृष्टा कांइक ऊंणा दस पुरव होय. तेने लिंग देवता आपे अथवा लिंग रहित पण होय. एम श्रुत विशेष लिंग विशेषश्च. ४ । ६ बु० जे आचार्यना प्रतिबोध्या सिध्या ते बुद्धबोद्धित–सिद्धा. ७ इ० स्त्रीना लिंगे सिध्या ते स्त्रीलींगसिद्धा. तेना बे भेदः–द्रव्यस्त्री अने भावस्त्री. वेद सहित होय ते न सिझे, अने द्रव्य स्त्री अवेदी सिझे, अथवा पुरुषे स्त्रीनो वेश कर्यो होय ते सिझे. ते स्त्रीलिंगसिद्धा. ८ पु० पुरुष लिंगे सिद्ध थाय तेने पुर्षलिंगसिद्धा कहीये. ए न० नपुशक लिंगे सिद्धा तेना बे भेदः–जन्म नपुंषक अने कृत्रिम नपुंषक. तेमां कृत्रिम नपुंषकज सिझे. ते नपुषकलिंग-सिद्धा. १० स० रजोहरण, मुहपत्ति आदि साधुना वेष सहित सिध्या ते सलिंगी-सिद्धा. ११ अ० अन्यतीर्थीना वेषमां भावे साधुपणुं आवे, ने सिद्ध थाय ते अन्यलिंग-सिद्धा. १२ गि० ग्रहस्थीना लिंगमां भावे साधपणुं पामी सिध्या (भरतादिवत्) ते ग्रहस्थलिंग-सिद्धा. १३ ए० एक समयमां एक सिध्या ते एक सिद्ध, वर्धमानस्वामीवत्. १४ अ० एक समयमां एकसो ने आठ सिझे ते अनेकसिद्धा, ऋषभदेवस्वामीवत्.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीना वेशमां भावे साधपणुं आवे, तेथी केवलज्ञान उपजे (सिझे) कह्युं. हवे ज्यारे तमारे तथारुप वेशनुं कांइ कारण नथी, त्यारे अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीना वेशमां संजति–व्रति साधुपणाना गुण जाणीने वंदणा केम नथी करता ? आहारपाणीना संभोग केम नथी करता ? तमारा श्रावक वंदणा केम नथी करता ? तथा निर्जरा मोक्षरुप लाभ जाणीने आहारादिक केम नथी देता ते कहो. वली सामायक १, छेदोपस्थापनी २, शुक्ष्मसंप्राय ३, अने जथाख्यात ४, ए चार चारित्र तथा ७ नियंठा अन्यलिंगी तथा ग्रहलिंगीमां भावे कह्या. शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे छठे तथा सातमे. ते पाठः—

पुलायणं भंते ! किं सलिंगे होज्जा अण्णलिंगेहोज्जा ? गो० ! दव्वलिंगपडुच्च सलिंगेवाहोज्जा अन्नलिंगेवाहोज्जा गिहलिंगेवाहोज्जा भावलिंगंपडुच्च नियमा सलिंगेहोज्जा एवं जाव सिणाए. ॥६॥ सामाइय संजएणं भंते ! किं सलिंगेहोज्जा अन्नलिंगेहोज्जा ? जहा पुलाए एवं छेदोवठावणिएवि. परिहार विसुद्धि संजयणं भंते ! किं पुग ? गो० ! दव्वलिंगंवि भावलिंगंवि पडुच्च सलिंगेहोज्जा नोअन्नलिंगेहोज्जा नोगिहलिंगेहोज्जा सेसा जहा समाइय संजए ॥ ७ ॥

अर्थः—पु० पुलाक भं० हे भगवान ! किं० शुं स० पोताने लिंगे होय ? अ० अन्यलिंगे होय ? के ग्रहलिंगे होय ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! त्यां लिंग बे प्रकारे छेः--द्रव्यलिंग अने भावलिंग. त्यां भावलिंग ते ज्ञानादिक. ए स्वलिंगज ज्ञानादि भावने अरिहंतनाज भावथी; अने द्रव्यलिंग बे प्रकारेः--स्वलिंग अने परलिंग. त्यां स्वलिंगने रजोहरणा विगेरे होय; अने परलिंगना बे प्रकारः--कुतीर्थलिंग अने गृहस्थलिंग. एटला माटे द० द्रव्यलिंग आश्रीने स० स्वलिंग अ० अन्यलिंग अथवा गि० गृहस्थलिंगने विषे पण होय, भा० भावलिंग आश्रीने नि० निश्चे स० सलिंगीनेज होय, ए० एम जा० जावत् सि० सनातक सुधी केहवुं. ॥ ६ ॥ सा० सामाइक संजत भं० हे भगवान ! किं० शुं स० सलिंगीने होय ? के अ० अन्यालिंगीने होय ? जे० जेम पु० पुलाकने कह्युं तेम केहवुं. ए० एम छे० छेदोपस्थापनिय पण केहवुं. प० परिहार विशुद्धि ते शुं ? इत्यादिक प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! द० द्रव्यालिंग अने भा० भावलिंग आश्रीने स० सलिंगीने विषेज होय, पण नोअ० अन्यालिंगीने विषे न होय. नोगि० गृहलिंगीने विषे न होय. से० शेष ज० जेम स० सामाइक संजत कह्युं तेम केहवुं ॥ ७ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां सूत्रमां अन्यलिंगी अने ग्रहलिंगीमां

चार चारित्रना अने छ नियंठाना साधुपणाना भाव कह्या. हवे तमे कहोछो के "तथारुपमां वेशनुं कारण कांइ नथी. असंजतिपणुं अव्रतिपणुं होय ते मागता भीखारी सर्वने तथारुप असंजति कहीये. तेने दीधानुं पाप कह्युं छे." ए लेखे सलिंगी साधुना वेश विना अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे चार संजम तथा छ नियंठा (साधपणुं) होय. ते तमारे लेखे तथारुप समण माहण पेहेला पाठमां कह्या तेज जाणवा. तेने प्रतिलाभ्यां एकान्त कर्मनी निर्जरा (मोक्षरुप लाभ) जाणीने तमे केम नथी वांदता? आहारादिकनो संभोग केम नथी करता? तथा श्रावक केम नथी वांदता? अने निर्जरा (मोक्षनो लाभ) जाणीने आहारादिक केम नथी देता? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अन्यलिंगी गृहलिंगीमां भावे चार चारित्र अने छ नियंठा होय तो खरा, पण कोइने अतिशय ज्ञानविना खबर पडे नहिं, तेथी ते वंदणा करवा तथा संभोग करवा जोग नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! तमने तो ज्ञानविना खबर नथी, पण केवलज्ञानी अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे साधुपणुं जाणीने संभोग करे के नहिं? तथा बीजा छद्मस्थ साधु तथा श्रावकने वंदणा करवानी, संभोग करवानी तथा आहारादिक देवानी आज्ञा आपे के नहिं ते कहो. तेवारे तेरापंथी पण कहेछे के, "सलिंगी साधुपणाना वेश विना व्यवहार अशुद्ध, तेथी अन्यलिंगी तथा गृहलिंगीमां भावे साधपणुं जाणीने केवलज्ञानी संभोग करे नहिं, तथा बीजा साधु श्रावकने वंदणा करवानी तथा आहारपाणी आपवानी आज्ञा दे नहिं."

त्यारे हे देवानुप्रीय! सलिंगी साधुनो वेश, संजति व्रति अने पच्चखाणीपणाना गुण, तेने पेहेला पाठमां तथारुप समण माहण कहो छो, ते सलिंगी साधुपणाना गुण सहितने प्रतिलाभ्यां शुद्ध व्यवहार मानो छो, ने निर्जरा मोक्षरुप फल मानो छो, अने सलिंगीना वेश विना भावे साधपणुं होय तेने वंदणा न करो अने आहारादिक दीधामां निर्जरा न मानो, तो त्रीजा पाठमां असंजतिना वेश विना तथारुप केम

मानो छो ? मागता भीखारी दुर्बलने असंजति अव्रतिपणुं जाणीने तथा-रुप असंजति केम कहो छो ? तेने प्रतिलाभ्यां एकान्त पाप कह्युं छे, एम जुठ केम बोलो छो ? इहांतो तथारुप असंजति कह्यो छे ते अन्य-मतिनो वेश छे, मिथ्यात् प्ररुपे छे अने गुरु करीने पुजावे छे. तेनो श्रावक अलापसलाप करे अने अशनादिक प्रतिलाभे तो लोकीक मिथ्यात् लागे. भद्रिक गृहस्थ एम जाणे के, ए जिनमार्गी श्रावक अन्यमतिने रसोइ दे छे; दान दे छे, तो ए पण तारणतरण छे. एम मिथ्यात् दीपे. वली श्राव-कने अन्यदर्शनीनो सांसतो-परचो वर्ज्यो छे. जो अन्य दर्शनीनो सांसतो परचो करे तो समकितमां अतिचार लागे. तेथी तथारुप असंजतिने प्रतिलाभे तो परपाषंडीनो सांसतो-परचो थाय, एज मिथ्यातनुं पाप लागे. वली अन्यमतिना वेश विना जे असंजति अव्रति छे, तेनेज तथा-रुप असंजति मानीए तो श्रावकने ज्ञातीगोत्री, दासदासी, तिर्यंच अने मागता भीखारी ए सर्व असंजति अव्रति छे,तेनो सांसतो-परचो करवाथी समकितमां अतिचार लागे, त्यारे ते करवाथी श्रावकनुं श्रावकपणुं (समकित) शी रीते रहे ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अन्यमतिनो वेश तथा परपाषंडीपणुं धारण कीधुं तेनो सांसतो परचो करे तो समकितमां अतिचार लागे." त्यारे हे देवानुप्रीय ! जेनो सांसतो-परचो कर्यां अतिचार लागे तेनेज तथारुप असंजति अव्रति कहीये. तेने प्रतिलाभे तो मिथ्यातनुं पाप लागे, एम प्रभुए त्रीजा पाठमां कह्युं छे; अने तमे कहोछो के "तथा-रुपमां वेशनुं कारण कांइ नथी. असंजति अव्रतिपणुं होय तेनेज तथारुप-असंजति कहीये." त्यारे अभविने सलिंगी-साधुनो वेश छे, व्यवहारमां साधुपणुं पाले छे, अने निश्चेमां असंजति, अव्रति, अपच-खाणी छे. ते तमेतो ज्ञान विना नथी जाणता, पण केवलज्ञानीतो जाणे छे. हवे अभविने सलिंगी-साधुनो वेश व्यवहार शुद्ध जाणीने, पेहेला पाठमां तथारुप समण माहण कह्या तेवुं जाणीने केवली संजोगमां रांखे तथा बीजा साधु श्रावकने वंदणा करवानो तथा आहारपाणी

देवानी आज्ञा दे, के नावे असंजति अव्रति अपचखाणी जाणीने वेशनुं कारण कांइ नहिं, एम जाणीने त्रीजा पाठमां तथारुप असंजति, अव्रति कह्या तेवो जाणीने केवलज्ञानो संभोग बाहार काढे ते कह्यो. वली पूर्वोक्त कथनने स्पष्ट करवा अर्थे चोभंगी कहीये छीए, के एक तो साधुनो वेश अने संजति-व्रतिपणाना गुण १, एक साधुनो वेश अने असंजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण निह्नवोमां, ए अभवि साधु २, एक अन्यलिंगीनो वेश अने संजति व्रति पचखाणीपणाना गुण अन्य-लिंगीमां भावे साधपणुं ते आश्री ३, अने एक अन्यमतिनो वेश अने असंजति अव्रति अपचखाणीपणाना गुण ते त्रणसो त्रेसठ पाखंडी ४, ए चार भांगामां पेहेला पाठमां कया भांगा अने त्रीजा पाठमां कया भांगा ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " पेहेलो अने बीजो भांगो तो पेहेला पाठमां छे, तेने दीधां तो एकान्त निर्जरा थाय, पाप नथी; अने त्रीजो ने चोथो भांगो त्रीजा पाठमां छे, तेने दीधां एकान्त पाप थाय. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! तथारुपमां तमे कहोछो के, वेषनुं कारण कांइ नथी, तो बीजा भागामां अभवी साधुने भावे असंजति अव्रति अप-चखाणी केवली जाणे छे, तेने पेहेला पाठमां केम गणो? अने त्रीजा भांगामां अन्यलिंगीमां भावे साधुपणुं होय, तेने केवलज्ञानी गुण आश्री भावे संजति वृत्ति पचखाणी जाणे छे, तेने त्रीजा पाठमां केम गणो? वेशनुं कारणतो तमारे लेखे कांइ नथी, गुण तो संजतिपणाना छे. पण हे देवानुप्रीय! तथारुप तो वेशथीज जाणयो जाय. तेथी त्रीजा पाठमां तथारुप-असंजति कह्यो छे. ते असंजति पाषंडीनो वेश छे, मिथ्यात्व प्ररुपे छे, अने मिथ्यात्वनो मालीक छे, तेनोज अधिकार छे. तेने पण दी-धानुं पाप नथी कह्युं. "पडिलाभेमाणे किं कज्जइ" एवी पृछा छे. प्रतिलाभ नाम तो परम उत्कृष्ट लाभ मोक्षरुप निर्जरारुप लाभ जाणीने गुरुनी बुद्धे दे तेनेज कहीये; पण मागता भीखारी दुर्बलने अनुकंपा आणीने दान दे, तेने बत्रीस सूत्रमां कोइ ठेकाणे 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं;

पण देवुं कह्युं छे. शाख सूत्र ज्ञाता अध्ययन चौदमे. पोटीला दानशाला मांडी दान दे छे, ते पाठः—

ततेणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं उहयमण संकप्पं जाव झियायमाणं पासइ २ त्ता एवं वयासी माणं तुमं देवाणुप्पिया उहयमण संकप्पे जाव झियायह. तुमंणं ममं माहणसंसि विउल असणं ४ उवक्खडावेहि बहूणं समण माहण जाव वणिमग्गणं देयमाणीय देवावेमाणिय विहराहि. ततेणंसा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्तासमाणा हठतुठ तेयलिपुत्तस्स एयमठं पडिसुणेइ २ त्ता कल्लाकल्लिं माहणसंसि विउलं असणं ४ जाव देवावेमाणिय विहरइ ॥

अर्थः—त० तेवारे ते० तेतलीपुत्र पो० पोटीलाने उ० चिंतातुर म० मनमां सं० संकल्प विकल्प जा० यावत् झि० आर्तध्यान ध्यातो थकी पा० देखे, देखीने ए० एम व० कहे, मा० रखे तु० तमे दे० हे देवानुप्रीय ! ऊ० चिंता करो, म० मनमां सं० संकल्प जा० यावत् झि० आर्तध्यान करो. तु० तमे. म० मारी मा० सतुकार दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० अशनादि ४ उ० निपजावो. ब० घणा स० श्रमण मा० ब्राह्मण जा० यावत् व० वणिमग भिक्षाचरोने दे० देतीथकी दे० देवरावतीथकी वि० विचरो. त० तेवारे सा० ते पो० पोटीला ते० तेतलीपुत्रे ए० एम वु० कहेथके ह० हर्ष तु० संतोष पामी, ते० तेतलीपुत्रनो ए० ए अर्थ प० सांभले, सांभलीने क० दिन दिन प्रत्ये मा० दानशालामां वि० विस्तीर्ण अ० अशनादि ४ जा०यावत् दे० देती देवरावतीथकी वि०विचरे छे.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां समण माहण रांक भीखारीना दानमां 'दलयमाणे' कह्युं, पण 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं. वली ज्ञाताना सोलमा अध्ययनमां द्रौपदीना आगला भवमां सुकुमालीकाए दानशाला दीधी, त्यां पण 'दलयमाणे' कह्युं छे. ते पाठ लखाए छेः—

ततेणं से सागरदत्ते तहेव संभंतेसमाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागछइ २ त्ता सुकुमालियं दारियं अंके णिवेस-इ२ त्ता एवं वयासीः—अहोणं तुमं पुत्ता पोरा पोराणं जाव पच्चणु-भवमाणि विहरसि. तं माणं तुमं पुत्ता ! उहय मण जाव झियाहिं तुमणं पुत्ता ! मम माहणसंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं जहा पोहिला जाव परिभएमाणि वि-हराइ. ततेणं सा सुकुमालिया दारिया एयमठं पडिसुणेइ२ त्ता माहणसंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमेणं जाव दलयमाणि विहरइ ॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते सा० सागरदत्त त० तेमज सं० भय भ्रान्त थकी जे० ज्यां वा० वासघर छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने सु० सु-कुमालीका दा० दारिकाने अं० खोले णि० बेसारे, बेसारीने ए० एम व० कहेः-अ० अहो तु० तुमे पु० हे पुत्र ! पो० पाछला भवनुं पाप कर्म जा० यावत् प० भोगवतीथकी वि० विचर. हवे हुं शुं करुं. तं० ते माटे मा० रखे तु० तमे पु० हे पुत्र ! उ० आर्तध्यान म० मनमां जा०यावत् झि० ध्याता. तु० तमे पु० हे पुत्र ! म० मारी मा० सतुकार दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० अशन पा० पाणी खा० खादिम सा० सादिम निपजावो ज० पो० पोटीलानी जा० परे प० वहेंची आपतीथकी वि० विचर. त० तेवारे सा० ते सु० सुकुमालीका दारिका ए० ए अर्थ प० सांभले, सांभ-लीने मा० दानशालाए वि० विस्तीर्ण अ० असण पा० पाणी खा० खा-दिम सा० सादिम जा० जावत् द० देती देचरावती थकी वि० विचरे.

भावार्थः—हवे जुओ ! 'इहां दलयमाणे' कह्युं छे, पण समण मा-हण गरीबने दान देवामां 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं. वली राय-प्रशेणी सूत्रमां प्रदेशीराजाए समण माहण अने रांक भीखारीने दान देवा दानशाला मंडावी, त्यां पण 'पडिलाभेमाणे' नथी कह्युं.

हे देवानुप्रीय ! पडिलाभेमाणे तो गुरुनी बुद्धिए मोक्षनो लाभ निर्जरा-रुप जाणीने दे तेनेज कह्युं छे. वली आवश्यक सूत्रमां पण 'पडि-लाभेमाणे' साधुना दानमां कह्युं छे. वली उपाशकदशामां आणंद श्रावकने साधुना दानना अधिकारमां 'पडिलाभेमाणे' कह्युं छे. वली उववाइ अने सूयगडांग सूत्रमां, श्रावकना बारमा व्रतमां साधुने गुरुनी बुद्धिऐ मोक्षनो लाभ जाणीने दे, त्यां 'पडिलाभेमाणे' कह्युं छे. तेमज भगवती सूत्रमां तुंगीयानगरीना श्रावकोना बारमा व्रतना अधिकारमां 'पडिलाभेमाणे' कह्युं छे. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे साधुने गुरुनी बुद्धिए मोक्षरुप लाभ जाणीने दे, तेमां पडिलाभेमाणे कह्युं छे. तेमज त्रीजा पाठमां पण तथारुप-असंजती, ते पाखंडीनो वेश छे, मिथ्यातनो मालीक छे, तथा मिथ्यात परुपे छे, तेने लोको गुरुनी बुद्धिए रसोइ दे, दान दे, एवी बुद्धिए श्रावक दे, तो मिथ्यातनुं पाप लागे. वली भगवती सूत्रना त्रीजा पाठनी टीकामां नीचे प्रमाणे गाथा छेः—

मोक्खत्थंच जे दाणं, एसच्चिय, समुक्खाउं;
अणुकंपा दाणं पुण, जणेहिं कयाइ न पडि सिद्धं ॥ १ ॥

इहां पण एम कह्युं के, जे गुरुनी बुद्धिए मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तेने एकान्त पाप मिथ्यात्वनुं लागे; पण अनुकंपा दान पुन्य कोइ पण तीर्थंकरे निषेध्युं नथी; एम टीकानी गाथामां कह्युं छे. तेवारे तेरापंथी कहेछे के "गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तो मिथ्यात्वनुं पाप लागे, पण अनुकंपादान जुदुं रह्युं. ते तमे मनथी स्थापवा माटे युक्ति मेलवोछो." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए त्रण पाठ लगता दान दी-धाना छे. त्यां तमारा लेखे जेवुं असंजतिना दानमां पाप कह्युं, अने ए पाठ जेवो कह्यो तेवोज मानवो, युक्ति हेतु कांइ न मानवुं, त्यारे बीजा पाठमां तथारुप साधुने प्रासुक, अप्रासुक, एषणिक, अणेषणिक, प्रति-लाभे तो अल्प दोष बहुत निर्जरा कही. ए पाठ जेवो कह्यो तेवोज मानोछो ? के एषणिक अणेषणिकथी कोइ युक्ति मानोछो ? कारण

अकारणे, जाणे अजाणे. हवे जो बीजा पाठमां अजाएयानो तथा कारणनी युक्ति मानोछो, तो त्रीजा पाठमां युक्ति साची छे ते केम न मानो ? गुरुनी बुद्धिए मोक्षने हेते दे तो एकान्त पाप (मिथ्यात्व) लागे, ए युक्ति खरी छे. वली अल्प दोष बहुत निर्जरानो पाठ तमने शंका सहित जाणे छे, त्यारे त्रीजो पाठ निःशंक केम मानो छो ? वली तथारुप असंजतिने दान दीधां एकान्त पाप लागे, तो ठामठाम श्रावके दान केम दीधां ? इहांतो असंजतिने प्रतिलाभे तो एकान्त पाप लागे एम कह्युं. ते अढार पाप मांहेलुं कयुं पाप लागे ते कहो. अढार पापमां एकान्त पाप कया पापने कहीए ते कहो. श्रावकने अढारमां एकान्त पाप कयुं लागे एवो मुल अर्थ तमे जाणता नथी. श्रावकने सत्तर पापमां कांइक देसथकी आगार छे, अने घणो त्याग छे. तेथी श्रावक पापना व्रताव्रत्ति छे, धर्माधर्मी छे, पण एकान्त पापी नथी. एकान्त पापतो मिथ्यात्वनुं छे, तेनो देशथकी त्याग थाय नही,अने ते तो श्रावकने मुलथीज नथी. ते माटे गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने आपे तो मिथ्यात्वरुपी एकान्त पाप लागे, ने समकीत पण जाय. त्यारे बीजा पापनुं शुं कहेवुं.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "इहांतो श्रावक तथारुप असंजतिने प्रतिलाभे, तो एकान्त पाप लागे एम कह्युं छे. त्यारे श्रावक थइने तथा रुप असंजतिने गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु जाणीने केम देशे ?" तेनो उत्तरः-

हे देवानुप्रीय ! इहांतो पुछानी रचना छे. जेम दसाश्रुतस्कंधमां कह्युं के, साधु रात्रीभोजन करेतो, मैथुन सेवेतो, अने दस प्रकारनी हरी लीलोत्री खाय तो सबलो दोष लागे. हवे जुओ ! साधु होय ते रात्री भोजन केम करशे, मैथुन केम सेवशे, अने सचित लीलोत्री केम खाशे; पण उदयभावना जोरथी साधु ए काम करे तो सबलो दोष लागे कह्युं. वली आचारांग तथा निषीत सूत्रमां अनेक अकरवाजोग कामो विषे पुछा करी, तेनुं प्रायछित कह्युं. हवे जुओ ! साधु अकरवाजोग कामो केम करे ! पण कर्मनी गती विचीत्र छे. कर्मना उदयभावना जोरथी दोष लगाडे. तेम कोइ श्रावक असंजतिनी क्रिया आरं-

वर देखीने, मिथ्यात-मोहनी-कर्मना उदये गुरुनी बुद्धे, मोक्षनो हेतु छे एवो भाव आणीने आपे तो मिथ्यात्वनुं पाप लागे. एवी रीते सूत्र भगवतीना त्रणे पाठमां पुछानी रचना छे. दातार तो एक श्रावकनेज कह्यो. सर्व दातार (दानना देणहारा) विषे नथी पुछ्युं. वली पात्र त्रण प्रकारे कह्यां. फल मोक्षरुप तथा निर्जराना लाभरुप पुछ्यो. पछी प्रभुए त्रणे पाठमां जेवो लाभ हतो तेवो कह्यो. एकान्त निर्जरा; अल्प दोष बहुत निर्जरा; अने एकान्त पाप. ए त्रणे पाठमां जेवां फल हतां तेवां कह्यां, पण पडिलाभवुं त्रणे पाठमां सरखुं कह्युं; ते गुरुनी बुद्धे मोक्षने हेते जाणवुं. माटे ए अनुकंपानो प्रश्न नथी. मागता भीखारी तथा दुर्बलने मरता देखी अनुकंपा आणीने आपे तो एकान्त पाप लागे, एम नथी कह्युं. तमे प्रभुना वचन माथे एवां जुठां आल दइ अनंत संसार केम वधारो छो ? वली तेरापंथी कहेछे के, "आर्द्रकुमारे कह्युं छे के, ब्राह्मणोने जमाडे तो नारकीमां जाय. ए अनुकंपा दानथी नारकी केम कही ? " तेनो उत्तर. सुयगडांगजीना बीजा श्रुतष्कंधना छठा अध्ययननो पाठ:—

सिणायगाणंतु दुवे सहस्से, जे भोयइ णितिए माहणाणं; ते पुणखंधं समहं जणिता, भवंति देवा इति वेयवाउ.।४३। सिणायगाणंतु दुवे सहस्से, जे भोयए णितिए कुलाल-याणं; सेगछइ लोलुय संपगाढे तिवाहि तावा णरगाभि-सेवी. ॥४४॥ दया वरं धम्म दुगंछमाणा, वहावहं धम्म पसंसमाणे; एगं पि जे भोययती असीलं. णिवो. णिसं-जाति, कउसुरेहिं ॥४५॥

अर्थः—सि० स्नान वीगेरे षट्‌कर्मना करणहारा दु० बे स० हज़ार जे० जे कोइ पुरुष भो० जमाडे णि० नित्य प्रत्ये मा० ब्राह्मणोने, ते० ते पुरुष पु० पुन्य खंध स० भेलो कर ज० उपार्जीने भ० थाय दे० देवता. इ० एम वे० वेदनो वाणो छे. ॥ ४३ ॥ हवे आर्द्रकुमार ब्राह्मण प्रत्ये कहे

छेः-सि० स्नान वीगेरे षट्कर्मना करणहारा दु० बे स० हजार ब्राह्मणने जे० जे कोइ नो० नोजन जमाडे णि० नित्य प्रत्ये कु० मार्जारवृत्तिवाळाने, से० ते जमाडणहार ग० जाय लो० मांसने गृद्धेकरी सं० व्याप्या छे ति० सहेतां दोहीलो ता० ताप छे जेनो, एवी ण० नरकनो नि० सेवणहार थाय. ॥४४॥ द० दयारुप व० प्रधान ध० धर्मनो दु० निंदणहारो व० हिंसामां ध० धर्मने प० प्रशंसतो थको एवा ए० एकने पि० पण जे० जे नो० नोजन जमाडे अ० व्रतरहितने णि० छ कायनो उपमर्दन करीने, ते सं० संजति अथवा सु० स्वर्गपणुं माने छे ते मृषा छे.

नावार्थः—हे देवानुप्रीय! अहीयां तो आर्द्रकुमारने पहेलां ब्राह्मणोए कह्युं के, "हे आर्द्रकुमार! तुम सरखा राजकुमारने ब्राह्मणज गुरु करवा जोग्य छे, परंतु शूद्र गुरु मानवा जोग्य नथी. ते माटे वेद, विप्र, विष्नुं, अने संध्यास्नान, ए चार मोक्षनां अंग छे, एथी मुक्ति थाशे. ए सनातन कर्मना करणहारा बे हजार ब्राह्मणोने नित्य प्रत्ये जमाडे तो पुन्यनो खंध उपार्जे, एवुं वेदमां कह्युं छे." एम ब्राह्मणे आर्द्रकुमारने कह्युं. जेम जैनमार्गमां सूत्र, साधु, जिन, अने त्याग, ए चार बोल मुक्तिना हेतु छे, तेम तेने ठामे वेद, ब्राह्मण, विष्णु अने नोग, ए चार बोल मानवा सारु देखाड्या. तेवारे आर्द्रकुमारे तेमने जैनमार्गना द्वेषी जाणी तथा मिथ्यात्व परुपता जाणी, तेमना बोलवाना अनीप्रायनो उत्तर दीधो के, मिथ्यात्त मार्गथी मुक्ती नथी. वली आर्द्रकुमारे कह्युं के, जे तम सरीखा सनातन कर्मना करणहारा बीलाडा तुल्य बे हजार ब्राह्मणोने जमाडे, ते तीव्र नरके जाय. तमे दयारुपी प्रधान धर्मनी दुगंछा करो छो, अने छकाय जीवनी हिंसा (वध) रुपी धर्मने प्रशंसो छो. एवा एक पण ब्राह्मणने जमाड्याथी (असुर धर्मे) देवगति क्यांथी थाय? तेवारे ब्राह्मणो बोल्या के "जे सनातन कर्मना करणहारा (ब्राह्मणनां षट् कर्म करे, गुरु बुद्धे पुजावे) छे तेने तुं मोक्षनो हेतु जाण." तेवारे आर्द्रकुमारे ते ब्राह्मणोना अनिप्रायना अनुसारे पुर्वोक्त वचन कह्यां. एम गुरुनी बुद्धे, मोक्षने हेते दे तेनी ना कही; पण अनुकंपा

दाननो निषेध नथी. जो ब्राह्मणोए एम कह्युं होत के "हे आर्द्रकुमार! हुं दुर्बल भीखारी ब्राह्मण छुं माटे तुं अनुकंपा आणीने दान आप." एम ब्राह्मणे कह्युं होत, अने आर्द्रकुमारे एम जवाब आप्यो होत के "मागता भीखारी दुर्बलने मरता देखी अनुकंपा आणीने दान देवुं नहीं, जो असंजति मागता भीखारीने अनुकंपा आणीने दान दे तो नारकीमां जाय." एम आर्द्रकुमारे कह्युं होत तो तमारुं कहेवुं मलत; पण एम नथी कह्युं. अहीयां तो ब्राह्मणोए पोतानुं गुरुपणुं देखाड्युं, अने ब्रह्मभोजने पुन्यनो खंध (पुंज) तथा मोक्षनो हेतु जणाव्यो, तेना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे. जो ब्रह्मभोजनमां पुन्यनो खंध तथा मोक्षनो हेतु माने तथा गुरु जाणीने दे, तो नारकीमां जाय, ए अभिप्रायनो उत्तर छे; पण ए श्रीवीतरागदेवनुं उपदेशीक वचन नथी. ए तो ज्यारे आर्द्रकुमार श्री माहावीर भगवंत पासे दीक्षा लेवा जाय छे, तेवारे ब्राह्मणे जैनधर्मने निषेध्यो तथा मिथ्यात्व थाप्यो, तेथी आर्द्रकुमारे वीवादमां उत्तर दीधो के, जे ब्राह्मणने जमाडे ते नारकीमां जाय. पण ए वचन प्रमाण नथी. एतो विवाद वचन ग्रहस्थनुं छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, समकिती धर्म-चर्चामां जुठ केम बोले? अने समकितीनुं वचन प्रमाण केम नहीं? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! समकिती श्रावक तो पापनां अनेक काम करे छे तथा रागद्वेषने वश अनेक जुठ बोले छे. जेम श्रावकना प्रणाम वैरागभावमां दिक्षा लेवाना होय, तेवारे संसारी (मोहमां लुब्ध थयेला) कहे के, घरमां बेठो धर्म ध्यान कर, दान दे अने श्रावकनां बारव्रत पाल, तेथी पण सद्गति थइ जशे, मारी छातीने दाह देइ केम जाय छे. तेवारे श्रावक भाव चारित्रीयो पण एम कहे के, तमे मारा आत्माना वेरी छो, मने घरमां राखीने संसारमां तथा नरक निगोदमां भमाववा चाहो छो. एम विवादमां वचन कहे छे. जेम जमालीनी माताए जमालीने कह्युं के, हे पुत्र! ए शरीरथी धन, जोबन तथा स्त्रीनां सुख भोगवो, पछी दीक्षा लेजो. तेवारे जमालीए कह्युं के, हे माता! ए तन, धन, जोबन अने कुटंब अनंत

संसारनां वधारणहार छे तथा चार गतिमां अनंत काल सुधी रुलावणहार छे. एम विवादमां कह्युं.

हवे जुओ ! श्रावक घरमां बेठो तन, धन, जोबन, स्त्री आदिक भोगवतो श्रावकपणुं पाले, ते एकाअवतारी थाय के नही ? पण वैरागीने संसारी घरमां राखवा च्हाय, तेवारे समकिती श्रावक भावचारित्रीयो पण संसारीओने विवादमां उपदेश देवाने उंची नीची परुपणा करे, तेनुं वचन प्रमाणमां न गणाय. वली द्वेषने वश विवादमां साधु मुनीराज पण उंचां नीचां काम करे छे, तथा उंचुं नीचुं वचन बोली जाय छे. जेम नागेश्री ब्राह्मणीए धर्मरुची अणगारने कडवुं तुंबडुं वहोराव्युं, तेथी तेमनी घात थइ. पछी धर्मघोष आचार्यें श्रुतज्ञानेकरी धर्मरुचीने सर्वार्थ-सिद्धमां उपन्या दीठा, अने नागेश्री ब्राह्मणीए कडवुं तुंबडुं वहोराव्युं एम ज्ञाने करी दीठुं. पछी धर्मरुचीना मोहे करी नागेश्री ब्राह्मणीने बजारमां तथा गलीए गलीए हिली निंदी. ए काम धर्मघोष आचार्यें द्वेषमां तथा विवादमां कर्युं, तेम बीजा साधुने ए काम करवुं योग्य नथी. तेमज आर्द्रकुमारे ब्राह्मणोने जैन धर्मने निंदता जाणी ए वचन विवादमां कह्युं, पण आर्द्रकुमारनुं ते वचन प्रमाणमां न गणाय. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, साध श्रावकने कर्मने वशे दोष तो लागी जाय, पण धर्म उपदेशमां छती अछती परुपणा करे नही. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्रावक समद्रष्टी तो क्यांय रह्या, पण साधुजी दस पूर्व माठेरा भणेला श्री केवलीना वचननी नेश्राय वीना पोताना मनथी सूत्र गुंथे तेनां वचन पण एकान्त प्रमाण नथी; अने (समसूत्र) साचां मानवां कह्यां नथी. शास्त्र सूत्र नंदी. ते पाठः—

से किंतं समसूयं ? जइमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उपन्न नाण दंसणधरेहिं तिलोक निरिक्खिय महियं पुइएहिं तीय पच्चु-पन्न मणागय जाणएहिं सव्वनाणेहिं सव्वदरिसिहिं पणिहिं दुवालसग गणि पिडग पणत्ता तंजहाः—आयारो १

सूयगमो २ एठाणं ३ सम्मवाउ ४ विवहापणत्ता ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७ अंतगमदसाउ ८ अणुत्तरोववाइयदसाउ ए पण्हावागरणाइ १० विवागसूय ११ दिठिवाउय १२ इच्चेइयं दुवालसग गणि पिंमग चउदस पुव्विस्स समसूय अन्निणं दस्स पुव्विस्स समसूय तेणपरं निणेसू नयणा सेतं समसूय ॥

अर्थः—से० ते किं० शुं स० सम्यक् सूत्र ? इति प्रश्न. गुरु बोल्या के, हे शिष्य ! सम्यक् सूत्र ज० जे ए प्रत्यक्ष आगल कहेशे ते अ० अशोकादि अष्ट महा प्रतिहार्यना धरणहार अरिहंत न० सम्यक् इश्वर्यादिकना धरणहार ते नगवंत, उ० उत्पन्न ना० केवलज्ञान दं० केवल दर्शनना ध० धरणहार ति० त्रण लोकना नि० देखणहार म० महिमा योग्य ढे, पू० पुजवा सत्कार करवा योग्य ढे, ती० नुतकाल प० वर्तमानकाल अने म० नविष्यकाल, ए त्रण कालना जा० जाण ढे. ते श्री तीर्थंकरदेव स० सर्वज्ञ सद० सर्वदर्शी ते पुरुषोए प० (प्रणत) कह्या. ते शुं कह्युं ते कहेढेः-दु० द्वादशांगीरुप ग० आचार्यनी पिं० पेटी प० कही तं० ते कहेढेः—आ० आचारांगने विषे पांच आचारनो विवरो ( साधुनो आचार ) चाल्यो ढे. १ सू० सुयगमांगने विषे स्वसमय परसमयना नाव चाल्या ढे. २ ठा० ठाणायांगने विषे एक ठाणाथी मांमीने दसठाणा सुधी बोल चाल्या ढे. ३ स० समवायांगने विषे एक समवायांगथी लइ सो लाख कोमाकोमी प्रमुख बोल चाल्या ढे. ४ वि० विवाहपन्नतिने विषे गौतमस्वामीए ढत्रीस हजार प्रश्न पुढया तेनो विचार नगवती सूत्रमां चाल्यो ढे. ५ ना० ज्ञाताने विषे ग्राम नगरनो, साधु साधवीनो अने सर्व वस्तुनो वीचार चाल्यो ढे; अने धर्म कथाने विषे सामी त्रणक्रोम कथा कही ढे. ६ उ० उपाशकदशाने विषे दस श्रावकनी उत्कृष्टी करणीनो वीचार कह्यो ढे. ७ अं० अंतगमदशांगने विषे अंत समये अष्टकर्मनो अंत कीधो तेनो वीचार चाल्यो ढे. ८ अ० अणुत्तरोववाइदशांगने विषे पांच

अणुत्तर विमानने विषे पोह्होच्या तेनो वीचार चाल्यो छे. ए प० प्रश्नव्याकरणने विषे अंगुष्टादिक प्रश्ननो, पांच संवरनो अने पांच आश्रवनो वीचार चाल्यो छे. १० वि० विपाकने विषे शुभ-विपाक, अशुभ-विपाक कर्मनो विचार चाल्यो छे. ११ दि० दृष्टिवादने विषे पांच प्रकारनो विचार चाल्यो छे. १२ इ० ए प्रत्यक्ष दु० बार अंग ग० आचार्यनी पिं० पेटी छे. ते आचारांगादिक छे ते मध्ये आचार एकादिक गुण आव्या, ते जेम द्रव्य शब्द वस्तुमां छए षट् द्रव्य आव्या, ते घणा जाणवहार आश्री बार अंगमां सर्व समाणा. वली तेनुं स्वरुप कहेछे. च० चउद पु० पूर्वधारीनां कर्यां स० सम्यक् सूत्र कहीए. अ० वली द० दस पु० पूर्व संपूर्ण जाण्या छे ते दस पूर्वधारीनां कर्यां पण स० सम्यक् सूत्र कहीए. एटलानांज कर्यां निश्चय सम्यक् सूत्र जाणवां ते सर्वने सम्यक् सूत्र कहीये. ते० ते उपरांत जि० जे दस पूर्वथी उछुं जाण्या छे तथा नव पुर्व जाण्या छे तेनां कर्यां सूत्रनी ज० भजना छे. से० ते स० सम्यक् सूत्र कह्यां.

भावार्थः—हवे जुओ ! दस पूर्व उणा जाण्या साधुनां वचन समसूत्र (साचां) करी मानवां, एम श्री वीतरागदेवे कह्युं नथी, पण साच जुठनी भजना कही छे. त्यारे हे देवानुप्रीय ! ते वखते आर्द्रकुमार केटला पूर्वनुं ज्ञान जाण्या हता ते कहो. वली कया सूत्रमां श्री वीतराग देवे कह्युं छे के, ब्राह्मणोने जमाडयाथी नारकीमां जाय, के ते वचननी नेश्रायथी आर्द्रकुमारे कह्युं ते सूत्रनुं नाम बतावो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के “बीजा सूत्रमां तो श्री वीतरागदेवे, ब्राह्मणोने जमाडयां नारकीमां जाय, एम श्रीमुखथी तो कह्युं नथी, पण आर्द्रकुमारेज ए वचन ब्राह्मणोने कह्यां छे.” तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्रमां केवलीना कह्या विना मनथी आर्द्रकुमारे विवादमां ब्राह्मणोने कह्युं, ते वचन प्रमाण केम थाय ? केमके दस पूर्व पुरुं जाण्याविना साधु मनथी कहे ते वचन प्रमाणमां नथी; त्यारे आर्द्रकुमारे विवादमां मनथी ब्राह्मणोने कह्युं, ते वचन प्रमाण केम थाय ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां ते प्रमाण नथी, त्यारे श्री केवलज्ञानी श्रीतीर्थंकरदेव, गणधरे सूत्रमां केम घाल्यां? केवली गणधरे सूत्रमां घाल्यां तेवारे तो ते वचन केवली गणधरे वखाण्यां तथा अंगीकार कर्यां कहेवाय. ते वचन प्रमाणमां केम नहीं?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! एतो अपेक्षाय वचन छे. जेम आर्द्रकुमार अने ब्राह्मणोने मांहोमांहे विवाद थयो अने उत्तर प्रत्युत्तर थया, तेम सूत्रमां गणधरे गुंथ्या छे; पण केवलज्ञानीए वखाण्या एम कह्युं होय तो कहो अने ते पाठ बतावो. जो वखाण्या कह्या होय तो एम कह्युं जोइए के, हे आर्द्रकुमार! तें ब्राह्मणोने साचां वचन कह्यां; अने जेम तें कह्यां तेम हुं कहुं छुं. जेम तुंगीया नगरीना श्रावकोए श्री पार्श्वनाथ भगवानना संतानीया साथे चर्चा कीधी, अने तप संजमनां फल पुछयां तेवारे स्थिवरे कह्युं के, संजमथी आवतां कर्म रोकाय, अने तपथी आगलां कर्म पातलां पडी खपे. एम सूत्र भगवती शतक बीजे उदेशे पांचमे कह्युं छे. पछी स्थिवरे तुंगीया नगरीथी विहार कर्यो, अने श्रीमाहावीर स्वामी राजगृही नगरीए पधार्या. त्यां गौतमस्वामी बेलानुं पारणुं वोहोरवा राजगृही नगरीमां पधार्या त्यां फरतां घणा लोकोनी समिपे आ वात सांभली के तुंगीयानगरीना श्रावकोए पार्श्वनाथस्वामीना संतानीया साथे तप संजमनां फल विषे चरचा करी. पछी गौतमस्वामीए आवीने श्री माहावीरस्वामीने पुछयुं, तेवारे भगवंते कह्युं के, हे गौतम! ए अर्थ साचो छे अने हुं पण एमज कहुंछुं. एम श्री पार्श्वनाथजीना संतानीयानां वचन श्री माहावीरभगवंते स्वीकार्यां. वली भगवतीजीना अढारमा शतकमां मंडुक श्रावके अन्यमतिउ साथे पंचास्तिकायनी चर्चा करी, अने तेमने खष्ट कर्या. पछी तेणे श्री भगवंतने आवीने वंदणा करी. त्यां भगवंते ते श्रावकनी प्रशंसा कीधी.

वली उपाशकदशांगमां कुंडकोलीया श्रावके गोशालामती देवताने न्याय चर्चा करीने खष्ट कर्यो. पछी भगवंत पधार्या त्यारे तेमने कुंडकोलीयो वंदणा करवा आव्यो त्यां भगवंते गौतमादिकना मोंढाकने तेनी

प्रशंसा कीधी. तेम आर्द्रकुमारना वचननी जगवंते प्रशंसा कीधी होय तो बतावो. वली तमे कहोछो के आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां ते जो प्रमाणमां नथी, तो सूत्रमां केम घाल्यां? पण हे देवानुप्रीय ! एवा पाठ तो सूत्रमां घणा छे. जेम जंबुद्वीप पन्नति सूत्रमां जरतमाहाराजा छ खंड साधवा गया, त्यारे मागध, वरदाम अने प्रजास तिर्थना देवता उपर बाण मेल्युं, ते बाण देवताना जुवनमां पड्युं, ते देखी देवताए कोपमां आवीने वचन कह्यां. तेमज उत्तरार्धजरतमां तमसगुफा जेदीने गया पछी म्लेछराजाने वचन कह्यां. ते जंबुद्वीपपन्नतिनो पाठः—

तएणं से सर जरहेणं रणा णिसठेसमाणे खिप्पामेव दुवालस्स जोयणाइ गंता मागह तिछा हिवइस्स जवणंसि णिवइए. तएणं से मागह तिछा हिवइ देवे जवणंसि सर णिवइयं पासइ २ त्ता आसूरते रुठे चंमीक्किइ कुविए मिसिमिसेसमाणे तिवलिं जिउमिं णिमाले साहरइ २ त्ता एवं वयासी केसणं जो यस अपछिय पछिए दुरंत पंत लक्कणे हिण पुण चाउदसे हिरि सिरि परिवज्जिए जिणं मम इमाए एयाणुरुवाए दिवा देवढीए दिवाए देवजूइए दिवेणं दिव्वाणुजावेणं लधाए पत्ताए अजिसमणागयाए उप्पिं अप्पु स्सूए जवणंसि सर णिस्सरइ तिकट्टु सिहासणाउ अप्जुठेइ २ त्ता जेणेव से णामायंके सरे तेणेव उवागछइ २ त्ता तं णामायकं सरं गिण्हइ २ त्ता णामाकं अणुप्पवाए इणामेकं अणुप्पवाय माणस्स इमे एयारुवे अवजिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे सम्मुप्पज्जिछा उप्पणे खलु जो जंबुदीवे २ जरहेवासे जरहेणामंराया चाउरंत चक्कवट्टी तं जीय मेयं तीय्र पच्चुप्पण मणागयाणं मागह तिछ कुमा-

राणं देवाणं राइणं सुवत्ताणिय करिएत्ता तं गच्छामिणं अ-हंपि जरहसरणो उवत्ताणियं करेमि तिकट्टु एवं संपेहिइ २ त्ता हारं मउमं कुंमलाणिय कमगाणिय तुमयाणिय व-त्ताणिय आजरणाणिय सरंच णामायकं मागहतित्थो दगं च गेण्हइ २ त्ता ताए उक्किठाए तुरियाए चवलाए चंमाए छेयाए जयणाए उध्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए देवगइए वीत्ती-वयमाणे २ जेणेव जरहेराया तेणेव उवागछइ २ त्ता अं-तलिखपमिवणे सखिखणिआय पंचवणाइ वत्थाइं पवर परिहिए करयल परिगहिय दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अं-जली कट्टु जरहं रायं जएणं विजयणं वधावेइ २ त्ता एवं व-यासी अजिजिएणं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे जरहेवासे पुरछिमेणं मागह तित्थमेराएतं अहणं देवाणुप्पियाणं वि-सयवासी अहणं देवाणुप्पियाणं आणत्ती किंकरे अहणं देवाणुंप्पियाणं पुरछिमिल्लेणं अंतवाले तंपमिछतुणं देवा-णुंप्पिया ममं इम एयारुवं पीयंदाण त्तिकट्टु हारं मउमं कुं-मलाणिय कमगाणिय जाव मागह तित्थोदगं च उवणेइ. तएणं से जरहेराया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारुवं पीयदाणं पमिछइ २ त्ता मागहतित्थ-कुमारंदेवं सक्कारेइ स-म्माणेइत्ता पमिविसजेइ ॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते स० बाण ज० जरत र० राजाए णि० मुक्युंथकुं खि० उतावलुं ड० बार जोजन सुधी गं० जइने मा० मागध ति० तीर्थना हि० अधीपति देवताना ज० जुवनमां णि० पमयुं. त० तेवारे से० ते मा० मागध तीर्थना हि० अधीपति दे० देवता पोताना ज० जुवनमां स० बाण णि० पमयुं. पा० देखे, देखीने आ० कोपायमान

थयो रु० रुठ्योथको चं० क्रोधेकरी आकरो थयो कु० कोप्यो मि० क्रोधरुप अग्निथी दीपतोथको ति० त्रण सल भि० भृकुटीए णि० लीलाटे सा० चमावे, चमावीने ए० एम व० कहेवा लाग्यो. के० कोण छे भो० इति संबोधने. य० ए वाणनो मुकणहार अ० अप्रार्थीत मरणनो प० वंछणहारो, दु० माठा पं० तुछ ल० लक्षणनो धरणहार, हि० हीणपुन्यों चा० काली बोली तुटती चउदस अमावाशनो जण्यो, हि० लाज सि० शोभा प० रहित, जि० जे पुरुष म० मारी इ० एवी ए ताद्रुश्यरुप प्रत्यक्ष दीसती दि० दीव्य दे० देवता संबंधिनी रिद्धि दि० प्रधान दे० देवतानी जू० जोती कांति दे० देवता संबंधी दि० देवताना अनुभाग अने महिमाए करीने ल० लाध्या प० पाम्या अ० भोगतां प्रत्ये सनमुख आवे एवी रिद्धि उपर उ०पोतानी आपदाए परनी संपदानो अभिलाषियको मारा भ० भुवनने विषे स० बाण णि० नाखे छे. ति० एवुं कहीने सि० सिंहासनथी अ० उघमवंत थको उठे, उठीने जे० जीहां से० ते णा० नामांकित ( नाम सहित ) स० बाण छे ते० तीहां उ० आवें, आवीने तं० ते णां० नामांकित स० बाण गि० ग्रहे, ग्रहीने णा० नामना अक्षर अणु० वांचे. हवे नामना अक्षर वांचताथका इ० ए ताद्रुश्यरुप हेवो अ० आत्मांथी उपन्यो अभिप्राय चि० चिंतारुप प० प्रार्थनारुप म० मनने विषे उपन्यो एवो चिंतारुप सं० संकल्प स० सम्यक् प्रकारे उ० उपन्यो. ख० निश्चे भो० इति आमंत्रणे जं० जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे भ०भरतक्षेत्रने विषे भ० भरतनामे राजा चा०चार दिशिना अंतनो करणहार च० चक्रवृत ( चक्रनो धरणहार ). तं० ते भणी जी० जीत आचार छे मे० अमारो ती० अतित काले थइ प० वर्तमान काले छे म० अनागत् काले थाशे. मा० मागधतिर्थ कु० कुमार दे० देवतानो रा० राजा चक्रवृतने मु० भेटणुं क० करवानो आचार छे तं० तेभणी गं० जाउं अ० हुं पण; भ० भरत राजाने उ० भेटणुं क० करुं. ति० एम कहीने ए० एवुं सम्यक् प्रकारे सं० विचारे, विचारीने हा० हैयानो हार मु० माथानो मुकुट कुं० कुंडल क० कडां तु० बाजुबंध व० देवदुष्य वस्त्र प्रमुख

आ० अनेरां पण शरीरनां आजरण स० ते बाण णा० नामांकित लइने मा०. मागध तीर्थनुं द० पाणी राज्याजिषेक जोग गे० ले, लेइने ता० ते देवतामां प्रसिद्ध उ० उत्कृष्टी त्रिवहार जोग्य गति तु० मननी उतावली गति च० कायानी उतावली गति चं० क्रोधे करी जेवी उतावली गति बे तेवी बे० चालवाना गुणमां निपुण बेक ज० अति वेग गतिए चाले, ज० शरीरना अवयव कंपावती गति सि० शीघ्र गति दि० प्रधान दे० देवतानी उंची गति वी० हींमो हींमो एवी उतावली गति करीने आ- वतोथको जे० जीहां ज० जरत राजा बे ते० तीहां उ० आवे, आवीने अं० अधर आकाशे उन्नो रह्यो थको स० न्हानी घुघरी घमकावतो थको पं० पांच वर्णनां व० वस्त्र तथा प० उत्तम प० चीर पहेर्यां बे जेणे एवो क० करतल ( हाथनां तलां ) प० परिग्रहित सहित बे हाथना द० दश नख सि० माथे आवर्तन करीने तथा म० मस्तके अं० अंजली करीने ज० जरत राजाने ज० जय वि० विजय शब्द करीने व० वधावे, वधावीने ए० एवुं व० कहे, अ० जीत्यो आज्ञा वश कर्यो दे० हे देवानु- प्रीय ! तमे के० केवल कल्प सघलुं ज० जरत क्षेत्र पु० पूर्व दिशे मा० मागध तिर्थनी मे० मर्यादा लगी अ० हुं तमारो विश्वासी दे० हे दे- वानुप्रीय ! तमारा देशनो वि० वशणहार अ० हुं तमारो आ० आज्ञा- कारी किं० ( शेवक ) चाकर बुं. अ० हुं तमारो दे० हे देवानुप्रीय ! पु० पुर्व दिशाना अं० अंत ( बेमा ) नो पालक, पूर्व दिशाना माणसने उप- द्रव्यादिकनो निवारणहार बुं. तं० ते माटे वान्छो दे० हे देवानुप्रीय ! म० मारुं ए० एवुं पी० ( प्रीतीदान ) जेटणुं ल्यो. ति० एवुं कहीने हा० हार म० मुकुट कुं० बे कुंमल क० कमांनी जोमी जा० जावत् मा० मागधतीर्थनुं द० पाणी उ० जेटणुं आपे. त० तेवारे से० ते ज० जरत राजा मा० मागध ति० तीर्थ कुमारनामे दे० देवतानुं इ० एवुं पी० प्रीतीदान ( जेटणुं ) प० ले, लइने मा० मागध तिर्थकुमार देवताने स० वचने करी सत्कारे सम्मा० सन्मान करे, वस्त्रादिके सन्मानीने उर्व उन्नो थाय प० प्रतिविसर्जे ( पोताना स्थानके जवानी आज्ञा दे ).

भावार्थः—हवे जुओ मागध तीर्थना देवताए विवादमां कोपथी भरतमहाराजाने एवां वचन कह्यांः-एवो कोण छे? मर्णने कोइ न वान्छे तेनो वांछणहार, माठा लक्षणनो धणी, तुटती चौदस कालीवोली अमावाश्यानो जण्यो, लज्या लक्ष्मिए करीने रहित." ए वचन देवताए कह्यां. एवां वचन वरदाम अने प्रभासतीर्थना देवताए पण कह्यां अने एवांज वचन म्लेछ राजाए पण कह्यां, अने ते केवली गणधरे सूत्रमां गुथ्यां. हे देवानुप्रीय! तमारे लेखे तो भरत माहाराजा एवा हीण-पुन्या छे, तेथी देवताए पूर्वोक्त वचन कह्यां छे, ने गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए तो देवताए कोपमां वचन कह्यां छे, अने देवतानी कहेणी गणधरे सूत्रमां गुंथी छे. एतो अपेक्षाये वचन सूत्रमां घाल्यां छे, पण भरत महाराजा तो महा भाग्यवंत छे.' त्यारे हे देवानुप्रीय! जेम ए वचन देवताए तथा म्लेछ देशना राजाए कोपमां भरत माहाराजाने कह्यां तेवां गणधरे सूत्रमां गुंथ्यां, पण भरत माहाराजा एवा नथी तेम आर्द्रकुमारे पण विवादमां ब्राह्मणोने कह्युं के, तमारा सरखा धर्मना द्वेषी तथा हिंसा धर्मना स्थापनहार मंजारा सरीखाने ब्रह्म भोजन दे, तो नारकीमां जाय. ए आर्द्रकुमारे विवादमां वचन कह्यां; तेनुं कहेवुं गणधरे सूत्रमां गुंथ्युं छे. ए अपेक्षाय वचन छे, पण श्री तीर्थंकरना साधुनुं उपदेशीक वचन नथी. अपेक्षाय ओलख्या विना जे अर्थ करे तेने श्री तीर्थंकरनो चोर कहीये. शास्त्र सूत्र प्रश्न व्याकरणना बीजा संवरद्वारमां, दस प्रकारे साच कह्युं छे. बार प्रकारे भाषा, सोल प्रकारनां वचन, त्रण लिंग, त्रण काल, एक वचन, द्विवचनादिक सात विभक्ति, अपेक्षाय वचन, (उवणिए) स्तुति वचन, (अवणिय) निंदा वचन, इत्यादिक सोल प्रकारनां वचन ओलखीने पछी सूत्रनो अर्थ करवो. (एय अरिहंताणुणाए) एवी अरिहंतदेवनी आज्ञा छे.

तमे अपेक्षाय वचन जाण्या विना कह्यां छे. ने वली कहो छो के सूयगडांग सूत्रमां कह्युं छे, के ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय. एवां सूत्रनां जुठां नाम लइ अरिहंतनी आज्ञाना चोर केम थाओ छो?

एवां अपेक्षाय वचन तो सूत्रमां ठामठाम छे. जेम सक्रेंद्र अने चमरेंद्र कोणिक राजानी पक्षे आव्या, अने अढार देशना राजा चेडा राजानी पक्षे आव्या, त्यां धर्म स्हाज दीधी ( दलाली ) कह्युं छे. ए पण इंद्रनुं तथा राजानुं केहेवुं सूत्रमां गुंथ्युं छे, ने ए पण अपेक्षाय वचन छे. वली भगवती सूत्र शतक पहेले, श्री पार्श्वनाथजीना संतानिया कालासवेसी-पुत्र-अणगारे श्री महावीर भगवंतना स्थिवरने कह्युं के, तमे सामायक न जाणो, तथा सामायकनो अर्थ पण न जाणो, इत्यादिक आठ प्रश्न पुछ्या. पछी श्री महावीरजीना स्थिवरे अर्थ बताव्या, त्यार पछी काला-सवेसी-पुत्रे प्रतिबोध पामीने कह्युं के, ए वचन में पूर्वे जाण्यां नही, सदह्यां नहिं, प्रतित्यां नहिं, रुचव्यां नहिं, इत्यादिक घणा बोल कह्या. पछी कह्युं के, हवे में जाण्यां, सांभल्यां, सरदह्यां, प्रतित्यां, रुचव्यां, एम कह्युं. हवे जुओ ! सामायकादिक आठ बोल जाण्या विना तथा सरदह्या प्रतित्या तथा रुचव्या विना श्री पार्श्वनाथजीना संतानीया केम कहेवाय ? परंतु ए अपेक्षाय वचन छे. आ स्थिवरोने एवुं जाणपणुं छे, एवुं पूर्वे कोइ पासे सांभळ्युं,जाण्युं, सरदह्युं, प्रतित्युं के रोचव्युं नहोतुं; पण ज्यारे स्थिवरे अर्थ कह्यो त्यारे जाण्युं के, आ स्थिवरोने एवुं जाणपणुं छे. हवे जाण्युं, सरदह्युं, प्रतित्युं अने रुचव्युं, ए स्थिवरनी अपेक्षाये जेवां कालासवेसीए कह्यां तेवां अपेक्षाय वचन गणधरे सूत्रमां गुथ्यां. तेम आर्द्रकुमारे पण ज्यारे ब्राह्मणोए गुरुपणुं जणाव्युं, अने ब्राह्मणोने जमाड्यामां पुन्यनो बंध तथा मोक्षनुं अंग छे एम जणाव्युं, त्यारे आर्द्रकुमारे तेनी कहेणीनी अपेक्षाए तेनो उत्तर दीधो के, जो एवुं सरदहे तो नारकीमां जाय. ए पण गुरुनी बुद्धे मोक्षने अर्थे दान देवा आश्री ना कही छे, पण अहीयां अनुकंपादाननो प्रश्न नथी.

वली तेरापंथी कहेछे के " उत्तराध्ययन सूत्रना चौदमा अध्ययननी बारमी गाथामां भृगुपुरोहीतने पोताना बेटाए कह्युं के, ब्राह्मणने जमाडे तो तमतमाए (सातमी नारकीमां) पहोंचे, एम कह्युं छे.ए न्याये अमे गरीब मागता भीखारी तथा ब्राह्मण प्रमुख सर्व असंजतिने अनु-

कंपा लावीने दान दीधामां पाप कहीये छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अहिं तो पहेलां भृगुपुरोहीते पोताना बेटाने संजम-तपनी व्याघात करवा वास्ते वेदनो मत बताव्यो छे, तथा घरमां राखवा सारु मिथ्यात परुप्युं छे. ते बापना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे के, हे पीताजी! तमे कह्युं एम जो सरदहे तो तमतमाए पहोंचे, एम कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन चौदमानी गाथा ८ थी १२ सुधी. ते पाठः—

अह तायउ तछ मुणीण तेसिं, तवस्स वाघायकरं वयासी; इमं वयं वेद विदो वयंति, जहा न होइ असुयाण लोगो. ॥८॥ अहिज्ज वेए परिविस विप्पे, पुत्ते परिठप्प गिहंसि जाया; भोच्चाण भोगे सह इत्थियाहिं, आरणगा होहि मुणि पसत्था. ॥९॥ सोयग्गिणा आय गुणिंधणेणं, मोहानिला पज्जलणा हिएणं; संतत्त भावं परितप्पमाणं, लालप्पमाणं बहुहा बहुंच ॥१०॥ पुरोहियंतं कमसोणुणंतं, निमंतयं तंच सुए धणेणं; जह क्कमं कामगुणेहिं चेव, कुमारगति पसमिक्खवक्कं ॥ ११ ॥ वेया अहिया नहवंति ताणं, भुत्ता दिया नेति तमंतमेणं; जायाय पुत्ता नहवंति ताणं, कोनामत्ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥

अर्थः—अ० अथ हवे ता० ते पिता त० त्यां (ते अवसरे) मु० भावमुनि ते० तेना त० तपने वा० व्याघातकारी वचन व० बोल्या. इ० ए व० वचन वे० वेदनां वि० जाण व० कहे छे. ज० जेम न० न होय अ० अपुत्रीयाने लो० परलोक (मोक्ष) ॥८॥ अ० ते माटे व० वेद भणो, प० जमाडो वि० विप्रने, पु० पुत्रने प० स्थापीने गि० घरने विषे जा० हे पुत्र! भो० भोगवीने भो० भोग स० इ० स्त्री संघाते भुक्त भोगी थइने पछी आ० उजाड अटवीमां हो० थाजो मु० मुनी प० प्रशस्त भला. ॥९॥ सो० पुत्रना वियोगनी चिंताथी उपन्यो जे शोक, ते शोक-

रुपी अग्निए करी आ० आत्माना गुण ज्ञानादिरुपी इंधणे करी मो० मोहरुपी वायराथी प० प्रजल्यो (बल्यो) अ० अधिक तेथी सं० अनिवृत्त न्ना० अंतःकरण प० सर्व प्रकारे बलतोथको प्रवर्ते छे, ला० अतिशे वचन बोलतोथको प्रवर्ते छे, ब० अनेक प्रकारे ब० घणा लाल्य पाल्य करतोथको प्रवर्ते छे. ॥१०॥ पु० पुरोहित तं० ते बे कुमारने क० अनुक्रमे कहेतो (देखाम्तो) थको प्रवर्ते छे. नि० आमंत्रतोथको तं० ते सु० पुत्रने ध० धनेकरी ज० जेम कहेवानो पोतानो न्नाव हतो तेम अनुक्रमे का० कामन्नोगना जे गुण, ते मनोहर शब्दादिके करी आमंत्रतो थको प्रवर्ते छे. कु० ते बे कुमार पुरोहित (तेना मोहांध पिता) प्रत्ये प० विचारीने वचन बोल्या. ॥ ११ ॥ वे० वेद अ० न्नण्याथी न० न थाय ता० शरण, तथा न्नु० जमाड्याथी दि० विप्रने पहोंचाम्े त० नरके. जा० जन्मेला पु० पुत्र न० न थाय ता० शरण. को० कोण ए तमारुं कह्युं हे तात! अ० माने ? ए० ए कह्युं ते. ॥१२॥

न्नावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां तो पुत्रना तप संजमनी व्याघात करवा तथा तेने घरमां राखवा वास्ते पहेलांथीज पीताए कह्युं के "हे पुत्र! जे वेदना जाण मोटा रुषीश्वर छे ते पण एम कहे छे के, एटलां कार्य कर्या विना मोक्ष न थाय. 'असूयाण लोगो' अपुत्रियाने गति नथी." एवां मिथ्यात.सूत्रमां जे वचन कह्यां छे, ते वचन पोताना पुत्रने साचां सद्दहावे छे अने अंगीकार करावे छे.

वली नवमी गाथामां खोटो मिथ्यात-मार्ग देखाम्े छे के "हे पुत्रो! मोक्षमार्गनी बुद्धे तमे वेद न्नणो, ब्राह्मणोने ब्रह्म न्नोज द्यो, स्त्रि साथे न्नोग न्नोगवो अने पुत्रने घरनो न्नार स्थापो. पछी मुनीपणुं लइ वनमां विचरवुं ते श्रेष्ट छे, प्रशंसनीक छे." एम कह्युं. "एटलां कार्य हे पुत्र! तमे करो. ए कार्य मोक्षनां साधक छे. पछी तमने मुनीपणुं लेवुं श्रेय छे. एटले एटलां कार्य कर्या विना मुनिपणुं लेवुं श्रेय नथी." एवो अन्निप्राय पिताए पुत्रने जणाव्यो. ए पितानुं केहेवुं सांन्नलीने पछी पुत्र बोल्यो के "हे तात! ए कार्य मुक्तिनां अंग छे अने

ए कार्य कर्याविना मुनिपणुं श्रेय नथी " एवुं जे कोइ सद्दहे, तेने मिथ्यात्व लागे, अने ते नारकी जाय तो अटके नही; " एम कह्युं छे, पण सेहेजे वेद जणे तो मिथ्यात न लागे अने नारकी न जाय. वली संसारने हेते अनुकंपा लावीने ब्राह्मणोने जमाडे तो मिथ्यात न लागे. अने नारकी न जाय. वली न्हाये धोये धर्म जाणे तो मिथ्यात लागे, पण सहेजे संसारना हेते न्हाये धोये तो मिथ्यात न लागे; कारणके समद्रष्टि-श्रावक पण न्हाय धोय तो छे. ते माटे मिथ्यात न लागे अने नारकीमां पण न जाय. हे देवानुप्रीय ! मिथ्यातने कारणे करी मुक्तिनो हेतु जाणे, ते आश्री बापना कह्याना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे. वली इहां तो एम कह्युं छे के " वेद भणयाथी त्राण ( सरण ) नथी; ब्राह्मणोने जमाड्याथी तमतमा पहोंचे, अने जाया पुत्र पण तारवा समर्थ नथी. माटे हे तात ! तमारां वचनने कोण माने ? " एम कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं, के ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय. इहां तो 'भुत्तादियाणंति तमंतमेणं' एम कह्युं छे. णं शब्द तो अलंकारवाची छे, अने तमंतमे नाम मिथ्यात् अंधकारनुं छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन वीसमानी गाथा. ४५-४६-४७:—

जे लखणं सुविण पउंजमाणे, निमित्त कोउहल संपगाढे;
कुहेड विज्जा सवदार जीवी, न गछइ सरणं तंमिकाले.।४५।
तमंतमेणं वउसे असीले, सयादुही विप्परिया मुवेइ; संधा-
वइ नरय तिरिखजोणि, मोणं विराहित्तु असाहुरुवे ॥४६॥
उद्देसियं कीयगडं नियागं, नमुंचइ किंचि अणेसणिज्जं;
अग्गीविवा सव्व भरकी भवित्ता इउ चुउ गछई कट्टुपावं।४७।

अर्थः—जे० जे वेशधारी ल० सामुद्रिके करी शरीरनां लक्षण सु० स्वप्ननो विचार प० लोकनी आगल कहेतो प्रवर्ते, नि० भूमिकंपादिक अतितकाल प्रमुखनुं निमित्त भाखे, को० पुत्रादिकने अर्थे स्त्री भरथारने एक पोतीआथी स्नान कराववाने विषे सं०अति आसक्त, कु०

कुडी आश्चर्यकारी वि० विद्या मंत्रादिके करी स० पापनी उपार्जन करवे करी जी० जीवे, न० ते मंत्रादिकथी न पामे स० सरण मंत्रादिक आधार भुत न थाय तं० अंतकालने विषे. ॥ ४५ ॥ त० अति अज्ञानपणे करी व० द्रव्य यति (वेशधारी) अ० शील रहित स० सदाय दु० दुःखी वि० विपरीतपणुं मु० पामे. परलोकने विषे सुख पामवानी आशा होय ते दुःख पामे. सं० निरंतर जाय न० नरक ति० तिर्यंच जो० योनिने विषे. मो० चारित्र वि० विराधीने अ० असाधुरुप. ॥ ४६ ॥ उ० आधाकर्मी कि० यतिने अर्थे मुले लाव्या होय ते नि० नित्य पिंड न० न मुके किं० कांइ पण अ० सदोष अग्गी० अग्निनी परे स० सर्व न० भक्षी न० थ० इमे इ० इहांथी चु० चवीने ग० जाय क० करीने पा० पाप कर्म ॥ ४७ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! अनाथीजी मुनीराजें श्रेणीक राजाने पेहेलां तो द्रव्य अनाथपणुं देखाड्युं अने पछी भाव अनाथपणुं देखाड्युं के, हे राजन् ! साधुपणुं लेइ शुद्ध संजम तथा पांच माहाव्रत न पाले, रसनो गृद्धि थइ आधाकर्म्यादिक आहार तथा स्थानकनी प्ररुपणा करे, घणांना घटमां मिथ्यात् घाले, पांच सुमतिने विषे जतन न करे, अने घणा काल सुधी मस्तक मुंडावी तप नियमथी जे भ्रष्ट थाय, तेने पोली मुंठीनी उपमा दीधी. जेम पोली मुंठीमां कांइ नथी. तेम भेख तो साधुनो छे, पण ज्ञान, समकित अने चारित्ररुपी धन नथी तेने खोटां नाणांनी (काचना कटकानो) उपमा दीधी. ते असंजतिथको संजति नाम धरावे एज मिथ्यात्व तेने कालकुट विष सरखो कह्यो. तेने विपरीत शस्त्र ग्रहे तेनी अने अविधे वैतालनो मंत्र जपे तेनी उपमा दीधी. ३०-थी-४४ मी गाथा सुधीमां घणो अधिकार छे अने ४५ थी ४७ मी सुधी तो इहां लखी छे, तेमां कह्युं छे के, वेशधारी यति स्त्रीपुरुषनां लक्षण प्ररुपे अने स्वप्नानो विचार इत्यादिक प्ररुपे तेने ४६ मी गाथामां अज्ञानी, मिथ्यात्वी अने शील (आचार) रहित कह्यो. ते सदाय सुखथी विपरीतपणुं पामे, परलोके सुख पामवानी आशा होय त्यां दुःख पामे, अने निरंतर नर्क तिर्यंचनी योनीने विषे जाय. ते

चारित्र विराधीने असाधुरुप थाय. हवे जुवो ! ४६ मी गाथाना पहेला पदमां तो अज्ञानपणुं तथा मिथ्यात्वपणुं कह्युं, अने त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही. ए न्याये तंमतमे नाम मिथ्यात्वनुं छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, इहां तो तंमतमे शब्दे अज्ञानपणुं कह्युं छे, पण मिथ्यात्व कह्युं नथी. तेनो उत्तर हे देवानुप्रीय ! अज्ञानपणुं ने मिथ्यात्वपणुं ए बन्ने एकज छे. ज्यां अज्ञानपणुं त्यां निश्चे मिथ्यात्व छे, अने ज्यां ज्ञानपणुं त्यां निश्चे समकित छे. समद्रष्टीमां ज्ञाननी नियमा छे अने मिथ्याद्रष्टीमां अज्ञाननी नियमा कही छे. शाख सूत्र भगवती शतक आठमे उद्देशे बीजे. इत्यादिक ठामठाम सूत्रमां अज्ञान अने मिथ्यात्व एकज कह्युं छे. वली त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही छे अने चोथापदमां असाधुरुप कह्या छे, ते पण मिथ्यात्व आश्री कह्युं छे. जे दोषने निर्दोष स्थापे ने असाधुपणानां काम करीने साधुपणुं सद्दहावे, तेने छेतालीसमी गाथाना पहेला पदमां तंमतमे नाम अज्ञान मिथ्यात्व आवे. तेथी त्रीजा पदमां नर्क तिर्यंचनी गति कही, अने चोथा पदमां असाधुपणुं कह्युं. वली वीसमा अध्ययनमां कह्युं छे के, जे कर्मने वशे दोष लगावे पण स्थापना न करे अने दोषने दोष प्ररुपे, तेने तो निशिथसूत्रमां प्रायश्चित कह्युं छे; तथा तेने विराधक साधु छठे गुणठाणे कहीये; अने तेनी गति तो जघन्य भवनपति-देवतानी अने उत्कृष्टी पेहेला देवलोकनी कही. शाख सूत्र भगवती शतक पहेले उद्देशे बीजे. वली पचीसमा शतकना छठा तथा सातमा उद्देशामां छ नियंठा ने पांच चारित्रनो विस्तार छे. त्यां कह्युं छे के, आराधिक होय तो इंद्रपणुं १, सामानिकपणुं २, तायतिसगपणुं ३, कोटवालपणुं ४, अने अहमिंद्रपणुं ५, ए पांच मांहेली हरकोइ पदवी पामे. अने विराधिक होय तो चार जातना देवतामां जाय एम कह्युं छे.

वली श्री पार्श्वनाथजीनी २०६ आर्याओ तथा द्रौपदीना लारला (आगला) भवमां सुकुमालीका आदि अनेक साधपणामां दोष लगावीने देवतामां गया कह्या छे; पण विराधिक साधुनी नर्कतिर्यंचनी गति

कोइ ठेकाणे कही नथी. सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी कुंमरी-कनी पेठे जे भ्रष्ट थाय तेज नर्कमां जाय. तेम इहां ४६ मी गाथाना त्रीजा पदमां नारकीनी गति कही. ते दोषने निर्दोष स्थापे तथा असंजमपणानां काम करीने साधुपणुं सद्दहावे तेथी मिथ्यात्व लागे. ते माटे ४६ मी गाथाना पहेला पदमां तंमतमे नाम मिथ्यात्वनुं छे अने तेथी त्रीजा पदमां नर्कतिर्यंचनी गति कही. वली नारकोमां कोण जाय, ते ४६ मी गाथामां कह्युं के उद्देशीक मुलनुं आएयुं, नित्य पिंमादिक, एषणिक के अणेषणिक कांइ पण छोमे नहीं अने अग्निनी परे सर्वनक्षी थाय, ते पापकर्म करीने दोषने निर्दोष स्थापे ते नर्कमां जाय ते आश्री जाणवुं. जेम वीसमा अध्ययनमां तंमतमे नाम मिथ्यात्वनुं छे तेम भृगुने पुत्रे कह्युं, ते पण तंमतमा नाम मिथ्यात्व अंधकारनुं छे. ए बापना कहेवाना अभिप्रायनो उत्तर दीधो छे. वली तंमतमे शब्द पुरुष लिंग-वाची छे. शास्त्र सूत्र अणुयोगद्वार, एकारान्त, उकारान्त अने अकारान्त इत्यादिक शब्द पुरुषलिंग वाची कह्या छे. ए न्याये तंमतमे शब्दमां एकार अंतमां छे. अने णं अलंकार वाची छे. ए न्याये तंमतमे शब्द पुरुषलिंग वाची छे, अने नारकी तो स्त्रीलिंग वाची छे. पाठमां पुरुष-लिंग वाची शब्दनो स्त्रीलिंग वाची अर्थ शीरीते थाय ? ते माह्या हो ते विचारी जोजो. त्रण लिंग जाणीने पछी अर्थ करवानी भगवंतनी आज्ञा छे. त्रण लिंग जाण्या विना अर्थ करे ते भगवंतनी आज्ञा बाहार छे. शास्त्र सूत्र प्रश्नव्याकरणना बीजा संवरद्वारमां. तमे मतना लोधे तंमतमे शब्द पाठमां पुरुषलिंग वाची छे तेनो नारकी एवो स्त्रीलिंग वाची अर्थ करो छो, ते घणुं अयुक्त छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कोइक उत्तराध्ययनना टबार्थमां ब्राह्मणोने जमाड्या नारकी जाय एवो अर्थ लख्यो छे. तेथी अमे कहीये छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अर्थ तो छद्मस्थ आचार्यना मनमां जेम भाष्या तेम लख्या छे. यथा पायचंदसुरीजीए, धर्मसींहजीए, लतसागरजीए, दोलतसागरजीए, अभयदेवसूरीजीए अने लक्ष्मीवल्लभजीए

केइक पाठनी टीका तथा अर्थ जुदी जुदी रीते कर्या छे. घणा सूत्रपाठना अर्थ अने टीका तो सर्व आचार्योंए कर्यानो परमार्थ एक सरखो मले छे, पण कोइक पाठना अर्थ अने टीकामां परमार्थ न्यारो छे. हवे तमे कया आचार्यना कर्या अर्थ प्रमाण करोछो ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "दस पूर्वधारीना कर्या अर्थ तो सर्व प्रमाणमां छे, अने बीजा अर्थ तो हमणा थोडा कालना कर्या छे. ते आचार्योंने पूर्वनुं ज्ञान नहोतुं, पण ते अर्थ मुल सूत्रना पाठ साथे मले, अने केवलीनां वचन साथे मेलवतां विरुद्ध न पडे तो प्रमाण छे. बाकी पोतपोताना मतना लीधे मनमां जेम जाण्या तेम कर्या, ते प्रमाणमां नथी. जो केवलीनां वचनथी मले तो प्रमाण छे." तेनो उत्तर,

त्यारे हे देवानुप्रीय! भृगु प्रोहितने बेटे ब्राह्मणोने जमाड्याथी तंमतमा पहोंचाडे कह्युं, तेनो अर्थ तंमतमे शब्दे नारकीमां जाय. ए अर्थ तमे मतना लीधे प्रमाण केम करो छो? केमके त्यां तो जो गुरुनी बुद्धे मोकने हेते जाणे तो मिथ्यात्व अंधकारमां पडे, एज अर्थ साचो छे. वली तमे कहो छो के, ब्राह्मणोने जमाड्याथी नारकीमां जाय त्यारे अमे तमने पुछीए छीये के, तंमतमे नाम कइ नारकीनुं छे? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, सातमी नारकीनुं नाम तंमतमा छे. त्यारे हे देवानुप्रीय! परदेशी राजाए पोणा बे हजार गामना हांसलनुं, मागता भीखारी तथा ब्राह्मणादिकने दानशाला मंडावी दान दीधुं, एम रायपश्रेणी सूत्रमां कह्युं छे. ए तमारे लेखे प्रदेशी राजा पण सातमी नारकीमां गयो जोइए. वली अनेक श्रावको जे अभंगद्वारे दान दीधा कह्या छे. ते सर्व तमारी कहेणीने लेखे सातमी नारकीमां गया जोइए. वली तमारा श्रावक न्याती, गोत्री, असंजति, अव्रति छे तेने जमाडे छे, गाय भेंस प्रमुख तिर्यंच असंजति अव्रति छे तेने पोषे छे, तथा मागता भिखारी ब्राह्मणादिकने अंतकालमां पेटीयादिक दान दे छे. ते सर्व दान देवावाला तमारा श्रावक तमारी सद्दाहने लेखे तो सातमी नारकीमां गया जोइए. तेवारे सर्प बीलमां (दरमां) पसतो सीधो थाय तेनी परे

तेरापंथी खीसाणा (शरमींदा) थइने कहे के, गुरुनी बुद्धे मोक्षनो हेतु (धर्म पुन्य) जाणीने आपे तो नारकीमां जाय, अने संसारनो हेतु जाणीने आपे तो पण पाप तो लागे, पण सातमी नारकीमां न जाय. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! तमारी केहेणीने लेखे जिनमार्गी तो धर्म पुन्य न जाणे, पण मिथ्यात्वी पहेला गुणठाणाना धणी तो, सर्व मागता जीखारी अने गरीब ब्राह्मणोने दान दीधामां धर्म पुन्य अने मोक्षनो हेतु जाणे छे, ते सर्व तमारी श्रद्धानी कहेणीने लेखे तो सातमी नर्कमां जवा जोइए; केमके तमे कहो छो के "सूत्रमां केवलीए कह्युं छे के, ब्राह्मणोने जमाड्यामां धर्म पुन्य जाणे तो सातमी नारकी (तंमतमा) मां जाय." त्यारे केवलीनां वचन सत्य छे, संदेह कुछ नथी. ब्राह्मणोने तथा असंजति अवृत्तिने दान दीधामां सर्व मिथ्यात्वी धर्म पुन्य जाणे छे. ते सर्व तो तमारी कहेणीने लेखे सातमीए जाशे. हवे छ नारकी खाली रही, तेमां तमारा साध श्रावक कोण जाशे ते कहो.

अहो देवानुप्रीय! "ब्राह्मणोने जमाड्याथी (तंमतमा) सातमी नारकीए जाय. एवा जुठा अर्थ करीने अणसमजु जीवोना घटमां घोचा केम घालो छो? सूत्रमां वासुदेव चक्रवर्ती राज्य-पदिमां मरे, तेनी पण सात नारकीनी समच्चय गति कही; पण एक सातमीमांज जाय एवुं कह्युं नथी. सिंह मच्छादिक हिंसक जीव समच्चय नारकीमां जाए कह्युं, पण एक सातमीमांज जाय एवुं कह्युं नथी. वली नारकीमां जवानां चार कारण महा आरंजादिक समच्चय कह्यां. तेनी शाख सूत्र ठाणायांग ठाणे चोथे. वली जगवती आदि बत्रीश सूत्रमां एवुं क्यांय पण कह्युं नथी, के फलाणुं पाप कर्याथी सातमीमांज जाय. त्यारे ब्राह्मणोने जमाड्यां तंमतमा सातमीमांज जाय, एवुं एकान्त वचन केवली केम कहे? काह्या हो ते वीचारी जोजो. इहां तो जृगुप्रोहिते पेहेलां पोताना बेटाने वेदनो मत, तथा ब्राह्मणोने जमाड्यामां मोक्षनो हेतु तथा गुरुनी बुद्धीपणुं जणाव्युं छे. ते बापना केहेवाना अजिप्रायनो उत्तर दीधो के, तमे कहोछो तेम सदहे तो तंमतमे

नाम मिथ्यात्व अंधकारमां पडे. वली ब्राह्मणोने जमाड्यां नारकीमां जाय, एवुं वीवादवचनमां पापने कहे तोपण ग्रहस्थनुं वचन प्रमाणमां नथी; अने सूत्रमां तो गणधरे बाप बेटानी कहेणीनी अपेक्षानां वचन गुंथ्यां छे. ते विवादवचन अने अपेक्षाय वचननो उत्तर. आर्द्रकुमारनी चरचामां लख्या छे. ते रीते जाणवा. वली आर्द्रकुमारने तो ब्राह्मणोए तथा भृगुना बेटाने भृगु-प्रोहीते पहेलां जीन-धर्मथी दिक्षाथी प्रणाम उतारवा वास्ते (वेदनो मत) मिथ्यात्वपणुं स्थाप्युं छे, अने ब्राह्मणोनुं गुरुपणुं जणाव्युं छे. तथा ब्रह्मभोजनमां पुन्यनो बंध, मोक्षनो हेतु, जणावी जिनधर्म निषेध्यो छे. तेथी आर्द्रकुमारे अने भृगुप्रोहितना बेटाए ब्राह्मणोने जीनमतना द्वेषी जाणीने कह्युं के, तमे कहो छो तेम सद्दहीने ब्राह्मणोने जो जमाडे तो तंमतमा (मिथ्यात्व अंधकार) मां पहोंचे अने नारकीमां जाय; एवुं विवादमां वचन कह्युं; पण ते ग्रहस्थनुं विवाद वचन प्रमाणमां नथी. केवली मुनीराजनुं उपदेशीक वचन नीस्पृहिपणानुं नथी. नीस्पृहिपणे उपदेश वचन तो नमिराज रुषीए उत्तराध्ययन सूत्रना नवमा अध्ययनमां कह्यां छे. इंद्रे ब्राह्मणनुं रुप बनावीने नमिराजना समकितना पारखा निमित्ते प्रश्न पुछया. ते ब्राह्मणने जमाड्या विषेनो नमिराज रुषीए उत्तर दीधो. ते पाठः—

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण माहणे;
भुच्चाय जिठाय, तउ गच्छसि खत्तिया ॥ ३८ ॥
एय मठं निसामित्ता, हेउ कारण चोइउ;
तउ नमिराय रिसि, देविंदो इण मबवी ॥ ३९ ॥
जोसहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवंदए;
तस्सावि संजमो सेउ, अदिंतस्स वि किंचणं ॥ ४० ॥

अर्थः—ज० जो वि० घणा विस्तीर्ण ज० यज्ञ भो० जमाडीने स० शाक्यादिक श्रमण मा० ब्राह्मणने द० (गायादिक सुवर्णादिक दान)

दक्षणा दइने भु० मनोज्ञ काम भोग भोगवीने जि० यज्ञ करीने त० त्यार पछी ग० जाजे तुं ख० हे क्षत्रीराजा! ३८ ए० ए म० पूर्वोक्त अर्थ नि० सांभलीने हे० जे जे सुखकारी अहिंसादिक जेम धर्म तेम जोगादिक जाणवा. इत्यादिक हेतु का० कारणे चो० प्रेर्याथका त० तेवार पछी न० नमिराज रुषी दे० शक्रेंद्र प्रत्ये इ० एम म० बोल्या. ३९. जो० जे कोइ स० दसलाख मा० मासमास प्रत्ये ग० गायनुं दान दे त० एवा दातार होय तेने पण सं० संयम श्रेय होय. अ० (गायादिक) अणदेता होय तेने अथवा किं० थोकुं पण न देतो होय तेने पण संजम भलो. ॥ ४० ॥

भावार्थः—हवे जुओ! इहांतो इंद्रे समकितनुं पारखु करवा वास्ते प्रश्न पुछया के, "हे! नमीराय! तमे मोटा यज्ञ करीने, ब्राह्मणोने श्रमण शाक्यादिकने जमाडीने, दक्षणा दइने, अने मनोज्ञ भोग भोगवीने पछी दिक्षा लेजो." तेवारे नमिराज रुषीश्वरे कह्युं के हे इंद्र! दस लाख गायो महीने महीने दान दे, तेने पण संजम श्रेय छे, अने किंचीत् मात्र दान न दे, तेने पण संजम श्रेय छे. ए जुओ! दानना देणहारने अने अणदेणहारने बन्नेने संजम श्रेय (भलो) कह्यो; पण ब्राह्मणोने दान देवुं निषेध्युं नथी. ए नमीराज रुषीनुं वचन श्री केवलीनीपरे निस्पृहीपणानुं छे. हवे जुओ! जो जीनमार्गमां केवलज्ञानीए असंजति, अव्रति अने ब्राह्मणोने दान दीधामां सूत्रमां कोइ ठेकाणे पाप कह्युं होत तो, नमिराजरुषी एम कहेता के "हे इंद्रे! हुं तो असंजति अव्रति अने ब्राह्मणोने दान देवामां पाप तथा नारकीनुं कारण जाणुं छुं" पण एम नथी कह्युं. केमके तमारा सरखी श्रद्धा नमीरायनी होत तो निषेधता, पण तेमनी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती; तेथी तेमणे निस्पृहीपणे वचन कह्युं. ते केवलज्ञानी गणधरे सूत्रमां गुंथ्युं, ते वचन प्रमाण छे, पण आर्द्रकुमारनां तथा भृगुना बेटानां विवाद-वचन प्रमाणमां नथी. वली अहीं तो ब्राह्मण गुरुनी बुद्धे पुजावे छे, तथा गुरुनी बुद्धे (मोक्षने हेते) दान ले छे, तेने धर्मना द्वेषी जाणी गुरुबुद्धे जमा-

ज्यामां पाप, मिथ्यात्व अने नर्कनुं कारण कह्युं; पण मागता जीखारी तथा डुर्बलने मरता देखी, अनुकंपा लावीने दान दे, तेमां तो आर्द्रकुमारे तथा जृगुप्रोहितना पुत्रोए पण पाप कह्युं नथी; वास्ते ए अनुकंपा दाननो प्रश्न नथी.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " मागता जीखारीने अनुकंपा लावीने दान देवामां लगार मात्र पुन्य होय तो, आणंद श्रावके असंजतिने दान देवानां पचखाण केम कर्यां ? एवो अजिगृह केम लीधो ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! आणंद श्रावके मागता जीखारीने अनुकंपा आणीने दान देवाना पचखाण नथी कर्यां. बलके आणंद श्रावके तो अनुकंपा दान दीधुं संजवे छे; कारण के तुंगियानगरी प्रमुखना श्रावकोना घणा गुण वखाण्या. ते मध्ये अजंगद्वारे दान देता कह्या. अने " विठक्रिय पउरजत्तपाणा " जात पाणी खाधा पछी बचे ते बाहार नाखे छे, एवा गुण वखाण्या. वली सुयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधमां समचय श्रावकना गुण ( विरद ) वखाण्या, त्यां पण अजंगद्वार वखाण्यो छे. ते समचय श्रावकोमां आणंद श्रावक पण जेलो छे. ते आणंद श्रावकने पण अजंगद्वार छे. ते माटे अनाथ दुर्बलने तो आणंद श्रावक दान देछे; पण " अन्यतिर्थी, मिथ्यात्व मार्गना स्वामी, जिनमार्गना द्वेषी अने तथारुप पाखंमीने दान दउं नही " एवो सातमा उपाशकदशांगना पहेला अध्ययनमां अजिग्रह लीधो छे. ते पाठः—

तएणं से आणंदे गाहावइ समणस्स जगवउ महावीरस्स अंतिए पंचाणु-व्वतियं सत्तसिक्खा वइयं डुवालस्स विहं सावय धम्मं पडिवजती २ समणं जगवं महावीरं वंदंति नमंसंति एवं वयासिः-नो खलु मे जंते कप्पइ अजप्पजिइ अणउत्थियावा अणउत्थिय देवयाणीवा अणउत्थिय परिगृहियाणिवा चेइयाइं वंदित्तएवा णमंसित्तएवा. पुविं अ-

णालवत्तेणं आलवित्तएवा संलवित्तएवा; तेसिं असणंवा ४ दाउवा अणुप्पदाउवा णणाछ रायाभिउगेणं गणाभिउ-गेणं बलाभिउगेणं देवाभिउगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकं-तारेणं; कप्पति मे समणे निग्गंथे फासु एसणिजेणं अ-सणपाणं खाइमं साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछ-णेणं पिढ फलग सेज्या संथारएणं उसह भेसज्जेणं पडि-लाभे माणस्स विहरित्तते तिक .॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते आ० आणंद गा० गाथापति स० श्रमण भगवंत म० महावीर स्वामीनी अं० समिपे सर्व विचार सांभलीने पं० पांच अणुव्रत स० सात शिक्षाव्रत (समकित पूर्वक) दु० बार वि० प्रकारे सा० श्रावकनो ध० धर्म प० अंगीकार करे, करीने स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर स्वामोने वं० वचने करीने वांदे न० मस्तके करीने नम-स्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहेः-नो० नहिं ख० निश्चे मे० मुजने भं० हे भगवंत ! क० कल्पे अ० आज पछी ( समकित पाम्या पछी) अ० अन्यतिर्थीना साधु, गुरु, शाक्यादिक योगी, संन्यासि, अन्य-लिंगीना साधु अण० अन्यतिर्थी संबंधीया देव जैन तिर्थंकर टाली हरि-हरादिक देवता अ० अन्यतिर्थी संग्रह्या जैनमतिना साधु चे० अरिहं-तनी आज्ञा विना निकल्या जमाली प्रमुख निनवादिक अव्यक्त तथा एकल विहारी उसन्नादिक पांच भेदे गुण रहित ढीला पासत्थाने वं० वांदवा ण० नमस्कार करवो पु० पहेला अ० अणबोलतां प्रत्ये आ० बोलाववा, सं० तेणे बोलाव्या पछी पण वारवार संभाषण करवुं ते परि-भाज्याकादिकने धर्म निमित्ते (कर्म क्षयने हेतुए) वांदवा, पुजवा, पंचांग प्रणाम के नमस्कार करवा न कल्पे. ते० तेने पूर्वोक्त रीते धर्म पुन्य अर्थे अ० असन, पान, खादिम, सादिम ए चार जातनो आहार दा० देवो अ० परतिर्थीने वारवार देवो ते मुजने न कल्पे; ण० पण एटलुं विशेष कार-तीक शेठनी पेरे रा० राजादिकना आग्रहथी देउं तो ग० ज्ञातीना प्र-

वशपणे करीने देउं तो, ब० बलात्कारे मनुष्यादिकने जोरे देउं तो, दे० देवतादिकना कारणे. गुतावेघ्तिपणे देउं तो, गु० गुरु, माता, पितादिकना आग्रहथी देउं तो अने वि० अटवी अथवा दुर्भिक्षादि कारणे देउं तो व्रत न भागे. ए छ आगार. हवे क० कल्पे मे० मुजने स० श्रमण साधु नि० निर्ग्रंथने फा० प्रासुक ए० ४२ दोष रहित अ० अन्न पा० पाणी (द्राक्षादिकनुं) खा० खादिम (फलादिक) सा० स्वादिम (मुखवास लवींगादिक) व० वस्त्र प० पात्र कं० कांबली पा० पायपुछणुं (रजोहरणादिक) पी० पाटीउं फ० पुठनुं पाटीउं से० उपाश्रय सं० संथारो (दर्भ त्रणां परालादिकनो साथरो) उ० रोगापहारी औषध भे० भेषज पथ्य प्रमुख साधुने योग्य ग्राह्य वस्तु धर्म वृद्धिकारी निर्जरा (मोक्ष) ने अर्थे साधु प्रत्ये प० प्रतिलाभतो थको वि० विचरुं ति० एम कहे. एवो आणंद श्रावके अभिग्रह लीधो छे.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां तो "नोकप्पइ अजप्पभिइए," एटले आज पहेलां मिथ्यात्वपणामां मुजने कल्पता हता, (ए काम करतो हतो):-अन्यतिर्थीने (सामी सन्यासि तापसादिकने)१. अन्यतिर्थीना देवने (ब्रह्मा विष्णु महेश्वरादिकने)२ अने अन्यतिर्थीए ग्रह्या जैनमतिना चैत्यने (जैनमतीना साधु अन्यतिर्थीना भेला थया तेने)३, ए त्रणेने आज पहेलां वंदणा नमस्कार करतो हतो, विना बोलाव्यां बोलावतो हतो, वारंवार बोलावतो हतो, अलाप सलाप करतो हतो, असनादि चार अहार देतो हतो, तथा देवरावतो हतो ते हवे पछी वांदु नही, नमस्कार करुं नहि, पहेलां बोलावुं नहीं, वारंवार बोलावुं नहीं, अलापसलाप करुं नहीं, अने असनादिक चार अहार देउं नही, देवरावुं नही एवो अभिग्रह लीधो. हवे तमे ज्ञानदृष्टी दइने जुओ के आज पहेलां मिथ्यात्वपणामां आणंदजी श्रावक मागता भीखारीने वांदता हता, नमस्कार करता हता? के तथारुप अन्यतिर्थीने (मिथ्यात्वना स्वामीने) गुरु करीने मानता हता अने वंदणा नमस्कार करता हता? हवे श्रावकनां व्रत अंगिकार कर्या पहेलां, जेने वंदणा नमस्कार करता हता तेनेज वंदणा नमस्कार आज पछी

करवा छोड्या; तथा जेने पहेलां बोलावता हता तेनेज बोलाववुं छोड्युं, अलापसलाप करवो छोड्यो, तथा असनादिक चार अहार देता इत्यादि पूर्वे करता, ते हवे छोड्या. वली एवा अन्यतिर्थीने दान देवुं पडे तो छ कारणे आगार छे. ते 'रायाभिउगेणं' इत्यादिक छ कारणमां 'वित्तिकंतारेणं' एवो पाठ छे. ए पाठनो अर्थ एम छे के, हुं अनाथ दुर्बलने (कंतार) अटवीने विषे दुर्भिक्षादि कारणे दान देउं छुं, तेमां जो कोइ अन्यतिर्थी क्षुधातृषातुर पीडाए व्यास थको आवी, मागतानी परे मागीने लइ जाय तो देवानो आगार छे. एटले मागता भिक्षुकने आणंद श्रावक पण दान दे छे. ए लेखे अन्यतिर्थी अन्यमतना स्वामीने पण अनुकंपा आणीने तो दान दे छे; पण गुरुनी बुद्धे नथी देता.

वली मागता भिखारी तथा असंजतिने दान देवानां पचखाण कर्यां होय तो, छ छींडीना आगारनुं शुं काम छे? मागता भिखारीने वास्ते कांइ राजा, न्यातीला, माता, पिता, बलवंत, देवता, जबराइ करीने कहे के, तमे एने दान द्यो? अर्थात् नज कहे. ए तो राजादिक तथारुप अन्यतिर्थीने गुरु करीने माने छे, तेने वास्ते जबराइ करीने पण कहे के; "अमारा गुरुने वंदणा नमस्कार करो, दान द्यो." एम जबराइ करीने राजादिक कहे तो अन्यतिर्थीना मतना मालेकने (मिथ्यात्वीने) वंदणा नमस्कार करवानो अने दानादिक देवानो आगार छे. ए पांच तो जबराइपणाना आगार छे, अने छठो अनुकंपा आश्री आगार छे के, एज अन्यतिर्थी-मतनो-स्वामी दुर्भिक्षादि कारणे अटवीने विषे दुर्बलपणे मागे तो दान देवानो आगार छे. ए लेखे अनुकंपा दाननी करणी तो आणंद श्रावक करे छे, पण "अन्यतिर्थी-मतना-स्वामी धर्मना द्वेषी छे तेने आपुं नहीं" एवो आणंद श्रावके अभिग्रह लीधो छे; पण आणंद श्रावकने कांइ एवुं पचखाण नथी के "हुं असंजतिने आपु नहीं." वास्ते असंजति अने अन्यतिर्थीमां घणो फेर छे. अन्यतिर्थी तो ३६३ पाखंड मतना देखाडणहारा, जैनमार्गना द्वेषी, निंदक छे. तेने आपतां वांदतां अलापसलाप करतां जैनमार्गने लघुता लागे, पाखंडमार्ग दीपे

अने लोक पण एम जाणे के, आणंद श्रावक एवा म्हाह्रा छतां-पाखंडी-ने माने छे, त्यारे ए पण कांइक श्रावकने वंदनीक पुजनीक दिसे छे. एम घणा जीवोने शंका पडे ते माटे अन्यतिर्थीने वांदवा, बोलाववा अने आहारादिक देवा, ए त्रण वानां मुक्यां छे. वली जो आणंद श्रावके सर्वथा प्रकारे दान देवुं छोड्युं होय तो 'अन्यतिर्थी' एवो पाठ न जोइए, पण असंजति, अव्रतिने दान दउं नहीं एवो पाठ जोइए. तेमां भीखारी पण भेला आव्या, पण एवो पाठ नथी. हवे जेवो आणंद श्रावकनो आचार हतो, तेवो १ लाख ५९ हजार सर्व श्रावकनो एज आचार हतो. अन्यतिर्थीना त्रण बोल सर्वने करवा न कल्पे. ए त्रण बोल तो सर्व श्रावक टाले छे. ते अन्यतिर्थी मिथ्यात्वना स्वामी आश्री छे, पण मागता भिखारी तथा दुर्बलने अनुकंपा दान आपे, ते तो पांचमा गुणठाणानी करणी छे.

वली तेरापंथी कहेछे के, मागता भीखारी दुर्बलने, अन्यतिर्थी नही त्यारे शुं स्वतिर्थी गणशो ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधु श्रावक विना सर्व अन्यतिर्थी छे, पांच स्थावर पण अन्यतिर्थी छे, धानना दाणा पण अन्यतिर्थी छे, अने बेइंद्रियादिक जीव पण अन्यतिर्थी छे, पण जे गाममां घणा अन्यतिर्थी पाखंडी न होय त्यां साधुए चोमासुं रहेवुं कह्युं छे. हवे जो त्यां धानना कण क्रोड बे क्रोड होय तो शुं ? क्रोड बे क्रोड अन्यतिर्थी कहेवाशे ? हे देवानुप्रीय ! दाणा प्रमुख पांच स्थावर, बेइंद्रियादिक, रांक भीखारी, सर्व अन्यतिर्थी छे, पण आणंद श्रावके पचख्या तेज अन्यतिर्थी षट् दर्शनना धणी गणीए. जे वांदवा जोग्य लोकीकमां कहेवाय छे तेने वांदु नही, बतलावुं नही, मिथ्यात्वमां ए काम करतो हतो ते आज पछी करुं नही. मिथ्यात्वी हता तेवारे भिक्षुकने तो वांदता नहोता. ते म्हाह्रा छो ते विचारी जोजो. वली मागता भीखारी आदि सर्वने अन्यतिर्थी भेला गणीने दान देवुं निषेधे, तेने पुछवुं के, निशिथ सूत्रमां साधुने कह्युं छे के, अन्यतिर्थी वा गृहस्थनी साथे विहार करे, गोचरी जाय तथा तेना भेलो एक जग्यामां

रहे तो मासिक प्रायश्चित आवे कह्युं. वली आचारांगादिक अनेक सूत्रोमां गाम गाम अन्यतिर्थीना नेला रहेवुं तथा अलाप सलाप करवो वर्ज्यो छे. हवे तमे तो पांच स्थावर शुक्ष्म बादर, त्रण विगलेंद्रि, माखी मछर, चीन्डी, कंवेन्डी ( होलो ), प्रमुख सर्व अन्यतिर्थी गणोछो, अने साध श्रावक टाली सर्व अन्यतिर्थीज छे, अने प्रभुए तो एकज रात अन्यतिर्थी नेला रहे तो चोमासो प्रायश्चित कह्युं छे. हवे तमे सदाय जाव जीव सुधी जाणो जाणोने अन्यतिर्थी नेला रहोछो. पांच स्थावर शुक्ष्म बादर सर्व जीवने अन्यतिर्थी मानोछो. त्यारे तमारी श्रद्धाने लेखे तमारा साधुउमां साधपणुं छे के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के " ए तो ३६३ पाखंडी अन्यतिर्थी छे. तेनी संगत कीधे समकितमां शंका पडे, ने अलाप सलाप वधे ते आश्री कह्युं छे; पण सर्व जीव अन्यतिर्थी छे ते आश्री नथी कह्युं. " त्यारे हे देवानुप्रीय ! आणंद श्रावके पण ३६३ पाखंडी, अन्यतिर्थी, मिथ्यात्वना स्वामी, तेने वंदणा नमस्कार करवानो तथा आहारादिक देवानो अभिग्रह लीधो छे; पण मागता भीखारी आदि सर्व अन्यतिर्थी छे, तेने अनुकंपा आणीने दान देवानो ( नियम ) अभिग्रह नथी लीधो. ए भगवती सूत्रना त्रीजा पाठनो, आर्द्रकुमारनो, भृगुना बेटानो अने आणंद श्रावकनो, ए चारे आलावानो परमार्थ एकज छे. एतो सर्व अन्यतिर्थी, ब्राह्मणो, मिथ्यात्व मतना मालीक, ते आश्री छे; कारणके तेने श्रावक दान आपे तो मिथ्यात्व लागे, परपाखंडीनो सांसतो परचो लागे अने अलाप सलाप वधे तेथी तेनो निषेध कर्यो; पण रांक, मागता भीखारी अने दुर्बलने मरता देखीने अनुकंपा शुभजोग आणीने दान दे तेमां पाप कया सूत्रमां कह्युं छे ते बतावो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के " मागता भीखारी प्रमुखने अनुकंपा आणीने नंदनमणीयारे दान दीधुं तेथी देडको थयो. " एवा सादृश्य अनार्य वचन बोले छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ज्ञाता सूत्रमां नंदनमणीयारनो अधिकार छे, त्यां तो एवो पाव के अर्थ नथी के, ते दान दीधाथी देडको थयो. तमे कया

सूत्रना पाठार्थथी कहो छो ते बतावो. जो दान दीधाथी देडकापणुं पामे तो प्रदेशीराजा प्रमुख घणा श्रावक दानना देणहारा, सर्व दानना दातार, एवी अशुभ गति पाम्या जोइए. वली तमारा श्रावक पण संसारने हेते दान देछे, अंतकाले पेटीआ प्रमुख (दान) आपे छे, अने अंतकाले कुतराने लाडु नाखे छे, ते तमारी श्रद्धानी केहेणीने लेखे तमारा श्रावक दानना देणहारा सर्व देडका थाशे अने एवो अशुभ गती पामशे. हे देवानुप्रीय! मतना लीधे एवां असत्य वचन केम बोलोछो? ए नंदनमणीयार दान दीधाथी देडकापणुं नथी पाम्यो. एतो मूलथीज साक्षात् मुक्तिमार्ग मुकीने, मिथ्यात्वीओनी संगत कीधी; मिथ्यात्वी थयो, जैन मार्ग उत्थाप्यो अने पछी मिथ्यात्वपणुं भलुं जाण्युं. तेने मुक्तिनो हेतु जाण्यो तेथी देडकापणुं पाम्यो. दानथी एवी अशुभ गति थती नथी. तमे मतने लीधे एवां सूत्रनां जुठां नाम लइ अणसमजु लोकोना घटमां घोचा घालीने एवां कर्म केम बांधोछो?

वली तेरापंथी कहे छे के "श्रावक असंजतिने दान तो दे छे, पण ते पडिकम्मवा जोग्य छे, अने पनरे करमादानमां पंदरमुं कर्मादान छे. जो असंजतिना भरण पोषण कर्या होय तो 'आलोउं पडीकमुं मिछामि दुक्कडं' एटले ए दान देवुं तेपण कर्मादानमां छे, ते माटे देवा योग्य नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! इहांतो कर्मादान शब्दनो अर्थ "ए पंदर प्रकारे व्यापार (वृति आजीविका) करी जीवुं नहीं" एवो अर्थ छे. ए पंदर कर्मादाननो तमे खोटो अर्थ करो नाहिं. "असंजतिनुं भरण पोषण कीधुं होय" एवो जुठो अर्थ तमे मतना लीधे केम करो छो? सूत्रमां एकज अक्षर जाणी जोइने ओछो अधिको बतावे तो अनंत संसारी थाय. तमे ससा उपर अनुस्वारने जजो ए जाणीने बंने अक्षर एक बतावीने अनंत संसार केम वधारो छो? सूत्रमां तो 'असइ जण पोसणया' एवा प्रगट अक्षर छे. एक अक्षर ओछो अधिको बोलीए तो अर्थनो फेर घणो पडी जाय. जेम 'कुंतिपुत्रो युधिष्टिरः' अने बींदुना आलोपथी 'कुति पुत्रो युधिष्टिरः' थाय. तमे पाठमां ओछो अधिको अक्षर

बोलीने अर्थना अनर्थ केम करोछो? सूत्रमां कह्या तेम अर्थ केम नथी करता? सूत्रमां तो अर्थ एम छे के "इंगालकम्मे" कोयला करी वेची तेनो लाभ लइ पोतानी आजीविका करे. ए काम श्रावक न करे, पण सहेजे घर काम माटे लावे तो इंगालकर्म न कहीए. एम यावत् चौद बोले करी श्रावक पोतानी आजीविका करे नही. तेम पंदरमो बोल (असइजण पोसणया) हिंसानी बुद्धे हिंसक जीव कुर्कट, मंजार, सुकर (सुकर), अने कुकर (कुतरा) इत्यादिकने तथा भाडां लेवा माटे दासीने पोषे, तथा स्वार्थने (भोगने) हेते गुणिकाने पोषे, इत्यादिक पंदर कर्मादाने करी पेट भरीए ते कर्मादान कहेवाय. इहां कांइ दान देवुं ते पंदरमुं कर्मादान छे एम अर्थ नथी. हवे जो दान देतां अने असंजतिना भरण पोषण करवामां कर्मादान लागे तो श्रावकने सातमुं व्रत मुलथीज रहे नही, कारण के श्री अरिहंतदेवना सर्व श्रावकोए पनरे कर्मादान (सातमा व्रतना अतिचार जाणीने) त्रिविधे त्रिविधे त्याग्या छे. शाख सूत्र भगवती शतक ८ मे उद्देशे ५ मे. ते पाठः—

किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति तेसिं नो कप्पइ इमाइं पनरस्स कम्मादाणाइं सयंकरेत्तएवा कारित्तएवा करंतंवा अन्नन समणुजाणेत्तएवा तं० इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिजे ६ लक्खवाणिज्जे ७ केसवाणिज्जे ८ रसवाणिज्जे ९ वीसवाणिज्जे १० जंतपीलणकम्मे ११ निल्लंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३ सरदहतलाव परिसोसणया १४ असतीपोषणया १५ इच्चे ते समणोवासगा सुक्का सुक्काभिजा तिया भवया भविता कालमासे कालं किच्चा अणयरेसु देवलोएसु उववत्तारो भवंति ॥

अर्थः—किं० शुं पु० वली जे० जे इ० ए स० श्रमणोपासक

श्रावक भ० होय ते० तेने नो० न क० कल्पे इ० ए वक्ष्यमाण प० पंदर कर्मना ( आदान ) हेतु प्रत्ये स० पोते करवा अथवा का० अनेरा पासे करावववा अने क० करतां प्रत्ये भलुं जाणवुं ( अनुमोदवुं ) तं० ते कहे छेः—इं० कोयला आदिक अग्निएकरी आजीविका निमित्ते वेपार करवो ते. १ व० वन कर्म वन छेदन विक्रयरुप बीज पोषणादिक ते. २ सा० सकटादिक वाहन घमावी वेचे, इत्यादिक ते. ३ भा० भाडेकरी पारका द्रव्यने सकटादिकेकरी देशांन्तरने विषे पहोंचाडे अथवा बलध उंट भाडे आपे ते. ४ फो० हल कोदाले करी भुमिकादिकनुं फोडवुं ते. ५ दं० दांत हाथीनो अने तेना उपलक्षणथी, चर्म, चामर, पुंछ, केशादिकनो वणज ते. ६ ल० लाक्षादिकनो व्यापार ते. ७ के० केश, वाल, उन इत्यादिकनो व्यापार ते. ८ र० मधादि रसनो व्यापार ते. ए वी० विष अने तेना उपलक्षणथी शस्त्रनो (हथियारनो) व्यापार ते. १० जं० जंत्रे ( संचाए ) करी इक्षुआदिक पीलवानो व्यापार ते. ११ नि० वृषभ ( आखला ) ना वृषण ( अंड ) छेदन करवानो व्यापार ते. १२ द० दव-देवानी बुद्धिए अग्नि सलगाववानो व्यापार ते. १३ स० सरोवर, द्रह, तलाव आदिकना पाणी शोषवानो व्यापार ते. १४ अ० दासदासीने भाडे देवा अथवा वेचवा माटे पोषण करवानो व्यापार तथा कुकडां मंजारादिक जीवनुं वेपार अर्थे पोषण करवुं ते. १५ इतिद्रव्यं. इ० एवं प्रकारे ते० ते स० श्रमणोपासक श्रावक सु० शुकल (उजला) भावथी पोताना व्रतने विषे गाढा ( द्रढ ) अमत्सरी तथा कृतज्ञ सदाचारना आरंभक, सर्व उपर हितना चिंतक, ए का० कालना समयने विषे का० काल करीने अ० अनेरा कोइएक दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे एवा कह्या.

भावार्थः—हवे जुओ ! इहां तो एम कह्युं छे के, श्रमण भगवंत श्री महावीरदेवना सर्व श्रावकोए पंदर कर्मादान त्रिविधे त्रिविधे करी वोसराव्यां छे. एटले पंदरे कर्मादान सेवे नहिं, सेवरावे नहिं अने सेवताने भला पण जाणे नहिं. हवे तमे तो कहो छो के, असंजतिनां भ-

रण पोषण करे तो पंदरमुं कर्मादान लागे. त्यारे तो आणंद प्रमुख सर्व श्रावक आरामोसर करता हता, न्याती-गोतीने जमाडता हता, गायो, भेंसो प्रमुख तिर्यंचने पोषता हता, अंतकालादिक समये पेटीयां आपता हता अने कुतरांने लाडु नाखता हता, दासदासी घरना टाबर (छोकरां) प्रमुखने पोषता हता अने संसारमां बेठा हता तेथी मागता भीखारीने पण दान देताज हशे. ए पूर्वोक्त सर्व संजति के असंजति ? इत्यादिक असंजतिनां भरण-पोषण करवावालामां तमारी श्रद्धाने लेखे पंदरमुं कर्मादान लागे, त्यारे तेमनामां श्रावकपणुं रहे के नहिं? कारण के साधु जाणी जाणीने साधुपणामां दोष (अतिचार) लगाडीने जाव जीव सुधी प्रायश्चित न ले तो साधपणुं रहे नाहिं. तेम पंदरे कर्मादान श्रावकना सातमा व्रतना अतिचार कह्या छे. एवा अतिचार असंजतिना भरण-पोषण करवाथी जाणी जाणीने लगाडे तो तेनुं श्रावकपणुं अने सातमुं व्रत केम रहे ? ते विवेकथी जुओ. वली ए कर्मादान एवुं नाम केम थयुं ? एवा व्यापारमां पाप घणुं छे तेथी तेने कर्मादान अथवा अनार्य वेपार रह्यो, अने केइक व्यापारमां पाप थोडुं छे तेने आर्य व्यापार कह्यो. शास्त्र सूत्र पन्नवणा पद पेहेले. ते पाठः—

सेकिंतं कम्मारिया अणेगविहा पणत्ता तं० दोसिया सुतिया कप्पासिया सुत्तवेत्तीया भंडवेयालिया कोलालिया णरवाविणिया जेयावण्णे तहप्पगारा सेतं कम्मारिया. से किंतं सिप्पायरिया २ अणेगविहा पं० तं० तुण्णागा तंतुवाया पट्टागारा वेयगा वरुडा छक्किया कट्ठपाउयारी मुंजपाउरा छतारा पत्तारा पोछारा लोप्पारा संखारा दंत्तारा भंडारा जिन्नोगारा सेलारा कोडीगारा जेयावण्णे तहप्पगारा से तं सिप्पारिया. ॥

अर्थः—से० ते कर्मआरजना हे भगवान! केटला भेद? इति प्रश्न. उत्तर. हे गौतम ! क० ते कर्मआराजना अ० अनेक भेद प० परूप्या

तं० ते कहेछेः—दो० कपमाना व्यापार १, सु० सुतरना व्यापार २, क० कपास ( रुइ ) ना व्यापार ३, मु० मोती प्रमुख ऊवेरातना व्यापार तथा सराफ प्रमुख ४, नं० क्रियाणा विशेषना व्यापार ५, को० कांसी प्रमुखना तथा सोनारुपादिक ( नांमा ) वासणना व्यापार ६, ए० नरवाबरणिकां जाती विशेषनो व्यापार ७, जे० जे अनेरा पण एवा त० तथा प्रकारना आरज व्यापार ८, से० तेने क० आर्य कर्म कहीये. हवे शिल्पना नेद कहेछे. से० ते किं० शुं हे नगवान ! सि० शिल्प (विज्ञान विशेष) आरज ? ते शिल्प आरजना केटला नेद ? उत्तर. हे गौतम ! सि० शिल्प आरजना अ० अनेक नेद प० परुप्या तं० ते कहेछेः—तु० तुनारानो विज्ञान ते आरज, तं० वस्त्रना वणनारा, प० पटोलादिकना वणनारा, वे० वेपकनामा कोइ वि० विज्ञान विशेष, ७० छक्रियानामा विज्ञान विशेष, क० काष्टनुं विज्ञान, मुं० मुज प्रमुखनुं विज्ञान, छ० छत्री करवानुं विज्ञान, प० चित्रामण करवानुं विज्ञान, पो० पोथी लखवानुं विज्ञान, लो० लेप करवानुं विज्ञान, सं० शंखनुं विज्ञान, दं० दांतनुं विज्ञान, नं० घर-वासणादिकनुं विज्ञान, जि० जीन्यारसनुं विज्ञान, से० सेल करवानुं विज्ञान, को० कोटकारनुं विज्ञान, जे० जे एवां अनेरां पण त० तथा प्रकारनां विज्ञान, ते सर्व शिल्प आरज जाणवा. से० तेने विज्ञान आरज कहीये. ५.

नावार्थः—हवे जुर्ज ! श्री पन्नवणाजीना पहेला पदमां नव प्रकारनां आर्य कह्या, तेमां चोथुं कर्म आर्य कह्युं. तेमां नाणावटी, सुतरीआ, कपास रुइवाला, इत्यादिक वेपार करी पेट नरे, ते व्यापार आर्यमां गण्या. ते वेपारनुं नाम कर्मादान न कहीये. शामाटे के, ए व्यापारमां पाप थोडुं छे, ते माटे श्री वीतरागदेवे आर्य व्यापार कह्या; अने पंदर कर्मादान वर्ज्या ते शामाटे के, एवा व्यापारमां पाप घणुं छे. एवा कर्ममां सदाकाल हिंसाथी त्रस जीव हणाय छे ते माटे कर्मादान कहीये. ए काम करी पेट नरवुं वर्ज्युं, साचो अर्थ तो ए छे. वली नगवती तथा उपाशकदशामां सूत्रार्थ जोइ वांचजो. वली तेरापंथीने पुछीए के, दानमां एकडुं

शुं ज्यारे पाप छे के तेने पंदरमा कर्मादानमां लइने घाल्युं ? चार कारणे जीव नारकी अने तिर्यंचनुं आयुष्य बांधे, तेमां पण दान न घाल्युं. तेमज अढार पापमां पण दानने न घाल्युं. वली सुयगडांगना बीजा श्रुतष्कंधना बीजा अध्ययनमां अधर्मना (पापना) करणहारनां लक्षण वखाण्यां. तेनां मांठां लक्षण अनेक प्रकारे वर्णव्यां छे. तथा अनेक पापनां कर्तव्य नाम लइ लइने वर्णव्यां छे, तेमां पण दाननी करणी कही नथी. वली नारकीना नेरियाने परमाधामी पाछला भवनां दुःकृत संभारीने पीडा देछे. तेमां परदारागमन, जीवहिंसा, चोरी, कपट, आल, नींदा, प्रमुख कार्य संभारीने वेदना देछे; तेमां पण दानरुपो अधर्म संभारीने वेदना देता कह्या नथी. त्यारे इहां वीतरागे एवुं ज्यारे पाप दानमां शुं दीठुं ? के, दानने कर्मादानमां घाल्युं ? हे देवानुप्रीय! सूत्रमां तो 'असइजण पोसणया' ए पाठना अक्षर छे. एनो अर्थ एम छे के, स्वार्थ हेते हिंसक जीव पोषवा नही अने दासी गुणिकाने कुशील सेवरावी पैसा लेवा नही. एवा वेपारनी आजीविका श्रावके करवी नही; तथा घरमां जुवा प्रमुख जानवरोने चुगवा वास्ते कुकडांने पालवां नही. तेमज घरमां उंदर थया होय तेनुं भक्षण करवा माटे बीलाडी पालवी नही; आदि दुष्ट जानवर स्वार्थ निमित्ते पोषवां नही.

वली ए अनुकंपा दाननी करणी अनर्थादंडमां तथा कर्मादानमां होय तो कोइ तीर्थंकरे, केवलज्ञानीए तथा साधुए, कोइ श्रावकने अनुकंपा आणीने दान देवाना पचखाण केम न कराव्या ? कराव्या होय तो पाठ बतावो. वली तमे पण पचखाण नथी करावता. जो दानमां अनर्थादंड अने कर्मादान जाणे तो साधु पचखाण केम न करावे ? कारण के पापना पचखाण तो साधुए करावबाज कह्या छे, पण जोगाजोग विचारे. जेमके कोइ पुरुष साधु पासे आवीने कहे के " हे स्वामी ! मुजने अणछाण्युं पाणी पीवानो सोगन करावो " तो सुखे करावे; पण कोइ कहे के " मुजने छांणीने पाणी पीवाना पचखाण करावो " तो साधु न करावे. शामाटे न करावे ? तमारे लेखे सामी छाणवानी हिंसा टली;

पण ए अजोग पचखाण साधु न करावे. तेम साधु पोताना खावापीवाना पच्चखाण करावे, पण अनुकंपा आणीने दानदेवाना पचखाण न करावे; कारणके श्री जिनमार्गना श्रावकनी करणीमां दानदेवुं निश्चे दीसे छे, ते माटे ए पचखाण न करावे. तमारी श्रद्धाने लेखे तो अनर्थादंड कर्मादानमां जाणीने ठाम ठाम सूत्रमां ए पचखाण कराववां जोइए; पण श्री वीतरागदेवनी एवी श्रद्धा नहोती. तमे मतने लीधे अणहुती कुजुक्ति लगाडोछो. वली प्रदेशीराजा केशीश्रमण कने धर्म पाम्या पहेलां मिथ्यात्वी (नास्तिक मति) हता, ते दिननां लक्षण वर्णव्यां, तेमां कह्युं के, लोही खरड्या हाथ रहेछे, दीठीने अणदीठी कहेछे, अणदीठीने दीठी कहेछे, इत्यादिक अनेक पापनां कर्तव्य करतो कह्यो; पण एम न कह्युं के, दान दया रुपी पाप करे छे. वली भगवतीजीना पंदरमा शतकमां विमलवाहन राजानां लक्षण वर्णव्यां. तीहां 'श्रमणपिडकुल' कह्यो, पण दान देतो दया पालतो कह्यो नथी. वली जंबुद्विप-पन्नतिमां अवाडचिलाया अनार्य वर्णव्या. ते वर्णनमां पण दान दया वर्णवी नथी. त्यारे हे देवानुप्रीय! दान दयामां पाप होय तो क्यांकतो वीतरागदेव उपदेश पक्षमां पापमां वर्णव करत; पण वीतरागदेवनी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती एम जाणजो.

वली तेरापंथी कहे छे के, "असंजति अव्रतिने दान देवुं क्यां कह्युं छे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! प्रथम तो श्री तीर्थंकर माहाराजे दान देवानी रीती चलावी छे. पहेलां त्रणसोने अठ्यासी क्रोड एसी लाख सोनैया वरस दीवस सुधी वरसीदान दइने पछी दीक्षा ले छे. ते असंजति अव्रतिने दान दे तेमां जो पाप होय तो, ए पापनी स्थिति तीर्थंकरदेव केम राखे ते कहो. तवारे तेरापंथी कहे छे के "तीर्थंकर तो पहेलां स्त्रीथी भोग भोगवे छे, राज्य करे छे तथा स्नानादिक अनेक पापनां काम करे छे, तेम ए पण पापनुं काम छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! ए भोगादिक तो पूर्व भवना कर्मना उदयभाव (भोगावली कर्म) छे ते भोगवे छे. ए तो अर्थ-पापमां छे, पण दान देवुं ते कया कर्मनो

उदयन्नाव छे ते कहो. वली ए अर्थ-पापमां छे के अनर्थ-पापमां छे ते कहो; अने ए अनर्थ-पाप शी रीते न्नोगवे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "न्नगवंत श्री महावीरजीए वरसीदान असंजति अव्रत्तिने दीधुं तेनुं पाप लाग्युं, तेथी तेमणे बार वरस दुःख दीठां." जे उपर मतना लीधे एवी खोटी जोमो कीधी छे, ते ढालनी गाथाः—

लीआमे पाप ने दियामे धर्म, आप तो रेह गया कोरारे;
देवता कनांसुं ले मीनखांने दीधा, तरे वीरजीने पम गया फोमारे.
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

एवी खोटी जोमो करी छे. "देवताकनेथी सोनैया न्नगवाने लीधा तेनुं तो पाप लाग्युं, ने मनुष्यने दीधा तेथी धर्म थयुं, तो पण आव्या तेम गया अने पोते तो कोराने कोरा रह्या; पण एटलुं विशेष के, देवता कनेथी लइ मनुष्यने दीधा, तेथी न्नगवानने साम्राबार वरस ने पंदर दीवस सुधी छद्मस्थपणामां फोमा पड्या." एवां अनर्थ वचन बोले छे. पण जुओ! हे देवानुप्रीय ! श्री महावीरजीए तो दानना फोमा न्नुगत्या (न्नोगव्या); पण दान तो अनंता तीर्थंकर थया ते सघलाए दीधुं छे. तेमज मलीनाथ न्नगवाने वरसीदान देइ दिक्षा लीधी; पछी सवा पोहोरे केवलज्ञान उपन्युं. ए वरसीदान दीधुं तेना फोमा मलीनाथ न्नगवान क्यारे न्नोगवशे ते कहो ? हे देवानुप्रीय ! तमे मतना लीधे प्रन्नु उपर एवां अछतां आल केम दो छो ? तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के 'ए तो अनादकालनी स्थिती छे' तो हे देवानुप्रीय ! ए स्थिती पाप जाणीने राखे छे के कांइ शुन्न फल (गुण) जाणीने राखे छे? ए करणी आर्य पुरुषनी छे के अनार्य पुरुषनी छे ते कहो.

वली तेरापंथी कहे छे के "आ जगतमां बे बोल छे, व्रत ने अव्रत. असंजतिने अने अव्रतिने दान आपे ए करणी अव्रतनी छे, माटे व्रतमां ए काम करवुं नही. अनुकंपा आणीने असंजतिने अव्रतिने दान दे तेमां व्रत निपजे तो संवर निर्जरा थाय, पुन्य बंधाय; पण व्रत नथी;

अव्रत छे तेथी पाप लागे." तेनो उत्तर. हे मंगलमूर्ति! व्रतमां तो ए काम नथी ते सर्व जाणे छे, पण दाननी करणी केम निषेधो छो? ए तो अनुकंपा आणीने दे ते शुभ जोगनी करणी छे, पण अव्रत नथी. जेम साधुजी गुरुदेवनी वैयावच करे, आहार वस्त्रादिक आणी आपे, हाथ पगादि चांपे अने तेलादिक मसले, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? वली साधु श्रावक गुरुदेवनी सामा जाय, गुरुदेव आव्याथी उभा थाय, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? वली साधु श्रावक पांच प्रकारनी सझाय करे, वायणा१ पुछणा२ परियटणा३ अणुपेहा४ अने धर्मकथा५, ए करणी व्रतनी के अवृत्तनी? वली श्रावक व्याख्यान सांभले, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? ध्यान करे, धर्म उपदेश दे, ए करणी व्रतनी के अव्रतनी? पडिले- हणादिक इत्यादिक अनेक शुभकाम श्रावक करे, तेने व्रतमां गणो के अव्रतमां? जो व्रतमां गणो तो कयुं व्रत निपजे ते कहो, अने जो अव्रतमां गणो तो, तमारी श्रद्धाने लेखे तो एकान्त पाप लागवुं जोइए; कारण के अनुकंपा आणीने दान दे तेमां तमे कहो छो के, व्रत नथी तेथी पाप लागे. त्यारे पूर्वोक्त गुरु आदिकनी वैयावच करे, सामो जाय, अने सझायादिक करे, ए पण तमारी कहेणीने लेखे व्रतमां नथी, अ- व्रत छे, कारण के तमे जगतमां बेज बोल कहो छो, व्रत ने अव्रत. ए सझायादिक व्रतमां गणो के अव्रतमां?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ए काम व्रतमां तो नथी, पण शुभ जोग निर्जरानी करणी छे, तेथी कर्म निर्जरा थाय, पुन्य प्रकृति बंधाय." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अनुकंपा आणीने दान दे, ते पण शुभ जो- गनी करणी छे. तेमां निर्जरा थवानो अने पुन्य बंधावानो नाकारो नथी. तमे व्रत अव्रतनुं नाम लेइ अणसमजु लोकोना घटमां घोचा केम घा- लो छो? वली तेरापंथी कहे छे के "मागता भीखारीने जे कोइ अन्न- पाणी वस्त्रादिक आपे, तेणे अव्रत वधार्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! "भुख्या तृषातुर टाढे मरताने केटलुंक अव्रत घटतुं हतुं ते अन्नवस्त्रा- दिक देइने वधार्युं." एम तमे कहो छो, पण श्री भगवंते तो निगोदा-

दिक सर्व चोरासी लाख जीवाजोनने त्याग नथी, तेथी चौदे राजलोकनुं अव्रत सघलाने सरखुं खुल्लु कह्युं छे. वली रांकने तथा चक्रवर्तादिक राजाने सरखुं अव्रत कह्युं छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक पहेले उद्देशे नवमे. ते पाठः—

भंतेति भगवंगोयमे समणंभगवं महावीरं वंदइ नमंसइइत्ता एवं वयासी सेणुणं भंते! सेठियस्सय तणुयस्सय किवणस्सय खत्तियस्सय समाचेव अप्पच्चख्काणं किरिया कज्जइ? हंता गो० सेठियस्सय जाव अपच्चख्काण किरियाकज्जइ सेकेणठेणं भंते एवं वुच्चइ? गो०! अविरइ पडुच्च सेतेणठेणं गोयमा एवंवुच्चइ सेठियस्सय तणुयस्सय जाव कज्जइ॥

अर्थः—भं० हे भगवंत! एवे आमंत्रणे अथवा गुरु प्रत्ये कल्याणकारी वचन कहीने पुछे, भं० भगवंत गोतम स० श्रमण (तपस्वी) भ० भगवंत श्री मा० माहावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने ए० एम व० कहेता हवा. से० ते णु० निश्चे भं० हे भगवान! से० श्रोदेवीनी मूर्तीना पाटबंध जेना माथे बांध्या होय एवा शेठने, त० रांक दरिद्रिने, कि० कृपण दरिद्रिने अने ख० क्षत्री राजाने स० सरीखो चे० निश्चे अ० अप्रत्याख्यान क्रिया एटले अप्रत्याखानथी उपन्यां कर्मबंध रुप कि० क्रिया क० लागे? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम. से० सेठने जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया लागे. एटले श्रेष्टी, दरिद्रि, रांक अने राजाने सरखी क्रिया लागे छे. से० ते के० शा ठे० अर्थे भं० हे भगवान! ए० एम वु० कह्युं? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गोतम! अ० इच्छा सर्वने छे ते अव्रती प० आश्री. से० ते ते० तेणे ठे० अर्थे गो० हे गोतम! ए० एम वु० कह्युं के से० सेठने त० दरिद्रिने जा० जावत् क० अप्रत्याख्यान क्रिया लागे.

भावार्थः—हवे जुओ! इहां अन्ननो एक कण अने वस्त्रादिकनो

एक तार मात्र पण न होय एवा मागता भीखारी रांक, कृपण, दरिद्रि, अने चक्रवर्तादिक राजा, सर्वने जोगनुं पाप अने परिग्रह तो वधतो घटतो छे, पण अव्रतनी क्रिया श्री वीतरागदेवे सर्वने सरखी कही. ते तमे जाणता थका ए पाठने छुपावीने "अन्नवस्त्रादिक नथी तेने अव्रत थोडी छे अने अन्नवस्त्रादिक देवावालाए अव्रत वधार्युं." एम मतना लीधे जुठु केम बोलोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अव्रततो वधे घटे नही, सदाय सरखुं छे, पण अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक आपे, तेथी आपवावाले अव्रत सेवराव्युं कहीये." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अव्रत तो आश्रव छे. ते आश्रवने तमारा तेरद्वारमां अरुपी कह्यो छे. तेमां वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श एके नथी अरुपी छे. ते अव्रत ( अरुपी वस्तुने ) सेवरावे शीरीते अने अरुपी वस्तु कोइने शीरीते आपी शकाय ? अव्रततो मोहनी-कर्मना उदये अप्रत्याख्याननी चोकडीना जोगथी जीवने आशा, तृष्णा अने अत्यागभावनी लहेरो वर्ते, तेथी कर्म लागे तेने कहीए; अने तेतो पोतपोतानी कनेज छे. सेवरावी सेवरावाय नही, तेम कोइने आपी शकाय पण नही. तमे मतना लीधे एवी कुयुक्ति केम लगावोछो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "मागता भीखारी दुर्बल भुखे तरसे अने टाढे मरे तेथी तेनां कर्म कपाय, तेने अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक देवावाले कर्म कपातां रोकी राख्यां अने अन्नपान वस्त्रादिक सेववाना जोगनुं पाप वधार्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! श्री भगवंते तो पुद्गल मेलववा चाहतो होय, ने पुद्गल न मले त्यारे घणुं आर्तध्यान करे, तेथी तेने आरंभादिक पांच क्रिया जबरी कहीछे; अने ते वस्तुनो जोग मल्याथी पूर्वोक्त पांच क्रिया पातली कही छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक पांचमे उद्देशे छठे. ते पाठः—

गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेजा तस्सणं भंते ! भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरियाकज्जइ परिग्गहिया किरियाकज्जइ मायावत्तिया

अपच्चक्खाणा मिच्छादंसण ? गो० ! आरंभिया किरिया कज्जइ परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाण किरियाकज्जइ. मिच्छादंसण-किरिया सियकज्जइ सियनोकज्जइ. अहसे भंडे अभिसमन्नागए भवई तउ से पच्छा सव्वाउ ताउ पयणुइ भवइ॥

अर्थः—गा० गाथापतिने भं० हे भगवान ! भं० क्रियाणा प्रत्ये वि० वेचताथकाने के० कोइएक भं० भंड प्रत्ये अ० चोरे. त० तेने भं० हे भगवान ! भं० क्रियाणा प्रत्ये अ० गवेषणा करताने ( जोताने ) किं० शुं ? आ० आरंभनी कि० क्रिया क० लागे ? प० परिग्रहनी कि० क्रिया क० लागे ? मा० मायाप्रत्ययनी क्रिया लागे ? अ० अपत्याख्याननी क्रिया लागे अने मिथ्या दंसण प्रत्ययनी क्रिया लागे ? गो० हे गौतम ! ते भंड गवेषणहारने आ० आरंभनी क्रिया लागे, तेमज प० परिग्रहनी मा० मायाप्रत्ययनी अने अ० अप्रत्याख्याननी क्रियातो लागेज; पण मि० मिथ्यादंसणप्रत्ययनो क्रिया सि० कदाचित क० जो ग्रहपति मिथ्याद्रष्टी होय तो लागे, ने सि० कदाचित न लागे (सम्यक्‌द्रष्टि होय तो न लागे ). हवे क्रिया विषे विशेष कहेछे. अ० अथ हवे जो ते भि० क्रियाणुं अभि० गवेषणा करतां लाध्युं भ० होय त० तेवार पछी ( ते लाध्या पछी) से० ते ग्रहस्थने स० आरंभादि जे क्रियानो संभव छे ते सर्व प० पातली भ० थाय. क्रियाणुं लाध्या पछी उद्यम थोडो ते माटे.

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां तो एम कह्युं के, गाथापतिनुं क्रियाणुं (भंड परिग्रह) चोरादिक लइ जाय अने गाथापति गवेषणा (शोध) करे, तेवारे आकुलव्याकुल आर्तध्यान जोगादिकनो उद्यम घणो थाय. तेथी आरंभिया, परिग्रहिया, मायावत्तिया अने अपचखाणीया, ए चार क्रिया तो घणी जबरी लागेज, अने पांचमी मिथ्यात्वनी क्रिया समकिति होय तेने न लागे, अने मिथ्यात्वी होय तो जबरी लागे. वली जे परिग्रहादिक चोर लइ गयो छे ते गवेषणा करतां पाछु आवी जाय, तेथी संतोषभाव थाय, आकुलव्याकुल आर्तध्यान मटी जाय, तेवारे वीतराग

देवे पांच क्रिया पातली कही. ए न्याये मागता भीखारी, दुर्बल, क्षुख-तृषा शीतादिकथी पीडीत, आकुल व्याकुल आर्तध्यान घणुं करे, अन्न-वस्त्रादिकनी गवेषणा करे के "हे दाता! कोइ अन्न वस्त्रादिक आपो" एम आशा सहित गवेषणा करे वचन बोले. ते ज्यां सुधी तेने न मले त्यां सुधी जोगादिकनो उद्यम घणो करे, तेथी आरंभादिक पांचे क्रीया तेने जबरी लागे; अने दातार दुःखी देखी अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रा-दिक आपे, तेथी संतोषभाव पामे, तेथी ए वस्तुनुं आकुलव्याकुल (आ-र्तध्यान).पणुं मटयुं अने जोगनो उद्यम घटयो. तेवारे श्री वीतराग-देवनी कहेणीने लेखे तो आरंभादिक पांचे क्रिया पातली लागे. हवे तमे "अन्न वस्त्रादिक देवावाले परिग्रहनुं तथा जोगनुं पाप वधार्युं" एम कये न्याये कहोछो? तमारे लेखे तो गाथापतिनुं धन (अनर्थनुं मुल) चोर लइ गयो, तेथी आरंभादिक पांच क्रिया पातली लागे केहेवी जो-इए; अने धन (पाप करावबावालुं) पाछुं आव्युं तेथी पांच क्रिया आरं-भादिक जबरी लागे कहेवुं जोइए; पण भगवंतनी श्रद्धा तमारा सरखी नहोती. भगवंत तो मुर्छादिक आर्तध्यानथी जोगनो उद्यम घणो होय तेनेज जबरुं पाप माने छे; माटे मागता भीखारीने अन्न वस्त्रादिक देइ आर्तध्याननुं जबरुं पाप टलावे, तेने पाप कये न्याये लागे? डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली धान्य, क्रियाणादिक देवुं कर्युं, ते घरमां पड्युं होय त्यां सुधी धान्यादिक क्रियाणानी पांच क्रिया गाथापतिने जबरी लागे कही, अने रुपीआ न लीधा तेथी रुपीआनी पांचे क्रिया पातली लागे कही, अने धान्य क्रियाणुं लेवावाले नथी लीधुं त्यां सुधी तेने धान्य क्रियाणानी पांचे क्रिया पातली लागे कही, अने रुपीया न दीधा त्यां सुधी रुपीयानी पांचे क्रिया जबरी लागे कही; अने धान्यादिक क्रियाणुं लेवावालाने तोली दीधुं अने रुपीया लइ लीधा, तेवारे धान्यादिक क्रि-याणानी तो पांच क्रिया पातली कही अने रुपीयानी क्रिया जबरी कही; अने लेवावाले क्रियाणुं तोलावी लइ लीधुं, अने रुपीया परखावीने आपी दीधा, तेवारे क्रियाणानी पूर्वोक्त पांच क्रिया जबरी लागे कही

अने रुपीया दीधा तेथी रुपीयानी पांच क्रिया पातली कही.

हवे जुओ ! ज्यारे वस्तु घरमां पडी होय, तेवारे ते उपर मुर्छा होय तेथी तेनो जापतो राखवानो उद्यम करे तेवारे पांचे क्रिया जबरी कही; अने आगलाने वस्तु आपी दीधी, पोतानी मुर्छा मटी ने जापतो राखवानो उद्यम मट्यो, तेवारे पांचे क्रिया पातली लागे कही. तेम दातारना घरमां अन्न वस्त्रादिक पड्यां होय त्यां सुधी ते उपर पोतानी मुर्छा छे तेथी पांचे क्रिया जबरी लागे; अने मागता भिखारीने दुर्बल दुखीने भुख्या तरसा टाढे मरता देखीने अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक आपे, तेथी पोतानी मुर्छा मटी तेने श्री वीतरागदेवना वचनने लेखे तो पांचे क्रिया पातली लागे. तमे वीतरागदेवनां वचन उत्थापीने दातारने उलटुं पाप कइ रीते लगाडो छो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ग्रहस्थीनां अन्न वस्त्रादिक परिग्रहमां छे. अढार पापनो, छत्रीस बोलनो अने अन्नवस्त्रादिकनो त्याग करे तेटलुं तो व्रत छे, अने जे राखे ते सर्व अन्नवस्त्रादिक अव्रत-परिग्रहमां छे. ते पोते सेवे तो पाप, बीजाने सेववाने आपे तो पाप अने सेवतांने भलुं जाणे तो पाप. ए लेखे दातार मागता भीखारीने अनुकंपा आणीने अन्न वस्त्रादिक आपे,तेणे तेने अवृत परीग्रह सेवराव्यो कहीये." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! परिग्रहनेतो भगवंते रुपी चोफर्सी कह्यो छे, अने अन्न, वस्त्र, सोनुं, रुपुं प्रमुख सर्व पुद्गलने रुपी आठफर्सी कह्यां छे. शास्त्र सुत्र भगवती शतक बारमे उद्देशे पांचमे. ते पाठः—

रायगिहे जाव एवं वयासी अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे५ एसणं कइ वण्णे कइगंधे कइरसे कइफासे पं.? गो.! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे. अहभंते! कोहे१ कोवे२ रोसे३ दोसे४ अखमा५ संजलणे६ कलहे७ चंडिके८ भंडणेए विवादे१० एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पं? गो.! पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे चौफासे पं० ॥ अहभंते! माणे मदे दप्पे थंभे गवे अनुकोसे

परपरिवाए उक्कोसे अवकोसे उन्नय उनामे डुन्नामे एसणं कइवणे पं.? गो.! पंचवणे जहा कोहे तहेव ॥ अह भंते! माया उवहि नियम्हि वलए गहणे णुमे कक्के कुरुए जीमे किव्विसे आयरणाया गुहणाया वंचणाया पलिउंचणाया साइ-जोगेय एसणं कइवणे पं.? गो.! पंचवणे जहेव कोहे॥अह भंते! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेहि तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पच्छाणया लालपणया कामासा भोगासा जी-वीयासा मरणासा नंदी रागे एसणं कइवणे पं? गो.! जहेव कोहे॥अहभंते! पेच्चे दोषे कलहे जाव मिछा दंसणसल्ले ए-सणं कइवणे? गो.! जहेव कोहे तहेव चौ फासे ॥

अर्थः—रा० राजग्रहि नगरीने विषे जा० जावत् गोतम ए० एम कहेछे. अथ हवे भं० हे भगवान! पा० प्राणातीपात मु० मृखावाद अ० अदत्तादान मे० मैथुन अने प० परिग्रह ५. ए पांच ए० एने विषे क० केटला व० वर्ण क० केटला गं० गंध क० केटला र० रस अने क० के-टला फा० फर्स पं० कह्या? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ते कर्मने पुग्गलरुपपणाथी(पुग्गलात्मक छे तेथी) वर्णादिक होय. एटला माटे पं०पांच वर्ण डु० बे गंध पं० पांच रस अने च० चार फर्स ( स्निग्ध, रुक्ष, शीत अने उष्ण. ४ ) शुक्षम परिणामी पुग्गलने होय. कर्म शुक्षम परिणामी छे ते माटे. अ० अथ हवे भं० हे भगवान! कोहे० कर्म उपार्जनहार सामान्यरुप प्रणाम ते क्रोध १, अने को० विशेषरुप ते कोप २, रो० क्रो-धनो अनुबंध ते ३, दो० स्वात्म अने परात्मने दोषे ते ४, अ० परायो अपराध न सहे ते ५, सं० वारंवार क्रोधरुपी अग्नि बले ते ६, क० मोटा शब्देकरी भुंडा वचन बोले ते ७, चं० क्रोधेकरी रुद्र आकार करे ते ८, भं० दंडादिकेकरी युद्ध करे ते ए अने वि० अविनय बोले ते १०. ए इहां कलहादिक क्रोधनां कार्य छे ए सर्व एकार्थ छे. ए० एने विषे क०

केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस, जा० यावत् क० केटला स्पर्श प० कह्या ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पं० पांच वर्ण पं० पांच रस दु० बेगंध अने चौ० चार स्पर्श प० पूर्वे कह्या ते. अ० अथ हवे भं० हे भगवान! मा० मान प्रणाम उपार्जनहार कर्म. त्यां मान सामान्य नाम छे अने मदादिक विशेष नाम छे १, म० मद हर्ष २, द० दर्प ३, थं० नमे नही ४, ग० निःशंकपणुं ५, अ० अनेरा पासे गुण कीर्तन करावे ६, प० पराया अवगुणवाद बोले ७, उ० पोते पोतानी रिद्धि उपार्जे ८, अ० अभिमानेकरी आत्माने तथा परने कषाय प्रतिज्ञावे ९, उ० उंचो भाव (अहंकारे करी) १०, उन्ना० जे आवीने नमे तेने गर्वे प्रवर्ते ११ दु० दुष्टपणे नमे १२. ए सर्व मानना बार बोल कह्या. इहां स्थंभादिक मानना कार्य छे ए सर्व मानवाचक छे. ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला रस, केटला गंध अने केटला स्पर्श प० कह्या ? गो० हे गौतम ! पं० पांच वर्ण इत्यादिक ज० जेम को० क्रोधने कह्या त० तेम कहेवा. अ० अथ हवे भं० हे भगवान ! मा० माया सामान्यपणे नाम उपधि इत्यादिक. तेना भेदः—उ० परने वंचन (ठगवा) निमित्ते समीप जाय १, नि० घणो आदर करी परने ठगे २, व० जेने भावे वांकी चेष्टा, वांका वचने बोले ३, ग० आगलाने वंचन अर्थे वचन जाल करे ४, णु० परवंचन अर्थे नीचो प्रवर्ते ५, क० मायाए करी अनेराने मारे ६, कु० माया विशेषे भंड कुचेष्टा करे ७, जी० परने (वंचन) ठगवा निमित्ते क्रिया अवलंबे ८, कि० मायाएकरी भवान्तरे अथवा एज भवने विषे किलविषि थाय ९, आ० मायाएकरी कांइक वस्तु आदरे १०, गु० पोतानुं स्वरुप गोपवे ११, वं० आगलाने ठगे १२, प० वंचन अर्थे सरलपणुं करी देखाडे १३, सा० रुडा द्रवने पाडुवा ( खोटा ) द्रव साथे जोडे १४. ए सर्व मायाथी एकार्थ छे. ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श पं० कह्या ? गो० हे गौतम ! पं० पांच वर्ण इत्यादि ज० जेम को० क्रोधने विशे कह्या तेम मायाने विषे केहेवा. अ० अथ हवे भं० हे भगवान ! लो० लोभ ए सामान्य नाम अने इत्यादि विशेष १, इ० अभिलाष २, मु०

रक्कण अनुबंध ३, कं० अप्रातिनी वान्छा ४, गे० प्राप्त अर्थने विषे आशक्त ५, त० पाम्या अर्थने विषे तृष्णा न जाय ६, भि० विषयनुं ध्यान ७, अ० द्रढ अभिनिवेश विषय चित्त ८, आ० मारा पुत्र तथा शिष्यने एम होजो एवी आशीस ए, प० प्रार्थना ( इष्ट अर्थनी याचना करे ते) १०, ला० लालपाल करीने वारंवार मागे ११, का० शब्द रुपनी आशा करे १२, भो० भोगरुपनी (गंध-रस-स्पर्शनी) आशा करे १३, जी० जीवीतव्यनी आशा करे १४, म० कोइ अवस्थाए मर्ण वान्छे १५, नं० समृद्धियकां राग हर्ष ते नंदीराग वाजां विशेष १६. ए सोल ए सर्व लोभ वाचक छे. ए० एने विषे भं० हे भगवान ! क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श प० कह्या ? इतिप्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ज० जेम को० क्रोधने विषे कह्या तेम लोभने विषे पण कहेवा. अ० अथ हवे भं० हे भगवान ! पे० पुत्रादि विषे स्नेह १, दो० दोष (अप्रिती) २, क० प्रेम हास्य (कलह) जा० यावत् अभ्याखान, पैशुन, रतिअरति, परपरिवाद, मायामोसो मि० मिथ्यात-दर्शन-सल्य इत्यादि पापस्थान. ए० एने विषे क० केटला वर्ण, केटला गंध, केटला रस अने केटला स्पर्श कह्या ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पं० पंच वर्ण इत्यादि ज० जेम क्रोधना कह्या तेमज चार फर्स अढार पापने विषे जाणवा.

भावार्थः—हवे जुओ ! ए पाठमां तो प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह, ए पांचे रुपी चोफरसी कह्या छे. तेमज क्रोधना दस भेद, मानना बार भेद, माया कपटाइना पंदर भेद, लोभना सोल भेद, अढार पाप अने आठ कर्म, ए सर्व बोलने रुपी चोफरसी कह्या छे. जेम आठ कर्म चोफरसी पुद्गल पोतपोतानी कनेज रहे, पण कोइने आपी शकाय नही, तेम पांचमा पाप परिग्रहने पण रुपी चोफरसी कह्यो छे. अन्न, वस्त्र, सोनुं, रुपुं प्रमुख अठफरसी पुद्गल उपर मुर्छा ममता होय तेने परिग्रह कहीये. ते रुपी चोफरसी छे ते पोतानो पोतानी कनेज रहे, कोइने आपी शकाय नही. तमे, "परिग्रह रुपी चोफरसी छे" ए सूत्रनां वचन जाणता थका कह्यो छो के "मागता

भिखारीने अनुकंपा आणीने अन्नवस्त्रादिक जे आपे, तेणे परिग्रह सेवराव्यो, परिग्रह दीधो;" एवी मतना लीधे सूत्रनां वचन मरोडी अछति परुपणा केम करो छो? वली एज बारमा शतकना पांचमा उद्देशामां अन्न वस्त्रादिकने पुद्गलास्तिकाय कही छे. ते पुद्गलास्तिकाय रुपी अठफरसी छे, अने परिग्रह (पांचमा पाप) ने रुपी चोफरसी कह्यो छे. हवे तमे अन्नवस्त्रादिकने अठफरसी पुद्गल जाणतां छतां परिग्रह केम कहो छो? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "अन्न, वस्त्र, सोनुं, रुपुं, जे उपर मुर्छा ममता होय तेने भाव परिग्रह कहीये, अने तेने रुपी चोफरसो कह्यो छे ते तो सेवराव्यो न सेवरावाय; पण सोनुं, रुपुं, अन्न, वस्त्रादिक द्रव्य परिग्रह छे, ते द्रव्य परिग्रह दातारे सेवराव्यो." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! द्रव्य परिग्रहथी कर्म बंधाय के भाव परिग्रहथी बंधाय ते कहो. जो द्रव्य परिग्रहथी कर्म बंधाय तो, भरत महाराजने जंबुद्वीपपन्नति सूत्रमां आरीसा-भुवनमां घरेणां कपडां पहेर्यां थकां केवलज्ञान उपन्युं केम कह्युं? तथा ऋखभदेव भगवानना मारुदेवी माताने हाथीने होदे बेठां, लाखो क्रोडो रुपीयानां घरेणां पहेर्यां थकां, ग्रहस्थपणाना वेषमां केवलज्ञान केम उपन्युं? वास्ते द्रव्य परिग्रह कर्म बंधनुं कारण नथी.

तेवारे तेरापंथी पण कहे छे के, "कपडां घरेणां उपर मुर्छा ममता होय तेने भाव परिग्रह कहीये. ते कर्मबंधनुं कारण छे. ते ममता मुर्छा मटी गइ, तेथी भरत महाराजने तथा मरुदेवी माताने केवलज्ञान उपन्युं; अने घरेणां कपडां तो अजीव पुद्गल छे, ते कहेवा मात्र द्रव्य परिग्रह छे, पण कर्मबंधनुं कारण नथो. ते कपडां घरेणां अव्रत परिग्रह न कहेवाय." त्यारे हे देवानुप्रीय! मागता भीखारीने अनुकंपा आणीने मुर्छा ममता मटवाथी, अन्नवस्त्रादिक अजीव पुद्गल अठफरसी दीधा, तेणे परिग्रह (कर्मबंधनुं कारण ते) सेवराव्यो, एम मतना लीधे जुठ केम बोलो छो? तेवारे वली तेरापंथी एम कहे छे के "अन्न वस्त्रादिक अजीव पुद्गल अठफरसी दीधा तेने तो तमे पाप नथी मानता; पण

काचुं धान दे अने काचुं पाणी पाय तेमां एकेंद्री जीवनी हिंसानुं तो पाप लाग्युं के नही ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एकेंद्री जीवोनी हिंसानुं तो पाप तमे बताव्युं, पण अनुकंपा शुभ जोगथी पंचेंद्रि जीवना प्राण जता राख्या, तेनुं तमे पाप केम कहो छो ? कारण के ए अनुकंपादि कार्योमां जेटली हिंसा थाय ते तो पाप खातेज छे, पण जे जीव उगर्यो तेनो गुण जाणवो. एवा मिश्रस्थानना दाखला सूत्रोमां घणे ठेकाणे छे. जेम चित्तप्रधाने घोडा दोडावीने कपटाइ करीने प्रदेशीराजाने समजाववानो उपाय कर्यो, तेथी चित्तप्रधानने अजयणानुं तथा कपटाइनुं पाप लाग्युं; पण राजाने समजाव्यो तेनी धर्मदलाली कही छे पण पाप दलाली नथी कही. वली ज्ञातासूत्रमां सुबुद्धि-प्रधाने जीतशत्रुराजाने पाणीनी अजयणा करीने समजाव्यो. तेथी तेने पाणीनी तो हिंसा लागी, पण राजाने समजाव्यो तेनुं पाप नथी कह्युं. तमे, धान कणुंका देइ काचुं पाणी पाइ अनुकंपा शुभ जोगथी पंचेंद्रि जीव मरताना प्राण राख्या तेने, शेनुंज पाप केम कहो छो ?

वली तमारी वाणी सांभलीने तमने कोइ रजपुतादिक कहे के "हे स्वामी ! आपनी मरजी होय तो धान कणुंका अने काचापाणीनी हिंसाना त्याग करावो, अने आपनी मरजी होय तो पंचेंद्रिजीवनी हिंसाना त्याग करावो, बेमांनुं एक त्याग करवाना मारा भाव छे. घणुं पाप जाणो तेना त्याग करावो." तेवारे तमे शेना त्याग करावशो ते कहो. तमारी श्रद्धाने लेखे तो धान कणुंका अने काचां पाणीना त्याग कराववा जोइए; (घणा जीवनी हिंसा टले माटे) पण भगवंते तो पंचेंद्रि जीवनी हिंसामां घणुं पाप कह्युं छे, नर्कनुं आयुष्य बांधे कह्युं छे. कारणके एकिंद्रथी अनंतगणी पुन्याइ पंचेंद्रिनी वधती छे, तेथी तेमां घणुं पाप मान्युं, अने श्रावकना पहेला व्रतमां पण त्रस-जीवनी हिंसानो त्याग करवो कह्यो. त्यारे हे देवानुप्रीय ! पंचेंद्रि जीवनी हिंसानुं पाप घणुं हशे तो, पंचेंद्रि जीवने अनुकंपा शुभजोग आणीने तेना प्राण राख्यानो घणो गुण केम नही हशे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली अ-

नुकंपा आणीने दान दे, तेमां श्री वीतरागदेवे तो धर्म अधर्म एके पण कहेवुं नथी कह्युं. शाख सूत्र ठाणायांग ठाणे दसमे उद्देशे पहेले. ते पाठः—

दस विहे दाणे पं०तं० अणुकंपा १ संग्गह २ चेव नय ३ कालुणिएतिय ४ लज्जाए ५ गारवेणंच ६ अहमेपुण-सतमे ७ धम्मे अठमेवुत्ते ८ काहीइय ९ कयंतिय १० ॥

अर्थः—द० दस वि० प्रकारे दा० दान परुप्युं तं० ते कहेछेः-अ० अनुकंपा ( कृपाकरीने दीन अनाथने देवुं ते ) १, सं० संग्रहदान (क-ष्टादिकने विषे साज्यने अर्थे दे ते) २, न० नयना लीधे दान आपे ते ३, का० पुत्रादिकना वियोगने समये दान दे ते तथा मुआंनी पछवाडे व-रादिकनुं करवुं ते शोकदान ४, ल० घणा जणानी लाजे करी दान आपे ते ५, गा० गर्वे खरचे ते गर्वदान ( नाटकिया मल्लादिने तथा विवाह सादीने विषे आपे ते ) ६, अ० अधर्मने पोषणहारुं दान ते ( गणिका-दिकने आपे ते ) ७, ध० धर्मनुं कारण ते धर्मदान (ते सुपात्रे दान) ८, का० मुजने कांइक उपकार करशे एवी बुद्धिए जे दे ते कायीकहित-दान ९, अने क० एणे मुजने घणीवार उपगार कीधो छे, माटे हुं पण उशींगण थवा काजे कांइक आपुं, एम धारीने दे ते. १० ॥

भावार्थः—हवे इहां तो दस दान कह्यां तेमां सातमुं अधर्म-दान कह्युं. ते पोताना विषय हेते तथा स्वार्थ हेते वेश्यादिकने आपे तेने अ-धर्म-दान कहीये; अने आठमुं धर्मदान ते नियाणादिक दोषरहित, चित्त, वित्त अने पात्र शुद्ध जे साधुने आपे तेने धर्मदान कहीए; अने बाकी-नां आठ शेष रह्यां, तेनां फल विषे श्रीवीतरागदेवे पण मौन राखी, पुन्य पापनां फल एके कह्यां नही, त्यारे आपणने शुं ज्ञान छे के, प्रभुना विना कह्यां न्यारां निर्णय करीए ? वली केटलाक इहां पुन्य स्थापे छे, केटलाक मिश्र स्थापे छे, पण ते वीतरागनी आज्ञा बहार छे. वली आ-ठमुं दान साधुने देतां पुन्यनिर्जरा रुप लाभ थाय, पण अरणीकरुपीनी पेरे विषय हेते दे तो अधर्म-दान पण थाय. जेम चोरने चोरी करवानी

साज्य (मदद) आपे तो अधर्मदान कहीए; केमके तेमां पोतानो पण स्वार्थ भेलो छे ते माटे. एम करतां ए चोर बंधणमां पड्यो, तेने दुःखी देखीने अनुकंपा आणीने खानपान आपे तो ते अनुकंपा दान थाय. जेवा पोताना प्रणाम (दान आपतां) होय तेवुं दान कहीए. फल पण पोताना प्रणाम शुद्ध अशुद्ध होय तेवां लागे. जेम पात्र तो धर्मरुचि घणा शुद्ध हता, पण नागश्रीना जेवा प्रणाम हता तेवां फल लाग्यां. ते माटे दान, तप, जप, क्रिया अने दया, ए सर्व पदार्थनां फल पोताना प्रणाम पक्के लागे छे. जेम कोइ अभव्य छे, ते साधु भेलो रहे छे अने साधु भेलुं खावुं पीवुं करे छे, पण जेवा पोताना प्रणाम होय तेवांज फल लागे छे. वली साधुनी परे कोइ शुद्ध व्यवहार देखी साधुनी बुद्धे वांदे तो तेने साधु वांद्यानां फल लागे के असाधु वांद्यानां फल लागे ? एम पोताना प्रणाम उपर घणी वार्ता छे. बाकीनां आठ दान श्री वीतरागदेवे एकान्त धर्ममां पण नथी गण्यां, तेम एकान्त अधर्ममां पण नथी गण्यां. ए आठ दानमां एकान्त धर्म छे के एकान्त अधर्म छे, एम साधुए कांइ पण कहेवुं नही, मौन भाव राखवो. ए दान प्रशंसवां पण नही अने निषेधवां पण नही. एम जाणवुं जे, आगल श्रावके दान दीधां छे तेनां जे फल थयां हशे ते आज पण आपनारने थशे. वली श्री वीरप्रभुना अंतेवासी श्रावके जे कार्य कर्यां, ते जो अनर्थदंड पाप कर्मादान होत तो केम करत ? वास्ते ए करणी निषेधवारुप अथवा पाप कहेवारुप नथी. ए वातनो श्री वीतरागदेवे पण चोखी रीते निर्णय न कर्यो त्यारे आपणने शुं ज्ञान छे ? एनो तो घणो विचार छे. वली सूयगडांग सूत्रना श्रुतस्कंध पहेलाना अध्ययन अग्यारमामां सावद्य दानमां मौन राखवुं कह्युं छे, पण पाप कहेवुं कह्युं नथी. ते गाथाः—

हणंतं णाणु जाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए;
ठाणाइसंति सड्ढिणं, गामेसु नगरेसुवा. ॥ १६ ॥
तहागिरं समारंभं, अत्थि पुन्नंति णोवए;

अहवा नत्थि पुन्नंति, एव मेय महब्भयं. ॥ १७ ॥
दाणठ्याय जेपाणा, हम्मंति तसथावरा;
तेसिं सारक्खणठ्ठाए, तम्हा अत्थिति नोवए. ॥ १८ ॥
जेसिंतं उवकप्पंति, अन्नपाणं तहा विहं;
तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थि तिनोवए. ॥ १९ ॥
जेयदाणं पसंसंति, वह मिछंति पाणीणं;
जेयणं पडिसेहंति, वित्तिछेयं करंत्तिते. ॥ २० ॥
दुहउ वित्तेण भासंति, अत्थिवा णत्थिवा पुणो;
आयरयस्स हेच्चाणं, निवाणं पाउणंतिते ॥ २१ ॥

अर्थः—पुर्ववत्. जुओ प्रश्न बीजो पाने १२९ में.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, गाम या नगरमां गयाथी साधुने कोइ दाननो अर्थी, श्रद्धावंत ग्रहस्थी तथा राजादिक पुछे के, हे स्वामी! हुं तलाव कुवादिक खोदावुं या सतुकारादि दउं तथा पाणीनी परब बंधावुं? ए अनुष्टानमां पुन्य छे के नहि? एवी सावध (आरंभ कारणी) वाणी सांभलीने 'ए अनुष्टानमां पुन्य छे' एम पण साधु न कहे, अने 'तमने पुन्य नथी' एम पण साधु न कहे; कारण के ए बन्ने भाषा महा भयनुं कारण छे. अहीयां तेरापंथी एम कहेछे के, "जो पूर्वोक्त कार्योमां पुन्य होय तो 'तमने पुन्य थशे' एवुं केम न कहे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! दानने अर्थे त्रस स्थावर हणाय, ते जीवोनी रक्षाने अर्थे साधु एम न कहे के, तमने पुन्य थशे; कारण के साधु एम जाणे के, जो हुं ए परब तथा सतुकारादिक दानने प्रशंसीश तो मारा वचनथी त्रसस्थावर-जीवनी घात थाशे, एम जाणीने पुन्य न कहे; पण एम तो नथी कह्युं के, हे साधु! "ए दानमां पाप छे, तेथी तुं पुन्य मत कहीश." जेम श्रावक साधुजीना सामा जाय तेमां निर्जरा कही, पण मेह वरसतां सा-

धुजीने पुछे के, हुं फलाणा साधुजीना सामो जाउं तेमां मने शुं फल थशे ? तेवारे साधुजी जवाबुं कहे नही, मौन राखे. हवे गुरु-देवना सामा जवामां ( विनयमां ) निर्जरारुप लाभ जाणे छे, पण जवाबुं कहे नही; कारण के ते एम जाणे के, मेह वरसतां गुरुदेवना सामा जवामां निर्जरारुप लाभ कहीश तो मारी भाषा-सुमतिमां कसर लागशे, अने जो ना कहीश तो विनय भागशे, एम जाणीने मौन राखे. इत्यादिक सामा आववानी, साधु-साधवी वास्ते जग्या, औषध लाववानी, अने उठी उभा थवानी आज्ञा मागे तो साधुजी मौन राखे; पण ग्रहस्थने आववा जवाबुं कहे नही. तेम ए सावध-दानमां त्रस-स्थावर जीवनी रक्षाने अर्थे, पोसतुकारमां तमने पुन्य छे, एम प्रशंसे नही; अने मागता भीखारीने अंतराय पडे तेथी, तमने पुन्य नथी, एम पण न कहे. जे ए दानने प्रशंसे तेने छकायनी वधनो वंछणहार कहीए; अने जे ए पोसतुकार दानने निषेधे तेने मागता भीखारीनी ( वृत्ति ) आजीवीकानो छेदनहारो कहीए. एम जाणीने साधु ए सावध पोसतुकार दानमां, तमने पुन्य छे अथवा नथी, ए बेमांनी एके भाषा न बोले; मौन राखे. वली ए सावध-दानमां मौन राखवुं कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र सुयगडांग श्रुतष्कंध बीजे अध्ययन पांचमे. ते गाथा ३३ मीः-

दक्खिणाए पडिलंभो, अत्थिवा नत्थिवा पुणो;
णवियागरेज मेहावी, संति मग्गं च वूहए ॥३३॥

अर्थः—द० दाननो प० प्रतिलाभकाले ग्रहस्थने देवा अने लेवा-वालाने लेवा, एवो वर्तमान व्यापार देखी अ० इहां पुन्य छे एम न कहे, कहे तो असंजमनी अनुमोदना थाय. वा० अथवा न० इहां पुन्य नथी ण० एम पण न कहे, कहे तो व्रति छेद थाय. मे० ए कारणे पंडित अ-स्ति नास्ति न कहे. हवे साधु केम बोले ते कहे छे. सं० ज्ञान दर्शन चारित्ररुप म० मोक्षमार्गनी वृद्धि थाय तेम वु० बोले.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां पण एम कह्युं छे के, ए साव-

धदानमां पुछयां थकां "तमने गुण छे अथवा गुण नथी" एम साधु एके वचन न कहे. बुद्धिवंत साधु तो जेम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वधे तेम बोले. ए बन्ने ठामे प्रभुए मध्यस्थ भाव राखवो कह्यो. पुन्य, पाप के, मिश्र, एके न कहेतां मौन राखवुं कह्युं. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, पुछयां थकां मौन राखे, पण मनमां शुं जाणे? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! सूत्रमां प्रभुए जे वस्तुनो परमार्थ कह्यो होय तेज प्रकार कहेवो, अने सूत्रमां ज्यां प्रभुए मौन राखवानुं कह्युं होय त्यां मौन राखवो; अने मनमांतो एम जाणे के, जेटली अनुकंपा शुभजोग छे तेटलो रुडो पुन्यनो भाग जाणवो, अने जेटली हिंसा अशुभजोग छे तेटलो भुंडो पापनो भाग जाणवो.

तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के "पोसतुकारमां तथा सावधदानमां शुभजोगनुं पुन्य अने हिंसानुं पाप, ए बंन्ने वात केम श्रद्धोछो? कांतो पुन्य श्रद्धो के पाप श्रद्धो." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुने कोइए उघाडे मोंढे बोलतां, वायुकायना असंख्यात जीवनी घात करतां उलटभावथी दान दीधुं. तेने शुं थयुं? धर्म के पाप ते कहो. वायुकायना जीव मुआ तेनुं पण धर्म अने उलट भावे दान दीधुं तेनुं पण धर्म? के वायुकायना जीव मारीने दान दीधुं तेमां पाप? तेवारे तेरापंथी पण कहेछे के "वायुकायनी हिंसा थइ तेतो पाप, पण उलट भावे दान दीधुं तेमां हिंसानो भाव नथी तेथी धर्म घणुं छे." त्यारे हे देवानुप्रीय! ए दानमां पण हिंसानुं तो पाप लागशे, पण शुभजोगनुं अने अनुकंपानुं पाप केम कहोछो? ए दानमां हिंसा तो छे, अने अनुकंपा शुभजोग पण छे. तेथी एकान्त पुन्य अथवा एकान्त पाप, एम एकान्त वचन न कहेवुं. तेथीज श्री वीतरागदेवे मौन राखवी कही छे. वली दान तो अनेक प्रकारनां छे. कोइमां एकान्त मोक्ष हेतु छे १, कोइमां एकान्त नर्क हेतु छे २, कोइमां पोतपोताना प्रणाम उपर पुन्य पापना फल छे ३, अने कोइमां पात्र कुपात्र उपर पुन्य पापनां फल छे ४, पण दानरुपी समुद्रनो गणधरदेवे पण निकाल नथी कर्यो. यतः—

आकाशे ताराणां संख्या, त्रण संख्याद्ध महि तले;
श्रावणे बिंदुनां संख्या, पात्र संख्या न विद्यते ॥१॥ स्पष्टार्थ.

माटे एम जाणजो जे, एनो विचार घणो छे. श्रीवीतराग वदे ते खरुं.

वली तेरापंथी कहे छे के, साधु विना पुन्यनुं क्षेत्र क्यांय नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधु तो धर्मनुं पुन्यनुं क्षेत्र छेज तेमां शुं कहेवुं? पण बीजाने दीधाथी पोताना अनुकंपा भावे शुभ जोगथी कदाचित गुण थाय तो ना कहेवाय नही. वली साधु विना पुन्यना क्षेत्रनी ना कहे तेने पुछीए के, साधु तो साडीपचीस आर्य देशमां छे. तेमां तो नव प्रकारे पुन्य निपजे; पण अनार्य क्षेत्रना लोकोने नव प्रकारे पुन्य निपजे छे के नहि? जो निपजे तो केवी रीते निपजे;? केमके त्यां साधु तो नथी, अने बीजाथी तमे पुन्य मानता नथी. हवे अनार्य देशमां नव प्रकारे पुन्य कइ रीते थाय? त्यां अढार प्रकारे पाप तो निपजे छे, पण पुन्य केटला प्रकारे निपजे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "नव प्रकारे पुन्य निपजे एवा तो त्यां (अनार्य देशमां) पात्र नथी; पण मन, वचन, कायाना जोग शुभ वर्तें, तेथी पुन्य निपजे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! अढार प्रकारे पाप तो सर्व जगतमां छे, पण नव प्रकारे पुन्य एक आर्य-क्षेत्रमां ज छे, एवुं तमे कया सूत्रथी कहो छो ते पाठ अमने देखाडो; अने अनार्य-क्षेत्रमां त्रण जोग संबंधीआ पुन्य छे, शेष नथी ते पण सूत्रपाठ अमने बतावो. वली तमे कहो छो के, अनार्य-क्षेत्रमां जोग भला प्रवर्तें तेनुं पुन्य छे शेष नथी. त्यारे जीव उगारवाना प्रणाम अने मरताने अनुकंपा आणीने दान देवाना प्रणाम, ए करणीमां कयुं ध्यान, कइ लेश्या अने कया प्रणाम? शुभ के अशुभ ते कहो. साधुश्रावकना दानमां पुन्य होय तेवुं तो नथी; पण अनुकंपा आणीने दुर्बलने मरता देखीने दान आपे, तेमां शुभ जोग छे के अशुभ जोग छे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "सावजदान (जीवहिंसा सहित) मां तो तमे पण मौन राखवी कही कहो छो, पण निर्वद्य

रोटी, शेक्या चणा, सिरणी (मिठाइ) अने प्रासुक (उनुं) पाणी, मागता भीखारीने अनुकंपा आणीने आपे, तेमां कोइ ठेकाणे सूत्रमां गुण कह्यो होय तो बतावो." तेनो उत्तर- हे देवानुप्रीय! सूत्रमांतो प्रासुक दानमां तथा अनुकंपा दानमां ठाम ठाम गुण कह्यो छे, पण तमारा सरखा अद्रष्ट-कल्याणीकोनी द्रष्टीमां आवतुं नथी. प्रथम तो ठाणायांग सूत्रना नवमा ठाणाना पहेला उद्देशामां नव प्रकारे पुन्य कह्युं छे. ते पाठः—

नव विहे पुन्ने पं० तं० अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ वत्थपुन्ने ३ लेणपुन्ने ४ सयणपुन्ने ५ मणपुन्ने ६ वयपुन्ने ७ कायपुन्ने ८ नमोकार पुन्ने ९ ॥

अर्थः—न० नव वि० प्रकारे पु० पुन्य पं० परुप्युं तं० ते कहे छेः- अ० पात्रने विषे जे अन्नादिक देवुं तेथी तीर्थंकरनामादि पुन्य-प्रकृतिनो बंध, ने तेथी अनेराने देवुं ते अनेरी पुन्य प्रकृतिनो बंध. १ पा० पाणी पुन्य. २ व० वस्त्र पुन्य ३ ले० घर. ४ स० संथारो. ५ म० गुणवंत उपर हर्ष. ६ व० वचननी प्रशंशा. ७ का० पर्युपासना (सेवा). ८ न० नमस्कार पुन्य उक्तंच. ९.

अन्न पानं च वस्त्रं च, आलयं शयनाशनं;
शुश्रुषा वंदनं तुष्टि, पुन्यं नव विध स्मृतं ॥ १ ॥

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां श्री वीतरागदेवे एमतो नथी कह्युं के, एक साधुनेज दीधे पुन्य बंधाय. अहीं तो समचय कह्युं छे के, अन्नदीधे पुन्य, पाणीदीधे पुन्य, जग्यादीधे पुन्य, इत्यादिक नव प्रकारनां पुन्य कह्यां छे. साधुजीने दीधां तीर्थंकर गोत्रादि पुन्य प्रकृति बंधाय, अने अनेराने दीधे अनेरी पुन्य प्रकृति बंधाय. हवे पुन्यनी बेतालीस प्रकृति छे. तेमां साधुजीने दीधाथी तो तीर्थंकरादिक प्रकृति बंधाय अने अनेराने दीधाथी अनेरी पुन्यप्रकृति बंधाय. शातावेदनी पंचेंद्रिनी जात, मनुष्यनी गति, मनुष्यनुं आयुष्य, त्रस नाम, बादर नाम अने प्रजाप्त नाम इत्यादिक पुन्यप्रकृति बंधाय. हवे तमे कहोगे के,

साधु विना बीजा कोइने दीधे पुन्य न बंधाय. त्यारे साधुने दीधां तो तीर्थंकरादिक पुन्यप्रकृति बंधाय एम कह्युं छे; पण बाकीनी पुन्यप्रकृति केहेने दीधां बंधाय ते कहो. वली तिर्यंचनुं शुभ दीर्घ आयुष्य पुन्यप्रकृतिमां कह्युं छे. ते तमारा साधुने दीधाथी ऊंट, घोडा, हाथी प्रमुख तिर्यंच थाय के बीजाने दीधाथी थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी पण सीधुं कहेछे के "साधुने समद्रष्टी श्रावक दान आपे, तेथी विमानीक देवतानुं आयुष्य बंधाय, तथा शातावेदनी ऊंच गौत्र इत्यादिक शुभ पुन्यप्रकृतिओ बंधाय; पण साधुने दीधां तिर्यंचनुं आयुष्य तो बंधाय नही." तो हे देवानुप्रीय ! जुओ ! ए तिर्यंचादिकनुं आयुष्य, इत्यादिक पुन्यप्रकृति अनेराने दीधां बंधाय के नही ? अन्न-पुन्ने इत्यादिक अकेका प्रकारथी बेतालीस पुन्यप्रकृति बंधाय के नही ? न्यारी न्यारी अकेका प्रकारथी बंधाय एम सूत्रमां कह्युं होय तो बतावो. अहीं तो टीका तथा टबामां कह्युं छे के, साधुने दीधाथी तीर्थंकर नामादिक प्रकृति बंधाय, अने अनेराने दीधाथी बेतालीस मांहेली अनेरी पुन्यप्रकृति बंधाय. साधुनेज दीधे पुन्य बंधाय, अने बीजाने दीधे पुन्य न बंधाय, एवुं कोइ ठेकाणे ठाणायांगनी टीकामां अथवा टबार्थमां कह्युं होय तो बतावो. तमे एवा पुरातन आचार्यनी कीधेली टीका तथा टबार्थ उत्थापीने कहोछो के "एक साधुनेज दीधां पुन्य बंधाय अने अनेराने दीधां पुन्य न बंधाय, एकान्त पाप लागे." एवा मनमां आवे तेवा खोटा अर्थ करीने अनंत संसार केम वधारो छो ? वली साधु विना पण दान देवामां गुण चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनीराज पासे बताव्या छे. तेनी शाख सूत्र रायप्रशेणी. ते पाठः—

तं जइणं देवाणुप्पिया पयसीसरन्नो धम्म माइक्खेवा बहु गुणत्तरं फलं होवा. तेसिं बहुणं समण माहण भिक्खूयाणं तंजइणं देवाणुप्पिया पएसिस्स बहुणं गुणत्तरं होवा जणवयस्स. १ अर्थः—जुओ पाने १२२.

भावार्थः—हवे जुओ ! चित्तप्रधान सरीखो श्रावक, जैन मार्गनो तथा नव तत्वनो जाण, तेणे केशीश्रमण मुनीराजकने विनंती करी के, हे स्वामी ! तमे प्रदेशीराजाने धर्म संभलावो तो श्रमण शाक्यादिकने, ब्राह्मणने अने मागता भिखारी भिक्षुकने घणो गुण थाशे. एम सूत्र पाठमां कह्युं. हवे श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुकने शो गुण थशे कह्यो ते कहो. शुं प्रदेशीराजा समज्याथी "श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुक तरी जाशे" ए गुण कह्यो के "राजाप्रदेशी समज्याथी श्रमण ब्राह्मण भिक्षुकने भिक्षा सहेलाइथी मलशे" ए गुण कह्यो ? तमे मतनो कदाग्रह छोडीने विचारो. ए पाठनुं साचुं रहस्य तो एम देखाय छे के, पहेलां प्रदेशीराजा नास्तिक मतनो ( मिथ्यात्वि ) हतो त्यारे परलोक, पुन्य, पाप मानतो न होतो, तेमज धनने सार जाणीने संचय करतो, पण दान पुन्य करतो नहोतो. तेथी चित्तप्रधाने केशीश्रमणने विनंती करी के, हे स्वामी ! प्रदेशीराजाने धर्म संभलावीने समजावो तो, द्रव्य अस्थिर जाणे, परलोक, पुन्य पाप माने, अने उदार चित्त थाय तेथी समण ब्राह्मणादिकने दान आपे, अने ए समण ब्राह्मण भिक्षुकने भिक्षा सोहेली मले. ए गुण थाशे एम कह्युं; पण जो चित्तप्रधाननी तमारा सरखी श्रद्धा होत, ने दान आपवामां पाप मानतो होत तो एम कहेवुं जोइए के, हे स्वामी ! राजा प्रदेशी असंजतिने तथा श्रमण ब्राह्मणादिकने दान आपीने पाप करे छे, माटे आप तेने धर्म संभलावीने समजावो के, आजपछी असजंति अव्रतिने दान आपे नही, ने एवुं पाप करे नही „ तेम कहेवुं जोइए; पण तमारा सरखी श्रद्धा चित्तप्रधानना नहोती. तेमज केशीश्रमण मुनीराजनी पण तमारा सरखी श्रद्धा नहोती. जो होत तो चित्तप्रधानने एम केहेत के "हे चीत्त ! तमे अवळुं समजाववानी विनंती केम करोछो ? हुं तो समण ब्राह्मणादिकने दान देवामां राजाप्रदेशीने पाप सर्धावीश, के आज पछी एवुं पाप करे नही;" पण केशीश्रमणनो तथा चित्तप्रधाननी दानमां पाप मानवानी तमारा सरखी श्रद्धा नहोती. वळी केशी-

मुनीराज आगल प्रदेशीराजा श्रावकनां बार व्रत अंगिकार करी वंदणा नमस्कार करीने घेरे जवा लाग्या, तेवारे केशीश्रमण मुनीराजे कह्युं के "हे राजाप्रदेशी! तमे हमारी पासे रसीलो धर्म पाम्याछो ते धर्मने विषे रमणिक रहेजो. अरमणिक थशो मत." पछी इक्षु क्षेत्रादिकनां चार दृष्टान्त दीधां. पछी प्रदेशीराजाए कह्युं के, हे स्वामी! अरमणिक नहीं थाउं, पण ए रीते रमणिक रहीश. ते रीतमां कह्युं के, "श्रमण ब्राह्मण अने भिक्षुकने ( मागता भिखारीने ) दान दइशुं अने श्रावकनां बार व्रत चोखां पालीशुं." एम केशीश्रमण मुनिराजने कह्युं. ते रायप्रश्रेणी सूत्रनो पाठः—

अहणं सेयंविया पामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि. एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि. एगं भागं कोठागारे छोस्सामि. एगं भागं अंतेउरं दलइस्सामि. एगेणं भागं महइमहालियं कुडागारसालं करिस्सामि. तछणं बहु पुरिसेहिं दिणभत्ति भत्तवेयणेहिं विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता बहुणं समण माहण भिक्खूयाणं पंथिये पहियाणय परिभायमाणे २ बहुहिं सीलवय पच्चक्खाण पोसहो ववासेहिं जाव विहिरिस्सामि त्तिकट्टु जामेव दिसं पाउभूए तामेव दिसिं पडिगए. तत्तेणं पएसिराया कल्लं पाउ जाव तेयस्सा जलंते सेयंविया पामोक्खाइं सत्तगाम सहस्साइं चत्तारि भाए करेइ. एगंभागं बलवाहणस्स दलयइ जाव कुडागारसालं करेइ. तछणं बहुहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता बहूणं समणं माहणाए जाव परिभायमाणे विहरइ॥

अर्थः—अ० हमणांथीज हुं से० स्वेताम्बिका नगरी पा० प्रमुख आदी स० सात हजार गाम मारां खालसानां छे, च० तेना चार भा०

भाग क० हुं करीश. तेमां ए० एक भा० भाग व० हाथी घोडा आदिक वाहनने द० दइश. ए प्रथम भाग. ए०एक भाग को० कोठार (भंडार) ठो० निमित्ते मुकीश. ए बीजो भाग. ए० एक भाग अं० अंतेउरने द० देइश. ए त्रीजो भाग. ए० एक भा० भागनी म० घणीज मोहोटी कु० (कुटागार ) दानशाला क० मंडावीश. त० तिहां व० घणा पु० पुरुषने दि० दिधुं छे जेने भरण पोषणादिक भ० भात जमणरुप वेतन (चाकरी) से तेनी पासे वि० विस्तीर्ण अ० अन्न, पाणी, खादीम, सादिम, उ० निपजावीने ब० घणा स० श्रमणने (पांच प्रकारना संन्यासी योगीने) मा० ब्राह्मणने भि० भीखारीने पं० पंथी (मार्गे चाले ते) ने प० पहुणादिकने ( महेमानने ) प० ए वहेंचो देशुं. ब० घणा सी० स्वभाव, आचार, व्रत प० पचखाण नवकारसी प्रमुख पो० पोषध व० उपवास साथे जा० यावत् वि० विचरशुं. ति० एम कहीने जा० जे दि० दिशाथी पा० आव्यो हतो ता० ते दिशाए प० पाछो गयो. त० तेवार पछी प० प्रदेशीराजा क० काल पा० प्रभात थयो जा० जावत् ते० तेजे करी ज० जाज्वल्यमान सूर्य उग्यो. से० स्वेतांबिका नगरी पा० प्रमुख स० सात सहस्र गांम प्रत्ये च० चार भा० भाग क० करे, करीने ए० एक भाग व० हाथी, घोडा, रथ, निमित्ते द० दे, जा० जावत् पूर्ववत् दानशाला क० करे. त० तीहां ब० घणा पु० पुरुषने जा० यावत् असनादिक चार आहार उ० निपजावीने ब० घणा स० संन्यासी योगी प्रमुखने मा० ब्राह्मणने जा० जावत् पं० भिक्षाचरादिकने वहेचीदेतोथको वि० विचरे छे.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, हे स्वामी! मारे सात हजार गाम खालसानां छे तेना चार भाग करीश. तेमां एक भाग तो हाथी घोडा निमित्ते, एक भाग राणीओ निमित्ते तथा एक भाग खजाना निमित्ते राखीश, अने एक भाग समण शाक्यादिक, ब्राह्मण तथा मागता भिखारीने दान देवा निमिते राखो असनादिक चार आहार निपजावीने दांन दइश : तथा श्रावकनां बारे व्रत चोखां पाळीश; पण असमणिक नही थाउं: ए बे बोल दान अने व्रत रमणिक

पणामां बताव्या. हवे जुओ ! हाथी घोडाने आगल पण पोषतो हतो, राणीओने पण पोषतो हतो अने खजानामां पण नाखतो हतो. ए त्रण काम तो आगल ज्यारे नास्तिक मतमां (मिथ्यातपणामां) हतो त्यारे पण करतो हतो, अने पहेलां परलोक, पुन्य पाप नहोतो मानतो तेवारे दान नज देतो देखाय छे. तेथी चित्तप्रधाने केशीश्रमण मुनिराजने कह्युं के, हे स्वामी ! तमे प्रदेशीराजाने समजावो तो समण, माहण, भिक्षुकने भिक्षा सोहेली मले. ए लेखे पहेलां भिखारीने दान नहोतो देतो एम जणाय छे. ए काम तो राजाप्रदेशीए धर्ममां समज्या पछी कर्युं जणाय छे; कारण के धनने अस्थिर जाणी उदार चित्ते पांचमा गुणठाणानी करणी जाणी दान दीधुं छे. ते गुण जाण्या विना एवुं पाप केम करे ? डाह्या हो ते विचारी जो जो. वली आठमा व्रतमां अनर्थ दंड पाप करवाना राजाप्रदेशीने त्याग छे. जो दान देवामां पाप होय तो राजाप्रदेशी धर्ममां समज्या पछी पाप केम करे ? हाथी घोडाने पोषवा, राणीओने पोषवी अने खजानामां धन नाखवुं, ए त्रण कामतो आगल पण करतो हतो, अने एतो अर्थ-पापमां छे; पण दान देवामां पाप होय तो, राजाप्रदेशी धर्ममां समजीने ए अनर्थादंड पाप जाणीने नवुं केम करे ? ए जाणीने अनर्थदंड पाप करे तो तेनुं आठमु व्रत केम रहे ? डाह्या हो ते वीचारी जो जो.

वली पहेलांथीज केशीश्रमण मुनीराजे कह्युं के, हे प्रदेशीराजा ! तुं अरमणिक थाजे मत. तेवारे राजाप्रदेशीए कह्युं के, हुं श्रमण, ब्राह्मण, मागता भिखारीने दान दइश; लीधां व्रत चोखां पालीश अने अरमणिक थइश नही. ए बे बोल केशीश्रमण मुनीराजना मोढा आगल रुबरुमां कह्या; पण केशीश्रमण मुनीराजे तेने वर्ज्यो नहि. तमे हेतु दृष्टान्त कुयुक्ति मेलवीने लोकोना हृदयमांथी दाननी श्रद्धा काढोछो, तेम जो केशीश्रमण मुनीराजनी दान देवामां पाप मानवानी श्रद्धा होत तो, अग्यार दृष्टान्त आगल दीधा तेम एक दृष्टांन्त वली देत के, हे भुंडा ! धर्म पामीने आगलनुं पाप छोडे छे तो, ए दान देवानुं नवुं

अनर्थ पाप केम करेछे ? वली तमे कहोछो के, " देती लेती वेला मौन रहेवुं, ने पछी पाप जलखावी देवुं. " तो हे देवानुप्रीय ! ज्यारे केशीश्रमण मुनीराजने प्रदेशीराजाए दान देवा बाबतमां निवेदन कर्युं, ते वखते राजा केहेने दान दइ रह्यो हतो अने कोण लइ रह्यो हतो के जेथी श्री केशीश्रमण मुनीराजे निषेध न कर्यो ? पण एम जाणजो के, श्री जैनमार्गमां प्रत्यक्ष अने परोक्ष पूर्वोक्त दानविषयमां मुनीए मध्यस्थ रहेवुं. जो एम न होय तो एटलां दृष्टान्त आप्यां तेम एक दृष्टान्त वली दइने दान देवामां पाप केम न सरधाव्युं ? पण जाणजो जे श्री वीतरागदेवनी, केशीश्रमण मुनीराजनी अने प्रदेशीराजानो तमारा सरखी श्रद्धा नहोती के, दानमां पाप मानी निषेधे. वली तुंग्या नगरनीना श्रावक परमविवेकी, जैन मार्गना जाण, प्रभुना हस्त दिक्षित लघु पुत्रसमान, तेमनो आलावो वर्णव्यो; त्यां दान आश्री त्रण आलावा कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक बीजे उद्देशे पाचमे. ते पाठः—

तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगियानामं नयरी होत्था वणउ. तीसेणं तुंगियानयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसि भाग पुप्फवइएणामं चेइए होत्था वणउ. तत्थणं तुंगियाएनयरिए बहवे समणोवासगा परिवसइ अढा दित्ता विच्छिण विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा बहु धण बहू जाय रुवयवया आउग पउग संपउत्ता विच्छिड्डिय पउर भत्तपाणा बहुदासि दास गो महिस गवेलग प्पभूया बहु जणस्स अपरिभूया. अभिगय जीवाजीवा उवलद्ध पूणपावा आसव संवर णिज्जर किरिया हिगरण बंध मोक्ख कुसला १ असहेज्जा देवासुर नाग सुवण जक्ख रक्खस किन्नर किंपुरुष गरुल गंधव महोरगादिएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा निग्गंथेपावयणे निस्संकिया

निक्कंखिया निवित्तिगिच्छा लघठा गहियठा पुच्छियठा अ-भिगयठा विणच्छियठा ॥ ५ ॥ अठि मिंजपेमाणू रागरत्ता अय माउसो निग्गंठे पावयणे अठे अयं परमठे सेसेअ-णठे ओसियफलिहा अवंगुय-दुवारा चियत्तं तेउर परघर प्पवेसा बहुहिं सीलवय गुणवय वेरमणं पच्चखाण पोसहो-ववासेहिं चाउद्दसठ मुदि्ठ पुणमासिणिसु पडिपुणं पोसह-सम्मं अणूपालेमाणा समणे निग्गंथे फासु एसणिजेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वछ पडिग्गह कंबल पाय-पुछणेणं पीढ फलग सेजा संथारएणं उसह भेषजेणं प-डिलाभे माणा अहा परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावे माणे विहरइ ॥

अर्थः—ते० ते काले ( अवसर्पणी चोथा आराने विषे ) ते० ते स० समयने विषे तुं० तुंग्यानामे न० नगरी हो० हती. तेनुं व० वर्णन चंपानी पेरे जाणवुं. ती० ते तुं० तुंग्यानगरीनी ब० बाहार उ० उत्तर पूर्वनी वच्चे इशान खुणने विषे पु० पुष्पवतिनामे चे० चैत्य ( यक्षाय-तन ) हो० हतुं. व० तेनुं वर्णन चंपानगरीनी परे जाणवुं. त० त्यां तुं० तुंग्यानगरीने विषे ब० घणा स० साधुना शेवक प० वसेछे. अ० धनधा-न्यादिके परिपूर्ण दि० दीपता वि० विस्तार सहित वि० घणा छे भ० भुवन ( घर ) स० शयन, आसन जा० गाडां वा० वाहन, घोडा, आदि ब० घणा ध० धनादिक ब० घणुं अणघडयुं सोनुं रुपुं आ० वमणा त्र-गणानो प० व्यापार सं० तेणे करी सहित छे. वि० घणा लोक जमतां प० प्रचुर ( घणा ) अन्नादिक जुठा नखाय छे भ० भात पाणी; तथा ब० घणी दा० दासी दास गो० गाय म० भेंश ग० बकरी गाडर प्रमुख प० घणा छे जेने. ब० घणा ज० लोकोथी पण अती धनवंत माटे अ० पराभव्या ( गांज्या ) जाय नहीं. ए लोकीक गुण कह्या. हवे लोकोत्तर

गुण कहेछे. अ० जाएया छे जेणे जी० जीव अजीव. उ० उंलख्या छे पु० पुन्य पापनां फल आ० आश्रव सं० संवर णि० निर्जरा कि० क्रियादिकना पचीस भेद अ० गाडी यंत्रादिक शस्त्र अधिकरण बं० प्रकृत्यादि बंध, चार भेदे मो० मोक्षना भेदना जाणपणामां कु० कुशल छे. अ० कोइनी साज वंछे नही. दे० देवता वैमानिक अ० असुरकुमार ना० नागकुमार, भवनपति विशेष सु० ज्योतिषि ज० जक्ष र० राक्षस किं० किन्नर ( वाणव्यंतरा ) किं० गरुड किंपुरिष, ए व्यंतर नीकायना देव जाणवा. ग० गरुडनुं चिन्ह छे जेने, एवा सुवर्णकुमार भवनपति विशेष गं० गंधर्व म० महोरग देवता, ए पण व्यंतर विशेष जाणवा. ए आदि दे० देवताना ग० समुह नि० निर्ग्रंथ साधुनां पा० वचन सिद्धान्तथी अ० अतिक्रमावी न शके. एटले श्रावके निर्ग्रंथना प्रवचन मजबुत करी ग्रह्या छे तेमज जवाब देवा समर्थ छे. एतावत्ता जैनमार्गने विषे नि० शंकारहित नि० अनेरामतनी वान्छा न करे नि० साधुनी डुगंछा न करे तथा फलनो संदेह न आणे. ल० सिद्धान्तनो अर्थ लह्यो छे ग० अर्थ ग्रह्या छे भगवंतना मुखथी पु० पुछीने निर्णय कीधा छे अ० हेतुथी जाण्या छे वि० वारंवार पुछीने अर्थ निर्णय कर्या छे. अ० हाड मांनी मिं० भींजा ( धातु ) पे० धर्मरुपी प्रेमरंथी रंगाणी छे. अ० पोताना सज्जन परिवार गुमास्ता विगेरेने नि० निर्ग्रंथ प्रवचनरुप मार्ग बतावे छे. अ० एज अर्थने ए० एज परमार्थ, से० शेष संसाररुप सर्व अनर्थ छे. उ० हृदय फ० फटकनी परे निर्मल छे, अ० सदाय घरनां बारणां दान देवा वास्ते उघाडां राखे छे, चि० छांड्या छे अं० अंतेउर प० पराया घरमां प० प्रवेश करवो. ब० घणा सी० शीलव्रत गु० गुणव्रत वे० पापनां प० पच्चखाण कर्यां छे. पोसो उपवास सहित चा० चौदस अष्टमी मु० अमावास पु० पुनम प० प्रतिपूर्ण पोसा सम्यक् प्रकारे अ० आज्ञासहित पालता थका स० साधु नि० निर्ग्रंथने फा० प्रासुक (अचेत) ए० शुद्ध (४२ दोष रहित ) अ० अन्न पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम एम चारे आहार व० वस्त्र प० पात्र कं० कांबलो पा० पायपुछणुं

तथा उंघो गुछो पी० पीढ, आसन फ० उंढींगणनुं पाटीउं से० वस्तु स्थानक सं० मोटो संथारो ज० औषध ते एक वस्तु जे० घणां औषध जेलां होय ते. ए चौद प्रकारनुं दान प० प्रतिलाजता (देता) थका अ० जेवां प० आदर्यां छे तेवां त० तप कर्म क्रियाए करी अ० पोताती आत्माने जा० (जावता थका) देव, गुरु, धर्म एम त्रण तत्व अनुमोदता थका वि० विचरे छे.

जावार्थः—हवे जुर्ज! आ पाठमां पहेलां तो घरनी संपदा, रिद्धि, मातबरी वर्णवी; पछी श्रावकना नव तत्वनुं जाणपणुं तथा ज्ञान वर्णव्युं; पछी समकितनी गाढाइ (दृढता) वर्णवी; पछी पांचमा गुणठाणानी श्रावकनी मातबरी रहेवानी उदार चीत्तनी करणी वर्णवी; अने पछी श्रावकनां बारे व्रत वर्णव्यां. हवे घरनी मातबरीमांतो 'विछिन्निय-पउरजत्तपाणा' एवो घरनो आचार छे. अन्नपाणी पुष्कल निपजे छे, ने खातां पीतां वध्युं होय ते बहार नांखी दे छे; ते कागडा, कुतरां, पशु पक्षी प्रमुख खाय छे. ए रीते विस्तीर्ण जात पाणी रंधाय छे. पछी ज्ञान ने समकितना गुण वर्णव्या. पछी पांचमा गुणठाणानी करणी वर्णवी तेमां कह्युं के, फटक रत्ननी पेरे हृदय निर्मलां छे अने जिक्षुकादिकने दान देवा सारु घरनां कमाड उघाडां राखे छे. पछी बारे व्रत वर्णव्यां, तेमां त्रीजो बोल बारमा व्रतमां साधुने दान देवानो न्यारो कह्यो छे. जो दान देवामां पाप-कर्मादान जाणे तो दानदेवा सारु घरनां बारणां उघाडां केम राखे?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए अजंगद्वार तो साधुने प्रवेश करवा सारु छे, केमके बंध बारणे साधु आवे नही ते माटे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुनुं दान तो आगल बारमा व्रतमां न्यारुं वर्णव्युं छे अने ए अनुकंपा अथवा उचित्त दान तो पांचमा गुणठाणानी श्रावकपणानी करणीमां वर्णव्युं छे. वली अम्मड श्रावकनो जीव दृढपइनापणुं पामसे, तेनां घर उववाइ सूत्रमां वखाण्यां. त्यां 'विछन्निय जत्तपाणा' ए गुण घरना आचारनो छे ते तो कह्यो; पण अजंगद्वार न

कह्यो. एटले श्रावकपणुं न्होतुं त्यां सुधी तो आफे बारणे जमे तोपण अटकाव नही, पण श्रावकपणुं पाम्यो ते दीवसथी अन्नंगद्वार पण केफे वलग्यो. श्रावक जैन मार्ग पाम्या ते दिवसथी उदारपणुं अधिक अधिक वध्युं, अने द्रव्य अस्थिर जाण्युं तेथी अधिक अधिक दान देवा लाग्या. वली तेरापंथी कहेछे के, अन्नंगद्वार साधुने माटे राखे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुनुं दान तो आर्य-क्षेत्रमांज छे; कारण के अनार्य-क्षेत्रमां साधु नथी तेथी त्यां तेनुं दान पण नज होय. हवे कोइ श्रावक अनार्य क्षेत्रमां रहेछे, तेने साधुने दान देवानो तो समय न आवे. त्यारे श्रावकने अन्नंगद्वार केम निपजे ते कहो. वली आर्य-क्षेत्रमां कोइ गाम नगरमां साधुए चोमासुं नथी कर्युं, अने बीजो कोइ साधु चोमासामां आवे नही. हवे ते श्रावकने अन्नंगद्वार केम निपजे? वली उत्तम कुली श्रावकने घरे तो साधु वोहोरे छे, पण अधर्म कुलमां साधु वोहोरता नथी. हवे अधर्मकुली श्रावकने अन्नंगद्वार केम निपजे?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, एतो तुंगीयानगरीना उत्तम कुलना श्रावक छे तेने घेर साधु वोहोरे छे, ते माटे तेने अन्नंगद्वार कह्या छे. तेनो उत्तर. सुयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधमां तथा उववाइजी सूत्रमां, गाम, नागर, पुर, पाटण, जावत् सोल ठेकाणाने विषे रहे एवा सर्व श्रावकनी गति जघन्य पहेला देवलोकनी अने उतकृष्टी बारमा देवलोकनी कही, अने तेमने आराधिक कह्या. एवा गुणना धणी श्रावक होय तेनो तुंगियानगरीना श्रावकनी परे पहेलो बोल ऋद्धिनो छोडीने ज्ञान तथा जाणपणुं (सर्व श्रावकनुं) वर्णव्युं, समकितनी गाढाइ वर्णवी, तथा पांचमा गुणठाणानी श्रावकपणानो उदार चित्तनी करणी 'उसियफलहा अवंगुयदुवारा' इत्यादि करणी वर्णवी. पछी श्रावकपणानां बार व्रत वर्णव्यां, त्यां बारमा व्रतमां साधुनुं दान वर्णव्युं तेमां सर्व श्रावकना अन्नंगद्वार कह्या. हवे ए उंच नीच कुलमां जे श्रावक होय ते सर्वे आराधिक होय के नहिं अने ते देवतामां जाय के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के, त्यां तो साधुने दान देवुं कह्युं छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! निशिथ, आचारांग, दसवैकालीक, आदि अनेक सूत्रमां ठामठाम साधुने तो बार कुल टालीने अनेरा नीच कुलनो आहारादिक वोहोरवो तथा ते नीच कुलमां प्रवेश करवो पण वर्ज्यो छे. तेम ए पण बतावो के, "उत्तम कुल जेमां साधुजी वोहोरे छे ते श्रावकने तो अभंगद्वार छे, अने अधर्म कुल जेमां साधुजी न वोहोरे ते श्रावकने अभंगद्वार नथी." एवो पाठ कोइ सूत्रमां होय तो बतावो. अहीयां सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां तो सर्व नाम मात्र श्रावकने अभंगद्वार कह्या छे; पण उत्तम कुल अथवा अधर्म कुल एके टाल्युं नथी; अने तिर्यंच-श्रावकने दानदेवानी योग्यताइ नथी तेथी तिर्यंच-श्रावकने अभंगद्वार उववाइ सूत्रमां कह्या नथी. ए न्याये अधर्म कुलमां साधुजी तो वोहोरे नही. तेथी अभंगद्वार अनुकंपा आणी मागता भीखारीने दान देवा सारु राख्युं छे एम स्पष्ट सिद्ध छे. काह्या हो ते वीचारी जोजो. वली भगवती, सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां अभंगद्वारनी टीका तथा टबार्थमां शुं कह्युं छे? ते वीचारी जोजो. वली तेरापंथी कहे छे के, "अभंगद्वार अने साधुनुं दान ए एकज छे." तेनो उत्तर. अम्मडजीश्रावक साधुने तो दान आपे छे, पण तेने अभंगद्वारनो श्री उववाइ सूत्रमां नाकारो कह्यो छे. ते पाठः—

पभुणं भंते ! अम्मडे परिवायए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडिए भवित्ता आगाराउ अणगारियं पवइत्तए? णो इणठे समठे. गो०! अम्मडेणं परिवायगे समणोवासए अभिगय जीवाजीवे उवलधं पुण्णपावे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरंति नवरंग उसिय फलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तं तेउर परघर पवेसी एवं ण वुच्चइ. ॥

अर्थः—प० समर्थ छे भं० हे भगवान् ! अ० अम्मड प० परिव्राजक दे० हे पुज्य ! तमारी अं० समीपे मुं० मुंड भ० थवा ? आ० आ-

गारपणाथी अ० अणगारपणुं प० आदरवा ? उत्तर. णो० नहिं इ० ए अर्थ समर्थ. गो० हे गौतम ! अ० अम्मरूपरिव्राजक स० श्रमणोपासके अ० जाण्या छे जी० जीव अजीवना भेद, उ० लाध्या छे पु० पुन्य पापनां फल, जा० यावत् तुंगीयानगरीना श्रावकनी करणीवत् अ० पोतानी आत्माने भा० भावतोथको वि० विचरे छे; न० एटलुं विशेष उ० बारने विषे भोगल नथी. अ० घर नथी ते माटे उघाडां बार सदाय रहे. अतिथी माटे. चि० प्रतितकारी अंतःपुर प० परघरने विषे जवुं न पडे, अतिथी माटे. ए० ए त्रण बोलनो श्रावकने प्रयोग पडे; पण अम्मडने प्रयोग न पडे. माटे ए त्रण बोल नथी.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां तो अम्मडश्रावकने जीव अजीवनो जाण कह्यो, पुन्य पापनां फल ओलख्यां लाध्यां कह्यां अने 'जाव विहरे' कह्यो. ते जाव शब्दथी तुंगीयानगरीना श्रावकना गुण वर्णव्या तेम अम्मडश्रावकमां सर्व गुणनो पाठ केहेवो. ते निर्ग्रंथसाधुने चौद प्रकारनुं दान देता विचरे छे त्यां सुधी केहेवुं; पण तुंगीयानगरीना श्रावकोना घरनी रिद्धि, संपदा अने मातबरी वर्णवी ते एने नथी. तेथी पेहेलो बोल रिद्धि संपदानो छोडीने 'अभिगय जीवाजीवे' (जाण्या छे जीवअजीवना भेद) ए पाठथी लइने सर्व तुंगीयानगरीना श्रावकना गुणनो आलावो वर्णव्यो तेम वर्णन केहेवुं. अम्मडश्रावकना चार बोलमां एटलुं विशेष के, चोथा बोलमां पांचमा गुणगणानी श्रावकपणाना उदार चित्तनी करणी वर्णवी; तेमां एक तो फटक रत्ननी पेरे हृदय निर्मल, अने दान देवा सारु अभंगद्वार, ए बोल न कह्या; अने एक प्रतितकार्या अंतःपुरमां प्रवेश न करवो अतिथीपणा माटे, ए बे बोल वर्ज्या. बाकी सर्व तुंगीयानगरीना श्रावकनी पेरे आलावो केहेवो. हवे तमे कहो छो के, अभंगद्वार अने साधुनुं दान ए एकज छे. त्यारे अम्मडश्रावकने अभंगद्वार तो वर्ज्या छे, अने साधुने दान देता कह्या छे. तेटला माटे साधुनुं दान अने मागता भीखारीनुं दान जुदुं छे. ए अभंगद्वार तो भीक्षुकना दान माटेज

छे, अने माहापुरुष पधारे तो मोक्षनो हेतु पण थाय. ए सर्व श्रावकोने अनंगद्वार कह्या छे, अने तेउं अनुकंपा-दान मागता नीखारीने देता दीसे छे. पछी फल तो पेला श्रावकने जेवां लाग्यां तेवां हालना श्रावकने पण लागशे. ज्ञानी वदे ते सत्य. वली दानने निषेधे तेंने प्रश्नव्याकरणना बीजा आश्रवद्वारमां जुगबोला तथा त्रीजा आश्रवद्वारमां चोर कह्याछे.ते पाठः—

पम्हिघायए हेउ वित्ति छेइंकरेह मादेह किंचिदाणं सुठुहउ॥

अर्थः—प० हणवा हे० निमित्ते वि० वृत्ति छे० छेद करे, के फलाणाने एक पण ग्रास (कोलीउं) मा० म देशो. किं० कोइने किंचित मात्र दान न देशो. एवां परपीमाकारी वचन बोले तथा वली सावध वचन बोलवानो सु० प्राणातिपात करो, इत्यादिक वचन कहे.

नावार्थः—हवे जुउं ! आ पाठमां एम कह्युं के, वृत्तिनो (आजीवीकानो) छेद करे तथा फलाणाने एक पण ग्रास मत द्यो एम कहे, अथवा कोइने किंचित् मात्र दान देशो नाहिं, एवां वचन कहे तेने जुगबोला तथा चोर कह्या. ए जुउं ! जो दान देवामां पाप होय तो वर्जवावालाने नगवंत जुठा-बोला तथा चोर केम कहे? माह्या हो ते विचारी जोजो. वली त्रीजा आश्रवद्वारमां एम कह्युं छ के, दान दीधाथी गुण थाय. ते गुणनो नाश करे तो चोरी लागे. हवे जो दान दीधामां पाप होय तो दानना गुणनो नाश करे. तेने चोर केम कह्या? माह्या हो ते विचारी जोजो. वली कोइपण सूत्रमां अनुकंपा आणीने डुर्बलने मरता देखी दान आपे तेने पाप कह्युं होय तो पाठ बतावो. तमे एटला सूत्रना पाठ नथापीने खोटा अर्थ करो कुयुक्ति मेलवीने अनुकंपादान केम उठावो छो.

वली तेरापंथी श्रावकोने पण दान दीधामां पाप परुपे छे. एम कहे छे के, श्रावकने मुलायजे नोंतरीने जमाडे ते तो संसारनो व्यवहार छे, तेने दान न कहीये. तेमां कदापी पाप कहे ते तो जाण्युं, पण कोइ श्रावक सामायक तथा व्याख्याननी अंतराय पाडी रसोइ करतो होय, तेने कोइ पुन्यवंत श्रावक रसोइनो आरंन टलावीने, सीधी रसोइ तथा सु-

खकी प्रमुखनी सहाय दइ सामायक करावे तथा व्याख्यान संभलावे तेमां पण पाप कहे छे. एमज कोइने तपस्या करवाना भाव होय ने धारणा (अंतरवारणुं) पारणानी जोगवाइ न होय, तेने सिधी रसोइ दइ तपस्या करावे तेमां पण पाप कहे छे. तेमज सामायक पोसाने वास्ते जग्या, कपडां, नवकारवाली, पुंजणी अने मुहपत्ति आपे तेमां पण पाप कहेछे. पण भगवंते चतुर्विध संघने शाता दीधामां तथा हित वान्छयामां मोटो पुन्यरुप लाभ कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक त्रीजे उदेशे पहेले, सनत्कुमार इंद्रने अधिकारे. ते पाठः—

अत्थिणं भंते! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवरायाणं विवादा समुप्पज्जइ? हंता अत्थि. सेकह मिंदाणं पकरेइ? गो० ! ताहे चेवणं सक्कोसाणां देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसिकरेइ. तएणंसे सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्किसाणेहिं देविंदेहिं देवराइहिं मणसीकएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराइणं अंतियं पाउब्भवइ जंसे वदई तस्स आणा उववाय वयण निद्देसे चिठइ. ❋सणंकुमारेणं भंते! देविंदे देवराया किं भवसिध्धिए, अभवसिध्धिए, सम्मदिठीए मिछादिठीए परितसंसारिए अणंतसंसारिए सुलभबोहिए दुलभबोहिए आराहिए विराहिए चरिमे अचरिमे? गो० ! सणंकुमारेणं देविंदेदेवराया भवसिध्धिए नोअभवसिध्धिए एवं सम्मदिठी परितसंसारी सुलभबोहिए आराहिए चरिमे पसत्थं नेयव्वं. सेकेणठेणं. गो०! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं

❋"सणं कुमारेणं भंते" थी "नो अचरीमे" सुधीनो अर्थ जुओ पाने ५६।

सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्नकामए अणुकंपिए निस्सेयस्सिए हियसुह निस्सेसकामए सेतेणठेणं गो० ! सणंकुमारे देविंदे ज्ञवसिद्धिए जाव नो अचरिमे.❋ सणं-कुमारस्सणं ज्ञंते ! देविंदस्स देवरणो केवइय कालं ठिइ पं० गो०! सत्तसागरोवमाणि ठिइ पं० सेणं ज्ञंते ! ताउ देवलोगाउ आउरकएणं जाव कहं उववज्जिहि? गो०महा-विदेहे वासे सिज्जिहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं ज्ञंते २ त्ति.

अर्थः—अ० ठे ज्ञं० हे ज्ञगवान ! ते० ते स० शक्र अने इशान दे० देवेंद्र दे० देवराजाने मांहोमांही वि० विवाद स० उपजे ? संवाद करे ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम अ० ठे. से० ते केम? इ० विवाद अवसरे विवाद करे तो कोण मटाडे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! ता० तेमज चे० निश्चे स० शक्र अने इशान बन्ने दे० देवेंद्र देवराजा स० सनतकुमार दे० देवेंद्र देवराजा (त्रीजा देवलोकना इंद्र) प्रत्ये म० मनमां धारे के, सनतकुमार आवे तो विवाद मटे इत्यर्थ. त० तेवारे से० ते स० सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा ते० ते स० शक्र अने इशान बंने ए म० मनमां धार्या थका खि० उतावला स० शक्र अने इशान इंद्रनी अं० समिपे पा० प्रगट थाय. जं० जे सनत्कुमार व० कहे (वचन निदेश कहे) त० ते आ० आज्ञा उ० उत्पात व० वचन नि० निर्देशे चि० रहे. एटले ते शक्र अने इशान-इंद्रने जेवी आज्ञा आपे तेवी प्रमाण करे. स० सनत्कुमार ज्ञं० हे ज्ञगवान ! दे० देवेंद्र देवराजानी के० केटला का० कालनी ठि० स्थिति पं० कही ? गो० हे गौतम ! स० सात साग-रोपमनी ठि० स्थिति पं०कही. से०ते सनत्कुमार ज्ञं०हे ज्ञगवान ! ता० ते दे० देवलोकथी आ० आउखुं पुरुं करीने जा० जावत् क० क्यां उ० उ-पजशे ? इति प्रश्न. गो० हे गौतम ! मा० माहाविदेह वा० क्षेत्रने विषे सि० सीजशे, बुजशे, मुकाशे परिनिव्रत थशे जा० जावत् अं० सर्व दुःख-नो अंत करीने मोक्ष जाशे. से० तहत् ज्ञं० हे ज्ञगवंत ! पूर्वे कह्युं ते प्रमाणठे.

भावार्थः—हवे जुवो ! आ पाठमां एम कह्युं के, ज्यारे पहेला अने बीजा देवलोकना इंद्रने युद्ध थाय, त्यारे त्रीजा देवलोकनो सनत्कुमार नामे इंद्र आवीने बन्ने इंद्रने कहे "म करो एवुं काम" एम कहे, तेवारे बन्ने इंद्र तेनुं वचन प्रमाण करे अने तेनी आज्ञा प्रमाणे रहे. वली गौतमे पुछयुं के, त्रीजा देवलोकनो इंद्र भवी छे? इत्यादिक चार प्रश्न पुछया. तेवारे भगवंते कह्युं के, ए भवी छे, समद्रष्टि छे, परित संसारी छे, सुलभ बोधी छे, आराधिक छे अने चरमशरिरी छे. ए छ बोल भगवंते भला कह्या. तेवारे गौतमे पुछयुं के, त्रीजा देवलोकना इंद्र सनत्कुमारनां वचन शक्रेंद्र तथा इशानेंद्र बेउ प्रमाण करे अने वली ते भव्य यावत् चरमशरिरी छे, एवुं पुन्य तेनें साथी बंधाणुं के तेने एवी पदवी मली. तेवारे भगवंते कह्युं के, सनत्कुमार इंद्र, साध साधवी, श्रावक श्रावीका ए चतुर्विध संघना हितनो वंछणहार छे १, सुखनो वंछक छे २, दुःखत्राण एटले क्षुधा, तृषा, उपसर्गादिक दुःखथकी राखणहार छे ३, अने ते संघने दुःखी देखी अनुकंपा दयानो करणहार छे ४. ए चार प्रकारे मोक्षनो वंछणहार छे. एणे चतुर्विध संघनुं हित तथा सुख वान्छयुं, दुःखनुं निवारण वान्छयुं अने अनुकंपा करी तेथी पुन्य बंधायुं. तेथी बन्ने इंद्र तेनां वचन प्रमाण करे छे, अने छ बोल भला कह्या. ए जुवो ! श्री वीतरागदेवे तो श्रावकने सुखशाता दीधानां फल भलां कह्यां छे. तमे पाप कया न्याये कहोछो ? तेवारे तेरापंथी कहेछे के, ए पुछातो इंद्रना भवनी छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इंद्रना भवनीज पुछा छे, तोपण अहीं तो गौतमे पुछयुं छे के, हे भगवंत ! एवां पुन्य बंधायां अने छ बोल भला कह्या ते कइ करणीना प्रयोगथी ए अर्थ कह्यो ? ते उपरथी भगवंते कह्युं के, चार संघनुं हित सुख वान्छयुं तेथी पुन्य बंधायां. त्यारे मनुष्य श्रावक चार संघनुं हित सुख वान्छशे, दुःख निवर्तावशे अने चतुर्विध संघनी अनुकंपा करशे तेने भलां फल केम नहीं लागशे ? ते विचारो.

वळी तेरापंथी, श्रावकना खावा पीवा, कपडां अने घरेणां, सर्वने अव्रतमां गणे छे अने कहे छे के, पोते सेवे तो पाप, बीजा पासे सेवरावे तो पाप, अने सेवताने जलुं जाणे तेमां पण पाप, एम कहे छे. ते उपर मतना लीधे सूत्रनां जुठां नाम लइने खोटी जोडो करी छे. ते ढालः—

श्रावकनो खाणो पीणो ने गेहणो, अव्रत मांही घाल्योरे;
सुयगडांग ने उववाइ सूत्रमां, पाठ उघाडो चाल्योरे.
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

ए जुओ ! श्रावकना खावा पीवा अने घरेणांने सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रनां जुठां नाम लइ अव्रतमां कहे छे तेना उत्तरनी ढालः—

खाणो पीणो गेहणो ने कपडो, ए तो पुद्गल होइरे;
व्रत ने अव्रत परणामारी, बहु सूत्र ल्यो जोइरे;
चतुर विचार करीने देखो ॥ १ ॥

खान पान ने गेहणो कपडो पुद्गल, एही अव्रत थायोरे;
तो भरत मरुदेवी आभर्ण पहेर्यां, केवल ज्ञान केम पायोरे.
चतुर विचार करीने देखो ॥ २ ॥

हवे जुओ ! खान पान घरेणुं ने कपडुं, ए तो अठ-फरशी रुपी पुद्गल छे, अने व्रत अव्रतने तो तेरापंथीना बनावेला तेर द्वारमां पण अरुपी कह्युं छे. तेमज सूत्रमां पण ठामठाम जीवनी आशा तृष्णा अने अत्यागभावना प्रणामने अव्रत कह्युं छे. छतां तेरापंथी अन्न-वस्त्रादिक रुपी पुद्गलने अव्रतमां बतावे छे. माटे तेमने पुछवुं के, हे देवानुप्रीय ! "मारुदेवीमाता हाथीना होदा उपर घरेणां कपडां पेहेरीने बेठां, तेमने केवलज्ञान उपन्युं सूत्र ठाणायांगमां कह्युं छे; अने भरतमाहाराजने पण घरेणां कपडां पहेर्यां केवलज्ञान उपन्युं छे अने ते पछी घरेणां कपडां उतार्यां एम सूत्र जंबुद्विपपन्नत्तीमां कह्युं छे. ए घरेणां कपडां पहेर्यां थकांने अव्रतमां केवलज्ञान केम उपन्युं ?" तेवारे तेरापंथी कहेछे के "घरेणां कपडां तो रुपी पुद्गल छे. ए तो अव्रत नथी, पण तेना उपर ममतभाव

प्रवर्ते तेने अव्रत कहीये. ते ममता मटी गइ तेथी केवलज्ञान उपन्युं.” त्यारे हे देवानुप्रीय! श्रावकना खावा पीवा घरेणां ने कपडांने अव्रतमां घाल्यां छे, एवो जुठी जोडो तमे मतने लीधे केम करो छो? वली श्रावकना खावा पीवा घरेणां कपडां अने जग्याने अव्रत कहे छे, अने सुयगडांग तथा उववाइ सूत्रनां जुठां नाम ले छे. तेज उववाइ सूत्रनो पाठः—

सेजेइमे गामागर णगर जाव सण्णिवेसेसु मणूया ज्ञवंति तं० अप्पारंभ्ना अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिठा धम्मक्खाइयं धम्मपञ्जोइ धम्मपलज्ञणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वितिकप्पेमाणा सूसीला सुवया सुपडियाणंदा साहु एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावजीवाए. एगच्चाओ अपडिविरया एवं जाव परिग्गहाओ पडिविरया. एगच्चाओ अपडिविरया. एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोज्ञाओ पेजाओ दोसाओ कलहाओ अज्ञक्खाणाओ पेसुणाओ परपरिवायाओ अरति रतिओ मायामोसाओ मिछा दंसणसल्लाओ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाओ अपडिविरिया. एगच्चाओ आरंज्ञ समारंज्ञाओ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाओ आरंज्ञ समारंज्ञाओ अपडिविरिया. एगच्चाओ करण करावणाओ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाओ अपडिविरिया. एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउ पयणपयावणाओ अपडिविरिए. एगच्चाउ कूट्टण पीट्टण तज्जण तालण वहबंध परिकिलेसाउ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउ अपडिविरिया. एगच्चाउ एहाणुं मद्दण वणाग विलेवण सद्द फरस रस रुव गंध मल्ला

लंकाराउ पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउं अपडिविरिया. जेयावणे तहप्पगाराउ सावज्ज जोगाउ वहियाकम्मंता परिपाण परितावण कराकज्जंति ततोवि एगच्चाउं पडिविरिया जावजीवाए. एगच्चाउं अपडिविरिया तंजहा सेजहा णामए समणो वासगा नवंति ॥

अर्थः—से० ते जे ए गा० गाम, आगर ण० नगर जा० जावत् स० सनिवेसने विषे म० मनुष्य-श्रावक स्त्री पुरुषादिक न० होय तं० ते कहेछेः-अ० थोडा आरंनी अ० थोडा परिग्रहवंत ध० धर्मी छे धम्मा० धर्मने केडे चाले धम्मि० धर्म वाहालो छे जेने धम्म० शुद्ध धर्मना परुपक धम्मप० धर्मने विषे वारंवार नजर राखे धम्मस० धर्मने रंगे रंगाणा छे तथा लज्जावंत, धर्मने कोइ उलंघी दइ शके नहिं धम्मे० धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो ध०धर्मेकरी चे० निश्चे वि० वृत्ति आजीवीका क० करताथका प्रवर्ते सु० नलो आचार छे जेनो सु० नलां व्रत छे जेनां सु० अत्यंत नलु· आनंद सहीत चित्त छे जेनुं सा० धर्म पक्षे साधु ए० बे जातीना प्राणीमांथी पा० त्रसजीवने हणवाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एक स्थावरनी हिंसाथी अ० निवर्त्या नथी. ए० एम जा० जावत् प० मोटा जुठ, अदत्तादान, परदारा अने परिग्रहथी प० निवर्त्या छे. ए० अकेक नाना जुठ, चोरी, कुशील, अने परीग्रहथी अ० निवर्त्या नथी. ए० अकेक अनंतानुबंधिआदिक मोटा को० क्रोधथी मा० मान मा० माया लो० लोन पे० राग दो० द्वेष क० क्लेश अने अ० आल देवाथी पे० मोटी चाडीथी प० पारका अवर्णवादथी अ० अरति रतिथी मा० माया सहित मृषाथी मि० मिथ्यात्व दर्शन शल्यथी कूप्रावचनिक वा लोकोत्तर, ए मिथ्यात् मूलथकी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एकेक थोडा नाना क्रोधादिक तथा लोकीक मिथ्यात्वथी ( संसारना आरण कारणादिकथी ) अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक मोटा आ० आरंन स० समारंनथी, पंदर क-

मोदानादिकथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीवसुधी. ए० एकेक नाना आ० आरंभ स०समारंभथी अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक क०करवुं क० अनेरा पासे कराववुं, तेथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एकेक करवा कराववाथी अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक प० पचववा पचवाववाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० एकेक प० पचववा प० पचवाववाथी अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक कु० कुटवाथी पी० पीटवाथी त० तर्जवाथी ता० तारुवाथी व० मारवाथी बं० बांधवाथी प० क्लेश करवाथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० ए पूर्वोक्त एकेकथी अ० नथी निवर्त्या. ए० एकेक मोटका नदि प्रमुखना एहा० स्नान करवाथी म० मर्दन उगटणाथी व० वरण अबीरादिक सुगंधीथी वि० विलेपन करवाथी स० शब्दथी फ० फर्शथी र० रसथी रु० रुपथी गं० गंधथी म० पुष्पनी मालाथी अ० आभुषणथी, आभर्णथी प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी नाना अघुंलादिकथी. ए० एकेक नाना अंघुलादिकथी अ० नथी निवर्त्या. जे० जे कोइ वली त० तथा प्रकारना सा० पापना ( मन वचन कायाना माठा ) जोगनुं प्रवर्तन व० मोटा कपटना क० कर्मना व्यापार प० अनेरा प्राणीने प० परितापना क० करे छे त० ते एकेकथी पण प० निवर्त्या छे जा० जावजीव सुधी. ए० केटलाएक सावध्य कर्तव्यथी अ० नथी निवर्त्या. तं० ते कहे छेः-से० ते यथानाम द्रष्टांते स० साधुना उ० ( उपासक ) शेवक श्रावक भ० छे.

भावार्थः—हे देवानुप्रीय! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, प्राणातिपातादिक अकेका पापथी श्रावकजी निवर्त्या छे अने अकेका पापथी नथी निवर्त्या, एम सर्व बोलमां कह्युं छे; पण श्रावकनां खान, पान, घरेणां अने कपडांने अव्रतमां क्यां कह्यां छे ? कह्यां होय तो बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्श, ए अकेकाथी निवर्त्या कह्या अने अकेकाथी नथी निवर्त्या कह्या. ते कानमां शब्द, सारा सुंरा, राग रंग, गीत गान सांभलवाथी निवर्त्या तेने तो व्रत कहीए अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. १ एम आंखोथी बाग, बगीचा,

कुवा, वावमी, तलाव, गढ अने कोठादिक सर्व रुप देखवाना त्याग कर्या तेने तो व्रत कहीये अने सर्व वस्तु देखवाथी नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. २ तेमज नाकनी वासनाथी निवर्त्या तेने तो व्रत कहीए, अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ३ एम रसेंद्रिना विषयथी निवर्त्या तेने व्रत कहीये, अने नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ४ एम स्पर्श इन्द्रिना आठ फरसथी घरेणां कपमां पहेरवाथी निवर्त्या तेने व्रत कहीए अने स्पर्श इन्द्रिना विषयथी नथी निवर्त्या तेने अव्रत कहीए. ५ एज रीते शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शना श्रावक त्याग करे ते तो व्रत, बाकी सर्व अव्रत जाणवुं. ए न्याये श्रावकना खान, पान, घरेणां अने कपमांने अव्रत कहीये ठीए. " तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! तमारे लेखे तो कानेकरी श्रीवीतरागदेवनी वाणी, स्तवन, सझाय तथा धर्म उपदेश सांजले ते पण पुद्गल ठे, तेथी निवर्त्या नथी वास्ते ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज आंखोथी देवगुरुनां दर्शन करे, श्रीवीतरागदेवनी वाणी, सझाय, स्तवन प्रमुख धर्मना अक्षर वांचे. ए रुप देखवाथी निवर्त्या नथी तेथी ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज नाकथी जीवादिक उपज्या जाणवाने तथा वस्तुनो रस चट्यो जाणवाने जीवनी जतना करवा माटे अथवा साधुजीने वोहोरावका माटे हरेक पुद्गल सुंघवाथी निवर्त्या नथी, ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज रसेंद्रिथी देवगुरु धर्मना गुणग्राम करे तथा बोलचाल, सामायक, पमिक्कमणुं, स्तवन, सझाय प्रमुख शीखे, संजलावे तथा श्री वीतरागदेवनो वाणीनो (धर्मनो) उपदेश करे, ए पण जाषाना पुद्गल ठे. तेथी निवर्त्या नथी ए पण अव्रत पाप हशे. तेमज सरस आहार त्यागीने निवी, आयंबिलादिक माटे नरस आहार करे. ए नरस आहारथी निवर्त्या नथी ते पण तमारे लेखे तो अव्रत पाप हशे. वली स्पर्शेंद्रिथी (कायाथी) शीत ताप सहे, विनय वैयावच करे, सामायक पोषानां उपगर्ण, बिग्रावनुं, मुहपत्ति, नवकारवाली अने पुंजणी प्रमुख राखे तथा धर्म-शास्त्रनी पोथीपाना वांचवा वास्ते राखे. ए थकी पण निवर्त्या नथी. ए पण तमारे

लेखे तो अव्रत पाप हशे. ए जलां काम पांच इंद्रिए करी शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शनां श्रावक करे, करावे अने करताने जलुं जाणे. ए सर्व तमारे लेखे तो अव्रत पाप हशे. वली ए पूर्वोक्त कामथी साधु पण निवर्त्या नथी. तमारे लेखे तो साधुने पण पाप केहेवुं पडशे.

तेवारे तेरापंथी पण कहे ले के "मोहकर्मने उदये जला शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्श उपर राग अने माठा उपर द्वेष प्रवर्ते तथा अत्याग-जावथी (आशा, वंछा, जीवना प्रणामथी) निवर्त्या नथी तेने अव्रत कहीए; अने ए जलां काम पांच इंद्रिए करीने करे ते तो शुन्न-योग निर्जरानी करणी ले. तेथी कर्म तुटे अने पुन्य बंधाय." त्यारे तेमने केहेवुं के हे देवानुप्रीय ! तमे रागद्वेषने, अत्याग-जावने (जीवना अरुपी परणामने) अव्रत सरधीने अणसमजु लोकोने जरमाववाने श्रा-वकनां खान, पान, घरेणां अने कपडांने अव्रत कहीने अनंत संसार केम वधारोलो ? अव्रत तो रागद्वेषे करी पुज्गल उपर ममत (अत्यागजाव) राखे तेने कहीए; अने ते अत्याग-जावने (जीवना प्रणामने) तो अ-रुपी कहोलो, ते तो पोतपोतानी पासे ले बीजाने आप्यां आपी शकाय नही; अने अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुखतो रुपी पुज्गल ले, ते सामायक, पोसा, अने तपस्या करावानी साहाजे आपे, ते शुन्नयोग निर्जरानी करणी ले. तेने अव्रत केम कहोलो ? एज अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुख उपर रागद्वेष अत्याग-जाव (जीवना प्रणाम) तेनी ममता त्यागे तेने जोगना पापथी अने अव्रतथी निवर्त्या कहीए; अने तेनी ममता राखे अने रागद्वेषथी शेवे तेने जोगना अव्रत पापथी निवर्त्या न कहीये; अने एज अन्न, वस्त्र, जग्या प्रमुखनी साहाजथी तपस्या, सामायक, पोसा, प्रमुख ध्यान करे तथा अनेरा श्रावकने तपस्या, सामायक, पोसा, प्रमुख धर्मध्यान करावानी साहाजे जग्या, उपगर्ण आपे ते पण शुन्नयोग निर्जरानी करणी ले एम जाणवुं. हवे श्रावकनां खान, पान, घरेणां अने कपडांने (रुपी अठ फरसी पुज्गलने) अव्रत कया सूत्रमां कह्युं ले ते पाठ बतावो. ए सूयगडांग अने उववाइ सूत्रनां जुठां नाम केम ल्पोलो ?

वली तेरापंथी, श्रावकने सामायक पोसानां उपगर्ण, वस्त्र, जग्या तथा सामायक पडिक्कमणुं, बोल चाल, स्तवन अने सझाय प्रमुख ज्ञाननी पोथी इत्यादिक सर्वने अव्रतमां बतावे छे, अने बीजा श्रावकने सामायक पोसानां उपगर्ण आपे तथा वांचवाने पोथी आपे तेने अव्रत दीधुं कहे छे. तेने पुछीए के, साधुजी श्रावकने वांचवाने पोतानुं पानुं आपे तेमां साधुजीने शुं थाय अने वांचवावाला श्रावकने शुं थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, साधुजीने पण धर्म छे अने वांचवावालाने पण शुभ जोग निर्जरारुप धर्म छे. तेवारे तेने कहेवुं के, साधुजी श्रावकने वांचवा पानुं आपे तेमां धर्म छे, त्यारे श्रावक श्रावकने वांचवाने पानुं पोथी आपे तेमां धर्म केम नही थाय? अने पोथी वांचवा आप्याथी धर्म थशे तो सामायक पोसा वास्ते उपगर्ण, नवकारवाली, पुंजणी, मुहपत्ति तथा जग्यानी सहाज देवावालाने शुभ योग निर्जरारुप धर्म केम नही थाय? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली तेरापंथी श्रावकना खावा, पीवा, कपडां, घरेणां अने जग्या प्रमुख सर्वने अव्रतमां बतावे छे, अने बीजाने आपे तेमां अव्रत सेवराव्युं कहे छे, तेने पुछवुं के, "तमे अव्रत केने कहो छो अने व्रत केने कहो छो ते बतावो."

तेवारे तेरापंथी कहेछे के "अढारे पापना, खावा पीवाना अने कपडां घरेणां पहेरवा तथा राखवाना त्याग करे तेने तो व्रत कहीए; अने सेववानो आगार राखे तेने अव्रत कहीए. अढारे पापना त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी सर्वथा प्रकारे त्याग करे तेनेतो सर्वव्रति साधु कहीए; कारण के तेने लगारमात्र पापनो आगार नथी. तेनुं खावुं पीवुं सर्व काम धर्ममां छे, अने तेने आहारादिक आपे, वंदणा करे तेने पण धर्म छे; अने अढार पापमांथी कांइक त्याग करे अने कांइक आगार राखे तेने देसव्रति श्रावक कहीए. ते त्याग व्रततो धर्म छे अने पापनो आगार ते अव्रत छे. ते श्रावकनुं खावुं पीवुं अने पहेरवुं ते सर्व अव्रतमां छे. तेमज तेनुं शरीर पण अव्रतमां छे. तेथी आरादिक आपे, वंदणा नमस्कार करे तेने पाप लागे एम कहीये छीए." त्यारे तेमने पु-

ववुं के, कोइ श्रावके सर्वथा प्रकारे अढार पापना जावजीव सुधी त्रिविधे त्रिविधे त्याग करी दीधा होय तेने चार अहार, वस्त्र पात्र तथा जग्या आपे अने वंदणा नमस्कार करे तेने शुं थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "श्रावकने अढार पापना त्याग सर्वथा प्रकारे जावजीव सुधी थायज नही. कांइक पण पापनो आगार रहेज, तेथी तेने देशव्रति श्रावक कहीये छीए; अने जेने आगार न होय तेने तो सर्वव्रतिज कहीए. ते श्रावक न कहेवाय." एम कहे छे, पण सूत्रमां तो श्रावकने सर्वथा प्रकारे पापना त्याग कह्या छे. श्री भगवतीजी सूत्रना सातमा शतकना नवमा उद्देशामां वर्णनागनतवे सर्वथा प्रकारे अढारे पापना त्याग जावजीव सुधी कर्या कह्युं छे. वली अम्मडजी संन्यासी (श्रावक) ना सातसें चेला श्रमणोपासके पण सर्वथा प्रकारे अढार पापना त्याग त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी कर्या; अने तेमने श्री वीतरागदेवे अंत समय सुधी देसव्रति श्रावक कह्या छे; ते सूत्र उववाइजीनो पाठः—

पुव्विंपिणं अम्हेहिं अमडस्सपरिवायगस्स अंतिए थुलग पाणाइवाए पच्चरकाए जावजीवाए, थुलए मुसावायाए पच्चरकाए जावजीवाए, थुलए अदिनादाणे पच्चरकाए जावजीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चरकाए जावजीवाए, थुलए परिग्गहे पच्चरकाए जावजीवाए, इदाणिं-पिणं अम्हे समणस्स-भगवउ-महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चरकामो जावजीवाए एवं जाव सव्वं परिग्गहं पच्चरकामो जावजीवाए५ सव्वंकोहं६ माणं७ मायं८ लोभं९ रागं१० दोसं११ कलहं१२ अभ्नरकाणं१३ पेसुणं१४ परपरिवायं१५ अरत्तिरत्ति१६ मायामोसं१७ मिछादंसणसल्लं१८ अकरणिज्जंजोगं पच्चरकामो जावजीवाए सव्वं असणं पाणं खाइमं

साइमं चउविहंपि आहारं पच्चक्कामो जावज्जीवाए जंपियं इमं सरिरं इठं कंतं पियं माणूणं मणामं धिज्जं विसासियं समयं बहुमयं अणुमयं जंडकरंडगसमाणं माणंसियं माणंउन्हा माणंखूहा माणंपिवासा माणंवाला माणंचोरा माणंदंसमसा माणं वाइयं पित्तीयं संभियं सन्निवायं विवीहा रोगा तंका परिसहोवसग्गा फासा फुसंति तिकट्टु एयंपियणं चरिमेहिं उस्सास निस्सासेहिं वोसिरामि तिकट्टु संलेहणा झुषणा झुसिया भत्तपाण पडिया इक्किया पाउवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति. ततेणं से परिवायगा बहुइं भत्ताइं अणसणाइं छेदंति छेदित्ता आलोइय पडिकंत्ता समाहिपत्ता कालमासे कालंकिच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ना तेहिं तेसिं गइ ताहिं तेसिं ठित्ती दससागरोवमाइं ठित्ती पणंत्ता. परलोगस्स आराहणा सेसं तंचेव.॥

अर्थ—पु० पहेलां पण अ० अमे अ० अम्मड परिव्राजकनी अं० समिपे थु० मोटा पा० प्राणीनी हिंसानुं प० पचखाण कर्युं छे जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा मु० मृषावादनुं प० पचखाण जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा अ० अणदिधुं लेवाना प० पचखाण जा० जावजीव सुधी. स० सर्व मे० मैथुननुं प० पचखाण कर्युं छे जा० जावजीव सुधी. थु० मोटा प० परिग्रहना प० पचखाण कर्या छे जा० जावजीव सुधी. इ० हमणां पण अ० अमे स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर देवनी अं० समिपे स० सर्व पा० प्राणीनी हिंसानुं प० पचखीए छीए जा० जावजीव सुधी. ए० एम जा० जावत् स० सर्व प० परिग्रहनुं प० पचखाण करीए छीए जा० जावजीव सुधी. स० को० सर्व क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ रा० राग दो० द्वेष क० क्लेश अ० आल पे० चाडी प० निंदा अ० खुशी नाखुशी मा० (माया) कपट सहित जुठ मि० खोटा

देव, गुरु, धर्मनुं सर्दहवुं ते. अ० करवा योग्य नही एवा जो० मन आदिना व्यापारनुं प० पचखाण जा० जावजीव सुधी कर्युं छे. स० सर्व अ० असन पा० पाणी खा० खादिम सा० सादिम मुखवास च० चार प्रकारना आ० आहारना प० पचखाण जा० जावजीव सुधी करीए छीए. जं० जे वली इ० ए स० शरीर इ० वाहालुं छे कं० कान्तीकारी पि० प्रीयकारी म० मनने गमतुं म० विशेष मनने गमतुं धि० धीर्यकारी वि० विश्वासनो हेतु स० रुडुं करी मानवा योग्य व० घणुं मानवा योग्य अ० अवगुण करे तोपण वल्लभ मानवा योग्य जं० रत्नना करंडीया समान मा० रखे सि० टाढ लागे मा० उ० रखे ताप लागे मा० खु० रखे भुख लागे मा० पी० रखे तृषा लागे मा० वा० रखे सर्पादिक करडे मा० चो० रखे चोर पराभव करे मा० दं० रखे दंस मसक करडे मा० वा० रखे वायु प्रभावे पि० पितना प्रभावे सं० सलेखम सं० सन्निपात दोष प्रभावे वि० विविध प्रकारना रो० रोग (थोडा कालनो) अं० मर्णान्तक रोग प० परिसह उ० उपसर्ग फा० एटला बोल रखे फरसे. ति० एवो वाहालो करीने ए० एवा शरीरने पण च० छेल्ला उ० उंचो स्वास लइए ते णी० नीचो स्वास मुकीए ते वो० वोसरावुं छुं. ति० एम कहीने सं० संलेखणा तपे करीने झु० सेववे करी झु० सेवीने भ० भात पाणी प० पचखीने पा० पादोपगमन (वृक्षनी डालनी परे) अणसण करीने का० मरणने अ० अणवांछता थका वि० विचरे छे. त० तेवार पछी से० ते प० सातसो सन्यासी ब० घणा भ० भक्तनुं अ० अणसण छे० छेदे, छेदीने आ० आलोवी प० पडिकमी स० समाधि प० पामीने का० कालने अवसरे का० काल करीने बं० ब्रह्मलोक क० देवलोकने विषे दे० देवतापणे उ० उपन्या. त० त्यां ते० तेनी ग० गती त० त्यां ते० तेनी ठि० स्थिति द० दश सागरोपमनी प० कही. प० परलोकना आ० आराधिक (समकित सहित करणीना करणहारा ते माटे). से० शेष बाकी (मोटा कुलमां उपजशे संजम लइ मोक्ष पामशे.) तं० तेमज जाणवुं. ॥१३॥

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां अंबडजीना शिष्योए सर्वथा

प्रकारे अढार पापना तेमज सर्व अकरवा जोग कामो करवाना त्रिविधे त्रिविधे त्याग जावजीव सुधी कर्या छे छतां तेमने देशव्रति श्रावक कह्या छे; अने तमे तो आगारने अव्रत कहो छो. हवे एमने कया पापनो आगार रह्यो ते बतावो. कदाचित खावा पीवाना आगारने अव्रत कहेता हो तो एमणे तो चार आहारना पण सर्वथा प्रकारे त्रिविधे त्रिविधे जावजीव सुधी त्याग कर्या छे. हवे शो आगार रह्यो ते बतावो. वली कदाचीत शरीर उपर ममता होय तेने अव्रत कहेता हो तो, एमणे तो शरीरनी ममता पण सर्वथा प्रकारे त्रण करण त्रण जोगे करीने वोसरावी छे. हवे शो आगार रह्यो ते बतावो. वली तमे कहोछो के, जे सर्वथा पापना त्याग जावजीव सुधी करे तेने आहारादिक आप्यामां तथा वंदणा नमस्कार कर्यामां धर्म छे. त्यारे पूर्वोक्त श्रावकोए सर्वथा पापना त्याग कर्या छे तेमने वंदणा नमस्कार कर्यामां पाप केम थाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " तेमनामां कांइक अव्रत रह्युं हशे, माटे भगवंते तेमने देशव्रति कह्या छे, ते माटे तेउ वंदणा नमस्कार करवा योग्य नथी. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! भगवंते तेमने देशव्रति कह्या एमतो सूत्रमां छेज; पण तमे आगारमां अव्रत कहोछो ते आगार बतावो. तमे व्रत अव्रतमां समजता देखाता नथी, तेथी एम कहोछो के आगारने अव्रत कहीए. पण हे देवानुप्रीय! अव्रत तो मोहनीकर्मनो बीजो चोकडो अप्रत्याख्यानीना क्रोध, मान, माया, लोभ, राग अने द्वेषना उदयभावमां छे. तेना जोगथी समे समे पुद्गल आवीने जीवने राग द्वेषनो चीकणाइथी चोटे अने जोगना व्यापार विना पण ए पुदगल कर्मपणे परगमे तेने अव्रत कहीये; अने मोहनीकर्मनी त्रीजी चोकडी प्रत्याख्यानीना क्रोध, मान, माया अने लोभ उदयभावमां छे, तेना जोगथी जीवने अत्याग भावना प्रणाम राग, द्वेष अने अशुभ जोग पापमां वर्ते तेने जोगनुं अव्रत कहीए. हवे बन्ने चोकडीना कर्म लागे तेने तो एकान्त अव्रत कहीए; अने बन्ने चोकडीनो क्षयोपशमभाव, उपशमभाव तथा क्षायकभाव वर्ते तेने सर्व व्रति साधु कहीए; अने बीजी चोकडीनो क्षयो-

पशम थयो अने त्रीजी चोकडी उदयभावमां छे तेने देसव्रति श्रावक कहीए. तमे ए सूत्रनी रेसना अजाण्या थका आगारने अव्रत कहोछो; पण संथारामां श्रावकने पापनो शुं आगार रह्यो ते बतावो. वली अभवि साधुने व्यवहारमां सर्वथा पापना त्याग छे अने तेने केवली सर्वथा अव्रति सर्दहे छे. हवे अभवि साधुने कया पापनो आगार रह्यो ते बतावो. इहांतो चोकडीना उदयभावने अव्रत कह्युं छे. हवे जो बीजी चोकडीना उदयभावने अव्रत कहीए तो, ते अव्रततो श्रावकने मुलथीज नथी, (शाख सूत्र भगवतीजी सतक पहेले) अने त्रीजी चोकडी उदयभावमां छे तेना जोगथी पुद्गल उपर ममत-भाव, राग द्वेष अने अशुभ जोग प्रवर्ते, ते जोगना पाप आश्री सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां कोइक पापथी निवर्त्या कह्या; अने कोइक पापथी नथी निवर्त्या कह्या. त्यांतो अशुभ जोगना पाप आश्री कह्या छे. तमे सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रनां जुठां नाम लेइ श्रावकना खावा, पीवा, घरेणां अने कपडां प्रमुखने मतने लीधे अव्रत केम कहो छो ? वली ए उपगर्ण धर्मनी साज निमीत्ते सेवे सेवरावे तो शुभजोग निर्जरानी करणी कहीए. तेमां पाप कया सूत्रमां कह्युं छे ते पाठ बतावो.

वली श्रावकना खावा पीवामां तथा खवराववामां पाप कहे छे तेने पुछवुं के, जीव सहित वस्तु खाय पीए अथवा छ कायनो आरंभ करीने खाय अथवा बीज़ाने खवरावे, ते आरंभनुं तो पाप छेज; पण कोइ श्रावक साधुनी परे संसारथी विरक्तभावे श्रावकपणुं पालवाने अर्थे अजीव पुद्गल खाय, प्रासुक पाणी पीए, तेना खावा पीवा अने पहेरवामां शुं तथा तेने कोइ खवरावे तेमां शुं ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, अचेत खाय तोपण तेनुं खावुं पीवुं पापमांज छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! पाप तो अढार छे. तेना तो संथारामां सर्वथा प्रकारे त्रण करण अने त्रण जोगे करीने जावजीव सुधीना त्याग कर्या; तेमां सर्व पापनी वस्तुनो तो त्याग सर्वे काम अढार पापना त्याग भेगां थइ गयां. त्यारे वर्णनागनतुवे तथा अंमडजीना शिष्योए चार अहारना न्यारा त्याग केम कर्या ? ए छंग

णीसमुं पाप कयुं ते बतावो. हे देवानुप्रीय! अढार पापना त्याग तो साधुजीने मूल-गुणव्रतमांज छे; अने आहारना पच्चखाण करे तो उत्तर गुणव्रत निपजे. तेम श्रावकना अढार पापना त्याग तो मूल-गुणव्रत छे, अने आहारना त्याग करे तो उत्तर--गुणव्रत निपजे. तेथी अढार पाप अने चार आहारना पचखाण न्यारा न्यारा कर्या. वली तमे श्रावकना खावा पीवा प्रमुखमां पाप कहो छो, तो ते खावा प्रमुख अढार पाप मांहेलुं कयुं पाप ते कहो अने अढार पापना त्याग करीने पछी आहारना न्यारा त्याग केम कर्या ते पण कहो. हे देवानुप्रीय! सिद्धांतनो न्याय तो एम दीसे छे के, साध श्रावकने आहारना त्याग न होय त्यारे तो उत्तर-गुणना अपचखाण कहीए, अने अहारना त्याग करे तो उत्तर-गुण पच्चखाण निपजे. साधु तथा श्रावक बंनेने उत्तरगुण-अपचखाणी पण कह्या छे अने उत्तरगुण-पचखाणी पण कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवतीजी शतक सातमे उद्देशे बीजे. ए न्याये तो साध-श्रावक बंनेनुं खावुं पीवुं उत्तरगुण-अपचखाण छे; केमके शरीरनी ममताने अर्थे अशुभ जोगथी खाय तो बंनेने पाप लागे; अने संजम तपनी सहायता अर्थें खाइने शुभ भावना भावे तो शुभ योगथी बंनेने निर्जरा थाय. वली जो श्रावकना खावा पीवामां पाप होय तो सूत्र उववाइजीमां अंमडजी श्रावकने सो घरे पारणुं करता कह्या छे. ते अंमडजी श्रावक नव तत्वना जाण एकावतारी सो घरे पारणुं केम करे? एक घरे तो पारणुं कर्या विना सरे नहिं तेथी करे; पण सो घरे पारणुं करी स्वपरने अनर्थ पाप केम लगाडे? ते पाठ श्री उववाइजीनोः—

बहु जणेणं भंते! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवंभासइ एवंपन्नवेइ एवंपरूवेति एवंखलु अंम्मडेपरिवायए कंपिल-पुरे-णयरे घरसत्ते आहारमाहरेति घरसए वसहिउवेइ. से कहयं भंते! एवं? गो०! जणंसे बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खंति जाव परूवेति एवंखलु अम्मडेपरि-

वायए कंपिल्लपुरे जाव घरसए वसहिं उवेति सच्चेणं एस-
मठे. अहं पिणं गो० ! एवमाइक्खामि एवं जाव परूवेमि
एवंखलु अम्मडे परिवायए जाव वसहिउवेति. सेकेणठेणं
भंते ! एवं वुच्चइ अम्मडेपरिवायए जाव वसहिउवेति.
गो० ! अम्मडस्सणं परिवायगस्स पगइ भद्दयाए जाव
विणीयत्ताए छठंछठेणं अणिखीत्तेणं तवोकम्मेणं उढ्ढंबा-
हाउ पगिज्झइ २ सुराभिमुहस्स आयावण भूमिए आ-
यावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं
लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अन्नयाकयाइं तदा-आवरणिज्जाणं
कम्माणं खउवसमेणं इहा अपूह मग्गणं गवेसणं करे-
माणस्स विरियलद्धिए वेउव्वियलद्धिय उहिणालद्धि समु-
प्पण्णे. ततेणंसे अम्मडेपरिवायए ताए विरियलद्धिए वेउ-
वियलद्धिए उहिणालद्धिए समुप्पणाए जण विमावणहेउ
कंपिल्लपुरेणयरे घरसए जाव वसहिंउवेति. सेतेणठेणं
गो० ! एवंवुच्चइ अम्मडेपरिवायए कंपिल्लपुरेणयरे घरसए
जाव वसहिं उवेति. ॥

अर्थः—ब० घणा ज० लोक भं० हे पुज्य ! अ० मांहोमांही ए० एम कहेछे ए० भा० एम एकवचने बोले छे ए० प० एम जणावे छे मांहोमांही समजावे छे ए० प० एम परुपे छे विस्तारथी कहेछे. ए० एम ख० निश्चे अ० अम्मड-संन्यासि कं० कंपीलपुर नगरने विषे घ० सो घरे आ० आहार करेछे. घ० सो घरने विषे व० रात्रे वसे छे ? से० ते क० केम छे भं० हे भगवान ! ए० ए० ? गो० हे गौतम ! ज० यदि ते ब० घणालोक अ० मांहोमांही ए० एम कहेछे जा० यावत् प० परुपे छे ए० एम निश्चे अ० अम्मड परिव्राजक कं० कंपिलपुर नगरने विषे जा० यावत् घ० सो घरने विषे आहार करे, यावत् व० वासो वसे. स० साचो ए० ए अर्थ,

अ० हुं पि० पण गो० हे गौतम ! ए० एम कहुं बुं ए० एम जा० यावत् प० परुपुं बुं ए० एम निश्चे अ० अम्मड-संन्यासि जा० यावत् व० सो घरे रात्री रहेवुं करे छे. से० ते शा अर्थे नं० हे नगवान ! ए० एम बु० कहोछो के अ० अम्मड-संन्यासि जा० यावत् व० सो घरे रात्री वसे छे रहे छे ? गो० हे गौतम ! अ० अम्मड-संन्यासिने प० स्वनावे न० नद्रिकपणे जा० यावत् वि० वनितपणे करीने छ० छठ छठने पारणे अ० आंतरा रहित त० तप कर्तव्ये करी उ० उंची बांह ( हाथ ) प० करी करीने सु० सूर्य सांमा आ० आतापनानी नू० नूमिने विषे आ० आतापना लेतां थकां सु० नला प० प्रणामे करी प० नला अ० अधवशाये करीने ले० लेश्या वि० निर्मल ( विशेष शुद्ध ) तेणे करी अ० एकदा प्रस्तावे त० ज्ञानावरणी ( ज्ञानने आवरी रह्या ते ) क० कर्मना ख० क्षयोपशमे करीने इ० विचारणा अ० निश्चय करवो म० मार्गनी ग० गवेषणा क० करता थकाने वि० जीवनी शक्ति ल० लब्धि वे० विक्रय रुप करवानी लब्धि, उ० अवधिज्ञाननी लब्धि स० सम्यक् प्रकारे उपन्या थका त० तेवारे ते अ० अम्मड-संन्यासि ता० ते वि० वीर्य लब्धि वे० विक्रय रुप करवानी लब्धि उ० अवधिज्ञाननी लब्धि स० सम्यक् प्रकारे उपनी. तेणे करीने ज० लोकने वि० विस्मय पमाडवाने अर्थे कं० कंपीलपुर नगरने विषे घ० सोघरने विषे जा० यावत् व० रात्रे वसवुं करे छे. से० तेणे अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं के, अ० अम्मड-संन्यासि कं० कंपीलपुर नगरे घ० सोघरने विषे जा० यावत् व० रात्रे वसवुं उ० करे छे.

नावार्थः—हवे जुओ. आ पाठमां तो नगवंते कह्युं छे के, अम्मडजी-परिव्राजके संन्यासिपणानो मत छोडीने श्रावकपणुं लीधुं छे, संन्यासीना वेशमां श्रावकनां व्रत पाले छे, बेलेबेले पारणुं करे छे अने सूर्य सांमी आतापना लेछे. ए तप करतां थकां नली लेश्या तथा नला अधवशाये करीने ज्ञानावरणी--कर्मनो क्षयोपशम थयो, अवधिज्ञान प्राप्त थयुं अने वैक्रिय रुप बनाववानी लब्धि उपनी. तेथी लोकोने विस्मय उपजाववाने अर्थे सो घेरे पारणुं करे छे. हवे एक घेरे तो पारणुं कर्युं

विना चाले नहि तेथी पाप लागे तो पण करवुं पडे ते अर्थ--पापमां छे; पण श्रावकना खावा पीवामां पाप होय तो अम्मडजी श्रावक तो पापथी डरता हता. तेउ आधाकरमी ( मूल आपीने लावेलुं ), मीश्र अने उधारे लावेलुं; इत्यादिक दोष टालीने अहार लेता कह्या छे. एवा समजवार श्रावक सो घरे पारणुं करीने अनर्थ पाप केम लगाडे तेमज पारणुं करावववावाल्लाने पाप लागे तो सो घरवालाने अणहुतां अनर्थ पाप लगाडीने केम डबोवे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली आ पाठना आगला पाठमां उववाइजी सूत्रमां कह्युं छे के, अम्मडजी श्रावकने अनर्थ पाप करवा करावबाना त्याग छे. हवे जुउ ! श्रावकना खावा पीवामां पाप होय तो, पूर्वोक्त अनर्थ पाप लगाडयुं तेनुं आठमुं व्रत केम रह्युं अने ते आराधिक केम थया ते कहो.

हे देवानुप्रीय ! साधश्रावकनुं खावुं पीवुं पापमां नथी, पण उदय भावमां छे. जो तेउ शरीरनी ममताने अर्थे राग द्वेषथी अशुभ जोगथी खाय तो साध श्रावक बंन्नेने पाप लागे; पण जो साध श्रावकपणुं निभाववाने अर्थे अचेत पुदगलनुं भाडुं आपे, अने शुभ भावना भावे तो साध श्रावक बन्नेने शुभ योगथी निर्जरा थाय. वली अहींयां तो एम कह्युं छे के, अम्मडजी श्रावकने वैक्रियलब्धि तथा अवधिज्ञान उपन्युं, तेथी लोकोने जैन धर्मनो विस्मय उपजाववाने अर्थे सो घेरे पारणुं करे छे. हवे विचारो ! एवा समजवार श्रावक पाप करीने जैन धर्म केम लजावशे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली आणंदजी श्रावक आदि घणा श्रावक पडिमाधारी थया. तेउ आठमी पडिमामां सचेत आरंभनुं पाप करे नही, नवमीमां करावे नहि, दसमीमां करताने भलो जाणे नही अने अग्यारमी पडीमामां सर्वथा प्रकारे आरंभ त्यागीने तथा आधाकरम्यादिक दोष टालीने, साधुनी पेरे इरिया जोइने, सुजतो अहार पाणी लावीने, देहीने भाडुं आपी, तपश्या धर्म ध्यान करे तेने दान देवामां शुं ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " सर्वथा प्रकारे पापना त्याग त्रण क-

रण ने त्रण जोगेथी होय तेने साधु कहीए. तेने दान देवामां तो एकान्त धर्म छे, पण श्रावकने संथारा विना सर्वथा प्रकारे त्याग होय नही; अने पडिमाधारीने कांइक पापनो आगार रह्यो हशे तेथी श्रावक कह्या छे. जो सर्वथा प्रकारे पापना त्याग होय तो साधु केम न कह्या?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! संथारामां वर्णनागनतुवे अने अम्मडजोना सातसो शिष्ये (श्रावके) सर्वथा प्रकारे अढार पापना, सर्व अकरवा योग्य कामना तथा चार आहारना त्रण करण अने त्रण जोगथी जावजीव सुधीना त्याग कर्या अने शरीरनी ममता सर्वथा प्रकारे जावजीव सुधी उतारी; तोपण तेमने श्रावक कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवतीजी सतक सातमें उद्देशे नवमें तथा उववाइ सूत्रमां. वासते एम समजवुं के, त्रीजी चोकडी उदयभावमां वर्ते छे माटे श्रावक कहीये छीये. बाकी सर्व पापजोग करवा, करावचा अने भला जाणवाना मन वचन अने कायाए करीने त्यागा छे. तेमज पडिमाधारी श्रावकने पण जोगथी त्रिविधे त्रिविधे पाप करवाना त्यागछे; पण त्रीजी चोकडी उदयभावमां बाकी छे तेथी श्रावक कह्या छे; अने तमे तो सूत्रनी शैलीना अजाण थका कहोछो के; पडिमाधारी श्रावकने कांइक पाप करवानो आगार रह्यो छे तेथी श्रावक कह्या छे. वली श्रावकने त्रण करण अने त्रण जोगथी सर्वथा पापना त्याग कर्या कह्या छे. शाख सूत्र भगवती सतक ७ में उद्देशे ५ मे. ते पाठः—

समणोवासगस्सणं भंते! पुव्वामेव थुलग्ग-पाणाइवाए अपच्चक्खाए-भवइ सेणं भंते! पच्छा पच्चक्खायमाणे किं-करेइ? गो०! तिय पडिक्कमइ पडुपन्नं संवरेइ अणागयं पच्चक्खाइ. तीयं पडिक्कममाणे किं तिविहं-तिविहेणं पडिक्कमइ, तिविहं-दुविहं पडिक्कमइ, तिविहं-एगविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-तिविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-दुविहेणं पडिक्कमइ, दुविहं-एगविहेणं पडिक्कमइ, एगविहं-तिविहेणं पडि-

क्कमइ, एगविहं डुविहेणं पमिक्कमइ एगविहं एगवि- हेणं पमिक्कमइ ? गो० ! तिविहं वा तिविहेणं पमिक्कमइ, तिविहंवा दुविहेणं पमिक्कमइ, तंचेव जाव एकविहंवा एकविहेणं पमिक्कमइ. तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंतंनाणू जाणइ मणसा वयसा कायसा.

अर्थः—स० श्रमणोपासक (श्रावक) ज्नं० हे ज्नगवंत ! पु० पूर्वे काले सम्यक् पमिवर्ज्या पहेलां तथा ज्नवान्तरे थु० स्थुल प्राणातिपात अ० पहेलां देशव्रति प्रणामना अज्नावथी पचख्या नथी से० ते श्रमणोपासक ज्नं० हे ज्नगवंत ! प० पडी प० पचखतोथको किं० शुं करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ति० अतित कालनां क्रत्य प्राणातिपातने प० निंदे (गया कालनुं प्रतिक्रमण करे), प० वर्तमान काले प्राणातिपात सं० संवरे (वर्तमान काले संवर सामायक करे), अ० ज्नविष्य काले प० प्राणातिपात नही करशुं एवी प्रतिज्ञा करे (आगमिक कालनुं पचखाण करे). हवे ती० अतित काल क्रत्य प्राणातिपात प० पमिक्कमतो थको किं० शुं ति० त्रिविध त्रिविध (करवा करावबा अनुमोदन ज्नेदथी) प्राणातिपात योग्य प्रत्ये एवुं कहीए ? ति० त्रिविध जे मन, वचन, काय, लक्षण करवे करी प० निंदवे करी विरमे ? १ के ति० त्रिविध कर्णादि ज्नेदथी डु० मन बोलीने बेहु करीने प० विरमे ? २ ति० त्रिविध कर्णादि ज्नेदथी ए० एक विधे मन प्रमुख एके करीने प० विरमे ? ३ डु० द्विविध करण आदि अनेरा बंने ति० त्रिविध मन प्रमुख जोगे करी प० विरमे. ? ४ दु० द्विविध करण आदि दु० मन प्रमुख अनेरे बे जोगे करी प० विरमे ? ५ दु० द्विविध करण आदि ए एक योगे करी प० विरमे? ६ ए०ति० एक करण अने त्रण योगे करी प० विरमे ? ७ ए०दु० एक करण अने बे योगे करी प० विरमे ? ८ के ए०ए० एक करण ने एक योगेकरी प० विरमे ? ए. इति नव प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ति० त्रिविधे त्रिविधे प० पमिक्कमे अथवा ति०डु०

त्रिविधे द्विविधे प० पडिक्कमे (विरमे). तं० जेम पूर्वे कह्युं तेम जा० जावत् ए० एक करण अने ए० एक जोगथी प० पडिक्कमे विरमे. इहां नवे प्रश्ननो उत्तर. हवे ति० ति० त्रिविधे त्रिविधे प० पडिक्कमतो थको विरमतो थको इहां एक विकल्प कहे छेः—न० प्राणातिपात पोते न करे नका० बीजा पासे न करावे अने क० करता प्रत्ये भलो न जाणे म० मन व० वचन अने का० कायाएकरी. इत्यादि अधिकार घणो छे ते श्री भगवतीथी जाणवो.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां तो कह्युं छे के, ४९ भांगाए करी गया कालनुं सर्व पाप पडिकमे, विद्यमान कालनुं सर्व पाप संवरे अने भविष्य कालनां सर्व पाप पचखे. एम पांच आश्रवना ७३५ भांगा कह्या छे. हवे जुओ! ३३ में आंके त्रण करण त्रण जोगथी पापना त्याग श्रावकने कह्या छे. ते पडिमाधारी-श्रावकने न होय तो बीजा कया श्रावकने हशे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहेछे के, ए तो प्राणातिपातादिक पांच आश्रवना त्याग कह्या छे, पण सर्व पापना त्याग नथी कह्या. तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! साधुजीने पांच आश्रवना त्रिविधे त्रिविधे त्याग छे, तेथी सर्व पापना त्याग थइ चुक्या. तेमज आ श्रावकने पांच आश्रवना त्याग तेज मूल-गुणव्रत छे अने उपलां सात व्रत ते उत्तर-गुण कह्यां छे; केमके पांच अणुव्रतमां पापनो आगार रह्यो, ते आगलां सात व्रतमां संकोचाय छे; अने पांच आश्रवना त्रिविधे त्रिविधे त्याग कर्या, तेवारे उपरना व्रतना त्यागमां समाइ गयां. जेम अनुयोगद्वार सूत्रमां ऋजुसूत्र-नयनो धणी एक अहिंसानेज व्रत माने. जेणे त्रिविधे त्रिविधे हिंसा त्याग करी तेने पांचे महाव्रत थयां अने सर्व पापना त्याग थइ चुक्या कह्या छे. तेम इहां पण पांच आश्रवज ओलखाव्या तेमां सर्व पापना पचखाण जाणवा. जेणे पांच आश्रवना त्याग त्रण करण अने त्रण जोगथी कर्या हशे, तेने बीजा पापना त्याग केम नही हशे? तमे तो कहो छे के, श्रावकने त्रिविधे त्रिविधे त्याग होय नही; पण भगवतीजी सूत्रना आ पाठमां समचे श्रावकने तेत्रीस आंके पापना त्याग थाय कह्या

छे. त्यारे आणंदजी सरखा पडिमाधारी-श्रावक साधुनी पेरे सुझतो आहार प्रमुख लावीने खाय तेने त्याग केम नही थशे? एवा आणंदजी सरीखा श्रावक, जे बार क्रोड सोनैयानी दोलत त्यागी, छकायनो गटको करवो त्यागीने, तपश्या धर्मध्यान करीने, आत्माने उजाळे, अने वेदनी-कर्मना उदये ज्यारे सुख सेहवा असमर्थ होय त्यारे साधुनीपेरे सुझतो आहार पाणी लावी, आत्माने भाडु दइने, धर्मध्यान ( अग्यारमी पडिमामां ) तपश्या करे, एवा जे उत्तम श्रावकना व्रतना गुणने अनुमोदी उलट भावथी हाथे दान आपे तेने शुं थाय? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, एनुं खावुं पीवुं अव्रतमां छे तेथी देववालाने अव्रत लागे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! भगवंते तो पांचमे गुणठाणे सर्व श्रावक एकज व्रतना धरणहार होय तेमने पण अव्रतनी क्रिया वर्जी छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक पहेले उद्देशे बीजे. ते पाठः—

मणुस्साणं भंते! समकिरिया? गो०! णो तिणठे समठे से केणठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गो०! मणुस्सा तिविहा पं० तं० समदिठी मिछादिठी सम्मामिछादिठी. तछणं जेते समदिठीते तिविहा पं०तं० संजया असंजया संजयासंजयाय. तछणं जेते संजयाते दुविहा पं० तं० सरागसंजयाय वियरागसंजयाय. तछणं जेते वियरागसंजयाय तेणं अकिरिया. तछणं जेते सरागसंजया ते दुविहा पं०तं० पम्मत्तसंजयाय अप्पमत्तसंजयाय. तछणं जेते अप्पमत्तसंजया तेसिणं एगामायावत्तियाकिरिया कज्जइ. तछणं जेते पम्मत्तसंजया तेसिणं दो-किरियाउ कज्जति तं० आरंभियाय मायावत्तियाय. तछणं जेते संजयासंजयाय तेसिणं आदिमाउ तिन्नि किरियाउ कज्जंतिः-आरंभिया १ परिग्गहिया २ मायावत्तिआ ३. असंजयाणं चत्तारि कि-

रियाउ कवंति. मिच्छादीठीणं पंच. सम्मामिच्छादीठीणं पंच.

अर्थः—पुर्ववत्. जुउ प्रश्न बीजो पाने १५३ में.

जावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां चोवीस दंमकना मिथ्यात्वी जीवने तो आरंजनी, परिग्रहनी, मायाप्रत्ययनी, अपचखाणनी अने मिथ्या-दर्शन प्रत्ययनी ५ ए पांच क्रिया कही; अने अव्रति समदृष्टि चोथे गुणगणे, तेने मिथ्यात्वनी वर्जीने चार क्रिया कही; अने पांचमे गुणठाणे श्रावक, तेने अव्रतनी अने मिथ्यात्वनी वर्जिने त्रणज क्रिया कही; अने प्रमादी साधु ठठे गुणठाणे, तेने आरंजनी अने मायावत्तियानी बे क्रिया कही; अने अप्रमादी साधु सातमे गुणठाणेथी लइ दसमा गुणठाणा सुधी, तेने एक मायावत्तिया-क्रिया कही; अने वीतरागसंजमी अग्यारमा गुणठाणाथी लइ तेरमा गुणठाणा सुधी, तेने एक इरियावहि क्रियाज लागे ठे. वास्ते ए पांच क्रिया आश्री अक्रिय कह्या. हवे जुउ ! आ पाठमां तो जगवंते सर्व श्रावकने अव्रतनी क्रिया टाली कही ठे. तमे मतने लीधे आणंदजी सरखा पमिमाधारी श्रावकनुं खावुं पीवुं अव्रतमां केम कहो गो अने देवावालाने अव्रत लागे केम कहो गो?

तेवारे तेरापंथी कहे ठे के, ए तो खंध आश्री टाली कही ठे, पण देश आश्री तो लागे ठे ते गणी नथी. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुजीने आरंजिया अने मायावत्तिया क्रिया कही, ते खंध आश्री कही ठे के देश आश्री कही ठे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे ठे के, "साधुजीने तो विना उपयोगे अजाणपणे किंचित मात्र लागे ते आश्री कही ठे." त्यारे जुउ. ए किंचित मात्र लागे तेने पण गणी, त्यारे श्रावकने देशथकी अव्रतनी क्रिया होय तो केम न गणे ?; पण अव्रत तो मोह कर्मनी बीजी चोकमीना अप्रत्याख्यानना उदयजावमां होय तेना जोगथी कर्म लागे तेने कहीये. ते अव्रत तो श्रावकने मुलथीज नथी, तेथी अव्रतनी क्रिया जगवंते टाली कही. तमे मतने लीधे ए सूत्रनां वचन उत्थापीने आणंदजीश्रावक जेवाने अव्रत कहीने अनंत संसार केम वधारो गो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "आणंदजी सरीखा पडिमाधारी-श्रावकने अव्रत नही, ने दान दीधामां गुण (व्रत) होय तो कोइए पण पडिमाधारी-श्रावकने दान दइने संसार परित कीधो, एवुं सूत्रमां चाल्युं होय तो पाठ बतावो; तथा कोइने बारमुं व्रत निपन्युं चाल्युं होय तो बतावो. सूत्रमां कह्या विना वात शी रीते मानीए." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! घणां सूत्र तो विछेद गयां अने बत्रीस सूत्र रह्यां. तेमां पण घणी वातो मोंघम कही छे. तमे सूत्रमां चाल्यानुं पुछो छो तो, साधवीने दान देइ कया श्रावके संसार परित कीधो ते मूल पाठ तमेज बतावो. तथा केवलीने दीधाथी कोइने बारमु व्रत निपन्युं होय तो ते पण बतावो. ए सूत्रमां चाल्या विना केम मानो छो. तमारी कहेणीने लेखे तो ए पण न मानवुं जोइए. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "केवलीना तथा आरज्याना गुण तो साधु सरीखा छे. ते साधुनुं दान बारमा व्रतमां सूत्रमां ठाम ठाम चाल्युं छे. ए सरखापणाथी मानीए छीए."

त्यारे हे देवानुप्रीय ! दसाश्रुतखंधमां आणंदजी सरखा पडिमाधारी श्रावकने 'श्रमण भूय (साधु जेवा)' कह्या छे. ते अग्यारमी पडिमानुं नामज श्रमण भुय छे. एटले पडिमाधारीने साधु सरीखा कहीए. जो साधुने दान दीधां संसार परित करता हशे तथा बारमुं व्रत निपजतुं हशे तो अग्यारमी पडिमाधारी श्रावकने साधु सरखा कह्या छे, तेमने दीधानुं फल साधुने दान दीधा सरखुं केम नही हशे? ए सरीखा कह्या ए अनुमानथी जाणवुं जोइए. वली पडिमाधारी-श्रावकने दान दीधामां पाप होय तो पडिमामां तो साधुनी पेरे मागी खावुंज कह्युं छे. पडिमाधारी तरे अने दान दइने घणा जीव डुबे, एवी करणी श्री वीतरागदेवे केम बतावी ?

आ तो एवुं थयुं. जेम ढाके, बंगाले अने कामरुदेशमां अनेक ठग (धूर्त) मित्र छे, पण एथीए उपर लखी श्रद्धावाला गुरुनुं आश्चर्य छे के, ए धर्म करवो शीखव्यो के धाडुं पाडवा शीखव्युं? वली पडिमाधारीने दान दीधामां पाप होय तो पडिमाधारी चोर करतां पण

अधिका कहेवाय; कारण के चोरतो धणीनुं धन चोरीने लइ जाय, पण धननां धणीने पाप तो न दइ जाय? अने पडिमाधारी तो अन्न वस्त्र प्रमुख माल लइ जाय अने पाप दइ जाय. वली चोर तो झाड फाडीने जातां असंधारी (खानदान) होय तो जतावो (खबर) दे के "में तमारुं झाड फाडीने माल काढयो छे माटे तमे कारी देजो; केमके रखे तमारुं झाड डुबी जाय" एम जतावो करे; पण पडिमाधारी तो जतां जतावो पण न करे के "अरे भाइ! तमे मने उलट भाव करीने दान देइ धर्म सर्दह्यो होय तो तेनुं पाप मिथ्यात तमने लागे छे. तेनी आलोवणा करी प्रायछित लइ शुद्ध थाजो." एम जतावो पण न करे. एवा विश्वासघाती आप मतलबीआ तमारे लेखे आराधिक शी रीते थया हशे? वली पडिमाधारीने दान दीधामां पाप होय तो ते डाकण सरीखा कहेवाय. जेम डाकणने वीर वलगे त्यारे ते घरनां बालक छोडीने परायां बालक जोती फरे, तेम पडिमाधारीने भुख लागे त्यारे घरनुं पाप छोडीने लोकोने पाप लगावीने डबोवता फरे. वली जेम डाकणने बालक मारवानुं कहे तो नही, पण मंत्र शीखवे तेने पाप लागे. तेम भगवंत खावा खवराववानी आज्ञा तो न आपे; पण पडिमा वहेवानी विधि शीखवे. तेमां तमारे लेखे तो भगवंतने पण पाप लाग्युं हशे; पण एम जाणवुं जे, पाप होत तो एवी करणी केम बतावत?

वली पडीमाधारीने दान दीधामां पाप कहे छे तेने पुछवुं के, पडिमाधारीने तो पाप करवा, कराववा अने अनुमोदवाना त्याग छे, अने ते आगला पासे जइने मागे तेवारे जो दातारने पाप लागे तो पडिमाधारीने पाप कराव्याथी पडिमा भागे. त्यारे हवे पडिमा शी रीते साधी शकाय ते कहो. तेवारे तेरापंथी जवाब देवा असमर्थ; पण मनथी एवां कुहेत मेलवे छे के "साधु अहार पाणी वधे तो अथवा काल, क्षेत्र उपरान्त रही गयो होय तो ते धरती उपर परठवे; पण ते पडिमाधारी श्रावकने आपे नही. जो तेने आप्यामां धर्म होय तो साधु केम न आपे? केमके साधुने पाप करवाना तो त्याग छे, पण एतो धं-

र्मनुं काम छे. ते केम नथी करता ? जो साधुने धर्म न थाय, तो श्रा-
वकने धर्म केम थशे ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधु आहार वधे
तो अथवा काल मर्यादा ( त्रण पहोर ) उपरान्त अने क्षेत्र मर्यादा
( बे कोश ) उपरान्त रहीगयो होय तो धरतीए परठवे, पण ठीय क-
ल्पी अठीय कल्पीने मांहोमांही आपे नही, अने स्थिवर-कल्पी अने
जिन-कल्पी पण मांहोमांही आपे नही. ते पाप जाणीने न आपे एम
न जाणवुं; पण तेमनो कल्प नथी तेथी न आपे. जो 'पाप जाणीने न
आपे' एवोज तमारे हठवाद छे, तो कहो. श्री महावीरस्वामीना श्रावक
श्री पार्श्वनाथजीना ( अठीय-कल्पी ) साधुने दान आपे तेमने शुं
फल थाय ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, तेमां तो एकान्त धर्म छे. वली
साधवीने साधु ऊठ्ये वंदणा न करे; पण श्रावक श्रावीका आरजाने
वंदणा करे तेमने शुं फल थाय ? तेवारे 'कहे छे के धर्म छे.' त्यारे जुओ !
ज्यारे श्रावकने धर्म थशे, तो साधु ए धर्मनुं काम केम न करे ते कहो.
तेवारे तेरापंथी कहे छे के, एतो साधुनो कल्प नथी तेथी नथी करता.

हे देवानुप्रीय ! ज्यारे असंजोगी साधुने देवानो तथा वंदणा क-
रवानो कल्प नथी त्यारे पडिमाधारीने देवानो कल्प कयांथी होय ?
वली तमे कहोछो के 'जेने साधु न आपे तेने आप्यामां पाप छे.' तो
ठियकल्पी स्थिवर-कल्पी साधुने अठिय-कल्पी साधु अथवा जिन-क-
ल्पी साधु नथी आपता. हवे ए तमारी कहेणीने लेखे तो, स्थिती
कल्पी स्थिवर कल्पी साधुने दीधानुं पण पाप थवुं जोइसे. हे देवानु-
प्रीय ! एम तो घणा बोलनो साधुनो कल्प नथी, तेथी तेवां काम तेओ
न करे; पण जो श्रावक करे तो धर्म छे. ए रीते पडिमाधारीने साधुनो
तो देवानो कल्प नथी, पण श्रावकने पाप केम कहो छो ?

वली तेरापंथी कहे छे के " पडिमाधारीनी पडिमा पुरी थइ जाय
त्यारे पाछा घरमां आवे, अने जे कायाने पोषी छे तेज कायाथी पाप करे, ते
पाप दातारने आवे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ए तमारी कहेणीने
लेखे जे श्रावक साधुने दुध, घृत, वहोरावे तेमां कीडी, पतंगीया प्रमुख

पमीने मरे, तेनुं पाप दातारने लागवुं जोइए. तेमज साधु कर्मने उदये भ्रष्ट थइने पाप करे, ए पाप पण एटला दीवस दानदइ जेणे कायाने पोषी तेने लागवुं जोइए. वली कदाच श्रावकने तो साधु भ्रष्ट थशे एवी खबर न होय, पण केवलज्ञानी तथा अवधज्ञानी मुनीराज तो जाणे छे के, ए साधु एक मास अथवा एक वरस पछी भ्रष्ट थशे; छतां तेने भेलो राखे छे, आहार पाणी लावीने आपे छे अने चाकरी करे छे. हवे ते भ्रष्टथनार तेज कायाथी पाप करशे. तमारी कहेणीने लेखे तो तेने भेलो राखवो न जोइए तथा आहार पाणी पण आपवुं न जोइए.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " विद्यमान काले साधपणुं पाले छे तेनी सहाज देवाना कामी छे, तेने तो धर्मज थशे अने पछी भ्रष्ट थइने पाप करशे तो करवावालोज भोगवशे.

हे देवानुप्रीय ! पडिमाधारीने पण विद्यमान गुण जाणीने दान आपे छे अने पछी पाप करशे तो तेज भोगवशे; पण दातारने पाप केम लागशे ? वली श्रावकने साधु धर्म शीखावे तथा त्याग पचखाण करावे तेथी देवतामां जाय, अने पल सागरो सुधी देवतानां सुख भोगवे तथा अव्रत पाप कर्म सेवे, तेनुं पाप तमारी कहेणीने लेखे तो भगवंत, केवली अने साधुने लागवुं जोइए; केमके सुपचखाण कराव्युं तेथी देवता थयो. हवे ते पाप करीने डुबत तो तेनुं पाप तो भगवंत, केवली के साधुने लागतुं नथी. ए त्यागना टंटामां पमीने केम डुबे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "साधु तो धर्म (मुक्तीमार्गना आराधिकपणा) माटे शीखवे छे अने पुण्य बंधाय तेथी देवतामां जाय छे; पण साधु तो देवतामां मोकली सुख भोगवराववाना कामी नथी." त्यारे हे देवानुप्रीय ! दातार पण पडिमाधारीने धर्म स्हायता अर्थे दान आपे छे, पण घरमां आवीने पाप करशे एम जाणीने नथी आपता; केमके पाप कराववाना कामी नथी. वली आणंदजी आदि दसे श्रावके उपासकदशा सूत्रमां पडिमावहि, तपश्या करी, काया शोषी, संलेखणा करी, संथारो करी पहेला देवलोकमां गया. तेमने एकावतारी कह्या छे, पण पडिमावहिने घरमां

पाछा आव्या कह्या नथी. तेमज कार्तिक शेठ श्रावक पांचमी पडिमा सोवार वह्या कह्या छे, पण अग्यारमी पडिमा वहीने साधुनी पेरे सुजती गोचरी करीने, आहार मागी खाइने पाछा घरमां आवे एवो पाठ तो सूत्रमां कोइ ठेकाणे कह्यो नथी.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "पडिमानो काल जघन्य अंतर्मुहूर्त तथा एक दीवसनो कह्यो छे अने उत्कृष्टो अग्यार मासनो कह्यो छे. ते पुरो थया पछी शुं करे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे के, केटलाक तो अंतर्मुहूर्त पछी, केटलाक एक दीवस पछी तथा केटलाक यावत् अग्यार मास पछी कां तो संलेखणा करीने संथारो करे, कां तो दिक्षा ले, पण घरमां न आवे; केमके आवे तो लोकमां जैन-मार्गनी लघुता थाय अने पोतानी निंद्या थाय. लोको कहे के, हवे करणी करता थाकी गया तेथी भ्रष्ट थइने घरमां आवी बेठा छे; तेटला वास्ते घरमां न आवे एम कह्युं छे. हवे तमे कया सूत्र, पाठ, टीका, निर्युक्तिना न्यायथी कहो छो के, अग्यारमी पडिमा वहीने पाछा घरमां आवे ते बतावो. अरे भाइ! तमे मतने लीधेज "पडिमाधारी पाछो घरमां आवीने पाप करे ते दातारने लागे." एवी जुठी कुयुक्ति लगावीने संसार केम वधारो छो? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "पडिमाधारी श्रावकने दान आपे तेमां धर्म होय तो साधुजी, भगवंत अने केवली तेने दान देवानी आज्ञा केम नथी आपता?" तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! पडिमाधारी श्रावकने पडिमानी विधि भगवंते, केवलीए अने साधुए बतावी छे. तेवारे उपदेशमां तो आज्ञा थइचुकी, अने आदेशमां तो आज्ञा एक पोताना संजोगी टाली बीजा कोइने अहार पाणीनी आज्ञा आपे नही. जेम पोसामां पलेवण करवानुं साधुजी शीखवे छे. ए उपदेशमां तो आज्ञा छे पण, विद्यमान पलेवण करतीवेला आज्ञा आपे नाहिं. पण पाप न जाणे. जो पलेवणमां पाप होय तो पोसामां पाप करवा करावचाना त्याग छे, ते पलेवण कर्याथी पोसो

लागे, अने पलेवण न करे तो अतिचार लागे. ए अतिचार टाळ्यामां धर्म छे छतां आदेशमां आज्ञा आपे नही. वळी साधुजी आव्याथी श्रावक उनो थाय, साधुजीना सांमो जाय तथा घरमांथी वस्तु लावीने वहोरावे, एटला कामनी आदेशमां आज्ञा आपे नहिं; पण उपदेशमां तो धर्म बतावे. ए उपदेश-आज्ञा छे. वळी स्वसंजोगी साधुनेज बे आज्ञा छे, अने असंजोगी साधुने तथा श्रावकने कोइक बोलमां बे आज्ञा छे. तेमां कोइक बोलमां उपदेश-आज्ञा छे अने आदेश-आज्ञा नथी. तमे आज्ञा कल्पना नेदना अजाण्या थका कहो छो के "पडिमाधारी श्रावकने दान देवानो साधुजी आज्ञा न आपे, तेथी ए काम आज्ञा बहार छे." एवां आल केम द्यो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "पडिमाधारी श्रावकने दान दीधामां सूत्रमां कयांय धर्म के व्रत कह्युं होय तो ते पाठ बतावो." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! नगवती सूत्रना आठमा शतकना छठा उद्देशमां कह्युं छे के, श्रमणो-पासक श्रावक, तथारुप श्रमण कहेतां साधु प्रत्ये, वा कहेतां अथवा, माहण कहेतां श्रावक प्रत्ये प्रासुक एषणिक बेतालीस दोष रहित प्रतिलाने तो एकान्त कर्मनी निर्जरा थाय; पण लगार मात्र पाप नथी.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "समणंवा माहणंवा कह्या छे ते बंने नाम साधुनांज छे. ते सूत्र सूयगडांगमां कह्या छे.तेमने दीधांमां निर्जरा कही छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधुनां नाम तो समण, माहण, निखु, संजइ, मुनि, ऋषी इत्यादिक घणां कह्यां छे; पण एक कार्यमां बे नाम आवे नही. समणंवा, संजयंवा, निखुवा, ए रीते बे नाम एक कार्यमां बत्रीस सूत्रमां कोइपण ठेकाणे आव्यां होय तो बतावो. ए पुनरुक्त वचनरुप दोष श्री वीतरागनी वाणीमां आवे नही. समणं कहेतां साधुप्रत्ये, ने वा अथवा माहणं कहेतां साधु प्रत्ये, एम अर्थ न होय. ए शब्द वचमां छे ते तो विकल्प अर्थ वास्तेज छ. समण साधु प्रत्ये अथवा माहण श्रावकप्रत्ये. इहां माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज

माहण प्रत्ये वांदे, नमस्कार करे अने प्रीयकारी दान आपे तो शुन्न-दीर्घ-आयुष्य बांधे. एमज तथारुप समणने दान दीधाथी अशुन्न-दीर्घ-आयुष्य अने शुन्न-दीर्घ-आयुष्य सूत्र ठाणायांगने त्रीजे ठाणे कह्युं छे. एमज साधुनुं तथा पडिमाधारी श्रावकनुं दान घणा सूत्रमां जेलुं कह्युं छे अने तेनां फल सरखां कह्यां छे. समणं वा माहणंवा एवो पाठ एक कार्यमां आवे अने वा शब्द वचमां आवे त्यां समण कहेतां साधु, वा अथवा माहण कहेतां श्रावक, एवोज अर्थ संन्नवतो छे. 'वा' शब्द विकल्प अर्थने वास्ते छे. तमे कहो छो के "समणं कहेतांए साधु वा अथवा अने माहणं कहेतांए साधु." तो एवो 'समणंवा माहणंवा' एक कार्यमां पाठ कोइ सूत्रमां होय तो बतावो, के जेमां साधुनोज अर्थ थाय अने श्रावकनो अर्थ न थाय.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "बीजी तो अनेक जग्याए 'समणं वा माहणंवा' पाठ आव्यो त्यां तमे माहण शब्दनो अर्थ श्रावक करी देशो, पण ठाणायांगमां त्रीजे ठाणे, तथा-रुप समण माहणने अतिशय-ज्ञान उपजे कह्युं छे. ते अतिशय-ज्ञान तो साधुनेज उपजे. त्यां पण वा शब्द वचमां छे. समणंवा माहणंवा एवो पाठ छे. इहां साधुनोज अर्थ संन्नवे छे. तेम दानमां पण बंने शब्दनो साधुज अर्थ संन्नवे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र जगवतीना अग्यारमा शतकमां, शीवराज ऋषिश्वरने विन्नंग ज्ञान उपन्युं तेने अतिशय-ज्ञान कह्युं छे. ते अतिशय-ज्ञानना त्रण न्नेद कह्या छेः-अवधि १ मनःपर्यव २ अने केवल ३. हवे जुओ ! मिथ्यात्वीना विन्नंग-ज्ञानने पण अतिशय-ज्ञान कह्युं छे त्यारे श्रावकने अवधिज्ञान उपजे तेने अतिशय-ज्ञान केम न कहीये ? केमके अतिशय-ज्ञान तो आश्चर्यकारीनुं छे. ते अवधज्ञानरुप अतिशय-ज्ञान श्रावकने उपजे छे, ते न्नणी इहां पण माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज छे; कारण के वा शब्द वचमां छे.

तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के "ठाणायांगने त्रीजे ठाणे तथा-रुप समण माहणने केवलज्ञान उपजे कह्युं छे. इहां पण समणंवा माहणंवा

एवो पाठ छे अने वा शब्द वचमां छे. इहां तो माहण शब्दनो अर्थ साधुनोज हशे, कारण के केवलज्ञान तो श्रावकने उपजतुं नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! ठाणायांग ठाणे त्रीजे उद्देशे चोथे त्रण प्रकारना जिन कह्या छेः—उहीनाणंजीणं १ मनपर्यवनाणंजीणं २ केवलनाणंजीणं ३. एज रीते त्रण अरिहंत केवली कह्या छेः-अवधज्ञानी केवली १, मन-पर्यवज्ञानी केवली २, अने केवलज्ञानी केवली ३. ए अवधज्ञानीने के-वली कह्या छे ते अवधज्ञान श्रावकने पण उपजे छे ते माटे. इहां पण माहण शब्दनो अर्थ 'वा' शब्द वचमां छे माटे श्रावकज थाय; अने इहां तो समचय समण माहणने केवल उपजे कह्युं छे. वली ज्यां पांचमुं के-वलज्ञान उपन्युं कह्युं, त्यां तो 'कसिणे पडिपुन्ने निरावरणे अपडिहय केवल वरनाणदंसणे समुपजेजा.' एवो पाठ छे. वली एवो पाठ एक का-र्यमां कोइ सूत्रमां दीसतो नथी के समणंवा माहणंवा शब्दमां साधु-नोज अर्थ थाय अने श्रावकनो न थाय; पण 'वा' शब्द वचमां होय अने एक कार्यनी पुछा होय त्यां माहण शब्दनो अर्थ श्रावकज थाय. ए सूत्रनो न्याय जोतां साध श्रावकने दाननां फल भेलांज कह्यां दीसे छे. वली सूयगडांग तथा उववाइ सूत्रमां एवो पाठ छे के, एगंतसमेसुसाहु एटले श्रावकने एकान्त पक्षमां भला साधुज कहीये. हवे साधुने दान दीधामां लाभ थशे तो श्रावकने पण साधु कह्या छे, तेमने दीधामां लाभ केम नही थाय ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "इहां तो माहण शब्दमां समचय श्राव-कनो अर्थ कर्यो छे. त्यारे तो बधाए श्रावकने दान दीधामां साधुना दान सरखां फल कहो. पडिमाधारीनेज केम कहोछो ?" तेनो उत्तर. हे दे-वानुप्रीय ! दानना पाठ कह्या त्यां बधा पाठमां 'तहारुवं समणंवा माह-णंवा' एवो पाठ छे. ते तथारुप समण ते साधु ओघो, मुहपत्ति, वस्त्र, पात्रां सहित स्वलिंगी; अने तथारुप माहण ते पडिमाधारी श्रावक. तेने प्रा-सुक एषणिक अचित बेतालीस दोष रहित दाननी पुछा छे. ते माटे पडिमाधारी श्रावक संभवे छे; अने सुजता दाननो लेवावालो अने सम-

पजूए ( साधु सरीखो ) पडिमाधारीनेज दसा श्रुतखंधमां कह्यो छे. वली अनेरा पण कोइ उत्तम श्रावक संसारथी विरक्तभावे पापना त्यागी सुझतुं खाय छे, तेमने दानदेवावाला दातारने पण चोखांज फल लागशे. तेमज अनेरा उत्तम श्रावकनो आरंभ टलावीने अचित तैयार रसोइ, सीरणीना (मिठाइना) पुद्गलनी साज देइ, तपसा सामायक पोसा करावशे तेने पण धर्म दलालीनां चोखां फल लागशे.

वली तेरापंथी कहे छे के " श्रावक तो फेरना वाटका छे, कुपात्र छे. ते कुपात्रने दान दीधामां अने वंदणा कर्यामां मुक्तिनो मार्ग( धर्म ) क्यां कह्यो छे ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! भगवंते तो श्रावकने तीर्थ ( जेथी तराय ते तीर्थ ) कह्या छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक २० मे उद्देशे ८ में. ते पाठ लखी छीए:—

तित्थ भंते! तित्थंकरेइ तित्थं? गोयमा! अरहा ताव नियमं तित्थंकरेइ तित्थंपुण चाउवण्णे समण संघे पंन्नते तं० समणा समणिउ सावय सावियाउ ॥

अर्थः—ति० तीर्थ भं०हे भगवान ! ति० तिर्थंकरने कहीये? के ति० चतुर्विध संघने तीर्थ कहीए? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० अरिहंत ता० यावत् नि० नियम करीने पहेलां ति० तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्तावणहार छे, पण तीर्थ नथी. ति० तीर्थ तो वली चा० चार वर्ण जीहां चतुर्वर्ण कहीये, ते क्षमादि गुणे करी व्याप्त स० श्रमण सं० संघ पं० कह्या, तं० ते जेम छे तेम कहे छेः— स० साधु स० साधवी सा० श्रावक अने सा० श्रावीका.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां अरिहंतने चार तीर्थना कर्ता तीर्थंकर कह्या; अने साध साधवी श्रावक अने श्रावीका, ए चारने सरखां तीर्थ ( तरवानां ठाम ) कह्यां. वली सूयगडांग सूत्रना बीजा श्रुतष्कंधना पहेला अध्ययनमां पुंडरिक कमल उधरवाने अधिकारे, चार तीर्थने संसार समुद्रनो तीर (कांठो) कह्यो. वली सूयगडांग सूत्रना

बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां त्रण पक्ष कह्या छे. अधर्म पक्षमां मिथ्यात्वी अव्रती अने अपचखाणी १, धर्म पक्षमां साधुजी सर्व पापना त्यागी २, अने मिश्र पक्षमां श्रावक ३. तेमां श्रावकने तो मिश्र पक्षे धर्माधर्मी कह्या. ए त्रण पक्षना वर्णवनो घणो पाठ छे. ते सूयगडांगमां जोइ लेवो. त्यां श्रावकने धर्मी, सुव्रति, आर्य अने एकान्त साचा साधु कह्या छे. पछी त्रण पक्षना बे पक्ष कर्या. एक धर्म पक्ष अने बीजो अधर्म पक्ष. त्यां उदय-भाववर्ती अवगुणतो तुच्छसमान, ते गौणतामां राखी गण्या नही, अने क्षयोपशमभावना गुण मेरुसमान, ते मुख्यतामां गण्या. ते माटे श्रावकने विशेष पक्षे धर्म पक्षमां गण्या छे. हवे जुओ ! ए पाठमां श्रावकने साधु, धर्मी, सुव्रति अने आर्य कह्या छे; अने तमे कुपात्र कहाछो, तो पूर्वोक्तगुण कुपात्रमां शी रीते होइ शके? वास्ते श्रावक सुपात्रज छे. वली उववाइ सूत्रमां साधु श्रावक बंनेना गुण ( बिरद ) सरखा कह्या छे. ते श्रावकना गुणनो पाठः—

सेजेइमे गामागर णगर जाव सनिवेसेसु मणुया भवंति तं० अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मीया धम्माणुया धमिठा धम्मक्खाइयं धम्मपलोइ धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्तीकप्पेमाणा सुसीला सुवया सुपडियाणंदा साहू ॥

अर्थः—से० ते जे इ० ए गां० गाम, अगर, नगर जा० यावत् स० सनीवेषने विषे म० मनुष्य श्रावक भ० होय तं० ते जेम छे तेम कहे छे. अ० थोडा आरंभी अ०प० अल्प परिग्रहावंत, पण लोकोत्तर पक्षी श्रुत चारित्र सहित छे ध० धार्मिक ध० श्री वीतरागना धर्मनी केडे चाले धमि० धर्म वहालो छे जेने धम्म० शुद्ध धर्मना परुपक छे (सुबुद्धि प्रधानवत्) धम्मप० धर्मने विषे वारंवार नजर राखे ध० धर्मने रंगे रंगाणा छे तथा लज्जावंत ध० धर्मने कोइ छलभो दइ न शके ध० धर्मने विषे हर्ष सहित आचार छे जेनो ध० अखंड व्रत पचखाणपालता थका वि० आ·

ज़िवीका ( वृत्ति ) करता थका प्रवर्ते. सु० ज्ञला आचार ठे जेना सुव्र० ज्ञलां व्रत ठे जेनां सु० धर्मने विषे आणंद सहित चित्त ठे जेनुं ते सा० धर्म पक्के साधु.

ज्ञावार्थः—हवे जुर्ज ! आ पाठमां अल्प आरंज्ञी अने अल्प परिग्रही, ए बे बोल तो श्रावकना न्यारा कह्या. बाकी आठ बोल श्रावकना कह्या तेमज साधुना कह्या. ते पाठः—

सेजेइमे गामागर जाव सणिवेसेसु मणुया ज्ञवंति तजहाः- अणारंज्ञा अप्परिग्गहा धम्मिया धमिठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा सुसिला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू॥

अर्थः—से० तेजे गा० गाम, आगर जा० जावत् स० सनिवेशने विषे म० मनुष्य साधु ज्ञ० होय तं० ते जेम ठे तेम कहे ठे. अ०आरंज्ञ रहित अ० परिग्रह रहित ध० सर्वधर्मी ध० धर्म वाहालो ठे जेने जा० यावत् ध० चारित्र धर्मे करी वि० संजमनो आजिवीका (व्रति) पालता थका सु० ज्ञला शीयलवंत सु० सुव्रत सु० ज्ञलां आनंदनां चित्त ठे जेनां सा० एवा साधु साहु.

ज्ञावार्थः—हवे जुर्ज ! आ पाठमां अणारंज्ञी अने अपरिग्रही ए बे बोल साधुना श्रावकथी न्यारा कह्या. बाकी आठ गुण साधुना अने श्रावकना सरखा कह्या ठे. धम्मिया धम्माणुया इत्यादिक. हवे आ सूत्रना पाठमां "धर्मी, धर्मनी केडे चाले, धर्म वल्लज्ञ, शुद्ध धर्मना परूपक, धर्मने विषे द्रढ, धर्मना रंगे रंगाणाथका, लज्जावंत, धर्मने विषे हर्ष सहित आचार ठे जेनो, धर्म व्रत राखीने आजिवीका ( वृत्ती ) करता थका प्रवर्ते, ज्ञलो आचार ठे जेनो, ज्ञलांव्रत ठे जेनां, आनंद चित्त ठे धर्मने विषे, धर्म पक्के साधु." एटला गुणना बिरद साधु अने श्रावकना श्री वीतरागदेवे बराबर कह्या ठे. आ गुणे करीने साधुने सुपात्र कह्या ठे. त्यारे एज गुण साधुना सरखा श्रावकना कह्या ठे माटे श्रावक पण सु-

पात्रज छे. वली पालतजी श्रावकने नगवंते मोटी आत्माना धणी शिष्य कह्या छे. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन. २१ में. ते पाठः—

चंपाए पालिएनाम, साविए आसी वाणिए;
महावीरस्स नगवउ, सीसो सोउ महप्पणो. ॥ १ ॥
निग्गंथे पावयणे, साविए सेवि कोविए;
पोहणे ववहरंते, पिहुंरुं-नगर मागए. ॥ २ ॥

अर्थः—चं० चंपानगरीने विषे पा० पालीतनामा सा० श्रावक आ० छे वा० वाणीयो वेपार करे. म० नगवंत श्री महावीर स्वामीनो सि० शिष्य (श्री महावीरे समजाव्यो माटे शिष्य) सो० ते म० महंत आत्मानो धणी नि० निर्ग्रंथ संबंधि पा० प्रवचन सिद्धांन्तने विषे सा० श्रावक से० ते विशेष को० कोवीद जाण विचीक्षण पो० वाहाणे करी व० व्यापार करतो थको पि० पीहुरू नगरे मा० आव्यो. ॥ २ ॥

नावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां पालतजी श्रावकने नगवंतनो शिष्य, मोटी आत्मानो धणी कह्यो तथा नगवंतना वचननो रसिक पंमीत कह्यो. हवे जुउ! नगवंतनो शिष्य कह्यो ते कुपात्र के सुपात्र? वली अढार पापने सफल करे ते तो मोटुं पाप मिथ्यात्व, ते तो श्रावकने नथी. वली अपचखाणनी क्रिया मूलथीज टाली छे अने अशुन्न जोगनुं अल्प पाप, ते नथी गण्युं; तेथी साधुना सरखा बिरद कह्या. एटला बीरदमां एके बीरद हीणुं:नथी ते माटे श्रावक सुपात्रमां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "एटला सूत्रमां गुण वखाण्या ते तो व्रतना पक्षथी क्षयोपशम नावना गुण वखाण्या छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! साधुने पण व्रतना क्षयोपशम नावना गुणथी वखाण्या छे के शरीर, इंद्रि, जोग, आहार कषाय इत्यादिक उदयनाव, तेथी वखाण्या छे? जे गुणथी साधुने वखाण्या छे तेज गुणथी श्रावकने पण वखाण्या छे. आरंन्नीयाक्रिया, उपयोग-राहतपणुं, विक्रय-शरीरपणुं, लब्धिस्फोरण, संजलना क्रोध, मान, माया, लोन्ननो उदय अने राग द्वेष, ए पक्ष आश्री

साधुने धम्मीआदि नथी कह्या. क्षयोपशम भाव आत्मिक गुणआश्री साधुने पण 'धम्मिआ' सुपात्र कह्या. तेमज श्रावकने पण क्षयोपशम भावना गुण (ज्ञान, दर्शन, व्रत) प्रगट्या ते आश्री धम्मीआ सुपात्र कह्या. वली उत्तराध्ययन सूत्रना सातमा अध्ययननी वीसमी गाथामां, ग्रहस्थ भद्रीक प्रणामी अनुकंपा सहित होय तेने पण सुव्रती कह्यो छे. ते गाथाः—

वेयमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिरि सुवया; उवेति माणुसं जोणिं कम्म सच्चाहु पाणिणो. ॥

अर्थः—वे० अनेक प्रकारे सि० भद्रिक प्रणामादिक शिक्षाए जे० जे न० मनुष्य गि० ग्रहस्थ छतां सु० अनुकंपादिकथी सुव्रतपणे उ० पामे मा० मनुष्यनी. जो० जोनी क० कर्म ते करणी. स० सत्य वचन बोले तथा दयावंत, एवा पा० प्राणी होय ते मनुष्यपणुं पामे.

भावार्थः—हवे जुओ! आ गाथामां मनुष्य मरीने मनुष्य थाय तेने भद्रिकपणाना अनुकंपाना गुण आश्री ग्रहस्थपणामां सुव्रति भगवंते कह्यो. त्यारे श्रावकने सुव्रति सुपात्र केम नही कहेशो? डाह्या हो ते वीचारी जो जो. वली साध श्रावक बंनेने भगवंते रत्ननी माला कही छे ते माटे बंनेने सुपात्र कहीए.

तेवारे तरांपथी कहे छे के, "साधुने अने श्रावकने रत्ननी माला कही तो छे, पण साधुने मोटी अने श्रावकने नानी कही छे." एम कहे छे. पण भगवंते तो छोटी मोटी कही नथी. एक सरखी कही छे. शास्त्र सूत्र भगवंती शतक १६ में उद्देशो. छठे ते पाठः—

जेणं समणे भगवं महावीरे एगं महं दाम दुगं सव्व रयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुध्धे. तएणं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पणवेई तं० आगार धम्मंवा अणगार धम्मंवा ॥ ४ ॥

अर्थः—जे० जे स० श्रमण ञगवंत श्री महावीरस्वामी ए० एक म० मोटी दा० मालानो दु० जोमो स० सर्व र० रत्नमय सु० स्वप्नने विषे पा० देखीने प० जाग्या. त० ते स० श्रमण ञगवंत श्री महावीर देवे दु० बे प्रकारे ध० धर्म प० परुप्यो तं० ते कहे ढेः-आ० ग्रहस्थनो सम्यक्त पूर्वक बारव्रतरुप धर्म अने अ० साधुनो ध०पंच महाव्रतरुप धर्म.

ञावार्थः—हवे जुउं! आ पाठमां तो कह्युं ढे के, ञगवंत श्री महावीर स्वामीए एक मोटी मालानो ( जुगल ) जोमो दीठो. तेना प्रञावे ञगवंते बे प्रकारनो धर्म परुप्योः-श्रावकनो अने साधुनो. इहां तो एक माला बे सेरनी देखी, एवो परमार्थ दीसे ढे. ढोटी मोटी तो कही नथी. हवे ढोटी मोटी बे माला कहे ढे तेने पुढीए के, रत्न समकितने कहीए के व्रतने कहीए? सूत्रमां केवी रीते ढे? ए देखतां तो तमे व्रतने रत्न कहेता देखाउं ढो; पण सूत्रमां तो समकितने रत्न कह्युं ढे. प्रथम तो ज्ञाता सूत्रना पहेला अध्ययनमां मेघकुमारने श्री वीरञगवाने "अपमिलद्ध समत्तरयण लंञेणं" कह्युं ढे; पण क्रियारुप धर्मने तो रत्न कह्युं नथी. हमणांना चार तीर्थ पण एम कहे ढे के "मारा समकित-रुपी रत्नने विषे जे अतिचार लाग्यो होय ते आलोउं" एम कहे ढे; पण व्रतने तो रत्न कहेता देखाता नथी. माटे समकित तेज रत्न ढे, कारण के जेने प्राप्त थये शुक्लपक्षी अने अर्धपुद्गलमां निश्चे मोक्षगामी थवाय; पण क्रिया रत्न नथी. जो क्रिया रत्न होय तो अज्ञानीने मुक्ति केम नथी? वली सूत्र ञगवतीमां समकितने पढमा कही ढे अने क्रियाने तो अपढमा कही ढे. क्रिया तो जीवे अनंतीवार करी, पण गरज न सरी, ते माटे रत्न नथी. वली क्रिया तो स्त्रीरुप ढे अने ज्ञान तो ञरथाररुप ढे. वली अनुयोगद्धारमां क्रियाने आंधली कही ढे अने ज्ञानने पांगलो कह्यो ढे. जेम रथ एक पइमाथी न चाले, पण बे पइमाथी चाले; तेम ज्ञान अने क्रियाने संयोगे फलनी सिद्धि कही. वली दस वैकालीक सूत्रना चोथा अध्ययनमां 'पढमंनाणं तउदया' ए गाथाथी इइने चोथी गाथा सुधी समकित सहित क्रियाने संजम कह्यो ढे; अने

मिथ्यात्वी अन्नव्य, व्यवहारमां उत्कृष्टो संजम पाले तोपण समकित रहित छे तेथी असंजमी कह्यो. इत्यादिक अनेक सूत्र पाठमां समकितने रत्न कह्युं छे अने साधु श्रावक बंनेने सरखुंज छे. साध श्रावकने रत्ननी माला पण समकित आश्री कही छे ते बंने सरखी छे. नानी मोटी सूत्रमां कोइ ठेकाणे कही नथी. वली साधुने तो सुपात्र कहीए अने श्रावकने न कहीए; एवो खुल्लो पाठ तो सूत्रमां कोइ ठेकाणे कह्यो दीसतो नथी. साधु साधवीने क्षयोपशम न्नावना गुणे करीने सुपात्र कहो छो, त्यारे आणंदजी सरखा श्रावकने क्षयोपशम न्नावना गुण प्रगटया तेथी श्रमण सरखा कह्या; तेने एटला सूत्रना पाठ उत्थापीने मतना लीधे कुपात्र कहीने अछतां आल केम द्यो छो ?

वली तेरापंथी कहे छे के "श्रावक खावा पीवाना, कपमा घरेणां पहेरवाना तथा सर्व वस्तुना त्याग करे तेने व्रत कहीये. ते उपवास व्रत करे तो धर्म, बीजाने करावे तो धर्म, अने करताने न्नलो जाणे तो धर्म; पण तेनो आहार अपचखाणमां अने आगारमां छे. तेथी पारणाना दीवसे पोते खाय तो पाप, बीजाने खवरावे तो पाप, अने खाताने न्नलुं जाणे तो पाप." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! एम तो साधु एक पछेमी तथा एक पात्रा उपरान्त त्याग करे तो ते उत्तर-गुणव्रत पचखाण निपजे; अने आहारनो त्याग करे तो उपवासनो उत्तर-गुण पचखाण निपजे; अने आहारादिकनो त्याग न होय त्यारे उत्तर-गुणना अपचखाण कहीए. हवे तमारी कहेणीने लेखे तो साधुना खावामां पण पाप हशे; पण न्नगवंते तो साधु श्रावक बंनेने आहारादिकना त्यागने उत्तर-गुणव्रत पचखाण कह्या छे, अने त्याग न होय त्यारे आहारादिकना उत्तर-गुण अपचखाण साध श्रावक बंनेने कह्या छे. माटे हे देवानुप्रीय ! अव्रत तो साधु के श्रावक एकेने नथी. साधु तो सर्व व्रतिछेज, अने श्रावकने पण अव्रतनी क्रीया टाली छे; अने तेने पचखाणी पचखाणी कह्या ते तो शुन्नाशुन्न योग आश्री छे. ते साध श्रावक बंनेने छे. शास्त्र सूत्र न्नगवतीजी शतक सातमे उद्देशे बीजे. ते पाठः—

कइविहेणं भंते! पच्चक्खाणे पं०? गो०! डविहे पच्चक्खाणे पं० तं० मुलगुणपच्चक्खाणेय उत्तरगुणपच्चक्खाणेय. मुलगुण-पच्चक्खाणेणं भंते! कइ विहे पं० ? गो०! डविहे पं० तं० सवमुलगुणपच्चक्खाणे देसमुलगुणपच्चक्खाणे. सवमुलगुण-पच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे पं० ? गो०! पंचविहे पं० तं० सवाउपाणाइवायाउवेरमणं जावसवाउपरिग्गहाउवेरमणं. देसमुलगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे पं० ? गो०! पंच-विहे पं० तं० थुलाउपाणाइवायाउवेरमणं जावथूलाउप-रिग्गहाउवेरमणं. उत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते कइविहे पं०? गो०! डविहे पं० तं० सवउत्तरगुणपच्चक्खाणेय देसुत्तर-गुणपच्चक्खाणेय. सवुतरगुणपच्चक्खाणेणं भंते कइविहे पं०? गो०! दसविहे पं० तं० गाहा. अणागय १ मइक्कंतं २ कोम्हिसहियं ३ नियंटियंचेव ४ सागार ५ मणागार ६ परिमाणकम्मं ७ निरवसेसं ८ संकेयंचेव ९ अद्धाइ १० प-पच्चक्खाणेणं भवे दसविहा.॥ देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे पं० ? गो०! सत्तविहे पं० तं० देसियवयं उवभोग परिभोग परिमाणं अणठदंमवेरमणं सामाइयं देसावग्गासियं पोसहोववासो अतिहिसंविभागो अपहिम-मारणंतिय संलेहणा जुसणा राहणया.॥

अर्थः—पुर्ववत्. जुओ प्रश्न पहेले. पाने चोथे.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां बे प्रकारनां पचखाण कह्यांः— मूलगुण-पचखाण अने उत्तरगुण-पचखाण. मूलगुण-पचखाणना बे भेदः--सर्व मूलगुण-पचखाण अने देश मूलगुण-पचखाण. उत्तरगुण-पचखाणना बे भेदः--सर्व उत्तरगुण-पचखाण१ अने देश उत्तरगुण-

पचखाण२. सर्व मूलगुण-पचखाण तो पांच आश्रवना सर्व त्याग करे तेने कहीए, ते तो साधुजीनेज होय. वली वर्णनागनतुवे अने अंबरूजीना शिष्य प्रमुख अनेक श्रावकोए संथारा कर्या तेमने तथा पडिमाधारी प्रमुख श्रावकने पण त्याग थया; अने हिंसादिक पांच आश्रवना देश थकी त्याग करे ते श्रावकने देश-मूलगुण-पचखाण थाय; अने सर्व उत्तरगुण-पचखाण नवकारसी, पोरसी, पुरिमढ, एकासणुं, एकलठाणुं, नीवी, आयंबील, उपवास, बेला,तेला, जावत् संथारो, ए साधु श्रावक सर्वथा आहारादिकना त्याग करे तेनेज निपजे; अने श्रावकनां उपलां सात व्रत (छठाथी लइने बारमा सुधी) ए देश उत्तरगुण-पचखाण श्रावकने तो छेज; अने साधुने केटलाक तो पचखाण पांच आश्रवना सर्वथा त्याग छे तेमां आवी गया अने केटलाक साधुना वेशना व्यवहारनी साथे आवी गया. बाकी द्रव्यादिक अहार, उपगर्ण, वस्त्र अने पात्रादिकना देशथकी त्याग करे त्यारे साधुजीने देशथकी उत्तरगुण-पचखाण निपजे. वली हिंसादिक पांच आश्रवना सर्वथकी त्याग अथवा देशथकी त्याग न होय तेने मूल-गुणना अपचखाणी कहीए; अने आहार वस्त्रादिकनो सर्वथकी अथवा देसथकी त्याग न होय तेने उत्तरगुणना अपचखाणी कहीए. ए लेखे श्रावक सुपात्रमां छे अने तेना दानमां प्रणामानुसारे दातारने फलनी प्राप्ती थाय छे. तमे श्रावकने कुपात्र कहीने श्रावकनी अशातना-रुप अबोध पाप केम उपार्जन करो छो ?
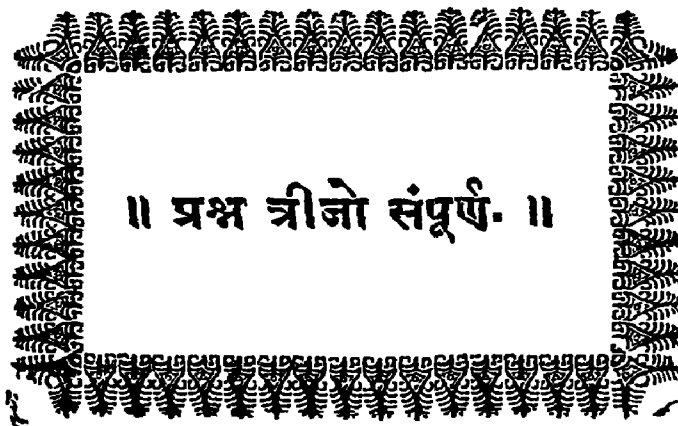
॥ प्रश्न त्रीजो संपूर्ण. ॥

## प्रश्न चोथो.

### साधुनो आहार, हालवुं, चालवुं इत्यादि, व्रतमां ( धर्ममां ) छे, एम कहे छे ते बाबत.

हवे जुओ! ए सातमा शतकना बीजा उद्देशामां साधु श्रावक बंनेने आहार वस्त्रादिकना त्यागने उत्तरगुण-पचखाण कह्या; अने आहार वस्त्रादिकनो त्याग न होय तो उत्तरगुणना अपचखाण कह्या. हवे तमे (तेरापंथी) कहो छो के "श्रावकने पारणाने दीन आहारादिकनो त्याग नथी. आहारनो आगार छे. तेने अव्रत अपचखाण कहीए. तेथी श्रावकनुं खावुं पीवुं पापमां छे." ए लेखे तो साधुजीने पण पारणाने दीन आहारनो त्याग नथी. ते आगारने भगवंते तो साधु श्रावक बंनेने उत्तरगुणना अपचखाणी कह्या छे, ए तमारी केहेणीने लेखे तो साधु पारणाने दीन खाय तेमां पण पाप हशे. कोइ श्रावक आरंभ करीने खाय ते आरंभनुं पाप तो न्यारुं छे, पण आहारना अपचखाण आश्रीतो साध श्रावक बंनेने सरखा कह्या छे, ते उदयभावमां छे. जेम उंच गोत्र, मनुष्यनी गति, पंचेंद्रिनी जात अने पांच शरीर, इत्यादि उदयभावमां छे. ते धर्म पाप एकेमां नथी. एथी धर्म करे तो धर्म निपजे अने पापनां काम करे तो पाप निपजे. तेम साध श्रावकने आहारादिकनुं खावुं उदय-भावमां छे. ते धर्म पाप एकेमां नथी. जो शरीर वधारवा निमित्ते रागद्वेष अने अशुभजोगथी खाय तो साध श्रावक बन्नेने पाप लागे; अने ज्ञान, दर्शन अने व्रत नभाववाने अर्थे खाइने शुभ भावना भावे तो बन्नेने निर्जरा थाय.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "साधुनुं तो हालवुं, चालवुं, आहार करवो, निहार करवो, बोलवुं, सर्व काम व्रतमां छे धर्ममां छे. एम दश-

वैकालीक सूत्रमां कह्युं छे. " एवुं सूत्रनुं जुठुं नाम ले छे. ते दशवैकालीक सूत्रना पांचमा अध्ययनना पहेला उद्देशानो पाठः—

उजुपणो मणुविग्गो, अविक्खित्तेण चेअसा;
आलोय गुरु सग्गासे, जं जहा गहियं नवे ॥ ९० ॥
नसम्म मालोइयं हुजा, पुवं पछा वजं कडं;
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसठो चिंतए इमं ॥ ९१ ॥
अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ति साहुण देसिया;
मोक्खसाहण हेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
नम्मुकारेण पारित्ता, करित्ता जिण संथवं;
सज्जायं पठवित्ताणं, विसमिज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥

अर्थः—उ० सरल मतिवंत म० उद्वेग रहित छतो अ० एकाग्र चित्ते आ० आलोवे गु० गुरुनी समिपे जं० जे जा० जेम ग० ग्रात पाणी लीधुं न० होय तेम. न० जो सम्यक् प्रकारे मा० आलोव्युं हु० न होय पु० पुर्व कर्म प० पश्चात कर्म क० अतिचार कीधो होय पु० ते वली प० पडिक्कमामि गोयरियाए इत्यादिक पाठ कहीने काउसग्ग करे. त० ते सुक्ष्म अतिचारनुं पाप टालवाने अर्थे कायोत्सर्ग करे. वो० ते, कायोत्सर्गमां चिं० चिंतवे इ० आगल कहेशे तेम. अ० आश्चर्य जि० तीर्थंकरे अ० पाप रहित वि० आजीविका सा० साधुने दे० देखाडी कही छे. मो० मोक्ष साधवाना हे० हेतुजणी सा० साधुनी दे० देहने धा० आधार देवाने अर्थे न० नमो अरिहंताणं कहीने पा० काउसग्ग पारीने, क० करीने जि० जिन संस्तव (लोगस्स) कही स० हेठे बेठा पढी जघन्य तो गाथा त्रणनो सझाय प० करीने वि० विसामो ले. ख० क्षण एक मु० साधु.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, साधु गोचरीथी पाछा आवीने आहारना अतिचार एषणिक अणेषणिक आलोववा, कोइ शुक्ष्म दोष भुली गया होय तो ते टालवाने अर्थे काउसग्ग-

मां एवी चिंतवणा करे " अहो इति आश्चर्य ! श्री तीर्थंकरे मोक्ष साधवाना हेतु भणी साधुनी देहने आधार देवाने अर्थे पाप रहित आजीविका साधुने देखाडी. " पछी ' नमो अरिहंताणं ' कहीने काउसग्ग पारे. पछी ( जीन स्तवन ) लोगस्स कहीने, जघन्य त्रण गाथानी सझाय करीने साधु क्षण एक विसामो ले. ए त्रण गाथामां तो साधु ध्यानमां एवी चिंतवणा करे, एवो अधिकार कह्यो छे; पण साधुनो आहार व्रतमां क्यां कह्यो छे ते पाठ बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, बाणुमी गाथाना बीजा पदमां 'वित्ति-साहुणदेसिया ' एवुं पद कह्युं छे तेथी साधुनो आहार व्रतमां कहीए छीए. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अहीयां तो ' वित्ति ' नाम आजीविकानुं कह्युं छे. बेतालीश दोष टालीने ले तेथी साधुनी आजीविका पाप रहित छे. जो वित्ति शब्द कह्यो तेथी साधुनो आहार व्रतमां कहो तो एवा पाठ तो सूत्रमां घणा कह्या छे. सूत्र भगवतीजी शतक बारमे उद्देशे बीजे, भगवंते अधर्मी जीवने सुता भला कह्या. तेमां ' वित्तिकप्पेमाणा विहरइ ' एवो पाठ छे. अधर्मी जीव अधर्मनी आजीविका करता विचरे छे. ए वित्ति शब्द आजीविकानो कह्यो छे. तमारे लेखे तो इहां पण वित्ति शब्दनो अर्थ व्रत हशे. ए अधर्मी जीव सुता भला कह्या, एनो पण आहार व्रतमां हशे. वली उववाइ सूत्रमां स्त्री विना मन शील पाले ते पाठमां पण ' वित्तिकप्पेमाणा विहरइ ' छे. इहां पण ' वित्ति ' शब्द छे. तमारे लेखे तो एनो पण आहार व्रतमां हशे. वली उववाइ सूत्रमां श्रावकना गुणमा 'धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा विहरइ' कह्युं छे. इहां पण वित्ति शब्द छे. ए श्रावकनो पण आहार व्रतमा हशे.

वली सूयगडांग सूत्रमां अधर्म पक्षमां 'अहमेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा विहरइ ' कह्युं छे. इहां पण ' वित्ति ' शब्द छे. माटे ए अधर्मी पुरुषोनो पण आहार व्रतमां हशे. जेम दशवैकालीक सूत्रमा वित्ति शब्दे साधुनी आजीविका कही अने आजीविकाने आहार कह्या. तेम एटली जग्योए पण वित्ति शब्दनो अर्थ आजीविका कीधो, ते बधानो आहार

व्रतमां हशे. ए वित्ति नाम तो आजीविकानुं छे. तमे ए शब्दथी साधुनो आहार व्रतमां कहीने एवा खोटा अर्थ केम करोछो ? वली साधुजीनो आहार व्रतमां धर्ममां कहे तेने पुछवुं के, साधुजीजे आहार करवाथी कयुं व्रत निपजे ते कहो. केमके साधुजी तो सर्व व्रती छे, अने तेमणे ज्यारे साधुपणुं लीधुं त्यारे कयुं व्रत अधुरुं राख्युं के तेने आहार करी करीने पुरुं करे ते कहो. साधुजी तो मूलगुणना सर्व व्रति छे अने ज्यारे आहारना त्याग करे त्यारे उत्तरगुण व्रत निपजे. वधी साधुजीनो आहार व्रतमां धर्ममां कहेछे, तेने पुछवुं के, व्रत धर्म छ भाव मांहेला कया भावमां छे? अने आहार करवाना प्रणाम, ए कया भावमांछे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "व्रत धर्म तो उपशमभाव, क्षयोपशमभाव तथा क्षायक भावमां छे, अने आहार करवाना प्रणाम तो उदय भावमां छे." त्यारे हे देवानुप्रीय ! व्रत धर्म तो छठे गुणठाणे बहुलताए क्षयोपशम भावमां छे; अने साधुनुं हालवुं, चालवुं, बोलवुं, आहार करवो, उंघवुं अने नदी उतरवी, ए सर्व कार्य तो योगनी चपलतानां छे अने ते तो सर्व उदय भाववर्ति छे. ए उदय भावना कामने व्रत धर्म केम कहो छो ? केमके धर्म तो क्षयोपशमभावे छे. वली आहारने धर्म कहो तो, अनुयोगद्वार सूत्रमां उपशम भाव तो मोहनीकर्मनुं उपशमाववुं तेने कहीये. ते उपशम-निपन्नना अग्यार बोल कह्या. क्षयोपशम ते चार घातिक कर्मनो क्षयोपशम. ते क्षयोपशम-निपन्नना पचास बोल कह्या. क्षायक भाव ते आठ कर्मनो क्षय. ते क्षायक-निपन्नना सात्रीस बोल कह्या. हवे साधुनो आहार कया बोलमां छे ते कहो. ए उदयभावने ममतना मार्या धर्म केम कहोछो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "ए आहार करवाना प्रणाम तो क्षयोपशम-भावमां नथी, उदयभावमां छे; पण साधु आहार करतां मुक्तिना सारनी (ज्ञानादिक विनय वैयावचनी) चिंतवणा करे अने भला भाव वर्तावे, ते शुभ योगथी निर्जरारुप धर्मनिपजे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! साधुनो आहार करवो, हालवुं, उंघवुं, एतो पूर्व कर्मना उदयभावना

जोगथी छे. एमां पूर्व कर्मनी सत्ता जेम रस दे छे तेम जोगनी चपलताइ वर्ते छे. तेमां तो लगार मात्र पण क्षयोपशम धर्म निर्जरारुप लाभ नथी; अने आहारादि करतां ज्ञानादिकनी चिंतवणा भला भाव प्रवर्तावे छे ते शुद्ध उपयोग आत्मिकभाव जाणवो. एतो आत्मानुं मूल लक्षण छे. ए शुद्ध उपयोग आत्माना घरनो छे ते न्यारो छे. आहारादिक करवाना भाव ते जोग प्रवर्तन पुदगलना घरनो छे, ते उदयभाव वर्त्ति छे ते न्यारो छे. वली जो साधु आहारादि करतां भला भाव वर्तावे तेमां निर्जरारुप धर्म कहो छो, त्यारे श्रावकना आहारादिकमां पण धर्म कहेवो पडशे; कारण के श्रावक पण आहारादिक करतां आत्मनिंदा करे, रागादिक दोषरहित प्रणामे आहार करे अने आहार करतां भली भावना भावे, ते शुद्ध उपयोग क्षयोपशम भावनो छे. ते शुद्ध उपयोगथी श्रावकने पण निर्जरारुप धर्म थशे. ए लेखे तो साधु श्रावक बंनेने उदयभाव भोगवतां राग द्वेष अशुभ जोग वर्तशे तो पाप लागशे; अने धर्मनो साहाज जाणीने रागद्वेष रहित खाशे, भली भावना भावशे अने शुभ जोग वर्तावशे तो बंनेने निर्जरारुप लाभ थशे. वली कोइ श्रावक आरंभ करीने खाय ते आरंभनु पाप न्यारुं छे, पण खावा आश्रीतो शुभाशुभ योग वर्तशे तेवां फल बंनेने लागशे. जेम साधु उदयभावना काममां राचे तो साधुने पाप लागशे, अने उदय भावमां नहिं राचे तो तेमां गुण छे. तेमज श्रावक पण उदयभावमां नही राचे तो गुण थशेज; पण श्रावकनुं खावुं तो पापमां अने साधुजीनुं खावुं व्रत धर्ममां, एम कया सुत्रना आधारे कहो छो ते पाठ बतावो.

वली साधुनो आहार जो धर्ममां होय तो ते हर्ष प्रणामे करवो जोइए; पण भगवंते तो जेवा प्रणामथी धनासार्थवाहे पोताना पुत्रना मारणहार विजय चोरने आहारनो भाग दीधो, तेवा प्रणामथी साधुए आहार करवो कह्युं छे. शास्त्र सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन बीजे. ते पाठः—

तएणंसे धन्नेसत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवाग-

च्छइ २ त्ता. ततेणं सा भद्दासत्थवाहि धणंसत्थवाहं एज्जमाणं पासइ २ त्ता नो-आढाइ नो-परियाणाइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परमुही संचिठंति. ततेणं से धणेसत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी किंम्मं तुब्भं देवाणुप्पिया नतुठीवा नहरीसोवा नाणंदोवा जंए मए सएणं-अत्थ सारेणं रायकज्जाउ अप्पाणं विमोइए. ततेणं सा भद्दा धणंसत्थवाहं एवंवयासी कहणं देवाणुप्पिया! मम तुठिया जाव आणंदेवा भविस्सइ जेणं तुम्मं मम पुत्त घायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताउ विउलाउ असणं ४ संविभागे करेसि. ततेणं से धणेसत्थवाहे भद्दं भारियं एवंवयासी नो खलु देवाणुप्पियाए धम्मोतिवा त्तवोत्तिवा कयपडिकइयावा लोग-जत्ताइवा नायपत्तियावा संघाडियएत्तिवा सुहाएत्तिवा सुहीत्तिवा ततो विउलाउ असणं ४ संविभागेकए; ननत्थ सरिरचिंताए. ततेणं सा भद्दा धणेणंसत्थवाहेणं एवं वुत्ता-समाणी हठतुठा जाव आसणाउ अब्भूठेइ २ त्ता कंठा-कंठियं अवयासेइ. खेमकुसलं पुच्छइ २ त्ता न्हाया जाव पायच्छित्ता विउलाइं भोग भोगाइं भुंजमाणी विहरइ. जहाणं जंबु! धणेणंसत्थवाहेणं नो-धम्मोतिवा जाव विजयस तक्करस्स त्ताउ विउलाउ असणं ४ संविभाग कए ननत्थ सरिर सारक्खणठाए एवामेव जंबु! जेणं अम्हं निग्गंथेवा निग्गंथिवा जाव पव्वइए-समाणे ववगय ण्हाणु मद्दणु पुप्फ गंध मल्लालंकार विभूसिए इमस्स उरालिय-सरिरस्स णो-वणहेउवा रुवहेउव विसयहेउवा तंविउलं असणं ४ आहारमाहरंति ननत्थ णाण दंसण चरित्ताणं वहणठयाए.

सेणं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणय बहूणं सावीयाणय अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवइ. परलोइवियणं नोबहुणि हत्थच्छेयणाणिय कन्नच्छेयणाणिय णासाच्छेयणाणिय. एवं हियउप्पायणाणिय वसणुप्पायणाणिय उल्लंबणाणिय पाविहिति अणाइयं-चणं अणवदग्गं दीहमद्धं जाव विइवइस्संति. ॥

अर्थ—त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह जे० ज्यां भ० भद्रा भार्या छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने त० तेवारे सा० ते भद्रासार्थवाही ध० धनासार्थवाहने ए० ए आवता पा० देखे, देखीने नो० आदर न दे नो० प० भलो न जाणे अजाण्यानी पेरे ओलखे नही. अ० अण आदर करती अप० अजाणती तु० अणबोलती प० उपरांठी थइ सं० उभी रही. त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह भ० भद्रा भार्याने ए० एम कहेः-किं० शा माटे तु० तमे दे० हे देवानुप्रीय ! नतु० संतोष न पामी नह० हर्ष न पामी नाणं० आनंद न पामी ? जं० जे म० में स० पोताना अर्थे स० द्रव्य आपीने रा० राजकार्यथी अ० मारा आत्माने वि० मुकाव्यो. त० तेवारे सा० ते भ० भद्रा ध० धनासार्थवाहने ए० एम कहेः-क० क्यांथी दे० हे स्वामी ! म० मुजने तु० शंतोष होय जा० जावत् आ० आनंद भ० होय ? जे० जे तु० तमे म० मारा पु० पुत्र घा० घातकने जा० जावत् प० वेरीने ता० ते वि० विस्तीर्ण अ० अस्नादि चार सं० संविभाग कर्यो. आहारादिक आप्यो. त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह भ० भद्रा भार्याने ए० एम कहेः-नो० नही ख० निश्चे दे० हे देवानुप्रीया ! ध० धर्म हेते, त० तप हेते, क० परभवमां फल थशे एम जाणीने, लो० लोक लज्याए ना० नातीलाना मेलानो प्रवर्तक जाणीने, स० सहचारी जाणीने, सु० सखाइयाना कार्य करवाने विषे जाणीने, के सु० सुखाइया सुखी मित्रपणुं जाणीने, त० ते वि० विस्तीर्ण अ० अस्नादि चार सं० व्हेंची आप्यो (नथी); पण न० एटलुं विशेष

स० शरीरनी चिंताने अर्थे अन्नादि दीधुं छे. ए सर्व वात कही. त० तेवारे सा० ते भ० भद्रा ध० धनासार्थवाहनुं ए० एम वु० कहेवुं सांभळी साचुं माने, मानीने एवा बोलथी ह० हर्ष संतोष पामी जा० जावत् आ० आसनथी अ० उठे, उठीने कं० कोटे कोट वळगाडीने अ० आलिंगन दीधुं. पछी खे० क्षेम कुशळ पु० पुछे, पुछीने न्हा० न्हाइ जा० यावत्० पा० प्रायश्चित छेद्यां. वि० विस्तीर्ण भो० मनुष्य संबंधी कामभोग भु० भोगवती थकी वि० विचरे. ज० जेम जं० हे जंबु ! ध० धनासार्थवाहे नो० धर्मने अर्थे नही जा० जावत् वि० विजय त० चोरने ता० ते वि० विस्तीर्ण अ० असनादि चारमांथी सं० संविभाग कर्यो; न० पण एटलुं विशेष स० शरीरनी सा० रक्षाने अर्थे अन्नादिक दीधुं. ए० एम जं० हे जंबु ! जे० जे अ० अमारा नि० निर्ग्रंथ साधु साधवी जा० जावत् प० चारित्र लीधे थके, व० रहित एहा० स्नान म० मर्दन पु० फुल गं० गंध म० माला अ० अलंकार वि० विभुषा रहित इ० ए प्रत्यक्ष उ० उदारिक सरीरनो णो०व० वर्ण रुडो थाय ए हेते नही, रु० रुप हेते नही तेमज वि० विषय हेते पण नहिं तं० ते विस्तीर्ण अ० असनादि चार आ० आहार करे; पण न० एटलुं विशेष णा० ज्ञान दं० दर्शन अने च० चारित्रना व० निर्वाहने अर्थे आहार करे. से० ते इ० ए लोके चे० निश्चे ब० घणा स० साधुने ब० घणी सा० साधवीने ब० घणा सा० श्रावकने ब० घणी सा० श्रावीकाने अ० अर्चनिक जा० जावत् प० सेवा करवा योग्य भ० थाय. प० परलोके पण नो० नही ब० घणा ह० हाथ छेदाय क० कान छेदाय णा० नासिका छेदाय. ए० एम हि० हैयानुं उ० उपाडवुं न थाय. व० गुह्य अवयवनुं उपाडवुं न थाय. उ० उलंभानां वचन न कहे. पा० दुःख न पामे. अ० अनादी अ० अ० अंत रहित दी० दीर्घ लांबा पंथरुप जा० यावत् वि० संसारने उलंघीने पार पामे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं छे के, धनासार्थवाहे भद्रासार्थवाहीने एम कह्युं के, पुत्रना मारणहार विजय चोरने मारा

आहारमांथी जाग दीधो, ते सज्जन, मित्र, बंधव जाणीने तथा धर्म तप जाणीने दीधो नथी; पण एक खोडामां बंनेना पग हता ते विजय चोर मारी साथे मारा शरीरनो चिंता टालवाने वास्ते चाले नही, ते शरीरनी अबाधा टाळवाने वास्ते दीधुं छे एम कह्युं. हवे तेना उपर श्री सुधर्मास्वामी जावार्थ मेलवे छे के, हे जंबु ! धनासार्थवाहनी पेरे मारा साध साधवीए आहारादि करवो. जेम धनासार्थवाहे चोरने आहारादिक देवामां धर्मतप जाण्यो नही, तेम साधु साधवीए आहारादिक करवामां धर्म तप मानवो नही; तथा शरीरनी शोजा तेमज रुप, वर्ण वधारवाना जावथी करवो नही, पण जेम धनासार्थवाहे शरीरनी चिंता टालवाने अर्थे विजयचोरने आहारादिक दीधो, तेम साध साधवीए फक्त ज्ञान, दर्सन अने चारित्रना निर्वाहने अर्थे आहारादि करवो; तथा शरीरने पुत्रना मारणहारा सरीखो जाणीने उदासीन प्रणामे अहार करवो. हवे जो आहारादिक करवामां धर्म होय तो हर्ष प्रणामथी करवो एम केहेत. माह्या हो ते विचारी जोजो.

वली बीजा धनासार्थवाहे जेम बेटीनुं मांस खाधुं, तेनी परे साधुए निरुग्गाह जावे आहारादिक करवो कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन अढारमें. ते पाठ लखीये छीये:—

ततेणं से धणेसछवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछठेहिं चिलायंतिसे आगामियाए सवंउस्समंता परिधाकेमाणा तण्हाए छुहाएय परज्जत्तेसमाणे तीसे आगामियाए सवउ सम्मंता उदग्गस्स मग्गणं गवेसणं करेति संते तंते परितंते णिवत्ते तीस्से आगामियाए सवउ-सम्मंता उदगं अणासाएमाणे जेणेव सूसूमा जीवियाउ ववरोविया तेणेव उवागछइजेठं पुत्तं धणेसछवाहे सद्दावेई एवं वयासी एवं खलु पुत्ता सूसूमाए दारियाए अठाए चिल्लायं तक्कर सव्व उसम्मंता

परिघाम्मेमाणे तण्हाए छुहाएय परऊहेसमाणे तीस्से आ-
गामियाए छुहाए अभिभूयासमाणा इमीसे आगामियाए
अम्फविए उदगस्स मग्गणं गवेसणं करेमाणा णो चेवणं
उदगं आसाएमो उदगं आणासाएमाणा णोसंचाएमो राय-
गिहं संपावित्तए. तएणं तुझे ममं देवाणुप्पिया जीवियाउ
ववरोवेह मम मंसंच सोणियंच आहारेह तेणं आहारेणं
अवधट्ठासमाणा ततोपच्छा इमं आगामिय अम्फवि णिच्छ-
रह रायगिहं संपावेहिह मित्तणाइ अभिसमगच्छहिह
अच्छिस्सय पुणस्सय आभागी भवीसह. ततेणंसे जेठे पुत्ते
धणेणंसच्छवाहेणं एवंवुत्तेसमाणे धणंसच्छवाहं एवं वयासी
तुच्चेणं ताउ अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवप्पा
पत्तिठवप्पा संरक्खणा संगोवगा तं कहणं अम्हे ताउतुब्भे
जीवियाउ ववरोवेमो तुच्चेणं मंसं च सोणियंच आहारेमो
तं तुच्चेणं ताउ ममं जीवियाउ ववरोवेह मंसंच सोणियंच
आहारेह आगामियं अम्फविं णिच्छरह तंचेव सवं भणइ
जाव अच्छ आभागी भविसह. ततेणं धणंसत्थवाहं दोच्चे
पुत्ते एवंवयासि माणं ताउ अम्हे जेठं भायरं गुरुदेवय
जीवियाउ ववरोवेमो तुच्चेणं ताउ मम जीवियाउ ववरोवेह
जाव आभागी भविस्सह एवं जाव पंचमे पुत्ते ततेणं
से धणेसत्थवाहे पंच पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते
पंचपुत्ते एवंवयासी माणं तुम्हे पुत्ता एगमवि जीवियाउ
ववरोवेमो. एसणं सूसूमाए दारियाए सरिरए णिप्पाणे
जावजीव विप्पजहे तं सेयं खलु पुत्ता अहं सूसूमाए
मंसंच सोणियंच आहारित्तए. ततेणं अम्हेतेणं आ-

हारेणं अवधठासमाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो. ततेणं ते पंचपुता धणेणं सञ्चवाहेणं एवं वुत्तासमाणा एयमठं पडिसुणेत्ति. ततेणं धणेसञ्चवाहे पचहिंपुत्तेहिंसद्धि अरणिंकरेइ २ त्ता सरगं करेइ २ त्ता सरएणं अरणि महेइ २ त्ता अग्गिपाडेइ २ त्ता अग्गिसिंधुकेइ २ त्ता दारुयाइं पक्खिवइ २ त्ता अग्गिपञ्चालेइत्ता सूसूमा दरियाए मंसंच सोणियंच आहारेइ तेणं आहारेणं अवधठासमाणा रायगिहं णयरि संपत्ता मित्तणाइ अभिसमणागया तस्सय विउलस्स धणकणग रयण जाव आभागी जायाविहोञा. ततेणंसे धणेणंसञ्चवाह सूसूमा दारियाए बहुइं लोगयाइं जाव विगयसोए जाएयाविहोञा. तेणं कालेणं२ समणे भगवंमहावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे ततेणं धणेसञ्चवाहे सपूत्ते धम्मेसोचा पवइयो एकारसंगवि मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववणे महाविदेहेवासे सिझिहिंति. जहा वियणं जंबु ! धणेणंसञ्चवाहेणं णो वणहेउवा नो रुवहेउवा णोबलहेउवा नोविसयहेउवा सूसूमाएदारियाए मंसंसोणिए आहारिए ननञ एगाए रायगिहं संपावणठयाए. एवामेव समणाउसो जो अम्हं णिग्गंथोवा णिग्गंथिवा इमस्स उरालिय सरिरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स विप्पजहियस्स नोवणहेउवा नोविषयहेउवा आहारंआहारेत्ति ननञ एगाए सिद्धि गमणं संपावणठयाए. सेणं इह भवे चेव बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं सावियाणं अवचणिज्जे जाववीतीवस्सती॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते ध० धनोसार्थवाह पं० पांच पु० पुत्र अने अ० पोते छठ्ठा चि० चिलाइती चोर प्रत्ये आ० ते अटवीमां स० संघले प० धाता दोरुताथका त० तृषा बु० क्षुख लागी प० तेणे पराज-व्या थका ती० ते आ० वस्ती रहित अटवीमां स० सघला ज० पाणीना म० कुवा, सरोवर, वेरमा प्रमुखनी ग० गवेषणा करतां सं० थाक्या. तं० ते विशेष थाक्या. प० थाकीने थाक्या. णि० निवर्तें ती० ते आ० अटवीमां स० सघले ज० पाणी अ० अणलाध्याथो जे० ज्यां सू० सुसुमाने जी० जीवतव्यथी व० जुदी कीधी छे तें० ते शरीर पासे ज० आवे, आवीने जे० वडा पुत्रने ध० धनोसार्थवाह स० साद करे. ए० एम कहे--ए० एम निश्चे पु० हे पुत्र ! सु० सुसुमा दा० बालीकाने अ० अर्थे चि० चिलाइति त० चोरने पकरुवा स० सघले प० दोरुता धाताथका त० तृषाए करी बु० क्षुखे करी प० पराजव्या थका ती० ते आ० अटवोमां बु० क्षुखे तृषाए करी अ० पराजव्या थका इ० ए प्रत्यक्ष आ० वस्तोरहित अ० अटवीने विषे ज० पाणीना म० मार्ग प्रमुखनी ग० गवेषणा क० करता थका णो० नही चे० निश्चे ज० पाणी आ० लाध्युं. जं० ते पाणी अ० अण-लाध्याथी णो० असमर्थ रा० राजग्रह सं० पामवाने. त० ते माटे तु० तमे म० मुजने दे० हे देवानुप्रीय! जी० जीवतव्यथी व० जुदो करी मारीने म० मारुं मं० मांस सो० लोही आ० भक्षण करो. ते० ते आहारे अ० तृप्त थया थका त० तेवार पछी इ० ए आ० आगामिक अ० अटवी णि० नतरो, रा० राजग्रहने सं० पामो, मि० मित्र णा० न्यातिने अ० जाइ मलो अ० अर्थना धर्मना पु० पुन्यना आ० भागी ज० थाओ. त० तेवारे ते जे० वडो पु० पुत्र ध० धनासार्थवाहे ए० एम कहे थके ध० धनासार्थवाहने ए० एम कहे-तु० तमे ता० हे तात ! अ० अमने पि० पीता गु० गुरुने ठामे दे० देव सरखा ठ० थाप्या, प० स्वामी करी स्थाप्या, सं० कष्टथी राख्या, सं० अवगुण गोपवता. तं० ते माटे क० केम आ० हमे ता० हे तातजी ! तु० तेमने जी० जीवतव्यथी व० अलगा करी तु० तमारा मं० मांस सो० लोहीनो आ० आहार करोए ? तं० ते माटे तु० तमे ता० हे तात ! म० मुजने

जी० जीवितव्यथी व० अलगो करी मं० मांस सो० लोहीनो आ० आहार करो, आगामिक अ० अटवी णि० निस्तरो (पार पामो.) तं० तेमज स० सर्व न० कहे. जा० जावत अ० अर्थना आ० नागी न० थाउ. त० तेवारे ध० धनासार्थवाहने दो० बीजो पुत्र ए०एम कहेः-मा० रखे ता० हे तात! अ० अमे जे० वडा न० नाइने गु० गुरु समान, देवसान, तेने जी० जिवीतव्यथी व० जुदा करीए. तु० तमे ता० हे तात! मु० मुजने जी० जीवितव्यथी व० जुदो करो जा० जावत् आ० नागी न० थाउ. ए० एम जा० जावत पं० पांचमो पु० पुत्र. त० ते वारे ते ध० धनासार्थवाहे पं० पांच पुत्रनी हि० हैयानी इ० इछा, (नाव) जा० जाणीने ते० ते पं० पांच पुत्रने ए० एम कहेः-मा० रखे तु० तमने पु० हे पुत्र! ए० एकने पण जी० जीवितव्यथी व० जुदा नहि करीए. ए० ए सु० सुसुमा दा० बालीकानुं स० शरीर णि० प्राणरहित जा० जावत् जीव वि० छांडेलुं मृत्यक शरीर छे तं० ते माटे से० श्रेय नलुं ख० निश्चे पु० हे पुत्र! अ० आपणे ते सु० सुसुमा बालीकाना शरीरनुं मं० मांस सो० लोही आ० खाइए. त० तेवारे अ० अमे ते० ते आ० आहारे अ० तृप्त थया थका रा० राजग्रहने सं० पामशुं. त० तेवारे ते पं० पांच पुत्र ध० धनासार्थवाहे ए० एम कह्ये थके ए० ए अर्थ सांभलीने प० प्रमाण करे. त० तेवारे ध० धनासार्थवाहे पं० पांच पुत्र साथे अ० अरणी काष्ट आणे, आणीने, स० सरु करे, करीने स० बाणे करी अर० अरणीने म० मथे, मथीने अग्गि० अग्नि पाडे, पाडीने अ.सं० अग्नि संधुके, संधुकीने दा० लाकडां प० प्रक्षेपे नाखे, नाखीने अ० अग्नि प्रजाले, प्रजालीने सु० सुसुमा दा० पुत्रीनुं मं० मांस सो० लोही आ० आहारे. ते० ते आ० आहारे करी अ० तृप्त थया थका रा० राजग्रह ण० नगरने सं० पाम्या. मि० मित्रने, न्यातीने अ० पाम्या. त० ते वि० विस्तीर्ण ध० धनना क० सुवर्णना र० रत्नना जा० जावत् आ० नागी जा० थया. त० तेवारे से० ते ध० धनासार्थवाहे सु० सुसुमा दा० पुत्रीनां ब० घणां लो० लोकिक कार्य कीधां जा० जावत् वि० सोग रहित

जा० केटलेक दीवसे थया.

ते० ते काले ते समये स० श्रमण भगवंत श्री महावीर गु० गुण शील चे० वनमां स० समोसर्या (पधार्या). त० तेवारे ध० धनासार्थवाहे स० पुत्र सहित ध० धर्म सांभलीने प० दिक्षा लीधी. ए० अग्यारे अंग भण्या. मा० एक मासनी सं० सलेखणा (संथारो) करी सो० सौधर्म देवलोके उ० उपन्या. ते म० महाविदेहमां अवतरी सि० मोक्ष जाशे. एम सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामी प्रत्ये कहे छे. ज० जेम जं० हे जंबु ! ध० धनासार्थवाहे णो० रुपा वर्णने हेते नही नो०रु० रुपने हेते नही णो०ब० बलने हेते नही तेम नो०वि० विषयने हेते पण नही सु० सुसुमा पुत्रीनुं मं० मांस सो० लोही आ० आहार्यां; पण न० एटलुं विशेष के ए० एक रा० राजग्रह सं० पामवाने अर्थे. ए० एणी पेरे स० श्रमण आउखावंत जो० जे अ० अमारा णि० निर्ग्रंथ साधु णि० निग्रंथ साधवी इ० ए उ० उदारीक स० शरीर व० वमननुं ठाम पि० पित्तनुं स्थानक सु० विर्यनुं ठाम सो० लोहीए भर्युं जा० यावत् अ० अवश्यमेव वि० छांरूवुं पडे. माटे नो० वर्ण हेते नही नो०वि० विषय हेते नही आ० आहार आहारे; पण ण० ए विशेष ए० एक सि० मुक्ति जावुं सं० ते पामवाने अर्थे आहार करे. से० ते इ० आ भ० भवने विषे चे० निश्चे ब० घणा स० साधु ब० घणी स० साधवी ब० घणा सा० श्रावक अने ब० घणी सा० श्रावीकाने अ० अर्चवा योग्य जा० यावत् वी० संसारनो पार पामी मोक्ष जाशे.

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, जेम धनावा शेठ अने तेना बेटाए नगरीए पहोंचवाने वास्ते, केटलाक उदास प्रणामे, बेटीना मांसनो आहार कीधो; तेम साध साधवी छकायना जीवने बेटा बेटी समान जाणीने, तेना पुद्गलोनो आहार, मुक्तिनगरीए पहोंचवाने वास्ते बेटीना मांसनीपेरे निरुत्साह भावे आहार करे, एम कह्युं. हवे जुओ ! साधुना आहार करवामां धर्म होय तो निरुत्साह

भावे करवो केम कह्यो ? धर्म तो उल्लास प्रणामे करवो जोइए. न्याह्या हो ते विचार जोजो. वली साधुने छ कारणे आहार करवो कह्यो छे, अने छकारणे छोडवो कह्यो छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अ० छवीसमें. ते गाथाः—

तइयाए पोरसिए, भत्त पाणं गवेसए,
छन्नमन्नय-रागंमि, कारणंमि समुठिए, ॥ ३२ ॥
वेयण वेयावच्चे, इरियठाएय संजमठाए,
तह पाणवत्तियाए छठं पुण धम्म चिंताए. ॥ ३३ ॥
निग्गंथो धिईमंतो, निग्गंथिवि नकरेज्ज छहिंचेव,
ठाणेहिंतु इमेहिं अणइक्कमणाय सोहोइ. ॥ ३४ ॥
आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेर गुत्तीसु,
पाणीदया तवहेउ सरीर वोच्छेयणठाए. ॥ ३५ ॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुउ प्रश्न पेहेलो पाने १० में.

भावार्थ—हवे जुउ ! आ पाठमां साधुने छ कारणे आहार करवो कह्यो. जो धर्म होय तो छ कारणे करवो केम कहे ? धर्म तो वारंवार सदैव करवोज जोइए. वली पांत्रीसमी गाथामां छ कारणे आहार छोडवो कह्यो छे; पण धर्मने कोइ ठेकाणे छोडवो कह्यो होय तो पाठ बतावो. ए जो धर्म होय तो छोडवो केम कह्यो ? न्याह्या हो ते विचारी जोजो. वली सूत्र उत्तराध्ययनना सत्तरमा अध्ययनमां, वारवार खाय तेने पापी श्रमण कह्यो छे. त्यारे जुउ! साधुनो आहार धर्ममां होय तो धर्मनुं काम वारंवार करे तेने पापी साधु केम कहे ? वली सूत्र दसासुतखंधना पहेला अध्ययनमां, वारंवार आहार करे तेने असमाधियो कह्यो छे. हवे जुउ! जो आहार कर्यामां धर्म होय तो, वारंवार खाय तेने असमाधिउ केम कह्यो ? तमे तो साधुनो आहार करवो, उंघवुं, हालवुं, चालवुं, बोलवुं, जाके जवुं, मात्रा करवी अने नदी उतरवी वीगेरे साधुनां सर्व काम, व्रत धर्ममां कहो छो; पण जो एवी श्रद्धा श्रीवीतरागदेवनी होत तो जे वारंवार

खाय तेने पापी श्रमण अने असमाधियो न कहेता. तमारे लेखे तो एम कहेवुं जोइए के, "जे घणीवार खाय तेने घणो धर्म. जे घणी निंद ले तेने घणो धर्म. तेमज घणी वार जुलाब लइने झाडे जाय, घणीवार मातरुं करे, घणीवार वायसरे, तथा घणी वार नदी उतरे तेने घणो घणो धर्म; अने थोडीवार ए काम करे तेने थोडो धर्म." एम कहेवुं जोइए; पण आहार करवामां धर्म मानवानी श्रद्धा भगवंतनी नहोती ते जाणजो. वली सूत्र प्रश्नव्याकरणना संवरद्वारमां छ कारणे आहार करवो कह्युं छे, अने छकारण विना आहार करे तो अदत्तादान लागे कह्युं छे. हवे जुओ ! जो आहार करवामां धर्म होय तो अधिकुं खातां अदत्तादान केम कह्यु ? वली अनुयोगद्वार सूत्रमां धर्मने क्षयोपशम भावमां कह्यो छे, अने आहारने तो उदय भावमां गण्यो छे. वली संभोगनां, उपगर्णनां अने भातपाणीनां पच्चखाण करवां कह्यां छे. तेनी शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २९ में. ते पाठः—

संभोग पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संभोग पच्चक्खाणेणं आलवणाइं खवेइ निरालंबणस्सय आयतठिया जोगाभवंति. सएणं लाभेणं संतुसइ परलाभं नोआसाएइ नोतक्केइ नोपीहेइ नोपछेइ नोअभिलस्सइ परलाभं अणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपछमाणे अणभिलस्समाणे दोच्चे सुहसेजं उवसंपज्जिताणं विहरइ॥ उवहि पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? उवहि-पच्चक्खाणेणं अपलिमंथ जणयइ निरुवहिएणं जीवे निकंखे उविहिं मंतरेणय नसंकिलिस्सइ ॥ आहार पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ ? आहार-पच्चक्खाणेणं जीविया संसपओग वोछिंदइ जीवियासंसप्पओगं वोछिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण नसंकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥

अर्थः—सं० पोतानो आहार होय ते अने बीजा जतीए (साधुए) आहार आण्यो होय ते एकठो करीने वेहेंची ले तेने संजोग कहीये. ते संजोगनुं प० पच्चखाण करवाथी जं० हे पुज्य ! जी० जीव किं० शुं ज० उपार्जे ? एम शिष्य पुछये थके गुरु कहे छेः सं० संजोग पच्चखाण करवाथी आ० रोगी असमर्थ होय ते बीजा यतिनो आहार वान्छे तेने आलंबन कहीए, एवा आलंबनने खे० (क्षेपे) छोडे. नि० आलंबन रहितने आ० मोक्ष तथा संजम, तेनो अर्थ छे जेने, एवा यतिने जो० संयमनो व्यापार थाय. स० पोताना ला० लाभे करी सं० शंतोष पामे. प० परं बीजा यतिना लाभनी नो० आशा न करे. नो० ए मुजने आपे एम मनमां कल्पना न करे. नो० पोताना आत्मानी वान्छा वचने करी बीजा यतिने जणावे नही. नो०प० बीजा यतिकने जाचे नही. नोअ० अभिलाषा ( वान्छा ) न करे. प० बीजा यतिना लाभनी अ० आशा अण करतो थको अत० कल्पना अणकरतो थको अपी० पातानी वान्छा अणजणावतो थको अप० बीजा यति कने अणयाचतो थको अण० अभिलाषा अणकरतो थको दो० बीजी सु० सुख सेज्या उ० अंगीकार करीने वि० विचरे. उ० उपधि उपगर्णनुं प० पच्चखाण करवे करी जं० हे पुज्य! जी० जीव किं० शुं० ज० उपार्जे ? एम शिष्ये पुछये थके गुरु कहे छे. उं० उपधि उपगर्णनुं पच्चखाण करवे करी अ० स्वाध्यायादिकनुं व्यासपणुं ज० उपार्जे. नि० उपधि रहित पणे करी जी० जीव नि० वस्त्रादिकनी अभिलाषा रहित थको उ० उपधि मं० विना न० शारीरिक मानसिक संबंधि क्लेश पीडा न पामे. आ० आहार लेवाना प० पच्चखाणे करी जं० हे पुज्य ! जी० जीव किं० शुं ज० उपार्जे ? एम शिष्ये पुछये थके गुरु कहे छे. आ० आहार लेवाना पच्चखाणे करी जी० जीवीतव्यनी सं० वान्छानुं करवुं छि० छेदे. जी० जीवीतव्यनी वांछानुं करवुं वो० छेदीने जी० जीव आ० आहार वीना न०सं० क्लेश न पामे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां संजोग, उपगर्ण अने आहा-

रनां पचखाण करवां कह्यां. जो आहारादिकमां धर्म होय तो धर्मनां पचखाण करवां केम कह्यां ? संजोग, आहार अने उपधिनां पचखाण करवावाला साधुने आशा वान्छा अने (पलीमंथ) अभिलाषानो टलवावालो कह्यो; अने ते क्लेश (पीडा) न पामे एम कह्युं, एटले आहार अने उपगर्णने क्लेशनां कारण कह्यां; अने आशा, वान्छा, तृष्णाने अभिलाषानां कारण कह्यां, एटले आहारादिकना त्याग नही तेथी आशा वान्छा करे, ते आशा वान्छाने लोभ कह्यो छे. शाख सूत्र भगवती शतक १२ मे उद्देशे ५ मे. वली लोभ ते मोहीनीनो उदयभाव छे. तेथी तेने धर्म कया न्याये कहीए ? एतो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र भजे नहिं तथा मुक्तिनगर पहोंचाय नही तेटला माटे आहार करे अने उपगर्ण राखे. जेम माल ठेकाणे पहोंचाडवाने अर्थे हुंडी, भाडुं, वोलाइ खर्चे ते समान ए पण छे. वली उत्तराध्ययनना २९ मा अध्ययनमां आगल घणा बोल कह्या छे. जोगना पचखाण करे तो साधु अजोगीपणुं पामे कह्युं. ए जोगमां बोलवाना पण त्याग कह्या; अने जो शरीरनुं पचखाण करे तो सिद्धपणुं पामे कह्युं. हवे जो साधुनुं शरीर धर्ममां होय तो तेने त्यागवुं छोडवुं केम कह्युं ? वली आगल कह्युं के, सर्वथा भातपाणीनां पचखाण करे तो अनेक भव खपावे कह्युं. एम सूत्रमां ठामठाम आहार त्यागवानां फल तो कह्या छे, पण "घणो घणो आहार कर्याथी धर्म थाय" एवो पाठ होय तो बतावो. ए आहार तो उदयभावे छे अने ते पूर्व भवनां कर्मनो प्रेर्यो रस देछे; अने व्रत अव्रत तो वर्तमान कालना छे. ते उदयभावने धर्म केम कहोछो ?

तेवारे वली तेरापंथी कहेछे के "आहार उदयभावमां छे, त्यारे साधुने आहारनी आचार्य, उपाध्याय अने तीर्थंकर आज्ञा केम देछे ?" तेनो उत्तर-हे देवानुप्रीय ! आज्ञा तो कल्पमांथी देखीने आपे. जेम वरसाद वरसतां दिशा मात्रो जवानी अने परठवा परठाववानी आज्ञा आपे छे तथा नदी उतरवानी आज्ञा आपे छे. तो शुं ? दोशाए जवुं,

मात्रा करवी अने नदी उतरवी, ए शुं ? क्षयोपशमभावमां गणाशे. ए आहारादिक तो सर्व उदय भावे छे, पण ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररुपी माल नभाववाने अर्थे आज्ञा आपे छे. जेम राजाजी चतुरंगनी सेनाना तात कहेवाय छे. ते कामेतीने दाणो, चारो, रातब विगेरे जतन करवा सारु रुपीया खरचवानी आज्ञा आपे छे. वली शेठ गुमास्ताने माल निभाववाने अर्थे, हुन्डी, भाडुं, वोलावुं वीगेरे खरच करवानी आज्ञा आपे छे, तथा पोतानी मातबराइ राखवा निमित्ते दुकाननुं खर्च लागे तेनो पण आज्ञा आपे छे; पण ते खरचने लाभ नथी जाणता. जो खरच लाग्या वीना माल पुगे तो अने मातबराइ रहेतो खरच लगावे नही; पण खरच लाग्यावीना माल पुगतो दीसे नही तेथी खरच लगावे छे. वली कोइ संसारमां भर ( भयनी ) जग्याए माल लइने जातो होय तेने कोइ भलो आदमी मले, ते कहे के " अरे भाइ ! मार्गमां आगल भर-भय छे, माटे तुं वोलाइ खरचो वोलावाने लइने आगल जजे. " एम संसारमा पण भला आदमी होय ते पण उपगार निमित्ते आवी शोखामण देछे, त्यारे श्री तीर्थंकर, आचार्य अने उपाध्याय समान भला अने उपकारी बीजा कोण छे ? ए उपकार निमिते शिष्य शिष्यणीने ज्ञानादिक माल निभाववाने अर्थे, आहारादिक उदय भावमां छे.तोपण आज्ञा आपे छे; कारण के श्री तीर्थंकर चार तीर्थना कर्ता छे; अने तीर्थंकर, आचार्य अने उपाध्याय, ए चार तीर्थना मालीक छे. तेमणे साध-साधवीरुप चतुर्विध संघने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररुपी धन सोंप्युं छे; तेनुं जतन करवा तथा निभाववाने वास्ते मोक्ष नगरीए पांहोंचाववाने वास्ते, आहारादिक उधयभावमां छे तोपण आज्ञा आपे छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "साधुने आहार करतां सात आठ कर्म निर्जरे कह्यां छे." तेनो उत्तर. अरे देवानुप्रीय ! इहांतो प्रासुक एखणिक आहार पूर्वोक्त बंने धनाना द्रष्टान्ते लुखा प्रमाणे करे, ते लुखा प्रणाम क्षयोपशमभावमां छे, ते आश्री सात आठ कर्म निर्जरे एम

कह्युं छे; पण खावुं पीवुं तो सर्व उदयभावमां छे. वली जो श्रावक एवा लुखाभावे साधुनीपरे खाय तो तेने निर्जरा थाय के नही ते कहो. केमके ए लुखा प्रणाम तो क्षयोपशमभावे छे तेथी साधु श्रावक बंनेने निर्जरा थाय छे. जो आहार करवाथी निर्जरा धर्म थाय तो, एक साधु तो पांच रोटी खाय, अने एक साधु पांच रोटीनी खुराकवालो अणोदरी तपने वास्ते जाणीने बेज रोटी खाय. हवे खावामां धर्म होय त्यारे तो पांच रोटीनी खुराकवालो, जाणीने ब रोटी खाय तेने तमारे लेखे तो, घणो धर्म थवो जोइए; पण भगवंते तो, श्री प्रश्नव्याकरणमां थोडुं खाय तेने अणोदरी तप कह्यो छे; अने अधिको आहार करे तो अदत्तादान कह्युं छे. वली सूत्र उत्तराध्ययनना १७ मा अध्ययनमां वारंवार खाय तेने पापी श्रमण कह्यो छे. वली सूत्र दशाश्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां, वारंवार खाय तेने असमाधियो कह्यो छे; अने सूत्र उत्तराध्ययनना २९ माअध्ययनमां आहारनां पचखाण करवां कह्यां छे. इत्यादिक अनेक सुत्र-पाठमां आहारने उदयभावमां कह्यो छे, तसे एटला सूत्रना पाठ उत्थापीने, साधुना खावामां, निंद लेवामां, दिशाए जवामां, वाय संचरवामां, इत्यादिकमां धर्म कहीने अणहुती स्थापना केम करोछो ?

वली तेरापंथी कहे छे के "सामायकमां श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं छे. तेथी श्रावकने आहार दीधामां अने वंदणा कर्यामां पाप कहीये छीए." तेनो उत्तर. सूत्र भगवती शतक सातमें उद्देशे पहेले, श्रावकनी आत्माने अधिकरण केवी रीते कह्युं छे ते पाठः—

समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइय कडस्स समणोवासए अछमाणस्स तस्सणं भंते ! किं इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! नोइरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ. सेकेणठेणं भंते ! जाव

संपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! समणोवासयस्सणं सामाइय कम्मस्स समणोवासए अछमाणस्स आया अहिगरणी भवइ आयाअहिगरण वत्तीयंचणं तस्सणं नो इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ सेतेणठेणं॥

अर्थः—स० श्रमणोपासक श्रावकने भं० हे भगवान ! सा० सामायक क० कर्युं छे जेणे अ० सामायक नेश्राये रह्या त० ते भं० हे भगवान ! किं० शुं ? इ० इरियावही क्रिया करे ? के सं० संप्राइयाक्रिया करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! नो० इ० इरियावही क्रिया न करे, पण सं० संप्रायनी क्रिया करे. से० ते के० शा अर्थे भं० हे भगवान ! एम कह्युं जा० यावत् सं० संप्रायनीक्रिया करे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स० श्रमणोपासकने सा० सामायक कर्याने (उपाश्रयें रह्याने) सामायक नेश्राए रह्यो छे तेनो आ० आत्मा जीव अ० हल शकटादि कषायना आश्रयभुत जेने छे ते अधिकरणी कहीये. आ० आत्मानो जे अधिकरण तेज प्रत्यय कारण ते क्रिया कारणने छे. ते आत्माधिकरण प्रत्यय कहीये. त० ते नो० इ० इरियावही क्रिया न करे. सं० संप्राइयाक्रिया करे. से० तेणे अर्थे हे गौतम ! एम कह्युं.

भावार्थः—हवें जुओ ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, श्रावकने सामायकमां इरियावही क्रिया न लागे, संप्राइया (क्रोधादिकनी) क्रिया लागे; कारणके क्रोधादिक अधिकरण सहित छे ते माटे संप्राइयाक्रियाज लागे; अने इरियावही क्रिया तो क्रोधादिक रहित होय तेनेज ११ मा गुणठाणाथी १३ मा गुणठाणा सुधी लागे. इहां तो क्रियानी पुछा छे. हवे तमेज कहो के, इरियावही क्रिया केने अने कया गुणठाणे लागे ? अने संप्राइयाक्रिया केने लागे ? तवारे तेरापंथी कहे छे के "संप्राइया क्रिया तो क्रोधादिक अधिकरणथी लागे; अने इरियावहि क्रिया क्रोधादिक रहितने लागे." त्यारे जुओ ! देवानुप्रीय ! संप्राइयाक्रिया क्रोधादिकथी लागे, तेथी श्रावकनी आत्माने अधिकरण

कह्युं. हवे जो श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं तेथी तेने वंदणा करवामां पाप कहोछो, तो ए लेखे तो साधुने पण वंदणा करवामां पाप मानवुं पडशे; कारणके सूत्र भगवती शतक सातमे उद्देशे पहेले, साधुने पण संप्रायनी क्रिया लागे कह्युं छे. ते पाठः—

अणगारस्सणं भंते ! अणागउमाणस्सवा चिठमाणस्सवा णिसियमाणस्सवा तुयट्टमाणस्सवा अणाउत्तंवत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुछणं गिण्हमाणस्सवा निक्खिवमाणस्सवा तस्सणं भंते ! किं इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ ? गो० ! नोइरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ. सेकेणठेणं भंते ! गो० ! जस्सणं कोहमाणमायालोभा वोछिन्ना-भवइ तस्सणं इरियावहियाकिरियाकज्जइ. जस्सणं कोहमाणमायालोभा अवोछिन्ना भवइ तस्सणं संपराइयाकिरियाकज्जइ. अहा सुत्तंरीयमाणस्स इरियावहियाकिरियाकज्जइ. उसुत्तं-रीयमाणस्स संपराइयाकिरियाकज्जइ. सेणं उसुत्तमेवरियंति सेतेणठेणं ॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ! प्रश्न बीजे पाने ८५ मे.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां एम कह्युं के, जे उपयोग विना चाले, उभो रहे, बेसे, सुवे, उपगर्ण ले, मुंके अने क्रोधादिक सहित होय, अने सूत्रमां कह्युं तेथी विपरीत चाले तेने संप्रायनी क्रिया लागे; अने क्रोध, मान, माया, लोभ विछेद गयां होय अने सूत्रमां कह्युं ते रीते चाले तेने इरियावहि क्रिया लागे, एटले क्रोधादिक रहित होय तेनां संपूर्ण कामो उपयोग सहित कहीए अने तेनुं यथाख्यात चारित्र (अहासुयं) कहीए अने तेने इरियावहि क्रिया कहीए; अने क्रोधादिक सहित होय तेने संप्रायनी क्रिया दसमा गुणठाणा सुधी लागे, अने अग्यारमाथी आगल इरियावही क्रिया लागे. वली अधिकरण

नाम शस्त्रनुं छे. ते कर्मबंधननुं शस्त्र क्रोधादिकने कहीए. तेथी क्रोधादक सहित होय तेनी आत्माने अधिकरणी कहीए. ते तो दसमा गुणठाणा सुधी साधुने पण छे. पहेला चार नियंठा अने पहेला चार चारित्रना धणी साधुने संप्रायनी क्रिया लागे छे. वली सूत्र भगवती शतक दसमें, उद्देशा बीजामां पण कषाय सहितने संप्रायनी क्रिया लागे कही छे.त्यां कह्युं छे के, साधु कषाय सहित आगल, पाछल, पडखाम्हे, जुए तो संप्राया क्रिया लागे. ते दसमा गुणठाणा सुधी साधु कषाय सहित छे तेथी तेने संप्राया क्रिया लागे; अने कषाय रहितने इरियावहि क्रिया लागे. हवे श्रावकने संप्रायनी क्रिया सामायकमां लागे ते आश्री श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं छे; अने हलसकटादिक सर्व श्रावकने क्रोधादिकथीज अधिकरण कहीए छीए. वली सामायकमां श्रावकनी आत्माने अधिकरण कह्युं तेम साधुजीनी आत्माने पण अधिकरण कह्युं छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक १६ मे उद्देशे पहेले. ते पाठः—

कइणं भंते ! सरीरगा पं०गो०! पंचसरीरगा पं०तं० उरालिय जाव कम्मए. कत्तिणं भंते ! इंदिया पं०गो० ! पंचेंदिया पं०तं० सोइंदिए जाव फासिंदिए. कत्तिणं भंते ! जोए पं०गो० ! तिविहे जोए पं०तं० मणजोए वयजोए कायजोए. जीवेणं भंते ! उरालिए-सरीरं निवित्तमाणे किं अधिकरणी अधिकरण ? गो० ! अधिकरणिवी अधिकरणंपि. सेकेणठेणं भंते ! एवंवुच्चइ अधिकरणीवि अधिकरणंपि गो० ! अविरइं पडुच्च संतेणठेणं जाव अधिकरणंपि. पुढविकाइएणं भंते ! उरालिएसरीर निवत्तमाणे किं अहिगरणी अहिगरणं? एवं चेव एवं जाव मणुसे एवं वेउव्वियसरीरंपि नवरं जस्स-अत्थि. जीवेणं भंते! आहारगसरीर निवत्तमाणे किं अधिकरणि पुच्छा,गो० ! अहिगर-

णीवि अधिगरणंवि. सेकेणठेणं जाव अधिकरणंवि गो० ! पमार्य-पडुच्च सेतेणठेणं जाव अधिकरणंवि एवं मणुसेवि तेयासरीर जहा उरालिय नवरं सव जीवाणं नाणियवं एवं कम्मग-सरीरंपि. जीवेणं भंते ! सोइंदि निवत्तेमाणे किं अधिकरणी अधिकरणं एवं जहेव उरालिय-सरीरं तहेव सोइंदियंपि नाणियवं नवरं जस्सअत्थिसोइंदीयं एवं चखिंदियं घाणिंदिय जिभिंदिय फासिंदियाणंवि नाणियवं जस्सजं अत्थि. जीवेणं भंते ! मणजोगं निवित्तेमाणे किं अधिकरणि अधिकरणं? एवं जहेव सोइंदियं तहेव निरव सेसं वइजोग एवं चेव णवरं एगिंदिय वज्जाणं एवं कायजोगेवि णवरं सव्व जीवाणं जाव वेमाणिए सेवं भंते ! २ त्ति॥

अर्थः—क० केटला भं० हे भगवान ! स० शरीर पं० परुप्यां ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! पं० पांच शरीर पं० परुप्यां तं० ते कहे छेः- उदारीक १ जा० यावत् विक्रय २ आहारीक ३ तेजस ४ अने क० कारमण ५ क० केटली भ० हे भगवान ! इ० इंद्रिउ पं० कही ? गो० हे ! गौतम पं० पांच इंद्रिउ पं० परुपी तं० ते कहे छेः-सो० श्रोतेंद्रि १ जा० जावत् चक्षु इंद्रि २ घाणेंद्रि ३ रसेंद्रि ४ अने फा० स्पर्शेंद्रि ५. क० केटला भं० हे भगवान ! जो० जोग पं० परुप्या ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! ति० त्रण प्रकारे जो० जोग कह्या तं० ते कहे छेः-म० मनजोग व० वचन जोग अने का० कायजोग. जी० जीवने भं० हे भगवान ! उ० उदारिक शरीर प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शुं अ० अधिकरणि कहीए ? के अ० अधिकरण कहीए ? गो० हे गौतम ! अ० अधिकरणी पण कहीए, अ० अधिकरण पण कहीए. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं ? अ० जीवने अधिकरणी पण कहीए अने अ० अधिकरण पण कहीए ? गो० हे गौतम ! अ० अव्रत

प० आश्रीने से० ते तेणे अर्थे जा० यावत् जीव अ० अधिकरण पण छे. पु० पृथ्विकायने भं० हे भगवंत ! उ० उदारीक शरीर प्रत्ये नि० निपजावती थकी किं शुं अ० अधिकरणी कहीए ? के अ० अधिकरण कहीये ? ए० एमज कहेवुं, ए० एम जा० यावत् म० मनुष्यने विषे, ए० एम वे० वैक्रिय शरीरने पण कहेवुं; पण ण० एटलु विशेष ज० जे जीवने वैक्रिय शरीर छे तेने कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! आ० आहारीक शरीर नि० निपजावतो थको किं शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अधिकरण कहीए ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! अ० अधिकरणी पण कहेवो अने अ० अधिकरण पण कहेवो. से० ते शा अर्थे एम कह्युं जा० जावत् अ० अधिकरणी पण कहेवो ? ए प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! प० प्रमाद आश्रीने. कारण के आहारीक शरीर संजति साधुनेज होय. त्यां अयतना-अभावथी प्रमाद अधिकरणपणुं जाणवुं. से० तेणे अर्थे जा० यावत् अ० अधिकरण पण कहीये. ए० एम म० मनुष्यने पण कहेवुं. आहारिक शरीर मनुष्यनेज होय ते माटे. ते० तेजस शरीर ज० जेम उ० उदारीकनी पेरे केहेवुं. न० एटलुं विशेष तेजस शरीर स० सर्व जीवने होय ते माटे सर्व पद भा० कहेवुं. ए० एम क० कारमण शरीर पण कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! सो० श्रोतेंद्रिय प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अ० अधिकरण कहीए ? ए० एम ज० जेम उ० उदारीक स० शरीर कह्युं त० तेम सो० श्रोतेंद्रिय पण कहेवी. न० एटलुं विशेष ज० जेने अ० श्रोतेंद्रिय छे तेने कहेवुं. ए० एम च० चखुइंद्रि घा० घाणेंद्रि जी० जीभेंद्रि फा० स्पर्शेंद्रि छे तेने ते कहेवुं. ज० जेने जे इंद्रि अ० छे तेने तेज कहेवुं. जी० जीवने भं० हे भगवान ! म० मनजोग प्रत्ये नि० निपजावतो थको किं० शुं ? अ० अधिकरणी कहीए के अ० अधिकरण कहीये ? ए० एम ज० जेम सो० श्रोतेंद्रियने कह्युं तं० तेमज निर्विशेषपणे कहेवुं. व० वचनजोग पण ए० एमज; ण० एटलुं विशेष. इहां ए एकेंद्रिय व० वर्जवी. ए० एम का० कायजोग पण कहेवो. ण०

एटलुं विशेष स० ए जोग सर्व जी० जीवने कहेवो जा० यावत् वे० वै-मानिक सुधी कहेवो. से० तहत त्नं० हे जगवान !

जावार्थः—हवे जुर्ड ! आ पाठमां पांच शरीर, पांच इंद्रि अने त्रण जोगने तो अधिकरण कह्यां; अने ए बोल निपजावतां आत्माने अधिकरणी कह्यो. साधुजी पण वैमानिक देवतानुं आयुष्य बांधे त्यारे आ मांहेला केटलाक बोल निपजावे छे, ते आश्री साधुजीनी आत्माने पण अधिकरण कहीए; तथा मन वचनादिकनो जोग निपजावे छे ते आश्री अधिकरणी कहीए; तथा आहारीक शरीरने अधिकरण कहीए; अने निपजावे ते आश्री आत्माने अधिकरणी कहीए. ए आहारिक शरीर नियमा कषाय कुशीलनियंठाना धणी ( साधु )नेज होय. ए आहारीक शरीर आश्री अने प्रमाद आश्री साधुजीनी आत्माने अधिकरणी कही छे. वली छठे गुणठाणे साधुजी प्रमादिज छे. ए प्रमाद आश्री सा-धुजीनी आत्माने पण अधिकरणी कही छे. हवे तमे कहोगे के "सा-मायकमां श्रावकनी आत्माने अधिकरणी कही छे, तेथी तेने दान दी-धामां अने वंदणा कर्यामां पाप कहीए छीए." ए तमारी कहेणीने लेखे तो साधुजीनी आत्माने पण अधिकरणी कही छे. वास्ते साधुजीने पण दान देवामां अने वंदणा करवामां पाप लागशे.

हे देवानुप्रीय ! अधिकरणपणुं, कषाय उदयजावमां छे तेथी सं-प्रायनी क्रिया लागे ते आश्री कह्युं छे; अने वांदवावालो तो साधुजीने क्षयोपशम जावना गुण प्रगट्या तेथी वंदणा करे छे; पण उदयजावने नथी करतो. तेमज श्रावकने पण क्षयोपशम जावना गुण प्रगट्या तेने वंदणा करे छे. वली सूत्रमां श्रावकोने वंदणा करी ठाम ठाम चाली छे. इशी भद्र श्रावकने आलंजीया नगरीना सर्व श्रावकोए जगवंतना मोंढा आगल वंदणा करी छे. शाख सूत्र जगवती शतक ११ मे. ते पाठः—

ततेणंते समणोवासगा समणस्स ३ अंतियं धम्मंसोच्चा निसम्म हठतुठा उठाएउठेइ २ त्ता समणं ३ वंदंति नमं-

संति वंदी २ त्ता एवंवयासी एवंखलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्मं एवमाइक्खई जाव परुवेइ देवलोएसुणं अज्ञो देवाणं जहणेणं दसवाससहस्साइं ठिइ पं० तेणपरं समयाहिया जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय देवलोगाय सेकहमेयं भंते ! एवं अज्ञोति समणेभगवं महाविरे ते समणोवासगाणं एवंवयासी जणं अज्ञो इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुझं एवमाइक्खइ जाव परुवेइ देवलोगेसुणं अज्ञो देवाणं जहणेणं दसवास-सहस्साइ ठिइ पं० तंचेव समयाहिया जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय-देवलोगाय सच्चेण एसमठे. अहंपुण अज्ञो एवमाइक्खामि जाव परुवेमि देवलोगेसुणं अज्ञो देवाणं जहणेणं दसवाससहस्सं तंचेव जाव तेणपरं वोछिन्ना देवाय-देवलोगाय सच्चेणं एसमठे. तएणं से समणोवासग्गा समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतियाउ एयमठं निसम्म समणं ३ वंदंति नमंसंति वंदित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासग्गं वंदइ नमंसइ एयमठं सम्मं विणएणं भूजो २ खामेइ ॥

अर्थः—त० तवारे ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण भगवत श्री माहावीर देवना अं० समिपथी ध० धर्मकथा सांभलीने नि० हृदये धारीने ह० हर्ष शंतोष पाम्या. उ० उठी उभा थाय, उभा थइने स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर देव प्रत्ये वं० वांदीने न० नमस्कार करे, करीने ए० एम कहेः-ए० एम निश्चे भं० हे भगवान! इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक अ० अमने ए० एम मा० कहे (सामान्यथी) जा० यावत् एम प० परुपे (विशेषथी):-दे० देवलोकने विषे अ० अहो

आर्यो ! दे० देवनी ज० जघन्यथी द० दस सहस्त्र वर्षनी ठि० स्थिति पं० कही. तं० तेमज स० समयाधिक जा० जावत् उत्कृष्ठथी ३३ सागर ते० तेना उपरान्त वो० विछेद गया दे० देवता अथवा दे० देवलोक. से० ते क० केम जं० हे भगवंत ! ए० ए वार्ता ? अ० अहो आर्यो इति आमंत्रणे स० श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते० ते स० श्रमणोपासक प्रत्ये ए० एम व० कहेः-ज० जे भणो अ० अहो आर्यो ! इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक तु० तुम प्रत्ये ए० एम भा० कहे जा० यावत् एम प० परुपेः-दे० देवलोकने विषे अ० अहो आर्यो ! दे देवतानी ज० जघम्यथी द० दस हजार वर्षनी ठि० स्थीती पं० कही. तं० तेमज स० समयाधिक जा० जावत् ते० ते उपरान्त वो० विछेद गया दे० देव तथा देवलोक. स० साचो ए० ए अर्थ कह्यो. अ० हुं पण अ० अहो आर्यो ! ए० एम भा० कहुं छुं जा० यावत् एम प० परुपुं छुंः-दे० देवलोकने विषे अ० अहो आर्यो ! दे० देवनी ज० जघन्य द० दस सहस्त्र वर्षनी इत्यादिक तं० तेमज जा० यावत् ते० ते उपरान्त वो० विछेद गया दे० देव तथा देवलोक, स० साचो ए अर्थ कह्यो. त० तेवारे से० ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण भगवंत श्री माहावीर देवना अ० समिपथी ए० ए अर्थ नि० सांभलीने स० श्रमण भगवंत श्री माहावीरदेव प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे. वं० वांदीने, नमस्कार करीने जे० ज्यां इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने इ० ऋषीभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे. ए० एवो अर्थ स० सम्यक् प्रकारे वि० विनये करी भु० वारंवार खा० खमावे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां पहेलां ऋषीभद्र श्रावके देवतानी स्थितीनां ठकाणां कह्यां, पण श्रावकोने प्रतीत आवी नही, तेथी श्री भगवंत पधार्यां त्यारे पुछ्युं. भगवंते रुषीभद्र श्रावकनी कहेली वात स्वीकारी अने रुषीभद्रनी प्रशंशा कीधी. पछी श्रावकोए भगवंतनी रुबरु रुषीभद्रपुत्रने वंदणा नमस्कार करी खमाव्या; पण भगवंते

निषेध्या नही. पछी पोते पोतानो अपराध खमाव्यो. तेमज वली संख-जीनी स्त्री उत्पलाए ( नव तत्वनी जाण ) पोष्कलीजी श्रावकने वंदणा नमस्कार कर्यो छे; अने पोष्कली श्रावके इरियावही पडिक्कमि पापथी निर्वर्तीने पछी संखजी श्रावकने पोसामां बेठाने वंदणा नमस्कार कर्यो छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक बारमे उद्देशे पहेले. ते पाठः—

तएणं सा उप्पलासमणोवासिया पोक्कलि समणोवासगं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हठतुठ आसणाउ अब्भुठेइ २ त्ता सतठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता पोक्कलिसमणोवासगं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता एवंव० संदिसं-तुणं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पउयणं. तएणंसे पोक्कलेसमणोवासए उप्पलंसमणोवासियं एवं वयासी कहिणं देवाणुप्पिया ! संक्केसमणोवासए. तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्कलिं समणोवासग्गं एवंवयासी एवंखलु देवाणुप्पिया ! संक्के समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारि जाव विहरइ. तएणंसे पोक्कलिसमणोवासए जेणेव पोसहसालाए जेणेव संक्केसमणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गमणागमणाए पडिक्कम्मइ २ त्ता संक्कंसमणोवासगं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासि एवंखलु देवाणुप्पिया ! अम्हे से विउले असण जाव साइमे उवक्कडावेइ तंगच्छामोणं देवाणुप्पिया तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो. तएणं से संक्केसमणोवासए पोक्कलिसमणोवासग्गं एवंवयासि णो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया तं विउलं असणं ४ असाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए

कप्पइमे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए तंन्नं-देणं देवाणुप्पिया तुब्भे तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा जाव विहरह ॥

अर्थः—त० तेवारे सा० ते उ० उत्पलानामे श्रमणोपासिका पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० आवता पा० देखे, देखीने हृ० हर्ष संतोष पामीथकी आ० आसनथी अ० उठे, उठीने स० सात आठ पग अ० सामी जाय, जइने पो० पोखली श्रमणोपासक प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे वं० वांदीने न० नमस्कार करीने आ० आसने करी आ० आसननी उ० निमंत्रणा करे, करीने ए० एम व० कहेः-सं० आज्ञा यो दे० अहो देवानुप्रीय ! किं० शुं आववानो प्रयोजन ? एटले शा कार्ये आव्या छो ? त० तेवारे से० ते पो० पोष्कली श्रमणोपासक उ० उत्पलाश्रमणोपासीका प्रत्ये ए० एम व० कहेः-क क्यां छे दे० हे देवानुप्रीय! सं० शंख श्रमणोपासक ? त० तेवारे सा० ते उ० उत्पला श्रमणोपासीका पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० एम कहे छे-ए०ख० एम निश्चे दे० हे देवानुप्रीय ! सं० संख श्रमणोपासक पो० पोषधशालाए पो० पोसह सहित बं० ब्रह्मचर्य सहित जा० यावत् वि० वीचरे छे. त० तेवारे से० ते पो० पोष्कली श्रमणोपासक जे० ज्यां पो० पोषधशाला छे. जे० ज्यां सं० शंख श्रमणोपासक छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने ग० इरियावहि पडिकमे, गमणागमणे इत्यादिक कहे, कहीने सं० शंख श्रमणोपासक प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदीने, नमस्कार करीने ए० एम व० कहेः-ए० एम ख० निश्चे दे० अहो देवानुप्रीय ! अ० अमे से० ते वि० विस्तीर्ण अ० असन जा० जावत् सा० स्वादिम उ० रंधाव्या छे तं० ते अपणी ग० आववुं जोइए. दे० हे देवानुप्रीय ! तं० ते वि० विस्तीर्ण अ० असन जा० यावत् सा० स्वादीम, ए चार आहार प्रत्ये आ० थोडो स्वादताथका जा० यावत् प० अनुपालता थका वि० विचरीए. त० तेवारे से० ते सं० शंख श्रमणोपासक पो० पोष्कली श्रमणोपासक प्रत्ये ए० एम

व० कहेः-णो० नही ख० निश्चे क० मुजने कल्पे दे० हे देवानुप्रीय ! तं० ते वि० वीस्तीर्ण अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम, ए चार आहार प्रत्ये आ० थोको आस्वादतो जा० यावत् प० पाली पोषह अनुपालतां वि० विचरवुं. क० ते माटे कल्पे मुजने हे देवानुप्रीय ! पो० पोषहशालामां पो० पोषध युक्तने जा० यावत् वि० विचरवुं. तं० ते जणी तमारी इछा; ( पण इहां माहारी आज्ञा नथी ). दे० हे देवानुप्रीय ! तु० तमे तं० ते वि० विस्तीर्ण अ० असनादि चार आ० आस्वादता थका जा० यावत् वि० विचारो.

जावार्थः—हवे जुउ ! उत्पल्ला श्रावीका एवी विचीक्षण नव तत्वनी जाण, तेणे पोष्कलीजी श्रावकने आवता देखीने हर्ष संतोष पामीने, साधुनी पेरे सात आठ पग सामी जइने वंदणा नमस्कार कर्यो. पछी पोष्कलीजी श्रावके शंखजीने पोषामां बेठा छे त्यां जइने गमणा गमणे पडिकमणी, पापथी निवर्तीने पछी वंदणा नमस्कार कर्यो. जो तमारा सरखी जगवंतनी श्रद्धा होत अने पाप श्रद्धाव्युं होत तो ए वंदणा केम करत ? वली एज बारमा शतकना पहेला उदेशामां शंखजी श्रावकने सर्व श्रावकोए जगवंतना रुबरु वंदणा नमस्कार कर्यो छे. ते पाठ.

तएणं से संखसमणोवासए समणंजगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी कोहवसट्टेणं जंते ! जीवे किं बंधइ किंपकरेइ किंचिणाइ किंउवचिणाइ? संखा कोहवसट्टेणंजीवा आउयवज्जाउ सत्तकम्म पगम्डिउ सिढिल बंधण बंधाए धणियबंधणबंधइ जहा पढमेसए असंवुम्स्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ॥ माणवसट्टेणं जंते ! एवं चेव एवं मायावसट्टेवि एवं लोजवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ. तएणं ते समणोवासगा समणस्स जगवउ माहावीरस्स अंतिए एयमठं सोच्चा निसम्म जिया तछा तसिया. संसारजयु-

विग्ग समणं ३ वंदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखेसमणोवासए तेणेव उवागच्छति २ त्ता संखंसमणोवा-सग वंदंति नमंसंति एयमठं सम्मं विणएणं नुजो २ खामेइ॥

अर्थः—त० तेवारे से० ते सं० शंख श्रमणोपासक स० श्रमण नगवंत श्रीमहावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे, वांदीने नमस्कार करीने ए० एम कहे-को० क्रोधने वशे पीमित नं० हे नगवान ! जी० जीव कि० बं० शुं बांधे? कि० प० शुं पुष्ट करे? किंचि० शुं चीणे ? किंउ० शुं उपचय करे ? ए प्रश्न. उत्तर. सं० हे शंख ! को० क्रोधने वशे पीमित जीव आ० आयुकर्म वर्जीने स० सात कर्म प्रकृति सि० सिढल बंधणे बांधी होय ते ध० दृढ बंधणे करे (कठोर बांधे).ज० जेम पहेला शतकने विषे अ० असंवुरू अणगारना अधिकारे कह्युं तेम इहां पण केहेवुं. जा० जावत् अ० संसारमां नमे. मा० मानने वशे पीमीत जीव नं० हे नगवान! इत्यादिक ए० एमज ए० एम मा० मायाने वशे पीमीत जीव पण ए० एम लो० लोनने वशे पण कहेवा जा० यावत् अ० संसारमां परिभ्रमण करे. त० तेवारे से० ते स० श्रमणोपासक स० श्रमण नगवंत श्री माहावीरना समिपथी ए० ए अर्थ सो० सांनलीने नि० हृदये धा-रीने नि० नय पाम्या त० (त्रागा मनने विषे उद्वेग पाम्या). सं० संसारना नयथी उद्विग्न थया थका स० श्रमण नगवंत श्री माहावीर प्रत्ये वं० वांदे न० नमस्कार करे वं० वांदीने न० नमस्कार करीने जे० ज्यां सं० शंख श्रमणोपासक छे ते० त्यां उ० आवे, आवीने सं० शंख श्रमणो-पासकने वं० वांदे न० नमस्कार करे. ए पूर्वोक्त अर्थ स० नले प्रकारे वि० विनये करी नु० वारंवार खा० खमावे.

नावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां शंखजी श्रावके क्रोध मानथी श्रावकोने निःसल्ल करवा माटे नगवंतने क्रोध, मान, माया अने लोनना फल पुछयां. तेवारे नगवंते कह्युं के, सात कर्म ढीलां बांध्यां होय ते गाढां बांधे; यावत् चार गतिमां वारंवार परिभ्रमण करे. ते वचन सां-

जलीने श्रावक कर्या, उद्वेग पाम्या. पढी शंखजीकने आवीने वंदणा नमस्कार कर्यो. पढी पोतानो अपराध खमाव्यो. ए जुर्ज! श्रावकने वंदणा नमस्कार कर्यामां पाप होय तो, ते समजवार श्रावकोए जगवंतना रुबरु वंदणा केम करी अने जगवंते तेमने केम न निषेध्या?

तेवारे तेरापंथो कहे ढे के, पूर्वे रिषिजद्र श्रावकनो देवतानी स्थिती जघन्य दस हजार वर्षथी एक समय अधिकथी मांमीने तेत्रीस सागरना समा सुधी देवतानी स्थितीनां ढेकाणां कह्यां तेनो उंमो दीधो हतो ते अप्राध माटे खमाव्या ढे, अने शंखजी श्रावक उपर श्रावकोनो क्रोध-जाव रह्यो ते अपराध माटे खमाव्या ढे. एम कहे ढे तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! अप्राध कर्या माटे वंदणा नमस्कार तो न करवो जोइए, पण साचाने जुठा पाड्यानो अप्राध तो जेम आणंद श्रावकने गौतम स्वामीए खमाव्या तेम खमाववा जोइए. ए 'वंदइ नमंसइ' तो वंदणानो पाठ ढे अने अप्राध तो वंदणा नमस्कार करीने पढी खमाव्या ढे. वली हालमां तमारा श्रावक खमत खामणां तो रीस मटामवा माटे करता हशे, पण 'वंदइ नमंसइ' तो करता दीसता नथी. जो तमारा सरखी श्रद्धा जगवंते शीखवी होत तो तमारा श्रावक करे ढे तेमज ते पण करत. वली अप्राधनी कुयुक्ति देखामी, पण उत्पल्ला श्रावीकाए पोष्कलीजीने वांद्या, तथा पोष्कलीजी श्रावके पहेलां शंखजी श्रावकने पोसामां वांद्या, एमणे कयो अप्राध कर्यो हतो के जेथी वांद्या? वली सुबुद्धि प्रधाने जितशत्रु राजाने धर्ममां समजाव्यो, ते माटे तेनो धर्माचार्य थयो, तेथी तेणे वंदणा नमस्कार कर्या, एम तमे कहो ढो; पण त्रण प्रकारना आचार्य कह्या ढे. तेमां ए सुबुद्धि प्रधान, जितशत्रु राजानो कयो आचार्य कहेवाय ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे ढे के "एटले ठामे 'वंदइ नमंसइ' एटलोज पाठ ढे; पण तिखुत्तानो बधो पाठ नथी." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जगवतीजीना त्रीजा शतकना पहेला उदेशामां, तामली तापसे रातनी

चिंतवणामां चिंतव्युं के, ए मारुं कुटुंब मुझने " वंदइ नमंसइं समाणेइं कल्लाणं मंगलं देवीयं चेइयं पजवासन्ति." इहां तामलीए "देवीयं चेइयं" कह्युं, त्यारे तेथी श्रावक शुं? हींणा छे. वली सूत्र जगवतीमां सातमा देवलोकना देवता जगवंत श्री माहावीर देव कने आव्या, त्यां "वंदइ नमंसइ" एटलोज पाठ कह्यो छे. एम घणे ठेकाणे सूत्रमां जगवंतने तथा साधुने " वंदइ नमंसइ " ज कह्या छे. त्यारे शुं? जगवंतने तथा साधुने " वंदइ नमंसइ " शब्दथी वांद्या न कहेवाय? हे देवानुप्रीय! वंदणा नमस्कारमां पंच अंग नमाव्यां, त्यां बधो तिखुत्तानो पाठ आवी गयो. पुरा तिखुत्तानुं शुं कारण छे? ए वंदणा नमस्कार श्रावके कर्या तेमां शुं थयुं?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "ए तो संसारना हेते कीधा हशे, पण धर्म जाणीने कीधा तो नथी चाल्युं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! संसारमां तो रामराम, जुहार, मुजरो, पगे लागवुं करवानी रीत छे. ते तो कर्या वीना संसारमां बेठा तेने चाले नही, पण पाप जाणे तो ए "वंदइ नमंसइ" नी नवी रीत, धर्म पामीने पापनी केम चलावी? वली हालमां पण संसारना हेते "वंदइ नमंसइ" तो कोइ करता देखाता नथी. तेम आगल पण संसारना हेते रामराम जुहार आदि करता हशे, पण ए "वंदइ नमंसइ" तो धर्म पाम्या पछी विनयरुप लाज्ञ जाणीने करता दीसे छे. वली रुबरुमां तो संसारना हेते, मुलायजाथी तथा लोक लाजथी रामराम, जुहार, मजरो अने पगेलागणुं करे छे, अने वेषना धणीने रामराम, नमोनारायण, जेश्रीनाथजीनी, जय श्री गोपालजीनी, इत्यादिक करे छे; पण एकलो घरमां एकान्त जग्याए बेसीने सामायक पोसा करे त्यां वंदणा नमस्कार केने करे ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अरिहंतने, सिद्धने अने साधुजीने धर्म जाणे तेने करे; अने जेने वंदणा कीधां पाप थाय तेने न करे; अने सामायक पोसा एकान्ते करे त्यां कोइ रुबरु न होय तेने पूर्वोक्त राम-

रागादि करे तो तेने अणसमज मिथ्यात्वी कहीये." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! अंमडजी संन्यासी (श्रमणोपासक)ना सातसो शिष्य श्रमणोपासक, तेमने वहेतुं पाणी आज्ञा लइने पीवानो अभिग्रह हतो. तेमणे जेठ महीने कंपीलपुरथी पुरमताल तरफ विहार कीधो त्यारे तेमने मार्गमां तृषा लागी, पण पाणीनी आज्ञा देवावालो कोइ दातार मल्यो नही, तेथी तेमणे गंगा नदीने कांठे संथारा उपर बेसी पूर्वजणी मोढुं करीने त्रण नमोथ्थुणं कह्यां छे. ते उववाइ सूत्रनो पाठः—

तिदंडिएय जाव एगंते एडंति २ त्ता गंगामहाणइउग्गाहिंत्त गंगामहाणइउग्गाहित्ता वालुया-संथारए संथरंति २ त्ता वालुयासंथार डुरुहंति २ त्ता पुरछाभि-मुहा संपलियंका निसणा. करयल जाव कट्टु एवंवयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं समणस्स भगवउ महावीरस्स जाव संपाविउ कामस्स नमोत्थुणं अंमडस्सप रिवायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स ॥

अर्थः—ति० त्रण दांडी प्रमुख जा० यावत् चौद उपगर्ण ए० एकान्त ए० छांडे, छांडीने गं० भेखडथी हेठा उतरी गंगा नदीनी वेलुमां उ० आवे. गं० गंगा नदीनी वेलुमां आवीने वा० वेलुना संथारा सं० संथरे, संथारीने वा० वेलुना संथारा उपर दु० बेसे, बेसीने पु० पूर्व दिशा सामुं मुख राखी सं० पलांठी वाली नि० बेठा. क० बे हाथ जोडीने माथे चडावी जा० यावत् ए० एम कहेः-न० नमस्कार थाउ अ० समचय अरिहंतने जा० यावत् सं० मुक्तिए पोहोच्या अरिहंतने, सिद्धने, एम तीर्थंकरने अने सिद्धजीने नमस्कार करीने, पछे वली ण० नमस्कार होजो स० श्रमण भगवंत श्री महावीरने नाम लइने जा० यावत् सं० मुक्ति पामवाना कामीने, ण० वली नमस्कार होजो अं० अंमड परिव्राजकने अ० अमारा ध० धर्माचार्यने ध० धर्म उपदेशना देणहारा अंमडगुरुने.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां संथारो करती वेला बे हाथ जोडी अंजली करी मस्तक नमावीने एक नमोथ्थुणं तो पहेला सिद्ध-जीने कर्युं, बीजुं नमोथुणं भगवंत श्री माहावीर देवने कर्युं, अने त्रीजी वार नमोथुणं नमस्कार अंमडजी संन्यासीने (श्रमणोपासक श्रावकने) पोताना धर्माचार्य धर्म उपदेशना देणहारा जाणीने कर्युं. ए जुओ ! वनमां एकान्त जगाए संथारो करतो वेला अरिहंत, सिद्धनी जोडे अंमडजी श्रावकने पण नमस्कार कर्यो, अने ते सातसो, पांचमे देवलोके गया अने एकावतारी आराधीक थया. वली अंमडजी श्रावक रुबरु होय तो मुलायजाथी कर्या कहेवाय; पण अंमडजी रुबर हाजर नहोता. ए पर पुठे संथारो करतां धर्म न जाणे, तो ए अनर्थ पापनुं काम केम करे अने समकित केम रहे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वलो श्रावकना विनयने धर्मनुं मूल बखुं छे. शास्त्र सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन पांचमे. ते पाठः—

तेणंकालेणं तेणंसमयेणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं परिसानिग्गया सुदंसणोवि निग्गए. थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवंवयासी तुब्भेणं किं मुलए धम्मे पंन्नते. ततेणं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्तेसमाणे तं सुदंसणं एवंवयासी सुदंसणा ! विणयमुलेधम्मे पन्नते से-विय विणए दुविहे पन्नते तं० आगारविणएय अणगार-विणएय. तत्थणं जेसे आगारविणए सेणं पंच अणुवयाइं सत्तसिख्खावयाइं एकारस उवासग्गपडिमाउ. तत्थणं जेसे अणगारविणए सेणं पंचमहव्वयाइं तंजहा सवाउपा-णाइवायाउविरमणं सवाउमुसावायाउविरमणं सवाउअ-दिन्नादाणाउविरमणं सवाउमेहुणाउविरमणं सवाउपरिग्ग-हाउविरमणं सवाउराइभोयणाउविरमणं जाव मिच्छादंस-णासल्लाउविरमणं दसविहे पच्चख्खाणे बारस भिख्खुपडिमाउ

इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलेणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अठ-कम्मपगमीउ खवेत्ता लोइग्गा पइठाणा नवंति ॥

अर्थः—ते० काले ते० समये था० थावरचापुत्र स० त्यां सोगंधिका नगरीए आवी उतर्या (समोसर्या). प० प्रखदा वांदवा नीसरी. सु० सुदर्शन पण नि० वांदवा निकल्यो. ते था० थावरचापुत्रने वं० वांदे न० नमस्कार करे. वं० वांदीने, नमस्कार करीने ए० एम कहे:-तु० तमारा किं० धर्मनो मूल शुं प० कह्यो छे? त० तेवारे था० थावरचापुत्र सु० सुदर्शनना ए० वु० एम कह्याथी तं० ते सु० सुदर्शनने ए०व० एम कहे सु० हे सुदर्शन ! अमारे वि० विनयमूलधर्म प० कह्यो. से० ते पण वि० विनय मूल धर्म दु० बे प्रकारे पं० कह्यो तं० ते कहे छे. आ० ग्रहस्थ विनय धर्म अने अ० अणगार ( यतिनो ) विनय धर्म. त० तीहां जे० जेते अ० ग्रहस्थ विनय धर्म से० ते पं०अ० पांच अणुव्रत स०सि० सात शिक्षाव्रत ए० अग्यार उ० श्रावकनी पडिमा. ए ग्रहस्थनो विनय धर्म. त० तीहां जे० जे अ० (अणगार) साधुनो विनय धर्म से० ते पं०म० पांच महाव्रत कह्यां तं० ते कहे छे. स० पा० सर्वथा प्राणातिपात जीव मारवाथी निवर्तवुं ते, स०मु० सर्वथा जुठुं बोलवाथी निवर्तवुं ते, स०अ० सर्वथा अदत्तादान लेवाथी (चोरी करवाथी) निवर्तवुं ते, स०मे० सर्वथा मैथुनथी निवर्तवुं ते, स०प० सर्वथा परिग्रहथी निवर्तवुं ते, स०रा० सर्वथा रात्रीजोजनथी निवर्तवुं ते जा० यावत् मि० क्रोध, मान, माया, लोज, रागद्वेष इत्यादिक मिथ्यात्व दर्शन शल्य अढारपाप स्थानकथी निवर्तवुं ते, द० दस प्रकारे प० पचखाण बा० बार प्रकारे जि० यतिनी पडिमानो विनय धर्म इ० इत्यादिक. दु० बे प्रकारे वि० विनय मूल ध० धर्म अ० अनुक्रमे अ०क०प० ज्ञानावरणी आदिक आठ कर्मनी प्रकृतिने ख० खपावीने लो० लोकाग्र प० मोक्षमधे प्रतिष्ठान ज० थाय.

जावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, थावरचापुत्रे सुदर्शन शेठने धर्मनुं मूल विनय कह्यो. ते विनयना बे जेद कह्या. आ-

गार विनय अने आगार विनय. आगार विनय ते श्रावकनो विनय करवो, अने अणगार विनय ते साधुनो विनय करवो. ए जुउ! साधु श्रावक बंनेनो विनय ते धर्मनुं मूल छे एम कह्युं. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "श्रावकनां पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, सामायक, पडिकमणुं, बोल, चाल, आदि शीखवाडे तेने विनय कहीये." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय! श्रावकने तो तीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय अने साधुजी ज्ञान शीखवाडे छे. ते तमारी केहेणीने लेखे तो तीर्थंकर, केवली, आचार्यादिक सर्वने श्रावकनो विनय करवावाला वंनित कहीये. हे देवानुप्रीय! शीखवे तेने विनय कहीए एम केम कहोछो? विनय तो लघुपद छे. आव्यां उठी उभो थाय, सामो जाय, जाताने पहोंचाडे, आसन बीछावी आपे, हाथ जोडे, शीष नमावे आदि दइ विनयना १३४ भेद कह्या छे. तेनी शाख सूत्र उववाइ तथा भगवती शतक २५ में. ते आगलाथी नमता भावमां रहे तेने विनय कहीए, अने शीखवाडे तेने तो ज्ञानना दातार, गुरु अथवा धर्माचार्य कहीये. इत्यादिक अनेक सूत्र पाठमां श्रावकनो विनय तथा वंदणा नमस्कार करवो कह्युं छे. वली श्रावकने वंदणा-नमस्कार कर्यामां पाप कहे तेने पुछवुं के, श्रावकने वंदणा, नमस्कार, विनय करे ते उदयभावमां के क्षयोपशम भावमां ते कहो. वली श्रावक साधर्मि उपर हेत, प्यार तथा संप राखे ते उदयभावमां के क्षयोपशमभावमां ते कहो. वली सनत्कुमार इंद्रजी पेरे चार तीर्थना 'हियाए सुहाए खमाए निसेसाए' प्रवर्ते. ए गुण उदय भावमां के क्षयोपशम भावमां ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, हियाए सुहाए केने कहीये. तेनो उत्तर. सूत्र भगवतीजीना पंदरमा शतके, चार वाणीआना दृष्टान्ते. तेमां चोथो पुरुष वाणीओ भेदे तेने पुरुषनो हियाएसुहाए थको एवी बुद्धिए वर्त्यो छे, ते 'हियाए सुहाए' इहां पण जाणजो. इहां पण भक्तिभाव करे, एवो अर्थ थाशे; पण लाकडीना प्रहार कर्याथी कांइ 'हियाएसुहाए'

नही थाय. ए विनय-वंदणा, नमस्कार करवाना प्रणाम उदय भावमां के क्षयोपशम भावमां ? जो उदयभावमां कहेशो तो कया कर्मनो उदय छे ? अने ए प्रणामे अशुभ कर्म बंधाय तो कयुं कर्म बंधाय ? ए कया कर्म बांधवाना कारणमां भले ते निर्णय कहो. वली चतुर्विध संघनी वैयावच करवी तो सूत्रमां घणे ठामे कही छे. तमे आटला सूत्रना पाठ उत्थापीने पडिमाधारी प्रमुख विरक्त श्रावकना विनय, वैयावच, वंदणा, नमस्कार, कर्यांमां मतना लीधे पाप केम बतावो छो ?

वली तेरापंथी कहे छे के, " साधु वसे ते जग्यामां ते ठामे रात्रे, अरूध्रि रात के बधी रात ग्रहस्थने के श्रावकने राखवो न कल्पे, अने राखे तो चोमासी प्रायश्चित आवे, एम सूत्र नषितना आठमा उद्देशामां कह्युं छे. " ए तेमनुं ( तेरापंथीनुं ) कहेवुं सूत्रार्थना अजाणपणानुं छे, कारण के नषितनी चूर्णिकामां ए अर्थ एम कह्यो छे के, जे स्त्री तथा परिग्रह सहित कलेश करी तथा राज अप्राधी चोर इत्यादिक अपराध करी आव्यो छे तथा सारंभी, सपरिग्रही छे, तेनी ना कही छे. वली नषितमां तो एम कह्युं छे के, राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो चोमासो प्रायश्चित आवे. एनो परमार्थ ए छे के, पोताना स्वार्थे ग्रहस्थीने कहे " तुं मारी कने रहे. " एम कहीने राखे तो, तथा अनेरा साध तथा ग्रहस्थ श्रावकने कहे के, "तमे मारा पासे ग्रहस्थीने राखो" एम कहीने रखावे तो, तथा कोइ साधु श्रावक, ग्रहस्थने रातना पोताना स्वार्थने अर्थे राखे, त्यारे एम जाणे के " ए रुडुं काम करे छे, मारे वास्ते ग्रहस्थीने राखे छे; " एवी रीते राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो प्रायश्चित आवे कह्युं छे; पण एम नथी कह्युं के, साधु सेहेज स्वभावे ग्रहस्थना भेलो रहे तो चोमासी प्रायश्चित आवे. ए तो साधु पोताना मतलब काजे राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तो चोमासी प्रायश्चित कह्युं छे; पण सेहेजे धर्मध्यान, सामायक, पोसा, संवर प्रमुख करे तथा रात्रे साधुजीनी सेवा भक्ति करे तेने निषेध्यो नथी. तेनो शाख सूत्र ब्रहत्कल्प उद्देशे पहेले. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथीणं सागारिए अणिसाए वत्थए. २२ कप्पइ निग्गंथीणं सागारि णिसाए वत्थए. २३ कप्पइ निग्गंथाणं सागारिय णिसायवा अणिसाएवा वत्थए. २४ नोकप्पइ निग्गंथाणंवा सागारिय उवस्सए वत्थए. २५ कप्पइ निग्गंथाणंवा २ अप्प-सागारिय उवस्सए वत्थए. २६ नोकप्पइ निग्गंथाणं इत्थिसागारिय उवस्सए वत्थए. २७ कप्पइ निग्गंथाणं पुरिससागारिय उवस्सए वत्थए. २८ नोकप्पइ निग्गंथिणं पुरिससागारिय उवस्सए वत्थए. २९ कप्पइ निग्गंथीणं इत्थिसागारिय उवस्सए वत्थए ॥ ३० ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधवीने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनी अ० नेश्राय विना व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधवीने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनो णि० नेश्राये व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधुने सा० प्रतितकार्यो ग्रहस्थनी णि० नेश्राये अ० अनेश्राये पण व० रहेवुं. नो० न कल्पे नि० साधुने तथा साधवीने सा० ग्रहस्थनां धन आभर्ण होय तेवा उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं. ज्ञान न थाय तथा शंका पण आवे जे, एणे लीधुं हशे, माटे एवा स्थानकने विषे न रहेवुं. क० कल्पे नि० साध साधवीने अ० धन आभर्ण रहित उ० स्थानके व० रहेवुं. नो० न कल्पे नि० साधुने इ० सागारिकनी स्त्री रहेती होय ते उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधुने पु० सागारीक पुरुष रहेतो होय (पुरुषपणे साधुने पण घर आंगण छे ते मध्ये पुरुषने वस्तु लेतां मुकतां, आव्यानो प्रजोग पडतो होय तेवो पुरुष त्यां रहे ) एवा उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं. नो० न कल्पे साधवीने पु० पुरुष रहेतो होय ते उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधवीने इ० स्त्री रहेती होय ते उ० उपाश्रयने विषे व० रहेवुं.

भावार्थः—इहां एम कह्युं के, स्त्री सहित स्थानक साधवीने कल्पे,

अने पुरुष सहित स्थानक साधुजीने कल्पे. ए सूत्र पाठमां ग्रहस्थने नेलुं रहेवुं कह्युं. तेवारे तेरापंथी खोटी युक्ति मेलवे छे के " ए नेश्राय कही ते स्त्री तथा पुरुष राज करता होय तेनी नेश्राये रहेवुं. " एम अर्थ करे छे, पण ते खोटो छे; कारण के पांच नेश्रायमां राजानी नेश्राय कही छे. ते राजानी नेश्राये तो साधवी वर्ते छे ते केम मले ? अने ज्यां स्त्री राज करती होय ते ठामे स्त्रीनी नेश्राये साधु वर्ते छे ए केम मले ? हे देवानुप्रीय! इहां तो 'नवसए वछए' नपाश्रयमां नेला रहेवुं ते माटे पाठ कह्यो छे.

वली तेरापंथी कहे छे के, " साधुने पुरुषनी नेश्रायनी जग्या होय अने पुरुषनी आज्ञा होय त्यां रहेवुं; अने साधवीने स्त्रीनी नेश्रायनी आज्ञानी जग्यामां रहेवुं. " तेनो नत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र नगवती शतक बारमें नद्देशे बीजे कह्युं छे के, वीर प्रज्जुना साध-साधवीने, जयंती श्रावीका प्रथम स्थानकनी दातार छे त्यां 'अरिहंताण पुबसिजायरिए' एवो पाठ छे. ते पाठनी नेश्राये तो सुख कल्पे; अने व्यवहारजीनो ए पाठ तो एक नपाश्रयमां नेला रहेवा आश्रीज छे. वली वीरप्रज्जुना निर्वाण काल समयने विषे, अढार देशना राजाए प्रज्जुनी पासे पोसा कर्या ते केम कल्प्या ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो तीर्थंकर छे, वास्ते एमने कल्पे छे. त्यारे तेरापंथीने वलो कहीए के, ए तो प्रज्जु छे तेथी तेमने दोष न लागे; पण साधु प्रज्जुनी पासे छे तेमने चोमासी प्रायश्चित आवे, ते काम प्रज्जु केम करे ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " अढार देशना राजाने केम खबर पमी के प्रज्जुनो निर्वाण समय छे, तेथी प्रज्जु पासे आवीने पोसा कीधा ? " एम पुछे. तेनो नत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्र नगवतीना पंदरमा शतकमां, नगवंते गोशालाने कह्युं के, हुं सोल वर्ष सुधी गंधहस्तिनी पेरे विचरीश, तथा सिंहा अणगारने साका पंदर वर्षनो निश्चय बताव्यो. तेथी साध साधवी, श्रावक श्रावीका, देवता देवी, नरनारी, सर्व ए कारण जाणे छे. तेथी अढार देशना राजाए प्रज्जु पासे आवीने पोसा कर्या छे. वली प्रज्जुए छेली देशना सोल पोहोर लगी दीधी, अने

दुःख विपाकनां अध्ययन ५५ सुख विपाकनां ५५ तथा उत्तराध्ययननां छत्रीस परुप्यां, ते लोकनो प्रखदा आगल परुप्यां के पोताना मनमेळे परुप्यां? बार प्रखदा हती के नही? वली प्रभु छद्मस्तपणे बीजे चोमासे राजग्रही नगरीना नालंदा पाडामां तंतुवाइनी शालामां रह्या. ते शालाने एक देश भागे गोशालो आवीने उतर्यो. ए लेखे साधुकने ग्रहस्थ रात्रे रहे तो सुखे कल्पे. अनेक सूत्र पाठना न्याय जोतां साधु ग्रहस्थना भेलो रहे तो रहेवानो नाकारो नथी; अने नषितमां तो सआरंभी, सपरीग्रही तथा अपराधी आश्री निषेधुं दीसे छे; अने पोताना स्वार्थ हेते राखे ते आश्री ना कही छे; पण श्रावक सामायक, पोसा, संवर, धर्मध्यान करताने तो वर्जवो तो कोइ पण सूत्रमां कह्युं नथी.

वली तेरापंथीउ, लोकोने बेहेकाववाने अर्थे, ग्रहस्थोना भेला रहेवुं निषेधे छे; पण पोते तो ग्रहस्थोना भेला रहे छे. मांहेली दुकानमां तो पोते सुवे अने वारली दुकानमां श्रावकोने पोषा संवर करावे छे. एक खडकीनी जग्यामां एक शालामां तो पोते सुवे छे, अने एक शालामां श्रावकोने पोसा, सामायक तथा संवर करीने सुवाडे छे; अने पुछे त्यारे कहे छे के क्षेत्र जुदुं छे. हे देवानुप्रीय! ए तमारी केहेणीने लेखे तो एक शालामां स्त्री रहे, अने एक शालामां साधुने रहेवुं कल्पे. एक खडकीमां एक शालामां पुरुष रहे, अने एक शालामां आरजाने रहेवुं कल्पे; ए पण क्षेत्र जुदु छे. वली एक शालामां आरजा सुवे, अने एक शालामां साधु सुवे, एम पण तमे सुवता हशो; कारण के तमारी कहेणीने लेखेतो ए पण क्षेत्र जुदुं छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "स्त्री रहेती होय ते जग्यामां तो साधुने सर्वथा रहेवुं न कल्पे." त्यारे हे देवानुप्रीय! एक शालामां साधु सुवे अने एक शालामां श्रावक सुवे तेने मतना बीजे क्षेत्र जुदुं कही एवी जुठी स्थापना केम करोछो? वली नषितमां ग्रहस्थने भेला राखवामां प्रायश्चित कह्युं, तेमज ग्रहस्थने विहारमां साथे राखे, रखावे अने राखताने भलो जाणे तेनुं पण प्रायश्चित कह्युं छे; अने गोचरीमां

ग्रहस्थीने साथे राखे, रखावे अने राखताने नलो जाणे तेने पण प्राय-श्चित कह्युं छे. तमारा साध साधवीउं, ग्रहस्थो पोचाडवाने आवे तेनी साथे विहार केम करे छे ? आदमीने साथे लइने केम फरे छे ? वली ग्रहस्थीने आहारादिक तथा पातरांना रोगान प्रमुखनी दलालीने वास्ते तथा घर बतावववाने वास्ते गोचरीमां साथे केम राखे छे ? ए चोमासी प्रायश्चितनां काम केम करे छे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "श्रावक निर्जरा वास्ते पोताना मनथी साथे पहोंचाडवाने आवे छे, आदमी मोकले छे, पोतानी इछाथी आहारादिकनी दलाली वास्ते तथा घर बताववा वास्ते आवे छे, तेथी तेनुं प्रायश्चित आवे नहीं. ए तो ज्यारे साधु पोताना स्वार्थे पोते आमना जणावीने साथे ले तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे." तेवारे तेमने कहेवुं के, जेम ए आमना जणावीने साथे ले तेनुं प्रायश्चित कह्युं छे, तेम ग्रहस्थने भेलुं रहेवानुं पण आमना जणावीने पोताना स्वार्थे कहीने राखे, रखावे तथा राखताने नलो जाणे तेनुंज पायश्चित कह्युं छे. तमे मतना लीधे खोटा अर्थ केम करोछो ?

वली तेरापंथी कहे छे के, "साधु पोताना हाथे बारणानां कमाड उघाडे तथा वासे तेनां पांच माहाव्रत भागे." एवां जुठां आल दे छे, पण सिद्धान्तमां तो साधुने पोताने हाथे कमाड वासवुं उघाडवुं कल्पे कह्युं छे. शाख सूत्र आचारांग श्रुतष्कंध बीजे पिंडेखणा अध्ययन पहेले उद्देशे पाचमे. ते पाठः—

से भिक्खूवा २ गाहावइकुलस्स दुवारवाहिं कंटकवोंदियाए पडिपेहिय पहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुणवित्तं अपडिलेहिय अप्पमज्जीय नोअवंगुणिज्जवा पविसेजवा निक्कमेज्जवा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुणविय पडिलेहिय २ पमज्जिय २ ततो संजयामेव अवंगुणेजवा पविसेजवा णिक्कमेजवा ॥

अर्थः—से० ते नि० साध साधवी गा० ग्रहस्थीना घरना दु० द्वारना भाग (बारणां) कं० कंटक शिखाए करी प० ढांक्युं पे० देखीने जइ त्यां रहेवाने जे ग्रहस्थनुं घर होय, तेनो पु० पहेलां उ० अवग्रह आज्ञा अणु० अणजाएया विना एटले के, तेनो कने अणुज्ञा माग्या विना अप० वण पडिलेह्यां अप्प० वण प्रमार्ज्यां नो०अ० ते बारणुं उघाडे नही. प० ते घरने विषे प्रवेश करे नही. नि० ते घरथी निकले नहीं. ते० ते ग्रहस्थनो पु० पहेला उ० अवग्रह अणु० तेनीकने अनुज्ञा मागीने प० पडिलेही पडिलेहीने प० प्रमार्जी प्रमार्जीने त० तेवार पछी सं० संजति जयणाथी अ० ते बारणुं उघाडे. प० ते घरने विषे प्रवेश करे. णि० ते घरथी निकले.

भावार्थः—इहां एम कह्युं के, साधु विना आज्ञाए कंटकबोधीया नाम फलसो उघाडे नही, विना पडिलेह्यां तथा विना पुंज्यां आडुं दे नही, तथा उघाडे नही; पण आज्ञा लइने पडिलेही पुंजीने वासे उघाडे. ए शाख कही. जेम झांपो चुलीआ सहित, तेम कमाड अजयणाए तो सर्व स्थानके हिंसा थाय पर जयणाए खोलवा वासवानी विधि कही. विधि ते आज्ञा. एमां जे पाप परुपे तेने शास्त्र रहस्यना अजाण जाणवा.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "झांपो नथी, त्यां तो कंटकबोधीया कह्या छे ते कांटानो ढेरो छे. जो झांपो होय तो, "फलीह" एवो शब्द कहेवो जोइए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कांटाने शुं पुंजीए? इहां तो जीवघातनुं स्थान यंत्रज छे. ते यंत्र (चुलियानी) विधि कही. वली झांपानुं नाम फली शब्द कहे छे ते मृषा जाणवुं; कारणके श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां एवी गाथा कही छे. ते गाथाः—

पुव्वकक्कवाडजुया, फलिह भुया दुंदुहि घवियनिघोसा सिरिवछंकियवसा, वंदामिजिण चउविसं ॥

ए गाथामां एम कह्युं छे के, "फलिह भुया" अर्गला सरखी भु-

जाउं. इत्यादिक घणे ठेकाणे फलीह शब्द ( अर्गला ) भुंगलनो छे; पण जे फलीह शब्द नामा फलसानुं कहे छे, ते मृषावादी जाणवा. फलीह शब्द खाइनुं छे, पण फलसानुं नथी; अने फलसा शब्दे कंटक बोधिकाज छे. तमे टीका, भाष, चुर्णि अवलोकी लेजो. वली लघुनित, वडीनित परठववा तथा अबाधा टालवा वास्ते कमाड खोलीने साधु गाथापतीना घरनी बाहार नीकले, एवो अधिकार कह्यो छे. शाख सूत्र आचारांग श्रुतस्कंध बीजे, सेज्या अध्ययनने बीजे उद्देशे. ते पाठः—

से भिख्खूवा २ उच्चारपासवणेण उच्चाहिंजमाणे राउवा वियालेवा गाहावइकुलस्स दुवारवाहु अवंगुणेज्जा तेणोय तस्ससंधिचारी अणुपविसेज्जा तस्स भिख्खूस्स णोकप्पइ एवं वदित्तएवा अयं तेणे पविसइवा नोपविसेइ उवलियत्तिवा नोवाउवलियत्तिवा आयवपत्तिवा णोवावदइ. णोवावदइ तेणहडं अणेणहडं अयंतेणे अयंउवचरए अयंहत्ता अयएडं मकासी तंतवस्सी-भिख्खू अतेणं-तेणं तिसंकंति अह भिख्खूणं पुवोवदिट्ठा एसपइना ४ जंतहप्पगारं उवस्सए नोठाणंवा ३ चेतेज्जा ॥

अर्थः—से० ते भि० साध साधवी ते ग्रहस्थ सहित शंसर्ग वस्तिने विषे उ० वडीनीत, लघुनीत उ० अबाधाए पीड्यो थको रा० रात्रे अथवा वि० अकाले गा० ग्रहस्थना दु० घरनुं कमाड अ० उघाडे. ते० ते वेलाए चोर त० ते द्वारे छिद्र देखी अणु० पेसे. त० ते पेसतो देखी भि० साधुने णो० न कल्पे ए० एवुं बोलवुं अ० ए ते० चोर प० पेसे छे अथवा नो०नथी पेसतो उ० (छुकी) छुपी रहे अथवा नो०छुपी नथी रहेतो. आ० ए उपर थको चोर पडे अथवा णो० नथी पडतो. णो० ए बोले अथवा नथी बोलतो, ते०ह० तेणे चोर्युं अथवा अ०ह० अनेरे चोर्युं, अ० अथवा तेणे हर्युं, अनेरे हर्युं. अ० ए चोर उ० उपकर्मनो करणहार

अ० ए मारणहार हथियार सहित हीसे छे, अ० एणे ए० इहां म० एम कर्युं, इत्यादिक साधु वदे नाहिं; कारण के एम कहेतां ते चोरनो विनाश उपजे, अथवा ते चोर एम कह्याथी रीशाणो थको ते साधुने विणासे. इत्यादिक दोष उपजे अथवा जो एम न कहेतो ते ग्रहस्थीना मनमां तं० ते तपस्वी साधु अ० चोर नथी तोपण ति० चोरनी शंका आवे ए कारणे. अ० अथ हवे जि० साधु पु० पूर्वोपदिष्ट तीर्थंकर ज्ञाषित ए० ए प्रतिज्ञा छे जं० जे त० तथा प्रकारना (तेवा) उ० उपाश्रये नो० न कायोत्सर्ग, ध्यान, सज्झायादिक चे० करे.

ज्ञावार्थः—हवे जुओ ! इहां एम कह्युं के, साधु ग्रहस्थीना जेलो रहे तो रात्रे साधुने उच्चार पासवणने वास्ते कमाड उघाडवुं पडे. ते कमाड उघाडतां चोर घरमां पेसे तेवारे साधुने कहेवुं न घटे के "तारा घरमां चोर आवे छे." जो एम कहे तो चोर रीसाणो थको साधुने मारे अथवा चोरने कोइ मारे, ते माटे न कल्पे एम कह्युं; पण एम न कह्युं जे "साधुने उच्चार पासवणने काजे कमाड उघाडवुं वासवु पडे ते कमाड साधुने वासवुं उघाडवुं कल्पे नही ते माटे साधु ग्रहस्थीना जेलो न रहे" एम तो नथी कह्युं. इहां तो चोरने वास्ते ना कही छे. जो कमाड उघाडे नही तो चोर शी रीते पेशे ? पण प्रज्जुए तो कह्युं के, कमाड उघाडीने साधु बाहार जाय तेथी पछवाडेथी चोर पेसे. जो कमाड खोलवुं उघाडवुं न कल्पे तो चोर शी रीते पेशे ? रहेवुं तो सुखेथी कल्पे; पण साधुए चोरनुं नाम लेवुं नही, तेथी साधु त्यां न रहे; पण कमाडने तो खोलीने मात्रादिक परठववानी प्रज्जुए आज्ञा दीधी छे. कदाच कोइ कमाडने अर्थे वर्ज्यो कहे, तो तेनो उत्तर. "से जिरकुवा जिरकुणिवा" एवो पाठ छे. ते साधसाधवी बंनेने वर्जवा ज जोइए; पण इहां तो धननी जग्या चोरादिकने कारणे वर्जी छे. ए साधसाधवी बंनेनो जेलो पाठ छे. वर्जी तो बंनेने वर्जी अने कमाड खोलवानी वासवानी आज्ञा छे तो बंनेने छे. वली आज्ञा मागीने कमाड खोलीने ग्रहस्थीना घेरे गोचरी जवुं कह्युं. शास्त्र सूत्र दसवैकालीक अध्ययन पांचमे उद्देशे पहेले. ते गाथाः—

पडिकुठकुलं नपविसे, मामग्गं परिवज्जए;
अचियत्तं-कुलं नपविसे, चियत्तं पविसे कुलं. ॥ १७ ॥
साणिपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे;
कवाडं नोपणोलिज्जा, उग्गहं से अजाइया. ॥ १८ ॥

अर्थः—प० लोकमां जे निषेध कुल होय अथवा सिद्धांतमां निषेध कुल छे ते कुले न० (साधु) न पेसे. मा० जे घरनो धणी एम कहे के, मारे घेरे मां आवशो, ते घर प० साधु वर्जे. अ० जे कुलने विषे साधु पेसवाथी क्रोध उपजे ते कुले न० साधु पेसे नही. चि० जे कुले साधुना पेसवाथी प्रीती उपजे ते कुले प० साधु पेसे. सा० त्रापडे करी, वस्त्रादिकना (पेच) पडदाए करी बारणुं ढांक्युं होय ते त्रापडादिक अ० आपणपे स्वयमेव पोते ना० उघाडे नही. क० कमाड दीधुं होय ते नो० उघाडे नही. तेवारे शुं करे? उ० अवग्रह से० ते घरना धणीनो अ० विना जाच्यां न जाय. कारण उपन्ये छते अवग्रह मांगीने उघाडे.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां एम कह्युं के, लोकमां तथा सिद्धांतमां निषेदनिक कुलमां साधु प्रवेश न करे, अने घरनो धणी वरजे तथा जे घरमां गयाथी साधुनी अप्रतित उपजे ते कुलमां साधु न जाय; पण जे घरमां गयाथी प्रीती उपजे ते घरमां साधु जाय. ते प्रवेश करवानी विधि कहे छे. सणनुं तापडुं, परेच, के कांबलो बांध्यो होय तो साधु उघाडीने मांही जाय नही. तेमज कमाड वास्युं होय तो ते घरना धणीनी अवग्रह आज्ञा माग्या विना उघाडी घरमां जाय नही; पण प्रयोजन होय तो आज्ञा मागीने शणनुं तापडुं, परेच, कांबलो तथा कमाड खोलीने मांहे जाय. ए जुउ ! श्री वीतरागदेवे तो कमाड खोलवानी आज्ञा दीधी छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "सणनुं तापडुं, परेच तथा कांबलो तो पोताना हाथे न खोलवो कह्यो, ते तो आज्ञा मागीने खोले; पण कमाड तो नज खोले." तेनो उत्तर, हे देवानुप्रीय ! जो एम छे तो

"उगहंसे अजाइया "नुं त्रीजुं पद कहेवुं जोइए अने "कमारूनो पणो लिज्जा" ए चोथुं पद कहेवुं जोइए; पण जगवंते तो शणनुं तापकुं, परेच, कांबलो अने कमारू, त्रणे विना आज्ञाए खोलवानी निषेध कीधी; अने चोथापदमां त्रणेनी आज्ञा मागीने खोलवुं कह्युं. तमे मतना लीधे आघा पाछा खोटा अर्थ केम करो छो?

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के "एतो उघाके कमाके साधुजी मांहे गया होय अने पाछुं आकुं आवी गयुं होय तो आज्ञा मागीने कमारू खोलीने पाछा बाहार नीकले. ए निकलवा आश्रो छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! कोइ एकली स्त्री साधुनुं रुप देखीने मोहने वशे आकुं कमारू वासी दे, तथा कोइ साधुना द्वेषीए आकुं कमारू दीधुं होय ते खोलीने बाहार नीकलवानी आज्ञा आपे नही. हवे तमारी केहणीने लेखे आज्ञा विना खोलवानी जगवंतनी आज्ञा नथी. हवे एकली स्त्री थकां बंध कमारूथी लेलाज रहे के आज्ञा विना खोलीने बाहार निकले ते कहो. तेवारे कहे छे के "एकली स्त्री थकां, ग्रहस्थना घरमां वासे कमाके क्षणमात्र रहेवुं न कल्पे." त्यारे हे देवानुप्रीय! नीकलती वखते आज्ञा मागी आकुं खोलवानो शुं प्रयोजन रह्यो? त्यां तो आज्ञा दे तोपण कमारू खोलीने नीकलवुं अने न दे तोपण निकलवुं; वास्ते एतो घरमां जवाना वखतनोज पाठ छे.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "जो प्रज्जुए कमारू खोलवानी आज्ञा दीधी छे, तो ग्रहस्थीना घेरे गयाथी आकुं कमारू देखी पाछा केम फरोछो? आज्ञा लइने मांहे केम नथी जता?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! प्रज्जुए कह्यो ते पाठ तो प्रमाण छे. आज्ञा लइने खोलीने जावुं कल्पे; पण आचार्योए व्यवहार बांध्यो छे के, ग्रहस्थीने घेरे आकुं कमारू खोलाववुं नही; केमके ग्रहस्थी अजयणायी खोले, तथा आज्ञा मागे तेवारे उघाके मोंहोके बोले; तथा कोइ आज्ञा देवानां समजे, कोइ न समजे; तथा बाहारथी कोइ ग्रहस्थे आज्ञा दीधी, अने साधु खोलीने मांही गया, अने आगल स्त्री आदिक बेमरजादा बेठी होय; तथा कोइ

द्वेष पामे इत्यादिक कारणोथी ग्रहस्थीने घरे आडुं कमाड न खोलाववुं; पण प्रजुए कह्युं ते रीते होय तो खोलवुं कल्पे. वली प्रजुए आहार करवो कह्यो छे, पण अपवास करे तो अवगुण न थाय; तेम ग्रहस्थीने घेरे कमाड न खोलावे तो शुं ? ए पाठ जुगे कहेवाशे ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "जेम आहार करवो कह्यो छे, पण अपवास करे तो गुण थाय; तेवी रीते अमे कमाड वासवुं, खोलवुं छोड्युं तेमां अवगुण शुं थयो ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जगवंते आहार करवो कह्यो छे, तेम अपवास पण करवो कह्यो छे. हवे आहार छोडीने अपवास करे तो मोटो लाज छे; पण अपवास करीने एम कहे के, "जे कोइ साधु आहार करे तेमां साधुपणुं नही." एम कहे तेने जुठाबोला अनंत संसारी कहीए. तेम तमे कहो छो के, हमे तो कमाड वासवुं जडवुं छांड्युं छे, अने बीजा कोइ साधु कमाड उघाडे, वासे तेनां पांच माहाव्रत जागे. एवां तीर्थंकरनां वचन उत्थापीने जुठां आल द्यो छो, तेथी तमने छोड्यानो तो गुण नथी; पण अनंत संसार वधशे अने बोध बीज पण अनंते काले मलवुं डुर्लज थाशे; केमके तमे तीर्थंकर देवना वचनना उत्थापक छो.

वली साधुने कमाड उघाडवुं निषेधे तेने पुछवुं के, आरजाने कमाड वासवुं उघाडवुं, साधु विना न्यारुं क्यां कह्युं छे ? केमके माहाव्रत तो साध, साधवीने सरखां छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "वृहत् कल्पमां साधुने कमाड न वासवुं, अने आरजाने तो वासवुं चाह्युं छे." एवुं सूत्रनुं जुठुं नाम ले छे. ते ब्रहत्कल्पना पहेला उद्देशानो पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथिणं अवंगुयदुवारिय उवस्सए वछए. एगं -पछारं अंतो किच्चा एगंपछार वाहिकिच्चा उहाडिय चिलिमिलीयागंसि एवणु कप्पइ वछए. कप्पइ निग्गंथाणं अवंगुय डुवारिय उवस्सए वछए ॥

अर्थः—नो० नकल्पे नि० साधवीने अ० अनंगद्वारे (उघाडे बार·
णे) उ० स्थानकने विषे व० रहेवुं. ए० एक कडो (पडदो) अं० मांही
बांधे ए० एक कडो बा० बाहार बांधे उ० बांधीने रहे चि० चेल वस्त्र·
नी चिलमणी (परेच) राखे. अवश्य ए० एणी विधे क० रेहेवुं कल्पे.
क० कल्पे नि० साधुने अ० उघाडे बारणे उ० उपाश्रये व० रहेवुं.

भावार्थः—इहां तो एम कह्युं छे के, साधवीने उघाडे बारणे
रहेवुं न कल्पे; पण एक पडदो मांहे अने एक पडदो बाहार बांधीने
रहेवुं कल्पे. एम चौदमा सूत्रमां कह्युं छे; अने पंदरमा सूत्रमां कह्युं
छे के, साधुने उघाडे बारणे रेहेवुं कल्पे; पण एम नथी कह्युं के, सा-
धुने कमाड वासवुं न कल्पे. इहांतो एम कह्युं छे के, उघाडुं स्थानक
मले तो आरजाने पछेडी बांधीने रहेवुं कल्पे अने साधुने पछेडी बांध्या
विना रहेवुं कल्पे. हवे तमे कहोछो के "अनंगद्वारे कल्पे कह्युं तेथी
वासवुं न कल्पे." पण ब्रहत्कल्पना पहेला उद्देशामां एवी रीतना घणा बोल
कह्या छे के, साधवीने न कल्पे अने साधुने कल्पे. ते पाठः—

**नो कप्पइ निग्गंथीणं आवणगिहंसिवा रथामुहंसिवा सं-
घाडगंसिवा तिक्कंसिवा चउक्कंसिवा चच्चरंसिवा अंतराव-
णंसिवा वछए. कप्पइ निग्गंथाणं आवणगिहंसिवा रथा-
मुहंसिवा संघाडगंसिवा तक्कंसिवा चउक्कंसिवा अंतरावव-
णंसिवा चच्चरंसिवा वछए. ॥**

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधवीने आ० हाट चौटाने विषे र०
शेरीना रस्ता मांही सं० सींघोडाने आकारे बे पंथने विषे ति० त्रीकने
विषे च० चौपंथने विषे च० घणीवाट एकठी मले त्यां अं० बे हाटनी
वचाले व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधुने आ० हाट चौटाने विषे र०
शेरीना रस्तामां सं० सींघोडाने आकारे बे पंथने विषे त० त्रिकने विषे
च० चौपंथने विषे च० घणी वाट एकठी मले त्यां अं० बे हाटनी
वचाले व० रहेवुं.

भावार्थः—हवे इहां एम कह्युं छे के, साधवीने चौटा, शेरीने विषे, बे मार्ग मले त्यां, त्रण मार्ग मले त्यां, बे हाटनी वचाले, इत्यादिक सात स्थानकने विषे रहेवुं न कल्पे; अने इत्यादिक स्थानकने विषे साधुने रहेवुं कल्पे कह्युं छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो साधुने चौटामांज रहेवुं कल्पे, बीजे ठेकाणे रहेवुं नज कल्पे. वली वृहत् कल्पना बीजा उद्देशामां, पांच बोल साधवीने न कल्पे, अने साधुने कल्पे कह्युं छे. ते पाठः—

नो कप्पइ निग्गंथीणं अह आगमण गिहंसिवा वियम्न-गिहंसिवा वंसिमुलंसिवा रुक्खमुलंसिवा अन्नावगासियं सिया वछए. कप्पइ निग्गंथाणं अहआगमण गिहंसिवा वियम्नगिहंसिवा वंसिमुलंसिवा रुक्खमुलंसिवा अन्नावगा-सियं सिवा वछए.

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधवीने अ० अथ आ० पंथी आवी उतरता होय गि० ते घरने विषे वि० चार दिशाए उघाडुं वं० वांसना खपेढाना मुले रु० वृक्षना मुले अ० कांइक ढांकीने बाकी उघाडी लघु भींत ( कोइ मांही उतरी आवी ते माटे ) ए ठामे व० रहेवुं. क० कल्पे नि० साधुने अ० अथ हवे आ० पंथी आवी उतरता होय गि० ते घरने विषे वि० चारे दिशाए उघाडुं वं० वांसना खपेढाना मुले रु० वृक्षना मुले अ० कांइक ढांकी बाकी उघाडी लघु भिंते ( कोइ मांहे उतरी आवे ते माटे ) एवे ठामे व० रहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ! ज्यां पंथी आवीने उतरता होय ते घरने विषे, चार दिशे उघाडुं होय त्यां, वांसना खपेढाना मुले, वृक्षना मुले, अले कांइक ढांक्युं कांइक उघाडुं छठी भिंत इत्यादिक स्थानकने विषे साधवीने रहेवुं न कल्पे; अने साधुने इत्यादिक स्थानकने विषे रहेवुं कल्पे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो ज्या पंथी उतरता होय ते स्थानके यावत् वृक्षना मुलेज साधुने रहेवुं कल्पे, बीजी जग्याए न कल्पे; अने

तमे तो पूर्वोक्तनी प्रतिपक्षि जग्या जोगवो ठो. ए केवी रीते ठे ते
कहो. वली साधवीने विकट ( दुर्लभ ) देशने विषे विहार करवो न
कल्पे, अने साधुजीने कल्पे. हवे तमारी केहणीने लेखेतो साधुने
सुलभ देशमां न रहेवुं जोइए. वली एकली साधवीने विहार करवो
न कल्पे; अने साधुजीने एकला विहार करवो कल्पे. हवे तमारो के-
हेणीने लेखे साधुए घणा साधुमां रहेवुं न जोइए. तेमज साधवीने
अटवीने विषे रहेवुं न कल्पे अने साधुने अटवीने विषे रहेवुं कल्पे.
ए पण तमारी केहेणीने लेखे तो साधुने अटवीमांज रहेवुं जोइए;
पण वस्तीमां के गाममां रहेवुं न जोइए. वली पुरुष रहेतो होय ते
जग्यामां साधवीने रहेवुं न कल्पे, अने साधुने ते जग्यामां रहेवुं कल्पे.
ते पण तमारी केहेणीने लखे तो साधुने सुनी जग्यामां न रहेवुं जोइए.
वली बृहत्कल्पना पांचमा उद्देशामां कह्युं ठे के, साधुने उघाडी
दांडीनो रजोहरणो कल्पे, अने साधवीने न कल्पे. ते पण तमारी केहे-
णीने लेखे तो साधुने उघाडी दांडीनोज रजोहरणो राखवो जोइए.
तमे कहो ठो के, साधवीने अन्नंगद्वार न कल्पे, अने साधुने कल्पे.
ए पाठ वांसे कमाड उघापे तेने अटवि आदिकने विषेज रहेवुं, गामने
विषे न रहेवुं, ए बोल पण प्रमाण करवा जोइए. पण हे देवानुप्रीय !
ए पाठ तो एम ठे के, जो गाम नगर न होय तो साधुने अटवीमां
रहेवुं कल्पे; अने जग्या न मले तो, वृक्ष हेठे रहेवुं कल्पे; इत्यादिक
सर्व बोल कारणे काम पड्याथी साधुने कल्पे कह्या ठे; अने आरजाने
कारणे काम पड्याथी पण न कल्पे; मोडुं वेहेलुं संजादिक पड्यां पण
वस्तीमांज जइने रहेवुं कल्पे. एम सर्व बोल जाणवा. उपाय करीने
रहेवुं. पण आरजाने ए बोल काम पड्याथी पण न करवा; अने साधुने
काम पड्याथी कल्पे कह्या ठे. तेमज कमाड न होय तो अन्नंगद्वारे कल्पे
एम कह्युं ठे. जो कमाड वासवुं उघाडवुं न कल्पे तो " नोकप्पइ नि-
ग्गंथाणं सक्कवाड उवसए वत्थए " एवो पाठ जोइए; पण प्रभुए तो
कमाड वर्ज्युं नथी; अने जे वरजे ठे ते भ्रम बुद्धिथी वर्जे ठे.

वली साधुने कमाड वासवुं उघाडवुं उत्थापे छे, तेने पुछीए के, आरजाने पण व्रहृतकल्पमां कमाड देवुं तो कह्युं नथी. त्यां तो बे प्रेच बांधीने रेहेवुं कह्युं छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "साधवीने शीलनी रक्षा माटे, कमाड न होय तो प्रेच बांधीने रहेवुं कह्युं छे, पण कमाड उघाडवा वासवानो ना नथी कह्यो." त्यारे हे देवानुप्रीय ! शीयल तो साध साधवी बंनेने सरखुंज छे. साधुने पण शीयलनी जतना माटे नव वाड कही छे. पहेली वाडमां स्त्री, पसु अने पंडग रहित स्थानक सेववुं कह्युं, त्रीजी वाडमां एक आसन वजर्युं अने पांचमीमां भिंत-प्रेचने आंतरे रहेवुं वर्ज्युं. हवे जुओ ! कमाड विना, मदनी छकी स्त्री तथा कुतरी प्रमुख भेली आवीने सुवे तो वाड शीरीते रहे ? डाह्या होते वीचारी जोजो.

वली तेरापंथी कहे छे के "आरजाने कमाड वासवुं कह्युं छे." तेने कहीये के, प्रभुनी आज्ञा तो प्रेच बांधीने रहे तोपण पलाय छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे कमाड वासवाथी पेहेलुं माहाव्रत भागे, त्यारे पेहेलुं माहाव्रत भांगीने चोथुं राखवुं एमां शी अधिकाइ ? माहाव्रत तो पहेलुं अने चोथुं सरखांज छे. वास्ते पहेलुं माहाव्रत भांगीने चोथुं माहाव्रत राखवुं एवी आज्ञा प्रभु कदी आपेज नही. वली शीयल भागवाने कोइ अनार्य तो कोइ कर्मना जोगे कोइ वखतेज आवे, अने परवशपणे शीयल भागे एवुं काम तो कवचितज पडे; पण कमाड वासीने जाणी जाणीने रोज रोज पहेलुं माहाव्रत भागे तेनो परलोक शीरीते सुधरशे ? तमारी केहेणी ए छे के, प्रभुनी आज्ञाथी काम करतां जीव मरे तोपण व्रत भागे नही. वली "चोथुं माहाव्रत मारे राखवुं, जीवनी हिंशा थती होय तो भले थाय" एवी रीतनी श्रद्धा होय तो ए दृष्टान्ते आरजा अटवीमां गइ, तेवारे कोइ अनार्ये आवीने एक साधवीनो हाथ पकड्यो. तेवारे बाकीनी साधवीओए मलीने शीयल राखवाने वास्ते ते पुरुषने ढुंपो दइ मार्यो. ते तमारी श्रद्धाने लेखे, नित्यनुं शीयल राखवाने कारणे कमाडथी हिंसा तो करती अने कोडी कंथवा

मारती, अने आज शीयल राखवाने वास्ते एक पुरुषनी घात करी. तमारी केहेणीने लेखे ए आरजाने किंचीतमात्र प्रायश्चित आववुं न जोइए. तेवारे तेरापंथी, जवाब देवानी शक्ति नहिं तेथी क्रोध करे; पण मुरख एम न समजे के, प्रभुए तो कमाड खोलवा वासवानी साध साधवी बंनने आज्ञा आपी छे. जो कमाड न होय तो आरजाने प्रेच बांधीने रहेवुं अने साधुने उघाडामां रहेवुं कल्पे; पण प्रभुए एम नथी कह्युं के, साधवीए तो हींसा करवी अने साधुए न करवी. साधसाधवी बंनेने जयणाथी काम करतां किंचीत मात्र प्रायश्चित नथी. हवे प्रभुनां वचन उत्थापीने पोतानी श्रद्धा स्थापवाने कारणे कमाड उत्थापे छे ते अनंत संसार वधारे छे. वली जे जग्यामां धान्य तथा सुखडी प्रमुख पड्यां होय तथा मदीरा प्रमुखना घडा उघाडा होय ते जग्यामां साधुने उतरवुं कह्युं. शाख सूत्र वृहत्कल्प उद्देशे बीजे. ते पाठः—

उवस्सयस्स अंतोवगडाए सालाणिवा विहिणिवा मुग्गाणिवा मासाणिवा तिल्लाणिवा कुलत्थाणिवा गोधूमाणिवा जवाणिवा उक्खित्ताणिवा विक्खित्ताणिवा विकिन्नाणिवा विप्पकीनांणिवा नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ आहालंदमवि वत्थए ॥ अहपुण एवंजाणेजा नोउक्खित्ताइं ४ रासिकडाणिवा पुंजकडाणिवा भित्तिकडाणिवा कुलियकडाणिवा लंछियाणिवा मुदियाणिवा पिहीयाणिवा कप्पइ निग्गंथाणंवा २ हेमंत गिम्हासु वत्थए ॥ अहपुण एवंजाणेजा नोरासिकडाइं नोपुंजकडाइं नोभित्तिकडाइं नोकुलियकडाइं कोठाउत्ताणिवा पलाउत्ताणिवा मंचाउत्ताणिवा मालाउत्ताणिवा उल्लिनाणिवा विल्लित्ताणिवा लंछियाणिवा मुद्दियाणिवा पिहोयाणिवा कप्पइ निग्गंथाणंवा २ वासावासं वत्थए ॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए सुराविथड कुंभेवा

सोविरवियडकुंभेवा उवणिक्खितेसिया नोकप्पइ निग्गंथा-णंवा २ अहालंदमवि वज्ञए; हुरत्थाए उवस्सयं पडिले-हमाणे नोलभेज्जा एवंसेकप्पइ एगरायंवा दुराइंवा वत्थए. नो से कप्पइ परं एगरायंवा दुराइंवा वत्थए; जेतत्थ एग-याउवा दुरायाउवा परंवसेज्जा सेसंतरा छेएवा परिहारेवा ॥२॥ उवस्सयस्स अंतोवगडा सीउदग वियडकुंभेवा उ-सिणोदग्ग वियडकुंभेवा उवनिक्खित्तेसिया नोकप्पइ नि-ग्गंथाणंवा २ अहालंदमवि वत्थए; हुरत्थाय उवस्सयं पडिलेहमाणे नोलभेज्जा एवंसे कप्पइ एगरायंवा दुरायंवा वत्थए; नो से कप्पइ परं एगरायंवा दुरायंवा वत्थए. जेतत्थ एगरायाउवा दुरायाउवा परंवसेज्जा सेसंत्तराछेएवा परिहा-रेवा ॥३॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए सव्वराइए जोइज्जी-याएवा नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ अहालंदमवि वत्थए; हुरत्थाय उवस्सयं पडिलेहमाणे नोलभेज्जा एवंसेकप्पइ एगरायंवा दुरायंवा वत्थए. नोसेकप्पइ परं एगरायाउवा दुरायाउवा वत्थए. जेतत्थ एगरायाउवा दुरायाउवा परंवेज्जा सेसंतराछेएवा परिहारेवा ॥४॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए सव्वराइए पइवे पदीवेज्जा नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ अा-हालंदमवि वत्थए; हुरत्थाय उवस्सय पडिलेहमाणे नोल-भेज्जा एवंसेकप्पइ एगरायंवा दुरायंवा वत्थए. नोसेकप्पइ परं एगरायाउवा दुरायाउवा; परंवसेज्जा सेसंतराछेएवा परिहारेवा ॥५॥ उवस्सयस्स अंतोवगडाए पिंडएवा लोय-एवा खीरंवा दधिंवा नवणियंवा सप्पिंवा तेल्लंवा फाणियंवा पुयंवा संकुलंवा सिहरणिवा उक्खित्ताणिवा ४ नोकप्पइ

निग्गंथाणवा २ आहालंदमवि वत्थए ॥ अहपुण एवंजा-णेज्जा नोउक्खित्ताइं ४ रासकडाणिवा पुंजकडाणिवा भि-त्तियकडाणिवा कुलियकडाणिवा लंछियाणिवा मुद्दिया-णिवा पेहीयावा कप्पइ निग्गंथाणंवा २ हेमंत गिम्हासु वत्थए ॥ अहपुण एवंजाणेज्जा नोरासिकडाइं ४ कोठाउ-त्ताणिवा पल्लाउत्ताणिवा मंचाउत्ताणिवा मालाउत्ताणिवा कुंभिउत्ताणिवा करभिउत्ताणिवा उलित्ताणिवा विलित्ता-णिवा लंछियाणिवा मुद्दियाणिवा पिहियाणिवा कप्पइ निग्गंथाणंवा २ वासावासं वत्थए ॥६॥

अर्थः—उपाश्रयनी विधि कहेछेः—उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सा० साल (चावल) वि० वृहि मु० मग मा० अडद ति० तल कु० कुलथ गो० गहु ज० जव, एटली जातनां धान्य उ० विखर्यां होय वि० विशेषे करी विखर्यां होय विकि० सघले प्रसर्यां होय विप्प० पग मु-कवाने पण ठाम न होय, एवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो (आहालंद) जघन्य काल पण व० वसवुं. अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे-नोउ० नाख्या नथी, विखर्यां नथी, सघले प्रसर्यां नथी, पग मुकवाने ठाम छे, रा० एक पासे ढगलो कीधो छे, पु० उंचो ढगलो कीधो छे, भि० भिंतने लगतो ढगलो कीधो छे, कु० कुंडालाने आकारे ढगलो कीधो छे, लं० उपर राख रखेली छे, मु० माटी प्रमुख मुद्रा छाप कीधी छे, पि० लुगडे ढांकी मुक्या छे, एवा स्थानके क० कल्पे नि० साधु साधवीने हे० शियाले गि० उन्हाले व० रहेवुं. अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे के ज्यां लगी नोरा० रास नथी कीधी, नोपुं० नथी ढगलो कीधो, नोभि० नथी भींते उंची कीधी, नोकु० नथी कुंडालुं कीधुं, को० कोठीमां प० पालामां म० वांसना क-कामां के मा० उपरले माले घाल्या छे, उ० ते कोठी प्रमुखनां बारणां छाणी

बुझार्यां छे, वि० बारणां माटीथी लीप्यां छे, लं० उपर रेखा कीधी छे, मु० मों उपर मुद्रा कीधी छे अने पि० ढुगके बांधी छे, एवे स्थानके कल्पे नि० साधु साधवीने वा० चोमासे व० रहेवुं. उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सु० मदिराना अचेत कुंभ सो० खाटा मदीराना अचेत कुंभ उ० ग्रह-स्थे मुक्या छे, तेवा स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० रहेवुं. हु० बाहार बीजो ड० उपाश्रय प० गवेषतां थकां नो० जो बीजुं स्थानक न मले. न पामे तो ए० एम पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं (जरुर कारणे). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं; कारण के जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त वसे तेने से० तेटला दीनना छे० चारित्रनो छेद प० ते विशेष प्रायश्चित आवे ॥२॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां सि० शीतल पाणी वि० अचेत पाणीना कुंभ उ० उंना पाणीना वि० कुंभ अंघोल करवाना उ० मुंक्या थाप्या होय, तीहां नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने अ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो जघन्य काल पण व० वसवुं. हु० बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां जोतां थकां नो० न मले (बीजु स्थानक) तो तेने ए० ए क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं ( जरुर माटे ). नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं. जे० जे तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त जेटलुं अधिकुं रहे से० तेटला दीवसना चारित्रनो छेद थाय तथा प० तप प्रायश्चित पामे ॥ ३ ॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां स० आखी रात्री जो० अग्नि बलती होय एवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो काल पण व० रेहेवुं. बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां (जोतां) थकां नो० न मले न पामे (बीजुं स्थानक), तो ए० ए पूर्वोक्त स्थानकमां क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं ( जरुर माटे ). नो० न कल्पे से० तेने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० वसवुं रेहेवुं. जे० जो

तीहां ए० एक रात्री दु० बे रात्री प० उपरान्त रहे तो से० तेटला दी-वसना चारित्रनो छेद थाय. प० तपनुं प्रायश्चित आवे ॥ ४ ॥ उ० उपा-श्रयनी अं० मर्यादामां स० आखी रात्री प० दीवो प० बलतो होय तो नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुकाय तेटलो काल मात्र व० रहेवुं. हु० जो बाहार बीजो उ० उपाश्रय प० गवेषतां जोतां थकां नो० न मले न पामे बीजुं स्थानक, तो ए० पूर्वोक्त तेमने क० कल्पे ए० एक रात्री दु० बे रात्री व० रहेवुं. नो० न कल्पे तेमने प० उपरान्त ए० एक रात्री दु० बे रात्री रहेवुं. प० ते उपरान्त जेटलुं अधिकुं रहे से० तेटला दीवसना चारित्रनो छेद प० तपनुं प्रायश्चित आवे ॥ ५ ॥ उ० उपाश्रयनी अं० मर्यादामां पि० लाडु प्रमुख लो० लुची प्रमुख खी० दुध द० दही न० मांखण स० घी ते० तेल फा० गोल पु० पुडा प्रमुख सं० सांकली ( तलनी ) सि० सीरणी उ० वीखरी होय, माटली उपरी मुंकी होय, विशेषे करी छोडी होय, सांकडी छोडी होय, तेवे स्थानके नो० न कल्पे नि० साध साधवीने आ० हाथनी रेखा सुके तेटलो काल पण व० रहेवुं. अ० अथ हवे वली एम जाणे नो० नथी विखर्यां रा० एक पासे करी मुंक्या छे पु० एके पासे उंचा कर्यां छे छि० एक पासे छिंटे नाख्या छे कु० एक पासे कुंडाली कर्यां छे लं० ते पण लांछ्या छे मु० मुद्रा कीधी छे पे० लुगडे ढांक्या छे, एवा स्थानके क० कल्पे नि० साध साधवीने हे० शियाले गि० उन्हाले व० रहेवुं. अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे नो० नथी रासी कीधी ४ को० कोठामां प० पा-लामां मं० मोंचा उपर तथा मा० उपरले माले मुंक्या छे कु० कुंभीने आकारे भाजनमां तथा क० घडामां मुंक्या छे उ० छाणे लींपी छे वि० माटीए बारणां बुर्यां छे लं० लांछ्या छे मु० मुद्रा कीधी छे पि० ढुग-डाना ढांकणे ढाक्या छे, ते स्थानके क० कल्पे नि० साधु साधवीने वा० चोमासे व० रहेवुं ॥ ६ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, धान्य, सुखडी प्रमुख वीखर्यां होय ते जग्यामां तो हाथनी रेखा सुकाय तेटलो वार

पण साध साधवीने रहेवुं न कल्पे; अने धान्य सुखडी प्रमुख वीखर्यां न होय, जिंतादिकनी पासे दाबो दीधेलां होय, एक बाजुए ढगला करी दीधा होय, लुगडादिके करी ढांकी दीधा होय अने राख आदिके करी रखेली दीधा होय तो शीयाले उन्हाले मास कल्पादिक रहेवुं कल्पे; पण चोमासे रहेवुं न कल्पे; अने जो कोठा, माटलां प्रमुखमां घालीने ढाण माटी प्रमुखथी मोढां बुरी दीधां होय तथा मुद्रा कीधी होय तो चोमासे रहेवुं कल्पे कह्युं. वली लाडु प्रमुख सुखडी, दुध, दही, मांखण प्रमुख पड्यां होय अने एक पासे ढगला कीधा होय तेवी जग्यामां सीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कल्पे कह्युं. हवे जुओ! एटली वस्तु जे जग्यामां होय ते कमाड विना शी रीते होय? अने साधु कमाड वास्या विना शी रीते रहे? जो उघाडां कमाड साधु राखे तो चोर, कुतरां प्रमुख रंजाड करे, ते ग्रहस्थने नुकसान करीने साधुने रहेवुं न कल्पे; अने जो ग्रहस्थी रखवालो वास्ते रातना भेलो रहे तो तमे कहो छो के, चोमासी प्रायश्चित आवे, एटले कदाच ग्रहस्थी जापता सारु कमाड आडुं दइ जाय तो ते रातना मात्रादिक परठववा सारु साधुने खोलवुंज पडे. एवी जग्यामां भगवंते शीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कह्युं छे, ते साधुने कमाड वासवुं उघाडवुं कल्पे छे तेथीज कह्युं छे. वली जे जग्यामां घृत, तेल, गोल, खांड, दुध, दही, मांखण तथा लाडु प्रमुख सुखडीना ढगला करेला पड्या होय ते जग्यामां भगवंते शीयाले उन्हाले महीनो रहेवुं कह्युं छे. हवे तमे कमाड उघाडवा वासवानी ना शी रीते केहेशो?

ते वारे तेरांपंथी कहे छे के "बीजी जग्या न मले त्यारे एवी जग्यामां रहे; अने ग्रहस्थी पोताना जापता सारु कमाड वासे ते साधुने मात्रादिक परठववा वास्ते खोलवुं पडे, तेतो जेम मेह वरसतां पण देह चिंता टालवानी भगवंतनी आज्ञा छे तेम ए पण जाणवुं." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! बीजी जग्या मले नही तेथी कह्युं होय तो एक बे रातनुं, केहेवुं जोइए. जेम आ पाठमां कह्युं तेम दारुना के काचा

ऊंना पाणीना घमा पमया होय तथा आखी रात अग्नि के दीवो बलतो होय तेवी जग्यामां हाथनी रेखा सुकाय तेटली वार पण न रहेवुं; पण गवेषणा करतां क्यांय जग्या न मले तो बे रात रेहेवुं कल्पे; अने जो ते उपरान्त रहे तो जेटला दीवस रहे तेटला दीवसनुं छेद प्रायश्चित आवे कह्युं छे. तेम लाकु प्रमुख पमया होय ते जग्यामां पण एक बे रात रहेवानुं केहेवुं जोइए; पण भगवंते तो महीनो रहेवुं कह्युं छे ते कमाम वासवुं उघामवुं कल्पे छे माटेज कह्युं छे; अने जो कोठा माटलां प्रमुखमां घालीने मोंढां बुरी दीधां होय तथा मोहोर छाप करी दीधी होय तो चोमासे पण रहेवुं कल्पे कह्युं छे. आ सूत्रना न्याय जोतां प्रभुनी कमाम वासवा उघामवानी आज्ञा छे; अने जे प्रभुनां वचन उलंघीने कमाम वासवुं उघामवुं उत्थापे छे ते पोतानी मती कल्पनाए करी उत्थापे छे. वली उत्तराध्ययना पहेला अध्ययननी पांत्रीसमी गाथामां चारे दिशाए कमामादिके करी ढांकेली जग्यामां आहार करवो कह्यो छे. वली तेरापंथी कहे छे के " साधुजीए पमिकमणामां कमामनो थोमोए संघटो कर्यो होय तथा गोचरीमां अधखांगुं कमाम उघाम्युं होय तेनुं मिछामि दुक्कमं आपे छे. " एम आवश्यक सूत्रनुं नाम लइ भोला लोकोने बेहेकावे छे. ते आवश्यक सूत्रनो पाठः—

पमिकमामि गोयरियाए भिस्कायरियाए उघामकम्माम उग्घामणाए साणा वछा दारा संघ णाए ॥

अर्थः—प० निवर्तुं छुं, अतिचारने आलोवुं छुं, गो० गायनी परे चर्या ते धर्म गोचरीए परने पीमा रहित थोमो थोमो आहार लेतां भि० भिक्षा मागीने आहार उ० अर्ध कमाममां पेसतां थकां, उपयोग विना गाढे शब्दे चुंचुं करतुं छेलोने उघाम्युं होय तथा उ० सर्व गाढे सुरे बोलतुं कमाम उघामतां अजयणा कीधी होय सा० कुतरां व० वाछमां दा० बालीकानो सं० संघटो थयो होय तो.

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां तो एम कह्युं छे के, गोचरीमां गयां

थकां, ग्रहस्थीना घरनुं अर्ध उघाडुं कमाड, मांही पेसतां उपयोग वीना गाढे शब्दे चुंचुं करतुं ठेलीने उघाडयुं होय तथा गाढे सुरे बोलतुं कमाड उघाडतां अजयणा कीधी होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दीधुं छे. हे देवानुप्रीय ! इहां तो कमाडनी अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दीधुं छे. तमे आ पाठथी कमाड उथापो छो, पण ए रीते तो साधुना आवश्यक पडिकमणामां घणी जग्याए अजयणाना मिछामि दुक्कडं दीधा छे, ते सर्व काम उथापवां जोइए. आ गोचरीनी पाटीथी पेहेली पाटी इछामि पडिकमियानी छे. तेमां "छप्पइ संघट्टणाए" एवो पाठ छे. तेनो एवो अर्थ छे के "जुनो संघटो करवाथी के चांपवाथी अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं." हवे जुने तमे कपडामां केम राखो छो तथा संघटो केम करो छो ? वली चोवीस्तवनी पेहेली पाटीमां, हालतां चालतां गमणागमण करतां अजयणा थइ होय तेनुं मिछामि दुक्कडं दे छे. ते पाठः—

इछामि पडिकमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसाउतंग पणगदग मट्टीमक्कडा संताण संक्कमणे जेमेजीवा विराहिया एगंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभिहया वत्तिया लेसीया संघाया संघट्टीया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाउठाणं संकामिया जीवीयाउ ववरोविया तस्स मिछामि दुक्कडं ॥

अर्थ—इ० वांछुं छुं प० हिंसाथी निवर्तवुं इ० हमणांना तथा साधुना आचारने विषे व० वेहेता पंथने विषे वि० जीवनी विराधना थइ होय ते थकी ग० जावते आवते करी पा० जीवने चांपवे करी बी० बीजने चांपवे करी ह० वनस्पतिने चांपवे करी उ० छुंया तथा कीडी प्रमुखनां दर प० पंच वर्णी फुल द० पाणी म० माटी म० करोलीया सं० जाली तथा पड, सं० ए आठ वानां चांपवे करी जे० जे कोइ जीव

मे वि० विराध्या होय ए० एकेंद्री पृथ्व्यादिक पांच स्थावर बे० बेंइंद्रि लटादिक ते०कीकी प्रमुख च०चौरेंद्रि माखी प्रमुख पं० पंचेंद्रि जलचरादि प्रमुख अ० सामा आवता हण्या होय, व० वाटला कीधा होय, धुले करी ढगला कीधा होय, ढांक्या होय ले० भुमि साथे मसल्या होय, सं० मांहे मांहे शरीर मेलव्यां होय, सं० एक पासे फर्सवे करी पीका उपजावी होय, प० सघले पासे फर्सवे करी परितापना उपजावी होय, कि० कीलामना गिलानता उपजावी होय, उ० (उदवेग) त्रासको पाडयो होय, ठा० तेने पोताना रहेवाना स्थानकथी बीजे स्थानके सं० मुंक्या होय जी० जिवीतव्यथी मुंकाव्या होय त० ते दुःकृत्य मिथ्या थाउं.

भावार्थः—हवे आ पाटीमां "गमणागमण करतां प्राणी, बीज, जावत् एकिंद्रिथी पंचेंद्रि जीवने पीका, कीलामना, उदवेग उपजाव्यो होय यावत् जीव रहित कीधा होय तो मिछामिदुक्कडं" कह्युं. हवे जुओ! इरिया जोइने हालतां अजयणा थइ होय तेनुं पण मिछामिदुक्कडं कह्युं छे. तमे हालोचालोछो केम? वली आवश्यक सूत्रमां भंड, उपगर्ण, बाजोठ अने पाटीयांनी अजयणा थइ होय तेनुं पण मिछामिदुक्कडं (प्रायश्चित) कह्युं छे. तमे बाजोठ, पाटीयां उपगर्ण केम राखो छो? वली नदी उतरतां निश्चे असंख्याता जीवनी घात थाय छे तेनी इरियावही पडिकमि मिछामिदुक्कडं दे छे. तमे नदी केम उतरो छो? तमे तो कहो छो के "कमाडथी अजयणा थइ होय तेनुं मिछामिदुक्कडं कह्युं छे ते माटे हमेशां जाणी जाणीने कमाड वासे उघाडे तेमां साधपणुं नथी." त्यारे तमे पूर्वोक्त काम जाणी जाणीने करोछो अने मिछामिदुक्कडं द्यो छो. हवे तमारी केहेणीने लेखे तमारामां साधपणुं शो रीते सरधीए?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "जुओ झोली राखवानी, इरिया जोइने हालवा चालवानी, भंड, उपगर्ण, बाजोठ अने पाटीयां राखवानी, एटलां काम करवानी तो भगवंतनी आज्ञा छे; पण ए काम करतां अजयणा थइ होय तेनुं मिछामिदुक्कडं दे छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय!

जेम ए काम करवानी ज्ञगवंतनी आज्ञा छे, तेम कमाड वासवा उघाडवानी पण आज्ञा छे. तेनी अजयणा थइ होय तो मिछामिडुक्कडं अपाय छे. वली 'उघाडकमाड उघाडणाए' ए पाठ तो साध साधवी बन्नेनो बन्ने वखत पडिकमणामां केहेवानो छे के, कमाडनी अजयणा थइ होय तो तेनुं मिछामिडुक्कडं. हवे सांजना तो गृहस्थीना घेरे गोचरीमां अधखांगुं कमाड उपयोग विना उघाड्युं होय तेनुं मिछामिडुक्कडं कहो छो; पण पाछली रातना पडिकमणामां साधुजी कमाडनी अजयणा थइ होय तेनुं रोज मिछामिडुक्कडं दे छे. जो कमाड खोलवुं न कल्पे तो हंमेशां पाछली रातना कमाडनी अजयणानुं मिछामिडुक्कडं केम आपे ? पण जगवंते शीयलनी पेहेली वाडनी जतना माटे कमाड वासवा उघाडवानी आज्ञा दीधी छे; केमके स्त्री उपाश्रयमां आवी जाय तथा कुतरी प्रमुख जेली आवीने सुए, तेनी जतना माटे कमाड वासतां उघाडतां अजयणा थइ होय तेनुं मिछामिडुक्कडं देवुं कह्युं छे. जो कमाड वासवुं उघाडवुं न कह्युं होय तो हंमेशां बे वखत पडिकमणामां अछता मिछामिडुक्कडं देवानुं केम कहे ? डाह्या हो ते विचारी जोजो. वली तेरापंथी " सूत्र उत्तराध्ययनना ३५ मा अध्ययनमां साधुने कमाड वर्ज्युं छे. " एम जुठुं नाम ले छे. ते गाथाः—

मणोहरं चित्त घरं, मल्ल धूवेण वासिइं;
सकवाड पंडुरुल्लोय, मणसावि नपछए ॥ ४ ॥
इंदियाणि भिक्कूस्स, तारिसंमि उवस्सए;
डुकराइं निवारेउ, कामराग विवड्ढणे ॥ ५ ॥

अर्थः—म० मनोहर चि० चित्रामण सहित घ० घर म० गुंथ्यां फुल अने धू० अगरादि धूपे करी वा० वासना सहित कीधुं होय ते घर स० कमाड सहित होय पं० श्वेत वस्त्रे करी विजूषित उपाश्रय अथवा बहु मुल्या चंद्रवा सहित जे घर होय ते म० मने करी पण न० न वान्छे जे, एवुं घर रेहेवाने मले तो रहुं. सेने करो एम चिंतवे ! इं० पांच

इंद्रिना विषय ज्ञि० साधुने ता० पूर्वे कह्या तेवा उ० उपाश्रयने विषे दु० दोहीला नि० निवारवा का० काम संबंधीया रागनो वि० वधारणहार छे ते उपाश्रय.

भावार्थः—हवे जुओ! आ पाठमां एम कह्युं छे के "मनोहर घर चित्रामण सहित छे, तेमां फुलमाला लटके छे, सुगंध धुप क्षेपव्यो छे, सुगंधु वासना फुली रही छे, कमाडे करी सहित छे, कलश घुंटी छे अने चंदवा बांध्या छे, एवी जग्या हे साधु! तुं मने करने वांछीश नही. एवी जग्या मने मलेतो ठीक एम मने करीने चिंतावणा करीश नही" ए चिंतवणा आर्तध्यान छे. ते वास्ते प्रभुए कह्युं के "मणसावि नपत्थए" एटले ए जग्या मने करीने पण न वांछवी कही. जेम साधु ग्रहस्थने घेरे गोचरी गया थका एम न चिंतवे के "मुजने सरस आरे आहार सुखडी प्रमुख आपे तो ठीक." जो एम चिंतवे तो निषित सूत्रमां प्रायश्चित कह्युं छे; पण सेहेजे दातार आपे अने सेहेजे मले तो भोगवे. तेम ए सात बोल सहित जग्यानी मने करी चिंतवणा न करवी, पण सेहेजे मले तो भोगवे; अने ते सेहेजे मले तो छतानी ममता न करे अने अछतानी वंछा न करे; कारण के छतानी ममता, अने अछतानी वांछा, एज अकल्पनिक छे. जे ए स्थानके कमाड अकल्पनिक कहे छे तेना लेखे शुद्ध दान, विनय, वंदणा अने सत्कार सन्मानादिक सर्व अकल्पनिक थशे; कारण के श्री उत्तराध्ययनजीना ३५ मा अध्ययनमां दान, विनय अने वंदणादिकने पण मने करी न वांछवुं कह्युं. ते पाठः—

अच्चणं रयणं चेव वंदणं पूयणं तहा,
इड्ढी सक्कार सम्माणं मणसावि न पत्थए. ॥१८॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ प्रश्न बीजे पांने १४३ में.

भावार्थः—हवे जुओ! कमाडादिक सात बोलनी जग्या मने करी पण न वांछवी कही. तेम आ पाठमां पण शुद्ध दान विनय, वंदणा, सत्कार सन्मानादिक सर्व बोल मने करी न वांछवा कह्या. त्यारे हे देवानु-

प्रीय! तमे ए काम केम करावो छो तथा उपदेश केम द्यो छो? तेवारे तेरा-पंथी कहे छे के "त्यां तो एम छे के, ए मुजने वंदणा करे तो ठीक, उठी उभो थइने आदरमान दे तो ठीक, एवी पोताना महीमा वास्ते वांछा न करे. ए वांछा एज आर्तध्यान छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! एवी मनोहर चित्रामणादिक सहीतनी जग्यानी वांछा करवी एज आर्तध्यान छे. ते सूत्र उपर चित्त दइ स्वापेक्षा तजी विचारी जोजो. वली इहां तो एवुं स्थानक मने करी न वांछवुं कह्युं, पण 'कमाड उघाडवुं वासवुं नही' एवुं कमाडनुं नाम तो मुलथीज देखातुं नथी; अने मने करी न वांछवुं कह्युं ते तो काम (विषय) भोगनो राग वधे तेथी कह्युं छे. ते चोथा व्रतनो दोष देखाड्यो छे. जो कमाडने वास्ते ए स्थानक निषेध्युं होय तो प्रभुए एम केहेवुं जोइए के "ए जग्या मने करी न वंछे; कारण के कमाडथी हींसा थाय तेथी दोष लागी पेहेलुं माहाव्रत भागे." पण एम तो नथी कह्युं. प्रभुए तो कामभोगनो राग वधे ए वास्तेज कह्युं छे. हवे जुओ! कामभोगनो राग चित्रामणथी वधे के कमाडथी वधे? डाह्या हो ते वीचारी जोजो. वली त्यां चित्रामण तथा फुलमालादिक सर्व बोलनी जग्या मने करी न वांछवी कही, ते तो कामभोगना विकार कारी चोरासी भोगना आसनादिकनां चित्रामण मांड्यां होय ते आश्री कही छे; पण सेहेजनां चित्रामण होय ते जग्याए तो साधुने उतरवुं सूत्र उववाइ मधे कह्युं छे. ज्यां पुरणभद्र चैत्यमां पृथ्वीशीला छे ते उपर प्रभु बीराज्या छे. ते पाठः—

तस्सणं आसोग वर पायवस्स हेठा इसी षंधा सल्लीणे एत्थणं महं एगे पुढविसीला पट्टए पणत्ते विक्खंभा याम उस्सेहिं सुप्पमाणे कण्हे अंजणग घण कवाण कुवलय हलधरकोसेबा आगास केस कज्जलगी खंजणं सिंगभेद रिठय जंवफल असणक सण बंधण णीलुप्पलपत णिकरे अयसिकुसुम प्पगासे मरकत मसार कलित्त णयणकीय

रासिवणे णिद्धघणे अठसिरे अयसय तलोवम्म सुरमे इहा मिय उसन्न तुरग णर मकर विहंग वालग किणर रुरु सरन्न चमर कुंजर वणलय पउमलय नतचित्ते आइणय रुय बुर णवणीय तुलतुल्लफासे सिंहासण संठाणसंठीए पासाइए दरिसणिज्जे अभिरुवे पडिरुवे. ८ः

अर्थः—त० वली ते अ० अशोक व० प्रधान पा० वृक्षनी हे० हेठे ३० लगारेक खं० खंधथी स० वेगलेरो ए० इहां म० मोटो ए० एक पु० पृथ्वीशीलारुप प० पट पं० कह्यो. वि० पोहोलपणे आ० लांबपणे उ० उंचपणे सु० प्रमाणुपेत छे. ते केवो छेः-क० पृथ्वीशीलानो पट काले वर्णे छे अं० अंजन, तरवार घ० मेघ क० कवान कु० लीलुं कमल ह० बलदेवने वस्त्र लीलुं होय आ० आकाश कालुं के० मस्तकनी वेण क० काजलनी कुंपली खं० गारुलाना उंगण सि० भेंसना सींगडानी प्रजा रि० रिष्टरत्न जं० जंबु वृक्षनुं फल अ० बीयानुं वृक्ष स० सणना वृक्षना फुलनी वींटणी णी० निलोत्पल कमलना णि० समुह अ० अलसीनां फुल ए सोलनी जेवी काली लीली प० प्रभाकांति होय ते सरखो पट्ट छे. म० मरकत रत्न १, म० इंद्र निलमणी २, क० कन्दबंध व्याघ्र ३, ण० आंखनी कीकी ४, ए चारनी रा० रासी समुहना सरखो वर्ण णि० घणो सतेज अ० आठ खुणा अय० आरिसाना त० तलाना जेवो सुंहालो तथा तेज सु० अति रमणिक. इ० वरगडा मि० मृगनी जात १, उ० वृषभ २, तु० अश्व ३, ण० मनुष्य ४, म० मत्स्य ५, वि० पंखी ६, वा० सर्प ७, कि० व्यंतर देव ८, रु० मृग ९, स० अष्टापद १०, च० चमरी गाय ११, कुं० हाथी १२, व० वननी लता १३, प० पद्मनी लता १४, ए चौद प्रमुख भ० भ्रांतिरुप चित्रामण लख्या छे. आ० चर्मनुं वस्त्र १, रु० पींजयुं रु २, बु० वनस्पतिनुं बुर ३, ण० मांखण ४, तु० अर्क तुल प्रमुखना सरखो फर्स छे. सि० सिंघासननने सं० संस्थाने संस्थीत छे. पा० मनने प्रसन्नकारी द० देखवा योग्य अ० मनोहर प० जुदां जुदां रुप दीसे छे.

नावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां एवी चित्रामणकारी, कलीए घुंटी, घटारीमठारी, एवा शीलाना वर्ण, रुप, गंध, स्पर्श वखाण्या छे अने अनेक प्रकारनां फुल बागमां छेः एवा स्थानके प्रजु उतर्या छे. ए मने करी न वंठवी, त्यारे कल्पी केम ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो वीतराग छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! प्रजु तो वीतराग छे, पण पासे साधु तो सरागी छे ? तेमने चित्रामण सहितनुं काम केम कल्पे? वली ते बागमां बीजा साधु उतरता के नही ते कहो. प्रजुए तो संजोगनी रचना मांमी होय ते आश्री मने करी न वांठवी कही, पण कमाम वासवा उघामवानुं तो नाम नथी. वली आ पाठ लारे ( वांसे ) जे कमाम उथापे छे तेने कहीये के, त्यां तो एटला बोल सहित जग्या न वांठवी कही छे; पण कमाम वासवा उघामवानुं तो नाम नथी. तमारी केहेणीने लेखे तो कमाम होय ते जग्यामां उतरवुंज न जोइए. हवे तेरापंथी कमामने उत्थापे छे, पण पोताने तो अंधारुं छे; केम के कोठानां अने आलीयांनां कमाम उघमावीने आहार ले छे.

हवे जुउ ! कमाम उघामवुं नही, त्यारे ए कमामीयां उघमावीने आहार लेवो क्यां कह्यो छे? जो चुलीयाथी जीवनी हींसा मानो तो (कमामथी मोटा जीव उंदरादिक मरता हशे, तो) कमामीयांथी नाना जीव कंथवादिक मरताज हशे. हवे प्रजुनो एवो तो मार्ग नथी के, मोटा जीवने न मारवो अने नाना जीवने मारवो. ए रीतो तो तमारीज देखीए छीए के, नाना बारणानो आगार. ए लेखे तो कमाम पण उथापाय नही. हवे जो कमाममां पाप अने कमामीयां निर्दोष होय तो श्री ऋषजदेव जगवानना साधु तथा महाविदेह क्षेत्रना साधु, जेमनी पांचसो धनुष्यनी अवगाहना हती, तेमनी कायाना प्रमाणमां दरवाजा सरीखां कमामीयां हशे. एवां मोटां कमामीयां खोलावीने आहार लेता, तेमनां तो महाव्रत जाग्यां नही अने मोक्ष गया. वली पण एवी रीते अनंता मोक्ष जाशे. त्यारे हवे तेमनां कमामीयांथी तो हमणांनां कमाम पण

नाहानां छे. तेथी माहाव्रत केम भागे? ए न्याये प्रभुए तो कमाड वर्ज्यु नथी. तमेज भ्रमबुद्धिथी आल द्यो छो.

वली तमे कमाड तो उत्थापो छो, पण एम नथी वीचारता के, कमाडथी हिंसा थशे तो कमाडीयांथी पण थशेज. वली सूत्रमां तो कमाड अने कमाडीयां जुदां नथी कह्यां. जो कमाड वर्ज्यु हशे तो कमाडीयां पण वर्ज्यां हशे. जेम "संजोएस मणुसाणुं जाव लोगंमि इत्थीउ" इत्यादिक. जेम सूत्र दसवैकालीक तथा उत्तराध्ययनना बीजा अध्ययने आठमा परिसामां तथा बीजा सूत्र-पाठमां, साधुने स्त्रीनो संघटो वर्ज्यो तेमां नानी मोटी सर्व स्त्री आवी गइ, तेम कमाडमां नानां कमाडीयां अने मोटां कमाड बन्नेना दोष सरखा छे. जो मोटाथी व्रत भंग थाय तो नानाथी केम न थाय ? पण तमोने वर्तमान काले भला आहारनी अंतराय पडे अने सारी वस्तु डुध, दही, घृतादिक कमाडीयां खोलाव्या विना मले नही तेथी तमे कमाडीयांनी स्थापना करी देखाय छे; केमके श्री वीतरागदेव, साधपणुं अने जीवदया क्यारे आडां आवे ? तेथी जीभना स्वादने अर्थे कमाडीयांनी स्थापना करीने कमाडने उथापो छो. तेथी तमारी केहेणी अने रेहेणी जुदी जुदी दीसे छे. प्रभुए तो साधुने के आरजाने एकेने कमाड वर्ज्यां नथी. वली स्थिवर कल्पी साधुने कमाड उघाडवा वासवानी स्थापना नथी. तेनी शाख सूत्र सुयगडांग प्रथम श्रुतष्कंधना बीजा अध्ययने, जीनकल्पी साधुने चार बोल वर्ज्यां छे. ते पाठः—

एगे चरे ठाण मासणे, सयणे एगे समाहिएसिया;
भिरकु उवधाण विरिए, वइगुत्ते अझत्त संवुडे ॥ १२ ॥
णोपीहे णाव पगुणे-दारं, सुन्नघरस्स संजए;
पुठेण उदाहरेवयं, णसमुछे णोसंथरेत्तणं ॥ १३ ॥
जत्थत्थंमिए अणाउले, समविसमाइ मुणी-हियासए;
चरगा अदुवावि भेरवा, अदुवा तत्थ सरिसि वासिया ॥१४॥

तिरिया मणुयाय दिव्वग्गा, उवसग्गा तिविहाहियासिया;
लोमादीयं-नहरिसं, सुन्नागारगते महामुणी ॥ १५ ॥
नोअभिकंखेज्ज जीवियं, नाविय पूयणं पत्थएसिया;
अब्भत्थ मुविंति भेरवा, सुन्नागार वस्स भिक्खूणो ॥ १६ ॥

अर्थः—ए० एकाकी (द्रव्यथी एकल विहारी, भावथी राग द्वेष रहित थका) च० विचरे, ठा० स्थानके काउसग्ग एकलो करे, मा० आसने पण राग द्वेष रहित थका बेशे, स० सुवे तोपण एकाकीपणे रहे एटले ते क्रिया समाधि करे ते एकलोथको होय, भि० साधु शुद्ध आहारनो लेणहार उ० उपध्यान तपने विषे वि० बल वीर्यनो फोरवणहार व० विमासीने बोलणहार अ० मन संजम स्थीर करतो होय सं० संवर सहित साधु. णो० कोइ सयणादिक कारणे सुंना घरमां रह्यो साधु घर द्वार ढांके नही, पं० तेम द्वार उघाडे पण नही स० जिनकल्पी साधु. पु० कोइए धर्म पुछयां थकां उ० सावद्य वचन न बोले, जिनकल्पी निर्वद्य पण न बोले, ण० ज्यां रहे त्यां कचरादिक प्रमार्जे नही, णो० तृणादिक पाथरे पण नही. ए आचार जिन-कल्पीनो छे. ज० चारित्रीयो ज्यां सूर्य आथमे त्यांज रहे. अ० परिसह उपन्ये आकुल चित्र रहित स० सज्यादिक अनुकुल प्रतिकुलादिक मु० मुनीश्वर संसार स्वरुपना जाण समताए खमे च० पंखी आदिना दंस मसादिक. अ० वली भे० सिंहादिक बीहामणा जीवना कीधा अ० अथवा त० (त्यां) सुने घेरे स० सर्प विंछीना दीधा उपसर्ग सहे. ति० तिर्यंचना म० मनुष्य संबंधीना अने दि० देवतादिकना उ० उपसर्ग (परिसह) सहे. ति० ए त्रण प्रकारे क्रोधना अभावे क्षमाए करी अहियाशे. लो० परिसह देखीने उकांटो न चढे, भयकारी पण न थाय. सु० साधु सुना घरने विषे रहेतो उपलक्षणथी पर्वतादिकने विषे स्थित थको म० जे एम न करे ते जिन-कल्पादिक महामुनी. नो० नही ते चारीत्रीयो जे उपसर्गे पीड्यो थको अ० वंछे जिवीत्व अने मर्ण. परिसह सहे, ना० न थाय पू०

परिसहने सही पुजानो प० अभिलाषी. अ० आत्माने विषे मु० परिसह उपजे ते केवा भे० भयकारी पिशाचादिकना सु० सुना घरने विषे रह्याने भि० चारित्रीयाने जीवीत मरणनी वान्छा रहित, एवा साधुने उपसर्ग सेहेतां सोहेला थाय.

भावार्थः—इहां एम कह्युं के, स्थिवरकल्पीपणुं छोडीने जिनकल्पीपणुं आदरे तेवारे ए चार बोल छोडे. प्रथम तो कमाड वासे नही, बीजे बोले पुछया छतां प्रश्ननो उदाहरण करे नही, त्रीजे बोले जग्यामां (पुस) कचरो काढे नही, अने चोथे बोले त्रणादिक पाथरे नही; ए चार बोल जिनकल्पीपणुं आदरे तेवारे छोडे. हवे जुओ ! स्थिवरकल्पीपणे पूर्वोक्त चार बोल करता हता त्यारे छोडया कह्या. जो न करता होत तो छोडेज शुं ? डाह्या हो ते विचारी जो जो. प्रभुए तो कमाड वासवा उघाडवानी ठाम ठाम विधि कही छे. छतां तेमनां वचन उथापीने कमाड वासवुं उघाडवुं निषेधे छे तेमने असत्य-भाषी जाणवा.

वली तेरापंथी कहे छे के, साधुने चसमा राखवा वर्ज्या छे. ते बाबत प्रश्न व्याकरण सूत्रनुं जुठुं नाम ले छे. ते पांचमा संवर द्वारनो पाठः—

णयावि अय तउय तंव सीस कंस रयय जाव रुव मणि मोत्ताधार पुडक संष दंत मणि सिंगे सेलं काय वरं चेल चमपत्ताइं महारिहाइं परस्स अझोववाय लोभजणणाई परियट्टेउं गुणवयो ॥

अर्थः—ण० वली न लेवुं ते शुं-अ० लोह त० तरवु तं०त्रांबु सो० सीसुं कं०कांसुं र० रुपुं जा०यावत् रु० रुपुं, सोनुं म० चंद्रकान्तादि मणी मो० मोतीहार पु० छीप, संपुट, सं० शंख प्रसिद्ध दं० हाथीनो प्रधान दांत अथवा दांतनी निपनी म० मणी सं० सिंग से० पाषाण क० काच व० प्रधान चे० वस्त्र प्रधान च० चामडुं, एटला संबंधिया जे पात्र म० (महरय) बहु मुल प० अनेराने लेवा भणी अ० एकाग्र चित्तना कर:

णहार लो० लोजना उपजावणहार प० परावर्तिवा अथवा परिग्रहवा. न कल्पे गु० ते गुणवंतने.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां तो साधुने काचनां, पाषाणनां अने चामडानां वस्त्र पात्र वर्ज्यां छे; पण चश्मानुं तो नामे नथी. तमे सूत्रनुं जुठुं नाम केम ल्यो छो? लोह, कथीर, तांबु, सीसुं, कांसुं, सोनुं रुपुं, प्रमुख धातु तो कोइ पण साधुए राखवी नही, सूत्रमां ठाम ठाम वर्ज्यां छे; अने अहींयां तो एटली जातनां पात्रांज वर्ज्यां छे. चश्मा कया सूत्रमां वर्ज्यां छे ते पाठ बतावो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "काच पाषाणनां पात्रां वर्ज्यां तेम कोइ पण उपगर्ण न राखवां. जेम सोनानी वींटी न राखवी, तेम सोनानी मरकी, कंठी पण न राखवी." एवा अछता द्रष्टान्त आपे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सोनुं प्रमुख सात धातु तो सूत्रमां ठाम ठाम वर्जीज छे, पण आहिंयां तो एटली जातनां पात्रां वर्ज्यां छे; अने तमे तो कहो छो के, काच पाषाणनां पात्रां वर्ज्यां तेम कोइ पण उपगर्ण न राखवां; तेम चश्मा पण काच पाषाणना छे. त्यारे जुओ! हे देवानुप्रीय! इहां तो कपडानां अने चामडानां पात्रां पण वर्ज्यां छे. तमे कपडानां बीजां उपगर्ण केम राखो छो ? वली कपडानी अंगरखी, पाघडी, दोवड, सुथण प्रमुख साधुने वर्ज्यां छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे कपडाना चोलपटा मुहपत्ती आदि बीजां पण उपगर्ण न राखवां जोइए. हे देवानुप्रीय ! जे रीते सूत्र-पाठमां कह्युं होय ते रीते अर्थ केहेवो जोइए. तमे मतना लीधे, हरेक जग्याए, आवी आवी कुयुक्ति केम लगाडो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "कपडानां तथा चामडानां तो पात्रांज वर्ज्यां छे, अने काच, पाषाण तो सर्वथा वर्ज्यो छे. माटे काच पाषाणनां कांइ पण उपगर्ण न राखवां." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अहियां तो सर्व सोल तथा सत्तर जातनां पात्रां वर्ज्यां छे. तमे चश्मो निषेधवाने वास्ते कहोछो के, काच, पाषाण सर्वथा वर्ज्या छे. त्यारे तमे हिंगलो, हडताल केम राखोछो ? ए पण पृथ्वीकायनी जात छे, पाषाण छे. तमारे

लेखे तो ए पण न राखवां जोइए. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, अमे तो हिंगलो, हरताल अचित (वाटेलां) राखीए छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! चश्मो पण क्यां सचित छे? जेम हिंगलो, हरताल राखे छे तेमज चश्मा राखे छे. वली काचमां, पाषाणमां, पाणीमां अने तेलमां मोंढुं देखे तो अतिचार कह्यो छे. ते मोंढुं देखवाने काच तो ठामठाम वर्ज्यां छे, पण पानां वांचवाने चश्मो तो राखवो क्यांय वर्ज्यो नथी.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "चश्मा विना अक्षर न सुझे तेने साडा त्रण हाथ छेटे उन्हाने कीडी, कंथवादिक जीव शी रीते सुझे? तेवाने तो आहार, पाणी लेवा जवुं तथा विहार करवो कल्पे नही." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जो चश्माथी सुझे तो आंधलाने पण सुझवुं जोइए. चश्माथी तो नाना अक्षरनो मोटो देखाय, अने तेथी करी घणी वार वांचतां नजर न ताणवी पडे तेथी चडावे छे. तेवारे तेरापंथी वली कहे छे के "नाना अक्षर चश्मा विना न देखाय तो नाना जीव मार्गमां शी रीते सूझे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! सूत्रना अर्थनुं नाना अक्षरनुं पानुं साडात्रण हाथ आघुं राखे तो तमाराथी पण वंचाय नही; अने अक्षर न वंचाय त्यारे कीडी, कंथवादिक जीव तो घणा नाना छे, ते साडा त्रण हाथ छेटे उन्हा थका शी रीते सुझे? तमारी केहेणीने लेखे तो तमने पण आहार, पाणी लेवा जवुं तथा विहार करवो कल्पे नहि; कारणके तमने साडात्रण हाथथी अक्षर तो सुझे नही. हवे तमे विहार करोछो तथा आहार पाणीने वास्ते जाउ छो, ते तमारी केहेणीने लेखे तो तमे पण श्री वीतरागदेवनी आज्ञा बाहार छो.

हे देवानुप्रीय! एवा खोटा चोज लगावीने अणसमजु जीवोना घटमां घोचा केम घालो छो? जीव तो चेतनपणाथी हाले चाले छे, तेथी साडा त्रण हाथ छेटेथी देखाय छे; पण अक्षर तो (जड) स्थिर छे, तेथी साडा त्रण हाथ छेटेथी सुझे नही. वली तमे कहो छो के "जीवादिक न सुझे तेथी हालवुंज नही." त्यारे चार स्थावरनी अवगाहना जघन्य उत्कृष्टी आंगुलना असंख्यातमा भागे छे, त्रण विग्लेंद्रिनी अ-

वगाहना जघन्य तो आंगुलना असंख्यातमा नागे छे अने पंचेन्द्रिनी पण अवगाहना जघन्य तो आंगुलना असंख्यातमा नागे छे. तेना जीव, वम्नां बीज तथा सरसवना दाणा प्रमुख, मार्गमां धुलमां पड्या देखाय नही, तेथी तमारी केहेणीने लेखे तो चालवुं न जोइए; पण नगवंते तो कह्युं छे के, जयणाथी चालतां पाप कर्म बंधाय नही. तमे मतना लोधे, चश्मा निषेधवाने वास्ते एवी कुयुक्ति लगावो छो.

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के, " सूत्रमां नगवंते चश्मो राखवो क्यांय कह्यो नथी, माटे राखवो नही. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सूत्रमां तो साही, हींगलो, हरताल, सफेतो, लेखण, पीछी, पाटीयां, सूत्रनी लखेली प्रतो अने पोथीने बांधवानी दोरीउ इत्यादिक क्यां राखवां कह्यां छे ते बतावो. सूत्रमां कह्या विना राखो गे ते तमारी केहेणीना लेखे तो तमे नगवंतनी आज्ञा बाहार छो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, ए तो तमे पण राखो छो. एम कहे छे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अमे तो चश्मो पण राखीए छीए, तेमज पोथी प्रमुख सर्व ज्ञाननां उपगर्ण साही, लेखण अने हिंगलो प्रमुख पण राखीए छीए, ते यथायोग्य समजीने राखीए छीए; कारण के सूत्रमां पांच व्यवहार मानवा कह्या छे. शाख सूत्र व्यवहार उद्देशे दसमे. तथा नगवती सूत्र शतक आठमे उद्देशे आठमे. ते पाठः—

कइ विहेणं नंते ! ववहारे पं० ? गो० ! पंचविहे ववहारे पं०तं०ः—आगमे १ सूए २ आणा ३ धारणा ४ जीए ५. जहासेतत्र आगमेसिया आगमेणंववहारंपठवेद्या. णोय-सेतत्र आगमेसिया जहासेतत्र सुएसिया सुएणंववहारं-पठवेद्या. णोयसेतत्र सुएसिया जहासेतत्र आणासिया आणाएववहारंपठवेद्या. णोयसेतत्र आणासिया जहासे-तत्र धारणासिया धारणाएववहारंपठवेद्या. णोयसेतत्र धा-

रणासिया जहासेतञ जीएसिया जीएणंववहारंपठवेज्ञा. इच्चेएहियं पंचहिंववहारंपठवेज्ञा. तं० आगमेणं १ सूए-णं २ आणाए ३ धारणाए ४ जीएणं ५ जहाजहासे आ-गमे १ सूए २ आणाए ३ धारणा ४ जीए ५ तहातहा पठवेज्ञा. सेकिमाहू भंते ! आगमबलिया समणानिग्गंथा इच्चेइयं पंचविहंववहारं जयाजया जहिंजहिं तयातया त-हिंतहिं अणिस्सि उवसियं सम्मंववहारमाणे समणे निग्गं-थे आणाए आराहए भवइ ॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ प्रश्न बीजे पाने १७१ में.

भावार्थः—हवे आ पाठमां तो आगमव्यवहार मानवो कह्यो. तीर्थंकर, गणधर, केवली, मनपर्यव ज्ञानी, अवधज्ञानी, चौद पूर्वधारी अने दस पूर्वधारी, एटलाने आगमव्यवहारी कहीये. तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं; हवे ते आगमव्यवहारी न होय तो तेमनां परुप्यां सूत्र (ते सूत्रव्यवहार) प्रमाणे वर्तवुं. २ हवे सूत्रमां बोलनो जे निर्णय न होय ते आज्ञाव्यवहार प्रमाणे करवो. ३ आज्ञा देवावालो न होय तो धारणाव्यवहार मानवो. (जेम धारणा होय तेम करवुं); ४ अने धारणा न होय तो पांचमो जितव्यवहार मानवो (जेम वडा वडेरा करता होय तेम करवुं). ५ ए पांच व्यवहार मानतो थको आज्ञानो आरा-धक थाय कह्युं.

हवे जुओ ! सूत्रमां जे बोलनो निर्णय न कर्यो होय ते पांचमा जित-व्यवहारे मानवो. जेम वडेरा करता आव्या तेम करतो थको आज्ञानो आराधक थाय कह्युं. त्यारे जुओ ! हे देवानुप्रीय ! सूत्र, पोथी, साही, हींगलो, हरताल अने लेखण प्रमुख सर्व बोलनो "साधुए रा-खवुं के न राखवुं," एवो सूत्रमां निर्णय कर्यो नथी; अने देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, भगवंतने सत्तावीसमे पाटे थया तेमणे सूत्र लख्यां त्यार पछी साही, हींगलो अने चश्मा प्रमुख ज्ञाननां उपगर्ण साधु राखवा

लाग्या. वास्ते सर्व ज्ञाननां उपगर्ण राखवां ते जितव्यवहारमां छे; अने ज्यारे सूत्रव्यवहार न होय त्यारे जितव्यवहार मानवानी जगवंतनी आज्ञा छे. ए न्याये चश्मा, हिंगलो, साही, हरताल, लेखण, पोथी अने पाना प्रमुख सर्व ज्ञाननां उपगर्ण सूत्रमां नथी कह्यां, छतां अमे राखीए छीए; पण तमे चश्मा तो उथापो छो अने साही, हिंगलो, लेखण, पोथी, पानां प्रमुख घणी वस्तु सूत्रमां कह्या विना राखोछो. ऐ चश्मा जितव्यवहारमां छे तेने मतना लीधे उथापीने तमे साधु माथे जुठां आल चोछो.

वली तेरापंथी, कमाड वासवा उघाडवानी तथा चश्मो राखवानी जगवंतनी आज्ञा छे ते तो; जगवंतनां वचन उथापीने निषेधे छे, अने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापे छे; पण जगवंते, ग्रहस्थीना घेरे बेसे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे. शास्त्र सूत्र दसवैकालीक अध्ययन छठे. ते गाथाः-

दस अठय ठाणाइ, जाइं बालो विरषइ;
तठ अन्नयरे ठाणे निग्गंथा ताउ जस्सइ ॥ ७ ॥
वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिजायणं;
पलियंक निसिद्याय; सिणाणं सोज वद्यणं ॥ ८ ॥

अर्थः—द० दस अने अ० आठ एम अढार ठा० स्थानक जा० जें बा० अजाण वि० विराधे त० ते अढार स्थानक मांहीलुं अ० अनेरुं कोइएक ठा० स्थानक विराधते थके नि० निग्रंथपणाथी ता० ते ज० भ्रष्ट थाय. हवे ते अढार स्थानक कहे छेः—व० व्रत छ का० काय छ अ० अकल्पनिक वस्तु गि० ग्रहस्थीनां जाजन थाली प्रमुख प० पलंक ( ढोलीउं ) नि० कारण विना ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं ते सि० स्नान अने सो० विजुषा ( शरीरनी शोजा ) व० वर्जवां. ए १८ स्थानक.

जावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां कह्युं के, अढार मांहेलो एके बोल सेवे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कहीये. तेमां सोलमो बोल ग्रहस्थीना घेरे बेसवानो छे. तेनुं वर्णन ५७ मी गाथाथी ६० मी गाथा सुधी छे. त्यां ग्रहस्थीना घेरे बेसवाथी साधुने जे दोष उपजे ते कह्या छे. ते गाथाः—

गोयरग्गा पविठस्स, निसिज्ञा जस्स कप्पइ;
इमेरीस मणायारं, आवज्ञइ अबोहियं ॥ ५७ ॥
विवत्ती बंन्नचेरस्स, पाणाणंच वहे वहो;
वणिमग्ग पम्गिघाउ, पम्किोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बंन्नचेरस्स, इत्थिउवावि संकरूं;
कुसील वद्धणं ठाणं, दुरउ परिवज्ञए ॥ ५९ ॥
तिन्ह मन्नय रागस्स, निसिज्ञा जस्स कप्पइ;
जराए अभिन्नूयस्स, वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥

अर्थः—हवे सोलमुं स्थानक कहे छे. गो० गोचरी प० गयां थकां नि० ग्रहस्थना घरने विषे बेसवुं ज० जे यतिने क० कल्पे तेतो बेसे, पण जे यतिने बेसवुं न कल्पे ते बेसे तो तेने इ० एवो म० अनाचार लागे अने आ० पामे अ० मिथ्यात्वनुं फल ॥ ५७ ॥ वि० विनाश थाय बं० ब्रह्मचर्यनो. अने पा० प्राणीनो व० वध पण थाय. (त्यां यतिने ग्रहस्थना घरने विषे बेसतां आधाकरमी प्रमुख आहार नीपजवानो संन्नव छे तेथी). व० संयमनो पण वध थाय. व० त्यां जिक्षाचरने प० अंतराय पमे. प० त्यां यति उपर क्रोध उपजे अ० ग्रहस्थने (घरना धणीने ) ॥ ५८ ॥ अ० नव वाम न्नांगे बं० ब्रह्मचर्यनी. इ० स्त्रीने पण सं० शंका उपजे. कु० कुशील व० वधवानुं ठा० स्थानक ( ग्रहस्थने घेरे वेसवुं ते ) ड० डुरथी प० वर्जे ॥ ५९ ॥ हवे ग्रहस्थोने घेरे बेसवुं जे यतिने कल्पे छे ते अधिकार कहे छेः—ति० ए त्रणमां कोइ एक यतिने नि० ग्रहस्थीना घरे बेसवुं ज० जेने क० कल्पे ते कहे छे. ज० गढपणे परान्नव्यो होय ते यतिने वा० रोगी यतिने अने त० तपस्वीने, ए त्रण प्रकारना यतिने ग्रहस्थना घेरे बेसवुं कल्पे ॥ ६० ॥

न्नावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां नगवंते, ग्रहस्थीना घेरे बेसे ते साधुने आठ अवगुण मोटका कह्या. तेमां मिथ्यातनुं फल पामे.

ब्रह्मचर्यनो विनाश थाय १, प्राणीनो वध थाय २, ग्रहस्थी धन कणुंका, लीलोत्री, पाणी वीगेरे आघुं पाछुं करी आधाकर्मी आहार निपजावे तो प्राणीनो वध थाय, तेवारे संजमनो पण वध थाय ३, भिक्षाचरने अंतराय पडे ४, घरनो धणी क्रोध करे ५, ब्रह्मचर्यनी वाड भागे ६, स्त्रीने शंका उपजे ७, अने कुशील वधवानुं ठाम छे ८. ए आठ दोष जाणीने साधु ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं दुरथी वर्जे, अने अपवादमार्गमां त्रण जणाने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं कल्पे कह्युं. तेमां एक तो जराए करी पराभव्यो ( बुढो स्थिवर ) तेने, एक व्याधिआने ( रोगीने ) अने एक तपस्वीने. ए त्रण वीना बीजो ग्रहस्थीना घेरे बेसे तो तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे. तमे पोताना स्वार्थने वास्ते ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं केम स्थापोछो ? तेवारे तेरापंथी कहे छे के "एतो गोचरीए गयांथकां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं नही ते आश्री कह्युं छे; अने अमे तो धर्म-उपदेश देवाने वास्ते मोटा घरोमां पडदावाली बाइउने तथा रजपुतोना रावलामां वखाण संभलाववाने जइए छीए तथा हाटोमां उतरीए त्यारे बाइउने वखाण संभलाववा माटे ग्रहस्थीना घेरे जइने बेसीए छीए. ए तो धर्म वधारवानुं कारण छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सहेजे गोचरीए गयाथका ग्रहस्थीना घेरे बेसे तोय साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे, त्यारे ( उदीरीने ) जाणी जोइने तो जइ बेसवुं कल्पेज केम ? जेम गोचरीए गयां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे तेम उपदेश देवो पण वर्ज्यो छे. शास्त्र सूत्र वृहत्कल्प उद्देशे त्रीजे. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ अंतरागिहंसिवा चिठित्तएवा निसिइत्तएवा तुयट्टीत्तएवा निद्दाइत्तएवा पयलाइत्तएवा असणंवा ४ आहारमाहरित्तएवा उच्चारंवा ४ परिठवित्तए सज्झायंवा करित्तए झाणंवाझाइत्तए काउसग्गंवा ठाणंवाठाइत्तए ॥ अहपुण एवं जाणेज्जा वाहिए थेरे तवस्सी दुब्बले किलंते जराजुणे जजरिए मुछेज्जवा पवडेज्जवा एवंसे कप्पइ

अंतरागिहंसि चिठ्ठित्तएवा जाव ठाणांवा ठाइत्तए ॥ नोकप्पइ निग्गंथाणांवा २ अंतरागिहंसिवा जाव चउग्गाहंवा पंचगाहंवा आइखित्तएवा विन्नावित्तएवा कीठीत्तएवा पवेइत्तएवा ननछ एगनाएएवा एगवागरणेणावा एगगाहाएवा एग सिलोएणावा सेविए ठिच्चा नोचेवणं अठिच्चा ॥ नो कप्पइ निग्गंथाणावा २ अंतरागिहंसि इमाइं पंचमहव्वयाइं सब्भावणाइं आइखित्तएवा विन्नावित्तएवा किट्टित्तएवा पवेइत्तएवा ननछ एग नाएणावा एगवागरेणावा एगगाहाएवा एगसिलोएणावा सवियठिचा नोचेवणं आठिच्चा ॥ २३ ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० ग्रहस्थना घरने विषे चि० उभुं रहेवुं नि० बेसवुं तु० सुवुं नि० निंद्रा लेवी प० विशेष निंद्रा लेवी अ० असन, पाणी, खादिम, स्वादिम, ए चार आ० आहार करवो उ० वडीनीत १, लघुनीत २, बलखो ३, अने नाकनो मेल ४ प० परठववो स० सझाय करवी झा० ध्यान ध्याववुं का० काउसग्ग ठा० ठाववो. अ० हवे वली ए० जो एम जा० जाणे वा० रोगी थे० स्थिवर त० तपस्वी दु० दुर्बल कि० किलामना पामी ज० जराए जुनो ज० जर्जरी देहे मु० मुर्छा पामी प० पडतो होय ए० तेने क० कल्पे अं० ग्रहस्थीना घरने विषे चि० उभुं रहेवुं, बेसवुं, सुवुं जा० यावत् ठा० काउसग्ग ठा० इरियावही पडिकमवी. नो० न कल्पे नि० साध साधवीने अ० ग्रहस्थीना घरने विषे बेसीने जा० यावत् च० चार गाथा पं० पांच गाथा आ० केहेवी वि० जुदी जुदी कथवी की० विस्तारे केहेवुं ( प्रश्नव्याकरणमां गुण कह्या ते ), प० विशेषे केहेवुं ( माहाव्रतनां फल निर्जरानां फल मुक्तिपद पामवा ), न० पण एटलुं विशेष ए०ना० एकज न्याय द्रष्टान्त कहे ए०वा० एकज प्रश्नोत्तर कहे ए०गा० एकज गाथा कहे

ए० सि० एकज श्लोक कहे; से० ते पण ठि० उन्ना रहीने, पण नो० नही श्र० बेसीने कहे. नो० न कल्पे नि० साध साधवीने श्रं० घर वचाले बेसीने इ० ए पं० पांच माहाव्रत स० पचीस नावना सहित श्रा० केहेवां, वि० श्रर्थ जुदा जुदा कथी प्राणातिपात वेरमणादिक कि० विस्तारी केहेवा ( प्रश्नव्याकरणमां गुण कह्या ते ), प० विशेष केहेवा ( मुक्तिपद पामवा रुप माहाव्रत ( निर्जरा )नां फल), न० पण एटलुं विशेष ए०ना० एकज न्याय दृष्टान्त ए०वा० एकज प्रश्नोत्तर ए०गा० एकज गाथा ए०सि० एकज श्लोक केहेवो; से० तेपण ठि० उन्ना रहीने; नो० पण बेसीने न केहेवो.

नावार्थः—हवे जुर्ज ! श्रा पाठमां श्री वीतरागदेवे एम कह्युं ठे के, साधसाधवीने ग्रहस्थीना घेरे नजुं रेहेवुं १, बेसवुं २, सुवुं ३, निद्रा लेवी ४, विशेष निंद्रा लेवी ५, श्रस्नादिक चार श्राहार करवा ६, उच्चारपासवण खेल॰ परठववां ७, सज्जाय करवी ८, ध्यान करवुं ए, श्रने काउसग्ग करवो १०, ए दस काम ग्रहस्थीना घेरे जइने करवां नही; श्रने श्रपवाद मार्गमां बुढो ( स्थिवर ), रोगी तथा दुर्बल होय, मुर्ग श्रावती होय श्रने हेठो पम्तो होय तेने ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं कल्पे. वली श्रागल श्रा पाठमांज एम कह्युं ठे के, ग्रहस्थीना घेरे चार पांच गाथा केहेवी नही, पांच माहाव्रत पण केहेवां नही, तेम पांच माहाव्रतनी पचीस नावना पण केहेवी नही. कदाचित कोइ पुठे तो एक प्रश्ननो उत्तर देवो तथा एक गाथा श्रथवा एक श्लोक केहेवो; ते पण उन्ना रहीने केहेवो, पण बेसीने केहेवो नही. ए जुर्ज ! नगवंतनी तो श्राज्ञा एवी ठे के, ग्रहस्थीना घेरे काम पम्यां केहेवुं पमे तो एक श्लोक के गाथा उन्ना रहीने केहेवी; पण बेसीने कहेवानी श्राज्ञा नथी. त्यारे घणी वार ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश देवो क्यां थकी ? तमे प्रजुनां वचन उत्थापीने ग्रहस्थीना घेरे बेसीने वखाण वांचवुं तथा उपदेश देवो केम स्थापो ठो ?

तेवारे तेरापंथी, ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापवाने श्रर्थे एम कहे

छे के "सूत्र दसवैकालीकमां ग्रहस्थीना घेरे बेसे तो साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो, अने आ ब्रह्तकल्पना त्रीजा उद्देशामां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं ते अंतर घर कह्युं छे. ते अंतर घर तो रसोइ करे तेने, तथा धणी धणीयी सुवे ते मेहेलात तथा ओरडा प्रमुख भिंतर जग्याने कहीये. ते अंतरघरमां तेर बोल करवा वर्ज्यां छे, पण परसाल ( वरसाली ) मां, चोकमां, कचेरीमां अने अघायली ( एकान्त ) जग्यामां उभुं रहेवुं, बेसवुं तथा उपदेश देवो नथी वर्ज्यो." एम पोताना स्वार्थने अर्थे खोटा अर्थ करे छे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! जे जग्यामां सुखे समाधे साधुने बेसवुं वर्ज्युं, तेज जग्यामां बुढा स्थिवरने, व्याधिरोगीने तथा तपस्वीने उभा रहेवानो, बेसवानो, सुवानो, चार आहार करवानो, वडीनीत लघुनीत प्रमुख परठववानी जावत् तेर बोल करवानी आज्ञा छे. हवे जुओ स्थिवर, रोगी अने तपस्वी, ग्रहस्थीना घेरे रसोइ करवानी जग्यामां, सुवाना मेहेलमां, सेज्यामां, तथा भिंतर-ओरडा प्रमुखमां आहार पाणी करे तथा वडीनीत लघुनीत परठवे के अघायली जग्यामां परठवे ते कहो.

तेवारे तेरापंथी पण कहे छे के "अघायली जग्यामां, भिंतादिकने उठे तथा नोहोरा प्रमुखमां आहारादिक करे तथा लघु नीत, वडीनीत परठवे; पण रसोइ तथा सुवानी जग्यामां तो स्थिवर, रोगी अने तपस्वी पण आहार पाणी करे नही तथा दिसा मात्रे पण जाय नही." हे देवानुप्रीय ! तमे रसोडानी तथा सुवानी जग्याने अंतर-घर केम कहोछो ? एवा खोटा अर्थ केम करोछो ? अहीयां तो 'गिहं' केहेतां घर अने 'अंतर' केहेतां मांहे साधुने बेसवुं नही तथा उपदेश देवो नही;" प्रभुए तो एम कह्युं छे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "सूत्र उत्तराध्ययनना बारमा अध्ययनमां हरकेशी मुनीराजे ब्राह्मणोना पाडामां उपदेश दीधो छे; तथा तेज सूत्रना पचीसमा अध्ययनमां जयघोष मुनीए विजयघोषने ब्राह्मणना पाडामां उपदेश दीधो छे; तथा सूत्र ज्ञाताजीमां पोटीलाने दानशालामां आरज्याए मोटे मंडाणे उपदेश दीधो छे; तथा वली

तेज ज्ञाताजीना सोलमा अध्ययनमां गोपालकाजी आर्जाए सुखमालीकाने उपदेश दीधो छे. तेथी अमे पण ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश दइए छीए." तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! एवी जग्यामां तो काम पड्याथी साधुने रेहेवुं पण कल्पे छे, त्यारे उपदेशनी शी चर्चा छे ? अने ग्रहस्थीना घेरे साधुने बेसवुं तथा उपदेश देवो वर्ज्यो ते तो स्त्रीआदिक रेहेती होय, परिंढो पाणी होय, रसोइ थती होय अने छोकरा छोकरी वेखेरा सहित होय ते आश्री वर्ज्यो छे. हवे उतर्या होय ते जग्या छोटी होय तथा अबखाइनी होय तेथी वीजी जग्या साधुजीने रेहेवा जोग्य होय एवी जग्यामां जइने उपदेश दे तो साधुने हरकत ( अटकाव ) नहीं. वली साधुजी रहे ते घर सर्व ग्रहस्थीनांज छे, पण ग्रहस्थीने रेहेवासनी जग्यामां साधुजीने उपदेश देवो तथा बेसवुं वर्ज्युं छे. वली हरकेशीजी तथा गोपालकाजी प्रमुखे तो पाढामां तथा दान देवानी जग्यामां उपदेश दीधो छे; पण ग्रहस्थीनी रहेवासवाली जग्यामां नथो दीधो. ए हरकेशीजी मुनीराज अने आर्याजी गोपालकाजी प्रमुखे ग्रहस्थोना पाढामां जइने उपदेश दीधो ते तो सर्व छठीय—कल्पी छे; पण पेहेला अने छेला तीर्थंकरना साधुने ग्रहस्थीना घेरे जइने उपदेश देवो कयांय चाल्यो होय तो ते सूत्र पाठ बतावो. तेवारे वली तेरापंथीउ, ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापवाने काजे कहे छे के " वचन—लब्धिना धणीने ग्रहस्थीना घेरे बेसीने उपदेश देवो. सूत्र सूयगडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा अध्ययननी २९ मी गाथाना अर्थमां क्यांक कह्युं छे. ते पाठः—

नन्नछ अंतराएणं, परगेहेण णिसियए;
गाम कुमारिय किड्डु, नातिवेलं हसेमुणी. ॥ २९ ॥

अर्थः—न० एटलुं विशेष अं० जरा, रोगादिक कारण टालीने बेसे, तथा कोइ वचन—लब्धिवंत धर्म उपदेशादि कारणे पण बेसे. प० ए कारण विना ग्रहस्थोना घेरे णि० न बेसे. गा० ग्रामने विषे कुं० कु-

मारनी परे. किं० हास्यक्रिया न करे, ना० मर्यादा मुकीने न हसे. मु० साधु. पडिलेहणादिक वेला मर्यादा उलंघीने न हसे. वीतरागनो आज्ञा उलंघीने हरुहरु साधु न हसे.

भावार्थः—हे देवानुप्रीय ! अहीयांतो एम कह्युं छे के ' रोगादिकना कारण विना ग्रहस्थीने घेरे साधुए बेसवुं नही, अने वचन-लब्धीवंत होय तो उपदेशादिक कारणे बेसे' एम अर्थमां कह्युं छे. हवे वचन लब्धीवंत केने कहीये ते कहो. जो वचन बोले तेने वचन—लब्धीवंत केहेता होतो गुंगा साधु कया छे के, जेमने सूत्रमां ठाम ठाम ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं. ? अहियां वचनलब्धी तो दस पूर्वथी लइ चौद पूर्व पर्यंत ज्ञानना धणी होय अने जेनां वचन खाली नज जाय तेने कहीये. तेने तथा आगम—व्यवहारी होय तेने बेसवुं अर्थमां कह्युं छे. हवे तमारामां कइ लब्धी छे ते कहो. एतो तमे बधाए पेट भराइने वास्ते ग्रहस्थना घेर बेसता देखाउ छो. वली प्रभुए तो सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा अध्ययननी एकवीसमी गाथामां ग्रहस्थीना घेरे साधुने बेसवुं वर्ज्युं छे. ते पाठः—

आसंदी पलियंकेय, णिसिद्धं च गिहंतरे,
संपुछणं सरणंवा तं विद्वं परिजाणिया ॥ २१ ॥

अर्थः—आ० मांची प्रमुख आसने प० पलंकादिके णि० बेसवुं, गि० ग्रहस्थीना घरमां बेसवुं, सुवुं न कल्पे. ( आत्म संजमनी विराधना थाय तेथी.) स० ग्रहस्थीने केम कुशलनुं पुछवुं तथा स० पूर्व क्रियानुं सभारवुं तं० ते सर्व संसार भमवानो हेतु जाणीने वि० पंडीत प० परिहरे. २१

भावार्थः—हवे जुउ ! इहां पण ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे. वली दसवैकालीक सूत्रना त्रीजा अध्ययनमां ग्रहस्थीना घेरे बेसे तेने अणाचारी कह्यो छे. इत्यादिक अनेक ठेकाणे सूत्रमां ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं छे. छतां तमे एटलां केवलीनां वचन उथापीने, पेट भराइना वास्ते ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं केम स्थापो छो ?

वली टोटावाला सराफनी माफक लोकोमां सफाइ दर्शाववाने वास्ते तेरापंथी कहे छे के "सूत्रमां कह्या सिवाय किंचीत मात्र काम करीने प्रायश्चित न ले तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे." एवी परुपणा करे छे; पण पोतेतो सूत्रमां कह्या वीना घणां कर्तव्य करे छे. ते ए के प्रथम तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापे छे, अने पात्रांने रोगान तथा रंग लगाडवा माटे रोगान वासी राखवानी स्थापना करे छे. माटे तेरापंथीने पुछवुं के, तमे पात्रांने रोगांन लगावो छो तथा साथे लइने गामोगाम फर्या करो छो तथा वासी राखो छो, अने वली टोटो छुपावाने अर्थे तथा अणसमजु लोकोने ठगवाने वास्ते कहो छो के, सूत्रमां कह्या विना किंचीत्त मात्र काम करे तेनामां साधपणुं नथी. त्यारे पातरांने लगाववा सारु रोगान वासी राखवो कया सूत्रमां कह्युं छे ते बतावो. तमे तो ए काम सूत्रमां कह्याविना करो छो. हवे तमारी केहेणीने लेखे तमारामां साधपणुं छे के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "जेम तमारा बावीस संघाडाना साधु पात्रांने रंग रोगान लगावे छे तेम अमे पण लगावीए छीए." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बावीस सिंघाडाना साधुतो चश्मा पण राखे छे, रोगान पण पात्रांने लगाडे छे, अने सोय भाग्याना प्रायश्चितनुं बेलुं तथा सोय गुनाव्यानुं तेलुं करे छे, अने काचा पाणीनो छांटो लागे तो अपवासनुं प्रायश्चित ले छे; इत्यादिक घणां कामनो सूत्रमां निर्णय नथी ते जेम जितव्यवहारमां कह्युं अने जेम वडा वडेरा करता आव्या तेम करे छे. ते जितव्यवहार मानवो कह्यो छे. तेनी शाख सूत्र भगवती शतक आठमे उद्देशे आठमे, तथा व्यवहार सूत्र उद्देशे दसमे. ए न्याये अमारा बावीस टोलाना समुदायना साधु तो जे कामनो सूत्रमां नीर्णय नथी ते सर्व जितव्यवहारथी करे छे; अने जितव्यवहारथी वर्ते तेने भगवंते आज्ञाना आराधक कह्या छे. ए न्याये अमे तो जीतव्यवहारथी सर्व काम करीए छीए; अने तमे तो जीतव्यवहारनां बीजां तो प्रायश्चित प्रमुख सर्व काम उथापी दीधां; अने रोगान

प्रमुखनी वेलाए बीजा संघाडाना साधुनुं ठेठुं ल्यो छो के "जेम तमे करो छो तेम अमे पण करीए छीए." अहो देवानुप्रीय ! श्री निषित सूत्र प्रमुखमां पात्रांने त्रण पसली तेल लगाडवुं कह्युं छे तथा त्रण पसली लोद्र प्रमुखनो रंग लगाडवो कह्यो छे. ते तेल तथा लोद्रनो रोगान बने छे, तेथी वडेरा आचार्योंये पात्रांने रोगान लगाववो स्थाप्यो छे. ते जीत व्यवहार छे. ते तेलनी नेश्राये जीतव्यवहारथी अमे रोगान लगावीए छीए. वली तेल रोगान वासी राखवो न जोइए. छतां केइक सिंघाडामां वासी राखे छे, पण ते तमारी पेठे स्थापना करता नथी. तमे तो कहो छो के सूत्रमां कह्या सीवाय काम करे तेनामां साधपणुं नथी, अने वली रोगान वासी राखवानी तो स्थापना करो छो; पण भगवंते तो तेल, रोगान प्रमुख वासी राखे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे तथा ग्रहस्थी सरखा कह्या छे. शास्त्र सूत्र दशवैकालीक अध्ययन छठ्ठे अढार बोल मांहेला पांचमा बोलमां. ते पाठः—

विडमुब्भे इमं लोणं तिल्लं सप्पिं च फाणियं नते,
संनिही मिछंति नायपुत्त वओ रया. ॥ १८ ॥
लोभस्ससम णुफासे मन्ने अन्नय रामवि
जे सिया संनिहिकामी गिही पव्वइए नसे. ॥ १९ ॥

अर्थः—हवे पांचमा स्थानकनी विधि कहे छे. वि० बिड लवण समुद्रादिकनुं इ० एवा प्रकारनुं लो० लुंण ति० तेल स० घीइ फा० ढीलो गोल न० एटलां वानां ते यति सं० वासी राखवां मि० न वान्छे ना० श्री माहावीरदेवनां व० वचने र० जे रक्त तत्पर होय ते. लो० लोभनुं अणु० थोडुं पण सेववुं (जे वासी खावुं) ते, अने म० अनेरी बीजी वस्तु थोडी पण जे० जे यति सि० कदाचीत सं० स्निग्ध खावानी वस्तु वन्छे ते गि० ग्रहस्थी पण नही अने प० यति पण नही.

भावार्थः—हवे आ पाठमां एम कह्युं छे के, वीर वचनमां रक्त थयो होय ते साधुए लुंण, तेल, गोल, घृत प्रमुख वासी राखवानो वा-

न्छा करवी नही; अने जे कोइ किंचीत मात्र वस्तु वासी राखवानी वान्छा करे तेने लोभनो सेवणहार तथा पांच माहाव्रतनो विराधक ग्रहस्थ केहेवो; पण प्रवर्जित साधु न केहेवो. हवे जुओ ! आ पाठमां तेल वासी राखे तेने भगवंते ग्रहस्थी सरखो कह्यो छे. ते तेलनी नेश्राये रोगान लगावीए छीए. तमे रोगान वासी राखवानी स्थापना केम करोछो?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, " अहीयां तो खावाने वास्ते तेलादिक वासी राखे तेने ग्रहस्थी सरखो तथा साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे; पण पात्राने लगाडवा वास्ते तेल रोगान वासी राखवो क्यां वर्ज्यो छे? तेनो उत्तर.

हे देवानुप्रीय ! श्रीवीतरागदेवनुं वचन उत्थापीने एवी ढीलाइ केम स्थापो छो ? जुओ नषिथ सूत्रमां, गुमडांने लगाववानो मलम तथा गोबर प्रमुख वासी राखे तेने चोमासी पायश्चित कह्युं छे. त्यारे तेल रोगान वासी राखशे तेने दोष केम नही लागशे ? अने तेल रोगान वासी राखवानी स्थापना करशे तथा दोषने निर्दोष स्थापशे तेनामां (सम्यक्त) साधपणुं केम रहेशे ? वली तेल, अलसी, रोगन, मीण अने साबु प्रमुख वासी राखे ते तो कर्मनो उदयभाव छे; पण वासी राखवानी स्थापना करो छो ते घणुं अजुक्तुं करो छो. वली तमे कहो छो के " खावानी वस्तु वासी राखे तेने ग्रहस्थी सरखो कह्यो छे, पण रोगान, तेल, ए खावानी वस्तु नथी तेथी वासी राखीए छीए. " ए लेखे तो आंखोमां घालवानो उसो ( सुरमादिक ), गुंबडांने लगाववानो मलम तथा दुखता शरीरे लगाडवानुं तेल, घृत, पुठां प्रमुख करवाने चावल तथा गहुंनी लाही अने साही ढींगलो प्रमुखमां नाखवाने गुंद इत्यादिक खावा वीना अनेक कामने वास्ते अनेक वस्तुओ तमारी केहेणीने लेखे वासी राखताज हशो; पण दस वैकालीकना त्रीजा अध्ययनमां दसमा अणाचारमां तेलादिक वासी राखे तेने अणाचारी कह्यो छे तथा नषित सूत्रमां चोमासो प्रायश्चित कह्युं छे. तेमज दसाश्रूतस्कंध, उत्तराध्ययन अने प्रश्नव्याकरण प्रमुख घणा सूत्रमां ठाम ठाम तेलादिक वासी राखवुं वर्ज्युं छे. ते जाणजो.

हवे तेरापंथी साधवी साथे संसतो परिचय करे छे अने स्थापे छे. तेनुं वर्णनः—

वली ढीला, पासत्था, सुखसेलीआ अने जीन्नना लोलपी, साधवीनां आहारपाणी ले छे पण ठाणायांग सूत्रना त्रीजा ठाणामां काम पड्याथी त्रण प्रकारे साधवीनें बोलाववुं कह्युं. तेमां काम पड्याथी आहारादिक देवो देवराववो कह्यो; पण साधवीनो आहार पाणी लेवो तो, बत्रीस सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी. छतां तेरापंथीना साधुउ आरजानो आएयो आहार पाणी ले छे. हवे ठाणायांगमां आर्जाने देवो देवराववो कह्यो छे, ते पण काम पड्यां अशातादिक कारणे कह्यो संन्नवे छे; कारण के सुखे समाधे साध साधवीने मांहोमांही आलोवणा लेवी तथा मांहोमांहे आहार पाणी प्रमुखनी वैयावच करवी, एके कल्पे नही. शास्त्र सूत्र व्यवहार उद्देशे पांचमें. ते पाठः—

जे निग्गंथाय निग्गंथीउय संन्नोइयासिया णोण्हंकप्पति अन्नमन्नस्स अंत्तिए आलोइए. अछिया इछण्हं केइ आलोयणारिहे कप्पतिणं तस्स अंत्तिए आलोइत्तए. णछि इछण्हं केइ अण्हे आलोयणारिहे एवणं कप्पत्ति अएमएस्स अंतिए आलोइत्तए. जे निग्गंथाये निग्गंछिउय संन्नोइयासिया नोन्हंकप्पति अएमएस्स अंतिए वेयावचं करितए अछियाइणं वयाइणं वयावचंकरेइ कप्पतिण्हं तेणं वेयावच्चं करावित्तए. णछियाइणं केइ वेयावच्चंकरे एवणं कप्पत्ति अएमएेणं वेयावच्चं करावित्तए॥

अर्थः—जे० जे कोइ नि० साधु नि० साधवी सं० बार प्रकारना संन्नोगी छे तेमने णो० न कल्पे अ० मांहोमांही एकेकनी अं० समिपे आ० आलोयणा लेवी. अ० छे इ० एमने के० जो कोइ आ० आलोयणनो देणहार आचार्य तो क० कल्पे ति० ते साध साधवीने त० ते आलोयण

देणहार आचार्यनी अं० समिपे आ० आलोयणा लेवी. ण० नथी इ० ए साध साधवीने के० कोइ अ० अनेरो आ० आलोयणनो देणहार आचार्य ए० एम होय तो क० कल्पे अ० मांहोमांही एकेकनी अं० समिपे आ० आलोयणा लेवी. ज० जे कोइ नि० साधुने नि० साधवीने सं० बार प्रकारना संभोग छे णे० तेमने न कल्पे अं० मांहोमांही अं० साधु साधवीनी समिपे अने साधवी साधुनी समिपे जइने वे० वैयावच करवी. अ० छे इ० इहां कोइ अनेरा साध साधवी व० वैयावचना करणहार क० कल्पे ते साध साधवीने ते० ते कने वे० वैयावच क० कराववी. ण० नथी इहां क० कोइ अनेरा वे० वैयावचना करणहार ए० जो एम होय तो क० कल्पे अ० मांहोमांही वे० वैयावच क० कराववी.

अर्थः—हवे जुउ ! इहां एम कह्युं के, बार प्रकारना संभोगी होय ते साध साधवीने कदाचित दोष लागे तो ते दोषनी आलोयण लेवी जोइए; पण ते मांहोमांही लेवी न कल्पे. अनेरो कोइ गुणसंपन्न आलोयणा देवा योग्य आलोयणाचार्य होय तो तेनी कने आलोयण लेवी कल्पे. हवे जो एवा गुण संपन्न आलोयणना देणहार त्यां न होय तो ते कारणे मांहोमांही पण आलोयणा लेवी कल्पे एम कह्युं. हवे जेम आलोयण लेवानी विधि कही, तेम वैयावच पण मांहोमांही एकेक पासे करवी कराववी नही. ते वैयावच ठाणायांगना त्रीजा ठाणे त्रण प्रकारनी कही छेः— आहार, पाणी, वस्त्र, उपगर्णादिकनुं देवुं १, मात्रादिकनुं परठववुं २, अने तेलादिक मसलवुं, दाबवुं तथा चांपवुं ३. वली श्री प्रश्नव्याकरणजीमां घणा प्रकारनी वैयावच कही छे. ते वैयावच साध साधवीए मांहोमांही करवी नही. हवे कोइ रोगादिक कारण उपजे तो वैयावच करवा योग्य कोइ अनेरा पासे वैयावच कराववी; अने वैयावच करवा योग्य न होय तो अपवादमां मांहोमांही पण वैयावच करवी कल्पे कह्युं. एम करतां संघटादिकनी शंका उपजे ते भांजवा जणी चोवीसमुं सूत्र कहीये छीये. ते पाठः—

णिग्गंथचणं राउवा वियालेवा दीह पुठो लुसेद्मा तं इ-
त्थिएवा पुरिसो उमद्धेद्मा पुरिसोवा इत्थिए उमद्धेद्मा एवं
से कप्पति एवं चिठंत्ति परिहारंच णो पाउणत्ति एसकप्पो
थेर कप्पीयाणं. एवं से नोकप्पत्ति एवं से नो चिठंत्ति प-
रिहारंच पाउणइ एसकप्पो जिणकप्पीयाणं.

अर्थः—णि० साधु साधवीने रा० रात्रे वि० पडिक्कमणादिकनी वेलाए तथा बपोर इत्यादिक वीकट वेलाए दी० दीर्घ सर्प पु० स्पर्श्यो थकां लु० लुसे, डंख दे, करडे, एवो डस्यो होय त्यारे तं० ते इ० साधवीने ते डंखे तो पु० पुरुष ग्रहस्थ तेने हाथे करी उ० दंसनी चिकित्सा करावे, अने पु० पुर्षने ( साधुने ) डंखे तो इ० ते गृहस्थणीना ( स्त्रीनी जातना ) हाथे करी उ० दंसनी चिकित्सा करावे. ए० एम से० ते स्थिवर-कल्पीने क० कल्पे ( अपवाद मार्गे ). ए० ए प्रकारे चि० रहे स्थिवर-कल्पो ते भ्रष्ट न थाय. प० परिहार तप पण ते न पामे. ए० ए कल्पाचार थे० स्थिवर-कल्पीनो कह्यो. हवे जिन-कल्पीनो आचार कहे छेः—ए० एम स्थिवर कल्पीनी परे से० ते जिन-कल्पीने नो० न कल्पे. ए० एम से० ते जिन-कल्पीपणुं नो० न रहे. प० पायश्चित पण पामे. ए० ए आचार जिन-कल्पीनो केहेवो. ए प्रकारे वैयावचनुं करावबुं जिन कल्पीने न कल्पे. ( ते उत्सर्ग मार्गे प्रवर्ते छे ते माटे ).

भावार्थः—हवे जुओ ! साध साधवीने मांहोमांहे अपवादे वैयावच करवी कही. त्यां संघटानी शंका उपजे ते टालवा माटे कह्युं के, सर्पादिके दंष दीधो होय तो साधु साधवी स्त्री पुरुषकने झाडो देवरावे. ए झाडो देवरावबानो कल्प स्थिवर-कल्पीनो छे, तेथी ते प्रायश्चित न पामे; पण जीन-कल्पीने झाडो देवरावबो कल्पे नहीं, तेथी जो झाडो देवरावे तो प्रायश्चित पामे. वली अपवादमां अणसरते वैयावचने अर्थे संघटादिक करतां भगवंतनी आज्ञा अतिक्रमे नही. शास्त्र सूत्र वृहत्कल्प उद्देशो छठे. ते पाठः—

निग्गंथस्सय अहेपायंसि खाणुवा कंटएवा हिरएवा सकरेवा परियावज्जेजा तंच निग्गंथे नोसंचाएइ निहरित्त-एवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथी निहरमाणीवा विसोहे-माणीवा णाइक्कमइ. निग्गंथस्स अछिसि पाणेवा बोएवा रएवा परियावजेजा तंच निग्गंथे नोसंचाएइ निहरित्त-एवा विसोहित्तएवा तं निग्गंथी निहरमाणीवा विसोहीमा-णीवा णाइक्कमइ. निग्गंथीए अहेपायंसि खाणुवा कंट-एवा बाहिरेवा सकरेवा परियावजेजा तंच निग्गंथी नोसं-चाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथे निहर-माणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथीए अछिसि पाणेवा बिएवा रएवा परियावजेजा तंच निग्गंथी नोसं-चाएइ निहरित्तएवा विसोहित्तएवा तंच निग्गंथे निहर-माणेवा वीसोहेमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथे निग्गंथी दु-गंसिवा विसमंसिवा पवयंसिवा पखलमाणंवा पवडमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ. निग्गंथे निग्गं-थी सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उकसमा-णंवा उवुझमाणेवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्क-म्मइ. निग्गंथे निग्गंथी नावं आरोहमाणंवा उरोहमाणंवा गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ. खित्तचित्त नि-ग्गंथी निग्गंथे गिन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कम्मइ.॥

अर्थः—पूर्ववत्. जुओ प्रश्न बीजे पाने २२४ में.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं के, साधुना पगमां खीलो, कांटो, प्रमुख भांग्यो होय तथा आंखमां प्राणी, बीज, रज प्रमुख पड्यां होय अने पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधवी काढे

तो आज्ञा अतिक्रमे नही; अने साधवीना पगमां खीलो कांटो प्रमुख लाग्यो होय तथा आंखमां प्राणी, रज, बीज प्रमुख पड्युं होय ते पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधु काढे तो आज्ञा अतिक्रमे नही. वली व-समी जग्याथी तथा पर्वतादिकथी पडती साधवीने तथा जल काद आदिकमां लपसती, पडती तथा डुबती साधवीने तथा (नावा) वा-हाणे चढतां उतरतां पडती साधवने, साधु ग्रहतो थको आज्ञा अति-क्रमे नही. आगल वली कंदर्प चित्ते करी, लोभादिके करी अने जक्षा-धिष्ट करी जाती साधवीने साधु झाली राखतो थको आज्ञा अतिक्रमे नही. जेम पग तथा आंखमां खीलो, कांटो, रज, बीज प्रमुख साध साधवी पोते काढवा समर्थ न होय त्यारे साधु साधवीने अने साधवी सा-धुने काढतां आज्ञा अतिक्रमे नही; पण जो साधु पासे साधु अने साधवी पासे साधवी काढनार होय तो मांहोमांहे कढाववुं कल्पे नही. तेमज आहारादिक त्रण प्रकारनी वैयावचनी बाबतमां पण व्यवहार सूत्रना पांचमा उद्देशामां कह्युं छे के, साधु पासे साधु करवा वालो होय अने साधवी पासे साधवी करवा वाली होय तो साधुने साधवी पासे अने साधवीने साधु पासे वैयावच करावववी कल्पे नही. ते छतां तमे सुखे समाधे आर्यानो लाव्यो आहारादिक केम ल्यो छो अने आर्याने केम आपो छो ? वली पुंजवुं, पलेववुं, सीववुं, पात्रां प्रमुखनुं रंगवुं अने धोवुं आदि लइ अनेक काम आर्या कने केम करावो छो ? थोडा जिवितव्यने कारणे प्रभुनां वचन उत्थापीने आर्याथी अलाप सलाप, संसतो परिचय अने आहारादिक लेवो देवो केम स्थापो छो ?

वली आर्या साथे विहार करे तो निषित सूत्रना आठमा उद्देशामां चोमासी प्रायश्चित कह्युं छे. तेमज साध साधवीने एक दरवाजे दिशा मात्रे पण जवुं वर्ज्युं छे तथा एक दरवाजे एक दिशे विहार करवो व-र्ज्यो छे. छतां तमे सूत्रनां वचन उथापीने आर्या साथे विहार केम क-रो छो ? शा माटे छो ? एवी ढीलाइ छता जीवीतव्यने कारणे अंगीकार केम करो छो ? वली आर्याने साधुजी रहेता होय ते उपाश्रयमां ज्ञानादिकना प्रयोग

विना बेसवुं ऊठवुं कल्पे नही. एक तो ( समोसर्णमां ) व्याख्यानमां आववुं कह्युं, ते प्रखदामां चार हाथ पनानो पछेडी प्रमुख ओढीने, सर्व हाथ पग प्रमुख अंग उपांग ढांकीने बेसवुं कह्युं, अने एक पोतानी पासे जणाववावाली गीतार्थ आर्या न होय तो साधुजी पासे वांचणी लेवा सारु आववुं कल्पे कह्युं. ए बे ज्ञानना प्रयोगने अर्थे आर्याने साधुना उपाश्रये आववुं कह्युं छे. ए ज्ञानादिकना प्रयोग विना साधु रहेता होय ते जग्यामां आर्याने आवीने ऊभुं रहेवुं, बेसवुं, सुवुं के आहारादिक कांइ पण काम करवुं कल्पे नही; अने साधुने साधवी रहेती होय ते जग्यामां ऊभुं रहेवुं, बेसवुं, सुवुं तथा चार आहार करवा कल्पे नही; तेम कांइ पण काम करवुं कल्पे नही. शाख सूत्र बृहत्कल्पना त्रीजा उद्देशामां. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथाणं निग्गंथीणं उवस्सयंसि चिठित्तएवा निसित्तएवा निद्दाइत्तएवा तुयट्टित्तएवा पयलाइतएवा असणंवा ४ आहारं आहारित्तए उचारंवा ८ पासवणंवा खेलंवा सिघाणंवा परिठवित्तए सद्यायंवा करित्तए झाणं-वा झाइत्तए काउसग्गंवा ठाणंवा ठाइत्तए. नोकप्पइ निग्गंथीणं निग्गंथाणं उवस्सयंसि चिठित्तएवा निसिइत्त-एवा तुयटित्तएवा निद्दाइत्तएवा पयलाइत्तएवा असणंवा४ आहारमाहरित्तएवा उचारंवा ४ परिठवित्तए सद्यायंवा करित्तए काउसग्गंवा ठाणंवा ठाइत्तए. ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधुने नि० साधवीना उ० उपाश्रयने विषे चि० सेहेजे ऊभुं रहेवुं १ नि० बेसवुं २ तु० सुवुं ३ नि० निंद्रा लेवी ४ प० विशेष निंद्रा लेवी ५ अ० असनादि चार आहार करवा ६, उ० वडीनीत ७ पा० लघुनीत ८ खे० बलखो ९ अने सि० नासि-कानो मेल १० प० परठववां, स० सझाय करवी ११ झा० ध्यान ध्यावुं

१२ का० सेहेजे काउसग करवो १३ अने ठा० बारमी पडिमा ठाववी १४ एटला वानां करवां न कल्पे. नो० न कल्पे नि० साधवीने नि० साधुना उ० उपाश्रयने विषे चि० उभुं रहेवुं नि० बेसवुं तु० सुवुं नि० निंद्रा लेवी प० विशेष निंद्रा लेवी, अ० असन, पान, खादीम, स्वादिम ए चार आ० आहार करवा, उ० वडीनीत आदि चार प० परठववा, स० सझाय करवी का० काउसग करवो ठा० (पडिमा) मर्यादानो काउसग ठा० करवो. एटलां वानां करवां न कल्पे.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, साधुजीने साधवीना उपाश्रये जइने उभुं रहेवुं नही १, बेसवुं नही २, सुवुं नही ३, निंद्रा लेवी नही ४, विशेष निंद्रा लेवी नही ५, अस्नादिक चार आहार करवा नही ६; उचार ७, पासवण ८, सिंघांण ९ अने खेल १०, परठववां नही, सझाय करवी नही ११, ध्यान धरवुं नही १२, सेहेजनो काउसग्ग करवो नही १३, अने भिखुनी पडिमा ठाववी नही. ए चौद बोल अने आहारना बाकीना त्रण गणीये तो सतर थाय. ए बोल साधुने साधवीना उपाश्रये जइने करवा कल्पे नही; तेमज साधवीने साधुना उपाश्रए जइने करवा कल्पे नही. श्री वीतरागदेवनी आज्ञातो एम छे, अने तमे तो सूत्रनां वचन तथा वीतरागदेवनी आज्ञा उथापीने आरजाने आखो दीवस घणीवार सुधी बेसाडी राखो छो, आहार पाणी स्थानकमां बेसीने करो छो, आरजा पण तमारे स्थानके बेसीने आहार पाणी तथा सझाय करे छे, खंखार प्रमुख परठवे छे, मांहोमांहे वातो करो छो अने पुंजवुं पलेवण प्रमुख आर्याकने करावो छो. एवी रीते आरजाथी संस्तव परिचय राखो छो ते घणुंज अयुक्त काम करो छो. वली उत्तराध्ययनना १६ मा अध्ययनमां ब्रह्मचर्यनी नव वाड कही छे. त्यां स्त्री रेहेती होय ते जग्यामां ब्रह्मचारी साधुने रेहेवुं नही, स्त्रीना सामुं नजर मेलवीने जोवुं नही तथा स्त्रीनां अंगोपांग नीरखवां नही; कारण के नव वाड मांहेली एक वाड भागे तो तेना ब्रह्मचर्यने विषे शंका कंखा तथा वितिगिच्छा उपजे, अने ब्रह्मचर्य पालुं के न पालुं एवा

प्रणाम थाय, अने संयमथी, संवरथी तथा केवली-परुप्या धर्मथी भ्रष्ट थाय, एम कह्युं छे. तमे आखो दीवस आर्याने पासे लइने बेठा रहो छो, वातो करो छो अने तेना सामुं जोया करो छो. हवे तमारी वाड शी रीते रेहेशे ? वली स्त्रीनो परिचय तो ठाम ठाम निषेध्यो छे. तमे उंडा जिवितव्यने कारणे एटलां सूत्रनां वचन उथापीने, आर्यानी साथे विहार करीने, आर्यानो लाव्यो आहार पाणी लइने अने आर्यानो संस्तव परिचय करीने, जैन ( धर्म ) मार्ग केम लजावो छो ?

हवे तेरापंथीउनी नीत्य-पिंड लेवानी लीला कहीए छीए. वली सरस आहारना गृद्धि, रसना लोलपी, पेहेले दीवसे तो घेरे वहोरे, अने बीजे दीवसे तेज श्रावकना हाटे तथा रस्तामां घृत, सुखडी प्रमुख रोजनां वोहोरी ले छे; पण सूत्रमां तो नित्य-पिंड लेवो ठामठाम वर्ज्यो छे. हवे तमे नित्य नित्य केम वोहोरो छो ? वली बीजा केटलाक संघाडामां नित्य धोवण ले छे, ते बाबतमां तमे कहोछो के, सूत्रमां वर्ज्या ते एक पण बोल सेवे तेमां साधपणुं नथी. त्यारे तमे नित्यने नित्य सरस आहार घर, हाट अने रस्तामां वोहोरो छो तेथी तमारुं साधपणुं शी रीते रहेशे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " सूत्रमां तो एक घरनो नित्य लेवो वर्ज्यो छे, पण पेहेले दीन जे घेरे वोहोर्युं ते धणीनुं बीजे दीवसे हाटमां तथा रस्तामां वोहोरवुं क्यां वर्ज्युं छे ? तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कोइ मेला तथा फोजमां पाल (तंबु)मां रसोइ करे छे. कोइ डुकानमां, कोइ छत्रीमां तथा कोइ वृक्ष हेठे रसोइ करे छे. इत्यादिक ठेकाणाने घर तो न कहेवाय. हवे तमे कहोछो के, एक घरनुं नित्य वोहोवुं वर्ज्युं छे. त्यारे तमे पूर्वोक्त पाल प्रमुखमां नित्य केम नथी वोहोता ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " घरनुं कांइ कारण नथी. ग्रहस्थ रहे तेज घर छे. जे जग्याए पेहेले दीवसे वोहोर्युं होय ते जग्याए बीजे दीवसे वोहरवुं नही; पण घरनुं क्षेत्र अने हाट तथा रस्तानुं क्षेत्र जुदां छे.

तेथी अमे पेहेले दीवसे घेरे वोहोरीए छीए अने बीजे दीवसे हाट र-स्तामां वोहोरीए छीए; केमके क्षेत्र जुदां छे तेथी अटकाव नही. एक क्षेत्रमां नित्य वोहोवुं नही. " एम कुयुक्ति लगावे छे. तेनो उत्तर. हे दे-वानुप्रीय ! एक बारणामां बीजे घेरे बीजे दीवसे वोहोरो के नही ? जो रसोडा, परसाल तथा ओरडाने बीजुं क्षेत्र गणता हो तो, जे रसोडा प्रमुखमां पेहेले दीवसे वोहोर्युं होय, तेज रसोडा प्रमुखमां बीजे दीवसे बीजानो कटोरदान पड्यो होय अने असनादिक वोहोरावे तो वोहोरो के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " पहेले दीवसे वोहोर्युं होय ते धणीनुं बीजे दीवसे न वोहोरवुं, पण बीजा धणीनो माल होय तो तेज जग्यामां वोहोरवानो अटकाव नहीं ? " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! तमे केहेता हता के, एक क्षेत्रमां नित्यनुं न वोहोरवुं, त्यारे ए एक क्षेत्रमां केम वोहोरो ? तमे ए धणीनो माल टाल्यो के क्षेत्र टाल्युं ? तमे पेट भरा-ईना वास्ते अणसमजु लोकोने घरनुं, हाटनुं अने रस्तानुं क्षेत्र जुदुं जुदुं केम कहो छो ? वली घरनुं अने हाटनुं क्षेत्र जुदुं जुदुं कहीने नित्य वोहोरे छे, तेने पुछवुं के, बेतालीस दोषना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कह्यो अने नित्य-पिंडनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कहो. हवे द्रव्यथकी तो चार आहार एक धणीना नित्य न लेवा, क्षेत्र थकी क्यांय न लेवा, कालथकी नित्यना नित्य न लेवा, अने भावथकी उपयोग सहित त्रण करण अने त्रण योगे करीने लेवा. हवे तमे पेट भराइ (वोहोरवा) ने वास्ते घरनुं अने हाटनुं क्षेत्र जुदुं केम स्थापो छो? कारण के नित्य एक घरनुं वोहोरे तो दसवैकालीक सूत्रना त्रीजा अध्ययनमां त्रीजा अणाचारमां अणाचारी कह्यो छे, अने तेज सूत्रना छठा अध्ययनमां अढार बोल मांहेलो एक पण बोल सेवे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो छे. तेमां तेरमा बोलमां नित्य एक घरना चार आहार ले तो तेने साधप-णाथी भ्रष्ट कह्यो छे. वली नषित सूत्रमां नित्यना चार आहार वोहोरे तो चोमासी प्रायश्चित कह्युं छे. इत्यादिक सूत्रमां ठाम ठाम नित्यनुं

वोहोरवुं वर्ज्युं छे. एटलां सूत्रनां वचन उत्थापीने आहारना ग्रद्धिथका घरनुं, हाटनुं अने रस्तानुं क्षेत्र जुदुं स्थापीने नित्य एक घरनुं वोहोरवानी स्थापना करीने अनंत संसार केम वधारो छो? वली पूर्वोक्त आरजा साथे विहार करवो, तेमनुं आहार पाणी लेवुं तथा तेमनो संस्तव परिचय राखवो, ए तो व्यवहारज अशुद्ध छे; अने जिनमार्गमां तो शुद्ध व्यवहारनेज प्रधान कह्यो छे.

दाखलाः—भरत माहाराजे केवलज्ञान उपन्या पछी वेश पालटयो, ते वेश पालट्या विना केवलज्ञान कांइ पाछुं तो नहोतुं जातुं; पण व्यवहार राखवा माटे ग्रहस्थीनो वेश उतार्यो. वली जुगलीयामां जाइ भगनी भोग करीने मरीने देवलोकमां जाय छे. ते काम आज कोइ करे तो व्यवहार मार्ग लोप्या माटे माहा अनार्थ केहेवाय. बाकी जीव हिंसा तो सरखीज छे. वली श्री वीरप्रभु जाणता हता के, बे साधु मरशे, तोपण व्यवहार राखवा माटे तेमने बोलवा वर्ज्या. वली श्रावक आरंभमां (परिग्रहमां) तो बेठा छे, पण लोक लज्या माटे चोराइ वस्तु न लेवी कही. वली माहावीर भगवान जाणता हता के, मारा रोगनी थिती पाकी छे तेथी जाशे, तोपण व्यवहार राखवा माटे तथा बीजा साधुने औषधनो उपगार जणावा माटे औषध लीधुं छे. वली साधु मेह वरसतां स्थानकमां आवे, पण एकली स्त्रीना घेरे उभा रहे नही. मार्गमां चालतां जो बीजो मार्ग न होय तो हरिकायनुं पाप करे, पण लोकीक व्यवहार अशुद्ध तेथी स्त्रीनो संघटो न करे. वली राजा प्रमुखना मर्णनी असझाय कही, ते पण लोक विरुद्ध माटे. वली केवली रात दीन सरखुं देखे छे, पण व्यवहार राखवा माटे रातना न चाले. वली स्नेह बंधण थाय तेना भयथी मास चोमास उपरान्त साधु न रहे, पण जो स्नेह बंधणहार होय तो रेहेनेमिने राजेमतीनो एक क्षणमां स्नेह थइ गयो; पण व्यवहार राखवा माटे अधिको रहे तो व्यवहार भंग थाय अने मोटुं पाप लागे. वली सतुकारमां सो जणाने अर्थे निपन्यो तेमांथी शेर आहार न ले; पण घरमां दस जणाने निमित्ते आहार निपन्यो ते-

मांथी शेर आहार ले, कारणके सतुकारनो आहार लेतां लोकमां जिन मार्गनी लघुता लागे ते माटे न ले. वली मेह वरसतां गुरुने देह चिंता उपनी, ते वखते एक शिष्य कहे के हुं तो नही परठुं, केमके जीवनी हींसा लागे; अने बीजो परठवे छे. ए बेमां व्यवहार शुद्ध कोण ? अने आराधिक कोण ? इत्यादिक व्यवहार-मार्ग उपर प्रश्न घणा छे. जेणे व्यवहार लोप्यो तेणे निश्चे पण लोप्यो जाणवो; अने जेणे शुद्ध व्यवहार राख्यो तेने मुक्ति-फल आसन्न छे. वली श्री मल्लीनाथ भगवान अवेदी हता, पण व्यवहार राखवा माटे आरजानी प्रखदामां रेहेता. हवे तमे व्यवहार लोपीने, आरजानो संस्तव परिचय करीने, नित्यने नित्य घेरे, हाटे अने रस्तामां वोहोरीने जिनमार्गने केम लजावो छो ?

वली तेरापंथी, साधुजीने नदी उतर्यामां धर्म कहे छे अने नदी उतरवीने भगवंतनी आज्ञामां कहे छे; पण भगवंते उत्सर्ग (घोख) मार्गमां नदी उतरवानी आज्ञा बत्रीस सूत्रमां कोइ पण ठेकाणे आपी नथी. फक्त अपवाद मार्गमां अणसरते ज्ञान, दर्शन अने चारीत्रना गुण राखवाने अर्थे अथवा ज्ञानादिक गुण वधारवाने अर्थे तथा लाभने अर्थे नदीउ उतरवानी विधि उलखावी छे. जेम शेठ गुमास्ताने मालना जापतानी शीखामण आपे के "विना खर्चे माल जापताथी पोहोंचाडी देजे." हवे जो गुमास्ताने विना खर्चे माल पहोंचशे तेवुं न जणाय तो हुंडी. भाडुं, जोखम, वोलावुं, लागत, खर्च खाते गणीने माल पहोंचाडे. तेम भगवंते तो साधुने संजमरुपो माल यतनापूर्वक निर्वाहने अर्थे आज्ञा आपी छे. हवे जो नदि आदिक उतरवारुप द्रव्य-हिंसा थया विना संजमरुपी मालनो, साधु आ जन्म पर्यंत निर्वाह थतो देख तो तो तेमज करे; पण ज्ञानादिकना जापता भणी तथा ज्ञानादिक वधारवाना लाभने अर्थे साधु नदी उतरे, ते पाप खाते जाणे पण हर्ष माने नही; अने पोतानुं चालतां सुधी दस वीस गाउनी अवलाइ पडतां नदी न उतरवी पडे तेम करे. हवे जुउ ! जो नदी उतर्यामां धर्म होय तो अवलाइ केम खाय ? साहमुं हर्ष धरीने नदी उतरवो जोइए; पण

नदी उतरवामां धर्म न जाणे. धर्मतो उपशम, क्षयोपशम अने क्षायक भावे छे, अने नदी उतरवी तेतो उदय भावे छे. वली जो नदी उतरवामां आज्ञा धर्म जाणो तो उपशम भावना अग्यार बोल, क्षयोपशम भावना पचास बोल अने क्षायक भावना सात्त्रीस बोल अनुयोगद्वारमां कह्या छे. हवे नदी उतरवी ते कया बोलमां छे ते कहो. उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायक भावना बोलोमां तो नदी उतरवी ते नथी, अने भगवंतनी आज्ञातो ज्ञान, दर्शन, चारीत्र अने तपनी छे. नदी उतरवी ते तो उदयभावमां छे. ते उदयभावने तमे आज्ञा धर्म केम कहो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "नदीमां सीझे कह्या छे. नदी उतरतां केवलज्ञान उपजी जाय. पाप होय तो केवलज्ञान केम उपजे ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! नदी उतरतां तो सीझे नही, कारण के नदी उतरवी तेतो कायाना योगथी (पग उपाडवाथी) छे, अने सिझवुं तो मन, वचन अने कायाना जोग निरोध कर्याथी अजोगी (चोदमें) गुणठाणे अंतर्मुहूर्त रहिने सिद्ध थाय छे. तमे नदी उतरतां सिझवुं केम कहो छो ? नदीमां, समुद्रमां तथा जलमां सीझे कह्या, तेतो साहारण आश्री जाणवुं; केमके देवतादिक छद्मस्थ साधुने आकाशथी पटकतां मार्गमां केवलज्ञान उपजी जाय. ते जोग निरोधी अजोगीपणामां पाणीमां पडतां मुक्ति जाय ते आश्री कह्युं छे; पण उदय भावे कायाना जोगथी चपलाइ करतां तथा नदी उतरतां मोक्ष जाय नही. हवे तमे नदी उतरतां केवलज्ञान उपजे कहो तो छो, पण केवलज्ञानतो क्षायक भावमां छे अने नदी उतरवी ते उदय भावमां छे. ते शी रीते बंध बेशे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, जो नदी उतरवामां पाप होय तो केवली नदी केम उतरे ? तेनो उतर. हे देवानुप्रीय ! केवलीने तो क्रोधादिक चार क्षय गया तेथी विहार करतां, हालतां चालतां अने नदी उतरतां जीव हणाय तो पण फकत एक इरियावही-क्रिया सातावेद-

नीनी बे समयनी स्थितीनी बंधाय. बाकी सर्व पुन्य पापना कर्मनो अ-बंध छे, तेथी विहारादिक करी इरियाविही पण पडिकमता नथी. तेमज नदी उतरीने पण केवली इरियावही पडिकमे नही तथा चोवीसथो पण करे नही; कारण के केवलीने सर्व कार्य करतां पापनो बंध नथी, तेथी केवली नदी उतरे तोपण तेमने पाप लागे नही; अने छद्मस्थ साधुने तो विहारादिक करतां पण पाप लागे छे अने सात कर्म बंधाय छे, तेथी इरियावही पडिकमे छे, तथा गोचरीमां पण गमणागमण करी पाछा आवीने इरियावहि पडिकमे छे. तेमज नदी उतरतां छद्मस्थ साधुने पाप लागे छे, तेथी नदी उतरीने इरियावही पडिकमे छे तथा चोवीसथो करे छे. वली नदी उतरतां सरागी छद्मस्थ साधुने छ सात तथा आठ कर्मनो बंध थाय छे. ज्ञानावरणी आदिक पाप कर्म नदी उत-रतां बंधाय छे, तेथी नदी उतरवामां आज्ञा धर्म नथी. वली जो नदी उतर-वामां आज्ञा धर्म होय तो वारंवार नदी उतरे तो शबलो दोष लागे कह्युंछे ते केम केहत? शास्त्र सूत्र दसाश्रुतस्कंध अध्ययन बीजे. ते पाठः—

अंतोमासस्स तउ उदगलेवे करेमाणे सवले ॥ अंतोमा-सस्स तउ माइठाणे करेमाणे सवले ॥ अंतो संवछरस्स दश उदग लेवे करेमाणे सवले ॥ अंतोसंवछरस्स दसमा-इठाणाइं करेमाणेसवले.

अर्थः—अं० एक मासमां त० त्रण वार उ० नदी उतरे तो उदक लेप (जे नाभि प्रमाण जल अवगाहे ते) करे तो स० सबलो दोष लागे. अं० एक मासमां छल वचन बोले, प्रतित उपजावे, यथा भिखा-रीने कहे के "ए आहार तो छे पण तमने सदे अथवा न सदे" एम पोते खावानी बुद्धे कहे, ए मायानु स्थानक, एवां त० त्रण मा० माया स्थानक क० करतो थको जेवो करण योग होय तेवो स० सबलो दोष लागे. अं० एक सं० वर्षमां द० दस वार नदी उतरे तो उ० उदक-लेप (नाभि प्रमाणे जल अवगाहे ते) लगाडतो थको स० सबलो दोष

लागे. अं० एक वर्षमां द० दस माया-स्थानक शेवे तो स० सबलो दोष लागे.

भावार्थः—आ पाठमां एम कह्युं छे के, एक महीनामां त्रण नदी अने एक वर्षमां दस नदी उलंघे तो सबलो ( जबरो ) दोष लागे. हवे जुओ ! नदी उतर्यामां धर्म होय तो महीनामां त्रण नदी उतर्याथी नवमो सबलो दोष केम कहे ? अने वर्षमां दस नदी उतरे तो १० मो सबलो दोष केम कहे ? जो धर्म होय तो वारंवार हर्ष करीने उतरवुं जोइए.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, महीनामां त्रण नदी उतरे तो सबलो दोष कह्यो, पण बे नदी उतरे तेमां तो धर्म छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! महीनामां बे नदी उतर्यामां आज्ञा धर्म क्यां कह्यो छे ? श्री भगवंते तो ज्ञानादिकनी जतनाने अर्थे भाषा टालीने कल्प उलखाव्यो छे. जेम श्रावकने साधु कहे के, अणगल पाणी पीवामां तथा त्रसजीवने हणवामां मोटुं पाप छे. हवे गलेलुं पाणी पीवुं बाकी रह्युं तथा पांच स्थावरनी हींसा करवी बाकी रही तेमां साधुनो आज्ञा-धर्म नथी. जेम अण छाणयुं पाणी पीवा करतां छाणयुं पाणी पीवामां अने त्रस-कायनी हिंसा करतां पांच स्थावरनी हिंसामां पाप थोडुं छे, पण धर्म तो नथी; तेम महीनामां त्रण नदी उलंघे तो तथा वर्षमां दस नदी उलंघे तो सबलो दोष लागे कह्युं. हवे महीनामां बे नदी अने वर्षमां नव नदी उलंघवी बाकी रही. तेमां त्रण नदी उतर्यामां सबलो दोष छे, तेनी अपेक्षाये बे नदी उतरवामां नबलो दोष छे. ए भगवंते तो भाषा टालीने कल्पनी विधि उलखावी छे; पण एम तो नथी कह्युं के " हे साधु ! महीनामां तुं बे नदी उलंघजे. मारी आज्ञा छे. " वली कदाच महीनामां त्रण नदी उलंघवी वर्जी, तेथी तमे बे नदी उलंघवामां आज्ञा धर्म मानता हो तो, दसमा सबला दोषमां एक महीनामां त्रण माया स्थानक ( कपटाइ ) सेवे तो सबलो दोष लागे कह्युं छे; तथा वर्ष दीवसमां दस माया-स्थानक सेवे तो वीसमा सबलो दोष लागे कह्युं छे.

हवे तमारा केहेणीने लेखे तो महीनामां बे नदी उतर्यामां आज्ञा

धर्म छे. त्यारे तो महीनामां बे माया-स्थानक तथा वर्षमां नव माया स्थानक सेवे तेमां पण आज्ञा-धर्म हशे. जेम महीनामां त्रण नदी उलंघे तो नवमो सबलो दोष लागे कह्युं छे, तेमज महीनामां त्रण माया कपटाइनां स्थानक सेवे तो दसमो सबलो दोष लागे कह्युं छे. हवे जेम एक महीनामां बेवार माया-कपटाइ सेव्यामां पाप छे, तेम महीनामां बेवार नदी उतर्यामां पण पापज छे; पण छद्मस्थ साधुने ज्ञानादिकनी जतना माटे नदी उतरवानो दोष लाग्या विना रहे नहीं अने मोहकर्मने उदये कपटाइ पण लाग्या विना रहे नही. तेथी भगवंते वारंवार नदी उतरवानो अने माया कपटाइनो भय उपजाववाने कह्युं छे के "हे साधु ! तुं महीनामां त्रण नदी उतरीश तो अने महीनामां त्रणवार माया-कपटाइ करीश तो सबलो दोष लागशे." एम भाषा टालीने कह्युं छे; पण "महीनामां बेवार तुं नदी उलंघजे अने बेवार माया कपटाइ करजे." एम नथी कह्युं. वली पांच मोटी नदी महीनामां बे त्रणवार उतरवी न कल्पे. तेनी शाख सूत्र ब्रहत्कल्प उद्देशे चोथे. ते पाठः—

नोकप्पइ निग्गंथाणंवा २ इमाउ पंचमहण्णवाउ महाणइउ उद्दिठाउ गणियाउ विजियाउ. अंतोमासस्स दुख्खूत्तोवा तिख्खूत्तोवा उतरित्तएवा संतरित्तएवा तंजहाः-गंगा १ जमुणा २ सरउ ३ कोसिया ४ मही ५. अहपुण एवं जाणेजा एरावइ कुणालाए जथ चकिया एगंपायं जलेकिचा एगंपायं थलेकिचा एवं से कप्पइ अंतोमासस्स दुख्खूत्तोवा तिख्खूतोवा उत्तरित्तएवा संतरित्तएवा. जत्थ नो एवं चक्किया एवं से नो कप्पइ अंतोमासस्स दुक्खूत्तोवा तिख्खूत्तोवा उत्तरित्तएवा संतरित्तएवा. ॥

अर्थः—नो० न कल्पे नि० साधु साधवीने इ० ए आगल कहेशे

ते. पं० पांच माहानदी ( प्रधान-विस्तीर्ण देखाती गणी दीधी. ते घणुं पाणी उतरतां दोहीलुं एवी मोहोटी नदीउ ) दुर्भिक्षादि कारणे उ० उतरवी पडे ते, एक मास मध्ये एकवार पण सेहेजना विहारे न संभवे. अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी के (कुंभादिके अथवा नावादिके) सं० वारंवार उतरवी न कल्पे तं० ते कहे छेः-गं० गंगा१, ज० जमुना २, स० सरजु ३, को० कोसिया ४, अने म० मही नदी ५ न कल्पे. अ० अथ हवे वली ए० एम जाणे के जो ए० ऐरावती नामा नदी कु० कुणाला नगरी समिपे ज० ज्यां च० शक्तिवंत अर्ध जंघा प्रमाणे ए० एक पग ज० पाणीमां अने बीजो ए० एक पग थ० स्थल भुमिकाए मुंकीने ए० एम करीने चाले से० तेने क० कल्पे अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी, सं० वारंवार उतरवी. ज० ज्यां नो० एवी रीते न उतराय त्यां ए० एम से० तेने न कल्पे अं० एक मासमां दु० बे वार ति० त्रण वार उ० उतरवी, सं० वारंवार उतरवी.

भावार्थः—हवे जुउ ! आ पाठमां तो एम कह्युं छे के, गंगा १, जमना २, सरजु ३, कोसिया ४ अने मही ५, ए पांच मोटी नदी महीनामां बे तरण वार उतरवी कल्पे नही; अने ऐरावती नदी, जे कुणाला नगरीनी समीपे वहे छे, तेमां एक पग जलमां अने एक पग थलमां धरीने उतरवा समर्थ होय तो महीनामां बे त्रण वार उतरवी कल्पे, अने समर्थ न होय तो उतरवी न कल्पे एम कह्युं; पण भगवंते एम नथी कह्युं के "हे साधु! तुं एक वार तो उतरजे मारी आज्ञा छे." पण भगवंते तो भाषा टालीने कह्युं छे. तमे नदी उतरवामां भगवंतनी आज्ञा अने धर्म कया न्याये कहो छो ते कहो.

तेवारे तेरांपंथी कहे छे के "कुणाला नगरीनो समीपे ऐरावती नदी वहे छे, तेमां एक पग जलमां अने एक पग थलमां देइ उतरवा समर्थ होय तो, महीनामां बे त्रण वार नदी उतरवी कल्पे छे. ते कप्पइ कहो अने भावे आज्ञा कहो. कल्प अने आज्ञा एकज छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कल्प अने आज्ञा एक होय त्यारे तो परिव्राजक संन्या-

सोओने, भगवंते काचुं पाणी पीवा माटे, हाथ, पग, चाटुनी प्रमुख धोवा माटे अने स्नानने अरथे लेवुं कल्पे कह्युं छे. शास्त्र सूत्र उव-वाइजीमां. ते पाठः—

तेसिणं परिवायगाणं णोकप्पइ अगलुहएणवा चंदणेणवा कुंकुमेणवा गायं अणुलिंपित्तए णणछ एगाए गंगामट्टि-आए. तेसिणं परिवायगाणं कप्पइ मागहपछए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे सेविय थिमिउदए नोचेवणं कंदमोदए सेविय बहुपसणे नोचेवणं अबहुपसणे सेविय परिपूए नोचेवणं अपरिपूए सेवियणं दीणे नोचेवणं अदिणे सेविय पिवित्तए नोचेवणं हछ पाय, चरुचम पक्खालणठयाए सिणाइत्तएवा. तेसिणं परि-वायगाणं कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे णोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अ-दिणे सेविय हछ पाय चरुचम्मसं पक्खालणठाए नोचे-वणं पिवित्तएवा. तेसिणं परिवायगाणं कप्पइ मागहए आढए जलस्स पडिगाहित्तए सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे जाव नोचेवणं अदिणे सेविय सिणाअत्तए नोचवणं हछपाय चरुचम्मसं पक्खालणठाए पिवित्तएवा. तेसिणं परिवायगा एयारुवेणं विहारेणं विहरमाणा बहुइं वासाइं परियाइं पाउणंत्ति. ॥

अर्थ—ते० ते परिव्राजकने णो० न कल्पे अ० अगर चं० सुखड प्रमुख कुं० कंकु केशर प्रमुख गा० शरीरे अ० विलेपन करवा; ण० पण एटलुं विशेष ए० एक गं० गोपीचंदन कल्पे. ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देश संबंधी पाथामां माय एटलुं पीवाने अर्थे

ज० पाणी नदीमांथी प० लेवुं; से० तेपण व० वहेतुं थकुं, नो० नही निश्चे अ० अणवहेतुं; से० तेपण थि० कादव रहित, नो० नही निश्चे कं० कादववालुं; से० तेपण ब० बहु निर्मलुं, नो० नहि निश्चे अ० मॉ-हॉलुं; से० तेपण प० गलेलुं, नो० नही निश्चे अ० अणगल; से० तेपण दी० दीधेलुं, नो० नही निश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण पि० पीवाने अर्थे, नो० नही निश्चे ह०हाथ पग चं० चरु हांमी, थाली, चाटुमी प० धोवाने अर्थे; तेम सि० स्नानने अर्थे पण न कल्पे. ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनुं अ० अरधुं आढा माप जेटलुं ज० पाणी प० लेवुं; से० तेपण व० वेहेतुं, पण णो० नही नीश्चे अ० अणवेहेतुं; जा० यावत् नो० नही निश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण ह० हाथ, पग च० थाली, चाटुमी, चाटुवो सं० धोवाने अर्थे कल्पे; पण नो० निश्चे पीवुं न कल्पे. ते० ते परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनुं आ० एक आढा प्रमाण ज० पाणी प० लेवुं; से० तेपण व० वेहेतुं, नो० नही निश्चे अ० अणवेहेतुं; जा० यावत् पूर्वे कह्युं तेम, नो० नहि नीश्चे अ० अणदीधुं; से० तेपण सि० स्नानने अर्थे, नो० नही निश्चे ह० हाथ पग च० चाटुमी थाली प० धोवाने तथा पि० पीवाने न कल्पे. ते० ते परी-व्राजक ए० एवी रीते वि० विचरता थका ब० घणां वा० वर्ष सुधी प० परीव्राजकनी पा० प्रवर्जा पाले.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं छे के, ते परिव्राजकोने मागधदेश संबंधी पाथामां माय तेटलुं पाणी पीवाने लेवुं कल्पे. ते पण वेहेतुं थकुं, कादव रहित, निर्मलुं, गलेलुं अने दातारनुं दीधेलुं ले. एज रीते एवुंज पाणी मगधदेशनुं अर्ध आढुं प्रमाण, हाथ, पग, प्रमुख धोवाने लेवुं कल्पे कह्युं. वली एज रीते एवुंज पाणी मगध देशनुं एक आढा प्रमाण स्नानना अर्थे लेवुं कल्पे कह्युं. हवे जुओ ! जो कल्प अने आज्ञा एक होय तो आ पाठना सं यालाउने काचुं पाणी पीवुं, काचा पाणीथी स्नान करवुं तथा हाथ पग धोवा कल्पे कह्युं छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो संन्यासिउने काचुं पाणी पीवानो, काचा

पाणीथी स्नान करवानी अने हाथ पग धोवानी श्री जगवंतनी आज्ञा मानवी पमशे. वली अंबमजी श्रावकने काचुं पाणी पीवुं अने काचा पाणीथी स्नान करवुं पण कल्पे कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र नववाइजीमां. ते पाठः—

अमझस्सपरिवायगस्स कप्पइ मागहए अदाढए जलस्स पमिग्गहित्तए सेविय वहमाणे णोचेवणं अवहमाणे जाव सेविय एवं थमियं पसणं परिपूयं णोचेवणं अपरिपूए सेविय सावद्येतिकाउं णोचेवणं अणवद्य सेविय जीवितिकाउ णोचेवणं अजीवा सेविय दिणे णोचेवणं अदिणे सेविय दंत हत्र पाय चरु चम्म पखालणठ्याए पिवित्तए-वा २ णोचेवणं सिणाइत्तए. अमझस्सणं परिवायगस्स कप्पइ मागहए आढए जलस्स पमिग्गहित्तए सेविय वहमाणे नोचेवणं अवहमाणे जाव सेविय दिने णोचेवणं अदिणे सेविय सिणाइत्तए णोचेवणं हत्रपाय चरु चम्मसं पखालणठ्याए पिवित्तएवा ॥

अर्थः— अ० अंमम परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनुं अर्धुं आढुं प्रमाण ज० पाणी प० ग्रहवुं; से० ते पण व० वेहेतुं थकुं; पण णो० नही निश्चे अणवेहेतुं जा० यावत से० ते पण ए० एम थ० कादव रहित प० निर्मल प० गलेलुं; पण णो० नही निश्चे अ० अणगलुं. से० तेने पण सा० सावद्य जाणे, पण णो० नही निश्चे अ० निर्वद्य; से० तेने पण जी० जीवसहित जाणे, पण णो० नहि निश्चे अ० निर्जिव. से० ते पण दि० दीधेलुं ले, पण णो० नही निश्चे अ० अणदिधुं; से० ते पण दं० दांत ह० हाथ पा० पग च० हांमी च टुवो प० धोवाने अर्थे तथा पि० पीवाने अर्थे ले; पण णो० नही निश्चे सि० स्नानने अर्थे कल्पे. अ० अंमम परिव्राजकने क० कल्पे मा० मागध देशनो आढो

माप ज० पाणी प० ग्रहवुं; से० ते पण व० वेहेतुं थकुं, पण नो० नहि निश्चे अ० अणवेहेतुं; जा० यावत् से० ते पण दि० दीधेलुं, णो० नहि निश्चे अ० अणदीधुं; से० ते पण सि० स्नानने अर्थे, पण नो० नहिं नीश्चे ह० हाथ पा० पग च० हांडी चाटुडी सं० धोवाने अर्थे; पि० तेम पीवाने अर्थे पण न कल्पे.

भावार्थः—हवे जुवो ! आ पाठमां कह्युं छे के, अंबडजीश्रावकने मगधदेशनुं अर्धुं आढुं माप काचुं पाणी पीवा तथा हाथ धोवाने अने एक आढुं माप पाणी स्नानने अर्थे लेवुं कल्पे कह्युं छे. ते पण वहेतुं थकुं, कादवरहित, निर्मल अने गलेलुं ले. तेने पण सावद्य जाणे, निर्वद्य न जाणे; जीव सहित जाणे, पण निर्जीव न जाणे. हवे जुओ ! अंबडजीश्रावकने काचुं पाणी पीवुं अने काचा पाणीए स्नान करवुं कल्पे कह्युं छे. हवे तमे कहोछो के, कल्प अने आज्ञा एकज छे. ए नदी उतरवी कल्पे कही तेथी आज्ञा-धर्म कहोछो. ए तमारी केहेणीने लेखे तो अंबडजीश्रावकने काचुं पाणी पीवुं ए पण आज्ञा-धर्ममां हशे. हे देवानुप्रीय ! कल्प अने आज्ञा एक केम कहोछो ? कल्प तो करे तेनां काम ओलखाववानी विधि छे, अने भगवाननी आज्ञा तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, क्षयोपशमभावना गुण अंगीकार करवानी तथा वधारवानी छे. वली साधु नदी तो अपवाद मार्गमां अणसरते कोइ ठेकाणे टलती न देखाय तेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना जतन माटे उतरे छे. जेम हुंडी, भाडुं, वोलाइ इत्यादिक, माल उपर जगात छे ते रीते ए पण छे; पण नदी उतरवानी आज्ञा भगवंते बत्रीस सूत्रमां क्यांय दीधी नथी. तमे एटलां सूत्रनां वचन उत्थापीने, खोटा अर्थ करीने, कुयुक्तिउ लगावीने तथा नदी उतरवामां आज्ञा-धर्म कहीने अनंत संसार केम वधारोछो ?

वली घाटा (टोटा) वाला सराफ सरखी सफाइ दर्शाववाने माटे तथा लोकोने पोताना मतमां लेवाने अर्थे, तेरापंथी कहे छे के "सूत्रमां कह्या सिवाय साधुए कांइ पण काम करवुं नही; अने करे तो तेमां

साधुपणुं नथी." एवी वज्र जाषा बोले बे, पण पोताने तो पुरुं अंधारुं बे; केमके सूत्रमां तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं वर्ज्युं बे, अने पोते तो ग्रहस्थीना घेरे बेसवुं स्थापे बे, तेमज ग्रहस्थीना घेरे बेसीने व्याख्यान वांचे बे. वली सूत्रमां आर्या साथे विहार करवो वर्ज्यो बे, अने पोते आर्या साथे विहार करे बे; आर्यानो लाव्यो आहार पाणी लेवो वर्ज्यो बे, अने पोते आर्यानो लाव्यो आहार पाणी ले बे; अने आर्या पासे सुखे समाधे वैयावच करावची वर्जी बे, अने पोते आर्या पासे वैयावच सुखे समाधे करावे बे. तेमज आर्या पासे पुंजवुं पलेववुं प्रमुख अनेक कामो करावे बे. वली रोगान वासी राखवो सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी, बतां पोते वासी राखे बे अने राखवानी स्थापना करे बे. तेमज पेहेले दीवसे जेना घरथी वोहोर्युं होय तेना पासेथी बीजे दीवसे हाटे अथवा रस्तामां वोहोरवानी स्थापना करे बे. एटलां काम करे तेने साधपणाथी भ्रष्ट कह्यो बे, अने ए एटलां काम सूत्रमां कह्यां ते सिवाय करे बे.

वली सूत्र उत्तराध्ययनना २६मा अध्ययनमां रातना पेहेला पोहोरमां सज्झाय करवी कही बे, बीजा पोहोरमां ध्यान करवुं कह्युं बे, त्रीजा पोहोरमां निंद्रा मुंकवी कही बे अने चोथा पोहोरमां सज्झाय करवी कही बे; पण एक पोहोरथी वधती निंद्रा लेवी बत्रीस सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी. हवे तमे पोहोर सीवाय निंद्रा ल्यो बो. ते तमारी केहेणीना लेखे तमारामां साधपणुं बे के नही ? वली एज अध्ययनमां कह्युं बे के, कोइ आवे नही तेमज कोइ देखे नही एवी जग्याए साधुए मात्रादिक परठववुं; पण उघाडी रीते लोकोना देखतां मात्रादिक परठववुं बत्रीस सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी. हवे तमे उघाडी रीते लोकोना देखतां मात्रादिक परठवो बो. ते तमारी केहेणीना लेखे तमारामां साधपणुं बे के नही ?

वली आपमतलबी कहेबे के "बजारमां श्रावके सामायक करी होय ते सामायक बतां घेरे जइने साधुने वोहोरावे तो अटकाव नही, धर्म बे, तथा घरमांज सामायकमां बेठा बे तेने बीजा कुटा कुटुंबनी आज्ञा लीधा विना वोहोराववुं कल्पे बे." एम कहे बे, पण जगवंते

तो श्रावकने सामायकमां सर्व द्रव्य वोसराव्यां कह्या छे. तेथी सामायकमां आहार वस्त्रादिक पोताना नथी एम कह्युं छे. तेनो शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमे उद्देशे पांचमें. ते पाठः—

रायगिहे जाव एवंवयासी आजीवियाणं भंते! थेरे भगवंते एवंवयासी समणोवासगस्सणं भंते! सामाइकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा सेणं भंते! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सभंडं अणुगवेसइ परायगंभंडं अणुगवेसइ? गो० ! सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगं भंडं अणुगवेसइ. तस्सणं भंते! तेहिं सीलवय गुणवय वेरमण पचक्काण पोसहोववासेहिं सभंडे अभंडे भवइ? हंता भवइ. सेकेण खाइणं अठेणं भंते! एवंवुच्चइ सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगंभंडं अणुगवेसइ? गो० ! तस्सणं एवं भवइ णोमेहिरणे नोमेसुवणे णोमेकंसे णोमेदुसे णोमे विपुल धण कणग रयण मणिमोत्तिय संष सिल प्पवाल रत्त रयणमादिए संत्त सारसावच्चेद्धे ममतभावपुणसे अपरिणाए भवइ. सेतेणठेणं गो० ! एवं वुच्चइ सभंडं अणुगवेसइ नोपरायगं भंडं अणुगवेसइ. ॥

अर्थः—रा० राजग्रही नगरीने विषे श्री गौतमस्वामी भगवंत श्री माहावीर स्वामी प्रत्ये जा० यावत् ए० एम कहे—आ० गौशालाना शिष्य भं० हे पुजय! थे० स्थिवर साधु समीपे, श्रावकनो अपेक्षाए ए० एम कह्युं. ते श्री गोतमस्वामीए भगवंत श्री माहावीर देव प्रत्ये पुछयुं. क्यां सुधी के ज्यां सुधी श्रावकना पचखाणना १३५ भागा कह्या त्यां सुधी पुछयुं, पण पछी एम कह्युं के, एवा गोशालाना श्रावक न होय. हवे श्रमणोपासक केवा होय ते जाणवा देखाडे छे. स० श्रमणो पा-

सक भं० हे भगवान ! सा० कृत सामायकना एटले पेहेलुं शिक्षाव्रत स० सामायकरुप आदरीने अ० बेठा छे तेनुं के० कोइ पुरुष भं० भांम (वस्त्रादिक वस्तु) प्रत्ये अ० लइ जाय ते सामायक पुरुं थया पछी जोतो थको भं० हे पुज्य ! शुं तं० ते भं० (भांम) पोतानी वस्तु अ० गवेषे के० प० पारकी वस्तु अ० जुए ? इहां पुछणहारनो अभिप्राय स्वकिय ते कहीये. जे स्वसंबंधी होय परंतु सामायक पडिवज्यां परिग्रहना पचखाण भणी पोतानुं न होय एटला माटेज प्रश्न कर्यो. इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! स०. पोतानो भांम (वस्तु) सामायक पुरुं थया पछी अ० गवेषे, पण नो० परायो भांम गवेषे नही. (त्यां अ. कार्ण जे ममत्व भाव छे, ते छेदाणो नथी अने सामायक छतां गवेषणा करवी ए अयुक्त.) त० तेने भं० हे भगवान ! ते० ते विवक्षित करीने जेम क्षयोपसम ग्रह्या तेणे करीने सी० अणुव्रत गु० गुणव्रत, रागादिकनी व्रत्ति प० नवकारसी पोरसी सहित पो० पर्वदीनने विषे पोषध सहित उपवास तेणे करी (इहां सीलादिकने ग्रहणे पण सावद्यजोग वृत्ति करी विरमण शब्द करी प्रयोजन तेनेज परिग्रहने अपरिग्रहपणुं निमित्त करी) स० पोतानी वस्तु अ० अपहस्या आश्री पारकी भ० थाय ? इति प्रश्न. उत्तर. हं० हा गौतम ! थाय छे. से० ते कये हेते खा० (ख्याति) प्रसिद्ध अ० कये अर्थे (शे प्रयोजने) भं० हे भगवान ! ए० एम कह्युं स० पोतानो भंड उपगर्ण अ० गवेषे नो० परायो भांम उपगर्ण न गवेषे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! त० तेने ए० एवुं मन प्रणाम भ० होय ते कहे छे. हिरण्यादि परीग्रहने द्वीविध त्रीविध पणे पचख्या छे वास्ते णो० नथी मारुं हि० रुपुं नो० सु० नथी मारुं सुवर्ण नो० कं० नथी मारु कांसु णो० डु० नथी मारुं (डुष्य) वस्त्र णो० नथी मारुं वि० विस्तीर्ण ध० धन गणिमादिक अथवा गवादिक क० कनक, रत्न, कर्केतनादिक म० मणी चंद्रकान्तादिक मो० मोती शुक्तिकादिकनां उपज्यां सं० शंख दक्षिणावर्त ए बेउ प्रसिद्ध सि० सिल, प्रवाल, विद्रुम अथवा स्फटीक शीला प्रवाली र० रातां रत्न पद्मरागादिक, ए सर्व सं० छे

विद्यमान सा० प्रधान साव० स्वापेत्य द्रव्य मम० इत्यादि परिग्रहादिकने विषे मन, वचन, कायानु, करवुं करावबुं ते पचख्या नही ते ममत्व भाव रह्यो. वली ते हिरण्यादि विषयने विषे जे ममता प्रणाम पु० वली अ० अपरिज्ञात प्रत्याख्यान थाय ते अनुमतीना अप्रत्याख्यानपणाथी ममत्व भावने अनुरुपपणाथी. से० तेने अर्थे गो० हे गौतम ! ए० एम कह्युं स० स्वकीय पोतानु भं० भंड उपगर्ण अ० जुवे छे पण नो० नथी पारकुं भंड उपगर्ण जोता. ॥

भावार्थ—हवे जुत ! आ पाठमां एम कह्युं छे के, श्रावक सामायक पोसामां बेठो छे. ते वेला धन, भंड उपगर्ण चोर लइ जाय, ते सामायक पोसो पाल्या पछी गवेषणा करे तो पोतानुं भंड गवेषतो कहीये के पारकुं भंड गवेषतो कहीये ? तेनो उत्तर भगवंते कह्यो के हे गौतम ! पोतानो भंड गवेषतो कहीये. तेवारे फरी गौतमस्वामीए पुछयुं के श्रावक सामायक पोषामां बेठो ते वखते भंड, उपगर्ण, धन, पोतानां नथी त्यारे सामायक पाल्या पछी पातानां भंडनी गवेषणा करतो केम कहो ? तेना जवाबमां भगवंते कह्युं के, हे गौतम ! सामायक पोषामां बेठो ते वारे सोनुं, रुपुं, वस्त्र आदि सर्व द्रव्य वोसराव्या छे तेथी ते श्रावकना नथी; पण सामायक पाल्या पछी भंडनो लोभ ( प्रेम बंध ) छुटयो नथी ते माटे सामायक पाल्या पछी तेने पोतानुं भंड गवेषतो कहीए. हवे आ पाठमां कह्युं के, सामायकमां बेठो त्यारे श्रावके सोनु रुपुं प्रमुख सर्व द्रव्य वोसराव्या छे के मारु सोनुं नथी, मारुं रुपुं नथी, तेमज मारुं अन्नवस्त्रादि कांइपण नथी. हवे जुओ ! ज्यारे पोतानुं नथी त्यारे सामायकमां साधुने शी रीते वोहोरावे ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के “ सामायकमां सावद्यजोगना ( संसारनां काम करवाना ) त्याग छे; पण साधुजीने वोहोराववुं तेतो नवमा व्रतमां बारमुं व्रत निपजे. तेतो निर्वद्य धर्मनुं काम घणुं चोख्खुं छे. ” तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! सामायकमां पोतानी पासे वस्त्र होय ते साधुजीने वोहोरावाने नवमा व्रतमां बारमु व्रत निपजावे तेतो घणुं

चोख्खुं काम छे; पण जे द्रव्य सामायकमां वोसरावी दीधा ते पोताना नथी. ते द्रव्य शी रीते वोहोरावी शकाय? वली तमे कह्युं के, सामायकमां संसारने हेते सावद्यजोगना त्याग छे; पण धर्म करवाना तो त्याग नथी. ए लेखे तो त्रीजा व्रतथी बारमुं व्रत अधिकुं छे. हवे तमारे लेखे तो संसारने हेते सावद्यजोगना चोरीना त्याग छे, ते साधुजोने पराणुं वस्त्रादिक चोरीने वोहोरावे तो अटकाव नही; केमके एतो तमारा केहेवा प्रमाणे निर्वद्य धर्मनुं काम छे. पण हे देवानुप्रीय! जिन मार्गमां तो पेहेला नियम कर्यो होय ते राखीने पछी अधिको धर्म करवो. जेम गुरुदेव आव्याथी उठी ऊन्ना थवुं अने विनय न्नक्ति करवी तेमां मोटो लान्न (निर्जरानुं कारण) छे, पण शिष्ये पेहेलां काउसग्ग करी पहोर पर्यंत लगी काया वोसरावी होय ते गुरुदेवनो विनय न करे, तेम सामायकमां जे द्रव्य वोसराव्या छे ते पोताना नथी, ते माटे सामायकमां साधुने वोहोरावबुं कल्पे नही. तमे प्रन्नुनां वचन उत्थापीने पोताना मतलबने अर्थे सामायकमां वोहोराववुं केम स्थापो छो?

वली तेरापंथी कहे छे के, "पुन्य पाप बंने न्नुंडां छे अने छांडवा योग्य छे; केमके धन्ना अणगारनां पुन्य वध्यां तेथी ते अनुत्तर विमाने गया, पण मुक्तिए जइ शक्या नही." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! चार कर्म तो एकान्त अशुन्न छे. तेनां नाम. ज्ञानावर्णी १, दर्शनावर्णी २, मोहनी ३ अने अंतराय ४. ए चार कर्म (घातिक) बलीष्ट छे. तेनो क्षयोपशम न थयो तेथी मुक्तिए जइ न शक्या. तमे 'पुन्य वध्याथी मुक्तिए जइ न शक्या' एवी कुयुक्ति केम लगाडो छो? पुन्य तो मुक्ति मार्गनुं एकान्त घातक नथी. केमके श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां कह्युं छे के, क्षयोपशम न्नावे जीव धर्म पामे, अने ते क्षयोपशम न्नावने "चउण्हं घाइकमाइणं" एवो उघाडो पाठ कह्यो छे. चार एकान्त अशुन्न कर्मना क्षयोपशमथी चार चारीत्र अने चार ज्ञान मझिम घणा बोल पामे; अने ए चार अशुन्न कर्मना क्षयथी क्षायक न्नावे अनंत चतुष्टय पामे; पण पुन्य प्रकृतिने घातक नथी कही. वली कर्म ग्रंथमां घाति

अघाति प्रकृति अधिकारे वीस प्रकृति सर्व-घाती' कही. ते सर्व-घाती कर्मनी कही, पण शुभ कर्म पुन्य प्रकृति मोक्ष जाताने अटकावे एम कह्युं नथी. वली पुन्यने मोक्ष मार्गनो घातक बत्रीस सूत्रमां क्यांय कह्युं नथी. तमे 'धना अणगारानां पुन्य वध्यां तेथी मुक्ति न गया' एवां अछतां वचन बोलीने अनंत संसार केम वधारो छो? वली पुन्य भोगववानी वांछा तो साधु श्रावकने करवीज नही. पण मोक्ष मार्गना साहज माटे पुन्यनी वांछा श्रावकने करता कह्या छे. शास्त्र सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन आठमे, अरणीक श्रावकना अधिकारे. जे वखते देवताए अरणीक श्रावकने कह्युं के "तमे केवा छो? 'धम्मकामिया' धर्मना कामी 'पुन्नकामिया' पुन्यना कामी 'सग्गकामिया' स्वर्गना कामी 'मोक्खकामिया' मोक्षना कामी, ए चार. एमज धर्मना इच्छक, पुन्यना इछक, स्वर्गना इछक, अने मोक्षना इछक. एमज धर्मादि चार बोलना (पीवासा) लालसावंत छो." ए रीते बार बोल कह्या.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के एतो मिथ्यात्वी देवताए एम वखाण्या छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! मिथ्यात्वी देवताए एवा कह्या ते शुं? जुठा कह्या के साचा कह्या? वली 'पुनकामीया पुनकंखिया पुनपिवासा' ए बोल मिथ्यात्वी देवताए कह्या तेम 'धम्मकामिया धम्मकंखिया धम्मपिवासिया' ए पण मिथ्यात्वीएज कह्या छे. जो साचा कह्या तो सर्व साचा; अने जुठा कह्या तो सर्व जुठा. एम उपाशकदशाना बीजा अध्ययनमां कामदेव श्रावकने देवताए तथा आठमा अध्ययनमां माहासतकजी श्रावकने रेवतीए पण एवाज बार बोल कह्या छे. वली गर्भना जीवने प्रभुए पोते वखाण्यो, त्यां पण बार बोल एमज छे. तेनी शास्त्र सूत्र भगवती शतक पेहेले उद्देशे सातमे. ते पाठः—

जीवेणं भंते! गब्भगएसमाणे देवलोएसुउववजेज्जा? गो०! अत्थेगइएउववजेजा अत्थेगइएनोउववजेजा. सेकेणट्ठेणं? गो०! सेणं सण्णिपंचंदिए सव्वाहिं पज्जतिहिं पज्ज-

त्तए तहारुवंस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एग-मवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तउ भ-वंति संवेग जायसढ्ढे तिव्वधम्माणुरागरत्ते सेणंजीवे धम्म-कामए पुणकामए सग्गकामए मोक्ककामए धम्मकंखिए पुणकंखिए सग्गकंखिए मोखकंखिए धम्मपिवासिय पु-णपिवासिए सग्गपिवासिए मोक्कपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तव्वभवसिए तदठोवउते तदपियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसिणं अंतरं कालंकरेज्जा देवलो-एसु उववज्जइ से तेणठेणं ॥

अर्थः—जी० जीव भं० हे भगवान ! ग० गर्भमां रह्यो थको मरीने दे० देवलोकमां देवतापणे उपजे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौ-तम ! अ०उ० कोइक जीव गर्भमांथी मरीने देवलोकने विषे देवतापणे उपजे अने अ०नो० कोइक जीव न उपजे. से० ते के० शा कारणे हे भगवान ! एम कह्युं ? कोइक जीव उपजे अने कोइक जीव न उपजे ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! से० ते जीव सं० संज्ञी पंचेंद्रि स० सघली प० पर्याप्ते करी प० पर्याप्त भाव प्रत्ये पाम्यो थको त० तथा विधि उचित्त योग स० श्रमण तपस्वीनी अथवा मा० मा हणो मा हणो एवुं कहे ते साधु अथवा स्थुल प्राणातिपातथी निवृत थयो ते श्रावक, तेना अं० समिप थकी ए० कोइ एक पण आ० आर्य भलुं ध० धर्मनुं सु० भलुं वचन सो० सांभलीने नि० निश्चे हैये धरीने त० ते वार पछी भ० थाय सं० भवभये करी जा० धर्मादिक करवानी श्रद्धा उपजे ति० तिव्र धर्मने रागे रंगायु छे मन जेनुं, से० ते जीव ध० ( श्रुत चारित्र रुप ) धर्म, तेना विषे वान्छा छे जेनो, पु० तेना फलभुत शुभ कर्मनो वांछक, स० स्वर्ग देवलोकनो वांछक, मो० समस्त कर्म क्षयरुप मोक्षनो वांछक, ध० धर्मनी आसक्ति छे जेनो, पु० पुन्यनो आसक्ति छे जेनो, स० स्व-

गनी आसक्ति छे जेनी, मो० मोक्षनी आसक्ति छे जेनी, ध० धर्मने विषे अतृप्तिवंत, पु० पुन्यने विषे अतृप्तिवंत, से० स्वर्गने विषे अतृप्तीवंत, मो० मोक्षने विषे अतृप्तिवंत एटला पदार्थने विषे त० चित्त छे जेनुं, त० तेने विषे मन छे जेनुं, त० तेने विषे लेश्या छे जेनी, त० तेज अधवसाय छे जेना, त० ते अर्थे करी उपयुक्त ( सहित ) छे, त० तेज अर्थने विषे दीधी छे इंद्रियो जेणे, त० तेज भावनाए करी भाविक छे, ए० एवा अं० अंतरने विषे एटले एवी भावना भावतो थको जीव का० काल करीने मरण पामे तो ते जीव दे० देवलोकने विषे देवतापणे उ० उपजे. से० ते माटे हे गौतम ! एम कह्युं. ( कोइ जीव उपजे अने कोइ जीव न उपजे. )

भावार्थ—हवे जुओ ! आ पाठमां तो प्रभुए श्रीमुखथी गौतमने कह्युं के, गर्भ मांहेलो कोइक जीव सन्नी पंचेंद्रिनो पर्याप्तो तथारुप श्रमणनी ( साधुनी ) अथवा माहण केहेतां श्रावकनी पासेथी कोइ एक (आर्य भलुं) धर्मनुं वचन सांभलीने हैये धारीने वैराग्य पाम्यो तथा तिव्र धर्मने रागे रंगाणो ते जीव धर्मनो वंछणहार, धर्म करवानी, पुन्य करवानी, स्वर्गनी अने मोक्षनी वंछा करीने तथा धर्मादिक चार बोलना आसक्तपणे करीने, तेमज ए चार बोलना अतृप्तपणे करीने, एज चार बोलने विषे चित्त छे जेनुं, मन छे जेनुं तथा लेश्या अध्यवसाय छे जेना, तेज अर्थे करी सहित छे, तेज अर्थने विषे इंद्रि दीधी छे जेणे, ए चार बोलनी भावना भावतो थको एवा अध्यवसाये वर्ततां थकां काल करीने देवतामां जाय. हवे जुओ ! भगवंते तो धर्म अने पुन्य ए बे प्रकारनी करणी कही तथा स्वर्ग अने मोक्ष ए बे तेनां फल कह्यां. पुन्यनी करणीथी देवतामां जाय अने धर्मनी करणीथी मोक्षमां जाय. हवे जुओ ! पुन्य धर्मनी वांछा करेतो देवतामां जाय कह्युं. ए न्याये पुन्यने आदरवा योग्य कहीये. वली चितमुनीए ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीने सूत्र उत्तराध्ययनना तेरमा अध्ययननी एकवीसमी गाथामां कह्युं के, हे राजा ! ए जीवितव्य तो असास्वतुं छे, अने धर्म अने पुन्यना अणकरवावाला मनुष्य मरणने मुखे

पहोंच्या थका ( सिदावसे ) पस्ताशे. इहां पण पुण्यने सरणांगत (करवा योग्य) वखाण्युं. वली पुण्यने धर्मनुं कारण कह्युं. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १८ मानी गाथा ३४ मीः—

एयपुन्नपयं सोच्चा अत्थ धम्मोव सोहियं;
भरहोवि भारहंवासं चिच्चाकामाइं पव्वइए ॥ १८ ॥

अर्थः—ए० ए ज्ञान सहित आशीष छे. ए चारीत्र धर्म ते केवो छे, के कायरने आचरतां दोहीलो अने तम सरखा शूराने सोहीलो. ए ज्ञान सहित क्रिया धारीने भरतादिके संसार मुक्यो. पु० पुन्य पवित्र पदने एटले शुद्ध जिनमतने सो० सांभलीने अवधारीने संसार मुक्यो. अ० अर्थ ते मुक्तिरुप फल ध० धर्म ते जिनशासनरुप ज्ञानदर्शन सहित चारीत्र धर्म, ए बंने करी भ० भरत चक्रवर्ती भा० भरत क्षेत्रने विषे चि० छांडीने, वली का० काम भोग छांडीने प० संजमवंत थया. ॥३४॥

भावार्थः—हवे जुओ ! आ उपरनी गाथामां पण चारीत्रने पुन्य पद कही बोलाव्युं. वली अंतगडमां श्री कृष्णे कह्युं के, "धन्य, पुन्य, कृतार्थ जालीकुमार प्रमुखने, के जेणे चारीत्र लीधुं. हुं अधन्य, अ-पुन्य, के चारीत्र मुजने न आवे." हवे जुओ ! देवानुप्रीय ! चारित्र पण पुण्यवंत जीवनेज आवतुं कह्युं छे. वली प्रश्न व्याकरणमां प्रथम संवरद्वारे "चउगयं पखंदे काहिंति अणंत्ते अकय पुन्नेजे नसुणंति ध-म्मसो उणजे पमायंति" कह्युं के, चारगतिमां कोण फरे? अकृत्य पुन्या, पुन्य रहित, अभागिया अने पापीआ जीव होय ते ( रुले ) भमे; अने सभागीया, भाग्यवंत अने पुन्यवंत जीव चार गतिमां न भमे. वली सू-यगडांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां कह्युं के, हिंसामां धर्म कहे ते श्रमण-माहण चार गतिमां "कलकली भागीणा भविसइ" अभागीया थाशे एम कह्युं; अने जे श्रमण-माहण शुद्ध धर्म कहे ते चार गतीमां "कलकली भागीणो न भविसइ" अभागीया नही थाय एम कह्युं. वली उत्तराध्ययनना ३६ मा अध्ययनमां कह्युं के "तह

सिद्धा महा नागा लोयगोय पयडिया " शुन कर्म सिद्धे खपाव्यां छे तोपण तेमने माहान्नाग्यवंत कही बोलाव्या. वली उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययनमां केशीस्वामी गौतम स्वामीने कहे छे के " पुछामिते महा-नागा " हुं पुछुंछुं हे नागवान ! तथा केशीए गौतम प्रत्ये पुछयुं के, तमे शंसारसमुद्र शीरीते तरोछो ? तेवारे गौतमे कह्युं के, शरीररुपी नावाए करीने संसारसमुद्र तरुंछुं. ते सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन २३ मानी गाथा. ७३ मीः—

सरीर माहु नावत्ति, जीवो वुच्चइ नाविउ;
संसारो अण्णवोवुत्तो, जंतरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥

अर्थः—स० शरीररुप मा० कहे तीर्थंकर ना० नावा. जी० जीव ते वु० कहीये ना० नावानो खेमणहार. सं० संसाररुपी अ० समुद्र वु० कह्यो. जं० जे संसार त० तरे छे ते म० मोक्षना गवेषणहार एवा मोटा साधु ॥ ७३ ॥

न्नावार्थः—हवे जुर्ज ! इहां कह्युं छे के, शरीररुपी नावाए करीने संसारसमुद्र तरुं छुं. ए शरीररुपी नावा ते पुन्य-प्रक्रति छे. हवे ते संसारसमुद्रमां बेगो त्यां सुधी मुक्ति—साधक जीवने सरीररुपी नावा आदरवा योग्य के छांमवा योग्य ? ए शरीर तथा पंचेंद्रिनी जाती तथा त्रसनो दसको, मनुष्यनी आनुपूर्वी, मनुष्यनुं आयुष्य, सातावेदनी, उंच गोत्र इत्यादिक पुन्यनी प्रक्रति छे. ए पुन्यनी प्रक्रति विना मुक्ति न मले, अटकाइ रहे. हवे ते मले एटले मुक्ति-गामी जीवने ए प्रक्रति साधक छे के बाधक छे ? ए व्यवहारमां आदरवा योग्य छे के छांमवा योग्य छे ते कहो. तेवारे तेरापंथी कहे छे के, उत्तराध्ययननी छेली गाथामां पुन्य पाप बंनेने खपाववां कह्यां छे. ते पाठः—

दुविहं खविउणाय पुण्णपावं निरंगणे सवउ विप्पमुक्के, तरित्ता समुद्दंच महान्नवोहं समुद्दपालो अपूणागमंगए तिबेमि. ॥

अर्थः—दु० बेहु प्रकारे शुन्न अने अशुन्न प्रकति ख० खपावीने

पु० पुन्य पापनी नि० गति रहीत सलेशी अवस्थाए कायादिकना व्यापार रहित अयोगी केवली थइने स० सर्व कर्मथी वि० मुकाणो त० तरीने स० समुद्रनीपेरे स० संसार-समुद्ररुप मोटो अहवा स० समुद्र-पाल मुनी अ० वली संसार मांही आवे नही एवी गतिए ग० पहोंच्या.

भावार्थः—हवे आ पाठनुं नाम लइ तेरापंथी, पुन्य पापने छांड-वा योग्य कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! इहां छांडवा जोग्य तो नथी कह्युं. छांडवा जोग्य कह्युं होय तो हिलवुं निंदवुं जोइए, पण पु-न्यने हिल्युं निंद्युं नथी तेथी छांडवा जोग्य कह्युं न कहवाय; पण इहां तो एम कह्युं छे के, एणे समये एणे गुणठाणे आव्या तेवारे पुन्य पाप बंने खपावीने (छांडीने) समुद्रपालजी मुक्तिए गया. एतो ठीकज छे. सिद्ध दशा पामे तेवारे तो सर्व कार्य सिद्ध थयां. पछी पुन्यनुं शुं काम छे.? हवे अहियां पुन्य पाप छुटयां तेम तप. चारीत्र पण छुटयां तेथी शुं शाधिक अवस्थामां तप संजम पण छांडवा योग्य केहेवराशे? जेम तप संजम छांडवा योग्य नथी तेम पुन्य पण छांडवा योग्य नथी. वली साधु दिक्षा लेछे तेवारे तो कारणथकी अने बंध थकी पाप मुंके छे, पण पुन्य मुंकता नथी. पाप प्रक्रतिनुं कारण सेवीने पायश्चित लेछे तेम पुन्य प्रक्रतिनुं कारण सेवीने पायश्चित नथी लेता. वली पुन्य पाप बंने शुभ अशुभ पुद्गल छे, पण साधिक बाधिकमां फेर छे; केमके सूत्रमां ठाम ठाम उच्चार पासवण प्रमुख अशुभ पुद्गलनी तो असझाय कही; पण छाण, पाणी, फुल, फल प्रमुखनी असझाय नथी कही. एटलो फेर पुद्गल दशामां पण छे. वली गौतमस्वामीने तथा हरकेशी सरीखा जीवने ज्ञान, दर्शन, चारीत्र अने तपना गुण तो सरीखा छे, मुक्ति पण बंन्ने पामे; पण पुन्याइमां फेर तेथी गौतम स्वामीने गणधर पद आव्युं; पण हरीकेशी सरीखाने न आवे. वली दसाश्रुत-स्कंधना चोथा अध्ययनमां, आठ आचार्यनी संपदा कही. ए आचार्य पदवीनो शाधकमांही रुपसंपदा कही ते पुन्यथकी मले अने आचार्य

त्रण नवथी अधिका न करे. शाख सूत्र नगवती शतक पांचमे उद्देशे सातमे. ते आचार्यपणुं पुन्यथी मले.

हवे जुर्ज ! पुन्य ते मुक्तिने नजीक करे छे के वेगली करे छे ? वली तीर्थंकर–पद्दी, गणधर–पद्दी, चक्रवर्ती–पद्दी, बलदेव, वासुदेव, जंघाचार्य अने पुलाक लब्धी, एमांनी एके लब्धी स्त्री न पामे. हवे जुर्ज ! ए संजम संवरमां फेर के पुन्यमां फेर ? वली पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति, ए त्रण उत्तम जातना स्थावर छे. एमांथी नीकल्या मुक्ति जाता कह्या, अने एमां देवता पण उपजता कह्या; पण तेउ वायुना अपुन्या जीवमां देवता पण आवीने न उपजे, अने एमांथी नीकल्या अपुन्या जीव मुक्तिमां पण न जाय. एमज विकलेंद्रिना नीकल्या अपुन्या जीव मुक्तिमां न जाय. वली मोक्षगामि जीव मुक्तिमार्गने विषे दृढ रह्या तेमने देवताए तथा मनुष्ये धन्य, पुन्य, कृतार्थ कहीने बोलाव्या छे. वली कामदेव तथा कुंडकोलियादि श्रावकोने श्री माहावीरदेवे धन्य, पुन्य, कृतार्थ कहीने बोलाव्या छे. वास्ते पुन्य प्रसंशनिक छे. जेटलुं पुन्य उंचुं तेटलो मुक्तिनो मार्ग वेगलो जाणवो.

वली अहीयां एम जाणवुं जे, उदयनाव अने क्षयोपशमनाव ए बंनेमां जे मुक्तिमार्गने साधक अवस्था छे ते उदयनावनी अने क्षयोपशमनावनी ए बंनेनी अवस्था आदरवा योग्य छे; अने बाधिक अवस्था छे ते बंनेनी छांमवा योग्य छे. जेम उदयनावमां विषय कषाय आदी घणा बोल बाधक छे; अने तेज उदयनावमां प्रभुनुं दर्शन तथा आहार विहार करवो ए करणी साधिक पण छे. हवे क्षयोपशमनावमां त्रण अज्ञान अने २ए पाप-सूत्र तथा अन्य दरसनी गोशाला जमाली प्रमुखनां कृत्य, चार वेद, चौद विद्या इत्यादिक सर्वेनुं नणवुं, ते मुक्तिमार्गनो बाधिक छे; अने तेज क्षयोपशमनावमां श्री जिन–प्रणित द्वादशांगीनुं नणवुं तथा चारित्रनुं पालवुं इत्यादिक साधिक छे. ते माटे जे जे कारणे मुक्ति नजीक थाय ते ते कारण आदरवा योग्य छे अने जे जे कारणे मुक्ति वेगली थाय ते ते कारण छांमवा योग्य छे. वली नगवंते

लोकोत्तर पक्षमां त्रण वाणीयानी उपमा दीधी, त्यां पण पुण्यने लाभ कह्यो छे. जेणे पुण्य उपार्ज्युं तेणे लाभ उपार्ज्यो. शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन ७ मानी गाथा १४ मी तथा १५ मीः—

जहाय तिन्नि वणिया, मुलंघितुण निग्गया;
एगोत्थ लहए लाभं, एगो मुलेण आगउ. ॥ १४ ॥
एगउ मुलंपि हारित्ता, आगउ तछ वाणिउ;
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणिह. ॥ १५ ॥

अर्थः—ज० जेम ति० त्रण व० वाणीया मु० मुलगी पुंजी रासी धि० लइने प्रदेशे व्यापार भणी नीकल्या. ए० ए त्रणमांथी एक ल० लाभ लइ आव्यो. ए० एक मु० मुलगी रासी पुंजी लइने घेरे आव्यो. ए० एक मु० मुलगी रासी पण हा० जुगटे रमतां हारीने धन खाइने आ० आव्यो त० ज्यां पीता घर हतुं त्यां. व० वाणीयो व्यापारी व० व्यापारने विषे उ० ए उपमाए ए० एणी पेरे ध० धर्मने विषे वि० जाणवुं.

भावार्थः—हवे जुउ ! कोइ एक ( व्यापारीने ) व्यवहारीआने त्रण पुत्र हता. तेणे पोताना पुत्रोना भाग्यनी परिक्षा जोवा निमित्ते अकेकाने सहस्त्र सहस्त्र मोहोरो आपी देशान्तरे मोकल्या अने कह्युं के, हे पुत्रो ! तमोने द्रव्य आप्युं छे तेनाथी व्यापार करी लाभ उपार्जी वेहेला आवजो. तेवारे त्रणे साहुकारना पुत्रो जुदा जुदा देशान्तरे गया. तेमां वडो पुत्र चाकर नफर राखी आव्या गयाने तृप्त करी व्यापारमां घणुं धन कमाणो. बीजे पुत्रे विचार्युं के, मारा पीता पासे घणुं धन छे माटे मुलगी पुंजी साचीत राखुं. एम चींतवी जे कांइ लाभ उपार्जे ते गीत वाजींत्र, खादिम स्वादिम चारे प्रकारे भोगवे; अने त्रीजे पुत्रे मनमां चिंतव्युं जे, मारा पीता वृद्ध थया छे अने धनना भोगववावाला तो अमेज छीए ते अमने प्रदेशे काढया अने द्रव्य तो सात पेढी सुधी खाय तोपण खुटे तेम नथी; माटे धन मेलववा सारु कष्ट शामाटे भोगववुं? एम वीचारी मुलगी पुंजी पोताए आपी हती ते सर्व खाधी.

हवे केटलाक दीवसे त्रणे पुत्र देशान्तरथी घेरे आव्या त्यारे पीताए त्रणे पुत्रनी वात जाणी. तेमां जेणे मुलगी पुंजी खाधी तेने घरनो हाली कर्यो अने कह्युं के, घरनुं कामकाज करो ने पेट भरो. जेणे मुलगी पुंजी राखी तेने द्रव्यथी व्यापार करवामां लगाड्यो; अने जेणे लाभ उपार्ज्यो तेने सर्व घरनो भार आपी मालीक स्थाप्यो. तेम धर्मने विषे पण जाणवुं. ते एम—इहां मुलगी राशी ते मनुष्यनो भव. हवे एकेक जीव तो धर्म क्रिया करी ज्यां असंख्याता सुख छे एवी देवतानी गति पामे. बीजा जेणे मुलगी पुंजी सावीत राखी ए द्रष्टान्ते एवी कमाइ करे, तेथी ते मरीने फरी मनुष्यनो अवतार पामे. हवे त्रीजी जातना जे मुलगी रासी खाय ते, मुलगी रासी गमावे ते देवालीयो थाय तेनी माफक घणा मागां कर्म करीने नर्कथी तिर्यंच अने तिर्यंचथी निगोदमां जइ पडे. एम व्यवहार राशीथी गयो तेनो संबंध सूत्रमां छे. ते आगल कहे छे. ते पाठः—

माणुसत्तं भवे मुलं, लाभो देवगइ भवे;
मुल छेएण जीवाणं, नरगं तिरिक्कतणं धुवं ॥ १६ ॥
दुहउ गइ बालस्स, आवइ वह मुलिया;
देवत्तं माणुसत्तंवा, जं जिए लोलुया सढे ॥ १७ ॥

अर्थः—मा० मनुष्यपणुं ते भ० थाय मु० मुलगी राशी. ला० देवगती थाय ते लाभ जाणवो. मु० ( मनुष्यणानी ) मुलगी रासीनो छे० हानी थावे करी ज० जीवने न० नर्क ति० तिर्यंचपणुं धु० निश्चे थाय. दु० बे प्रकारनी ग० गति (नर्क अने तिर्यंच) बा० अज्ञानीने थाय. आ० ते अज्ञानीने बे गति आवे—नर्क अने तिर्यंच. ते गति केवी छे? व० वध बंधादिक वध मुलिका छे अथवा छेदनभेदनादिक बंध मुलिका. नर्क तिर्यंचमां एवी पदवी पामे. दे० देवतापणुं ने मा० मनुष्यपणुं जि० जे हार्यो लो० मांसादिकना लोलपीपणे ते देवतापणुं हार्यो पछी नारकी थयो. स० धुर्तपणे मायाए करी मनुष्यपणुं हार्यो पछी तिर्यंचपणे थयो.

भावार्थः—हवे जुओ ! ए पाठमां एम कह्युं के, जे मनुष्य मरीने मनुष्य थाय तेणे मुलगी पुंजी राखी; नर्क तिर्यंचमां जाय तेणे मुलगी पुंजी खोइ कर्मनुं देवालुं काढयुं; अने देवतामां जाय तेणे लाभ उपार्ज्यो. ए जुओ ! देवगति उदयभावमां छे. ते मली त्यारे वीतरागे तेने लाभना पक्षमां गण्यो. ए उदयभाव पण उर्धक्षेत्र आश्रीने शुद्ध कह्यो. वली हरकेशी मुनीने ब्राह्मणोए कह्युं के, हे मुनी ! ताहारुं शरीर सर्व पुजनिक छे. शाख सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन बारमे ते पाठ. गाथा ३३,३४:-

अछंच धम्मंच वियाणमाणा, तुब्भे नविकुप्पह भूइपन्ना;
तुब्भंतु पावे सरणं उवेमो, समागया सव जणेण अम्हे ॥
अच्चेमुत्ते महाभागा, नत्ते किंचि न अच्चिमो;
भुंजाहि सालिमं कुरं, नाणा वंजण संजुयं ॥

अर्थः—हवे विप्रो बोल्या—अ० शास्त्रना अर्थ अने ध० यतिना धर्मने वि० विशेष जाणताथका तु० तमे न० न कोपो. भू० जीवदयानी तमारी प्रतिज्ञा छे. तु० तमारा पा० पगनुं स० सरण उ० करवाने स० सर्व एकठा मल्या छीए ज० परिवार सहित अ० अमे. अ० पुजवा योग्य तमारुं सर्व अंग म० हे माहानुभाग ! न० नथी ताहारुं किं० कांइ पण न० अणपुजनिक पगनी रज आदि. भुं० भोगवो सा० सालीमय कुर० कुर ना० अनेक विधनां वं० (व्यंजन) साख सं० सहित. ॥ ३४ ॥

भावार्थः—हवे जुओ ! उपरना पाठमां ब्राह्मणोए हरिकेशी मुनीराजने कह्युं के, हे माहा भाग्यवंत पुन्यवंत माहामुनि ! तमारुं शरीर सर्व अर्चनिक छे, लगार मात्र अणअर्चनिक नथी. अहीयां उदयभाव आश्रीत शरीरने अर्चनिक कह्युं. त्यारे ए साधिक छे के बाधिक छे ते वीचारजो. वली नंदी अने अनुजोगद्वार सूत्र मध्ये भावथकी लोकोत्तर पक्षना अधिकारे कह्युं के, प्रभु केवा छे ? "तिलोक वहिय निरक्खिय" प्रभुना सामुं सुर नर जुए छे तेने आनंदरस प्रवाह आंसुं चाले छे. ए शरीर निरक्षणा उदयभाव वर्तना छे; पण भक्तिभावना प्रेर्या जोइने

हर्षे छे. वली जगवती सूत्रना १५ मा शतकमां प्रजुए साधुने वर्ज्या के, गोशाला साथे कोइ बोलशो नही. एवामां बे साधु धर्माचार्यनी जक्तिजावना प्रेर्यार्थिका बोल्या. हवे ए साधुने आज्ञा विराधी तेनो दोष लाग्यो के जक्तिजावे उपदेश दीधो तथा जक्तिरागे बोल्या तेथी गुण थयो? हवे ए बोल्या ते करणी उदयजावनी छे, पण ते साधिक छे के बाधिक छे ते जुउ.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "सूत्र उत्तराध्ययनना दसमा अध्ययनमां 'एवं जवइ संसारे संसरइ सुहा सुहेहिं कम्मेहिं.' एम कह्युं. एटले जीव जम्यो ते शुजाशुज कर्मे करीने जम्यो. ए जुउ! पुन्य पाप बेउथी रुलतो कह्यो. त्यारे पुन्य मुक्तिनो साधक कयांथी?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! एम शाने जुलो छो? एमां तो प्रजुए खरुं कह्युं छे के, जे जीव संसारमां रुले छे ते शुजाशुज कर्मथी रुले छे. ए केहेवानो परमार्थ एवो छे के, शुजाशुजनो जोमो छे. ते शुजाशुज समय मात्र छुटतो नथी, सहवृत्ति छे ते माटे शुजाशुज जेला कह्या; पण शुजथी धर्म नजीक छे अने अशुजथी धर्म नजीक नथी. जो अशुज कर्मनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो जीव मुलथी धर्म न पामे, अने शुजकर्मनी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो जीव धर्म सुखे पामे, एम सूत्रमां ठाम ठाम कह्युं छे. वली सूयगमांग सूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां तेर क्रिया कही. तेमां तेरमी क्रिया इरियावहि शातावेदनी पुन्य प्रकृतिनी. ते इरियावहि क्रियाने अधर्म पक्षमां कही; सावद्य कही; पण एम कह्युं के, ए इरियावहि-क्रियामां वरतीने सेवीने गया काले अनंता मुक्ति गया, वर्तमानकाले महाविदेह क्षेत्र प्रमुखमां संख्याता जाय छे अने आगमीए काले अनंता मुक्ति जाशे. ए जुउ! इरियावहि क्रिया पुन्य प्रकृति छे ते सेवीने मुक्तिमां जावुं कह्युं. ए इरियावह क्रिया लाग्या पछी जीव निश्चे मोक्षगामि थइ चुक्यो. ए जुउ! एकलुं पुन्य इरियावहि क्रियामांज छे. ते आव्या पछी अने बांध्या पछी निश्चे मोक्ष जावुंज कह्युं; अने शुजाशुजथी रुलवुं कह्युं. ते सहचारी

जोग्ने छे तेथी पुन्य भोगववानी वांछा अने मोहकर्म अशुभ तेथी पुन्य भोगववामां असूपणुं छे ते आश्री रुलवुं कह्युं छे; पण मुक्तिमार्गना साजने अर्थे त्रसनो दसको, पंचेद्रि जात अने उदारिक शरीर, ए पुन्यरुपी नावा संसार समुद्रमां बेठा त्यां सुधी संसाररुपी समुद्र तरवा माटे आदरवा योग्य छे; अने समुद्र तरीने तीरे आव्या पछी नावा छोरुवा लायक छे. जेम वस्त्रमां मेल छे त्यां सुधी तो साबु आदरवा लायक छे, पण मेल तुटया पछी साबु छोरुवा लायक छे, तेम जीवने अशुभ कर्म रुपो मेल छे त्यां सुधी तो पुन्य ( शुभकर्म ) रुपी साबु आदरवा लायक छे; अने अशुभकर्म तुटया पछो पुन्य ( शुभकर्म ) रुपी साबु छोमीने मुक्ति जाय छे. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे व्यवहार नयमां पुन्य आदरवा लायक छे. तमे मतना बीधे एटला सूत्रनां वचन उथापीने पुन्य एकान्त छांरुवा योग्य केम स्थापोछो ?

वली तेरापंथी ( जो ग्रहस्थी सूत्र भणशे तथा वांचशे तेथी वीतरागनां वचनथी वाकेफ थइ जशे तो पछी अमारी कपटाइ चालशे नही एम धारी ) खोटो मत स्थापवाने अर्थे कहे छे के " ग्रहस्थीए सूत्र भणवुं नही. जो साधु ग्रहस्थीने सूत्र भणावे तो नषित सूत्रमां चोमासी प्रायश्चित आवे कह्युं छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! त्यां तो " अणउछिएवा गारछिएवा वायइवा वायइंतंवा साइज्जइ " एवो पाठ छे. ते अन्यतिर्थी मिथ्यात्वि अने अन्यतिर्थीना ग्रहस्थी तथा मिथ्यात्वी आश्री कह्युं देखाय छे, पण श्रावकनुं तो नामज नथी. वली शिष्यनी पेरे ग्रहस्थीने वांचणी देवी नही. तेम अन्यतिर्थी-ग्रहस्थी पासे साधु वांचणी ले तोपण चोमासी प्रायश्चित कह्युं छे. हवे तमे ग्रहस्थी पासे दुहा, उपदेसीक ढालो, सवैया, व्याकरण प्रमुख केम सीखो छो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के " अमे तो मोंढे सीखीए छीए, पण वीनय करीने शिष्यनी पेरे पानांथी वांचणी लेता नथी. " तो हे देवानुप्रीय ! चोथा आरामां तो सर्व ज्ञान मोंढेज शीखता हता. जेम अन्यतिर्थी ग्रहस्थी कने शीखे तेम शीखवामे तो अटके नही; पण शिष्यनी

माफक विनय करीने शीखे नहि, तेम शीखवे पण नही. एवी रीते साधुने वांचणी अन्यतिर्थी-ग्रहस्थीए देवी नही; अने जो दे तो प्रायश्चित कह्युं; पण श्रावक सूत्र जणे अथवा वांचे तो श्रावकने प्रायश्चित आवे एम तो नथी कह्युं. श्रावकने सूत्र जणवुं तो ठाम ठाम सूत्रमां चाल्युं देखाय छे. प्रथम तो आवश्यक सूत्रमां श्रावकने सूत्रज्ञानना चौद अतिचार टालवा कह्या छे; अने नित्य श्रावक पडिकमणामां "सुत्तागमे अथागमे तदुभयागमे एवा श्री ज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लाग्यो होय तो आलोउं:—जंवाइद्धं इत्यादिक" चौद अतिचारनो मिच्छामि दुक्कडं आपे छे. ए जुओ ! जो श्रावकने सूत्र जणवुं वर्ज्युं होय तो ज्ञानना चौद अतिचार केम परुप्या ? अने श्रावक नित्य पडिकमणामां केम पडिकमे ? डाह्या हो तो विचारी जोजो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "आवश्यक सूत्र ( श्रावकनुं पडिकमणुं) श्रावक शिखे छे ते तेनुं सूत्र कहेवाय, तेथी तेना अतिचार पडिकमे छे; पण बीजां सूत्र श्रावकने जणवां नही." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! बार अतिचार तो पडीकमणाना कहो तोय मलशे, पण "असझाए सझाए, सझाए न सझाए" एतो दस उदारीक शरीरनां हाड, मांस लोही, विष्टा प्रमुखनी अने दस आकाशनी विजली झबके, तारा तुटे, आकाशमां गाजे, ( धुंहर ) झाकल पडे, इत्यादिक असझाय थकां सझाय करवी नही. हवे जो पडिकमणा-सुत्रनाज चौदे अतिचार कहोतो, साधु श्रावकना शरीरमां डुषणा (गुंबडा) होय तेमां परु लोही चकता होय तथा विष्टा, राध, लोही, हाड, कलेवर, पड्यां होय तो पडिकमणुं करे के नही ते कहो.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "साध श्रावक पडिकमणुं तो सांज सवारे बंने टंक अवश्यमेव करे. तेमां जो साधुजी बंने वखत पडिकमणुं न करे तो तेने प्रायश्चित लागे कह्युं छे, अने श्रावकने प्रायश्चित तो नही, पण पडिकमणुं करतां असझायनो अटकाव नही." हवे जुओ ! हे देवानुप्रीय ! श्रावकने वीस असझायमां सझाय करवी नही, ते

करी होय तो, अने सझायमां सझाय न करी होय तो मिछामिदुक्कडं आपे छे. हवे जो श्रावकने सूत्र न जाणवुं एम होय तो पूर्वोक्त असाझयमां सझाय करवानुं तथा सझायमां सझाय न करवानुं मिछामि दुक्कडं भगवंते श्रावकने केम देवुं कह्युं ? ते मध्यस्थ बुद्धिथी विचारी जुओ. वली श्रावकने तो सूत्र जाणवुं कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र समवायांगमां अग्यार अंगनी नोंध कीधी तेमां तथा उपाशक दशासातमा अंगना वर्णनमां. श्रावकोना नगरनां नाम, नगरना उद्याननां नाम, जक्षना चैत्यनां नाम, श्रावकना धर्माचार्यनां नाम, श्रावकना व्रतनी मर्यादानुं वर्णन, श्रावकनी अग्यार पडिमानुं वर्णन अने श्रावकने सुत्र जाणवानुं वर्णन छे त्यां "सुयपरिगहा तवोवहाणा" एवो पाठ छे. एटले श्रावक उपध्यान तप करीने सुत्र जाणे छे, एम समवायांगमांकह्युं छे. हवे जुओ ! देवानुप्रीय ! उपध्यान-तप करीने श्रावकने सुत्र जाणवुं प्रभुए कह्युं छे. तमे श्रावकने सूत्र जाणवुं केम उथापो छो ?

तेवारे तेरापंथी कहे छे के 'सूयपरिगहा' श्रावकने कह्या ते सूत्र सांभलवा आश्री कह्या छे." तेनो उत्तर-हे देवानुप्रीय ! जेम उपाशक दशानी नोंधमां श्रावकने 'सूयपरिगहा तवोवहाणा' कह्या, तेम अंतगड तथा अनुतरोववाइनी नोंधमां साधुने पण 'सूयपरिगहा तवो वहाणा' कह्या छे. हवे तमे कहो छो के, सूयपरिगहा श्रावकने, सूत्र सांभलवा आश्री कह्या छे. ए तमारी केहेणीने लेखे अंतगड तथा अनुत्तरोववाइमां साधुजीने 'सूयपरिगहा' कह्या ते पण सूत्र सांभलवा आश्री पण जाणवा आश्री नही, एम कहेवुं पडशे; पण त्यांतो साध श्रावक बंनेने माटे एक सरीखो पाठ छे. ते सूत्र जाणवा आश्रीज छे. तमे मतना लीधे खोटा अर्थ केम करो छो ? वली 'सुयपरिगहा तवोवहाणा' ए पाठ तो श्रावकने सूत्र सांभलवा आश्री छे एवो अर्थ तमे करो छो, तो हमणा श्रावक सूत्र सांभले छे ते कया कया उपध्यान-तप करे छे ते कहो. वीतरागदेवे तो उपध्यान तप करीने सूत्र ग्रहवुं कह्युं छे, पण तमे तो तमारी केहेणीना लेखे श्री वीतरागदेवेनां वचन लोपीने उप-

ध्यान-तप कराव्या विना सूत्र संजलावो छो. ए प्रजुनी आज्ञाना विराधक केम थाउ छो ?

वली तुंगिया नगरी प्रमुखना श्रावक आदि अनेक श्रावकोने "लद्धठा गहियठा पुछियठा इत्यादिक" पांच बोल कह्या छे. ते श्रावकोए सूत्र पाठना अर्थ लाध्या छे, ग्रह्या छे तथा अर्थ पुछी पुछीने निश्चे निर्णय कर्या छे, इत्यादिक पांच बोलना जाण श्रावकने कह्या छे. त्यारे जुउ ! सूत्र-पाठ शिख्याविना अर्थ शी रीते सुधारशे? कया पाठनो अर्थ पुछीने निर्णय करशे ते कहो. कदाच जो नव तत्वादिकना जाण-पणा उपर पूर्वोक्त पांच बोल उतारशो तो नव तत्वना बोल चाल जीव अजीवना जाणपणानुं वर्णन तो पेहेलांज कर्युं छे, पछी समकितना गाढापणानुं वर्णन कर्युं छे, अने पछी विशेष सूत्रना जाणपणा आश्री ए पांच बोल कह्या छे. जेम जगवती सूत्रना ११ मा शतकना ११ मा उद्देशामां, माहाबल कुंवरनी माताए सिंहनुं स्वप्न दीठुं त्यां स्वप्नपाठकने बोलाव्या. त्यां पहेलां तो निमित्त शास्त्रना सूत्र पाठ अने अर्थना जाण कह्या छे; अने पछी राज्य सजामां मांहोमांही चोलणा करीने प्रश्न पुछीने विशेष निर्णय कर्यो, त्यां 'लद्धठा गहियठा' इत्यादिक पांच बोल कह्या छे; पण जेम ए स्वप्न-पाठक स्वप्नशास्त्रना पाठ अने अर्थ बंनेना जाण छे, तेम श्रावक पण सूत्र अने अर्थ बंनेना जाण छे. एम सूत्रपाठमां ठाम ठाम श्रावकने सूत्र जणवां कह्युं दीसे छे. तमे मतने लोधे सूत्रमां कह्यां ते वचन केम उथापो छो ?

वली तेरापंथो, नव तत्वमां पांच तत्वने तो एकान्त नये जीव कहे छे अने चारने अजीव कहे छे. ते एकान्त नय परुपे छे. तेमां एक तो जोवने जीव कहे छे अने अजीवने अजीव कहे छे. ते अजीवतो अजीव छेज. ए बे तत्व तो मुलगा छे. शेष सात तत्वमां पुन्य, पाप अने बंध, ए त्रणने अजीव कहे छे, अने आश्रव, संवर, नीर्जरा अने मोक्ष, ए चारने जीव कहे छे. हवे पुन्य, पाप अने बंध, ए त्रणने एकान्त अजीव कहे छे; पण सूत्रमां ठाम ठाम व्यवहार नय आश्री पुन्य, पाप

शुन्नाशुन्न कर्म पुद्गल बे ते जीवने लोलीन्नुत बे त्यां सुधी तेने जीव कह्या बे.

हवे पुन्य, पाप अने बंधने जीव कया न्याये कहीये ते कहे बेः– पुन्य, पाप अने बंध, व्यवहारमां जीवनुं लक्षण बे, कारण के एनो कर्ता जीव बे, ए त्रणे जीव पणे प्रणम्या बे अने ए त्रणे जीवने लोलीन्नुत बे. ए न्याये ए त्रणने जीव कहीये. (१). वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव कया न्याये कहीयेः–अनुयोग द्वारमां सात नयने पाथा उपर उतारी बे. तेमां उपली त्रण नयना धणी, जीवना उपयोगने पाथो माने. ए दृष्टान्ते उपली त्रण नयना धणी जीवना उपयोगने पुन्य, पाप अने बंध माने; कारणके उपयोग आत्मा बे अने आत्मा नाम जीवनुं बे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. (२). वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः–चारगति, पांचजाति इत्यादि पुन्य, पाप अने बंधनी प्रकृतिउ बे. ते चार गति अने पांच जाति इत्यादिमां जीव कह्या बे. तेनी शाख सूत्र आवश्यक, दसवैकालीक, न्नगवती अने पन्नवणा आदि अनेक सूत्रमां. ए न्याये पण पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये. (३). वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः– पुन्य पाप शुन्नाशुन्न कर्म बे अने बंध पण शुन्नशुन्न कर्म प्रकृतिनो बे अने आठ कर्मने अने जीवने एकज कह्या बे, तेम अढार पापने अने जीवने एक कह्यो बे. तेमज पांच शरीरने अने जीवने पण एकज कह्यो बे. शाख सूत्र न्नगवती शतक सत्तरमे उद्देसे बीजे. ते पाठः–

अणउत्थियाणं न्नंते ! एवमाइखइ जाव परुवेइ एवंखलु पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अणेजीवाया पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अणेजीवाया उप्पतियाए जाव परिणामियाए वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अणेजीवाया उग्गहे इहा अवाए

धारणाए वट्टमाणे अन्नेजीवे अणेजीवाया उठाणे जाव परिक्कमे वट्टमाणस्स अन्नेजीवे अणेजीवीया नेरइयत्ते तिरिक्ख मणुस्स देवत्ते वट्टमाणस्स अणे० णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणे जाव जीवाया एवं कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेसाए समदिट्ठिए ३ एवं चक्खूदंसणे ४ आभिणोबोहियनाणे ५ मइअनाणे ३ आहारसणाए ४ एवं उरालियसरीरे ५ एवं मणजोगे ३ सागारोवउगे अणागारोवउगे वट्टमाणे अन्नेजीवे अणेजीवाया से कहमेयं भंते! एवं खलु गो०! जणंते अणउत्थिया एवमाइक्खइ जाव मिछंते एवं माहंसु अहंपुण गो० ! एवमाइक्खामि जाव परुवेमि एवं खलु पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेवजीवे सच्चेवजीवाया जाव अणागारोवउगे वट्टमाणस्स सच्चेवजीवे सच्चेवजीवाया. ॥

अर्थः—अ० अन्यतिर्थी भं० हे भगवान ! ए० एम कहे छे जा० यावत् ए० एम परुपे छे ए० एम ख० निश्चे पा० प्राणातिपात मु० मृषावाद आदि जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्सन अने शल्ल, ए १८ पाप स्थानकने विषे व० वर्तमान देहधारक जीव अ० ते जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरो. पा० ( प्राणातिपातादिक विषे वर्तमान सरीर दीसे पण आत्मा नथी दीसतो ते जाणो ) प्राणातिपात वेरमण जा० यावत् प० परिग्रह वेरमण को० क्रोध विवेक जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्सन शल्ल विवेक, एने विषे व० वर्तमाननो अ० जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरो कहीए. उ० उत्पातनी बुद्धि जा० यावत् प० परणामनी बुद्धिने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अ० अनेरो जीवात्मा कहीए. उ० अवग्रह० इ० (इहा) विचारणा अ० निर्णय करवो धा० धारणाने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अ० अनेरो जीवात्मा

उ० उठाण जा० यावत् प० पराक्रम एने विषे व० वर्तमान ते अ० जीव अनेरो अने अणे० जीवात्मा अनेरी कहीए. ने० नारकी ति० तिर्यंच योनिक म० मनुष्य अने दे० देवपणे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीये. णा० एम ज्ञानावर्णी जा० यावत् अं० अंतरायने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीए. ए० एम क० कृष्ण-लेश्या आदी जा० यावत् सु० शुक्ल-लेश्याने विषे वर्तमानने अनेरो जीव अने अनेरी जीवात्मा कहीये. स० सम्यक्दृष्टि इत्यादिक ३ ए० एम चक्षु दर्शन आदि ४ केहेवा. आ० एम मतिज्ञानादि ५ केहेवा. म० एम मतिअज्ञानादिक ३ केहेवा. आ० आहार शंज्ञादिक ४ केहेवा. ए० एम उ० उदारीक शरीरादि ५ केहेवा. म० एम मनजोगादि ३ केहेवा. सा० साकारोपयोग अ० अने अनाकारोपयोगने विषे व० वर्तमानने अ० अनेरोजीव अणे० अनेरी जीवात्मा कहीए. एम अन्यतिर्थी कहे छे. से० ते क० केम भं० हे भगवान ! प्रश्न. उत्तर. ए० एम निश्चे गो० हे गौतम ! ज० जे भणी अं० ते अन्यतिर्थी ए० एम कहे परुपे जा० यावत् मि० मिथ्या जुठुं ए० तेमनुं ए केहेवुं. अ० हुं वली गो० हे गौतम ! ए० एम कहुं छुं जा० यावत् प० एम परुपुं छुं ए० एम ख० निश्चे पा० प्राणातिपात आदि जा० यावत् मि० मिथ्यात्व दर्शन शल्यने विषे व० वर्तमाननो स० तेज जीव स० तेज जीवात्मा इत्यर्थ. कथंचित्त एवुं जाणवुं नही एने मांहोमांही असंत भेद ते माटे. जा० यावत् अ० अनाकारोपयोगने विषे व० वर्तमान स० तेज जीव स० तेज जीवात्मा इत्यादिक सर्व केहेवुं.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां १८ पाप, १८ पापनुं वेरमण, ४ बुद्धि, अवग्रहादि चार मतिज्ञानना भेद, ५ उठाणादिक, ४ गति, ८ कर्म ६ लेश्या, ३ द्रष्टी, ४ दर्शन, ५ ज्ञान, ३ अज्ञान, ४ संज्ञा, पांच शरीर, ३ जोग अने १२ उपयोग, 'सागारवउता मणागारवउता' ए ए६ बोलमां वर्तवावालो जीव न्यारो अने ए बोल न्यारा, एम अन्यतिर्थी कहे छे, तेने भगवंते जुठा बोला कह्या; अने भगवंते ए ए६ बोल अने जीवने

एकज कह्या. हवे जुर्ज ! १८ पापनुं वेरमण अने १२ उपयोग इत्यादिक केटलाक तो संवर, निर्जरा अने मोक्षना भेद छे; अने १८ पाप, ८ कर्म, ५ शरीर, ४ गति अने ३ जोग इत्यादिक शुभाशुभ पुद्गल जीवने लोली-भुत छे त्यां सुधी पुन्य, पाप, बंधनी प्रकृतिर्ज छे. ते माटे आ सर्व बोलने अने जीवने एकज कह्यो छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "१८ पाप, ८ कर्म अने ५ शरीर, ए तो जीवथी न्याराज छे; अने एने विषे वर्तवावालो जीव अने जीवनी आत्मा तेने भगवंते एक कही छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! इहां तो १८ पापनुं वेरमण, १२ उपयोग अने ३ द्रष्टी इत्यादिकमां वर्तवा-वाला जीवने अने जीवात्माने अन्यतिर्थी न्यारा कहे छे, पण भगवंते एक कह्या छे. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो इहां पण त्रण बोल हशे. ए बोल न्यारा, ए बोलमां वर्तवावालो जीव न्यारो, अने जीवात्मा न्यारी एम मानवुं पडशे.

तेवारे वली तेरापंथी कहे छे के "१८ पापनुं वेरमण अने १२ उ-पयोग, ए तो जीवथी न्यारा नथी. ए बोल अने जीव तो एकज छे." त्यारे हे देवानुप्रीय ! भगवंते तो एक बोलमां एक सरखो पाठ कह्यो छे. ए बोलमां वर्तवावालो तो जीव कह्यो, अने एक बोलने आत्मा कही ते एकज छे. अहीयां तो एक बोल अने जीव ए बे बोल छे. तमे मतने लीधे ए एक बोल न्यारा, जीव न्यारो अने जीवात्मा न्यारी, एम त्रण बोल केम करो छो? जो त्रण बोल करो तो कहो. आत्मा केने कहो छो अने वर्तवावालो जीव केने कहो छो? तमे शुं आत्मा अने जीवने जुदा जुदा मानो छो ? जो एम मानता हो तो ए तमारुं मानवुं सूत्र विरुद्ध छे. हवे अहीयां तो अन्यतिर्थीर्जए एकान्त निश्चे नयनो पक्ष लइने एक बोलने अने जीवने न्यारा कह्या. तेवारे भगवंते व्यवहार नयनो पक्ष लइने, ए-कान्त पक्ष निषेधवाने अर्थे एक बोल अने जीवने एक कह्या. वली राय-प्रशेणी सूत्रने विषे प्रदेशीराजाए एकान्त व्यवहार नयनो पक्ष लइने, शरीर अने जीव एक छे, ए रीते परलोकनी नास्ति स्थापी. जीव अने

शरीर ५ तत्वनुं पुतलुं छे ते त्रेलुंज उपजे छे अने त्रेलुंज विणशे छे. एवो एकान्त व्यवहार स्थाप्यो. तेवारे केशीश्रमण मुनीराजे परलोकनी आस्ति देखाडवाने माटे निश्चे नयनो पक्ष लइने कह्युं के, हे प्रदेशी! तुं जुठो छे. जीव न्यारो छे अने शरीर न्यारुं छे. जीव परलोकमां पुन्य पाप लइ जाय छे अने शरीर अहीयांज विणशे छे. ए जुओ! सतरमा शतकना बीजा उद्देशामां, अन्यतिर्थीए शरीरने अने जीवने न्यारो कह्यो, तेम रायप्रशेणी सूत्रमां केशीश्रमण मुनीराजे कह्यो, अने रायप्रशेणीमां प्रदेशी राजाए जीव अने शरीरने व्यवहारनय एकान्त खेंचीने एक कह्यो. तेम सतरमा सतकना बीजा उद्देशामां श्री जगवंते पण जीव अने शरीरने एक कह्युं छे.

हवे रायप्रशेणीमां तो प्रदेशी राजाए एकान्त व्यवहार नय स्थाप्यो तेथी केशी स्वामीए तेने निश्चे-नयनो पक्ष लइने जुठो कह्यो, अने जगवतीमां अन्यतिर्थीउए एकान्त निश्चेनय स्थाप्यो तेथी जगवंते व्यवहारनो पक्ष लइने तेमने जुठा बोला कह्या. ए जुठा कह्या ते एकान्तनय स्थाप्यो तेथीज कह्या छे, कारण के जगवंतनो स्याद्वाद मत छे. तमे अन्यतिर्थीउनी पेरे एकान्त निश्चे-नयनो पक्ष लइने ७ कर्म, १७ पाप, ५ शरीर अने जीवने न्यारा केम कहो छो? जगवंतेतो ७ कर्म, १७ पाप, ५ शरीर अने जीवने एक कह्यो छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. (५). वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः— पुन्य, पाप अने बंध ए शुजाशुज कर्म छे. ते कर्मना बे जेद. उदय १ अने उदय निष्पन २. तेनी शाख सूत्र अनुयोगद्वार. उदय ते आठ कर्मनो उदय; अने उदय निष्पनना बे जेद. जीव—उदयनिष्पन १ अने अजीव उदय-निष्पन २. तेमां जीव-उदयनिष्पनना ३३ बोल, ४ गति, ६ काय, ६ लेश्या, ४ कषाय, ३ वेद, मिथ्यात्वि, अनाणि, असंज्ञी, आहारीक, अव्रति, सजोगी, संसारत्था, छद्मस्थ, असिद्ध अने अकेवली एवं ३३. ए तेत्रीस जीव-उदयनिष्पनना बोल ए जीवज छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. (६).

वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—गुरु लघु पर्यव अठफरसी रुपी पुद्गल जीवने लोलीजुत जीवे ग्रह्या तेने, तथा अगुरु लघु पर्यव कारमण शरीर चोफरसी पुद्गल जीवे कर्मपणे ग्रह्या तेने नाव जीव कह्या छे. शास्त्र सूत्र नगवती शतक बीजे उद्देशे पेहेले, खंधकजीना अधिकारमां. ते पाठः—

जेवियणंते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतेजीवे तस्सवियणं अयमठे एवं खलु जाव दव्वउणं एगेजीवे सअंते खेत्तउणं जीवे असंखेज्जपएसोगाढे. अत्थिपुणे सअंते कालउणंजीवे णकयाइनआसि निच्चे णत्थि पुण सेअंते नावउणंजीवे अणंताणाणपज्जवा अणंतादंसणपज्जवा अणंताचरित्तपज्जवा अणंतागुरुलहुयपज्जवा अणंताअगुरुलहुयपज्जवा णत्थिपुणसेअंते सेतं दव्वउजीवे सअंते खेत्तउ सअंते कालउ जीवे अणंते नावउ जीवे अणंते ॥

अर्थः—जे० जे पण वली खं० हे खंधक ! जा० यावत् स० जीव अंत सहित छे अथवा जीव अ० अंतरहित पण छे त० तेनो अ० एवो अर्थ जाणवो. ए० एम निश्चे जा० यावत् द० द्रव्यथकी ए० एक जीव स० अंत सहित छे खे० क्षेत्रथको जी० जीव अ० अशंख्याता प्रदेशात्मक छे, अशंख्याता प्रदेश अवगाह्या छे. अ० छे वली ते स० अंत सहित का० कालथी जीव ण० नथी कदी थयो ( एतावत्ता अतित काले हतो, वर्तमान काले छे, अने अनागत काले रहेशे, ) नि० नित्य छे. ए० नथी पु० वली से० तेनो अंत ( अनंत छे ). ना० नावथकी जीव अ० णा० अनंता ज्ञानना पर्याय अ०दं० अनंता दर्शनना पर्याय अ० च० अनंता चारित्रना पर्याय अ० अनंता गुरु लघु पर्याय ते उदारिक शरीर आश्रीने अ० अ० अनंता अगुरु-लघु पर्याय ते कारमण द्रव्य अथवा जी० स्वरुप आश्रीने. ण० वली तेनो अंत नथी ( अनंत छे ). से० ते एवी रीते द० द्रव्यथकी

जी० जीव स० अंत सहित छे. खे० क्षेत्रथकी पण स० अंत सहित छे. का० कालथकी जी० जीव अ० अंत रहित छे अने ना० नावथकी पण जी० जीव अ० अंतरहित छे.

नावार्थः—हवे जुन ! आ पाठमां अनंत ज्ञानना, अनंत दर्शनना अने अनंत चारित्रना पर्यायने नावजीव कह्या; अने एतो संवर, निर्जरा अने मोक्षना नेद छे. वली अनंता गुरु-लघु पर्याय, नदारीक शरीर, अठ-फरसी पुदगल, पुन्य, पाप, बंध, शुनाशुन कर्मनी प्रकृति अने अगुरु-लघु पर्याय, आठ कर्म, कारमण शरिरादिक, रुपी-चोफरसी पुदगल, शुनाशुन कर्मनी प्रकृति, ए गुरु-लघु पर्यायने तथा अगुरु-लघु पर्यायने नावजीव कह्या छे, अने आठ कर्मने कारमण शरीर कह्युं छे. तेनी शाख सूत्र नगवती शतक ७ में. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः-काया कर्मनी प्रकृति छे अने कायाने जीव कह्यो छे. शाख सूत्र नगवती शतक १३ में नद्देशे ७ में. ते पाठः—

आया नंते काए अन्नेकाए ? गो० ! आयाविकाए अन्नेविकाए. रुवि नंते! काए अरुविकाए? गो०! रुविविकाए अरुविविकाए एवं एकेक पुछा. गो०! सचित्तेविकाए अचित्तेविकाए जीवेविकाए अजीवेविकाए जीवाणविकाए अजीवाणविकाए. पुविं नंते! काए पुछा. गो०! पुविंपिकाए काइकमाणेविकाए कायसमयवित्तिक्कंतेविकाए पुविंपिकाए-निकइ काइकमाणेविकाएनिकइ कायसमयविइक्कंतेविकाएनिकइ. कइविहेणं नंते! काए पं० ? गो०! सत्तविहेकाए पं० तं० उरालिय उरालियमिसिए वेउव्विय वेउवियमिसिए आहारए आहारमिसए कम्मए ॥

अर्थः—पूर्ववत् जुन प्रश्न बीजे. पाछल पाने सत्यासीमें.

ज्ञावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां एम कह्युं के, जीवसहित कायाने जीव कहीये, अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अजीव कहीये. ते कारमण शरीर व्यवहारमां नजरे न आवे ते आश्री कायाने अरुपी कहीये. तेमज कायाने उदारिकादि शरीर आश्री रुपी पण कहीए. जीव सहित कायाने सचित्त कहीये अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अचित कहीये. जीवसहित कायाने आत्मा कहीए अने जीव छोड्या पछी मुवा कलेवरने अनात्मा कहीए. ए जुउ! काया कर्मनी प्रकृति छे तेने जीव कह्यो छे. तेज रीते पुन्य, पाप अने बंध पण शुजाशुभ कर्म छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के “ कारमण शरीरने तो सूत्रमां ठाम ठाम रुपी कह्युं छे. अहीयां कारमण शरीर आश्री कायाने अरुपी केम कही हशे?” तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! कारमण शरीरने सूत्रमां ठाम ठाम रुपी कह्युं छे ते तो अमे पण जाणीए छीए; पण प्रज्ञुनां वचन सात नये करीने छे. इहां व्यवहारमां कारमण शरीर नजरे न आवे ते आश्री अरुपी कह्युं छे. जेम दस-वैकालीक सूत्रना आठमा अध्ययनमां आठ वस्तु बादर छे पण सुक्ष्म कही छे. ते पाठः—

अठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु सजए;
दयाहिगारी जूएसु, आस चिठ सएहिवा. ॥१३॥
कयराइं अठ सुहुमाइं, जाइं पुछिज्ज सजंए;
इमाइं ताइं मेहावी, आइखिज्ज वियख्कणे. ॥१४॥
सिणेहिं पुप्फ सुहुमंच, पाणुतिंग तहेवय;
पणगं वीय हरियंच, अंम सुहुमंच अठमं. ॥१५॥
एवमेआणि जाणित्ता, सव ज्ञावेण संजए;
अप्पमत्तो जए निच्चं, सविंदिय समाहिए. ॥१६॥

अर्थः—अ० आठ सुक्ष्म जे आगल कहेशे ते पे० जोइने जा०

जे सुक्ष्मने जा० जाणीने सं० संजति द० दयानो पालणहार थाय भू० प्राणीने विषे आ० बेशे चि० ऊभो रहे अथवा स० जयणायें सुवे. क० कया अ० ते आठ सुक्ष्म ? जा० यदि पु० पुछे सं० संजति शिष्य गुरु समिपे, तेवारे गुरु शिष्य प्रत्ये कहे. इ० ए ता० ते आठ सुक्ष्म मे० मर्यादावंत यति ते विचोक्षण शिष्य प्रत्ये आ० कहे. सि० ऊस प्रमुखनुं सुक्ष्म पाणी १, पु० सुक्ष्म फुल पा० अनुद्धरी कंथवादिक सुक्ष्म प्राणी कीडी नगरा प्रमुख त० तेमज प० पांच वर्णी लीलफुल बी० वड प्रमुखनां सुक्ष्म बीज ह० नवा ऊगता अंकुरा (सुक्ष्म हरी) अं० माखी, कीडी प्रमुखनां इंडां सु० ते आठमो सुक्ष्म. ए० एणी पेरे ए आठ सुक्ष्म जा० जाणीने स० सर्व प्रकारे आठ सुक्ष्मनी रक्षा करवाने भावे सं० यति अ० निंद्रादिक प्रमाद रहित थतो ज० जयणाए करीने कार्यादिक करे नि० सदाय स० सर्व इंद्रिने विषे स० समाधिवंत रागद्वेष रहित यति.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां ऊस प्रमुखनुं पाणी १, फुल २, नाना कंथवा ३, कीडीनगरां प्रमुख ४, पंचवर्णी फुल ५, वड प्रमुखनां बीज ६, नवा ऊगता हरीकायना अंकुरा ७, अने माखो, कीडी प्रमुखनां इंडां ८, ए आठ वस्तुने सूत्रमां ठाम ठाम बादर कह्यो छे, अने अहीयां व्यवहारमां कोमलपणा आश्री वीतरागदेवे सुक्ष्म कह्यो छे. तेम कारमण काया रुपी छे, पण व्यवहारमां नजरे न आवे ते आश्री तेने अरुपी कह्यो देखाय छे.

वली तेरापंथी कहे छे के " अहीयां काय कही ते धर्मास्ति कायादिक पांच आश्री जाणवी. तेमां केटलीक अरुपी छे, केटलीक रुपो छे, केटलीक जीव छे अने केटलोक अजीव छे ते आश्री कह्युं छे." तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! अहीयां तो कायाना सात भेद कह्या छेः-उदारिक १, उदारिक मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय मिश्र ४, आहारीक ५, आहारीक मिश्र ६, अने कार्मण ७. ए सात भेद कायाना कह्या छे तेनो ज पुछा छे, कारणके आगला पाठमां चार मनना अने चार वचनना भेदनी पुछा

छे, तेथी तेनी जोके उदारिकादिकज कायानी पुण संजवे छे. वली आ पाठनी टीका अजयदेवसुरीजी कृत छे तेमां तथा आ पाठना टबामां पण पूर्वोक्त अर्थ छे. तमे मतना लीधे " पांच आस्तिकाय आश्री कह्युं छे " एम जुठुं केम बोलो छो ? अहीयां तो व्यवहार नय आश्री जीव सहित कायाने जीव कह्यो छे, अने काया कर्मनी प्रकृति छे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए.

वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—चार गति अने चार कषाय ए कर्मनी प्रकृति छे. ( शाख सूत्र पन्नवणा पद२३ में तथा सूत्र उत्तराध्ययन तथा कर्मग्रंथमां.) अने तेने जीवना प्रणाम कह्या छे. शाख सूत्र ठाणायांग ठाणे १० मे. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये. वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीएः— त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अपर्याप्तनाम, शुक्ष्मनाम, स्थावरनाम, पांच इंद्रिनी जात, चार कषाय, त्रणवेद, इत्यादिक शुभाशुभ कर्मनी प्रकृतीउं छे, ए प्रकृतिउंने जीव कह्यो छे. शाखसूत्र ठाणायांग, पन्नवणा, कर्मग्रंथ इत्यादिक अनेक सूत्रमां. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये. वली आ प्रकृतिमां ज्ञान कह्युं छे. शाख सूत्र जगवती शतक ८ मे उद्देशे बीजे. जीवमां ए प्रकृतिउं लोलीभूत रहे त्यांसुधी जीव ज्ञान पामे नही. तेथी व्यवहारमां तेने जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव ज कहीये. वली पुन्य, पाप अने बंधने जीव ए न्याये कहीयेः—आठ कर्म, अढार पाप अढार पापनुं विरमण, चारगति, चोवीस दंडक, पांच शरीर, त्रण दृष्टी अने बार उपयोग इत्यादिक ११७ बोलने आत्मापणे प्रणमे कह्युं छे. तेनी शाखसूत्र जगवती शतक वीसमे, उद्देशे त्रीजे. जीवपणे प्रणमे तेने व्यवहारमां जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीये.

वली तेरापंथी कहेछे के "४ गति, १८ पाप, २४ दंडक अने ५ शरीर, इत्यादिक प्रकृतिउंने तमे जीव स्थापोछो. ते ए प्रकृतिउं तो अजीव छे

अने जीवने प्रगमे छे. ए चार गतिनां शरीर तो अजीव छे, तेथी पुन्य -पापनां पुद्गल पण अजीव छे; पण तेना मांहे जीव छे. ए न्याये एटला पांठमां जीव कही बोलाव्या छे, पण पांच शरीरादिक कर्मनी प्रकृति अने पुन्य पापादिक शुभाशुभ कर्म पुद्गल छे ते जीव नथी." एम कहे छे तेना उत्तर. हे देवानुप्रीय तमारे लेखे तो मनुष्य, तिर्यंच, गाय भेंस उंट तथा पंखी प्रमुख सर्वने जीव न केहेवा जोइए, कारण के एनी गती अने काया तो अजीव छे अने एनामां जीव छे, तेथी तमारे लेखे तो मिश्र केहेवा जोइए; पण भगवंते तो गाय,भेंस,पसु,छाली, उंट तथा गाडर प्रमुखने एकांत सचित जीव कह्या छे. बलधो सहित गाडीने मिश्र कही छे, अने छत्र, दंड प्रमुखने अचित कह्या छे. तेनी शाख सूत्र अणुजोगद्वारमां. ते पाठः—

सेकिंत्तं संजोगे? संजोगेणं चउविहे पणत्ते तं० दव्वसंजोगे खेत्तसंजोगे कालसंजोगे भावसंजोगे.सेकिंतंदव्वसजोगे२ त्ति-विहे पन्नते तंजहाः-सच्चित्ते अचित्ते मिसए. सेकिंतंसचित्तए २ गोहिंगोमिए पसुहिंपसुइए महिसिहिं महिसिए उरणिहिं उरणीए उट्टीहिं उट्टीवावे सेतं सचित्ते. सेकित्तं अचित्ते२ छत्तेणं छत्ती दंडेणंदंडी पडेणं पडी घडेणंघडी सेत्तं अचित्ते. सेकितं मिसए२ हलेणं हालिए सगडेणं सागडिए रहेणं रहिए नावाए नाविए सेत्तं दव्व संजोगे. ॥ १ ॥

अर्थः—से० ते कया ए सं० संजोग? सं० ते संजोग च० चार प्रकारे प० कह्या तं० ते कहे छेः—द० द्रव्यने संजोगे खे० क्षेत्रने संजोगे का० कालने संजोगे अने भा० भावने संजोगे नाम नीपन्युं ४. से० हवे द्रव्यने संजोगे नाम निपन्युं ते शुं? ते ति० त्रण प्रकारे प० कह्यां तं० ते कहे छे. स० सजीव अ० अजीव अने मि० मिश्र ३. से० ते कयो सचित द्रव्य संजोग? सचित द्रव्य संजोग ते ए. गो० जेने गाय छे तेने

गोमान कहीये, प० पसु छे ते माटे पसुमान कहीये, म० भेंसना धणीने महिसीए कहीये, ७० बकरी (छाली) ना चारणहारने उरणीए कहीये अने उ० उंटना चारणहारने उंटवाल कहीये. से० ए सचित द्रव्यने संजोगे नाम निपन्यां जाणवां. से० ते कयो अचित द्रव्य संजोग? ते अचित्त द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते ए. छ० छत्रीनो धरावनार ते छत्री-राजा. दं० दंडनो धरणहार ते दंडी. प० वस्त्रनो धरणहार ते पडी. घ० घडानो धरणहार ते घडी. सं० ए अचित्त द्रव्य संजोगी नाम जाणवां. अथ हवे से० मिश्र द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते कयां? ते ए-ह० हल खेडे तेने हाली कहीए. हल अचित्त अने बलध सचित्त ए मिश्र संजोग. स० गाडी खेडे तेने सागडी कहीये. र० रथ खेडे तेने रथिक कहीये. ना० नावा (वाहाण) खेडे तेने नाविक कहीये. से० ते द्रव्य संजोगे नाम निपन्यां ते कह्यां. ॥

भावार्थः—हवे जुउ! आ पाठमां चार प्रकारनो संजोग कह्योः—द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ४. ए द्रव्य संजोगना त्रण भेदः—सचित्त, अचित्त अने मिश्र ३. हवे सचित्तना पांच भेद कह्याः—गायो चारे तेने गोवाल (गोमिक) कहीये १, पसुना धणीने पसुमान २, भेंसना धणीने महिषिए ३, छालीना (बकरीना) चारणहारने उरणीए ४ अने उंटना चारणहारने उंटी अथवा उंटवालो कहीये. ५. ए सचित्त द्रव्य-संजोगे नाम निपन्यां. हवे अचित्तना चार भेद कह्याः—छत्र धरावे तेने छत्री १, दंड धरे तेने दंडी २, वस्त्रना धरणहारने पडी ३ अने घडाना धरणहारने घटी कहीये. ४. हवे मिश्र संजोगे चार नाम निपन्यां ते कहे छेः—हल खेडे तेने हाली कहीए; हल अचित्त अने बलध सचित्त, ए मिश्र १; गाडो खेडे ते सागडी २; रथ खेडे ते रथिक ३; अने नावा खेडे ते नाविक (नावडीउ). ४. ए मिश्र संजोगे नाम निपन्यां.

हवे जुउ! गोवाल, पशुमान, महिषीए, उरणीए अने उंटीए, गाय, भेंस प्रमुख सचित्त छे ते माटे सचित्त संजोग नाम कह्यां.

छत्र, दंम, वस्त्र अने घट अचित्त छे ते जणी छत्री, दंमी, पमो अने घटो ए अचित्त संजोगे नाम कह्यां. हल, गामो अने रथ अचित्त छे तथा बलध सचित्त छे ते जणी हाली, सागमी, रथिक अने नाविक, ए मिश्र संजोगे नाम निपन्यां कह्यां. ए जुउ! गाय, नैंस, बलध प्रमुखना शरीरने अने जीवने नेलाज सचित्त कह्या. ए गाय, नैंस, बलध प्रमुखना शरीर, कर्म, पुन्य, पाप अने बंधनी प्रकृति छे अने ते पुद्गल छे, पण जीवे गह्या अने जोव सहित छे ते जणी सचित्त कह्या. सचित्त ते जीव छे ते जणी पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. वली जीव ग्रह्या जीव सहित पुजलने जीव-पर्यवा कह्या छे. नारकी, देवता, मनुष्य अने तिर्यंच ए चार गतिने, प्रदेशने, अवगाहना पुद्गलथी निपनी तेने, स्थितिने, पांच वर्णने, पांच रसने, बे गंधने, आठ स्पर्शने, बार उपयोगने, पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञानने अने चार दर्शनने, ए छत्रीस बोलने जीवपर्यवा कह्या छे. शाख सूत्र पन्नवणा पद पांचमें. ए जुउ! अवगाहनापणे पुद्गल प्रणम्या तेने तथा वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, पुन्य पाप अने बंधपणे प्रणम्या पुद्गद जीवे गह्या जीवने पोगसापणे लोलीनुत रह्या तेने जीवपर्यवा कह्या छे; अने जोव छोड्या पछी मिसापणे प्रणम्या वर्ण, रस, गंध अने स्पर्शने तथा वीसा पुद्गलने अजीवपर्यवा कह्या छे. ए जीव ग्रह्या पुद्गलने जोवपर्यवा कह्या. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. वली क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष अने आठ कर्मने जीव समोयार कह्या छे. शाख सूत्र अनुजोगद्वारमां. ए न्याये पुन्य पाप अने बंधने जोव कहीए.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के "पुन्य, पाप अने बंध तो शुनाशुन कर्म छे ते रुपी पुद्गल छे, अने जोव तो अरुपी छे. ते पुन्य पाप अने बंध रुपी छे तेने जीव शीरीते कहो छो ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जीवने पण सरुपी कह्यो छे. सकर्मी, सरागी, सवेदी, सलेशी अने ससरीरी कह्यो छे. शाख सूत्र नगवती शतक १७ में उद्देशे बीजे. तेवारे तेरापंथी कहे छे के "जीवने रुप सहित कह्यो छे, पण जीव रुपी नथी.

जेम कपडाने रंग तेम जीवने शरीर, वेद, रागरुप छे तेथी सरुपी सकर्मी कह्यो छे. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! कपडाने कसुंबल रंग होय तेने कसुंबल कपडुं कहीए अने पीलो रंग होय तेने पीलुं कपडुं कहीए. जेवो कपडाने रंग होय तेवुं कपडुं कहीए. तेम कर्म सहित जीवने रुपी कहीए. वली तमे (तेरापंथी) कहो छो के " जीवने सरुपी कह्यो छे पण जीवने रुपी नथी कह्यो. " त्यारे एम तो जीवने "ज्ञान सहित" सनाणी कह्यो छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक आठमें उद्देशे बीजे तथा ३० मे तथा अनेक सूत्र-पाठमां. हवे तमारी केहेणीने लेखे तो जीवने सनाणी कह्यो तेने ज्ञान सहित कहीए; पण ज्ञानी न कहीए.

हे देवानुप्रीय ! एम केम कहो छो के, सरुपी कह्यो तेने रुप सहित कहीए पण सरुपी न कहीए ? ज्ञान सहित कहो अने भावे ज्ञानी कहो. रुप सहित कहो अने भावे रुपी कहो. वली अनुयोगद्वार सूत्रमां भाव संजोगमां कह्युं छे के, ज्ञान सहित होय तेने ज्ञानी कहीए, समकित सहितने दर्शनी कहीए, चारित्र सहितने चारित्रीओ कहीए; अने क्रोध, मान, माया अने लोभ सहित ने क्रोधी, मानी, मायी अने लोभी कहीए. जेम रुप सहित होय तेने रुपी कहीए, अने वर्णादिक पुद्गल सहित जीवने रुपी कहीये. तेम जीव सहित पुद्गलने जीव कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए. इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी व्यवहार-नयमां पुन्य, पाप अने बंधने दुध-पाणीना दृष्टान्ते जीव कहीए. जेम शेर दुधमां पासेर पाणी नाखे तेने व्यवहारमां सवा शेर दुध कहीए. तेम पुद्गल जीवने लोलीभुत थया तेने व्यवहारमां जीवज कहीये. ए न्याये पुन्य, पाप अने बंधने जीव कहीए.

हवे पुन्य, पाप अने बंधने अजीव कया न्याये कहीएः—पुन्य ते शुभ कर्म छे, पाप ते अशुभ कर्म छे, अने बंध ते शुभाशुभ कर्म प्रकृतिनो छे. ते कर्म रुपी पुद्गल छे. ते रुपी पुद्गलने नश्चेनयमां जीवे छोड्या पछी, हंसनी चांचथी दुध पाणी न्यारां थाय ते दृष्टान्ते

अजीव कहीए. वली तेरापंथी आश्रव तत्वने एकान्त नये करी जीव कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! आश्रव ते जीवनुं मूल लक्षण छे के संसार अवस्थामां रह्या जीवने उपाधिरुप छे ? ते विचारी जुओ.

वली तेरापंथी कहे छे के, " हवेली अने बारणुं ते एक, सोय अने नाकुं ते एक, तलाव अने घरनालुं ते एक, तथा नावा अने छीद्र ते एक, तेम जीव अने आश्रव एक छे. " एवी कुयुक्ति देखाडे छे तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! हवेली, सोय, तलाव अने नावातो पुद्गलास्तिकाय छे अने बारणुं, नाकुं, घरनालुं अने छीद्र तो आकाशास्तिकाय छे. तेम जीवने आश्रव ए रीते प्रत्यक्ष जुदा छे. वली उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययननी ७३ मी गाथामां, कायारुपणी नावा कही छे, अने जीवरुपी नावडीओ कह्यो छे. कायानो जोग व्यवहारनयमां जीव छे, तेने आश्रवरुपी छीद्र छे, पण निश्चेनयमां जीव अरुपी छे तेथी तेने आश्रवरुपी छीद्र नथी. हवे जेम कायारुपणी नावा अने छीद्र व्यवहारमां एक छे, पण नावडीओ अने छीद्र एक नथी; तेम जीव अने आश्रव एक नथी. हवेली अने बारणुं व्यवहारमां एक छे, पण हवेलीनो धणी अने बारणुं एक नथी. सोय अने नाकुं व्यवहारमां एक छे, पण लोह अने नाकुं एक नथी. तलाव अने घरनालुं व्यवहारमां एक छे, पण तलावनो धणी अने नालुं एक नथी. तेम जीव अने आश्रव एक नथी. वली कर्म-पुद्गल अने जीव ए बंनेना संजोगथी सात तत्वनां नाम बन्यां छे. जेम कर्म कायारुपी तलावमां केवल-ज्ञानरुपी रत्न ढंकायलुं छे. ते तलावमां पुन्य-पापरुपी पाणी आश्रवरुपी छीद्रे करी आवे छे, तेने संवररुपी बंधे करी रोके छे; अने बंधरुप पड्युं पाणी छे तेने निर्जरारुपी (चड्स कोशथी) बाहेकाढ करी देशथकी उचेली काढे छे, अने मोक्षरुपी खालो तलाव ज्यारे सर्वथा कर्म पाणी रहित थाय त्यारे जेम शेठ नालुं, बंधडुं (बंधुं), चड्स, मोरी अने तलाव छोडीने पोतानुं रत्न लेइ घेरे जाय, तेम जीव सहजातो केवल-ज्ञानरुपी रत्न लइने सिद्धगतिमां

जाय, अने पुद्गलदशा पुद्गलमां मले त्यारे सात तत्वना नामनो वि-नाश थाय. ए तलावनुं दृष्टान्त सूत्र उत्तराध्ययनना ३० मा अध्ययन-मां छे. वली कायारुपी नावाने छीद्र छे अने कायारुपी तलावने नालुं छे. ते काया जेम निश्चे-नयमां अजीव छे तेम आश्रवरुपी छीद्र पण अजीव छे. पाणी ते पाप, काया सहित जीव ते व्यवहार-नयमां रुपी छे ते तलाव, संवर ते पाल, अने मिथ्यात्वादिक छीद्रद्वारे करी चोफरसी शुभ अशुभ पुद्गलनो संग्रह थयो ते माटे आववुं ए क्रियानुं नामज आश्रव छे. ए जीव संबंधी पुद्गलनी करणी छे.

हवे मिथ्यात्व प्रमुख १८ पाप तो चोफरसी पुद्गल छे. तेना वि-वसायमां जीव द्रव्यनो उपयोग वर्ते तेवारे जीव अशुद्ध उपयोगे नवां कर्म-पुद्गलने आकर्षे. ते आश्रव पण ए पुद्गल ग्रहण-लक्षण करणी जीवने अशुद्ध अवस्थानी छे. ते ज्यारे शुद्ध दशा आवे त्यारे जीवनो उपयोग शुद्ध थाय अने पोताना रुपमां प्रणमे. जेम धर्मास्तीकाय पोते चालती नथी, पण जीव अने पुद्गल चाले छे तेने साहाज आपे छे. तेम विश्रसा पुद्गलना मलवा वीखरवाना प्रणाम छे. तेमां जीवनो उपयोग प्रवर्त्यो तेवारे प्रयोगसा प्रणाम थयो. जो ए जीवना उपयोगने आश्रव कहीये तो आत्मानो सहजाती गुण थाय. त्यारे तो सिद्ध द-शामां पण आश्रव केहेवो जोइए. वास्ते ए आश्रव ते पुद्गलनोज स्व-भाव छे. वली द्रव्य छ अने गुण छ छे. तेमां एकेक द्रव्यने एकेक गुण, ते सर्व द्रव्यने सहजाती छे. हवे जीव-द्रव्यने कर्मनो कर्त्ता ठरावीए तो जीव उपयोगी छे; पण एक द्रव्यमां उपयोग अने कर्त्ता ए बे गुण न होय. एक द्रव्यमां एकज गुण होय. ए निश्चयनयनुं स्वरुप जाणवुं; अने व्यवहारनयमां आत्मा कर्त्ता केहेवाय, ए पण सत्य छे. जीव कर्त्ता छे, पण मुल रागादिक दुषण पुद्गल जनित अनित्य छे.ते माटे नवा कर्मोने पण ग्रहे छे. ते पण मुल पुद्गलनी नेश्राय थको ग्रहे छे. हवे पुद्गल पुद्गलने ग्रहे ए तो निश्चे-नय, अने जीव पुद्गलने ग्रहे ते

व्यवहार-नय; पण मुल पुद्गलनी संगत छे तेथी जीव-द्रव्यनी बे दशा छे. संसारिक अने सिद्ध. तेमां एवंभुत-नयनो धणी शुद्ध जीव दशा सिद्धनी तेज शुद्ध माने; अने नैगमादिक-नय छे ते अशुद्ध वस्तु शुद्ध सत्ताना अंश सहित होय ते वस्तुने पण शुद्ध वस्तु माने. जेम निगोद वासी जीव छे तेने पण नैगमनय-मतानुसारी सिद्ध समान माने छे, तेम जीव ग्रह्या पुद्गलने जीव गणीए. ए न्याये पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध एने पण जीवे संग्रह्या ते माटे जीव गणीये. ए पण वली जीवे बांध्या छे. ते लेखे जे प्रयोगसा पुद्गल, इंद्रिय-विषय, कषाए अने जोग प्रमुख सर्वने जीव कहीये; केमके जेम नालुं आवता पाणीनुं आधारभुत थयुं तेम थालुं पण आधारभुत छे. पाणी तेज संहभावे वर्ते ते. तेमज पापरुपी पाणी आवतां ग्रहणद्वारे जीवे ग्रह्या पछी अशुभपणे प्रणम्युं त्यारे बंध भावे रह्युं. हवे ए आश्रवमां अने बंधमां शुं फेर ? आश्रव ग्रहण समये प्रत्यक्ष छे अने बंध अपढम समये सिद्ध छे. जेम नालानुं अने मांहीलुं पाणी एक छे तेम पुन्य, पाप आश्रवदशामां अने बंधदशामां एक रुप छे. वली तेरापंथी आश्रव कर्म ग्रहण रुप अशुद्ध उपयोगने जीव माने छे. ते उपर सूत्र उतराध्ययन अध्ययन अठावीसमानी गाथा बतावे छे. ते पाठः—

> वत्तणा लक्खणोकालो, जीवो उवउग लक्खणो;
> नाणेणं दंसणेणंच सुहेणय दुहेणय. ॥ १० ॥
> नाणंच दंसणं चेव, चरित्तंच तवोतहा;
> विरियं उवउगोय, एवं जीवस्स लक्खणं. ॥ ११ ॥

अर्थः—व० हेमंत रुतु प्रमुख रुतुने विषे शितादिक प्रवर्ते ते वर्तमान काळनुं ल० लक्षण. जो० जीवने उ० ज्ञानना उपयोगनुं लक्षण ना० ज्ञाने करी दं० दर्शने करी सु० सुख वेदवे करी दु० दुःख वेदवे करी, बंन्ने जाणीने ना० ज्ञान अने दं० दर्शन चे० निश्चे च० चारित्र अने त० तप. तेमज वि० समर्थाइ उ० ज्ञानादिकनो उपयोग ए० ए

पूर्वोक्त जे ज्ञानादिक कह्या ते जी० जीवनुं ल० लक्षण जाणवुं.

भावार्थः—आ पाठना न्याये उपयोग ते जीवनो गुण छे, अने गुण ते द्रव्यमां अंतर भवे. ते माटे आश्रवने जीव कहीये छीए. एम तेरापंथी कहे छे. तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! द्रव्य छे ते गुण सहित वर्ते छे. ते द्रव्य अने गुण जुदा नथी, पण द्रव्य द्रवभावे अने गुण गुणभावे रह्या छे. वली जीवना जे जे गुण छे ते मांहीला जे कोइ गुण सिद्ध अवस्थामां रहे, ते तो द्रव्यनो सहजाति गुण कहेवाय; अने संसार अवस्थामां जे जे गुण अशुद्ध उपयोगे समल भावे छे, ते ते विजातिय गुण केहेवाय; कारण के शुद्ध अवस्था आव्याथी उपयोग ते उपयोगमां समाय, अने पुद्गलकृत चेष्टा ते पुद्गलमां मले. ए बेहु जुदा छे. वली जीव-द्रव्यना मुल आठ गुण छे तेने आठ कर्मे आवर्या छे. ते कर्म क्षय थयाथी गुण प्रगटे ते आत्माना सहजाति गुण जाणवा. ज्ञानावरणी-कर्मने क्षये अनंतगुण ज्ञान प्रगटयुं १, दर्शनावरणीने क्षये अनंत दर्शन प्रगटयुं २, वेदनीने क्षये अव्याबाध सुख प्रगटयुं ३, मोहनीकर्मने क्षये स्वाभाविक सम्यक्त चारित्र प्रगटयुं ४, आयुष्यने क्षये अनंत स्थिति प्रगटी ५, नामकर्मने क्षये अमूर्तिकपणुं प्रगटयुं ६, गोत्र-कर्मना क्षये अगुरु लघुपणुं ७ अने अंतराय कर्मना क्षये अनंत पंडीत वीर्य गुण प्रगटयो ८. ए आठ गुण प्रगटया ते आत्माना सहजाति गुण छे. ते एकएकथी मली रह्या छे, पण गुण छे ते द्रव्य थकी जुदा नथी. हवे ए पूर्वोक्त गुणने जीवना गुण कहीए; पण संपूर्ण जीव द्रव्य न कहीये.

जेम सूत्र भगवतीना सोलमा शतकमां, गौतमस्वामीए पुछयुं के, हे भगवान ! पुर्वादिक दस दिशाने अंते " जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, " ए त्रण मांहेलुं शुं पामीए ? तेवारे श्री वीर प्रभुए कह्युं के, हे गौतम ! पुर्वादिक दसदिशाने अंते जीव नथी, पण जीवना देश अने जीवना प्रदेश छे. तेनो घणो विस्तार छे. इहां प्रभुए जीवना

प्रदेशने प्रदेश कह्या, पण जीव न कह्या. ए जुओ ! जीवना विभाग छतां पण जीव न केहेवाणा. त्यारे फक्त उपयोग तेतो गुण छे. ते जीव क्यम केहेवाय ? उपयोगने तो उपयोगज कहीये. वली आश्रव तो कर्मना उदये जीवनो अशुद्ध उपयोग, ते नवां कर्मोने ग्रहे तेने कहीए. जे मल-ग्रहणरुप चीगट ते आश्रवरुप वस्त्रने छे, पण आश्रव चीगटरुप वस्त्र नथी. तेम आश्रव जीवने छे, पण ते जीव नथी एम जाणवुं. वली आश्रवमां मिथ्यात-आश्रव तेतो चोफरसी पुद्गल छे अने मिथ्या दृष्टी ते मिथ्यात्व बंधीत आत्मानो उपयोग छे. ए उपयोग ते तो आत्माना घरनो छे, अने मिथ्यात्व ते पुद्गलना घरनुं छे. जो जीवने उपयोगे अवगाह्या माटे जीव थाय तो, १८ पाप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने पुद्गल ए सर्व जीव थाय. वली आश्रवने खपाववो कह्यो छे. जो जीव होय तो खपाववो केम कह्यो ? अने ते खपाव्यो केम खपे ? शास्त्र सूत्र उत्तराध्ययन अध्ययन १८ में. ते पाठः—

अह केसरंमि उज्जाणे, अणगारे तवो धणे.
सज्झाय झाण संजुत्ते, धम्मझाणं झियायइ. ॥४॥
अफोव मंडवंमि, झायइ जवियासवे;
तस्सागए मिएपासं, वहेइ से नरा हिवे. ॥५॥

अर्थः—अ० अथ हवे के० केशरी नामे उ० उद्याननने विषे अ० (घर रहित) अणगार त० तप रुपी धन सहित स० स्वाध्याय झा० धर्म ध्यानादिक ध्यान सं० सहित ध० धर्मध्यान झि० एकाग्र चित्ते करी ध्यावे छे ॥ ४॥ अ० वृक्षे करी व्यास मं० नागरवेलना मंडपने विषे झा० धर्मध्यान ध्यावे छे ज० आश्रव खपावीने. त० ते मुनीनी पासे आव्यो मि० मृग व० जेनो वध करे छे ते, अने से० ते न० राजा ( मृगनो वध करनार संजति ).

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां एम कह्युं के, गर्दभाली मुनी ध्यान करे छे. ते आश्रव रुपो उपाधि खपावे छे, एवुं ध्यान करे छे. हवे

खपाववावालो जीव छे, अने खपे ते कर्म-पुद्गल जीवने उपाधि रुप आश्रव निश्चेनयमां अजीव छे. ते आश्रव रुपी जीव द्रव्यना उपयोगे पुद्गलमां प्रवेश कर्यो त्यारे कर्मनुं कारण ग्रहण जोग कही देखाड्युं छे; पण आश्रव जीव नथी, अजीव छे.

वली आश्रवने अजीव कये न्याये कहीयेः-शुभाशुभ कर्म आवे तेने आश्रव कहीये, अने आवे ते कर्म रुपी पुद्गल निश्चेनयमां अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये.(१)वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-पुन अने पापने आश्रव कह्या छे, (शास्त्र सूत्र उत्राध्ययन अध्ययन २८में.)अने पुन्य पाप ते शुभाशुभ कर्म छे.ते कर्मने रुपी कह्यां छे.(शास्त्र सूत्र भगवती सतक १२ में) अने रुपी पुद्गलने बीजा शतकमां अजीव कह्या छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (२) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-जीव निश्चेमां अरुपीज छे रुपी नथी; अने आश्रवनी क्रियाना पांच भेद कह्या छे. शास्त्र सूत्र समवायांगमां. अने ते पांच भेदने रुपी कह्या छे. मिथ्यात्व, कषाय, अने मन वचनना जोगने रुपी चोफरसी कह्या छे, अने कायाना जोगने तो रुपी आठ फरसी कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक १२ में. अने अव्रत ते अपचखाणी क्रियाने रुपी कही छे. शास्त्र सूत्र ठाणायांगमां. प्रमादना पांच भेद कह्याः मद १, विषय २, कषाय ३, निंद्रा ४ अने विकथा, ए पांच भेद रुपी छे. तेम आश्रवना पण पांच भेद रुपी छे. रुपी पुद्गल निश्चे-नयमां अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीए. (३) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीयेः-पांच इंद्रि तथा त्रण जोग मोकला मेले ते आश्रव छे अने तेने अजीव कह्या छे अने जीवने भोग आवता कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक २५ में उद्देशे बीजे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. ( ४ )

वली तेरापंथी कहे छे के " कर्मने खेंचवावालो तथा ग्रह वालो आश्रवने कह्यो छे, अने कर्म खेंचवानी तथा ग्रहवानी शक्ति जीवनी छे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये छीए. " तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जेम चीपीउ कांटाने ग्रहे छे तेम आश्रव कर्मने ग्रहे छे. हवे चीपीउ

अने आश्रव बंने अजीव पुद्गल छे. ते बंनेने विषे उठाण, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार अने प्राक्रम जीवना छे; पण ते मुलगा बंने अजीव छे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. वली सूत्र नगवतीजीमां आश्रवना पांच नेदने रुपी कह्या छे. ते रुपी पुद्गल जीवने ज्यां सुधी लोली नुत रहे त्यां सुधी व्यवहारमां तेने जीव कहीये, अने जीव छोड्या पछी नि-श्चे-नयमां अजीव कहीये. वली आश्रवने अने आश्रवना पांच नेदने सूत्रमां कोइ ठेकाणे अरुपी कह्या नथी.

तेवारे तेरापंथी कहे छे के, "मिथ्याद्रष्ट अरुपी छे. तेथी आश्रवने अरुपी तथा जीव कहीये छीए." तेनो नत्तर. हे देवानुप्रीय! प्रथम तो मि-थ्याद्रष्टने आश्रव सूत्रमां क्यांय कह्यो नथी. एतो मिथ्यात्व धार्युं तेथी मिथ्याद्रष्टी नाम जीवनुं छे. जेम दंड धार्यो तेने दंडी कहीये, छत्र धार्युं तेने छत्री कहीये अने पुद्गल धार्युं तेने पुद्गली कहीये. शाख सूत्र नगवती शतक ८ में नद्देशे १० मे. हवे जेम दंड, छत्र अने पुद्-गल, ए त्रणे अजीव छे तेम मिथ्यात्व अने आश्रव अजीव छे; अने जेम दंडी, छत्री अने पुद्गली नाम जीवनुं छे तेम मिथ्यात्व धार्युं तेथी मिथ्याद्रष्टी नाम जीवनुंज छे; पण मिथ्याद्रष्टी आश्रव नथी. मिथ्यात बंधीत् जीवनो नपयोग क्षयोपशम नाव, तेने मिथ्याद्रष्टी क-हीये. वली तेरापंथी कृत तेर द्वारमां आश्रवमां बे नाव कह्या छे. उदय अने प्रणामिक; पण सूत्र अनुयोगद्वारमां मिथ्याद्रष्टीने क्षयो-पशम नावे कही छे. हवे जुउ! तेरापंथीउनी बुद्धिनी अजीरणता, के आश्रवमां क्षयोपशम नाव तो मानता नथी अने मतने लीधे मिथ्या-द्रष्टी क्षयोपशम नावे छे तेने आश्रव कहे छे.

(६) वली तेरापंथी एम कहे छे के, "कषाय अने जोग आश्रव छे अने तेने आत्मा कही छे. ते आत्मा अरुपी छे. ए न्याये आश्रवने अरुपी तथा जीव कहीये छीए." तेनो नत्तर. हे देवानुप्रीय! तमे आत्मा नाम एकान्त अरुपीनुं कहो छो, पण सूत्र नगवतीमां रत्नप्रज्ञादिक पृथ्विने तथा रुपी जीव पुद्गलने आत्मा कही छे. शतक १२ मे नद्देशे १० मे.

तमे आत्माने एकान्त अरुपी केम कहो ढो ? वली कषाय अने जोगने आत्मा कही तेथी ते अरुपी ढे एम तेरापंथी कहे ढे, पण ते जुठुं ढे; कारण के सूत्रमां कषाय-आत्माने तथा जोग-आत्माने अरुपी क्यांय कही नथी. कषाय तथा जोग रुपी पुद्गल जीवने ज्यां सुधी लोली जुत रहे त्यां सुधी आत्मा शब्दे पुन्य पापनी पेरे व्यवहारमां जीव कहीये, अने निश्चेनयमां जीव ढोड्या पढी अजीव कहीये. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (१) वली आश्रवने अजीव कया न्याये कहीएः-आश्रव ढोरूवा योग्य ढे, कारण के जीव सिद्धगतिमां जाय त्यारे आश्रवने अहिंज ढोरुी जाय ढे. हवे जीवथी बुटे ते कर्म पुद्गल निश्चेनयमां अजीव ढे. ए न्याये आश्रवने अजीव कहीये. (२) इत्यादिक अनेक सूत्रनी शाखे करी निश्चे-नयमां आश्रवने अजीव कहीये.

हवे व्यवहारनयमां आश्रवने जीव कया न्याये कहीएः-त्रण उपरली नय उदयज्ञावना जोगथी जीवना अशुद्ध उपयोगने आश्रव माने, पाथाने दृष्टान्ते. ते उपयोग आत्मा ढे अने आत्मा नाम जीवनुं ढे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये. (१) वली आश्रवने जीव कया न्याये कहीयेः-आश्रव जीवनुं लक्षण ढे, आश्रवनो कर्ता जीव ढे, अने आश्रव जीवपणे प्रणम्यो ढे. ए न्याये आश्रवने जीव कहीये. (२) बाकी उदाहरण पुन्य पापनी पेरे जाणवां.

हवे संवरने जीव कया न्याये कहीयेः-ज्ञाव संवर ते उपरली त्रण नय जीवना उपयोगने संवर माने ढे, पाथाने दृष्टान्ते. ते उपयोग आत्मा ढे अने आत्मा नाम जीवनुं ढे. ए न्याये संवरने जीव कहीए. (१) वली संवरने जीव कया न्याये कहीएः—संवर जीवनुं लक्षण ढे, अने संवरनो कर्ता जीव ढे. ए न्याये संवरने जीव कहीये. (२) वली संवरने जीव कया न्याये कहीयेः—संवरनी क्रिया पांच ज्ञेदे. समकित १, व्रत २, अप्रमाद ३, अकषाय ४ अने अजोग ५. शाख सूत्र समवायांगजी. ए पांच ज्ञेदने जीवनी पर्याय कही ढे. शाख सूत्र ज्ञगवती शतक बीजे उद्देशे पेहेले, खंधकजीना अधिकारमां. अनंता ज्ञानना पर्याय

अनंता दर्सनना पर्याय अने अनंता चारित्रना पर्यापने जावजीव कह्यो छे. तेनें व्यवहारनयमां जीव कहीये, अने निश्चे-नयमां पर्यायने पर्याय कहीये, पण जीव न कहीये. शास्त्र सूत्र जगवती शतक बीजे उ. दसमे ते पाठः—

एगे जंते! धम्मत्थिकायप्पदेसे धम्मत्थिकाएति वतव्वंसिया? गो० ! णो इणठे समठे. एवं दोणि तिणि चत्तारि पंच छ सत अठ नव दस संखेद्या असंखेद्या जंते ! धमत्थिकाए-पएसा धमत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया ? गो० ! णो तिणठे-समठे. एगपदेसुणे-वियणं जंते ! धमत्थिकाए धमत्थिका-एति वत्तव्वंसिया ? गो० ! णो तिणठे समठे. सेकेणठेणं जंते ! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकाएपएसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया जाव एगपदेसुणे-वियणं धम्मत्थिकाए नो ध-म्मत्थिकाएति-वत्तव्वंसिया ? सेणुणं गो० ! खंमेचक्के सगले-चक्के ? जगवं ! नो-खंमेचक्के सगलेचक्के. एवं छत्ते चम्मे दंमे दूसे आउहे मोयए. से तेणठेणं गो० ! एवंवुच्चइ एगे धम्मत्थिकाएपएसे णोधमेत्थिकाएति-वतव्वंसिया जाव एग-पदेसूणे-वियणं-धम्मत्थिकाए नो-धम्मत्थिकाएति-वत्तव्वंसिया. सेकिंतं खाइएणं जंते ! धम्मत्थिकाएति-वतव्वंसिया गो० ! असंखेद्या धम्मत्थिकाएपएसा ते सव्वेकसिणा पमिपुणा निरवसेसा एगग्गहणगहिया एसणं गोयमा ! धम्मत्थिका-एति-वत्तव्वंसिया एवं अहमत्थिकाएवी आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थिकाएवी एवंचेव णवरं तिणप्पि प्पएसा अणंताजाणियव्वा सेसं तंचेव. ॥

अर्थः—ए० एक जं० हे जगवान ! ध० धर्मास्तिकायनो प्रदेश ते प्रत्ये ध० धर्मास्तिकाय एवुं केहेवाय ? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे

गोतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही युक्त नही. ए० एम दो० बे ति० त्रण च० चार प० पांच छ० छ, सात, आठ, नव, दस सं० संख्याता अने अ० असंख्याता भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकाय-प्रदेशने ध० धर्मास्तिकाय व० एवुं केहेवाय? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही. ए० एक पण प्रदेशे उणो भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकायने ध० धर्मास्तिकाय व० एवुं केहेवाय? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! णो० ए अर्थ समर्थ नही. तेवारे गौतम स्वामी वली कहे छे. से० ते शा अर्थे भं० हे भगवान! ए० एम कह्युं ए० एक धरमास्तिकायनो प्रदेश नो० धर्मास्तिकाय न केहेवाय. जा० यावत् ए० एक पण प्रदेशे उणो ध० धर्मास्तिकाय होय तेने नो० धर्मास्तिकाय एवुं केम न केहेवाय? इति प्रश्न. उत्तर. से० ते निश्चे गो० हे गौतम! खं० चक्रना खंडने चक्र कहीये के स० सघला चक्रने चक्र कहीये? एवुं वचन भगवंते पुछ्युं त्यारे गौतम बोल्या. भ० हे भगवान! नो० चक्रना खंडने चक्र न कहीये. स० संपूर्ण चक्रने चक्र कहीए, ए प्रथम वृतान्त. ए० एम छ० छत्रना खंडने च० चमरना खंडने दं० दंडना खंडने दु० वस्त्रना खंडने आ० आयुधना खंडने अने मो० एम मोदकना खंडने मोदक कहीये के संपुर्ण मोदकने मोदक कहीये? त्यारे गौतम बोल्या-मोदकना खंडने मोदक न कहीए, पण संपुर्ण मोदकने मोदक कहीये. एम पूर्वोक्त सर्व वृतान्तमां जाणवुं. से० ते माटे गो० हे गौतम! ए० जेम चक्रना खंडने खंडज कहीये पण चक्र न कहीए तेम ए० एक धर्मास्तिकाय प्रदेशने णो० धर्मास्तिकाय न केहेवी. इत्यादिक सघला चक्रने चक्र कहीये. ते अर्थे हे गौतम! एम कह्युं. जा० यावत् ए० एक प्रदेशे उणो धर्मास्तिकाय होय तेने पण नो० धर्मास्तिकाय न कही. ए निश्चे-नयना मते कह्युं; पण व्यवहारनयना मते एक पण प्रदेशे करी न्युन वस्तु होय तेने वस्तुज कहीये. जेम खांडा घडाने घडोज कहीये. तेमज छेद्या काननां कुतराने कुतरोज कहीये. से० ते शा माटे भं० हे भगवान! ध० धर्मास्तिकाय एवुं केहेवाय? इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम! अ० अ-

संख्याता ध० धर्मास्तिकायना प्रदेश, ते स० सर्व कसीण समग्र प० प्रतिपूर्णक आत्म स्वरुपे विकल्पे नही. ते पण नि० प्रदेशान्तरथी पण स्वभावे करी हीन नही एटले एक प्रदेशनो पण अंतर नही. ए० एक शब्दे धर्मास्तिकाय एवा लक्षणे करी जे सर्व शब्द एकार्थ छे ए० एने गो० हे गौतम ! ध० धर्मास्तिकाय कहीये. अहीयां ए भावार्थ धर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश छे ते मांहीलो एक पण प्रदेश उंछो होय तेने धर्मास्तिकाय न कहीये. ए० एम अ० अधर्मास्तिकायनुं पण स्वरुप धर्मास्तिकायनी पेरे जाणवुं. आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवास्तिकाय अने पो० पुद्गलास्तिकाय पण ए० एमज धर्मास्तिकायनी परे जाणवी. ण० पण एटलुं विशेष के ति० धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ए बेउना प्रत्येके अ० असंख्याता ( अनंता ) प्रदेश भा० केहेवा अने ए त्रणना अनंता प्रदेश केहेवा से० शेष तं० तेमज जाणवुं.

भावार्थः—हवे आ पाठमां एम कह्युं के, एक प्रदेशने तेमज बे त्रण यावत् संख्याता असंख्याता प्रदेशने पण धर्मास्तिकाय न कहीए. तेमज एके प्रदेश उंणो होय तेने धर्मास्तिकाय न कहीए. असंख्याता धर्मास्तिकायना संपूर्ण प्रदेश ( एके प्रदेश उंणो नही ते प्रतिपूर्ण ) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुण अने पर्याय सर्व एक ग्रहणे ग्रह्या तेने धर्मास्ति-काय कहीये. एम धर्मास्ति-कायने, आकाशास्तिकायने अने जीवास्तिकायने एमज केहेवी.

हवे जुओ ! अहींयां एम कह्युं के, एक पण प्रदेश उंणो होय तेने जीव न कहीए; पण संपूर्ण प्रतिपुर्ण प्रदेश गुण पर्याये करी सहित, होय तेने जीव कहीये. आ पाठमां एक पण प्रदेश उंणो होय त्यां सुधी प्रभुए द्रव्यने द्रव्यमां न गण्यो; त्यारे जे वस्तु (उपयोग ते) मुलगोज ज गुण छे तेने एकान्त नये जीव शी रीते कहीये ? वली जे बार उपयोगने आत्मा कह्यो छे, ते तो आत्माए करी जीवपणुं ( चैतन्यपणुं ) जणावे छे. इहां जीवने अने उपयोगने न्यारो कह्यो छे, तेने जीव केम कहीये ? पर्यायने पर्यायज कहीये. मनुष्य अने वृक्षनी छायाना दृष्टान्ते. मनुष्य अने वृक्षनी छाया कहीये, पण छायाने मनुष्य के वृक्ष न कहीये.

तेम जीवना गुणपर्यायने गुणपर्यायज कहीये, पण जीव न कहीये. वली नैगमादिक नयना मते जेम अंश वस्तुने वस्तु माने, तेम नैगम व्यवहारनयमां पर्यायने जीव कहीये. ए न्याये संवरने जीव कहीये.

हवे संवरने अजीव कया न्याये कहीयेः-निश्चेनयमां कर्मने रोक्यां तेने संवर कहीये. रोक्यां ते कर्म-पुद्गल अजीव छे. ए न्याये संवरने अजीव कहीये. संवरनो कर्ता जीव छे, क्रिया पर्याय छे, अने कर्मपणुं ते अजीव छे. जीवने तो संवुडो कहीये, अने कर्म रोक्यां तेने संवर कहीये. कोइ कहे छे के, संवरना पांच भेदने संवर कहीये, पण एम नथी; कारण के समकित तो पांच स्थावर वरजी उगणीस दंडकमां पावे; पण कर्म रोक्यां नहीं तेथी मनुष्य तिर्यंच विना बावीस दंडकने असंवुडा कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक १६ में उद्देशे छठेः—

जीवाणं भंते ! किं संवुडा असंवुडा संवुडासंवुडा ? गो० ! जीवा संवुडावि असंवुडावि संवुडासंवुडावि एवं जहा सुत्ताणदंडउ तहेव भाणियव्वो. ॥

जी० जीव भं० हे भगवान ! किं० शुं ? सं० संव्रत अ० असंव्रत के सं० संव्रता संव्रत ? ( संव्रत एटले संवरवंत, असंव्रत एटले संवर रहित अने संव्रतासंव्रत एटले संवर रहित तथा संवर सहित ) इति प्रश्न. उत्तर. गो० हे गौतम ! जी० जीव सं० संव्रत पण होय अ० अ-असंव्रत पण होय अने सं० संव्रतासंव्रत पण होय. ए० एवी रीते ज० जेम पूर्वे सूत्रमां सु० सुतानो दंडक कह्यो त० तेम ए पण भा० केहेवो.

भावार्थः—हवे जुओ ! आ पाठमां कह्युं छे के, तिर्यंच अने मनुष्य वर्जीने बावीस दंडकने समकित छतां पण व्रत नही तेथी असंवुडा कह्या छे. जेने मिथ्यात अने अव्रत प्रमुख पापना सर्वथा त्याग होय तेने बाल-पंडीत कह्या छे, अने जेने एके पापनो त्याग न होय तेने अव्रति बाल कह्या छे. वली मनुष्य अने तिर्यंच विना बावीस दंडकने अधर्मी कह्या छे. शास्त्र सूत्र भगवती शतक सत्तरमें उद्देशे बीजे. ए जुओ ! कर्म

रोक्यां तेने संवर, पंडीत तथा धर्मी कह्या, अने कर्म रोक्या विना संवरनी क्रियाना पांच भेद सम्यक्तादिकने संवर न कहीए. ए सम्यक्तादिक पांच भेद सिद्धमां पण होय, पण कर्म रोकवानो स्वभाव नही तेथी तेमने "नो संवुडा, नो असंवुडा" कहीये. विद्यमान काले जीवनो शुद्ध उपयोग वर्तनो तेने अने कर्म रोक्यां तेने संवर कहीये. जीवनो उपयोग सम्यक्तादिक पांच बोलनो छे तेने तो निश्चेनयमां जीवना भाव पर्याय कहीये, अने निश्चेनयमां कर्म रोक्यां तेने संवर कहीये. ए न्याये संवरने अजीव कहीये. (२)

हवे निर्जराने अजीव कये न्याये कहीयेः-निश्चेनयमां कर्म निर्जरीने जीवथी अलगां थाय तेने निर्जरा कहीये. जे निर्जरी गयां ते कर्म-पुद्गल निश्चेनयमां अजीव छे. ए न्याये निर्जराने अजीव कहीये. (१) वली नीर्जराने अजीव कया न्याये कहीयेः-निर्जरानो कर्ता तो जीव छे. पण बारे भेदे क्रिया पर्याय छे, अने कर्मपणुं अजीव छे. ते कर्म अलगां थाय त्यारे जीव निर्मल थाय तेने निर्जरा कहीये. ए न्याये निर्जराने अजीव कहीये.

हवे मोक्षने जीव कया न्याये कहीएः-त्रण उपरली नय जीवना उपयोगने मोक्ष माने. ते पाथाने दृष्टान्ते. ते उपयोग आत्मा छे अने आत्मा नाम जीवनुं छे. ए न्याये मोक्षने जीव कहीये. (१) वली मोक्षने जीव कया न्याये कहीयेः-मोक्षनो कर्त्ता जीव छे अने मोक्ष जीवनुं लक्षण छे. ए न्याये मोक्षने जीव कहीये. (२) वली मोक्षने जीव कया न्याये कहीयेः-मोक्षनी क्रियाना चार भेदः-ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप, ए चार जीवना भाव पर्याय छे. ते पर्यायने व्यवहारनयमां जीव कहीये अने निश्चेनयमां पर्यायने पर्याय कहीये पण जीव न कहीये. वृक्ष अने मनुष्यनी छायाना दृष्टान्ते. ए न्याये मोक्षने जीव कहीए. (३).

हवे मोक्षने अजीव कया न्याये कहीयेः-निश्चेनयमां कर्म क्षय थयां तेने मोक्ष कहीये, अने जीवने तो मुकाणो कहीये. कर्म क्षय थयां तेनेज मोक्ष कहीये. ते कर्म अजीव छे. ए न्याये मोक्षने अजीव

कहीये. (१) वली मोक्षने अजीव कया न्याये कहीएः-मोक्षनो कर्त्ता जीव छे, क्रिया जीवनी पर्याय छे अने कर्म ते कर्मक्षय थयां ते अजीव छे. ए न्याये मोक्षने अजीव कहीये. (२)

हवे समचय नव तत्वमां जीव केटला अने अजीव केटला? निश्चेनयमां तो एक जीव ते जीव अने आठ अजीव; अने व्यवहार नयमां आठ तो जीव अने एक अजीव ते अजीव. जेम व्यवहारनयमां जमरो कालो, अने निश्चेलयमां पांचे वर्ण पावे (होय). व्यवहारनयमां गोल मीठो, अने निश्चेनयमां पांचे रस पामे. व्यवहारनयमां केतकीनी सुगंध अने निश्चेनयमां बंने गंध पामे. व्यवहारनयमां पत्थर खरखरो, अने निश्चेनयमां आठे फर्स पामे. व्यवहारनयमां चुरी गोल अने निश्चेनयमां पांचे संठाण होय. शास्त्र सूत्र जगवती शतक १८ मे उद्देशे छठे. ए न्याये सात तत्वने व्यवहारनयमां जीव कहीये, अने निश्चे नयमां अजीव कहीये. वली ठाणायांग सूत्रने बीजे ठाणे बे समोयार कह्या छे. जीव समोयार १, अने अजीव समोयार २. व्यवहारनय आश्री पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष, ए सात तत्वने जीव समोयारमां कह्या छे; अने एज सात तत्वने निश्चेनय आश्री अजीव समोयारमां कह्या छे. ए न्याये सात तत्वने व्यवहारमां जीव कहीये, अने निश्चेमां अजीव कहीये.

वली व्यवहार–निश्चे एक समचयमां एक जीव ते जीव, अने एक अजीव ते अजीव; बाकी सात जीव अजीवनी पर्याय छे. शास्त्र सूत्र जगवती शतक १३ मे उद्देशे चोथे, एम कह्युं छे के, मन, वचन, काया प्रमुख सर्व पदार्थने चालवानो साहाज धर्मास्तिकाय आपे छे, अने स्थिर रेहेताने अधर्मास्तिकाय साहाज आपे छे. विकाश गुण जीव पुद्गलने जाजन आकाशास्तिकायनुं छे. काल ते पुद्गलादिक एकठा रेहेवानी स्थिति जीवनो उपयोग; अने पुद्गलास्तिकाय पुद्गल मले ने विखरे एम कह्युं छे. ए न्याये पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध शुजाशुज पुद्गल मन आदिक जोग जीवना अशुद्ध उपयोगथी ग्रह्या स्थिरपणे

कर्मपणे रह्या छे. ब द्रव्यना साह्याजथी नाम बन्यां छे. तेथी ब द्रव्यने जीवना पर्याय कहीये. संवरे आवतां कर्म रोक्यां, निर्जराए आगलां कर्म देशथकी तोड्यां अने मोक्षे सर्वथा कर्म पुद्गलने जीवथी दूर कर्यां. ए पण ब द्रव्यना साह्याजथी पर्यायथी नाम निपन्यां छे तेथी जीव अजीव सीवायना सात तत्वने जीव अजीवनी पर्याय कहीये.

वळी सूत्र पन्नवणा पद पांचमें छत्रीसमा बोलने जीव पर्याय कह्यो छे. द्रव्य, प्रदेश, पांच वर्ण, पांच रस, बे गंध, आठ स्पर्श, बार उपयोग, पुद्गलथी निपनी अवगाहना अने आउखानी स्थिति, ए छत्रीस बोलने जीव पर्याय कह्या छे. तेमां केटलाक संवर, निर्जरा अने मोक्षना भेद छे अने केटलाक पुन्य, पाप, आश्रव अने बंधना भेद छे; तेथी सात तत्वने जीव अजीवनी पर्याय कहीये. जीव अजीवना संजोगे सात तत्व निपन्या छे, तेथी भेळाज पर्याय कहीये, पण न्यारा व्हेंचाय नही. ते कथा द्रष्टान्ते. जेम कोळणे कोळीनो नातो कीधो. ए बंनेना संजोगथी सात संतान उपन्यां ते व्हेंचवाने द्रष्टान्ते. जेम बंनेना भेळा अंश ते न्यारा वेंहेंची शकाय नही, तेम सात तत्व जीव अजीवना संजोगथी निपन्या; पण न्यारा न्यारा वेंहेंची शकाय नही. ते माटे तेने जीव अजीवनी पर्याय कहीये. हवे जो एकला जीवने सात तत्व कहीये तो सिद्धमां पण केहेवा जोइए; अने जो एकला अजीवमां सात तत्व कहीये तो जीव विना पुद्गलमां पण केहेवा जोइए, पण एम नथी. जीव अजीव बंनेना संजोगनेज तत्व कहीये.

तेवारे तेरापंथी एम कहे छे के "रास बे कही छे. जीवरास १, अने अजीवरास २. तेमां नव तत्व कइ राशमां छे?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय! जीवते जीव अने अजीव ते अजीव. बाकी सात तत्व. तेमां केटलाक बहुलतामां अने केटलाक मुख्यतामां जीवद्रव्यना गुण छे. (संवर, निर्जरा अने मोक्ष.) शेष पुन्य, पाप, आश्रव अने बंध, ते निश्चेनयमां अजीव छे, अने जीवनी साथे छे तेथी व्यवहारनयमां जीव छे. वली ए सात तत्वमां उपयोग छे ते जीवना घरनो छे. जेम एक आंबानुं

वृक्ष छे अने एक लींमडो छे. हवे जे वृक्षनी छाया छे ते वृक्षना गुणमां छे, पण छायारुप कोइ त्रीजुं वृक्ष नथी. वृक्ष ते तो द्रव्य अने गुण ते छाया. वली जेम पत्र फुलादिक सहित एकज वृक्ष छे, तेम गुण पर्याय लीधे एकज जीवद्रव्य छे. जेम जीव द्रव्य तेतो वस्त्र, अने तेनो गुण ते स्वेतादिकवर्ण, अने पर्याय ते दोरा, अने रागादिक चिगट ते मल ग्रहण रुप आश्रव, अने पुन्य पाप ते रज, निधत ते बंध, साबु पाणी ते संवर, अने शुद्ध दशा उज्वलता ते आत्मेयभाव; ए सर्व गुण पर्याय ते वस्त्रने छे, पण पूर्वोक्त गुण पर्याय वस्त्र नथी. तेम ए सात तत्व जीवने छे, पण ए एकला जीव नथी.

वली तेरापंथी कहे छे के, "जीव अजीवनी राश बे छे, पण पर्जवा क्यां कह्या छे ?" तेनो उत्तर. हे देवानुप्रीय ! निश्चेनयमां राश बे छे तेम तत्वं पण बेज छे. जीव अने अजीव. हवे व्यवहार-नय तो जीव अने अजीव बंनेना व्यापारने कहीये, अने निश्चेनय जीव अजीवनो संयोग विखरी न्यारो थाय तेने कहीए. एक जीव अने आठ अजीव एकान्त माने ते निश्चेनयवादी. ते एकान्त-नयवादी प्रथम गुणठाणा वर्ति जाणवो. वली आठ जीव अने एक अजीव एकान्त माने ते व्यवहारनय वादी. ए एकान्त-नयवादी प्रथम गुणठाणावर्ति जाणवो. वर्तमान व्यवहारनय भेला माने, अने वर्तमान ते निश्चय आश्री न्यारा माने, इत्यादिक यथायुक्त नय निक्षेपा सहित वचन कहे तेनां वचन प्रमाण छे; पण नय विना वचन अप्रमाण छे. तेनी शाख सूत्र अनुयोगद्वार.

हवे अहियां नव तत्व उपर अनेक नय संक्षेपथी उतारी देखाडी छे. छतां विस्तारथी जाणवानी इच्छा होय तेमणे स्वामीजी माहाराज श्री १००८ श्री भीकमदासजी माहाराज कृत 'तत्व-शोधक' ग्रंथथी जाणी लेवुं. जदपि एटलुं न धारी शके तो एम चिंतववुं के "तमेवसच्चं निसंकं जिणेहिं पवेइयं एवं मणे धारेमाणा, जाव आणाए आराहगा भवइ." एज अथागमे अरिहंतदेवना परुपवाथी. एज सुतागमे ते गणधरोना गुंथवाथी. एज अणत्तरागमे ते श्री सुधर्मास्वामी श्री जंबु-

स्वामीने अने जंबुस्वामी प्रभवादिकने परुपवाथी. एज परंपरागमे ते पुज्यजी श्री १००८ श्री बुधरजी, कुशलोजी, गुमानचंदजी अने रतनचंदजीना परुपवाथी. इति सिद्धान्तसार समाप्त.

दुहा.

सासन मंडन मुकुट मणी, ज्ञानचंद गुरु साज;
पाखंड मत खंडन करन, ज्यु मृग ने हरि गाज. १
तस लघु भ्राता दीपतो, तेजस्वी दुर गेश;
संघ रख्यो निज दृष्टमे, तपीया तेज दिनेश. २
तास शिष्य जगमें प्रगट, दुलीचंद रतनेश;
वदन कमल सरस्वति वसे, बोल बोलमें रेश. ३
तास पसाये ए रच्यो, ग्रंथ सिद्धांतनुसार;
कनिराम चित्त चुंपसुं, तम खंडन दिनकार. ४
संवत उगणीसें ठके, मृगसर शुद रवीवार
गाम पिंपाडमें सही थयो, ग्रंथ सिद्धांतनुसार. ५
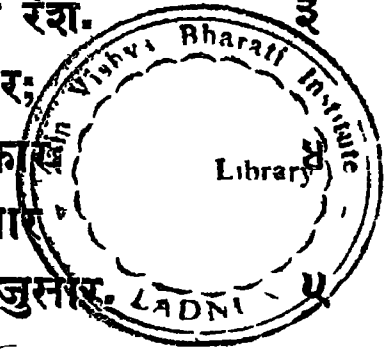


ओश बंश शिर मुकुट हे, श्रावक गुणे प्रधान;
शेठ फतेमल रसिक हे, विर वचनको जाण. १
तास चतुरता नव नवी, चरचा की महमंत;
तसु कारण अभ्यास ए, रच्यो ढुंढ सिद्धान्त. २
सुणशी भणशी शीखशी, होशी ज्ञान उद्योत;
मिथ्या तिमिर न व्यापसी, निर्मल समकित जोत. ३
स्वामी श्री कनीरामजी, शेठ फतेहमल जाण;
अविचल नामज एहनो, जबलग जिनवर आण. ४